ग० लेलचूक,
यू० पोल्याकोव,
अ० प्रोतोपोपोव

सोवियत समाज का इतिहास

सुबोध रूपरेखा

संपादक: सोवियत संघ की
विज्ञान अकादमी के सहयोगी सदस्य
यू० पोल्याकोव

प्रगति प्रकाशन
मास्को

В. Лельчук, Ю. Поляков, А. Протопопов

ИСТОРИЯ СОВЕТСКОГО ОБЩЕСТВА

На языке хинди

सोवियत संघ में मुद्रित

विषय-सूची

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक मे अक्तूबर क्रांति के बाद से सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ के पचास बरस से अधिक के इतिहास को समेटने का प्रयत्न किया गया है। यह इतिहास असाधारण रूप से समृद्ध तथा विविधतापूर्ण है और ऐसी घटनाओ से भरा पडा है, जिनका ऐतिहासिक महत्व बहुत है। इन बरसो मे सोवियत सघ ने जो रास्ता अपनाया, उसके नतीजे सब को मालूम है। पिछडा हुआ, अनपढ रूस एक महान समाजवादी शक्ति बन गया। सोवियत सघ के कट्टर दुश्मन भी इस से इनकार नही कर सकते।

इन पचास बरसो मे बहुत कुछ हुआ। महान क्राति, हस्तक्षेपकारियो तथा सशस्त्र प्रतिक्राति के विरुद्ध सोवियत जनगण का कठिन और तीव्र सघर्ष, सदियो के पिछडेपन के बाद समाजवादी समाज के सफल निर्माण की अभूतपूर्व ढग से तेज़ प्रगति, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१९४१–१९४५) की रोमाचकारी घटनाए, युद्ध द्वारा बर्बाद अर्थतत्र के पुनर्निर्माण की गौरवमयी गाथा और अत मे १९५० और १९६० के दशको की शानदार आर्थिक और सास्कृतिक प्रगति, जब कम्युनिज़्म का निर्माण ज़ोरो के साथ शुरू हुआ।

घटनाओ की बहुलता और उनकी तनातनी और पेचीदगी के कारण उन इतिहासकारो की कठिनाई बढ जाती है, जो अपेक्षाकृत सक्षिप्त इतिहास लिखने का प्रयास कर रहे हो। इस किताब के लेखको को इन कठिनाइयो का पूरी तरह सामना करना पडा। उन्हे दुख है कि बहुतेरी अहम और दिलचस्प घटनाए इसमे शामिल नही की जा सकी। घटनाओ को मूलत कालक्रम से दिया गया है, ताकि घटनाओ का क्रमागत चित्र

पाठकों के सामने आ जाये। केवल कहीं-कहीं सामग्री को विषय के अनुसार एकत्रित किया गया है। लेखकों ने इतिहास के असली निर्माता, व्यापक जनगण की निर्णायक भूमिका, प्राप्त उपलब्धियों की आवश्यक शर्त के रूप में कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व और क्रांति के सेनानी तथा सोवियत राज्य के संस्थापक व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की भूमिका दिखाने का प्रयास किया है।

लेखकों को आशा है कि उनकी पुस्तक से पाठकों को सोवियत संघ के इतिहास का मौलिक, यद्यपि सामान्य बोध प्राप्त होगा और उन्हें सोवियत इतिहासकारों द्वारा प्रकाशित अधिक तफ़सीली और विस्तारपूर्ण कृतियों को पढ़ने का शौक़ होगा।

* * *

यह पुस्तक सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिक कार्यकर्ताओं यू० पोल्याकोव (अध्याय १–३ तथा ६), व० लेलचूक (अध्याय ४–८, १० तथा ११) और अ० प्रोतोपोपोव (सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति तथा वैदेशिक नीति से संबंधित अध्याय) द्वारा लिखी गयी। उपसंहार व० लेलचूक और यू० पोल्याकोव ने लिखा।

पहला अध्याय

रूस में समाजवादी क्रांति

निरंकुश शासन का अंत

जिन लोगो का जन्म १६१७ के बाद हुआ है, उनके लिए यह कल्पना करना भी कठिन है कि आधी शती से कुछ ही अधिक पहले रूस पर निरकुश राजतन्त्र का साया था। जब सम्राट निकोलाई द्वितीय से किसी ने उनका पेशा पूछा, तो गभीरतापूर्वक जवाब मिला कि 'रूस की धरती का स्वामी हू'। सरकारी घोषणाओ मे स्वय अपने बारे मे सम्राट लिखा करते थे, "हम, ईश्वर की कृपा से, समस्त रूस के *महाराजा...*" या "*पितृभूमि के कल्याण की रक्षा करने के लिए भगवान* द्वारा नियुक्त, हम महाराजा..." आदि।

उस समय यही स्थिति थी। कई शताब्दियो से रूस जार के वशचिह्न—दो सिरो वाले गरुड की छत्र-छाया मे था। सगीनो की सुरक्षा मे, अत्याचार और दमन के शक्तिशाली शस्त्रास्त्र से सुसज्जित तथा जनता द्वारा असतोष की अभिव्यक्ति को निर्ममता से दबानेवाला राजतन्त्र लगता था कि सदा इसी प्रकार बना रहेगा।

पीढी दर पीढी रूस के बेहतरीन सपूत जनता को अत्याचार और दमन से मुक्ति दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित करते रहे थे। लेकिन जब सर्वहारा वर्ग इतिहास के मच पर आ गया, तभी जनता को वह सेनानी मिला, जो उसे विजय की मजिल तक ले जा सकता था। रूसी सर्वहारा वर्ग ने लडाई का झडा उठाया तथा करोडो किसान जनता को अपने झडे तले एकत्रित किया। रूस मे क्राति ऐतिहासिक दृष्टि से अनिवार्य थी। बीसवी शती के प्रारभ तक इसकी विजय की सभी आवश्यक शर्तें तैयार हो चुकी थी, क्योकि रूस मे एक शोषणकारी व्यवस्था के सारे अतर्विरोध बहुत तीव्र हो गये थे।

रूस पूंजीवादी विकास की बीच की सीढ़ी पर था। परंतु पूंजीवादी संबंध सामंतवाद के बहुतेरे अवशेषों के साथ अजीब ढंग से गुंथे हुए थे। देश अभी तक कृषिप्रधान था बावजूद इसके कि उद्योग का विकास ख़ासी तेज़ी से हो रहा था। मजदूरों का बुरी तरह शोषण किया जाता, काम का दिन दस घंटे अथवा उस से भी अधिक था और मजदूरी बहुत कम थी। उस समय का रूसी उद्योग अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ तो था ही, पर उसका एक विलक्षण मजदूरों का उच्च संकेंद्रण था (देश की श्रमशक्ति का ३६ प्रतिशत से अधिक भाग ऐसे कारख़ानों में था, जहां एक हज़ार या उससे अधिक मजदूर काम करते थे)।

किसानों की जीवन स्थिति बेहद ख़राब थी। वे भूमि-अभाव का शिकार थे। १०५ लाख किसान परिवारों के पास उतनी ही भूमि थी जितनी ३० हज़ार जमींदारों के पास। इससे देहातों में उत्पादक शक्तियों के विकास में बाधा होती थी। कृषि की अवस्था पिछड़ी हुई थी। खेती के औज़ार पुराने समय से वही चले आ रहे थे।

सबसे अधिक सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन रूस के दूरवर्ती इलाक़ों में पाया जाता था। कुछ जगहों पर तो उद्योग नाम की कोई चीज़ नहीं थी। वहां मध्य युग की सामंती अवस्था का बोलबाला था। और कुछ जन-जातियां विकास के क़बायली स्तर से आगे नहीं बढ़ी थीं।

रूस की राजनीतिक व्यवस्था का मुख्य पहलू यह था कि मेहनतकश जनता सभी अधिकारों से वंचित थी। राजनीतिक अधिकारों का नामोनिशान नहीं था। प्रगतिशील संगठनों को सख़्ती से कुचल दिया जाता और आज़ादी के योद्धा हज़ारों की संख्या में जेलों में बंद थे या उनको निर्वासित कर दिया गया था।

रूसी साम्राज्य की आबादी में आधे से ज़्यादा लोग ग़ैर-रूसी जातियों के थे। उनकी हालत बहुत ख़राब थी। जिन इलाक़ों में ग़ैर-रूसी लोग बसते थे, उनमें से अधिकांश की अवस्था उपनिवेशों की सी थी।

भूदास प्रथा के अवशेषों के साथ मिलकर पूंजीवादी उत्पीड़न ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी, जो रूस के जनगण के लिए बिल्कुल असहनीय थी। इसने ऐसी ज़बरदस्त शक्तियों को जन्म दिया, जो कभी किसी क्रांति में देखने में नहीं आयी थीं। रूस, जो सामाजिक और राष्ट्रीय उत्पीड़न

का केंद्र-बिंदु था, पूरी साम्राज्यवादी व्यवस्था के अंतर्विरोधों का केंद्र-बिंदु और उसकी सबसे कमजोर कड़ी बन गया। इसी लिए बीसवी शताब्दी के प्रारंभिक काल मे रूस मे क्राति का स्वरूप प्रचड होता चला गया। विश्व क्रातिकारी आदोलन का केंद्र बदलकर अब रूस आ गया था। यद्यपि १९०५–१९०७ की प्रथम रूसी पूजीवादी जनवादी क्राति नाकाम रही थी, फिर भी क्रातिकारी आदोलन की लहरे पीछे नही हटी। एक नया उभार निकट आ रहा था।

१ अगस्त, १९१४ को जर्मनी ने रूस के खिलाफ युद्ध की उद्घोषणा कर दी। प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। युद्ध साम्राज्यवादी पूजीवादी वर्ग के फायदे के लिए छेडा गया था और इसलिए आम लोगो को उससे कोई दिलचस्पी नही थी। वे उससे घृणा करते थे। जारशाही शासन का ह्रास और पतन पूरी तरह सामने आ गया। मोर्चे पर भीषण दुर्घटनाए, लाखो करोडो रूसी सैनिको का अनर्थपूर्ण सहार और देश के भीतर आम आर्थिक दुर्व्यवस्था के कारण जनता के असतोष और आक्रोश का कोई ठिकाना नही रहा। मार्च, १९१७* के शुरू मे क्राति की ज्वाला भडक उठी, जिससे जार का तख्ता उलट गया।

कई पूजीवादी इतिहासकारो का कहना है कि क्राति इसलिए हुई कि जार और उसके अधिकारियो ने असाधारण अयोग्यता का परिचय दिया। अगर जार अधिक बुद्धिमान होता, उसके सेना नायक अधिक प्रतिभाशाली तथा उसके मत्री अधिक स्फूर्तिवान होते और अगर उन्होने मिल्युकोव और गुचकोव जैसे पूजीवादी अधिकारियो के हाथ मे शासन सौप दिया होता, तो क्राति नही होती।

इसमे कोई सदेह नही कि रूसी साम्राज्य के अतिम सम्राट निकोलाई द्वितीय बहुत ही अयोग्य और मूर्ख व्यक्ति थे। जब फरवरी के उन दिनो

---

*फरवरी, १९१८ से पहले रूसी कैलेडर यूरोपीय तथा अमरीकी कैलेडर से १३ दिन पीछे हुआ करता था। इसलिए पुराने कैलेडर के अनुसार क्राति फरवरी के अत मे हुई और उसे फ़रवरी क्राति कहा जाता है। इस पुस्तक मे सभी तिथिया नये कैलेडर के अनुसार दी गयी है। मगर कुछ बहुत अहम घटनाओ के सबध मे पुरानी और नयी दोनो तिथिया दी गयी है।

में उन्होंने पेत्रोग्राद गैरिजन के नायक को आदेश दिया कि कल तक राजधानी में सारा हंगामा शांत हो जाना चाहिए, तो उन्हें पूरा विश्वास था कि क्रांति समाप्त हो जायेगी। विद्वेषी और सनकी ज़ारीना मज़दूरों के प्रदर्शनों को गुंडों का आंदोलन कहा करती और पूरी गंभीरता से यह समझती थीं कि क्रांति की आग इसलिए भड़क उठी है कि सरदी काफ़ी नहीं पड़ी। परंतु जन क्रोध की ज्वाला केवल पतित रोमानोव राजवंश के विरुद्ध नहीं, बल्कि संपूर्ण निरंकुश शासन व्यवस्था के विरुद्ध भड़क रही थी। और उसे रोकना या बुझाना किसी के बस में नहीं था।

पुतीलोव कारख़ाना राजधानी के सबसे बड़े कारख़ानों में था। उस कारख़ाने की एक वर्कशाप में हड़ताल हुई और तुरंत पूरे कारख़ाने में फैल गई। वह हड़ताल क्या थी, मानो गरमी के दिनों में सूखे वन में आग लग गई हो। हड़ताल आंदोलन तेज़ी से पूरे पेत्रोग्राद में फैल गया। जब वोलींस्की रेजिमेंट के सैनिकों ने अपने अफ़सरों का आदेश मानने से इनकार कर दिया और बाग़ियों से जा मिले, तो उनकी इस हरकत से ज़ाहिर होता था कि सैनिकों के मन में युद्ध और इसकी आग भड़कानेवालों के विरुद्ध कितनी घृणा भरी हुई है। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि प्रेग्रोब्रजेंस्की, लियुआनियाई तथा अन्य रेजिमेंटों के सैनिकों ने भी वही रास्ता अपनाया। पेत्रोग्राद की सड़कों पर दो धाराएं मिलकर एक हो गयीं। एक में मज़दूर थे, जो दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि ज़ारशाही और पूंजीवाद का अंत करेंगे और दूसरी में सैनिक, अधिकांश किसान, थे, जो युद्ध के ख़िलाफ़ विद्रोह तथा ज़मीन की मांग कर रहे थे।

क्रांति बड़ी तेज़ी से फैली। हड़ताल, जिसके कारण राजधानी का प्रत्येक कारख़ाना बंद हो गया था, अब मज़दूरों और सैनिकों के सशस्त्र विद्रोह का रूप धारण करने लगी।

इस बीच ज़ारशाही के अधिकारी भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने क्रांति को कुचलने में कोई कसर नहीं उठा रखी। आंदोलन को उसके नेतृत्व से वंचित करने के लिए ज़ार की गुप्त राजनीतिक पुलिस ने कम्यूनिस्टों (बोल्शेविकों) की पेत्रोग्राद समिति को गिरफ़्तार कर लिया। ज़ार के आदेश से पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के कमांडर जनरल ख़बालोव ने प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध अपनी सेना मैदान में उतार दी। अफ़सरों ने लोगों की भीड़ पर मशीनगनों से गोलियां चलानी शुरू कर दीं। मज़दूरों

पर सैनिको और पुलिस द्वारा राइफलो से गोलियो की बौछार होने लगी। पेत्रोग्राद की सडके मजदूरो के खून से रगी गयी।

लेकिन यह सब व्यर्थ गया। १२ मार्च, १९१७ के अत तक पेत्रोग्राद जनता के हाथो मे आ चुका था। निरकुश जारशाही का तख्ता उलट चुका था। सम्राट निकोलाई द्वितीय ने राजत्याग के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। रूस की जनता ने, जो आज तक पैरो तले रौंदी जाती और सभी अधिकारो से वचित थी, आज़ादी की सास ली।

परतु निरकुश शासन का अत होने से देश के समक्ष तात्कालिक समस्याओ का अपने आप समाधान नही हुआ। फरवरी, १९१७ क्राति का अत नही, उसकी शुरूआत थी। मगर फरवरी क्राति के बिना अक्तूबर क्राति नही हो सकती थी। निरकुश शासन का अत समाजवादी क्राति के सघर्ष मे ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य बीच की मजिल था।

दोहरी सत्ता

एक कारखाने के बडे से प्रागण मे मजदूरो की भीड लगी है। तेल मे सने कपडे पहने वे आपस मे बाते कर रहे हैं, हसी-मजाक भी हो रहा है, मार्च की मटियाली, नर्म बर्फ को रौंदते चल रहे हैं। कारखाने के कार्यालय से एक मेज लाकर मच बनाया गया है। मेज पर एक आदमी खडा हो गया और चीखकर बोला "साथियो, हम यहा इसलिए जमा हुए हैं कि मजदूरो के प्रतिनिधियो की सोवियत के लिए, जो हमारी सत्ता होगी, अपने प्रतिनिधि चुनें।"

१९१७ के वसत मे इस तरह का दृश्य देश के हर कारखाने मे देखा जा सकता था। फरवरी क्राति के दौरान और उसके बाद के दिनो मे हर जगह मजदूरो के प्रतिनिधियो की सोवियते कायम की गयी और सैनिक दस्तो तथा नौसेना के जहाजो मे सैनिको और नाविको की समितिया सगठित की गयी।

देश के अधिकाश नगरो और अनेक जिलो के मजदूरो, सैनिको तथा किसानो की सोवियते स्थापित हुईं।

फरवरी क्राति के तुरत बाद निर्णायक शक्ति सोवियतो के हाथ मे आ गयी। उन्हे आबादी के बहुत बडे बहुमत का समर्थन प्राप्त था, उनके

में उन्होंने पेत्रोग्राद गैरिज़न के नायक को आदेश दिया कि कल तक राजधानी में सारा हंगामा शांत हो जाना चाहिए, तो उन्हें पूरा विश्वास था कि क्रांति समाप्त हो जायेगी। विद्वेषी और सनकी ज़ारीना मज़दूरों के प्रदर्शनों को गुंडों का आंदोलन कहा करती और पूरी गंभीरता से यह समझती थीं कि क्रांति की आग इसलिए भड़क उठी है कि सरदी काफ़ी नहीं पड़ी। परंतु जन क्रोध की ज्वाला केवल पतित रोमानोव राजवंश के विरुद्ध नहीं, बल्कि संपूर्ण निरंकुश शासन व्यवस्था के विरुद्ध भड़क रही थी। और उसे रोकना या बुझाना किसी के बस में नहीं था।

पुतीलोव कारख़ाना राजधानी के सबसे बड़े कारख़ानों में था। उस कारख़ाने की एक वर्कशाप में हड़ताल हुई और तुरंत पूरे कारख़ाने में फैल गई। वह हड़ताल क्या थी, मानो गरमी के दिनों में सूखे वन में आग लग गई हो। हड़ताल आंदोलन तेज़ी से पूरे पेत्रोग्राद में फैल गया। जब वोलींस्की रेजिमेंट के सैनिकों ने अपने अफ़सरों का आदेश मानने से इनकार कर दिया और बाग़ियों से जा मिले, तो उनकी इस हरकत से ज़ाहिर होता था कि सैनिकों के मन में युद्ध और इसकी आग भड़कानेवालों के विरुद्ध कितनी घृणा भरी हुई है। इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि प्रेओब्रजेंस्की, लियुआनियार्ड तथा अन्य रेजिमेंटों के सैनिकों ने भी वही रास्ता अपनाया। पेत्रोग्राद की सड़कों पर दो धाराएं मिलकर एक हो गयीं। एक में मज़दूर थे, जो दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि ज़ारशाही और पूंजीवाद का अंत करेंगे और दूसरी में सैनिक, अधिकांश किसान, थे, जो युद्ध के ख़िलाफ़ विद्रोह तथा ज़मीन की मांग कर रहे थे।

क्रांति बड़ी तेज़ी से फैली। हड़ताल, जिसके कारण राजधानी का प्रत्येक कारख़ाना बंद हो गया था, अब मज़दूरों और सैनिकों के सशस्त्र विद्रोह का रूप धारण करने लगी।

इस बीच ज़ारशाही के अधिकारी भी चुप नहीं बैठे थे। उन्होंने क्रांति को कुचलने में कोई कसर नहीं उठा रखी। आंदोलन को उसके नेतृत्व से वंचित करने के लिए ज़ार की गुप्त राजनीतिक पुलिस ने कम्युनिस्टों (बोल्शेविकों) की पेत्रोग्राद समिति को गिरफ़्तार कर लिया। ज़ार के आदेश से पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के कमांडर जनरल ख़बालोव ने प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध अपनी सेना मैदान में उतार दी। अफ़सरों ने लोगों की भीड़ पर मशीनगनों से गोलियां चलानी शुरू कर दीं। मज़दूरों

पर सैनिको और पुलिस द्वारा राइफलो से गोलियो की बौछार होने लगी। पेत्रोग्राद की सडके मजदूरो के खून से रगी गयी।

लेकिन यह सब व्यर्थ गया। १२ मार्च, १९१७ के अत तक पेत्रोग्राद जनता के हाथो मे आ चुका था। निरकुश ज़ारशाही का तख्ता उलट चुका था। सम्राट निकोलाई द्वितीय ने राजत्याग के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। रूस की जनता ने, जो आज तक पैरो तले रौंदी जाती और सभी अधिकारो से वचित थी, आजादी की सास ली।

परतु निरकुश शासन का अत होने से देश के समक्ष तात्कालिक समस्याओ का अपने आप समाधान नही हुआ। फरवरी, १९१७ क्राति का अत नही, उसकी शुरूआत थी। मगर फरवरी क्राति के बिना अक्तूबर क्राति नही हो सकती थी। निरकुश शासन का अत समाजवादी क्राति के सघर्ष मे ऐतिहासिक रूप से अनिवार्य बीच की मजिल था।

दोहरी सत्ता

एक कारखाने के बडे से आगन मे मजदूरो की भीड लगी है। तेल मे सने कपडे पहने वे आपस मे बाते कर रहे हैं, हसी-मज़ाक भी हो रहा है, मार्च की मटियाली, नर्म बर्फ को रौंदते चल रहे हैं। कारखाने के कार्यालय से एक मेज़ लाकर मच बनाया गया है। मेज़ पर एक आदमी खडा हो गया और चीखकर बोला "साथियो, हम यहा इसलिए जमा हुए हैं कि मजदूरो के प्रतिनिधियो की सोवियत के लिए, जो हमारी सत्ता होगी, अपने प्रतिनिधि चुने।"

१९१७ के वसत मे इस तरह का दृश्य देश के हर कारखाने मे देखा जा सकता था। फरवरी क्राति के दौरान और उसके बाद के दिनो मे हर जगह मजदूरो के प्रतिनिधियो की सोवियतें कायम की गयी और सैनिक दस्तो तथा नौसेना के जहाजो मे सैनिको और नाविको की समितिया सगठित की गयी।

देश के अधिकाश नगरो और अनेक ज़िलो के मजदूरो सैनिको तथा किसानो की सोवियते स्थापित हुईं।

फरवरी क्राति के तुरत बाद निर्णायक शक्ति सोवियतो के हाथ मे आ गयी। उन्हे आबादी के बहुत बडे बहुमत का समर्थन प्राप्त था, उनके

पीछे क्रांतिकारी सैनिक और नाविक थे और उन्हें मज़दूरों के लाल गार्ड का सशस्त्र समर्थन प्राप्त था, जिसका संगठन फ़रवरी, १९१७ के तनाव के दिनों में किया गया था।

पेत्रोग्राद में १४ मार्च को मज़दूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की पहली संयुक्त बैठक में सैनिक प्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से सैनिक गैरिज़न के लिए एक क्रान्तिकारी ग्रज्ञप्ति तैयार की। यह दस्तावेज़ आदेश नंबर १ के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कहा गया कि सभी राजनीतिक कार्रवाइयों में हर सैनिक दस्ता सोवियत तथा उसकी समिति के अधीन है और यह कि सारे हथियार कम्पनी तथा बटालियन समितियों के हवाले कर दिये जायें और उन्हीं के नियंत्रण में रहें।

इस प्रकार सोवियतों की बड़ी प्रतिष्ठा थी और उनके हाथ में विशाल और कारगर ताक़त आ गयी थी। वे मज़दूरों और किसानों के क्रांतिकारी अधिनायकत्व का साधन थीं।

परंतु राज्य सत्ता सोवियतों के हाथ में नहीं थी। देश में एक और सरकारी सत्ता स्थापित कर ली गयी थी और वह विद्यमान और क्रियाशील थी। वह थी अस्थायी सरकार, जिसके अनेक स्थानीय निकाय थे। इसकी स्थापना इस प्रकार हुई थी। ज़ारशाही रूस में संसद की तरह की एक संस्था, राजकीय दूमा के नाम से, १९०६ से चली आ रही थी और उसको कुछ सीमित अधिकार प्राप्त थे। चौथी राज्य दूमा का चुनाव १९१२ में हुआ था, जिसमें अधिकतर दक्षिणपंथी पार्टियों के प्रतिनिधि थे। १९१४ में उसके पांच कम्युनिस्ट सदस्यों को गिरफ़्तार करके साइबेरिया निर्वासित किया गया था। जब फ़रवरी क्रांति हुई, तो दूमा के सदस्यों ने पहले एक अस्थायी समिति क़ायम की और फिर (१५ मार्च को) एक बड़े जमींदार राजा ल्वोव के नेतृत्व में एक अस्थायी सरकार की स्थापना की। सभी महत्वपूर्ण पदों पर दक्षिणपंथी पूंजीवादी पार्टियों के प्रतिनिधि नियुक्त किये गये। इनमें गूचकोव, कोनोवालोव और तेरेश्चेंको जैसे बड़े पूंजीपति थे। अस्थायी सरकार दरअसल पूंजीवादी वर्ग का अधिनायकत्व थी। नतीजा यह हुआ कि देश में दो सत्ताएं, दो अधिनायकत्व साथ-साथ क़ायम और क्रियाशील हो गये।

इतिहास की सभी क्रांतियों में जहां कुछ बातें समान होती हैं, वहां समय, स्थान तथा प्रत्येक देश के ऐतिहासिक विकास के कारण उनकी

अपनी-अपनी विशेषताएं भी होती हैं। दोहरी सत्ता की स्थापना रूस की १९१७ की फरवरी क्रांति की एक विशेषता थी।

ज्यों ही जारशाही का अंत हुआ देश में एक निर्मम राजनीतिक संघर्ष शुरू हो गया। विभिन्न पार्टियों तथा संगठनों ने, जिन्हें अब खुल्लम-खुल्ला काम करने का मौका मिला था, अपनी-अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए पूरा जोर लगा दिया।

उस समय राजनीतिक क्षेत्र में मुख्य पार्टियां कौनसी थीं?

तथाकथित संवैधानिक-जनवादी पार्टी (कैडेट) वित्तीय तथा औद्योगिक पूंजीवादी वर्ग के हितों की प्रतिनिधि थी। इस पार्टी का प्रभाव पूंजीवादी बुद्धिजीवियों की उच्च श्रेणी में तथा छात्र नवयुवकों और अफसरों में फैला हुआ था। इसके नेताओं में इतिहास के प्रोफेसर मिल्युकोव, डाक्टर शिगारेव तथा प्रथम अस्थायी सरकार के अध्यक्ष राजा ल्वोव थे।

इस कैडेट पार्टी से दक्षिण अक्तूबरवादी पार्टी थी, जिसके नेता मास्को के उद्योगपति गुचकोव थे। अक्तूबरवादी पार्टी पूंजीवादी जमींदारों तथा बड़े साम्राज्यवादी पूंजीपतियों की समर्थक थी। कैडेट तथा अक्तूबरवादी दोनों ही जर्मनी के विरुद्ध युद्ध को जारी रखना चाहते थे। उन्होंने आठ घंटे के कार्य दिवस का तथा किसानों को जमीन देने का विरोध किया।

दो निम्नपूंजीवादी पार्टियां बहुत सक्रिय थीं—सामाजिक-जनवादी (मेन्शेविक) तथा समाजवादी-क्रांतिकारी। मेन्शेविकों को बुद्धिजीवियों के एक भाग (दफ्तरी कर्मचारियों और शिक्षकों) का तथा मजदूरों (खासकर विशेषाधिकारप्राप्त लोगों का समूह) के एक छोटे से भाग का समर्थन प्राप्त था। मेन्शेविकों में कई गुट और प्रवृत्तियां थीं, जिनके नेता प्लेखानोव, मार्तोव, दान, छेईद्जे, त्सेरेतेली आदि थे। समाजवादी-क्रांतिकारियों को भी बुद्धिजीवियों के एक भाग का समर्थन प्राप्त था, परंतु वे अपने आपको "किसानों की पार्टी" कहा करते थे और विशेष रूप से देहातों में सक्रिय थे, जहां मुख्यतया ग्रामीण पूंजीपतियों (कुलकों) का समर्थन उन्हें हासिल था। समाजवादी क्रांतिकारियों में भांति भांति के लोग थे, जिसके कारण उनमें अनेक गुट फिर टूटकर अलग अलग पार्टियां बन गयीं। दक्षिणपक्ष और मध्यमार्गियों का नेतृत्व अव्क्सेन्त्येव, चेर्नोव, गोत्स और मास्लोव कर रहे थे। वामपक्ष में स्पिरिदोनोवा, करेलिन, आदि थे।

मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी अपने आपको समाजवादी कहा करते थे, मगर दरअसल वे पूंजीवादी सत्ता को सहारा दे रहे थे। उनका उद्देश्य पूंजीवादी सत्ता के ख़िलाफ़ संघर्ष करना नहीं, बल्कि उससे समझौता करना था (इसी लिए उन्हें समझौतापरस्त कहा जाता था)। उनका ख़्याल था कि रूस अभी समाजवादी क्रांति के लिए तैयार नहीं है। अतः वे पूंजीवादी-संसदीय आधार पर राष्ट्रीय विकास का समर्थन करते थे।

एकमात्र अटल क्रांतिकारी पार्टी कम्युनिस्टों (बोल्शेविकों) की थी। १९१७ में इसका बाक़ायदा नाम रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) था। बोल्शेविक पार्टी ने घोषणा की कि उसका उद्देश्य है: समाजवादी क्रांति को पूरा करना, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करना तथा कम्युनिस्ट समाज की विजय के लिए संघर्ष करना। वह मजदूर वर्ग की पार्टी थी और इसलिए वह सभी मेहनतकशों के हितों के लिए लड़ती थी। उसका ख़्याल था कि मजदूर वर्ग तमाम उत्पीड़ित और शोषित जनता का नेता है।

बोल्शेविक पार्टी के मूल केंद्र-बिंदु थे फ़ैक्टरियों और कारखानों में पीढ़ी दर पीढ़ी काम करनेवाले मजदूर (१९१७ में पार्टी के ६० प्रतिशत सदस्य ऐसे ही लोग थे)। पार्टी में क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों और ग़रीब किसानों के भी अनेक प्रतिनिधि थे।

पार्टी के सर्वमान्य नेता व्लादीमिर इल्यीच लेनिन (उल्यानोव) थे। उनके पिता वोल्गा की छोटी नगरी सिम्बीर्स्क (वर्तमान उल्यानोव्स्क) में एक शिक्षक थे। लेनिन ने युवावस्था से ही अपना जीवन मेहनतकश जनता की मुक्ति के ध्येय के लिए अर्पित कर दिया था। ज़ार की सरकार ने उनपर बड़े अत्याचार किये। उन्हें कई वर्ष कारावास और निर्वासन में बिताने पड़े। लेनिन एक महान सिद्धांतकार थे। उन्होंने मार्क्सवाद को सृजनात्मक रूप से उन नयी स्थितियों के अनुसार विकसित किया, जो उस समय उत्पन्न हुईं, जब पूंजीवाद ने अपनी अंतिम अवस्था – साम्राज्यवाद – में प्रवेश किया। वह समाजवादी क्रांति के मेधावी रणनीतिविद थे। लेनिन में जहां एक सिद्धांतकार की असाधारण प्रतिभा थी, वहीं साथ ही उनमें जबर्दस्त अन्तर्बल, दृढ़ प्रतिज्ञा, एक व्यावहारिक नेता की सांगठनिक क्षमता तथा सुनिश्चितता थी, एक क्रांतिकारी का जोश तथा एक महान विचारक की बुद्धिमत्ता थी।

लेनिन ने ही रूस के श्रमजीवियो के मुक्ति सग्राम का नेतृत्व किया। मजदूर वर्ग तथा समस्त उत्पीडित जनता का सौभाग्य था कि उसको इतिहास के एक निर्णायक तथा कठिन समय मे लेनिन जैसे नेता मिल गये।

पार्टी के नेताओ मे अनुभवी क्रातिकारी थे, जिन्होंने बरसो ज़ारशाही के विरुद्ध वीरतापूर्वक सघर्ष किया था।

पार्टी के सबसे प्रमुख नेताओ मे याकोव मिखाइलोविच स्वेर्दलोव थे। लेनिन कहा करते थे कि वह ऐसे सर्वहारा नेता थे, जिन्होंने मज़दूर वर्ग को सगठित करने तथा उसकी विजय को सुनिश्चित करने मे सबसे अधिक योगदान दिया।

पोलिश मज़दूर वर्ग के एक प्रमुख सपूत फेलिक्स एद्मुन्दोविच द्ज़ेर्जीन्स्की क्राति के महान सेनानी के रूप मे प्रसिद्ध थे, जिन्होंने अपना सारा मनोबल तथा सारी प्रतिभा श्रमजीवी जनता की मुक्ति के लिए निछावर कर दी।

पेत्रोग्राद के मजदूरो मे एक व्यक्ति बहुत प्रसिद्ध थे—नाटा-सा कद, नुकीली और छोटी-सी दाढ़ी, लोहे के कमानीदार चश्मे के अन्दर से उनकी आखें सामनेवाले व्यक्ति पर केन्द्रित रहती प्रतीत होती थी। यह मिखाईल इवानोविच कालीनिन थे, त्वेर प्रदेश के किसान, जो मज़दूर और फिर पेशेवर क्रातिकारी बन गये। वह हमेशा लोगो के बीच मे रहा करते थे।

अन्द्रेई सेर्गेयेविच बूबनोव १९१७ मे ३४ वर्ष के थे, मगर तभी "पुराने" कम्युनिस्ट हो चुके थे और उस समय १४ बरस से पार्टी के सदस्य थे। इन बरसो मे उन्होंने इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क और मास्को, नीज्नी नोवगोरोद और पीटर्सबर्ग, समारा तथा अन्य नगरो मे पार्टी का काम किया था।

फरवरी क्राति के बाद पार्टी के नेतृत्व मे अधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका जोज़ेफ विस्सारिओनोविच स्तालिन अदा कर रहे थे।

दो अथक पार्टी कार्यकर्ताओ मे एक, जोशीले वक्ता तथा बेहद कर्मशक्तिवान सेर्गेई मिरोनोविच कीरोव तथा दूसरे, प्रतिभाशाली सगठनकर्ता वलेरिआन व्लादीमिरोविच कूइबिशेव थे।

ज़ार की पुलिस के अभिलेखागार मे एक नौजवान क्रातिकारी के फोटो थे—पतला, सुदर चेहरा, घुघराले बाल। नाम था ग्रिगोरी

कोन्स्तान्तीनोविच ओर्जोनिकीद्ज़े (सेर्गो)। कारावास और निर्वासन समाजवाद की विजय में उनकी आस्था को डिगा नहीं सके। इस बोल्शेविक का दृढ़ विश्वास संघर्ष की आग में तप चुका था।

प्रमुख पार्टी कार्यकर्ताओं में अनेक साहसी क्रांतिकारी महिलाएं थीं, जैसे अलेक्सान्द्रा मिखाइलोव्ना कोल्लोन्ताई, नादेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया, रोज़ालिया समोइलोव्ना ज़ेम्ल्याच्का, येलेना द्मीत्रियेव्ना स्तासोवा, आदि।

पुरजोश प्रजानायक तथा ट्रांसकाकेशिया के मजदूरों के प्रिय नेता स्तेपान गेओर्गियेविच शाउम्यान, धातुकर्मी तथा चौथी राजकीय दूमा के सदस्य ग्रिगोरी इवानोविच पेत्रोव्स्की, खराद मजदूर स्तानिस्लाव विकेन्त्येविच कोसिओर, शानदार पत्रकार मिखाइल स्तेपानोविच ओल्मीन्स्की, प्रमुख साहित्यकार, इतिहासकार और अर्थशास्त्री इवान इवानोविच स्क्वोर्त्सोव-स्तेपानोव, अनुभवी पार्टी कार्यकर्ता प्योत्र गेर्मोगेनोविच स्मिदोविच तथा येमेल्यान मिखाइलोविच यारोस्लाव्स्की—ये रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) के प्रमुख व्यक्तियों में कुछ के नाम हैं।

यह बात बिना किसी अतिशयोक्ति के कही जा सकती है कि किसी भी देश में किसी युग के महापुरुषों—महान विचारकों, प्रभावशाली संगठनकर्ताओं तथा साहसी और दूरदर्शी व्यक्तियों—की ऐसी गौरवपूर्ण मंडली पहले कभी नहीं थी।

अमरीकी पत्रकार एल्बर्ट रीस विलियम्स ने अक्तूबर क्रांति को अपनी आंखों से देखा था। संयुक्त राज्य अमरीका वापस जाकर फ़रवरी १९१९ में उन्होंने कहा: "बोल्शेविक बुद्धिजीवी का मुख्य, लाक्षणिक सार है जनगण में विश्वास, इस तथ्य में विश्वास कि मजदूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मजदूर द्वारा हासिल हो सकती है, परन्तु किसी की कल्पना द्वारा निर्मित प्रयोजना के अनुसार नहीं।"

बोल्शेविक पार्टी के नेताओं में जिनोव्येव, कामेनेव, बुखारिन, रीकोव आदि भी थे, जो उन दिनों भी ढुलमुलपन का शिकार थे और केन्द्रीय समिति के बहुमत द्वारा निर्धारित लाइन से अक्सर भटक जाया करते थे। आगे चलकर उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद से नाता तोड़ लिया और उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया।

निरंकुश शासन का अंत होने के बाद बोल्शेविक पार्टी ने रूस के

भावी विकास के संबध मे सभी बुनियादी सवालो पर स्पष्ट और निश्चित मत प्रकट किया। इसका उल्लेख लेनिन की प्रसिद्ध "अप्रैल के थीसिसो" मे था, जिन्हे अप्रैल, १६१७ के अखिल रूसी पार्टी सम्मेलन मे तफ्सीली विचार-विमर्श के बाद स्वीकार किया गया।

मुख्य रणनीति संबधी कार्य पूजीवादी-जनवादी क्राति को समाजवादी क्राति मे परिवर्तित करना था। यह एक सर्वथा वास्तविक और सामयिक कार्य था। मार्क्सवाद को विकसित करने मे लेनिन ने समाजवादी क्राति का स्वयं अपना सिद्धात प्रस्तुत किया था। उन्होने यह प्रदर्शित किया कि साम्राज्यवाद के युग मे एक सफल समाजवादी क्राति की सारी शर्ते प्रकट हो चुकी थी। लेनिन ने लिखा कि साम्राज्यवाद "ह्रासोन्मुखी पूजीवाद" है, कि "साम्राज्यवाद सर्वहारा वर्ग की सामाजिक क्राति की पूर्वबेला है।' इसी के साथ उन्होने यह भी बताया कि साम्राज्यवाद के दौरान विभिन्न देशो के अधिकाधिक असमान आर्थिक और राजनीतिक विकास के कारण यह बिल्कुल संभव हो गया है कि समाजवादी क्राति पहले केवल एक या कुछ ही देशो मे विजयी हो। अगर किसी देश मे क्रातिकारी स्थिति उत्पन्न हो, तो उस देश का सर्वहारा वर्ग सत्ता पर कब्जा करने तथा समाजवादी निर्माण को विकसित करने की सुविधाओ से लाभ उठा सकता है और उसे उठाना चाहिए। इस तरह वह तमाम देशो के क्रातिकारियो की बडी सेवा करेगा।

घटनाओ का विकास इस तरह हुआ कि रूस ही को सबसे पहले साम्राज्यवादी मोर्चे को तोडकर आगे बढने का मौका मिल गया।

समाजवादी क्राति की विजय की सभी आवश्यक स्थितिया रूस मे मौजूद थी। एकमात्र इसी प्रकार की क्राति देश के जीवन के बुनियादी अतर्विरोधो को हल कर सकती थी। समाजवादी क्राति मजदूर वर्ग तथा गरीब किसानो को पूजीवादी शोषण से मुक्त करती, श्रमजीवी किसानो को इससे जमीन और आजादी मिलती, इससे उत्पीड़ित जातियो को स्वाधीनता प्राप्त होती और साम्राज्यवादी युद्ध का अत हो जाता, जिससे लोग बेहद घृणा करते थे। इसी लिए रूस की आबादी का जबरदस्त बहुमत समाजवादी क्राति का समर्थन करता था।

कम्युनिस्ट पार्टी ने बिल्कुल सही मूल्याकन किया कि अस्थायी सरकार पूजीवादी सरकार है और इस बात पर जोर दिया कि युद्ध अभी भी

साम्राज्यवादी युद्ध है और उसने एक न्यायपूर्ण तथा जनवादी शांति स्थापित करने का आह्वान किया।

आर्थिक क्षेत्र में पार्टी ने मेहनतकशों की परिस्थिति को सुधारने और शोषकों की स्थिति को कमज़ोर करने के लिए अनेक कार्रवाइयों का सुझाव रखा। इनमें बड़ी ज़मींदारियों की ज़ब्ती के बाद भूमि का राष्ट्रीयकरण, तमाम बैंकों को मिलाकर मज़दूरों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नियंत्रण में एक राजकीय बैंक की स्थापना तथा माल उत्पादन और वितरण पर मज़दूरों के नियंत्रण की स्थापना शामिल थी।

दोहरी सत्ता की ख़ास हालतों में कम्युनिस्ट पार्टी ने नारा दिया: "सारी सत्ता सोवियतों को दो!" इसका मतलब था कि दोहरी सत्ता का अन्त हो और सोवियतों की एकमात्र सत्ता स्थापित हो। हालात कुछ इस कारण पेचीदा हो रहे थे कि फ़रवरी क्रांति के बाद पहले कुछ महीने अधिकांश सोवियतों पर समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक हावी थे, जो एकमात्र सत्ता सोवियतों के हाथ में सौंपने के ख़िलाफ़ थे और अस्थायी सरकार का समर्थन करते थे। फिर भी बोल्शेविक अपनी इस मांग पर डटे रहे कि सारी सत्ता सोवियतों को सौंप दी जाये। वे समझते थे कि इससे एक नये प्रकार के राज्य का निर्माण होगा, जो जनगण के हितों की रक्षा करेगा। केवल सोवियतों के आधार पर बनी हुई सरकार जनता की मांगों और उनकी आकांक्षाओं को पूरा कर सकेगी।

यह क्रांति के शांतिपूर्ण विकास का कार्यक्रम था, जिसकी संभावना रूस के ठोस घटनाक्रम से पैदा हुई थी। अस्थायी सरकार कमज़ोर थी और निर्णायक शक्ति सोवियतों के हाथ में थी और उन्हें जनता के विशाल बहुमत का समर्थन हासिल था। उनके लिए बस सत्ता ग्रहण करने का ऐलान करना बाक़ी रह गया था। उनके ख़िलाफ़ कोई कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए कम्युनिस्टों ने उस समय अस्थायी सरकार का तुरंत तख़्ता उलटने के लिए सशस्त्र विद्रोह का नारा नहीं दिया। वे एक ऐसी सरकार का तख़्ता उलटने का नारा नहीं दे सकते थे, जिसे सोवियतों का समर्थन हासिल था। ज़रूरत इस बात की थी कि सोवियतें अपना समर्थन वापस ले लें और स्वयं सत्ता की ज़िम्मेदारी संभालें।

अगर सोवियतें सत्ता ग्रहण कर लेतीं, तो उनके समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक नेताओं के लिए अपने ऊपर नक़ाब डाले रहना और वादों

की आड मे छिपना सभव नहीं होता। लोग उनसे कहते· "अब सत्ता आपके हाथ मे है, अपने वादे पूरे कीजिये!" लेकिन मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी जनता को शांति, भूमि और रोटी देना नही चाहते थे, और जब अमल का वक्त आता, तो अवश्य ही उनके चेहरे से नकाब उतर जाता। और तब जनता को ठोस सबूत मिल जाता कि मेन्शेविको और समाजवादी-क्रांतिकारियो की वास्तविक भूमिका क्या है। उसका भ्रम दूर हो जाता और यह विश्वास हो जाता कि एकमात्र बोल्शेविक पार्टी ही जनता की मागो को पूरा कर सकती है। जनता शांतिपूर्ण तरीके से सोवियतो के जनवादी सगठन के जरिये से मेन्शेविको और समाजवादी-क्रांतिकारियो को वादा खिलाफी के कारण सोवियतो से वापस बुला लेती और नेतृत्व बोल्शेविको के हाथो मे सौंप देती।

"सारी सत्ता सोवियतो को दो!" क्रांति का मुख्य नारा बन गया।

समाजवादी क्रान्ति का जोर पकडना

१९१७ के वसत और गर्मियो मे रूस मे क्रांतिकारी आदोलन बहुत तेजी और जोरो से बढ़ा।

जारशाही के विरुद्ध लडने मे देश की मेहनतकश जनता शांति, भूमि, रोटी और आजादी के लिए लड रही थी। पूजीवादी अस्थायी सरकार जनता की इन मागो को पूरा नही कर रही थी। इनको पूरा करने का उसका न तो कोई इरादा था और न वह ऐसा कर ही सकती थी, क्योंकि यह जनगण के हितो का नहीं, बल्कि पूजीपतियों और जमींदारो के हितो का प्रतिनिधि और रक्षक थी।

युद्ध जारी रहा। अस्थायी सरकार ने नारा दिया कि क्रांति की सफलताओं की रक्षा करने के लिए युद्ध जारी रखा जाये। मगर वह प्रतिरक्षात्मक युद्ध नही बना; अभी भी वह साम्राज्यवादी युद्ध था, जो जमींदारो और पूजिपतियो के हित मे और नये देशो पर कब्जा करने तथा नयी जातियो को गुलाम बनाने के उद्देश्य से लडा जा रहा था। अस्थायी सरकार ने पुराने नारे "जब तक विजय न हो, युद्ध जारी रहे!" को कायम रखकर जनता की आशाओ पर पानी फेर दिया।

आबादी में बड़ा बहुमत किसानों का था। उनकी मांग थी कि ज़मींदारियां उनके हवाले कर दी जायें। अस्थायी सरकार उनकी इस मांग को पूरा करने पर तैयार नहीं थी, क्योंकि किसानों को ज़मीन देने का मतलब था ज़मींदारों से ज़मीन ले लेना। उस समय तक अधिकांश ज़मींदारियां पूंजीपतियों के बैंकों के हाथों में गिरवी रखी जा चुकी थीं। इसलिए किसानों को ज़मीन देने का मतलब होता पूंजीपतियों पर चोट करना। नये मंत्रिगण ज़मींदारों और पूंजीपतियों के हितों पर कैसे चोट कर सकते थे, जब वे उन्हीं की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे?

अस्थायी सरकार ने मज़दूरों की हालत में सुधार करने के लिए कोई क़दम नहीं उठाया। उसने आठ घंटे का कार्य दिवस जारी करने, मज़दूरी बढ़ाने और काम की स्थिति सुधारने का विरोध किया। उलटे, पूंजीपतियों को हर प्रकार की सुविधाएं दी गयीं।

अन्न संकट गहरा हो गया। शहरों में रोटी की रसद की व्यवस्था ठीक नहीं थी। खाद्यान्न की क़ीमतें आकाश को छू रही थीं।

जातीय समस्या का भी समाधान नहीं हो रहा था। ग़ैर-रूसी जातियों के करोड़ों मेहनतकशों को कोई अधिकार प्राप्त नहीं थे। सरकार वास्तव में ज़ारशाही की औपनिवेशिक नीति का ही पालन कर रही थी। ज़ारशाही के उत्पीड़न की सारी मशीनरी अपनी जगह मौजूद थी।

क्रांति की कर्णधार जनता को बेवक़ूफ़ बनाया जा रहा था। देश के सामने जो समस्याएं थीं, उन्हें पूंजीवादी-जनवादी क्रांति हल नहीं कर रही थी। एक ऐसी सरकार सत्तारूढ़ हो गयी थी, जिसका मेहनतकश जनता से कोई लगाव नहीं था और वह देश को सामाजिक प्रगति की ओर नहीं, बल्कि युद्ध, विनाश और भुखमरी के रास्ते अनिवार्य राष्ट्रीय तबाही की ओर लिये जा रही थी।

इससे सारे देश में जनता सक्रिय हो उठी। क्रांति की आग हर जगह—मोर्चे पर, मोर्चे के पीछे, औद्योगिक केंद्रों और दूर-दूर के गांवों में, राजधानी में और दूरवर्ती इलाक़ों में सुलगने लगी।

देश के कोने-कोने से ख़तरे की स्थिति के तार अस्थायी सरकार के पास पहुंचने लगे। तार विभिन्न जगहों से आ रहे थे, मगर सब में बात एक ही थी: उनमें लिखा होता कि किसान ज़मीन के लिए संघर्ष तथा ज़मींदारों के ख़िलाफ़ विद्रोह कर रहे हैं।

कूर्स्क गुबेर्निया* मे किसानो ने अलेक्सान्द्रोव्का जमीदारी पर 'हमला बोल दिया', रियाजान गुबेर्निया मे किसानो ने राजा लुबेत्स्कोई की जमीदारी पर कब्जा कर लिया था और स्वय उसका प्रबध कर रहे थे। तूला गुबेर्निया के देहातो मे एक जमीदारी मे आग लगा दी गयी थी। कही व्लादीमिर गुबेर्निया मे जमीदारो की जमीनो पर जबरदस्ती हल चला लिया गया था, समारा गुबेर्निया मे चरागाहे काट डाली गयी थी और कजान गुबेर्निया मे वनो के वृक्ष काट लिये गये थे प्रति दिन इस प्रकार के समाचार पेत्रोग्राद आया करते।

किसानो का जन आदोलन मार्च मे शुरू हुआ और दिनोदिन बढता गया। जुलाई, १६१७ मे ६६ मे से ४३ गुबेर्नियाओ मे किसानो के विद्रोह की आग फैल चुकी थी।

क्रातिकारी सघर्ष का एक अत्यत महत्वपूर्ण क्षेत्र सेना थी, जिसमे लाखो मजदूर और किसान थे। सैनिको मे विशाल बहुमत किसानो का था। उन्हे स्वभावत जमीदारो के विरुद्ध किसानो के सघर्षों से सहानुभूति थी और वे भूमि समस्या के तत्काल समाधान की माग कर रहे थे।

कठोर तथ्यो ने सैनिको के इस भ्रम को चकनाचूर कर दिया कि वे प्रतिरक्षात्मक युद्ध लड रहे है। वे अधिकाधिक इसका असली स्वरूप समझने लगे।

मोर्चों के कमाडरो की एक बैठक मई १६१७ मे हुई जिसमे सभी इस बात पर सहमत थे कि सैनिको का मन युद्ध मे नही है उन्हे सिर्फ शाति और जमीन चाहिए। जनरल ब्रुसीलोव ने जो उस समय दक्षिण पश्चिमी मोर्चे के कमाडर थे, बताया कि उनकी रेजिमेटो मे से एक ने हमला करने से इनकार कर दिया था और बहुत देर तक सैनिको को समझाने-बुझाने का प्रयास किया गया। सैनिको की ओर से कहा गया कि उन्हे लिखित जवाब दिया जायेगा। चन्द मिनट बाद एक पोस्टर उनके सामने रख दिया गया, जिसपर लिखा था "शाति, चाहे किसी कीमत पर! युद्ध बद करो!"

सेना मे बोल्शेविको का प्रभाव दिनोदिन बढता गया। जून, १६१७ तक २६,००० सैनिक और जूनियर अफसर रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) मे शामिल हो चुके थे।

---

*पुराने रूस मे प्रदेश के बराबर इलाके का नाम गुबेर्निया था।

इस दौरान में ग़ैर-रूसी जातियों की मेहनतकश जनता की सक्रियता बढ़ती जा रही थी। यह सही है कि पूंजीवादी राष्ट्रीयतावादी इस सक्रियता से अपना मतलब निकालना चाहते थे। उनकी चेष्टा थी कि इन जातियों को विलग कर लें, ताकि उनकी श्रमजीवी जनता में और रूसी सर्वहारा वर्ग में ज़्यादा मज़बूत एका न क़ायम होने पाये। राष्ट्रीय पूंजीपतियों के प्रतिनिधि यों कहने को राष्ट्रीय समानता और आज़ादी का नाम ज़रूर लेते थे, मगर चूंकि उन्हें क्रांति से नफ़रत थी, इसलिए वे रूसी पूंजीपतियों से गंठबंधन करना चाहते थे। कम्युनिस्टों ने उत्पीड़ित जातियों में अपना काम तेज़ कर दिया और उन्हें सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के झंडे तले एकताबद्ध करते तथा रूसी और स्थानीय शोषकों के ख़िलाफ़ राष्ट्रीय और सामाजिक मुक्ति संघर्ष में उनकी सहायता करते रहे। बोल्शेविक पार्टी ने राष्ट्रों के अलग होने और अपना आज़ाद राज्य स्थापित करने के अधिकार का समर्थन किया। इस अधिकार को मानने के कारण जातियों में फूट नहीं पड़ी। उलटे, इससे उनकी एकता शक्तिशाली हुई, उनमें जनवाद और स्वेच्छा के आधार पर मेल-मिलाप बढ़ा और श्रमजीवी जनता अपने क्रांतिकारी संघर्ष में एकताबद्ध हुई।

क्रांतिकारी आंदोलन की प्रमुख शक्ति रूस का सर्वहारा वर्ग थी। मज़दूरों ने पूंजीपतियों के ख़िलाफ़ लड़ाई में हड़ताल का ज़ोरदार हथियार उठा रखा था। सभी राजनीतिक कार्रवाइयों में वे आगे-आगे थे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी जोश, मुस्तैदी और पहलक़दमी से किसानों और सैनिकों को प्रेरित किया और बराबर अपने संगठन और एकता को बेहतर बनाते रहे।

मई, १९१७ में देश के कोने-कोने में हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया। मज़दूरों की मांग थी कि उनकी मज़दूरी बढ़ाई जाये और काम की स्थिति सुधारी जाये। जून में हड़तालों की संख्या और बढ़ गयी। वोल्गा तट पर सोर्मोवो कारख़ाने के २० हज़ार मज़दूरों ने हड़ताल कर दी। फिर मास्को और मास्को प्रदेश के धातु कर्मी मज़दूरों की हड़ताल शुरू हुई। दोनेत्स बेसिन और बाकू में भी भयंकर वर्गीय लड़ाइयां भड़क उठीं। उराल में भी हड़ताल आंदोलन फैल रहा था। मास्को और पेत्रोग्राद के रेलवे मज़दूर भी अधिकाधिक मुस्तैदी से संघर्ष में शामिल हो गये।

पूंजीपतियों ने उनका बड़ी सख़्ती से मुक़ाबला किया। उन्होंने मज़दूर वर्ग के अधिकारों को पामाल किया और उनपर अधिकाधिक आर्थिक दबाव

डालने लगे। उन्होंने सर्वहारा वर्ग को विघटित करने तथा उसकी क्रांतिकारी दृढ़ता को कमजोर करने का प्रयास किया। १६१७ की गर्मियों में "तालाबंदी" का मनहूस शब्द मजदूरों के इलाकों मे चारों ओर गूंज उठा। पूंजीपति अपने कारखाने बंद और मजदूरों को बेरोजगार बना रहे थे।

मई मे १०८ कारखाने बंद हुए, जून म १२५ और २०६ – जुलाई मे। ६५ हजार मजदूर बेरोजगार हो गये। पूंजीपति वर्ग के उद्देश्य को बड़े उद्योगपति रियाबुशीस्की ने स्पष्ट शब्दों मे निर्लज्ज भाव से कह दिया था। एक समय आयेगा, उसने कहा, जब "भूख और दरिद्रता के चंगुल जनता के बंधुओं, विभिन्न समितियों और सोवियतों के सदस्यों का गला दबायेंगे।"

ऐसी स्थिति मे मजदूरों और पूंजीपतियो के बीच संघर्ष और भी तीव्र होता गया।

मजदूरों की लडाई केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नही थी। उन्होंने राजनीतिक मांगें भी पेश कीं, सोवियतों की कार्रवाई मे सक्रिय भाग लिया और सारी सत्ता सोवियतों को सौंपने के नारे का समर्थन किया।

मजदूर वर्ग के संगठन और उसकी एकता को बेहतर बनाने मे फैक्टरी कमिटियों ने बड़ा काम किया। इन कमिटियों ने, जो फैक्टरियों के सब मजदूरों द्वारा चुनी जाती थीं, उत्पादन तथा मजदूर कार्यकलाप के सारे पहलुओं का जिम्मा ले लिया। सोवियतों से संपर्क स्थापित करना, रसद की समस्याओं को निबटाना, आठ घंटे के कार्य दिवस की व्यवस्था करना तथा कारखानों की सुरक्षा का बंदोबस्त करना सब उनका काम था।

कारखानों के प्रांगणों मे, मैदानों और खामोश गलियों मे सैनिक आदेशों के शब्द सुने जा सकते तथा सादी पोशाक, मगर सैनिक पलटन के रूप मे लोगों को राइफल और पिस्तौल लेकर कवायद करते देखा जा सकता था। यह लाल गार्ड के दस्ते थे, जिन्हें फरवरी क्रांति के दिनों मे संगठित किया गया था। इन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा था। १६१७ की गर्मियों और पतझड के मौसम मे उनकी संख्या बहुत बढ़ गयी। मजदूर वर्ग ने हथियार उठा लिया था और आगे की फैसलाकुन लडाइयों के लिए उनका प्रयोग सीख रहा था।

अस्थायी सरकार से जनता के असंतोष तथा बढ़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के कारण अनिवार्यतः राजनीतिक संकट उत्पन्न होने लगे।

पहला, जिसे अप्रैल संकट कहा जाता है, १ मई (१८ अप्रैल) को शुरू हुआ, जब पेत्रोग्राद के मज़दूरों और सैनिकों को पता लगा कि विदेशी मंत्री मिल्युकोव ने एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करके सरकार की यह दृढ़ प्रतिज्ञा व्यक्त की है कि अंतिम विजय तक युद्ध जारी रखा जायेगा। एक लाख मज़दूर और सैनिक मिल्युकोव के इस्तीफ़े की मांग करते सड़कों पर निकल आये। अन्य रूसी शहरों में भी प्रदर्शन हुए, जिनमें जनता ने अस्थायी सरकार की नीतियों से अपना असंतोष प्रकट किया। यह सही है कि सैनिकों की एक अच्छी ख़ासी संख्या, जो मिल्युकोव के इस्तीफ़े की मांग कर रही थी, यह नहीं जानती थी कि समस्या का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं, बल्कि सरकार के वर्ग-स्वरूप से है।

उस समय पेत्रोग्राद सोवियत बड़ी आसानी से सत्ता अपने हाथ में ले सकती थी। मगर मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी नेताओं ने इस अवसर से लाभ उठाने से इनकार कर दिया और अपने प्रतिनिधि सरकार के पास भेजकर उसका समर्थन किया।

सरकार का पुनर्गठन किया गया। मंत्रियों में, प्रधान मंत्री ज़मींदार ल्वोव के साथ कई मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी मंत्री भी थे: समाजवादी-क्रांतिकारी केरेन्स्की युद्ध और नौसेना के मंत्री थे; समाजवादी-क्रांतिकारी चेर्नोव को कृषि मंत्री नियुक्त किया गया; मेन्शेविक स्कोबेलेव श्रम मंत्री बने। लेकिन इन लोगों के नियुक्त होने से स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। मिल्युकोव और गुचकोव निकल गये थे, मगर सरकार की नीति वही थी। "समाजवादी" मंत्रियों ने पूंजीवादी मंत्रियों की ही नीतियों पर अमल किया।

बोल्शेविकों ने बताया, "संकट के कारणों का अंत नहीं हुआ और पुनः ऐसे संकटों का आना अवश्यंभावी है।"*

दो महीने भी नहीं होने पाये थे कि एक और संकट, जो पहले से अधिक बड़ा और ख़तरनाक था, उत्पन्न हुआ।

१८ जून को पेत्रोग्राद में मजदूरों और सैनिकों का एक बड़ा प्रदर्शन हुआ। लगभग ५ लाख आदमियों ने उसमें भाग लिया। यह एक ऐसी

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, चौथा रूसी संस्करण, खंड २४, पृष्ठ १८१

घटना थी, जो क्रांतिकारी रूस की राजधानी ने पहले कभी नही देखी थी। शहर के कोने-कोने से प्रदर्शनकारियो की टोलिया केंद्र की ओर आ रही थी। सबके हाथो मे झडे थे, जिनपर बोल्शेविक नारे लिखे थे। मेन्शेविक पत्र "नोवाया जीज्न" (नया जीवन) को भी यह मानना पडा "रविवार के प्रदर्शन ने सिद्ध कर दिया कि पेत्रोग्राद के मज़दूरो और सैनिको मे 'बोल्शेविज्म' को सपूर्ण विजय प्राप्त हो गयी है।"

और इस बार भी पेत्रोग्राद के मेहनतकशो के प्रदर्शन के समर्थन मे मास्को, कीयेव, त्वेर, मीन्स्क, वोरोनेज, तोम्स्क तथा अन्य अनेक शहरो मे क्रांतिकारी कार्रवाइया हुईं।

अस्थायी सरकार जनता का समर्थन प्राप्त करने मे असमर्थ थी। उसके सामने फिर गम्भीर सकट उपस्थित हुआ। हर चीज़ यही बता रही थी कि देश मे क्रांतिकारी आदोलन तेजी से बढ रहा है और जनता जल्द से जल्द बुनियादी राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तनो की माग कर रही है। ये तब्दीलिया सारी सत्ता सोवियतो के हाथो मे सौप देने से ही लायी जा सकती थी।

लेकिन मेन्शेविको और समाजवादी-क्रांतिकारियो ने सोवियतो को अस्थायी सरकार का अधीन बनाये रखने की अपनी नीति जारी रखी। सोवियतो की पहली अखिल रूसी काग्रेस की बैठके जून भर होती रही। काग्रेस मे एक हज़ार से अधिक मज़दूरो, सैनिको और किसानो की सोवियतो के प्रतिनिधि थे। कोई चीज़ ऐसी नही थी, जो काग्रेस को सत्ता अपने हाथो मे लेने से रोक सकती। मगर अधिकाश स्थानीय सोवियतो की तरह इस काग्रेस मे भी मेन्शेविको और समाजवादी क्रांतिकारियो का बोलबाला था। काग्रेस ने सत्ता पर अधिकार करने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।

दोहरी सत्ता मे शक्तियो का जो अस्थायी सतुलन निहित था वह अधिक दिन जारी नही रह सकता था। एक नया विस्फोट अवश्यभावी था।

वह १६-१७ जुलाई को हुआ, जब पेत्रोग्राद के मजदूर और सैनिक सडको पर यह माग करते निकल पडे कि सत्ता सोवियतो के हवाले की जाये। १७ जुलाई को ५ लाख से अधिक मज़दूरो, सैनिको और नौसैनिको ने प्रदर्शन मे भाग लिया। मजदूरो के शातिपूर्ण, सगठित जत्थे शहर के विभिन्न भागो से मार्च करते हुए ताव्रीदा प्रासाद की ओर बढे, जहा

मजदूरों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों की अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति का कार्यालय था।

परंतु सरकार शांतिपूर्ण समाधान नहीं चाहती थी। इसने प्रदर्शन को बहाना बनाकर क्रांतिकारी शक्तियों पर खुले आम और व्यापक हमला बोल दिया। मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी नेताओं ने मंत्रियों का पूरा समर्थन किया।

अचानक गोलियों की आवाज से शांतिपूर्ण वातावरण भंग हो गया। युंकरों* और कज्ज़ाकों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलायीं। शाम होते-होते सरकार ने प्रदर्शनकारियों के खिलाफ़ फ़ौजी तोपखाना और बाक़ायदा सेना मैदान में उतार दी थी। शांतिपूर्ण प्रदर्शन को दबा दिया गया।

प्रतिक्रांति ने अपनी सफलता को सुदृढ़ करने में बड़ी जल्दी की। पेत्रोग्राद की सड़कों पर घायलों की चीख़-पुकार बंद भी नहीं होने पायी थी कि प्रतिक्रांतिकारी मार-काट शुरू हुई। मुख्य हमले का रुख़ बोल्शेविक पार्टी के खिलाफ़ था। केंद्रीय बोल्शेविक समाचारपत्र "प्राव्दा" के संपादकीय कार्यालय पर और इसी के साथ अनेक बोल्शेविक समितियों और ट्रेड-यूनियनों के कार्यालयों पर भी छापा मारा गया। जिन सैनिक दस्तों ने जुलाई प्रदर्शन में भाग लिया था, उन्हें भंग कर दिया गया। सरकार ने मोर्चे पर मृत्यु-दंड जारी किया।

सरकार ने २० जुलाई को अपनी एक विज्ञप्ति प्रकाशित की, जिसमें लेनिन तथा अन्य बोल्शेविकों को गिरफ़्तार करने और उनपर मुक़दमा चलाने का आदेश था।

इसका दस्तावेज़ी सबूत मौजूद है कि मुक़दमा चलाने से पहले ही लेनिन को मार देने का विचार था। पार्टी की केंद्रीय समिति के फ़ैसले के अनुसार लेनिन छिप गये। वह पेत्रोग्राद से कुछ ही दूर राज्लीव रेलवे स्टेशन चले गये, जहां वह एक घास काटनेवाले के भेस में एक महीने तक छिपे रहे, मगर पार्टी की केंद्रीय समिति से उनका गहरा संपर्क बराबर क़ायम था और वह क्रांति की सैद्धांतिक और व्यावहारिक समस्याओं पर बराबर काम करते रहे। बाद में पतझड़ के क़रीब आने पर लेनिन फ़िनलैंड चले गये, जहां वह अक्तूबर तक रहे।

---

*फ़ौजी अफ़सर स्कूलों के विद्यार्थी।

जुलाई का महीना क्राति के विकास मे मोड-बिन्दु था। दोहरी सत्ता का अन्त हो चुका था; सारी सत्ता अब प्रतिक्रातिकारी अस्थायी सरकार के हाथो मे सकेन्द्रित हो चुकी थी। सत्ता सोवियतो के हाथो से निकल गयी।

लेनिन ने लिखा· "जुलाई का मोड-बिन्दु वस्तुनिष्ठ स्थिति मे ठीक एक बुनियादी परिवर्तन था। राज्य सत्ता की अस्थायी स्थिति का अंत हो चुका था। निर्णायक बिंदु पर सत्ता प्रतिक्रातिकारियो के हाथो मे चली गयी।"*

"सारी सत्ता सोवियतो को दो!" का नारा बेमानी हो चुका था और कुछ दिनो के लिए इसे वापस ले लिया गया। लेकिन चन्द सप्ताह बाद जब सोवियतो पर बोल्शेविको का अधिकार हो गया, तो यह नारा फिर उपयुक्त हो गया। चूंकि सरकार ने जनता के विरुद्ध हिंसा का मार्ग अपनाया था और सारी सत्ता अपने हाथो मे ले ली थी, इसलिए अब इसे शातिपूर्ण उपाय से बेदखल करना सभव नही था। क्राति की शाति-पूर्ण अवस्था समाप्त हो चुकी थी।

जुलाई की घटनाओ से जनता को महत्वपूर्ण सबक़ मिला। इन घटनाओ से पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि अस्थायी सरकार का वास्तविक वर्ग स्वरूप क्या है। एक शातिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाकर अस्थायी सरकार ने जनता के बहुत से भ्रमो को चकनाचूर कर दिया। समझौतापरस्तो—समाजवादी क्रातिकारियो और मेन्शेविको—के चेहरे लोगो के सामने बेनकाब हो गये। उन्होने देख लिया कि ये दोनो पार्टिया प्रतिक्रातिकारी शक्तियो के पीछे चल रही हैं।

इन शक्तियो ने जुलाई मे सफलता प्राप्त करने के बाद बीच रास्ते मे नही रुकने का निश्चय किया। पूजीपति समझ रहे थे कि अस्थायी सरकार (जिसका पुन सगठन किया जा चुका था और जिसके अध्यक्ष अब केरेंस्की थे) क्रातिकारी आदोलन की बाढ को रोकने मे समर्थ नही हो सकती। खुल्लम-खुल्ला एक प्रतिक्रातिकारी अधिनायकत्व कायम करने की योजना बनायी गयी। इस योजना को अमल मे लाने के लिए एक व्यापक षड्यत्र रचा गया, जिसके कर्णधार जनरल कोर्नीलोव थे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २५, पृष्ठ १६६

उन्हें जुलाई की घटनाओं के कुछ ही दिनों बाद सर्वोच्च सेना-नायक नियुक्त किया गया था। उन्होंने सैन्य द्रोह की सीधी तैयारियां शुरू कर दीं। षड्यंत्र की योजना इस प्रकार थी: चुने हुए प्रतिक्रांतिकारी सैनिक दस्ते पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करें और इसी के साथ शहर में विद्रोह का झंडा बुलंद करें और उसपर अधिकार जमा लेने के बाद क्रांतिकारी शक्तियों को निर्ममतापूर्वक कुचल डालें। इस षड्यंत्र में कोर्नीलोव तथा उसके जनरलों के साथ कैडेट पार्टी के नेता भी थे। इनके अतिरिक्त संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस के राजनयिक और सैनिक प्रतिनिधियों ने भी षड्यंत्र में प्रत्यक्ष भाग लिया।

७ सितंबर को कोर्नीलोव ने जनरल क्रीमोव की सवार कोर को पेत्रोग्राद की ओर बढ़ने का आदेश दिया। तीन दिनों में कोर्नीलोव का रिसाला राजधानी के निकट पहुंचने लगा।

ख़तरा बड़ा था। लेकिन इन दिनों में जनता का क्रांतिकारी जोश नयी शक्ति, मुस्तैदी और पहलक़दमी के साथ व्यक्त हुआ। यह बात स्पष्ट हो गयी कि प्रतिक्रांति को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। लोगों ने इस दुस्साहस का दृढ़तापूर्वक तथा निश्चयात्मक रूप से विरोध किया और नये ख़तरे का सामना करने साहसपूर्वक उठ खड़े हुए।

बोल्शेविक पार्टी ने कोर्नीलोव के ख़िलाफ़ जन संघर्ष का नेतृत्व किया। लाल गार्ड के लगभग ६०,००० लोग, सैनिक और नौसैनिक पेत्रोग्राद की रक्षा करने मैदान में उतर आये। बोल्शेविकों के आग्रह पर रेलवे मजदूरों ने रेल की पटरियां उखाड़ लीं, रेलवे लाइनों पर ख़ाली डिब्बों की क़तार खड़ी कर दी और इंजन निकालकर ले गये। क्रीमोव की सेना को आगे बढ़ने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। पेत्रोग्राद के विरुद्ध जो कज़्ज़ाक रेजिमेंटें बढ़ रही थीं, उनमें बोल्शेविक प्रचारक काम करने लगे। जब कज़्ज़ाकों को कोर्नीलोव के षड्यंत्र का हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया और अपने अफ़सरों को गिरफ़्तार कर लिया।

यह बग़ावत एक सप्ताह से भी कम समय में बिल्कुल कुचल दी गयी। पेत्रोग्राद पर चढ़ाई करनेवाली सेना जो देखने में बहुत शक्तिशाली लगती थी, तितर-बितर हो गई। जनरल क्रीमोव के पास कोई सेना ही नहीं रह गयी थी और जब उन्हें गिरफ़्तार होने का ख़तरा हुआ, तो उन्हें

आत्महत्या के सिवा और कोई रास्ता नही दिखाई दिया। उनके पिस्तौल की गोली मानो क्रांति और प्रतिक्रांति के संघर्ष के इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय का अंतिम वाक्य थी। कोर्नीलोव की बगावत से प्रतिक्रांति संपूर्ण विजय की दिशा मे एक निर्णायक कदम उठाना चाहती थी। लेकिन स्थिति ने कोई और ही रुख अपनाया। बगावत कुचल दी गयी और क्रांति ने एक कदम आगे बढाया।

सशस्त्र विद्रोह

नयी स्थितियो मे क्रांति क्या मार्ग अपनाये? सत्ता के लिए सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का रूप क्या हो?

जुलाई की घटनाओ के बाद जब दोहरी सत्ता का अंत हो गया और राज्य सत्ता पूरी तरह पूंजीपतियो के हाथो मे संकेद्रित हो गयी, तो कम्युनिस्ट पार्टी को इन्ही सवालो का सामना करना पड़ा।

लेनिन ने स्थिति का गहन और सर्वतोमुखी अध्ययन किया और पार्टी की नयी कार्यनीति की व्याख्या और पुष्टि अपनी इन कृतियो मे की, जैसे "राजनीतिक परिस्थिति", "तीन संकट", "नारो के विषय मे", "क्रांति के सबक" इत्यादि।

रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) की छठी कांग्रेस अर्द्ध-कानूनी ढंग से २६ जुलाई से ३ अगस्त तक हुई। कांग्रेस ने देश की परिस्थिति का स्पष्ट मूल्यांकन किया और नयी स्थिति मे पार्टी के कार्य निर्धारित किये।

क्रांति निरंतर विकसित होती और आगे बढती रही। कांग्रेस ने घोषणा की कि पूंजीपतियो का आतंक क्रांति की लहरो को रोक नही सकता। "इतिहास की अंतर्लीन शक्तियां सक्रिय है। जनसाधारण के अंतराल मे असंतोष की आग सुलगने लगी है। किसानो को जमीन चाहिए, मजदूरो को रोटी और दोनो को शांति।"

समाजवादी क्रांति की विजय अनिवार्य थी। लेकिन "शांतिपूर्ण विकास और सोवियतो को सत्ता का कष्टरहित हस्तांतरण असंभव हो गया है।" साम्राज्यवादी पूंजीपतियो के प्रभुत्व का बलपूर्वक अंत आवश्यक हो गया है। अब पार्टी का बुनियादी रास्ता सशस्त्र विद्रोह का था। लेकिन इसका

यह मतलब नहीं कि पार्टी ने तुरंत विद्रोह का नारा दिया। कुछ जरूरी शर्तें अभी भी पूरी नहीं हुई थीं। विद्रोह की तैयारी करना, उसे निकटतर लाना, और जब उसका समय आये, तो पूरी तरह सशस्त्र रहना—यह थी पार्टी की नीति।

अप्रैल सम्मेलन से छठी कांग्रेस तक पार्टी की सदस्य संख्या तिगुनी हो गयी थी। अब २,४०,००० कम्युनिस्ट कांग्रेस के फ़ैसलों से लैस, नई मुस्तैदी से जनता में काम करने, क्रांति की विजय को पक्का करने के लिए आगे बढ़े।

...पतझड़ निकट आ रहा था। फ़रवरी क्रांति को आधा साल बीत चुका था। लेकिन जनता की स्थिति दिनोंदिन ख़राब होती जा रही थी। आर्थिक अव्यवस्था बढ़ रही थी। औद्योगिक उत्पादन रोज़ कम हो रहा था। १६१७ के पतझड़ में रूबल की क्रय शक्ति १६१३ की तुलना में दस गुना कम थी। देश में नोटों की बाढ़ आ गयी थी, जिनका कोई मूल्य नहीं था। परिवहन का प्रबंध टूट रहा था। अकाल सर पर मंडला रहा था। शहरों और मज़दूरों की बस्तियों में खाद्यान्न की दुकानों पर लोगों की लंबी क़तारें घंटों खड़ी रहतीं। रोटी, शक्कर तथा अन्य खाद्य सामग्री का अभाव था। बेरोज़गारी बढ़ रही थी।

युद्ध अब भी जारी था। सैनिक पूछा करते: "क्या अगला जाड़ा भी हमें खंदकों में बिताना पड़ेगा?"

सरकार ने युद्ध को जारी रखने के लिए ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमरीका से नये क़र्ज़ हासिल किये। इन क़र्ज़ों ने देश को जंजीरों में और जकड़ दिया और उसके सामने प्रभुसत्ता के बिल्कुल छिन जाने का ख़तरा उपस्थित कर दिया।

पूंजीपतियों का प्रभुत्व देश को राष्ट्रीय विनाश की ओर लिये जा रहा था। इस बेमतलब युद्ध के जारी रहने से देश के मूल साधन बर्बाद हो रहे थे और अर्थतंत्र अस्तव्यस्त हो रहा था। देश वैदेशिक पूंजी की ग़ुलामी के चंगुल में फंसता जा रहा था। ये सारी बातें आनेवाली तबाही की ओर संकेत कर रही थीं।

१६१७ के पतझड़ तक रूस में क्रांतिकारी संकट परिपक्व हो चुका था। रेलवे मज़दूरों की आम हड़ताल, उराल में एक लाख मज़दूरों की हड़ताल, इवानोवो-कोनिश्मा क्षेत्र के तीन लाख सूती मिल मज़दूरों की

हडताल, मुद्रको की हडताल, मास्को के चर्मकारो की हडताल, बाकू के तेल मजदूरो, दोनेत्स बेसिन के कोयला मजदूरो तथा और भी कितने ही मजदूरो की हडताले हो रही थी। हडतालो का आदोलन आनेवाले तूफान की शक्तिशाली लहरो की भाति फैलते फैलते अभूतपूर्व हद तक बढ गया, जिससे पूजीवादी प्रभुत्व की नीव हिल गई।

हडतालो के दौरान मे मजदूर अधिकाधिक दृढतापूर्वक तथा ज्यादा सगठित रूप से कारखाना के प्रबध मे हस्तक्षेप करने लगे और माल उत्पादन तथा वितरण पर अपना नियत्रण स्थापित करने लगे। किसान आदोलन ने जमीदारो के विरुद्ध एक व्यापक जन आदोलन का रूप धारण कर लिया और चूकि सरकार वर्तमान भूमि प्रथा का समर्थन और रक्षा भी करती थी, इसलिए यह आदोलन सरकार के खिलाफ भी था। सच तो यह है कि देश मे व्यापक किसान विद्रोह की आग फैलती जा रही थी। इस तथ्य का बडा राजनीतिक महत्व था। एक किसान देश मे किसान विद्रोह! यही एक तथ्य राष्ट्रीय सकट का काफी सबूत था। इस दौरान मे सेना मे बोल्शेविक प्रभाव बडी तेजी से फैल रहा था। बिना अतिशयोक्ति प्रतिदिन हजारो सैनिक पार्टी मे शामिल हो रहे थे और पूरी की पूरी रेजिमेटे और बटालियन बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार कर रहे थे। बाल्टिक नौसेना के सभी नौसैनिक तथा रिजर्व रेजिमेटो के सैनिक बोल्शेविको के साथ थे और यही हाल उत्तरी और पश्चिमी मोर्चो के अधिकाश सैनिको का था। और ये मोर्चे चूकि देश के केद्र से निकट थे, इसलिए इनका महत्व बहुत था। इसके अलावा देश मे गैरिजनो का बहुत बडा हिस्सा भी पार्टी का समर्थक था।

इन नयी स्थितियो मे सोवियतो के जीवन मे एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमे उनके कार्यकलाप और दक्षता मे बडी वृद्धि हुई। सोवियते भी बोल्शेविको का साथ देने लगी।

सोवियतो के इतिहास मे और क्राति के इतिहास मे १३ सितबर का दिन एक स्मरणीय दिन है। मजदूरो और सैनिको के प्रतिनिधियो की पेत्रोग्राद सोवियत ने सत्ता के सवाल पर एक बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। पुराने अध्यक्षमडल ने इस्तीफा दिया और पेत्रोग्राद सोवियत का नेतृत्व बोल्शेविको के हाथ मे आ गया। १८ सितबर को मास्को सोवियत ने भी एक बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार किया। एक के बाद एक

अन्य शहरों (कीयेव, ख़ारकोव, काज़ान, उफ़ा, मीन्स्क, ताशकंद, त्रियान्स्क, समारा तथा उराल और दोनेत्स बेसिन के शहरों) से इसी प्रकार की रिपोर्टें आने लगीं। पूरे रूस में २५० से अधिक सोवियतों ने "सारी सत्ता सोवियतों को दो!" के बोल्शेविक नारे का समर्थन किया। चुनांचे सोवियतों का बोल्शेविकीकरण हो गया। जैसा कि लेनिन पहले ही से समझ रहे थे अधिकांश सोवियतें जनता की मनस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हुए मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों की नीतियों को अस्वीकार कर चुकी थीं और उन्होंने बोल्शेविक नीतियों को अंगीकार कर लिया।

"सारी सत्ता सोवियतों को दो!" का नारा एक बार फिर असली सवाल बन गया और अब इसका अर्थ था पूंजीवादी शासन को बलपूर्वक समाप्त करने का आह्वान।

१९१७ के पतझड़ तक समाजवादी क्रांति की विजय की तमाम ज़रूरी शर्तें पूरी हो चुकी थीं। जनता ने दृढ़तापूर्वक और निश्चित रूप से बोल्शेविकों के नेतृत्व में स्वयं अपनी सत्ता स्थापित करने के संघर्ष के लिए अपनी तत्परता प्रकट कर दी थी।

मेन्शेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों के अंदर अव्यवस्था निरंतर बढ़ती जा रही थी। दोनों पार्टियों में फूट पड़ गयी और उनमें अलग-अलग दल और गुट बन गये। समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के वामपक्ष ने घोषणा की कि वह एक अलग पार्टी है।

इसके अतिरिक्त प्रतिक्रांति के उग्रवादी तत्वों की मांग थी कि जनता के ख़िलाफ़ एकदम हमला बोल दिया जाये। क्रांति को कमज़ोर करने के लिए पूंजीपतियों ने रीगा जर्मन सेनाओं के हवाले कर दिया। खुले आम राष्ट्र से ग़द्दारी का मार्ग अपनाकर वे अब पेत्रोग्राद को भी उनके हवाले करने की तैयारी कर रहे थे।

पूंजीपति वर्ग जर्मनी से अलग शांति संधि सम्पन्न करने का विचार कर रहा था, ताकि अपनी पूरी शक्ति क्रांतिकारी जनता के विरुद्ध लगा सके। अंत में पूंजीपति वर्ग एक बार फिर कोर्नीलोव ढंग की कार्रवाई करने की तैयारी करने लगा। उसने "तूफ़ानी दस्तों" का संगठन तेज़ कर दिया, जितने सैनिक दस्ते विश्वसनीय जान पड़े, उन्हें एकत्रित किया तथा क्रांतिकारी दस्तों को भंग करने की पूरी चेष्टा की। इन सब बातों

की वजह से विद्रोह की तैयारी मे अब कोई देर नही की जा सकती थी। देर करने का नतीजा यह होता कि पूजीपति अपनी शक्तियो को एकत्रित कर लेते और अपनी कार्रवाई शुरू कर देते, जिससे क्राति को असफल होना पडता।

निर्णायक घडी आ पहुची। सशस्त्र विद्रोह अब तात्कालिक व्यावहारिक कार्य के रूप मे सामने आ गया।

२३ (१०) अक्तूबर को कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति की एक गुप्त बैठक पेत्रोग्राद मे हुई। जुलाई के बाद यह पहली बैठक थी, जिसमे लेनिन, जो फ़िनलैंड से ग़ैर-क़ानूनी तौर पर हाल ही मे लौटे थे, उपस्थित थे। उनके अलावा इस बैठक मे केंद्रीय समिति के ग्यारह सदस्यो ने भाग लिया (वे थे बूबनोव, द्ज़ेर्जीन्स्की, जिनोव्येव, कामेनेव, कोल्लोन्ताई, लोमोव, स्वेर्दलोव, सोकोल्निकोव, स्तालिन, त्रोत्स्की और उरीत्स्की)।

लेनिन की रिपोर्ट सुनने के बाद समिति ने एक प्रस्ताव स्वीकार किया, जिसमे कहा गया था "अत यह समझते हुए कि सशस्त्र विद्रोह अनिवार्य है और यह कि उसके लिए समय पूर्णत परिपक्व हो चुका है, केंद्रीय समिति सभी पार्टी सगठनो को आदेश देती है कि इसी के अनुकूल निर्दिष्ट हो और इसी दृष्टिकोण से सभी व्यावहारिक सवालो पर विचार-विमर्श करे और निश्चय करे "*

केंद्रीय समिति के सभी सदस्यो ने, सिवाय जिनोव्येव और कामेनेव के, इस प्रस्ताव के समर्थन मे वोट दिया। उन्होने कहा कि क्राति की विजय के लिए आवश्यक स्थितिया अभी परिपक्व नही हुई है, कि खतरा नही मोल लेना चाहिए और कि प्रतिरक्षात्मक, अवसर की प्रतीक्षा करने की नीति पर चलना चाहिए।

केंद्रीय समिति का फैसला हो जाने के बाद विद्रोह की तैयारी पूरे जोरो के साथ शुरू हो गयी। लेनिन ने क्राति की एक योजना बनायी, जिसमे क्रातिकारी सैनिको, नौसैनिको तथा सशस्त्र मजदूरो की सयुक्त कार्रवाई का प्रयोजन था।

विद्रोह के लिए क्रातिकारी शक्तियो को सगठित करने के उद्देश्य से

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २६, पृष्ठ १६२

पेत्रोग्राद सोवियत ने एक क्रांतिकारी सैनिक समिति गठित की तथा अन्य कई शहरों में इसी प्रकार की समितियां गठित की गयीं। बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में इन समितियों की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी विद्रोह की तैयारी करनी थी।

कारखानों में लाल गार्ड दस्तों का संगठन जारी रहा। पेत्रोग्राद के कारखाने सशस्त्र कैंपों के समान लगते थे। बहुतेरे लाल गार्ड जब मशीनों पर काम करते, तब भी उनकी राइफ़लें उनके पास होतीं। शस्त्रों की मरम्मत और सफ़ाई कारखानों में होती और उनके प्रांगनों में सैनिक क़वायद करायी जाती।

अक्तूबर में पेत्रोग्राद में लाल गार्ड के प्रशिक्षित तथा सशस्त्र २३,००० लोग मौजूद थे। पेत्रोग्राद के लाल गार्ड कम समय के भीतर ५०,००० योद्धाओं को मैदान में उतार सकते थे। ६२ शहरों में कोई दो लाख मज़दूर लाल गार्ड की पंक्तियों में भर्ती हो गये थे।

बाल्टिक नौसेना के जलपोतों पर भी विद्रोह की जबरदस्त तैयारियां हो रहीं थीं। स्थायी लड़ाकू प्लैटून बड़े जलपोतों पर तथा तट-स्थित नौसेना में संगठित किये गये, जो ठीक समय पर विद्रोह में भाग लेने के लिए तैयार थे।

पेत्रोग्राद के गैरिज़न की क्रांतिकारी रेजिमेंटें भी कार्रवाई के लिए तैयार थीं। कम्पनी और रेजिमेंट समितियों के प्रतिनिधियों ने अस्थायी सरकार के विरुद्ध क़दम उठाने की अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा घोषित की।

२४ अक्तूबर को उत्तरी प्रदेश की सोवियतों की एक कांग्रेस पेत्रोग्राद में आयोजित की गयी और उसने निर्णायक क़दम उठाने के लिए जनता की तत्परता की पुष्टि की। अक्तूबर-नवम्बर में देश भर में सोवियतों की गुबेर्नियाई कांग्रेसें होती रहीं। एक अच्छे बैरोमीटर की भांति उन्होंने यह बता दिया कि जनता अस्थायी सरकार के विरुद्ध एक निर्णायक संघर्ष के लिए तैयार है।

इस दौरान में कामेनेव और ज़िनोव्येव ने एक ऐसी हरकत की, जो पार्टी के इतिहास में अभूतपूर्व थी। उन्होंने खुली ग़द्दारी की।

३१ अक्तूबर को मेन्शेविक वामपन्थी अख़बार "नोवाया जीज़्न" में कामेनेव का एक समालाप छपा। उन्होंने सशस्त्र विद्रोह के संबंध में

बोल्शेविक पार्टी के निश्चय से अपने और जिनोव्येव के मतभेद की घोषणा की। यह खुली ग़द्दारी थी और इससे विद्रोह की योजनाओ को बडा धक्का लगा। जो लोग पार्टी नेतृत्व का अग थे, उन्होंने गैर-पार्टी अखबार मे पार्टी के गुप्त फैसलो का विरोध किया। लेनिन ने आक्रोश के साथ लिखा : "कामेनेव और जिनोव्येव ने विश्वासघात करके सशस्त्र विद्रोह के सवाल पर अपनी पार्टी की केंद्रीय समिति के फ़ैसले की सूचना रोद्ज़्यान्को और केरेस्की को दे दी है ."*

कामेनेव और जिनोव्येव के रवैये से जाहिर था कि उन्हें क्राति और मज़दूर वर्ग की शक्ति पर विश्वास नही था। मगर लेनिन और पार्टी का जनता से अटूट सबध था। वे पूजी के प्रभुत्व का तख्ता उलटने के लिए जनता की मुस्तैदी और तत्परता को देख रहे थे। पार्टी उन दो आदमियो के विश्वासघात और घबराहट के बावजूद, विजय मे दृढ विश्वास के साथ विद्रोह की तैयारी करती रही।

लेनिन ने बोल्शेविक पार्टी सदस्यो के नाम एक पत्र मे लिखा

"समय कठिन है। काम मुश्किल है। विश्वासघात सगीन है।

"इसके बावजूद काम पूरा होकर रहेगा। मजदूर अपनी पक्तियो को सुदृढ करेगे, किसानो का विद्रोह और मोर्चे पर सैनिको की असीम व्याकुलता रग लाकर रहेगी! हम अपने को एकताबद्ध करें—सर्वहारा की विजय अवश्यंभावी है।"**

विद्रोह की व्यावहारिक तैयारिया, जो पोद्वोइस्की, अन्तोनोव-ओव्सेयेन्को, चुद्नोव्स्की इत्यादि के प्रत्यक्ष नेतृत्व मे हो रही थी, बहुत महत्वपूर्ण थी। इनका पूरा काम लेनिन के निदेशन और नियत्रण मे हो रहा था।

२ नवम्बर के बाद क्रातिकारी सैनिक समिति ने क्रातिकारी सैनिक दस्तो का नेतृत्व करने के लिए कमिसारो की नियुक्ति शुरू की। तीन दिनो के अदर लगभग ३०० व्यक्तियो को क्रातिकारी सैनिक समिति ने कमिसार नियुक्त किया। कमिसारो की स्वीकृति के विना किसी आदेश का पालन नही करना था। इस प्रकार एक बहुत बडी शक्ति—पेत्रोग्राद गैरिजन, जिसमे लगभग ढाई लाख सैनिक होगे,—क्रातिकारी हेडक्वार्टर के अधीन काम करने लगी।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३४, पृष्ठ ४२५
**वही, खड २६, पृष्ठ १९८

धावा करने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। इसमें बस अब चंद घंटों की देर थी।

अस्थायी सरकार ने पहलकदमी करने के ख्याल से क्रांतिकारी शक्तियों पर हमला करने का फ़ैसला किया। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर) की रात में सरकार ने आदेश दिया कि सभी सैनिक स्कूलों को कार्रवाई करने के लिए तैयार किया जाये। पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के कमांडर पोल्कोव्निकोव ने आदेश जारी किया कि कोई सैनिक दस्ता क्षेत्रीय हेडक्वार्टर की आज्ञा के बिना अपनी बारिकों से बाहर नहीं जाये। शिशिर प्रासाद के चारों ओर सैनिक गार्ड को और मजबूत किया गया। सरकार का निवास वहीं था। युंकरों के दस्ते नेवा नदी के पास भेजे गये, ताकि उसपर के पुलों को उठा दें।* ऐसा करने से मजदूरों की बस्तियों और शहर के केंद्र में कोई संबंध नहीं रह जाता।

जाहिर था कि खुले मुकाबले का समय आ गया था। अब एक मिनट भी देर नहीं की जा सकती थी। प्रतिक्रांति ने हमला शुरू कर दिया था। उसको परास्त करना और निर्णायक हमले का कदम उठाना आवश्यक हो गया था।

तत्काल बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय तथा पेत्रोग्राद समितियों की बैठकें हुईं। वे इस बात पर सहमत थीं कि "बिना किसी देरी के, क्रांति की समस्त संगठित शक्ति के साथ हमला करना जरूरी है।"

इस विशाल शहर के सभी हिस्सों में क्रांति की शक्तियों ने कार्रवाई शुरू की। सशस्त्र विद्रोह के लिए लेनिन की योजना को निष्पादित किया जाने लगा था।

कारखानों में आदेश भेज दिया गया कि लाल गार्ड एकत्रित हों। कुछ दस्ते स्मोल्नी** की ओर चले। औरों ने विभिन्न कार्यालयों पर कब्जा करना तथा पुलों और रेलवे स्टेशनों की ओर बढ़ना शुरू किया।
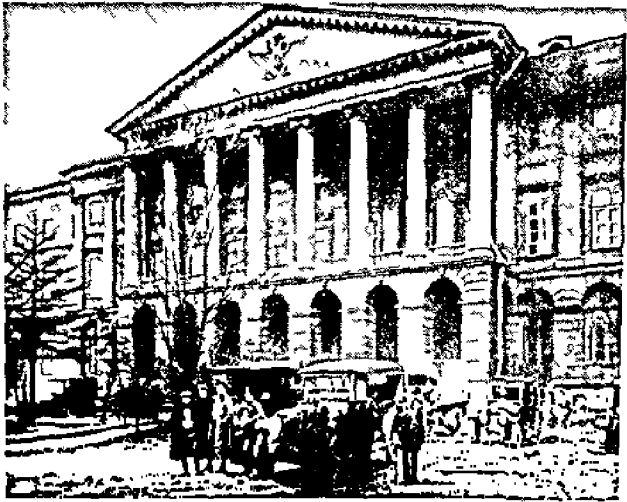
अक्तूबर, १९१७ में स्मोलनी, पेत्रोग्राद

स्मोलनी में पोद्वोइस्की, अन्तोनोव-ओव्सेयेन्को और चुद्नोव्स्की पेत्रोग्राद के एक नकशे पर झुके हुए क्रांतिकारी दस्तों की प्रगति का अंदाज़ा और तसदीक करते। क्रांतिकारी सैनिक पार्टी केंद्र के सदस्यों – बूबनोव, द्ज़ेर्जीन्स्की, स्वेर्दलोव, स्तालिन और उरीत्स्की – द्वारा कमांडरों, कमिसारों और पार्टी संगठनों के नेताओं को सैनिक आदेश जारी किये जा रहे थे।

लेनिन, जो उस समय तक गुप्त मकान से आदेश भेजा करते थे, नेतृत्व के पूरे ढांचे का केंद्र-बिंदु थे।

६ नवम्बर को दिन भर क्रांतिकारी दस्तों ने अपनी कार्रवाइयां सफलतापूर्वक जारी रखीं और पेत्रोग्राद के अनेक महत्वपूर्ण स्थानों और कार्यालयों पर अधिकार कर लिया। लेकिन केंद्रीय समिति और क्रांतिकारी सैनिक समिति के कुछ सदस्यों ने ढुलमुलपन और अनिश्चितता का परिचय दिया। इनमें पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष त्रोत्स्की भी थे, जिन्होंने ६ नवंबर को घोषणा की कि अस्थायी सरकार की गिरफ्तारी का अभी कोई

सवाल नहीं है। उसी दिन शाम को लेनिन ने केंद्रीय समिति के सदस्यों के नाम एक पत्र लिखकर बताया कि सरकार पर अत्यंत निर्णयकारी ढंग और तेज़ गति से हमला करना तत्काल जरूरी है। "हमें किसी कीमत पर भी, आज ही शाम को, आज ही रात को, पहले युंकरों को निःशस्त्र करके (अगर वे प्रतिरोध करें, तो उन्हें परास्त करके) इत्यादि सरकार को गिरफ़्तार कर लेना चाहिए।

"हमें प्रतीक्षा नहीं करनी है। ऐसा किया, तो हो सकता है कि सब कुछ हाथ से निकल जाये!!

"सरकार की धज्जियां उड़ रही हैं। उसे किसी भी कीमत पर मौत के मुंह में धकेल देना चाहिए!"*

उस दिन कुछ शाम हो जाने पर लेनिन अपने गुप्त मकान से निकलकर स्मोल्नी की ओर चले। पेत्रोग्राद के उन ख़तरनाक रास्तों से होकर, जहां शत्रु के सैनिकों का पहरा था, लेनिन क्रांतिकारी शक्तियों के सदर मुक़ाम पर पहुंच गये, ताकि स्वयं विद्रोह की बागडोर संभालें। घटनाओं की गति और तेज हो गयी। क्रांतिकारी दस्तों ने दोगुनी मुस्तैदी से काम लेकर नगर के सबसे महत्त्वपूर्ण स्थानों पर अधिकार कर लिया। रात में लाल गार्ड तथा क्रांतिकारी सैनिकों और नौसैनिकों ने रेलवे स्टेशनों, राजकीय बैंक, टेलीफ़ोन केंद्र, बिजलीघर तथा पेत्रोग्राद तारघर पर क़ब्ज़ा कर लिया।

इतिहास उस रात की अजीब तसवीर को हमेशा बनाये रखेगा, जब विश्व की प्रथम समाजवादी क्रांति के भाग्य का निर्णय हो रहा था। एक के बाद एक लाल गार्ड के सदस्यों से लदी लारियां पेत्रोग्राद की कुहासे से भरी सड़कों पर गुज़रती रहतीं। चौराहों पर क्रांतिकारी चौकियों के अलाव के शोले सर्द रात के अंधियारे को चीर जाते। कभी-कभी रात के सन्नाटे में गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती और हवा में कोई सैनिक आदेश गूंज उठता। और फिर कभी एक ओर से और कभी दूसरी ओर से जब क्रांति के योद्धा पुरानी दुनिया पर अंतिम प्रहार करने बढ़ते, तो "मार्सेल्येज़" या "इंटरनेशनल" की धुनें रात के सन्नाटे को भंग करतीं।

नेवा नदी की धारा के उलटे रुख क्रूजर "अव्रोरा" धीरे धीरे बढ रहा था। साढे तीन बजे भोर मे 'अव्रोरा' ने शिशिर प्रासाद से कुछ ही दूर पर लंगर डाला।

सैंकडो आदमी स्मोलनी की जगमगाती प्रकाशमान इमारत के सामने खड थे। प्रागन मे और सामने चौक पर बख्तरबन्द गाडिया खडी थी जिनकी मोटरें चालू थी। अलावो के हलके प्रकाश मे आनेवालो के पासो की जाच की जा रही थी। द्वार पर खुली मशीनगनें खडी थी। हरकारे निरतर नगर के विभिन्न इलाको मे भेज जा रहे थे। सारी रात रेजिमेंटो और फैक्टरियो के प्रतिनिधि आदेश लेने स्मोलनी आ रहे थे। लाल गार्ड के नये दस्ते आते और तुरत उन्हे कही तैनात करके अपना काम सभालने भेज दिया जाता।

क्रूजर 'अव्रोरा'
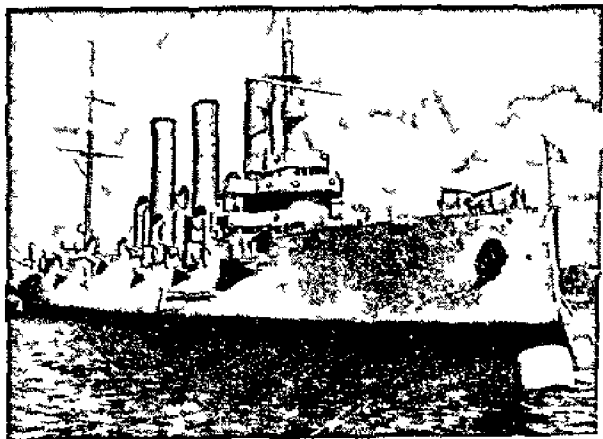
७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) को भीगी ठडी सुबह आ पहुची। इस समय तक विद्रोह की सफलता निश्चित हो चुकी थी। लगभग सारा पेत्रोग्राद क्रातिकारियो के हाथो मे था। अस्थायी सरकार का नियत्रण केवल शिशिर प्रासाद जनरल स्टाफ की इमारत और मरियीन्स्की प्रासाद

तक सीमित था। अस्थायी सरकार के प्रधान मंत्री केरेन्स्की पेत्रोग्राद से भाग चुके थे। उन्हें आशा थी कि कुछ प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को जुटाकर पेत्रोग्राद पर धावा करने भेजेंगे।

तीसरे पहर २ बजकर ३५ मिनट पर पेत्रोग्राद सोवियत की एक विशेष बैठक आयोजित की गयी। लेनिन भाषणमंच पर आये। और ये शब्द हवा में गूंज उठे: "साथियो, मजदूर-किसान क्रांति, जिसकी जरूरत पर बोल्शेविकों ने हमेशा जोर दिया, पूरी हो चुकी है।"*

लेकिन अस्थायी सरकार अभी तक शिशिर प्रासाद में मौजूद थी। पांच बजे तक क्रांतिकारी सैनिकों ने प्रासाद को चारों ओर से घेर लिया। क्रांति की शक्तियां कहीं ज्यादा थीं। खून-खराबा न होने पाये, इसके लिए क्रांतिकारी सैनिक समिति ने दो बार—६ बजे और फिर ८ बजे शाम को—अस्थायी सरकार से हथियार डाल देने का आग्रह किया। मगर कोई जवाब नहीं मिला। तब क्रांतिकारी सैनिक समिति ने आक्रमण

शिशिर प्रासाद पर धावा

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २६, पृष्ठ २०८
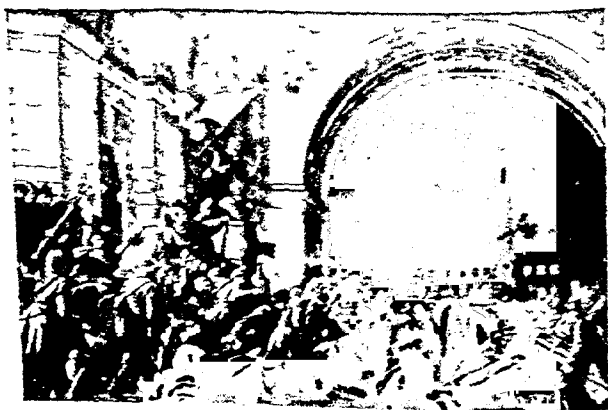
करने का आदेश दिया। आक्रमण के संकेत के तौर पर "अव्रोरा" ने हवा में तोप दागी।

रात को दस बजे क्रूजर पर आदेश गूजा "फायर!" गोली चली और शिशिर प्रासाद पर धावा शुरू हुआ। कुछ देर दोनो ओर से गोलिया चली और तब धावा बोलनेवालो का तूफान शिशिर प्रासाद की ओर बढा। धावा करनेवाले लोग प्रासाद के अदर घुसे और तब क़दम ब कदम एक-एक कमरा, एक-एक हाल करके उन्होने प्रासाद पर अधिकार कर लिया। एक कमरे मे अस्थायी सरकार के सदस्य डरे और सहमे बैठे थे।

जब सैनिको, नौसैनिको और लाल गार्ड का दस्ता उस कमरे के दरवाजे पर पहुचा, तो एक युकर ने रास्ता रोककर कहा "यह सरकार है।"

एक नौसैनिक ने उत्तर दिया "और यह क्राति है।"

प्रात काल २ बजकर १० मिनट पर ८ नवबर को मत्रियो को गिरफ्तार कर लिया गया। रूस की आखिरी पूजीवादी सरकार का अत हो गया।

पेत्रोग्राद मे सशस्त्र विद्रोह तेजी से और दक्षता के साथ पूरा हो गया। लगभग कोई खून-खराबा नही हुआ। दोनो ओर से सब मिलाकर कुछ ही दर्जन लोग मारे गये या जख्मी हुए होगे।

रूस मे
सोवियत सत्ता की घोषणा

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) को रात के १० बजकर ४० मिनट पर, जब विद्रोह का अतिम कदम उठाया जा चुका था यानी शिशिर प्रासाद पर धावा बोल दिया गया था मजदूरो और सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस का अधिवेशन स्मोलनी मे शुरू हुआ। कुल ६५० प्रतिनिधियो म कोई चार सौ बोल्शेविक रहे होगे। वामपथी समाजवादी क्रातिकारी गुट के प्रतिनिधियो की सख्या अच्छी खासी थी। मगर मेन्शेविको और दक्षिणपथी समाजवादी क्रातिकारियो का वजन सोवियतो मे बहुत घट गया था। कांग्रेस मे उनके केवल ७०–८० प्रतिनिधि थे। इन लोगो ने कांग्रेस की कार्रवाई मे खडग डालने की चेष्टा

की। मगर अधिकांश प्रतिनिधियों ने उनका समर्थन नहीं किया। इसपर समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक नेता (५१ व्यक्ति) अधिवेशन से उठकर चले गये।

कांग्रेस ने अपना काम जारी रखा। आधी रात बीत चुकी थी, जब एक प्रमुख बोल्शेविक नेता लुनाचार्स्की मंच पर आये। उनके हाथ में लेनिन के हस्तलिखित कुछ काग़ज़ात थे। लूनाचार्स्की ने दस्तावेज़ को पढ़ना शुरू किया: "मज़दूरों, सैनिकों और किसानों के नाम!" हाल में सन्नाटा छा गया।

"मज़दूरों, सैनिकों और किसानों के विशाल बहुमत की इच्छा के बल पर, पेत्रोग्राद में मज़दूरों और गैरिजन के विजयी विद्रोह के बल पर, यह कांग्रेस सत्ता अपने हाथों में लेती है।

"अस्थायी सरकार का तख़्ता उलट दिया गया।"*

इन सीधे सादे गंभीर शब्दों का स्वागत तालियों की तूफ़ानी गड़गड़ाहट और हर्षध्वनि के साथ किया गया।

"कांग्रेस आज्ञप्ति जारी करती है: स्थानीय स्तर पर सारी सत्ता मजदूरों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों द्वारा ग्रहण कर ली जायेगी..."** दस्तावेज़ का पढ़ना जारी रहा। प्रातःकाल ५ बजे इस अपील पर मतदान हुआ। एक बार फिर हर्षध्वनि के साथ समर्थन में हाथ उठ गये। केवल दो आदमियों ने विरोध में वोट दिया।

इस प्रकार रूस में सोवियत सत्ता की घोषणा कर दी गयी। इस प्रकार सशस्त्र विद्रोह की विजय, समाजवादी क्रांति की विजय की पुष्टि की गयी। इस प्रकार आज्ञप्ति द्वारा पूंजीवादी प्रभुत्व को समाप्त किया गया और संसार के प्रथम मजदूर-किसान राज्य का निर्माण संपन्न हुआ।

उसी दिन ८ नवम्बर को ९ बजे रात में कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन शुरू हुआ।

अक्तूबर क्रांति शांति का नारा लगाती विजय की मंज़िल तक पहुंची थी। जनगण की सर्वसम्मत मांग थी कि "युद्ध का अंत हो!" बोल्शेविकों

---

*सोवियत सत्ता की आज्ञप्तियां, रूसी संस्करण, मास्को, १९५७, खंड १, पृष्ठ ८

**वही, पृष्ठ १२

लेनिन सोवियत सत्ता की विजय की घोषणा कर रहे है

ने माग की थी कि जनवादी शाति की जाये—ऐसी शाति, जिसमे न विदेशी इलाको पर अधिकार किया जाये, न एक देश दूसरे को गुलाम बनाये और न हरजाना वसूल किया जाये। इसलिए सोवियत सत्ता की प्रथम आज्ञप्ति "शाति के बारे मे आज्ञप्ति" थी।

लेनिन ने स्वय काग्रेस के मच से शाति के बारे मे आज्ञप्ति पढकर सुनायी। यह मानवजाति के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज सिद्ध हुई।

सोवियत रूस ने आह्वान किया कि "तमाम युद्धरत जनगण और उनकी सरकारे एक न्यायपूर्ण, जनवादी शाति के लिए तत्काल वार्तालाप शुरू करे।"*

आज्ञप्ति में आगे चलकर कहा गया था "सरकार के विचार मे मानवता के विरुद्ध सबसे बडा अपराध इस युद्ध को इस सवाल पर जारी रखना है कि शक्तिशाली तथा समृद्ध राष्ट्रो मे उनके द्वारा पराजित कमजोर राष्ट्रो का बटवारा कैसे किया जाये "**

---

*वही, पृष्ठ ८
**वही, पृष्ठ १२

सोवियत सरकार ने गंभीरतापूर्वक सभी युद्धरत शक्तियों के साथ न्यायपूर्ण तथा जनवादी आधार पर शांति संधि पर हस्ताक्षर करने की दृढ़ प्रतिज्ञा घोषित की।

पहले की तमाम गुप्त संधियों को बिना शर्त और तत्काल अवैध घोषित कर दिया गया। इस तरह पुराने रूस की साम्राज्यवादी नीति का निर्णायक और अटल रूप से अंत कर दिया गया। सोवियत सत्ता ने अपने अस्तित्व के प्रथम दिवस से ही राष्ट्रों के बीच शांति और मैत्री का झंडा बुलंद कर दिया था और जंग के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया था। आज्ञप्ति ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार प्रस्तुत किया, जो सोवियत वैदेशिक नीति का एक मौलिक सिद्धांत बन गया।

शांति के बारे में आज्ञप्ति को कांग्रेस ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। लेनिन ने भूमि के बारे में आज्ञप्ति प्रस्तुत की। संक्षिप्त, सीधे-सादे तथा युक्तिपूर्ण शब्दों में पहला मद यह था: "भूमि पर जमींदारों का स्वामित्व बिना मुआवज़ा फ़ौरन मंसूख़ किया जाता है।"* सभी जमींदारियां, सभी जागीरें, मठों और गिरजाघरों की जमीनें अपने सभी मवेशी और खेती के औज़ारों, खेतघरों और अन्य सभी संबंधित चीज़ों सहित वोलोस्त** की भूमि समितियों तथा किसान प्रतिनिधियों की उयेज़्द*** सोवियतों के बंदोबस्त में दे दी गयीं। भूमि के निजी स्वामित्व का अधिकार मंसूख़ कर दिया गया। सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया।

व्यवहार में इन तमाम बातों का क्या मतलब था?

किसानों को भूमि की विशाल मात्रा—१५ करोड़ देस्यातीना ज़मीन—मिली (एक देस्यातीना = २.७ एकड़)। उन्हें लगान की एक भारी रक़म—७० करोड़ स्वर्ण रूबल सालाना—की अदायगी के भार से मुक्ति मिल गयी और बक़ाया लगान अदा करने से छुटकारा मिल गया, जो ३००

---

*वही, पृष्ठ १५।

**पुराने रूस में कई गांवों की एक इकाई का नाम जो तहसील के बराबर होती थी, वोलोस्त था।

***पुराने रूस में प्रान्त (गुबेर्निया) के एक ज़िले का नाम उयेज़्द था।

करोड की भारी रकम तक पहुच गया था। किसानो को ज़मीदारो के मवेशी और खेती के औज़ार भी मिल गये।

रात मे २ बजे भूमि के बारे मे आज्ञप्ति पर वोट लिया गया और काग्रेस ने उसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

घटे बीतते गये। सोवियतो की दूसरी काग्रेस का काम सपन्न हो रहा था। ६ नवम्बर की भोर हो रही थी। काग्रस ने एक अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति निर्वाचित की, जिसमे ६२ बोल्शेविक, २९ वामपक्षी समाजवादी क्रातिकारी और कुछ मेन्शेविक तथा गैर-पार्टी लोग थे। सुबह के ५ बज रहे थे, जब काग्रेस ने मजदूरो और किसानो की सरकार–जन कमिसार परिषद–के निर्माण सबधी आज्ञप्ति स्वीकार की। परिषद मे १५ व्यक्ति–सभी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। परिषद के अध्यक्ष लेनिन थे।*

प्रातःकाल ५ बजकर १५ मिनट पर काग्रेस ने अपना काम सपन्न कर लिया। प्रतिनिधिगण एकसाथ उठ खडे हुए और "इटरनेशनल शानदार धुन से हाल गज उठा।

सोवियत सत्ता का विजय अभियान

रूस ससार का सबसे बडा देश है। उसका क्षेत्रफल पृथ्वी के भूभाग का छठा हिस्सा है और बाल्टिक सागर से प्रशांत महासागर तक और उत्तरी समुद्रो से काकेशिया और पामीर के पहाडो तक यूरोप और ऐशिया के असीम विस्तारो मे फैला हुआ है। देश भर मे सामाजिक आर्थिक और

---

*वह आज्ञप्ति इस प्रकार थी "जन कमिसार परिषद का निर्माण इस प्रकार किया जाता है परिषद के अध्यक्ष–व्लादीमिर उल्यानोव (लेनिन), गृह विभाग जन कमिसार–रीकोव, कृषि–मिल्यूतिन, श्रम–श्ल्याप्निकोव, सेना तथा नौसेना विभाग–नीचे लिखे व्यक्तियो से बनी एक समिति ओव्सेयेन्को (अन्तोनोव), क्रिलेन्को और दिबेंको, वाणिज्य और उद्योग–नोगिन, सार्वजनिक शिक्षा–लुनाचार्स्की, वित्त–स्क्वोर्त्सोव (स्तेपानोव), विदेश विभाग–ब्रोन्सटीन (त्रोत्स्की), न्याय–ओप्पोकोव (लोमोव), खाद्यान्न–तेओदोरोविच, डाक और तार–आवीलोव (ग्लेबोव), जातीय विभाग के अध्यक्ष–जुगाश्वीली (स्तालिन)।"

राजनीतिक स्थिति समान नहीं थी और वर्गीय शक्तियों का आपसी संबंध देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न ढंग से विकसित हुआ था। यह आशा नहीं की जा सकती थी कि पेत्रोग्राद की विजय के बाद जनगण के हाथों में सत्ता अपने आप और तुरंत चली आयेगी। देश में हर जगह सोवियत सत्ता की स्थापना एक जटिल प्रक्रिया थी। सोवियत सत्ता की स्थापना के लिए संघर्ष काकेशिया में, साइबेरिया में, मध्य एशिया में, वोल्गा क्षेत्र तथा अन्य इलाकों में जिस प्रकार विकसित हुआ, उसकी अपनी अलग-अलग विशेषताएं थीं।

मगर जटिलताओं और कठिनाइयों के बावजूद देश के सभी भागों में सोवियतों को असाधारण तेजी से विजय प्राप्त हुई। सोवियत सत्ता का विजय अभियान देश के एक कोने से दूसरे कोने तक द्रुत गति से बढ़ा। चार महीने से कम समय में—मार्च, १९१८ तक—मजदूरों और किसानों की सत्ता देश की पश्चिमी सीमाओं से साइबेरिया और सुदूर पूर्व तक हर जगह स्थापित हो चुकी थी।

इसका कारण था कि समाजवादी क्रांति के लिए परिस्थिति सारे देश में परिपक्व हो चुकी थी। आम जनता के दिल में हर जगह यह बात घर कर चुकी थी कि पूंजी के प्रभुत्व को समाप्त करना आवश्यक है।

बहुत सी जगहों में सत्ता शांतिपूर्ण ढंग से सोवियतों के हाथ में आ गयी। प्रतिक्रांति को यह एहसास था कि जनता की शक्तियां बहुत भारी पड़ रही हैं और इसलिए उसके सामने संघर्ष के बिना सत्ता हवाले कर देने के सिवा और कोई रास्ता ही नहीं रह गया है। अधिकांश बड़े औद्योगिक केंद्रों में तथा मध्य रूस, वोल्गा क्षेत्र, उराल और साइबेरिया के मझोले और छोटे शहरों में अधिकांशतः यही हालत हुई।

अनेक ग़ैर-रूसी इलाकों में भी मजदूरों, सैनिकों और किसानों की सोवियतों की सत्ता के संघर्ष में विजय बिना सशस्त्र संघर्ष के प्राप्त हो गयी।

एस्तोनिया की श्रमजीवी जनता ने एस्तोनियाई क्रांतिकारी सैनिक समिति के आह्वान पर अपने देश में हर जगह सोवियत सत्ता की स्थापना कर ली। लाटविया के उस हिस्से में, जहां जर्मन सेना का कब्जा नहीं हुआ था, प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां सोवियतों की विजय को रोक नहीं सकीं। ७ नवम्बर की शाम को मीन्स्क सोवियत ने बेलोरूस में सत्ता स्थापित

कर ली थी। बाकू मे स्थिति पेचीदा और कठिन थी, फिर भी सत्ता सोवियतो को हस्तातरित करने मे बोल्शेविक सफल हुए। मध्य एशिया के बड़े शहरो—अश्काबाद, समरकन्द और फरगाना—मे भी मेहनतकशो ने अपेक्षाकृत आसानी से विजय प्राप्त कर ली।

लेकिन अनेक स्थानो मे प्रतिक्राति ने भयकर प्रतिरोध किया और सशस्त्र सघर्ष की स्थिति पैदा कर दी। ताशकन्द के मजदूर और सैनिक सफेद गार्ड के खिलाफ चार दिनो तक तुर्किस्तान की राजधानी मे लडते रहे। इर्कूत्स्क मे सोवियत सत्ता की नौ दिन की लडाई मे लाल गार्ड के ३०० लोग मारे गये।

मास्को मे भयकर सशस्त्र सघर्ष हुआ। वहा प्रतिक्राति के पास २०,००० सशस्त्र और प्रशिक्षित जवानो की सेना मौजूद थी, जिनमे अफसर, सैनिक स्कूलो के युकर और एसाइन तथा पूजीवादी परिवारो के विद्यार्थियो के फौजी दस्ते थे।

मास्को मे प्रतिक्राति ने सघर्ष के कठोरतम तरीके अपनाने से भी सकोच नही किया। इसने जन हत्या भी की। क्रेमलिन पर १० नवम्बर की सुबह मे कब्जा कर लेने के बाद युकरो ने क्रातिकारी ५६वी रेजिमेट के निहत्थे सैनिको को शस्त्रागार के सामने खडा कर दिया। अचानक एक आदेश के शब्द सुनाई दिये और मशीनगन से गोलिया चलने लगी। सैनिको की पाति की पाति ढेर हो गयी।

बीस लाख की आबादी के उस बडे शहर के विभिन्न भागो मे भयकर लडाइया हुई। छ दिन की लडाई के बाद प्रतिक्राति का सिर कुचला जा सका और मास्को मे सोवियत सत्ता की स्थापना हुई।

ओरेनबुर्ग गुबेर्निया मे भी प्रतिक्राति के विरुद्ध सघर्ष बहुत बडे पैमाने पर हुआ। ओरेनबूर्ग कज्जाको के अतामान (मुखिया) दूतोव ने सोवियत सत्ता के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। सोवियत सरकार ने पेत्रोग्राद, मास्को और वोल्गा क्षेत्र से दूतोव के खिलाफ नौसैनिको और लाल गार्ड के दस्ते रवाना किये। उराल के बोल्शेविको ने पार्टी के सभी सदस्यो को, जो हथियार उठा सकते थे, सशस्त्र किया। सोवियत दस्ते ऐसे समय ओरेनबूर्ग पहुचे, जब भारी हिमपात हो रहा था और सडके बर्फ से ढकी हुई थी। जनवरी, १९१८ मे अनेक भयकर लडाइयो के बाद दूतोव की सेनाओ को शिकस्त हुई।

दोन नदी के तटवर्ती इलाक़े में प्रतिक्रांति इससे भी अधिक ख़तरनाक थी। दोन कज़्ज़ाकों के अतामान कलेदिन ने सोवियत सरकार को मानने से इनकार कर दिया और मास्को और पेत्रोग्राद पर चढ़ाई की तैयारी करने लगा। उसके साथ बहुत सी प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां इकट्ठा हो गयीं। एंटेंट* के प्रतिनिधियों ने जल्दी-जल्दी कलेदिन को निधि और हथियार मुहैया किये। कलेदिन की सेनाओं ने रोस्तोव-आन-दोन, तगानरोग और अज़ोव पर अधिकार कर लेने के बाद दोनेत्स बेसिन पर आक्रमण कर दिया। लेकिन यहां भी शत्रुओं की सेनाएं क्रांति के विजय अभियान को आगे बढ़ने से रोक नहीं सकीं।

लेनिन के आदेश पर लाल गार्ड और क्रांतिकारी सैनिक दस्ते दक्षिण भेजे गये। इनके साथ दोनेत्स बेसिन के खान मजदूर तथा तगानरोग और रोस्तोव-आन-दोन के श्रमिक भी संघर्ष में शामिल हो गये। ग़रीब कज़्ज़ाक और दोन के श्रमजीवी किसान भी अतामान के विद्रोह को कुचलने के लिए सशस्त्र मैदान में उतर आये। जनवरी, १९१८ में मोर्चे पर कज़्ज़ाकों की एक कांग्रेस हुई, जिसमें पोद्तेल्कोव और क्रिवोश्लीकोव के नेतृत्व में एक दोन कज़्ज़ाक क्रांतिकारी सैनिक समिति स्थापित की गयी। कलेदिन और उसके समर्थकों की हालत बिगड़ गई और अंत में कलेदिन ने अपने आपको गोली मार दी।

उक्रइना के मजदूरों और किसानों ने प्रतिक्रांति के ख़िलाफ़ घोर संघर्ष किया। अनेक औद्योगिक केंद्रों जैसे लुगान्स्क, क्रामातोर्स्क, माकेयेव्का और ख़ेर्सोन में सोवियतों को शांतिपूर्ण ढंग से सत्ता प्राप्त हो गयी। दिसम्बर में ख़ारकोव में सोवियत सत्ता सुसंगठित कर ली गई। लेकिन उक्रइना के अनेक क्षेत्रों में सोवियत सत्ता की विजय के रास्ते में उक्रइनी पूंजीवादी राष्ट्रीयतावादियों द्वारा संगीन बाधाएं उपस्थित की गयीं, जिन्होंने फ़रवरी क्रांति के बाद स्वयं अपना प्रतिक्रांति संगठन – केन्द्रीय रादा – स्थापित कर लिया था। जब ११ नवम्बर को कीयेव के श्रमजीवियों

---

*एंटेंट ब्रिटेन, फ्रांस और ज़ारशाही रूस का साम्राज्यवादी गठबंधन गुट था, जिसकी स्थापना १९०७ में हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यह शब्द संयुक्त राज्य अमरीका और जापान समेत उन सभी देशों के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा, जो जर्मनी और उसके समर्थकों के विरुद्ध लड़ रहे थे।

ने "अर्सेनाल" (शस्त्रागार) कारखाने के मजदूरो के नेतृत्व मे विद्रोह कर दिया और तीन दिनो की लडाई के बाद अस्थायी सरकार की सेनाओ को परास्त कर दिया, तो रादा अपनी सेना शहर मे ले आयी और सबसे महत्वपूर्ण स्थानो पर अधिकार कर लिया। रादा ने पूरे उक्रइना मे अपनी प्रभुसत्ता घोषित कर दी और रूस की सोवियत सरकार को मानने से इनकार कर दिया।

केंद्रीय रादा के प्रतिक्रांतिवादी स्वरूप तथा प्रतिक्रिया की सबसे दुष्ट शक्तियो के साथ उसके गठजोड पर आजादी, जनवाद तथा उक्रइनी स्वाधीनता के उसके नारो का परदा पडा हुआ था। अपनी कमजोरी का अदाजा करके और यह देखकर कि उसे जनता का समर्थन प्राप्त नही है, रादा ने एटेंट सरकारो से सहायता की अपील की। इन सरकारो ने कोई मदद उठा नही रखी।

उक्रइना की श्रमजीवी जनता ने अपने आपको रादा के विरुद्ध सघर्ष मे झोक दिया। २४ दिसबर को खारकोव मे उक्रइना की सोवियतो की पहली काग्रेस आयोजित हुई। दूसरे दिन–२५ दिसबर को–उक्रइना मे सोवियत सत्ता की घोषणा कर दी गयी।

उक्रइना की सोवियत सरकार का सगठन किया गया। इसमे सेर्गेयेव (अर्त्योम), बोश, कोत्सुबीन्स्की, जतोस्की, स्क्रिपनिक आदि शामिल थे। सोवियत सरकार के आह्वान पर समूचे उक्रइना की श्रमजीवी जनता केंद्रीय रादा के विरुद्ध सशस्त्र सघर्ष मे जुट गयी।

कीयेव मे, जहा क्रातिकारी मजदूरो ने फिर विद्रोह का झडा उठा लिया था, कई दिन लडाई होती रही। विद्रोही मजदूरो की सहायता के लिए सोवियत सैनिक दस्ते कीयेव की ओर बढे। फरवरी के शुरू मे कीयेव आजाद हो गया और सोवियत सत्ता लगभग पूरे उक्रइना मे स्थापित हो गयी।

इस प्रकार मार्च, १६१८ तक रूस के लगभग पूरे इलाके मे सोवियतो की विजय हो गयी थी। पूजीवादी सत्ता वही शेष रह गयी थी, जहा जर्मन और आस्ट्रियाई सेनाओ का कब्जा था (जैसे लिथुआनिया, लाटविया का भाग, पश्चिमी बेलोरूस का भाग तथा पश्चिमी उक्रइना), जार्जिया और आर्मीनिया मे तथा देश के कुछ दूरवर्ती क्षेत्रो मे।

4*

ब्रेस्त शांति संधि

नवजात जनतंत्र के सामने एक अत्यंत आवश्यक और सबसे फ़ौरी काम युद्ध से निकलना था। मगर यह काम एकपक्षीय तौर पर नहीं किया जा सकता था। इसके लिए एक शांति संधि पर हस्ताक्षर करना ज़रूरी था। सोवियतों की दूसरी कांग्रेस ने एक आज्ञप्ति स्वीकार करके तमाम युद्धरत देशों के सामने शांति का सुझाव रखा था। यह विश्वव्यापी जनवादी शांति के लिए इसके अनवरत अभियान की शुरुआत थी।

नवंबर, १९१७ के प्रारंभ से सोवियत सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध लड़नेवाले देशों—फ़्रांस, ब्रिटेन, इटली, संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य सरकारों को बार-बार सरकारी प्रस्ताव भेजे कि शांति की वार्ता शुरू की जाये। हर बार सोवियत सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह अपनी प्रस्तावित शर्तों को अंतिम नहीं मानती, बल्कि अन्य देशों द्वारा प्रस्तावित शर्तों पर बातचीत करने को तैयार है।

एंटेंट सरकारों ने इनमें से किसी अपील पर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसी स्थिति में सोवियत सरकार के सामने इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं रह गया कि वह स्वयं जर्मनी और उसके मित्र-राष्ट्रों से बातचीत शुरू करे। पहले (दिसंबर १९१७ में) एक अस्थायी युद्ध विराम किया गया। सोवियत प्रतिनिधियों के जोर देने पर युद्ध विराम समझौते में एक दफ़ा यह भी जोड़ी गयी थी कि पूर्वी मोर्चे की सेनाएं पश्चिमी मोर्चे पर नहीं भेजी जायेंगी।

२२ दिसंबर को बेलोरूस के छोटे से शहर ब्रेस्त-लितोव्स्क में एक शांति सम्मेलन शुरू हुआ। इस सम्मेलन में क़ैसर जर्मनी जनवादी और न्यायपूर्ण शांति संधि करने के इरादे से नहीं आया था। जर्मन साम्राज्यवादियों की मांग थी कि पोलैंड, लियुआनिया, लाटविया का एक भाग और बेलोरूस का एक भाग जर्मनी के हवाले कर दिया जाये। यह बेशर्मी के साथ अन्य देशों को हड़पने की नीति थी। लेकिन सोवियत सरकार को इसपर राज़ी होना पड़ा। इन अत्यंत कड़ी शर्तों पर भी शांति संधि कर लेने से सोवियत जनतंत्र को सांस लेने की मुहलत मिली, जिसकी बड़ी ज़रूरत थी। लोग युद्ध से तंग आकर शांति की कामना कर रहे थे। दरअसल पुरानी ज़ारशाही की सेना तितर-बितर हो चुकी थी और उसमें

लडने का दम नही रह गया था। लाल सेना का अभी निर्माण हो ही रहा था। वह सख्या मे कम और पूरी तरह प्रशिक्षित नही थी। इसलिए लेनिन बहुत जोर दे रहे थे कि जितनी जल्दी सभव हो शाति सधि कर ली जाये। लेकिन इस सवाल पर पार्टी नेतृत्व मे मतभेद था। बुखारिन के नेतृत्व मे "वामपक्षी कम्युनिस्टो" का एक गुट युद्ध को जारी रखना चाहता था। उनका कहना था कि यह जर्मन साम्राज्यवाद का तख्ता उलटने के लिए एक "क्रातिकारी" युद्ध होगा। त्रोत्स्की शाति सधि करने के खिलाफ तर्क पेश कर रहे थे। उनका फार्मूला था "न शाति, न युद्ध।"

मगर लेनिन ने स्वेर्दलोव, सेर्गेयेव (अर्त्योम), स्तालिन और केद्रीय समिति के अन्य सदस्यो की सहायता से जग को समाप्त करने पर जोर दिया। उन्होने बताया कि बुखारिन और त्रोत्स्की की लाइन महत्वाकाक्षी और बुनियादी तौर पर गलत और अत्यत हानिकारक है, जिसका परिणाम सोवियत राज्य की बर्बादी के सिवा और कुछ नही हो सकता।

इस दौरान मे जर्मन साम्राज्यवादियो ने अपना दबाव और बढाया। ६ फरवरी, १९१८ को जर्मनी के विदेश मत्री ने कैसर विल्हेल्म के आदेशानुसार माग की कि सोवियत रूस तुरत जर्मन शर्तो को स्वीकार करे। त्रोत्स्की ने, जो ब्रेस्त वार्तालाप मे सोवियत प्रतिनिधिमडल के अध्यक्ष थे, लेनिन के प्रत्यक्ष आदेश का उल्लघन करके शाति सधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। जर्मन साम्राज्यवादी यही चाहते थे। जर्मन सर्वोच्च कमान ने तुरत हमले की तैयारी शुरू कर दी, जिसका उद्देश्य सोवियत सत्ता का अत करना था। १८ फरवरी को रीगा की खाडी से लेकर डैन्यूब के मुहाने तक पूरे मोर्चे पर लडाई शुरू हो गयी। ७ लाख जर्मन और आस्ट्रियाई सैनिक रूसी मोर्चे की ओर बढने लगे। पुरानी बची-खुची जारशाही सेना दुश्मन की बेहतर सेना के सामने ठहर नही सकी और पीछे हटने लगी। जर्मन डिवीजन पेत्रोग्राद, मास्को और कीयेव की ओर बढे।

कम्युनिस्ट पार्टी ने जर्मन हमलावरो को परास्त करने के लिए जनगण का आह्वान किया। २२ फरवरी को मास्को, पेत्रोग्राद, त्वेर, यरोस्लाव्ल, खारकोव तथा अन्य शहरो के मजदूरो के इलाको के निवासियो को खतरे के भोपू और साइरेनो की आवाज ने जगाया। मजदूर अपने

कारखानों की ओर भागे। वहां दीवारों पर अखबार चिपके हुए थे और उनपर मोटे अक्षरों में शीर्षक था: "समाजवादी पितृभूमि खतरे में है!" यह लेनिन द्वारा लिखित सोवियत सरकार की आज्ञप्ति थी।

"सभी देशों के पूंजीपतियों द्वारा सौंपे गये काम को पूरा करते हुए जर्मन सैनाशाही रूसी तथा उक्रइनी मजदूरों तथा किसानों का गला घोंट देना चाहती है, जमीन जमींदारों को, मिलें तथा फ़ैक्टरियां बैंकपतियों को और सत्ता राजतंत्र को वापस दिला देना चाहती है"।*

हर जगह मिलों और कारखानों में संक्षिप्त सभायें की गयीं। इन तमाम सभाओं में एक ही नारा गूंज उठा: "सब कुछ क्रांति की रक्षा के लिए! हथियार संभालो!" एक के बाद एक मजदूर आगे आते और लाल सेना के स्वयंसेवकों में अपना नाम लिखाते और वहां से अपने निश्चित स्थान की ओर चल देते। पेत्रोग्राद में कोई ४०,००० स्वयंसेवकों ने लाल सेना में अपना नाम लिखाया; मास्को में ६०,००० से अधिक स्वयंसेवकों ने।

फ़रवरी की ठंड में नवजात लाल सेना के दस्तों ने पेत्रोग्राद की दूरवर्ती सीमा पर जर्मन डिवीजनों को रोक दिया।

जर्मन हस्तक्षेपकारियों के विरुद्ध इस लड़ाई में लाल सेना को युद्ध का प्रथम अनुभव हुआ। तबसे २३ फ़रवरी को हर साल सोवियत सेना दिवस मनाया जाता है।

इस दौरान में लेनिन ने "वामपक्षी कम्युनिस्टों" तथा त्रोत्स्कीवादियों के प्रतिरोध को पराजित करके जर्मनों के साथ शांति संधि के लिए जोर लगाया। जन कमिसार परिषद ने जर्मन सरकार के नाम बेतार का संदेश भेजा, जिसमें ऐसी संधि पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव किया गया था। जर्मन जनरल अब यह समझ गये थे कि वे जैसा कि समझ रहे थे, एक झटके में सोवियत सरकार का तख्ता नहीं उलटा जा सकता। उन्होंने देखा कि लाल सेना के पीछे करोड़ों मजदूरों और किसानों की शक्ति थी। वे सोवियत सत्ता की रक्षा के लिए सब कुछ निछावर करने को तैयार थे। इसलिए जर्मन सरकार शांति संधि करने पर राजी हो गयी, मगर

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, चौथा रूसी संस्करण, खंड २७, पृष्ठ १३७

अब उसकी शर्तें पहले से भी कडी थीं। सोवियत जनतन्त्र को पूरा बाल्टिक क्षेत्र, उक्रइना और बेलोरूस छोडना पडा और भारी हरजाना देना पड़ा। ये बहुत ही कडी और अपमानजनक शर्तें थी। मगर कोई और रास्ता नही था। सोवियत सत्ता को बचाने के लिए किसी कीमत पर भी शाति सधि करनी ही थी।

३ मार्च, १९१८ को सोवियत प्रतिनिधिमडल ने* जर्मनी और उसके मित्र-राष्ट्रो के साथ शाति सधि पर हस्ताक्षर किये, जिसे ब्रेस्त शाति सधि कहते है। १४ मार्च को "वामपक्षी कम्युनिस्टो" और वामपक्षी समाजवादी-क्रातिकारियो के विरोध के बावजूद यह सधि सोवियतो की चौथी अखिल रूसी काग्रेस** द्वारा अनुमोदित हो गयी।

यह सधि बेहद कडी थी। मगर यह सधि करके सोवियत जनगण ने सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी चीज को बचा लिया और वह थी सोवियत सत्ता। जर्मन सगीनो के बल पर सोवियतो का खात्मा करने का प्रयास रोक दिया गया।

सोवियत जनतत्र को सास लेने का अवसर मिल गया। समस्या अब यह थी कि निराशा को राह न दी जाये, बल्कि जमकर सोवियत सत्ता को सुदृढ बनाया जाये, एक नये समाज का निर्माण किया जाये, एक शक्तिशाली सेना सगठित की जाये, जो शत्रु के किसी भी नये आक्रमण का मुहतोड जवाब दे सके। लेनिन ने ब्रेस्त शाति की कटुता के बारे मे जनता को साहसपूर्वक और स्पष्ट रूप से सब कुछ सही-सही बताया, पर साथ ही अतिम विजय मे दृढ विश्वास प्रकट किया। उन्होने पार्टी को प्रेरित किया कि जब बाधाए सामने आयें और पीछे हटना पडे, तो हिम्मत नही हारनी चाहिए और उन्होने तमाम श्रमजीवियो से अपील की कि पूरा जोर लगा दें। " सब चीजो मे सबसे अनुचित हताश होना

---

*नये सोवियत प्रतिनिधिमडल मे थे चिचेरिन, कराखान, पेत्रोव्स्की तथा सोकोल्निकोव।

**सोवियतो की चौथी अखिल रूसी काग्रेस का अधिवेशन मास्को मे हुआ। इस बीच मे सोवियत सरकार मास्को आ गयी थी, जो मार्च, १९१८ मे देश की राजधानी बन गया।

है," उन्होंने लिखा, "शांति की शर्तें असहनीय रूप से कटु हैं। फिर भी इतिहास सीधे रास्ते पर आकर रहेगा...

"हम संगठन, संगठन और फिर संगठन के लिए काम करें। सारी कठिनाइयों के बावजूद भविष्य हमारा है।"*

प्रथम

क्रांतिकारी तबदीलियां

"समाजवादी क्रांति के इस प्रथम दिवस पर शुभकामनाएं," लेनिन ने इन्हीं शब्दों से ८ नवम्बर, १९१७ की सुबह अपने साथियों का अभिनंदन किया। समाजवादी क्रांति विजयी हो चुकी थी। अब समय समाजवादी निर्माण कार्य शुरू करने का था—पुराने ढांचे को तोड़ फेंकना और नया ढांचा बनाना था।

पहला काम था राज्य प्रशासन को संगठित करना, एक नये राजकीय कार्ययंत्र का निर्माण करना। पुरानी राज्य मशीनरी, जो सदियों में तैयार हुई थी, शोषकों द्वारा उनके प्रभुत्व को हमेशा क़ायम रखने के लिए बनाई गयी थी। यह स्पष्ट था कि ऐसा राजकीय कार्ययंत्र क्रांति की सेवा नहीं कर सकता था। यह ज़रूरी था, जैसा कि लेनिन ने लिखा, कि उस मशीन को "तोड़ दिया जाये" और उसे "चूर-चूर कर दिया जाये"** और उसके स्थान पर एक नये राज्य का निर्माण किया जाये—एक ऐसे राज्य का, जो श्रमजीवी जनता का हो और श्रमजीवी जनता के हितों की रक्षा करने के लिए हो।

यह एक अत्यंत जटिल कार्य था। इसको राज्य निर्माण में जनता की व्यापक शिरकत के ज़रिये, उसकी सृजनात्मकता और पहलक़दमी के उपयोग के ज़रिये ही पूरा किया जा सकता था।

जनता की क्रांतिकारी सृजनात्मकता द्वारा सोवियतों का निर्माण हुआ था, जो अब क्रांति की बदौलत केंद्र और प्रदेशों में राज्य सत्ता का साधन बन गयीं। १९१८ के वसंत तक ज़्यादातर मज़दूरों और सैनिकों के प्रति-

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २७, पृष्ठ ३२

**वही, खंड २५, पृष्ठ ३८८

निधियो की सोवियतो तथा किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतो का देश भर मे विलयन हो चुका था। पूजीवादी स्थानीय सरकारी सस्थाए—नगर दूमा और जेम्स्त्वो—हर जगह पदच्युत की जा रही थी। प्रदेशो मे सोवियते ही सत्ता का एकमात्र साधन रह गयी।

सोवियते सच्चे सोवियत जनवाद का प्रतीक थी। उनका जनता से अटूट सबध था। अखिल रूसी केद्रीय कार्यकारिणी समिति की आज्ञप्ति "वापस बुलाने का अधिकार" द्वारा, जिसपर लेनिन के २१ नवम्बर, १९१७ को हस्ताक्षर किये, श्रमजीवी जनता को यह अधिकार मिल गया कि वह उन प्रतिनिधियो को, जो जनता के विश्वासपात्र सिद्ध न हो, कभी भी वापस बुला सकती है, और यह व्यवस्था की गयी कि आधे से अधिक वोटरो की माग पर सोवियतो का फिर से चुनाव किया जायेगा।

ग्राम और नगर सोवियतो के चुनाव नियमित रूप से हुआ करते थे, जैसे प्रदेशो, गुबेर्नियाओ, उयेज्दो तथा वोलोस्तो की सोवियतो की काग्रेसे हुआ करती थी।

क्राति के फौरन बाद सत्ता के केद्रीय निकाय—अखिल रूसी केद्रीय कार्यकारिणी समिति तथा जन कमिसार परिषद—पेत्रोग्राद मे काम करने लगे थे। मगर इन निकाया के पास कोई बना बनाया कार्ययत्र नही था। हर चीज नये सिरे से शुरू करनी थी।

जन कमिसार जब पुराने मत्रालयो मे आये, तो उन्ह वहा के अधिकारियो, खासकर चोटी के अधिकारियो के शत्रुतापूर्ण रुख का सामना करना पडा, जिन्होने आदेशो का पालन करने से इनकार कर दिया और काम से जी चुराया या गडबड की।

पूजीपतियो को विश्वास था कि सर्वहारा वर्ग के पास अपने प्रशिक्षित कार्यकर्ता नही हैं, इसलिए वह पुराने कार्ययत्र और अनुभवी अधिकारियो के बिना व्यवस्था प्रबध नही कर सकेगा। क्राति के शत्रुओ का विचार था कि देश का कामकाज ठप्प पड जायेगा और मेहनतकशो को बाध्य होकर सत्ता त्यागना पडेगा।

तोड फोड करनेवाले विश्वास के साथ क़दम उठा रहे थे और उन्ह पूजीपतियो से भौतिक समर्थन मिल रहा था। प्रतिक्रातिकारियो ने राजकीय बैंक से ४ करोड रूबल निकाल लिये, जिससे वे अपने साथ सहयोग

करनेवाले अधिकारियों का वेतन अदा कर सकते थे। बैंक तथा उद्योगपतियों जैसे उदाहरण के लिए रियाबुशींस्की ने तोड़-फोड़ करनेवालों की वित्तीय सहायता करने के लिए भारी रक़में अलग कर दीं। प्रतिक्रांतिकारियों ने अधिकारियों को कई महीने की तनख़्वाह पेशगी अदा कर दी सिर्फ़ एक शर्त पर और वह यह कि वे घर पर बैठे रहें और काम करने से इनकार करें।

लेकिन प्रतिक्रांतिकारियों की आशाएं ख़ाक में मिल गयीं। देश के नये स्वामी – फ़ैक्टरियों, युद्धपोतों तथा सैनिक दस्तों के सीधे-सादे लोग – राज्य की नौका खेने के लिए स्वयं आगे आये।

बाल्टिक बेड़े के नौसैनिक और पेत्रोग्राद "सीमेन्स-शुकर्ट" कारख़ाने के कामगार वैदेशिक मामलों की जन कमिसारियत में काम करने आये। "पुतीलोव" कारख़ाने के मजदूरों ने अंदरूनी मामलों की जन कमिसारियत के कार्ययंत्र का निर्माण करने में भाग लिया। और यातायात की जन कमिसारियत का संगठन पेत्रोग्राद और मास्को के रेलवे मजदूरों की सक्रिय सहायता से किया गया।

मजदूरों और नौसैनिकों को बड़ी कठिनाइयां हुईं, क्योंकि उन्हें इस काम की जानकारी और अनुभव नहीं था। मगर उनका क्रांतिकारी उत्साह, दृढ़ प्रतिज्ञा और पार्टी कार्यभार को पूरा करने की जोरदार इच्छा ने इस कठिन काम में उनकी सहायता की।

मंत्रालयों के पुराने कर्मचारियों ने जब देखा कि तोड़-फोड़ की उनकी चाल विफल हो गयी, तो वे काम पर लौटने लगे। जन कमिसारियतों का काम ज्यादा सुविधाजनक रूप से चलने लगा।

सोवियत राज्य ने पुरानी पुलिस व्यवस्था को भंग कर दिया और एक सर्वहारा मिलिशिया का निर्माण किया, जिसने जनता के अधिकारों की रक्षा का कार्यभार संभाला। पुरानी पूंजीवादी-ज़मींदारी अदालती व्यवस्था भी, जो शोषकों के हितों की देखभाल किया करती थी, मिटा दी गयी और उसकी जगह एक नया जन न्यायालय स्थापित किया गया, जिसके द्वारा जनता के अधिकारों की रक्षा की जाती थी।

प्रतिक्रांति ने चूंकि हिंसात्मक प्रतिरोध का रास्ता अपनाया, इसलिए सोवियत सत्ता के लिए प्रतिरक्षा की एक चौकस और कारगर संस्था क़ायम करना जरूरी हो गया। २० दिसंबर, १९१७ को जन कमिसार

परिषद ने प्रतिक्रांति और तोड-फोड के खिलाफ संघर्ष के लिए अखिल रूसी असाधारण आयोग (चेका) स्थापित करने का फैसला किया। द्ज़ेर्जीन्स्की की अध्यक्षता मे चेका क्रांति की तलवार और पूंजीपतियो के लिए आतंक का कारण बन गया। श्रमजीवी जनता की सहायता से सोवियत चेका के कार्यकर्ता दुश्मन की साजिशो पर कडी नजर रखते और प्रतिक्रांति पर जोरदार प्रहार करते।

सोवियत जनतंत्र चारो ओर शक्तिशाली शत्रुओ से घिरा हुआ था। उसके लिए स्वय अपनी सेना के बिना कायम रहना असभव था। लेनिन ने कहा कि "कोई क्रांति अगर अपनी रक्षा न कर सके, तो बेकार है"।* शोषको की संगठित की हुई पुरानी सेना मजदूरो और किसानो के किसी काम की नही थी। जरूरत एक नयी सेना की थी, जिसका निर्माण बिल्कुल नये आधार पर किया गया हो। अत जन कमिसार परिषद ने १५ जनवरी १६१८ को मजदूरो और किसानो की लाल सेना के सगठन के बारे मे एक आज्ञप्ति जारी की।

सर्वहारा वर्ग ने एक बडा ऐतिहासिक कारनामा कर दिखाया था। उसने राजनीतिक सत्ता अपने हाथो मे ले ली थी। लेकिन क्रांति को सुदृढ करने और एक नये समाज का निर्माण करने मे यह पहला कदम था। अर्थव्यवस्था मे महत्वपूर्ण आसनो पर अभी पूंजीपतियो का नियत्रण कायम था। वे फैक्टरियो और निजी बैंको के मालिक थे। यह ज़रूरी था कि पूंजीपति वर्ग को आर्थिक सत्ता से वचित और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे प्रभावशाली स्थानो से निकाला जाये।

अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति ने १४ नवम्बर, १६१७ को "मजदूरो के नियत्रण के बारे मे विनियम" स्वीकार किये। सभी उद्यमो म माल उत्पादन और वितरण पर मजदूरो का नियत्रण कायम किया गया। मजदूर स्वय अपने निर्वाचित सगठनो—फैक्टरी कमिटियो आदि के जरिये नियत्रण करते थे। इससे जनता के स्वतत्र कार्यकलाप और पहलकदमी को प्रोत्साहन मिला।

राज्य ने राष्ट्रीय अर्थतत्र को नियत्रित करने की स्वय अपनी सस्थायें बनायी। दिसम्बर, १६१७ मे जन कमिसार परिषद के अतर्गत सर्वोच्च

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २८, पृष्ठ १०४

राष्ट्रीय अर्थ-परिषद की स्थापना की गयी। इसके बाद ज़िला (प्रदेशीय), गुबेर्नियाई और उयेज़्द के अर्थ-परिषदों के निर्माण का काम शुरू हुआ।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण तंत्रिका उसकी वित्तीय व्यवस्था होती है। उस समय देश में मुद्रा संचलन और ऋण व्यवस्था बड़ी हद तक बैंकों के कार्यकलाप पर निर्भर करती थी और बैंकिंग व्यवस्था उन प्रभावशाली स्थानों में थी, जिनपर पूंजीपतियों का क़ब्ज़ा था।

सोवियत सत्ता ने साहसपूर्वक और निश्चयात्मक ढंग से बैंकों को ले लिया। राजकीय बैंक और राजकोष के अधिकारियों द्वारा तोड़-फोड़ का मुक़ाबला किया गया। तोड़-फोड़ करनेवालों को निकाल दिया गया और जो बहुत बदमाश थे, उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया। कारख़ानों और सैनिक दस्तों के वित्तीय कार्यकर्ताओं ने, जो क्रांति के प्रति वफ़ादार थे, उनका स्थान संभाला। इसके बाद निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

एक बार जब उत्पादन पर मजदूरों का नियंत्रण क़ायम हो गया और बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया, तो सोवियत राज्य की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन सुदृढ़ होने लगी। पूंजीपतियों पर मज़दूरों का नियंत्रण स्थापित हो चुका था, मगर अभी तक वे कारख़ानों के मालिक थे। लेकिन यह भी बहुत दिनों तक नहीं रहा। १९१७ के नवम्बर-दिसम्बर में औद्योगिक उद्यमों का राष्ट्रीयकरण शुरू हुआ।

...व्लादीमिर गुबेर्निया की लीकिनो बस्ती में एक बड़े कारख़ाने का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया। यह पहली फ़ैक्टरी थी, जिसका राष्ट्रीयकरण किया गया। सितम्बर, १९१७ में उसके मालिक स्मिर्नोव ने उत्पादन बंद कर दिया था और ४,००० मजदूर बेकार हो गये थे। फ़ैक्टरी बेकार पड़ी थी। आख़िर ३० नवम्बर को लेनिन ने एक विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये, जिसके ज़रिये फ़ैक्टरी को रूसी जनतंत्र के स्वामित्व में ले लिया गया।

इसके बाद उराल, पेत्रोग्राद तथा अन्य क्षेत्रों और शहरों में अनेक कारख़ाने राज्य के स्वामित्व में लिये गये। जून, १९१८ तक ५०० से अधिक बड़े कारख़ानों का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया था और २८ जून को जन कमिसार परिषद ने तमाम बुनियादी उद्योगों में बड़े

उद्यमों के राष्ट्रीयकरण के संबंध मे एक आज्ञप्ति जारी की। १६१८ के वसंत मे वैदेशिक व्यापार पर भी राज्य का एकाधिपत्य स्थापित कर दिया गया।

इस प्रकार पूंजीपतियो को राजनीतिक सत्ता से ही नही, बल्कि आर्थिक प्रभुता से भी वंचित कर दिया गया। लेकिन संपत्तिकर्ताओ का संपत्तिहरण करना, मालिको को निकाल बाहर करना और बैंको और फैक्टरियो पर अधिकार करना तो आधा ही काम था। अब यह सीखना जरूरी था कि अर्थतंत्र का प्रबंध, उत्पादन का संगठन और वितरण जनता के लिए और जनता द्वारा कैसे किया जाये।

इस समस्या को हल करने के उपाय और तरीको का उल्लेख समाजवादी अर्थव्यवस्था की नींव डालने की उस योजना मे किया गया, जिसे लेनिन ने अपनी अनेक कृतियो मे, खासकर "सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार" (१६१८ के वसंत मे प्रकाशित) मे प्रस्तुत किया था।

उस समय रूस एक लघु किसानी देश था, जिसमे, जैसा कि लेनिन ने बताया, लघु-माल उत्पादन का बोलबाला था और वह पूंजीवाद को सुरक्षित रखने और उसकी पुनरावृत्ति के आधार का काम देता था। यही निम्नपूंजीवादी तत्व सोवियत सत्ता और समाजवाद के लिए मुख्य खतरा थे और आवश्यक था कि अर्थव्यवस्था मे समाजवादी व्यवस्था को हर संभव तरीके से मजबूत बनाकर इस खतरे को दूर किया जाये। लेकिन आर्थिक प्रबंध की कला सीखे बिना यह नही किया जा सकता था। लेनिन ने लिखा "समाजवाद तभी निरूपित और सुदृढ हो सकता है, जब मजदूर वर्ग अर्थतंत्र का संचालन करना सीख जाये और जब मेहनतकशो की प्रतिष्ठा मजबूती से स्थापित हो जाये। इसके बिना समाजवाद एक आकांक्षा मात्र है।"*

लेनिन ने प्रबंधकार्य का कारगर ढंग से संगठन करने के लिए विस्तृत मार्गदर्शी सिद्धांत स्थापित किये। उन्होंने लोगो का आह्वान किया कि वित्तीय मामलो मे पाई-पाई का हिसाब रखें और ईमानदारी से काम ले, अर्थव्यवस्था को किफायत से चलायें, कामचोरी छोड़ें और कड़े श्रम अनुशासन

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं

का पालन करें। हिसाब-किताब के संगठन और माल उत्पादन तथा वितरण पर नियंत्रण का बड़ा महत्व था। प्रबंध को संगठित करने का काम जटिल और बहुत कठिन था, क्योंकि पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमजीवी जनता को आवश्यक अनुभव और जानकारी हासिल करने का कोई अवसर प्राप्त नहीं था। लेकिन मजदूर वर्ग इन कठिनाइयों पर क़ाबू पाने लगा। धीरे-धीरे उत्पादन में सुधार हुआ और एक नये, सचेत और बिरादराना प्रकार का श्रम अनुशासन उत्पन्न और स्थापित हुआ।

क्रांति की लहरें उस विशाल देश में चारों ओर फैल गयीं, समाज की नस-नस में पहुंच गयीं और उन्होंने जो कुछ पुराना और सड़ा-गला था, उसे बहाकर साफ़ कर दिया।

अखिल रूसी कार्यकारिणी समिति और जन कमिसार परिषद ने २४ नवम्बर, १९१७ को एक आज्ञप्ति जारी करके सामाजिक श्रेणियों में आबादी के विभाजन और तमाम श्रेणी संबंधी विशेषाधिकारों अथवा पाबंदियों को मिटा दिया। इसी के साथ सभी पदवियों, उपाधियों और पदों के अन्तर को मिटा दिया गया।

देहातों में बड़ा परिवर्तन हो रहा था। भूमि के बारे में आज्ञप्ति के अनुसार किसानों ने बड़ी जमींदारियों को मिटाकर जमीनें आपस में बांट ली थीं। १९१८ के वसंत तक जमींदार वर्ग का मूलतः सफ़ाया हो चुका था। जमीन, मवेशी और खेती के औज़ार किसानों को मिल गये।

इस प्रकार इतिहास में पहली बार एक पूरे शोषक वर्ग को मिटा दिया गया—और उसे मिटाया गया क्रांतिकारी तरीक़े से। क्रांति की यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। उस समय देहातों में वर्गीय शक्तियों की व्यवस्था में एक मौलिक परिवर्तन हुआ। किसानों का सबसे दरिद्र भाग—जमींदारों के खेत मजदूरों की श्रेणी शेष नहीं रही। ग़रीबों के एक बड़े भाग को भूमि मिल गयी थी और उनकी अवस्था अब मझोले किसानों की हो गयी थी।

लेकिन जमींदारों के स्वामित्व के अधिकारों के मिटने मात्र से ही अपने आप देहात में सामाजिक असमानता का अंत नहीं हुआ। देहाती पूंजीपतियों—कुलकों—ने पुराने जमींदारों की जमीन के एक बड़े भाग पर क़ब्ज़ा करके कृषि क्रांति से लाभ उठाना चाहा। उन्हें आशा थी कि इस

प्रकार वे अपनी ताकत को मजबूत बना लेगे और गरीब किसानो का अधिक शोषण करेगे। जाहिर है कि श्रमजीवी किसानो ने इसका डटकर विरोध किया।

देहातो मे वर्ग सघर्ष तेज हुआ और उसने समाजवादी क्राति–कुलको के खिलाफ गरीब किसानो की क्राति–के सभी लक्षण ग्रहण कर लिये।

क्राति ने अतीत के एक बदतरीन अवशेष–पुरुषो और महिलाओ की असमानता–को समाप्त कर दिया। ३१ दिसम्बर, १९१७ को "सिविल विवाह, बच्चे और रजिस्ट्रार कार्यालयो का काम के बारे मे" एक *आज्ञप्ति जारी की गयी, जिसके द्वारा पुरुषो और महिलाओ को समान* अधिकार प्रदान किये गये।

सोवियत सत्ता ने आर्थोडाक्स चर्च के सभी विशेषाधिकारो को मिटा दिया, चर्च को राज्य से और स्कूल को चर्च से अलग किया और इस प्रकार सार्वजनिक शिक्षा पर चर्च के प्रभाव का अत किया। सपूर्ण विवेक-स्वतत्रता स्थापित की गयी। यह आज्ञप्ति जारी की गयी कि "हर नागरिक को *आजादी है कि चाहे जो धर्म अपनाये या* कोई *धर्म न* अपनाये।"*

क्राति के तूफान ने उन जजीरो को तोड दिया, जिनसे रूस की जातिया बधी हुई थी। "रूस की जातियो के अधिकारो की घोषणा" के चार सक्षिप्त सूत्रो ने जातियो की आकाक्षाओ को साकार कर दिया। उन्होने रूस की जातियो की समानता और प्रभुसत्ता, उनके स्वतत्र आत्मनिर्णय के अधिकार, जिसमे अलग होने और स्वावलबी राज्य स्थापित करने का अधिकार शामिल था, प्रत्येक और सभी राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-धार्मिक प्रतिबधो को मिटाने, और रूस के इलाके मे बसी हुई गैर-रूसी अल्पसख्यको तथा नस्ली समूहो के स्वतत्र विकास की घोषणा की।

रूस मे अब शासक और शासित जातियो का विभाजन नही रहा। देश की सभी–छोटी बडी–जातियो को अपने-अपने सर्वतोमुखी विकास का अवसर प्रदान किया गया। गैर-रूसी क्षेत्रो के मेहनतकशो की राजनीतिक चेतना और कार्यकलाप मे तेजी से वृद्धि हुई। सोवियत सत्ता को मजबूत करके उन्होने स्वय अपने राष्ट्रीय राज्यत्व का निर्माण किया। स्वतत्र

---

* "सोवियत सत्ता की आज्ञप्तिया", खड २, पृष्ठ ३७१

का पालन करें। हिसाब-किताब के संगठन और माल उत्पादन तथा वितरण पर नियंत्रण का बड़ा महत्व था। प्रबंध को संगठित करने का काम जटिल और बहुत कठिन था, क्योंकि पूंजीवाद के अंतर्गत श्रमजीवी जनता को आवश्यक अनुभव और जानकारी हासिल करने का कोई अवसर प्राप्त नहीं था। लेकिन मजदूर वर्ग इन कठिनाइयों पर क़ाबू पाने लगा। धीरे-धीरे उत्पादन में सुधार हुआ और एक नये, सचेत और बिरादराना प्रकार का श्रम अनुशासन उत्पन्न और स्थापित हुआ।

क्रांति की लहरें उस विशाल देश में चारों ओर फैल गयी, समाज की नस-नस में पहुंच गयी और उन्होंने जो कुछ पुराना और सड़ा-गला था, उसे बहाकर साफ़ कर दिया।

अखिल रूसी कार्यकारिणी समिति और जन कमिसार परिषद ने २४ नवम्बर, १९१७ को एक आज्ञप्ति जारी करके सामाजिक श्रेणियों में आबादी के विभाजन और तमाम श्रेणी संबंधी विशेषाधिकारों अथवा पाबंदियों को मिटा दिया। इसी के साथ सभी पदवियों, उपाधियों और पदों के अन्तर को मिटा दिया गया।

देहातों में बड़ा परिवर्तन हो रहा था। भूमि के बारे में आज्ञप्ति के अनुसार किसानों ने बड़ी जमींदारियों को मिटाकर जमीनें आपस में बांट ली थीं। १९१८ के वसंत तक जमींदार वर्ग का मूलतः सफ़ाया हो चुका था। जमीन, मवेशी और खेती के औजार किसानों को मिल गये।

इस प्रकार इतिहास में पहली बार एक पूरे शोषक वर्ग को मिटा दिया गया—और उसे मिटाया गया क्रांतिकारी तरीक़े से। क्रांति की यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। उस समय देहातों में वर्गीय शक्तियों की व्यवस्था में एक मौलिक परिवर्तन हुआ। किसानों का सबसे दरिद्र भाग—जमींदारों के खेत मजदूरों की श्रेणी शेष नहीं रही। ग़रीबों के एक बड़े भाग को भूमि मिल गयी थी और उनकी अवस्था अब मझोले किसानों की हो गयी थी।

लेकिन जमींदारों के स्वामित्व के अधिकारों के मिटने मात्र से ही अपने आप देहात में सामाजिक असमानता का अंत नहीं हुआ। देहाती पूंजीपतियों—कुलकों—ने पुराने जमींदारों की जमीन के एक बड़े भाग पर क़ब्जा करके कृषि क्रांति से लाभ उठाना चाहा। उन्हें आशा थी कि इस

प्रकार वे अपनी ताकत को मजबूत बना लेगे और गरीब किसानो का अधिक शोषण करेगे। जाहिर है कि श्रमजीवी किसानो ने इसका डटकर विरोध किया।

देहातो मे वर्ग सघर्ष तेज हुआ और उसने समाजवादी क्राति–कुलको के खिलाफ गरीब किसानो की क्राति–के सभी लक्षण ग्रहण कर लिये।

क्राति ने अतीत के एक बदतरीन अवशेष–पुरुषो और महिलाओ की असमानता–को समाप्त कर दिया। ३१ दिसम्बर, १६१७ को "सिविल विवाह, बच्चे और रजिस्ट्रार कार्यालयो का काम के बारे मे" एक आज्ञप्ति जारी की गयी, जिसके द्वारा पुरुषो और महिलाओ को समान अधिकार प्रदान किये गये।

सोवियत सत्ता ने आर्थोडाक्स चर्च के सभी विशेषाधिकारो को मिटा दिया, चर्च को राज्य से और स्कूल को चर्च से अलग किया और इस प्रकार सार्वजनिक शिक्षा पर चर्च के प्रभाव का अत किया। सपूर्ण विवेक-स्वतत्रता स्थापित की गयी। यह आज्ञप्ति जारी की गयी कि 'हर नागरिक को आजादी है कि चाहे जो धर्म अपनाये या कोई धर्म न अपनाये।"*

क्राति के तूफान ने उन जजीरो को तोड दिया, जिनसे रूस की जातिया बधी हुई थी। *"रूस की जातियो के अधिकारो की घोषणा"* के चार सक्षिप्त सूत्रो ने जातियो की आकाक्षाओ को साकार कर दिया। उन्होने रूस की जातियो की समानता और प्रभुसत्ता, उनके स्वतत्र आत्मनिर्णय के अधिकार, जिसमे अलग होने और स्वावलबी राज्य स्थापित करने का अधिकार शामिल था, प्रत्येक और सभी राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-धार्मिक प्रतिबधो को मिटाने, और रूस के इलाके मे बसी हुई गैर रूसी अल्पसख्यको तथा नस्ली समूहो के स्वतत्र विकास की घोषणा की।

रूस मे अब शासक और शासित जातियो का विभाजन नही रहा। देश की सभी–छोटी बडी–जातियो को अपने-अपने सर्वतोमुखी विकास का अवसर प्रदान किया गया। गैर-रूसी क्षेत्रो के मेहनतकशो की राजनीतिक चेतना और कार्यकलाप मे तेजी से वृद्धि हुई। सोवियत सत्ता को मजबूत करके उन्होने स्वय अपने राष्ट्रीय राज्यत्व का निर्माण किया। स्वतत्र

---

*"सोवियत सत्ता की आज्ञप्तिया", खड २, पृष्ठ ३७१

दूसरा अध्याय

वैदेशिक हस्तक्षेप और आन्तरिक प्रतिक्रांति के विरुद्ध संघर्ष १९१८–१९२०

हस्तक्षेप और गृहयुद्ध की शुरूआत

समाजवादी क्रांति का निष्पादन रूस की आबादी के विशाल बहुमत के समर्थन और सक्रिय शिरकत से हुआ था। लेकिन विभिन्न गुटों ने जो पहले सत्तारूढ़ रह चुके थे और जिन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे, विजयी क्रांति के विरुद्ध तीव्र संघर्ष शुरू कर दिया। इनमें वे जमींदार थे जिनकी जागीरें छिन गयी थीं, वे पूंजीपति थे जिनकी फ़ैक्टरियों, बैंकों आदि का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया था। सैनिक अफ़सरों और अधिकारीगण का एक बड़ा भाग जिसका जमींदारों और पूंजीपतियों से गहरा सम्बन्ध था, जन सत्ता के ख़िलाफ़ खड़ा हो गया। शताब्दियों में ज़ारशाही ने एक ख़ास प्रकार का विशेषाधिकार प्राप्त सैनिक दल—कज़्ज़ाक सेनाएं तैयार की थीं। उनकी संख्या काफ़ी बड़ी थी और वे एक बड़े क्षेत्र (दोन, उत्तरी काकेशिया, दक्षिण उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व) में फैली हुई थीं। हां, कज़्ज़ाकों में भी सामाजिक-राजनीतिक स्तरीकरण हो गया। श्रमजीवी कज़्ज़ाकों ने क्रांति का पक्ष लिया। लेकिन कज़्ज़ाकों में जो बड़े लोग थे, वे प्रारम्भ में कज़्ज़ाक सेनाओं के एक भाग को सोवियत सत्ता के विरुद्ध खड़ा करने में सफल हो गये।

क्रांति के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानेवालों में बड़े पादरी लोग—आर्थोडाक्स, कैथोलिक और मुस्लिम—और पूर्व के सीमावर्ती जातीय इलाक़ों के सामंती और अर्द्ध-सामंती हल्के भी थे। ग्रामीण पूंजीपतियों—कुलकों—ने तो खुल्लम-खुल्ला सोवियत-विरोधी पक्ष लिया भी।

मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर अधिकार करने के पहले के तमाम प्रयास चूंकि असफल रहे थे इसलिए प्रतिक्रांति को पूरा विश्वास था कि देर सवेर

वही बात इस बार भी होकर रहेगी। प्रतिक्रांति और उसकी सेनाए (जिन्हे सफेद गार्ड कहा जाने लगा) वैदेशिक प्रतिक्रियावादियो के व्यापक समर्थन की आशा कर रही थी। जैसा कि बाद की घटनाओ से जाहिर हो गया उनकी आशाए निराधार नही थी।

अत क्राति का विरोध करनेवाली शक्तिया खासी बडी थी। इसके अलावा बहुत से लोग, खासकर जिनका सबध बुद्धिजीवियो से था, यद्यपि सोवियत सत्ता के दुश्मन नही थे, मगर किकर्तव्यविमूढ और डावाडोल थे। देश मे क्रातिकारी परिवर्तनो का जो जबर्दस्त उभार आया, उससे वे घबरा और डर गये थे।

अक्तूबर क्राति के पहले दिना से ही नवजात जनतत्र के शत्रुओ ने सोवियत सत्ता को उलटने और पुरानी प्रथा को फिर से कायम करने के लिए आर्थिक तोड-फोड और राजनीतिक सघर्ष करने के साथ-साथ, सशस्त्र सघर्ष भी शुरू कर दिया था जिसकी तीव्रता दिनोदिन बढती जा रही थी।

सोवियतो की दूसरी काग्रेस म सोवियत सत्ता की उद्घोषणा पर विजयोल्लास खत्म भी नही होने पाया था कि क्रान्ति की जन्म-भूमि के पास तोपो की गोलाबारी की आवाज सुनाई दी। पेत्रोग्राद से भागने पर भूतपूर्व प्रधान मत्री केरेन्स्की ने एक विप्लव सगठित किया। जनरल क्रास्नोव से मिलकर उसने कई सैनिक दस्ते एकत्र किये और विजयी मजदूरा और किसाना को "शान" करने चला। केरेन्स्की-समर्थक क्रास्नोव की सेनाए पेत्रोग्राद के निकट पहुच गयी मगर १२ नवम्बर को मजदूरो, नौसैनिको और सैनिको ने उन्हे परास्त कर दिया। केरेन्स्की भाग निकला और क्रास्नोव बन्दी बना लिया गया था मगर इस "आश्वासन" पर उसे रिहा कर दिया गया कि वह अब सोवियत सत्ता के खिलाफ़ हथियार नही उठायेगा।

१९१८ के पूर्वार्द्ध मे पूजीपतियो ने बडी सख्या मे गुप्त सगठन बनाये जिनके जरिये वे षड्यत्र रचते, विप्लव सगठित करते, तोड-फोड और आतक मचाते और सोवियत विरोधी प्रचार कराते थे। प्रतिक्राति बडी मुस्तैदी से अपनी सैन्य शक्ति का निर्माण कर रही थी। उत्तरी काकेशिया मे सोवियत-विरोधी सैनिक अफसर एक तथाकथित स्वयसेवक सेना तैयार कर रहे थे जिसके प्रधान जारशाही के पुराने जनरल अलेक्सेयेव, कोर्नीलोव और देनीकिन थे। कज्जाक क्षेत्रो मे सोवियत-विरोधी दस्तो का सगठन किया जा रहा था।

प्रतिक्रांतिकारियों द्वारा गृहयुद्ध छेड़ने के प्रथम प्रयासों को बड़ी जल्दी परास्त कर दिया गया था (पेत्रोग्राद के निकट केरेन्स्की-समर्थक क्रास्नोव की हार, दक्षिण उराल में दूतोव तथा दोन के पास कलेदिन की हार)। इससे यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गयी थी कि सोवियत सत्ता को आबादी के विशाल बहुमत का समर्थन प्राप्त है और वह प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों से कहीं ज्यादा तगड़ी है।

मगर सशस्त्र संघर्ष का अंत नहीं हुआ। इसके विपरीत ज्यों-ज्यों महीने गुजरते गये उसकी आग फैलती और तीव्रता बढ़ती गयी। इसका कारण एक ही था: संसार के सबसे बड़े पूंजीवादी देशों द्वारा सोवियत-विरोधी हस्तक्षेप।

सोवियत रूस में एंटेंट सेना भेजने का कारण आधिकारिक तौर पर यह बताया गया कि जर्मन हस्तक्षेप को रोकने के लिए ऐसा किया गया है। लेकिन यह सफ़ाई सही नहीं साबित होती। यह ठीक है कि एंटेंट की प्रथम सेनाएं रूस में उस समय उतारी गयीं जब जर्मनी से युद्ध जारी था। मगर वास्तविकता यह है कि बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप जर्मनी से युद्ध का अंत हो जाने के बाद ही हुआ।

हस्तक्षेप का असली कारण साफ़ था। यह संसार के प्रथम समाजवादी राज्य के विरुद्ध सत्तारूढ़ वर्गों का अंतर्राष्ट्रीय आक्रमण था। विंस्टन चर्चिल ने अनेक बार यह स्वीकार किया कि उसका उद्देश्य "जनमते ही बोल्शेविज्म का गला घोंट देना" था। सारी दुनिया में क्रांतिकारी आंदोलन के फैलने से साम्राज्यवादी क्षेत्रों में बड़ी घबराहट फैल गयी थी और वे समझने लगे थे कि रूस का उदाहरण बहुत ख़तरनाक है।

एक बड़ा कारण यह भी था कि अक्तूबर क्रांति ने पश्चिमी पूंजीपतियों को रूस में उनके कारख़ानों, रिआयतों और लगी पूंजी से वंचित कर दिया था। साम्राज्यवादी नेताओं को यह भी आशा थी कि हस्तक्षेप के ज़रिये रूस के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे और उसके कुछ भागों को वे अपना उपनिवेश बना सकेंगे।

दिसम्बर, १९१७ में रूमानियाई राजतंत्र ने अंतर्राष्ट्रीय क़ानून, समझौते और वादों का उल्लंघन करके बेसाराबिया पर क़ब्ज़ा कर लिया। इसके शीघ्र ही बाद ब्रिटिश, जापानी और अमरीकी हस्तक्षेपकारी सेनाएं सोवियत देश के उत्तर (मूर्मान्स्क और अर्ख़ांगेल्स्क) और सुदूर पूर्व (व्लादीवोस्तोक) में उतारी गयीं।

१९१८ की मई के अंत में मध्य वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया में एक चेकोस्लोवाक कोर का विप्लव शुरू हुआ। इस कोर में चेक और स्लोवाक सैनिक थे जो आस्ट्रिया की सेना में थे और जिन्हें विश्वयुद्ध के दौरान रूसियों ने युद्धबंदी बना लिया था। यह कोर सोवियत सरकार की अनुमति से साइबेरिया और सुदूर पूर्व के रास्ते यूरोप के लिए रवाना हो रहा था। लेकिन ब्रिटिश फ्रांसीसी अमरीकी एजेंटों ने कोर के प्रतिक्रियावादी कमान की सहायता से उसे सोवियत जनतंत्र के विरुद्ध संघर्ष में इस्तेमाल कर लिया। रेलवे लाइन के साथ-साथ तैनात कोर के ६०,००० सशस्त्र सैनिकों ने वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया में अनेक शहरों पर कब्ज़ा कर लिया।
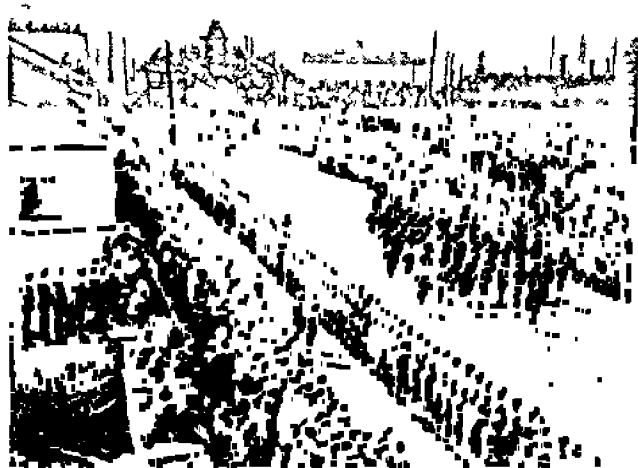
अर्खांगेल्स्क में अंग्रेज़ी सेना उतर रही है। १९१८

हस्तक्षेपकारियों ने सोवियत मध्य एशिया के इलाके पर भी हमला कर दिया। ईरान से आकर ब्रिटिश सेनाओं ने ट्रांस-कास्पियन क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

अधिकृत इलाको मे हस्तक्षेपकारियो ने एक औपनिवेशिक, आतंकवादी व्यवस्था कायम की। कम्युनिस्टो, सोवियत और ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। उनमे से बहुतो की हत्या कर दी गयी। इस प्रकार बिना तहकीकात किये और मुकदमा चलाये उन २६ कमिसारो की हत्या की गयी थी जो आज़रबैजान की राजधानी बाकू मे सोवियत सत्ता के नेता थे। बाकू कमिसारो मे अज़ीज़बेकोव, जापारीद्ज़े, मालीगिन, फ़िओलेतोव, शाउम्यान आदि प्रमुख जन नेता थे। अंग्रेज़ उन्हे पकड़कर ट्रान्स-कास्पियन क्षेत्र के रेगिस्तान मे ले गये और वहा उन्हे गोली मार दी।

बाकू के २६ कमिसारो की प्राणाहुति

सोवियत-विरोधी हस्तक्षेप मे कुल मिलाकर यूरोप, अमरीका और एशिया के १८ देशो ने भाग लिया। इनमे बुनियादी भूमिका सबसे बड़ी पूजीवादी शक्तियो—सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास और जापान ने अदा की। अक्तूबर क्रांति के बाद वाले साल मे पूजीवादी जगत युद्ध के जारी रहने के कारण एक ओर एंटेंट और दूसरी ओर जर्मनी और उसके मित्र-राष्ट्रो मे बटा हुआ था। इससे साम्राज्यवादी शक्तियो का एकीकरण किसी हद तक कठिन हो गया था। लेकिन इस स्थिति मे भी

दोनो युद्धरत शक्तियो ने सोवियत जनतन्त्र के विरुद्ध वास्तव मे सयुक्त कदम उठाया।

रूस के एक विशाल भाग पर जर्मनी और आस्ट्रिया-हगरी द्वारा कब्जा बढते हुए ब्रिटिश-फ्रासीसी-जापानी-अमरीकी हस्तक्षेप से सबद्ध था। इस-से पहले कभी किसी देश पर इतने विशाल पैमाने पर और मिलकर आक्रमण नही किया गया था।

रूस और बाहरी दुनिया के बीच सारा स्थल और जल यातायात बन्द कर दिया गया और सोवियत जनतन्त्र की लगभग मुकम्मल नाकाबन्दी कर दी गयी। हस्तक्षेपकारियो ने सफेद गार्डी प्रतिक्रातिकारी शक्तियो से प्रत्यक्ष एकता कायम की। उन्होने रुपये-पैसे और हथियारो से उनकी सहायता की और उनके साथ मिलकर फौजी कार्रवाइयो मे भाग लिया। हस्तक्षेपकारियो के प्रत्यक्ष समर्थन के कारण भीतरी प्रतिक्रातिकारियो को अपनी कार्रवाइयो को तेज करने का अवसर मिल गया।

सोवियत जनतन्त्र अग्नि घेरे मे

ब्रेस्त सधि के जरिये जो दम लेने की मुहलत मिली थी, उसका १६१८ के मध्य तक अत हो गया। सोवियत देश को वैदेशिक हस्तक्षेप और भीतरी प्रतिक्राति के खिलाफ युद्ध मे उतरना पडा। युद्ध की समस्या अब क्राति की सबसे महत्वपूर्ण, बुनियादी समस्या बन गयी। रूस की जातियो का भाग्य अब इस बात पर निर्भर करता था कि क्या सोवियत सत्ता दुश्मन के हमले को परास्त करने और क्राति के ध्येय की रक्षा करने के योग्य होगी या नही।

१६१८ के मध्य मे सारा सोवियत देश साम्राज्यवादियो द्वारा भडकाई युद्ध की आग मे झुलस रहा था। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम—चारो ओर हस्तक्षेपकारियो और सफेद गार्डो के खिलाफ जोरदार सघर्ष चल रहा था।

मध्य १६१८ तक सफेद स्वयसेवक सेना ने उत्तरी काकेशिया के एक बडे भाग पर कब्जा कर लिया। जनरल क्रास्नोव और मामोन्तोव ने कज्जाको का विप्लव कराया, दोन क्षेत्र पर कब्जा किया और त्सरीत्सिन (वर्तमान वोल्गोग्राद) और वोरोनेज पर हमला बोल दिया।

चेकोस्लोवाक विप्लवियों और सफ़ेद गार्डों ने पूरे साइबेरिया तथा वोल्गा प्रदेश के अनेक शहरों—समारा (वर्तमान कूइबिशेव), सिम्बीर्स्क (वर्तमान उल्यानोव्स्क) और काज़ान पर अधिकार कर लिया। अतामान दूतोव के सफ़ेद कज़्ज़ाक दस्ते फिर सक्रिय हो गये, जिन्होंने जुलाई, १९१८ के शुरू में ओरेंबुर्ग पर क़ब्ज़ा कर लिया। सोवियत तुर्किस्तान का संबंध देश के केंद्र से विच्छेद हो गया।

उराल में तीव्र संघर्ष छिड़ गया। जुलाई भर येकातेरीनबुर्ग (वर्तमान स्वेर्दलोव्स्क) के पास, जो उस क्षेत्र में प्रतिरोध का केंद्र था, लड़ाई चलती रही। हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों को पता था कि भूतपूर्व ज़ार निकोलाई रोमानोव को येकातेरीनबुर्ग में बन्दी बनाकर रखा गया है। वे चाहते थे कि उसे रिहा करके प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को उसके गिर्द इकट्ठा किया जाये। उराल क्षेत्रीय सोवियत की विज्ञप्ति के अनुसार निकोलाई रोमानोव को १७ जुलाई, १९१८ को गोली मार दी गयी। एक सप्ताह बाद सफ़ेद गार्डों ने शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया।

हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों द्वारा अधिकृत इलाक़ों (अर्खांगेल्स्क, समारा, ओम्स्क, ट्रांस-कास्पियन क्षेत्र तथा अन्य स्थानों) में सोवियत-विरोधी, प्रतिक्रांतिकारी "सरकारें" स्थापित की गयीं जिनमें मेंशेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी शामिल थे। शुरू में इन "सरकारों" ने जनवादी शब्दावली का व्यापक प्रयोग किया। लेकिन व्यवहार में वे अपने हर काम में पूंजीपतियों, ज़मींदारों और वैदेशिक साम्राज्यवादियों की इच्छा पूरा करती थीं और खुल्लम-खुल्ला सैनिक तानाशाही का रास्ता साफ़ कर रही थीं।

नवजात सोवियत जनतंत्र मोर्चों के अग्नि घेरे में घिरा हुआ था। सोवियतों का लाल झण्डा केवल केन्द्रीय रूस के अपेक्षाकृत एक छोटे से इलाक़े पर लहरा रहा था।

इसके अलावा कुलक विप्लवों की लहर देश भर में फैल गयी और अनेक क्षेत्रों में (वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया में) मझोले किसानों का एक ख़ासा बड़ा भाग डगमगाने और समाजवादी-क्रांतिकारियों का समर्थन करने लगा।

सोवियत राज्य कड़ी परीक्षा से गुज़र रहा था। जुलाई, १९१८ में लेनिन ने कहा: "विश्व साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष में प्रथम

समाजवादी दस्ता होने का परम सम्मान और परम कठिनाई हमे प्राप्त हुई है।"*

एटेंट के हस्तक्षेप और जर्मन कब्जे के कारण सोवियत रूस से खाद्यान, कच्चे माल तथा ईंधन का उत्पादन करनेवाले महत्वपूर्ण इलाके छिन गये थे। मास्को, पेत्रोग्राद तथा अन्य शहरो के मजदूरो को आधा पेट राशन मिलता था। सोवियत जनतन्त्र के पास न दोनेत्स्क बेसिन का कोयला था, न क्रिवोय रोग का खनिज लोहा, न बाकू का तेल और न तुर्किस्तान की रूई। कच्चे माल और ईंधन के अभाव मे कारखाने ठप होने लगे। १९१८ की गर्मियो के अत तक कोई ४० प्रतिशत औद्योगिक उद्यम बेकार पडे थे।

"मृत्यु या विजय!"—यह था वह नारा जिसके तहत सोवियत जनगण लडे। सितम्बर, १९१८, के शुरू मे अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने सोवियत जनतन्त्र को एक सयुक्त फौजी छावनी घोषित किया। समिति के २ सितम्बर की विज्ञप्ति मे कहा गया था "उत्पीडको के खिलाफ सशस्त्र सघर्ष के पवित्र ध्येय को पूरा करने के लिए सोवियत जनतन्त्र की सारी शक्ति और साधन लगा दिये जायेंगे।"

सफेद गार्डो और हस्तक्षेपकारियो के खिलाफ सघर्ष मे देश के सभी साधन जुटाने के लिए ३० नवम्बर, १९१८ को मजदूरा और किसाना की प्रतिरक्षा परिषद कायम की गई, जिसके प्रधान लेनिन थे।

सोवियत सेना के निर्माण का कार्य कठिन और जटिल था। लाल सेना एक वर्गीय सेना—मजदूरो और श्रमजीवी किसानो की सेना के रूप मे सगठित की गयी। इसकी रीढ की हड्डी देश के औद्योगिक केद्रो—मास्का, पेत्रोग्राद, त्वेर, इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क, नीज्नी नोवगोरोद, तूला और उराल के रूसी सर्वहारा थे। श्रमजीवी जनता की पाति से अनक प्रतिभाशाली और साहसी सैनिक नेता पैदा हुए। युद्ध की आग म तपकर निकलनेवाले कमाडरो मे ब्लूखेर, बुद्योन्नी, वोरोशीलोव, लाज़ा, कतोव्स्की, पर्खोमिको, फब्रीत्सिउस, फेद्को, फ्रूंजे, चापायेव, श्चोस, याकीर आदि थे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खण्ड २७, पृष्ठ ५०२

मजदूरों और किसानों में से नये कमांडरों का प्रशिक्षण करने के साथ ही साथ सोवियत सरकार ने अनुभवी सैनिक विशेषज्ञों की सेवाएं भी प्राप्त कीं जिन्होंने जारशाही सेना में काम किया था। कई पुराने अफ़सरों ने जनतंत्र से विश्वासघात किया और शत्रु से मिल गये, मगर प्रगतिशील विचार के अफ़सरों ने ईमानदारी से सोवियत सत्ता की सेवा की। इनकी कुछ मिसालें थीं: कामेनेव जो गृहयुद्ध के दौरान सोवियत सैन्य शक्तियों के सर्वोच्च कमांडर बने; शापोशिनकोव जो उन दिनों एक फ़ील्डस्टाफ़ की कार्रवाइयों के प्रधान थे और बाद में जनरल स्टाफ़ के चीफ़ नियुक्त हुए; येगोरोव और तुखाचेव्स्की जिनके हाथों में सबसे महत्वपूर्ण मोर्चों की कमान थी और बाद में सोवियत संघ के मार्शल बने; कार्बिशेव, एक प्रमुख सैनिक इंजीनियर जिन्होंने १९१८–१९२० में सोवियत जनतंत्र की रक्षा में सक्रिय भाग लिया और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान वीरगति पायी।

लाल सेना के दस्तों की भर्ती और गठन के लिए देश भर में क्षेत्रीय, गुबेर्नियाई, उयेज्द तथा वोलोस्तों की सैनिक कमिसारियतें क़ायम की गयीं। २ सितम्बर, १९१८ को जनतंत्र की क्रांतिकारी सैनिक परिषद का निर्माण किया गया जो सीधे कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के मातहत काम करती थी। इस परिषद की स्थापना से सभी मोर्चे और सैनिक संस्थाएं केंद्रीकृत नियंत्रण में आ गयीं। केंद्रीय समिति की एक विशेष विज्ञप्ति में इस बात पर ज़ोर दिया गया था कि सैनिक विभाग की नीति "पार्टी की केंद्रीय समिति द्वारा जारी किये गये आम निदेशों का ध्यानपूर्वक पालन करती और प्रत्यक्ष रूप से उसके द्वारा नियंत्रित है।"

मोर्चों तथा सेनाओं के संचालन का एक संयुक्त ढांचा स्थापित किया गया। प्रत्येक मोर्चे (या सेना) का अगुआ एक क्रांतिकारी सैनिक परिषद थी जिसमें मोर्चे (या सेना) के कमांडर तथा दो राजनीतिक कमिसार हुआ करते थे।

हज़ारों कम्यूनिस्ट लाल सेना में भर्ती हुए। मोर्चे पर जानेवाले कम्यूनिस्टों को आदेश में कहा गया था: "कम्यूनिस्ट की बहुत सी ज़िम्मेदारियां हैं, मगर विशेषाधिकार एक ही मिलता है—क्रांति के लिए सबसे आगे बढ़कर लड़ने का अधिकार।"

अक्तूबर मे) सफेद गार्ड की सेनाए त्सरीत्सिन के निकट पहुची। दोनो बार शहर के निकट जबदस्त घमासान लडाइया हुइ और दोनो ही बार क्रास्नोव के दस्तो को सख्या मे अधिक होने के बावजूद मुह की खानी पडी और उन्हे धकेलकर दोन के पीछे भगा दिया गया। त्सरीत्सिन की प्रतिरक्षा का नेतृत्व करने मे वोरोशीलोव मीनिन और स्तालिन ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

"भरती हो गये ?" यह सबसे पहले सोवियत पोस्टरो मे था

१९१८ की पतझड़ में उत्तर की ओर हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों का आगे बढ़ना रोक दिया गया।

देश की शक्तियों को शत्रु को परास्त करने के लिए संगठित करने के साथ-साथ सोवियत सरकार ने देश के पिछवाड़े में क्रांतिकारी सुव्यवस्था क़ायम करने के लिए क़दम उठाये। इस समय प्रतिक्रांति द्वारा सफ़ेद आतंक बहुत बढ़ गया था और उसने चरम रूप धारण कर लिये थे। पेत्रोग्राद में प्रतिक्रांतिकारी आतंकवादियों ने कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख नेताओं वोलोदार्स्की और उरीत्स्की की हत्या कर दी।

३० अगस्त, १९१८ को दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों ने लेनिन की हत्या करने की चेष्टा की। मास्को के एक कारख़ाने में एक सभा में एक समाजवादी-क्रांतिकारी महिला कपलान ने दो विषैली गोलियों से लेनिन को सख़्त घायल कर दिया।

प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां षड्यंत्र, बग़ावतें और तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां कराती रहीं। जुलाई, १९१८ में ही मास्को, यरोस्लाव्ल, रीबिन्स्क तथा अनेक अन्य शहरों में बग़ावतें हुईं। पूर्वी मोर्चे पर सोवियत सेनाओं का कमांडर भूतपूर्व ज़ारशाही फ़ौजी अफ़सर मुराव्योव ने भी बग़ावत कर दी। हर जगह बग़ावत होते ही कम्युनिस्टों और ट्रेड-यूनियन कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी जाती थी। यरोस्लाव्ल में प्रतिक्रांतिकारियों ने गुबेर्नियाई कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष नाख़िमसोन तथा सैकड़ों अन्य कम्युनिस्टों, सोवियत दफ़्तरी कर्मचारियों और मज़दूरों को मार डाला।

इन कार्रवाइयों का निर्देशन एंटेंट के एजेंट कर रहे थे जो अक्सर अधिकृत राजनयिक प्रतिनिधि हुआ करते थे। प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के प्रत्यक्ष संगठनकर्ताओं में अमरीकी राजदूत फ़्रैंसिस, फ़्रांसीसी राजदूत नूलांस, मास्को में अमरीकी कौंसल पूल तथा ब्रिटिश राजनयिक प्रतिनिधि लाकहार्ट था। उनकी शिरकत का अकाट्य सबूत उस समय की दस्तावेज़ों में, १९२२ में समाजवादी-क्रांतिकारी नेताओं पर चलाये मुक़दमे के दौरान उनकी गवाहियों में, सफ़ेद गार्ड के ख़ुफ़िया संगठन के एक नेता साविंकोव पर १९२४ में चलाये गये मुक़दमे में उसकी गवाही में तथा उनके अपने व्यक्तिगत संस्मरणों में मौजूद है।

शुरू में सोवियत राज्य ने अपने दुश्मनों के प्रति नरमी का व्यवहार अपनाया। अस्थायी सरकार के किसी भी सदस्य की हत्या नहीं की गयी।

बग़ावत म बदी बन जनरल क्रास्नोव को उसक "ग्राश्वासन" पर रिहा कर दिया गया (जिसका उसन तुरत उल्लघन किया)।

लेकिन सफ़ेद आतक की निदयता ने सोवियत राज्य को निणयकारी जवाबी कारवाई करने पर मजबूर कर दिया। जीवन-मरण के सघष मे, जिसम शत्रु ने कुछ भी उठा नही रखा था, प्रतिक्राति के साथ नरमी बरतन का मतलब था क्राति स विश्वासघात करना। सर्वहारा वग का पुनीत कतव्य था प्रतिक्रातिकारी कारवाइयो का निर्णायक और निमम रूप से दबाना—सफेद आतक का मुकाबला लाल आतक स करना था।

सोवियत सरकार के आदेशानुसार सर्वहारा राज्य की दडात्मक सस्था—प्रतिक्राति तथा तोड-फाड की कारवाइयो के विरुद्ध सघर्ष के अखिल रूसी असाधारण आयोग (चेका) ने, जिसक प्रधान द्ज़र्जीन्स्की थे अपनी सरगरमी तज कर दी। प्रतिक्रातिकारी सगठनो, आतकवादियो और षड्यत्रकारियो पर करारी चोट की गयी। मेहनतकशो की सक्रिय सहायता से चेका न शत्रुओ की अनेक साजिशो को बेनकाब किया अनेक खुफिया सगठनो का तोडा, सैकडा गद्दारो, तोड-फोड डालनेवालो और गुप्तचरो का पता लगाया। लाल आतक की कारवाई ऐसे समय की गयी जब सवहारा राज्य का अस्तित्व ही सख्त खतरे म पडा हुआ था। इसके ज़रिये सोवियत विरोधी गुप्त सगठनो की कारवाइयो को बडी हद तक रोका और दबाया जा सका। यह एक कठोर, मजबूरी का मगर अनिवाय कदम था।

सोवियत जनता का एक सबस आवश्यक कायभार था लाल सेना को रसद और हथियार सप्लाई करना। सफेद गार्डो और हस्तक्षेपकारियो को यूरोपीय और अमरीकी जगी कारखानो से हथियार और गोला-बारूद मिल रहा था। शुरू मे लाल सेना म ज़ारशाही की सेना के बचे सामान से काम चलाया। मगर यह बहुत कम था। मोर्चे की आवश्यकताए पूरी करने के लिए जल्दी से जल्दी उत्पादन का प्रबध करना था। १६१८ की गमियो से उद्योग को युद्धकालीन आधार पर सगठित करने का काम शुरू हुआ।

सैन्य उत्पादन का सगठन अत्यत कठिन स्थितियो मे करना था। शत्रु की नाकाबन्दी के कारण सोवियत जनतन्त्र के पास कच्चे माल और ईंधन का अभाव था और उसे पूजीवादी-ज़मीदाराना रूस से विरासत मे

अस्तव्यस्त यातायात व्यवस्था और जीर्णावस्था उद्योग मिला था। लेकिन कोई कठिनाई भी मजदूरों के मनोबल को तोड़ नहीं सकी। आत्मत्याग होकर उन्होंने लाल सेना के लिए विजय के अस्त्र ढालने का काम किया। ट्रेड-यूनियनों ने अपील की: "साथियो, अपने ख़राद और बरमे पर जुट जाओ, अपने हथौड़े और रेतियां उठाओ! पितृभूमि ख़तरे में है!" दसियों हज़ार मजदूरों ने इन अपीलों पर ध्यान दिया। मास्को, पेत्रोग्राद, कोलोमना, इवानोवो-वोज़नेसेन्स्क, त्वेर, नीज्नी नोवगोरोद के कारख़ानों में दिन-रात तेज़ी से काम चल रहा था। १९१८ के उत्तरार्द्ध में लाल सेना को २,००० से अधिक तोपें, कोई २५ लाख गोले, ९ लाख से अधिक राइफ़लें, ८ हज़ार मशीनगनें, ५० करोड़ से अधिक कारतूस और कोई १० लाख दस्ती बम मिले।

सोवियत सत्ता के सामने एक और महत्वपूर्ण कार्य देहातों में अपनी स्थिति को मज़बूत करना था। कुलकों को, जो हथियार और भूख के ज़रिये सोवियत सत्ता का गला घोंटने की कोशिश कर रहे थे, परास्त करना, ग़रीब किसानों को एकताबद्ध करना, मझोले किसानों का समर्थन प्राप्त करना था और इस प्रकार मजदूर वर्ग और किसानों की एकता को मज़बूत करना था। इस कार्यभार का अटूट संबंध रोटी के लिए संघर्ष और खाद्यान्न सप्लाई करने की समस्या से था।

श्रमजीवी किसानों और कुलकों के बीच वर्ग संघर्ष पूरे ज़ोरों पर हो रहा था। कुलक ज़मींदारों की छीन ली गई भूमि, औज़ार और बीज के भंडार पर क़ब्ज़ा करने, ग़रीब किसानों को ग़ुलाम बनाने की चेष्टा कर रहे थे। लेकिन श्रमजीवी किसानों ने कुलकों और उनकी शोषणकारी प्रवृत्तियों का घोर विरोध किया। यह तीव्र वर्ग संघर्ष जो अक्सर सशस्त्र मुठभेड़ का रूप ले लेता, हज़ारों क़स्बों और गांवों में जारी था।

लेकिन ग़रीब किसान ठीक से संगठित नहीं थे और उनमें अपने उद्देश्यों और कार्यभार की स्पष्ट समझदारी नहीं थी। ११ जून, १९१८ को अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति ने देहातों में ग़रीब किसान कमिटियां संगठित करने की आज्ञप्ति जारी की। थोड़े ही समय में हर जगह—हर वोलोस्त और हर गांव में इस तरह की कमिटियां बन गयीं। इन कमिटियों ने श्रमजीवी किसानों में भूतपूर्व ज़मींदारों की ज़मीनों के पुनर्वितरण में सहायता की और इसके दौरान कुलकों से ५ करोड़ हेक्टर

जमीन छीन ली गई। गरीब किसान कमिटियो ने गरीब किसानो द्वारा हासिल की गयी भूमि को विकसित और उसपर खेतीबारी करने के लिए उन्हे बीज और कृषि के औजार मुहैया किये। इन कमिटियों ने उन्हे मवेशी दिये और लाल सेना के जवानो के परिवारो की देखभाल की। शहर के मजदूरो ने भी कुलको के खिलाफ सघर्ष मे गरीब किसानो की सहायता की। फैक्टरियों और कारखानो मे मजदूरो के विशेष जत्थे बनाये गये और उन्हे देहातो मे भेजा गया। उन्होने कुलको द्वारा प्रेरित अन्न वसूली की तोड-फोड़ की कार्रवाइया रुकवाया, ग़रीब किसानो की एकता क़ायम करने मे सहायता की और गावो मे सोवियत सत्ता के निकायो को मजबूत बनाया। परिणामस्वरूप कुलको का प्रतिरोध भग हो गया।

देहातो मे सर्वहारा का आगमन तथा ग़रीब किसान कमिटियो की स्थापना से देहात मे और सारे देश मे ही सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ़ करने मे सहायता मिली। कुलकों को दबाने और सोवियत सत्ता के सुदृढ़ होने से मझोले किसानो को सोवियत सत्ता के पक्ष मे लाने मे सहायता मिली। मझोले किसानो ने जब देखा कि सर्वहारा राज्य सचमुच जनप्रिय नीति पर अमल कर रहा है जो तमाम श्रमजीवी जनता के हित मे है, तो वे सोवियतो की सत्ता का सक्रिय समर्थन करने लगे।

इस दौरान मे मझोले किसानो की सख्या मे भी वृद्धि हुई, क्योकि लाखो ग़रीब किसानो को जमीन, मवेशी और खेती के औज़ार मिल गये थे, उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ था, और इस प्रकार वे मझोले किसानो के स्तर पर पहुच गये थे। जहा पहले गरीब किसानो की सख्या अधिक थी, वहा अब बहुसख्यक किसान (लगभग ६० फीसदी) मझोले किसान थे।

क्राति से ठीक बाद के जमाने मे मझोले किसानो का यह तबका राजनीतिक ढुलमुलपन का शिकार रहा। लेकिन १९१८ के अत तक वह मजदूर वर्ग और सोवियत सत्ता का सक्रिय समर्थन करने लगा।

सोवियत सत्ता के लिए अब यह सम्भव था कि वह मझोले किसानो के साथ एका की नीति पर अमल करे। यह नीति जिसे लेनिन ने १९१८ के अत मे निरूपित किया, (मार्च १९१९ मे) कम्युनिस्ट पार्टी की आठवी काग्रेस मे स्वीकृत हुई। गरीब किसानो को मजबूत आधार मानना, मझोले किसानो के साथ एका स्थापित करना और ग्रामीण पूजीपतियो

ग्रौर कुलकों के विरुद्ध संघर्ष करना – यह था देहातों में सोवियत सत्ता की वर्गीय नीति का तिहरा फ़ार्मुला। किसानों की विशाल बहुसंख्या के साथ मजदूर वर्ग का एका गृहयुद्ध में विजय ग्रौर बाद के शांतिपूर्ण निर्माण-कार्य में सफलता की एक ग्रत्यंत महत्वपूर्ण शर्त बन गया।

१९१८ के ग्रंत तक सोवियत राज्य की ग्रंतर्राष्ट्रीय स्थिति में काफ़ी फ़र्क़ ग्रा गया था। प्रथम विश्वयुद्ध का ग्रंत हो चुका था। जर्मनी ग्रौर उसके मित्र-राष्ट्रों की शिकस्त हुई। ११ नवम्बर को जर्मनी ग्रौर एंटेंट देशों के बीच युद्धविराम संधि हुई।

जर्मनी ग्रौर ग्रास्ट्रिया-हंगरी में क्रांति फूट पड़ी। होहेनज़ोल्लर्न ग्रौर हैब्सबर्ग राज परिवारों का तख़्ता उलट गया।

जर्मनी ग्रौर ग्रास्ट्रिया-हंगरी की शिकस्त ग्रौर इन देशों में क्रांतिकारी ग्रान्दोलन के कारण सोवियत राज्य की स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इन घटनाग्रों का ग्रन्य यूरोपीय देशों पर क्रांतिकारी ग्रसर हुग्रा ग्रौर इस तरह सोवियत रूस की स्थिति मजबूत हुई।

जर्मनी की शिकस्त के बाद सोवियत जनतंत्र के लिए ब्रेस्त की खसोटू संधि को रद्द करना सम्भव हो गया। १३ नवम्बर, १९१८ को ग्रखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति ने एक विशेष विज्ञप्ति जारी करके, जिसपर लेनिन ग्रौर स्वेर्दलोव के हस्ताक्षर थे, ब्रेस्त संधि को रद्द कर दिया।

१९१८ की पतझड़ में एस्तोनिया, लाटविया, बेलोरूस, लियुग्रानिया, उक्रइना ग्रौर ट्रांस-काकेशिया को जर्मन क़ब्ज़े से मुक्त कराने का काम शुरू हुग्रा। जब ब्रेस्त संधि को रद्द कर दिया गया तो ग्रधिकृत इलाक़ों में जनता के मुक्ति ग्रान्दोलन को, जो जर्मन ग्राक्रमण के साथ ही शुरू हो गया था रूसी जनतंत्र का प्रत्यक्ष ग्रौर व्यापक समर्थन मिला। मेहनतकश जनता ने जर्मन दख़लदार सेनाग्रों को मार भगाया ग्रौर रूसी सर्वहारा की सहायता से सोवियत सत्ता की स्थापना की।

जर्मन सैनिक क्रांतिकारी भावना से ग्रधिकाधिक प्रभावित होते गये। उन्होंने ग्रपने ग्रफ़सरों का ग्रादेश मानने से इनकार कर दिया तथा लाल सेना के जवानों ग्रौर मजदूरों से भाइचारे का संबंध स्थापित किया।

नवम्बर १९१८ में इस्टलैंड श्रम कम्यून – एस्तोनियाई सोवियत जनतंत्र स्थापित हुग्रा। दिसम्बर में लाटविया ग्रौर लियुग्रानिया में सोवियत सत्ता

की घोषणा की गयी। सोवियत रूस ने बाल्टिक जनतन्त्रो की स्वतन्त्रता मान ली। १ जनवरी, १९१९ को बेलोरूस म एक अस्थायी सोवियत सरकार क़ायम हुई।

इन जनतन्त्रो के नेताओ म प्रमुख राजनयिक थे, जैसे लियुआनिया की प्रथम सोवियत सरकार के अध्यक्ष मित्स्क्याविचुस-कपसुकास, लाटविया की जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष स्तूचका, बेलोरूस की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष म्यासनिकोव तथा एस्तोनियाई बोल्शेविको के नेता किंगिसेप।

उक्रइना म तीव्र सघर्ष चल रहा था। १९१८ म वहा के राजनीतिक क्षितिज पर अनेक तब्दीलिया हो गयी थी। पाठक को याद होगा कि १९१७ के अत म कीयेव म सत्ता पर केंद्रीय रादा (परिषद्) ने अधिकार कर लिया था जिसम निम्नपूजीवादी राष्ट्रवादी तत्व थे। मजदूरो और किसानो के एक विद्रोह की बदौलत रादा का तख्ता उलट गया। तब रादा के प्रतिनिधि जिनका रुख एटॅट की ओर था, जर्मनी से समझौता कर बैठे। लेकिन जर्मन सेनाओ ने उक्रइना पर दखल करने के बाद रादा को मार भगाया और एक राजतत्रवादी स्कोरापाद्स्की को सिहासन पर बैठा दिया। उसे "उक्रइना का हेतमन" (हुडमैन) घोषित किया गया। जर्मनी की शिकस्त के बाद निम्नपूजीवादी राष्ट्रवादी पार्टिया एक बार फिर सामने आयी। उन्होने स्कोरोपाद्स्की को पदच्युत कर दिया और पेत्लूरा और विन्निचेको के नेतृत्व मे एक डायरेक्टरी स्थापित की। और एक बार फिर उक्रइना की श्रमजीवी जनता ने राष्ट्रवादी प्रतिक्राति के विरुद्ध सघर्ष का झडा उठाया। नवम्बर के अत म उक्रइनी सोवियत सरकार कायम की गयी। इसमे अर्त्योम, वोरोशीलोव, ज़तोन्स्की, क्वीरिंग, कोत्सूबीन्स्की आदि शामिल थे। फरवरी १९१९ म उक्रइनी सोवियत दस्तो ने कीयेव को मुक्त किया।

जर्मनी की शिकस्त से सोवियत राज्य के लिए कुछ नकारात्मक परिणाम भी निकले। इससे एटॅट राज्यो को सोवियत जनतन्त्र के विरुद्ध अपने हस्तक्षेप को और बढाने का मौका मिल गया।

१६ नवम्बर, १९१८ की रात मे दर्रे-दनियल और बास्फोरस से होकर ब्रिटिश और फ्रासीसी युद्धपोत काले सागर मे दाखिल हुए और इनके पीछे-पीछे सेना, शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद से भरे जहाज भी पहुचे। ओदेस्सा मे फ्रासीसी और यूनानी सेनाए बख्तरबन्द जहाजो की ओट मे

उतरीं। शत्रुओं ने सेवास्तोपोल और काले सागर के अनेक अन्य शहरों को दखल कर लिया और ट्रान्स-काकेशिया में महत्वपूर्ण शहरों पर क़ब्ज़ा किया जैसे बाकू, त्बिलीसी और बतूमी। उक्राइना में फ़ांसीसियों ने मुख्य भूमिका अदा की और ब्रिटिश ने ट्रान्स-काकेशिया में। उत्तर और सुदूर पूर्व में हस्तक्षेपकारी शक्तियों को कुमक पहुंचाई गयी।

दुश्मन की शक्तियों ने सोवियत जनतंत्र के विरुद्ध अपनी जंगी कार्रवाइयां तेज कर दीं। इनके अतिरिक्त सफ़ेद गार्ड की शक्तियों को अब और अधिक मात्रा में हथियार और गोला-बारूद मिलने लगा। साइबेरिया और उत्तरी काकेशिया में प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां तेजी से बढ़ीं और एक विशाल ताक़त बन गयीं। गृहयुद्ध एक घमासान और दीर्घकालिक संघर्ष का रूप धारण कर रहा था।

इस दौरान में मेंशेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी "सरकारों" को हटाकर उनकी जगह खुली सैनिक तानाशाही क़ायम की जा रही थी जो अधिक प्रत्यक्ष रूप में अंतर्राष्ट्रीय और देशी पूंजीपति वर्ग की इच्छा पर अमल कर सके। निम्नपूंजीवादी पार्टियां जो "जनवादी" और "समाजवादी" होने का दावा करती थीं और कहती थीं कि वे एक "मध्यस्थ", "तीसरी" शक्ति हैं जो दक्षिणपक्ष और वामपक्ष दोनों के अधिनायकत्व का विरोध कर रही हैं, असल में बिलकुल प्रतिक्रांति के शिविर में शामिल थीं और उन्होंने जनरलों और एडमिरलों को तानाशाही सत्ता ग्रहण करने में सहायता पहुंचाई। ओम्स्क में ज़ारशाही एडमिरल कोल्चाक ने समाजवादी-क्रांतिकारी कैडेट डायरेक्टरी के स्थान पर एक सैनिक तानाशाही स्थापित की। उसे रूस का "सर्वोच्च शासक" घोषित किया गया। जनरल देनीकिन उपप्रधान और दक्षिण रूस का वास्तविक तानाशाह बन गया। उत्तर में अर्खांगेल्स्क में जनरल मिलर ने अपनी तानाशाही स्थापित की।

लाल सेना की निर्णायक सफलताएं

१९१८ के अंत से लेकर १९२० के अंत तक देश में लगभग निरन्तर बड़े पैमाने पर लड़ाई चलती रही। हमलों और जवाबी हमलों का रुख़ बदलता रहता था, मुख्य कार्रवाई कभी एक मोर्चे पर होती और कभी दूसरे पर, मगर संघर्ष की तीव्रता में कभी कोई कमी नहीं हुई।

१६१८ के अंत और १६१६ के शुरू मे दक्षिण मे सबसे महत्वपूर्ण लडाइया हुईं। १६१६ के वसत मे सोवियत सेनाओ ने घमासान लडाइयो के बाद क्रास्नोव की सफेद कज्जाक रेजिमेंटो को खदेड दिया और दोन क्षेत्र को मुक्त कर लिया। लाल सेना और गुरिल्ला दस्तो ने दक्षिण उक्रइना मे हस्तक्षेपकारी शक्तियो को भी अनेक शिकस्ते दी।

इस बीच पूर्वी मोर्चा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा था। जाडो मे वहा कुछ मुख्य लडाइया हुईं मगर निर्णायक कार्रवाई १६१६ के वसत मे हुई। मार्च के शुरू मे उराल की विशाल नदिया अभी जमी हुई बर्फ की सख्त परत से बिलकुल ढकी हुई थी। ४ मार्च, १६१६ को प्रथम सफेद गार्ड दस्ता ने पेर्म नगर के दक्षिण मे कामा नदी को पार किया और पश्चिम की ओर बढ़ने लगे। उत्तरी उराल के घने जगलो से लेकर वोल्गा तटवर्ती दक्षिणी स्तेपी तक २,००० किलोमीटर का सारा पूर्वी मोर्चा सरगर्म हो उठा। १६१६ के वसत मे यही मुख्य मोर्चा बन गया।

वहा एडमिरल कोल्चाक की विशाल सेना (कोई ४ लाख सैनिक और अफसर) लड रही थी। विदेशी साम्राज्यवादियो ने उदारतापूर्वक कोल्चाक को हथियार, गोला-बारूद और वरदी मुहैया किया था। १६१६ मे ही ४ लाख राइफ़लें, १ हजार मशीनगने, तोपें, कारतूस, गोले, वरदी और भी बहुत कुछ सयुक्त राज्य अमरीका से आया था।

चर्चिल के एक वक्तव्य के अनुसार अग्रेजो ने १ लाख टन सामरिक सामान साइबेरिया भेजा था। फ्रास ने १,७०० मशीनगनें, ४०० तोपें और ३० विमान भेजे थे। जापान से १०० मशीनगने, ७०,००० राइफले और १,२०,००० वरदी के सेट आये थे।

कोल्चाक की सारी सैनिक कार्रवाइयो का निदेशन दरअसल वैदेशिक जनरल कर रहे थे। जनवरी, १६१६ के एक विशेष समझौते के अनुसार कोल्चाक के लिए अपनी सैनिक कार्रवाइयो का समाकलन पूर्वी रूस मे हस्तक्षेपकारी शक्तिया के सर्वोच्च सेनापति, फ्रासीसी जनरल जनिन के साथ करना जरूरी था। ब्रिटिश जनरल नाक्स (जिसकी ट्रेन मे कोल्चाक को १६१८ मे विदेश से साइबेरिया लाया गया था) कोल्चाक की सेनाओ को सामान सप्लाई करनेवाले विभाग का प्रधान था।

आरम्भ मे कोल्चाक की सेनाओ को कई महत्वपूर्ण और अपेक्षाकृत

निम्नलिखित फ़ैसला किया गया : "चूंकि कम्युनिस्टों को क्रांति की सफलता के लिए स्वास्थ्य और प्राण कुछ भी देने से हिचकना नहीं चाहिए इसलिए इस काम को बिना मुआवजा करना है। कम्युनिस्ट सुब्बोत्निकों की प्रथा पूरे ज़िले में जारी की जायेगी और उस समय तक जारी रहेगी जब तक कोल्चाक पर पूर्ण विजय न प्राप्त हो जाये।"*

इस निश्चय के अनुसार प्रथम ग्राम सुब्बोत्निक १० मई, १६१६ को आयोजित किया गया जिसमें २०५ कम्युनिस्टों ने भाग लिया। उस दिन मज़दूरों ने ४ रेलवे इंजनों और १६ डिब्बों की मरम्मत की, और कोई १५० टन सामान उतारा। श्रम उत्पादिता साधारण दिनों से ढाई गुना अधिक थी।

लेनिन ने प्रथम कम्युनिस्ट सुब्बोत्निकों को "एक शानदार शुरुआत" कहा। लेनिन ने लिखा कि कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक "एक ऐसे परिवर्तन की शुरुआत है जो पूंजीपति वर्ग का तख़्ता उलटने से भी अधिक कठिन, अधिक ठोस, अधिक बुनियादी तथा अधिक निर्णायक है, क्योंकि यह स्वयं अपनी रूढ़िवादिता, अनुशासनहीनता तथा निम्नपूंजीवादी अहंकार पर विजय है, उन आदतों पर विजय है जो अभिशप्त पूंजीवाद मज़दूर तथा किसान के लिए विरासत में छोड़ गया था। जब इस विजय को सुदृढ़ बना लिया जायेगा, तब, और केवल तब ही नये सामाजिक अनुशासन, समाजवादी अनुशासन की रचना हो सकती है, तब और केवल तब ही पूंजीवाद में फिर लौट जाना असंभव हो जायेगा, कम्युनिज़्म सचमुच अपराजेय हो जायेगा"।**

सुब्बोत्निक विचार फैलता गया—शीघ्र ही सोवियत जनतंत्र में हर जगह उनका आयोजन किया जा रहा था। कम्युनिस्टों की मिसाल देखकर ग़ैर-पार्टी मेहनतकश भी शामिल होने लगे और इसमें हिस्सा लेनेवालों की संख्या बढ़ी।

सोवियत राज्य ने पूर्वी मोर्चे को हर संभव तरीक़े से मज़बूत बनाया। मास्को, पेत्रोग्राद और नौ केंद्रीय गुबेर्नियाओं से श्रमजीवी जनता के नये जत्थों को लाल सेना में भर्ती किया गया। केंद्रीय रूस में मज़दूरों और

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २६, पृष्ठ ३८०

**वही, खंड २६, पृष्ठ ३७६–३८०

श्रमजीवी किसानो के आने से पूर्वी मोर्चे की सोवियत सेनाओ को नया बल मिला। पूर्वी मोर्चे को सबसे उत्कृष्ट और त्यागी कार्यकर्ताओ द्वारा बल पहुचाने के लिए पार्टी, कोम्सोमोल तथा ट्रेड-यूनियन सदस्यो की व्यापक लामबदी शुरू की गयी। १५,००० कम्युनिस्ट, ३,००० कोम्सोमोल सदस्य और २५,००० ट्रेड-यूनियनो के सदस्य उस मोर्चे की सेनाओ मे शामिल होने के लिए रवाना हुए।

अप्रैल, १९१९ के उत्तरार्द्ध मे लाल सेना ने कोल्चाक के खिलाफ एक निर्णयात्मक आक्रमण की तैयारी की। पूर्वी मोर्चे के दक्षिणी दल ने फ्रूजे और कूइविशेव के नेतृत्व मे अप्रैल के अतिम दिनो मे एक जवाबी हमला किया। वोल्गा पार के मैदानो मे, दक्षिण उराल की तराइयो मे, बुगुरुस्लान, बुगुल्मा, बेलेबेय, उफा के निकट घमासान लडाइया हुईं। कोल्चाक के सबसे बढिया दस्तो को परास्त कर दिया गया।

कोल्चाक की शिकस्त मे एक बडी भूमिका २५वी डिवीजन ने अदा की जिसके कमाडर चापायेव थे। वह गृहयुद्ध के सबसे जनप्रिय वीर बन गये। २५वी डिवीजन के कमिसार फूर्मानोव थे जो आगे चलकर एक प्रमुख लेखक बने। दक्षिणी दल की बुनियादी हमलावर शक्ति के रूप मे चापायेव की डिवीजन ३५० किलोमीटर लम्बे रास्ते पर लडती हुई आगे बढी।

कोल्चाक के खिलाफ जब लाल सेना का आक्रमण पूरे जोरो पर था तो त्रोत्स्की ने जो उन दिनो जनतत्र की क्रातिकारी सैनिक परिषद का अध्यक्ष था, उराल मे बेलाया नदी के किनारे-किनारे रुक जाने, कोल्चाक की सेनाओ का और अधिक पीछा न करने और सेना को दक्षिण और पश्चिम की ओर मोडने का प्रस्ताव रखा। कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया क्योकि इसकी बदौलत उराल का इलाका अपनी फैक्टरियो और रेलवे के जाल सहित कोल्चाक के हाथो मे रह जाता, और हस्तक्षेपकारियो की सहायता से उसे अपनी शक्तियो को पुन सगठित करने का अवसर मिल जाता। केंद्रीय समिति ने आदेश जारी किया कि आक्रमण जारी रखा जाये और कोल्चाक को उराल पर्वतमाला के पीछे साइबेरियाई स्तेपी तक खदेड दिया जाये।

कोल्चाक के खिलाफ़ आक्रमण नये जोश से जारी रहा। जून–जुलाई १९१९ में सोवियत सेनाओं ने उराल के बुनियादी केंद्रों–पेर्म, येकातेरिनबुर्ग और चेल्याबिन्स्क को मुक्त कर लिया, और अगस्त तक वे तोबोल नदी के किनारे पहुंच गयी थीं। कोल्चाक की बची–खुची सेनाएं पूर्व की ओर पीछे हटती गयीं। लाल सेना को एक शक्तिशाली गुरिल्ला आन्दोलन का समर्थन प्राप्त था जो कोल्चाक के मोर्चे के पिछवाड़े विकसित हो गया था। बोल्शेविकों के नेतृत्व में साइबेरिया और सुदूर पूर्व के मजदूरों और किसानों ने बड़ी संख्या में गुरिल्ला दस्ते संगठित किये थे जिनके सदस्यों की कुल संख्या अधूरे आंकड़ों के अनुसार १,४५,००० थी।

लाल सेना और गुरिल्ला दस्ते कोल्चाक की शक्तियों पर निरंतर वार करते रहे। १९१९ के अंत तक कोल्चाकी सेना के पैर बिलकुल उखड़ चुके थे। स्वयं कोल्चाक गिरफ़्तार कर लिया गया और क्रांतिकारी समिति के फ़ैसले के अनुसार उसे इर्कुत्स्क में गोली मार दी गयी।

इस बीच एंटेंट की नीति में कुछ परिवर्तन हो चुके थे। जर्मनी की शिकस्त के फ़ौरन बाद, १९१८ के अंत और १९१९ के वसंत में एंटेंट ने खुले हस्तक्षेप की नीति अपनायी थी। यह नीति असफल सिद्ध हुई। एंटेंट द्वारा उतारी गयी सेनाएं क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होने लगीं। उत्तर और सुदूर पूर्व में अमरीकी और ब्रिटिश सेनाओं में असंतोष की लहर दौड़ रही थी। ओदेस्सा में फ़्रांसीसी नाविकों ने विद्रोह कर दिया। खुल्लम–खुल्ला हस्तक्षेप की नीति में एंटेंट के लिए खतरा पैदा होने लगा। पूंजीवादी देशों में श्रमजीवी जनता ने जन सभाएं, प्रदर्शन और हड़तालें कीं और नारा दिया कि "हस्तक्षेप बन्द करो! सोवियत रूस से हाथ हटाओ!"

१९१९ में और १९२० के प्रारंभ में एंटेंट को मजबूर होकर सोवियत रूस के अनेक क्षेत्रों से अपनी सेनाएं वापस हटानी पड़ीं। यह एंटेंट पर एक महत्त्वपूर्ण विजय थी। लेनिन ने कहा: "हमने उनको सैनिकों से वंचित कर दिया।" मगर हस्तक्षेप बन्द नहीं हुआ। सुदूर पूर्व में अभी जापान के बड़े सैन्यदल मौजूद थे और एंटेंट ने सफ़ेद गार्ड सेनाओं की हथियारों और गोले–बारूद की सहायता बढ़ा दी।

१९१९ के उत्तरार्द्ध में दक्षिण मोर्चा कार्रवाई का मुख्य क्षेत्र बन गया। जनरल देनीकिन की सेना देश के हृदय स्थल की ओर बढ़ी आ

रही थी। देनीकिन की सेना पश्चिमी शक्तियो द्वारा हथियारबन्द और सुसज्जित की गयी थी। उसके बारे मे चर्चिल ने कहा कि "यह रही मेरी सेना!"

१९१९ की गर्मियो तक देनीकिन ने पूरे कुबान, तेरेक और दोन क्षेत्र, क्रीमिया और द्नेपर नदी के पूर्व उक्रइना के भाग पर दखल कर लिया था। दोनेत्स बेसिन के लिए लडाई चल रही थी। देनीकिन का मोर्चा द्नेपर से वोल्गा तक फैला हुआ था और दिनोदिन उत्तर की ओर बढता जा रहा था। देनीकिन ने घोषणा की कि उसका उद्देश्य मास्को पर दखल करना है। देनीकिन की सबसे बढिया डिवीजनें—सफेद स्वयसेवक सेना जिसमे अधिकाश प्रतिक्रातिकारी अफसर शामिल थे, मोर्चे के मध्य मे खारकोव—कूर्स्क—ओर्योल—तूला—मास्को के रास्ते बढ रही थी। ये डिवीजनें जो देनीकिन की शक्तियो का बुनियादी केद्रक थी—एक बलवान शक्ति थी।

देनीकिन को सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन और फ्रास द्वारा शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद, वरदी और रुपये-पैसे की जो भारी सहायता मिल रही थी, उसकी बदौलत उसने सितम्बर—अक्तूबर १९१९ मे महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त की। अक्तूबर, १९१९ के शुरू मे उसकी सेनाओ ने वोरोनेज तथा ओर्योल पर दखल कर लिया और तूला गुबेर्निया मे प्रवेश किया। सोवियत राज्य की राजधानी मास्को के लिए प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न हो गया। शत्रुओ ने नवजात सोवियत जनतन्न के विरुद्ध जो हमले किये थे उनमे यह सबसे बडा और सबसे खतरनाक हमला था।

जुलाई, १९१९ मे ही कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के एक अधिवेशन ने लेनिन द्वारा लिखित पार्टी सगठनो के नाम एक पत्र स्वीकार किया जिसका शीर्षक था "देनीकिन के खिलाफ़ लडाई मे एडी-चोटी का ज़ोर लगा दो!"* इसमे इस बात पर बल दिया गया था कि क्राति की एक सबसे नाजुक घडी आ पहुची है और देनीकिन को शिकस्त देने के लिए सघर्ष का एक जुझारू, ठोस कार्यक्रम पेश किया गया है। "सबसे पहले और बढकर सारे कम्युनिस्टो को, उनके साथ सारे हमदर्दों को, सभी ईमानदार मज़दूरो तथा किसानो को, समस्त सोवियत कर्मचारियो को सैनिक कार्यकुशलता का परिचय देना चाहिए और अपने काम, अपने

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २९, पृष्ठ ४०३

प्रयासों तथा अपने ध्यान को अधिकतम हद तक सीधे-सीधे युद्ध-संबंधी कार्यभारों पर केंद्रित करना चाहिए... शत्रु ने सोवियत जनतंत्र को घेर रखा है। उसे केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी एक सैनिक छावनी बन जाना चाहिए।" इस सबसे ख़तरनाक घड़ी में सारे जनगण और पार्टी द्वारा पूरा ज़ोर लगाकर प्रयत्न करने से ही सोवियत राज्य को बचाया जा सकता था। लेनिन ने इसी प्रकार प्रयत्न करने का आवाहन किया।

लेनिन द्वारा तैयार किये गये कार्यक्रम के आधार पर लामबन्दी पूरे ज़ोरों से शुरू की गयी। सैनिकों से भरी ट्रेनें दक्षिण मोर्चे की ओर जाने लगीं, और हमेशा की तरह इस बार भी सबसे पहले जानेवालों में कम्युनिस्ट और कोम्सोमोल के सदस्य थे। १६१६ की पतझड़ में १५,००० कम्युनिस्ट और १०,००० कोम्सोमोल सदस्य मोर्चे पर पहुंचे। उन दिनों कोम्सोमोल की अनेक ज़िला समितियों के कार्यालयों के दरवाज़ों पर लिखा होता था: "ज़िला समिति बन्द है। सब मोर्चे पर गये।"

पिछवाड़े के संगठनों के काम को जंगी आधार पर रख दिया गया और जिन संस्थाओं को रक्षा की ज़रूरतों से कोई संबंध नहीं था, उनका काम कम या बिलकुल बन्द कर दिया गया। इस तरह जो लोग ख़ाली हुए उन्हें मोर्चे पर भेज दिया गया।

दक्षिण मोर्चे के नेतृत्व को मज़बूत किया गया। येगोरोव को दक्षिण मोर्चे का कमांडर नियुक्त किया गया। स्तालिन क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य नियुक्त हुए। ओर्जोनिकीद्ज़े को १४वीं सेना की क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य की हैसियत से मोर्चे पर भेजा गया। वोरोशिलोव और श्चादेंको प्रथम सवार सेना की क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य बने। यह सेना उस समय बुद्योन्नी की कमान में थी और उसने देनीकिन को शिकस्त देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

एक योजना बनाई गयी जिसके अनुसार सफ़ेद स्वयंसेवक सेना के विरुद्ध मुख्य हमला ओर्योल–क्रोमी के क्षेत्र में किया जानेवाला था। उसके बाद ख़ारकोव और दोनेत्स बेसिन से होकर रोस्तोव-आन-दोन पर धावा बोलना था।

एक लाटवियाई डिवीजन, एक लाल कज़्ज़ाक ब्रिगेड तथा अन्य दस्तों को लेकर एक ख़ास प्रहार शक्ति बनाई गयी। लाटवियाई डिवीजन जिसने

लडाइयो मे अपना लोहा मनवा लिया था, लेनिन के व्यक्तिगत आदेश पर पश्चिम से दक्षिण मोर्चे पर भेजी गयी।

लाल सेना ने ओर्योल से वोरोनेज तक लगभग ३०० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर एक निर्णायक हमला किया। बुद्योन्नी की सवार सेना ने सफेद गार्ड जनरलो श्कुरो और मामोन्तोव की शक्तियो को वोरोनेज के निकट खदेड दिया। २४ अक्तूबर को लाल रिसाले ने गुप्त कम्युनिस्ट सगठन के नेतृत्व मे वोरोनेज के मजदूरो की सहायता से शहर पर धावा बोलकर अधिकार कर लिया। ओर्योल–क्रोमी क्षेत्र मे जबर्दस्त लडाइयो के बाद देनीकिन की स्वयसेवक सेना चकनाचूर हो गयी।

भागते शत्रु का पीछा करते हुए सोवियत डिवीजनो ने दोनेत्स बेसिन को मुक्त किया और जनवरी, १६२० मे अजोव समुद्र के तट पर जा पहुची। रोस्तोव को मुक्त करने के बाद लाल सेना के दस्ते उत्तरी काकेशिया मे जा पहुचे। देनीकिन अपनी फौज को छोड-छाड रूस से भाग गया। देनीकिन की सेनाओ का एक बहुत छोटा सा भाग पीछे हटते-हटते क्रीमिया जाने मे सफल हुआ। उत्तरी काकेशिया को मुक्त करने के बाद सोवियत सेनाए ट्रास-काकेशिया तक आ पहुची।

१६१६ मे पेत्रोग्राद के निकट जो लडाइया हुई, वे भी महत्वपूर्ण थी। जनरल युदेनिच की सफेद गार्ड साल मे दो बार इस शहर पर धावा बोल चुकी थी। पहला हमला मई, १६१६ के मध्य मे शुरू हुआ। इसी के साथ क्रास्नाया गोर्का और सेराया लोशद के तटवर्ती किलो मे प्रति-क्रातिकारी विद्रोह हुए।

प्रतिक्रातिकारी बगावत स्वय शहर मे रचा जा रही थी। परिस्थिति बहुत गम्भीर हो गयी। पेत्रोग्राद मे घेरे की स्थिति घोषित कर दी गयी। केद्रीय समिति के आवाहन पर पेत्रोग्राद के मजदूरो ने अपने श्रेष्ठतम प्रतिनिधि मोर्चे पर भेजे। कोई १३,००० पेत्रोग्राद मजदूरो ने जल्दी-जल्दी सैनिक ट्रेनिग लेकर शहर की रक्षा करनेवाली ७वी सेना की रेजिमेटो की रिक्त पक्तियो को पूरा किया।

१३ जून को बाल्टिक बेडे के युद्धपोत "आन्द्रेई पेर्वोज्वान्नी" और "पेत्रोपाव्लोव्स्क" ने समुद्र मे प्रवेश किया और बगावती क्रास्नाया गोर्का किले पर गोलाबारी शुरू की। इसके बाद क्रास्नाया गोर्का पर स्थल हमला किया गया। १६ जून की रात को लाल सेना ने क्रास्नाया गोर्का पर

दखल कर लिया। चन्द घंटों बाद बगावती सेनाया गोगद किले ने हथियार डाल दिये।

पेत्रोग्राद के निकट स्थिति में बुनियादी परिवर्तन हो गया था। जून के उत्तरार्द्ध में युदेनिच की सेनाओं को परास्त कर दिया गया।

लेकिन पतझड़ आते-आते युदेनिच ने विदेश की सहायता से पुनः अपना आक्रमण शुरू किया। अक्तूबर १९१९ के मध्य में सफ़ेद गार्ड सेनाएं पेत्रोग्राद के निकट के इलाक़ों में घुस आयीं। नगर के लगभग सभी कम्युनिस्ट मोर्चे पर गये हुए थे। १६ वर्ष से अधिक आयु के सभी कोम्सोमोल सदस्यों ने पेत्रोग्राद की रक्षा में हथियार उठाया।

पुल्कोवो की पहाड़ी पर जो पेत्रोग्राद की दक्षिणी बाहरी सीमा पर आखिरी प्राकृतिक रोक है, पांच दिन और रात घमासान लड़ाई होती रही। इस बार युदेनिच की धज्जियां पूरी तरह बिखर गयीं। उसकी बची-खुची सेना भागकर एस्तोनिया चली गयी।

कोल्चाक, देनीकिन और युदेनिच पर विजय प्राप्त करने के बाद सोवियत जनतंत्र को कुछ दिन (लगभग तीन महीने) दम लेने की मुहलत मिल गयी। लेकिन १९२० के वसंत में फिर बड़े ज़ोरों से लड़ाई शुरू हुई। इस बार पोलैंड ने—जहां ज़मींदारों-पूंजीपतियों का एक राष्ट्रवादी गुट सत्तारूढ़ था—सोवियत जनतंत्र पर हमला किया। इसके अलावा देनीकिन की सेना के बचे हिस्से को "काले बैरन" जनरल व्रांगेल द्वारा क्रीमिया में एकत्रित करके पुनः सक्रिय बनाया जा रहा था।

एंटेंट के सैनिक क्षेत्रों ने दिल खोलकर पोलिश सेना की सहायता की। उसे हथियार, वरदी और रुपया-पैसा सब कुछ दिया। अपने सैनिक सलाहकार भी भेजे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में अमरीका का जो शस्त्र भंडार बच रहा था उससे बड़ी मात्रा में जंगी सामान पोलिश सेना को मिला। पोलिश सेनाओं की कार्रवाइयों और सामरिक नेतृत्व में निर्णायक भूमिका फ्रांसीसी सैनिक प्रतिनिधि मंडल ने अदा की।

सोवियत सरकार ने अपनी शांतिपूर्ण नीति के अनुसार बारम्बार पोलैंड से शांति वार्ता करने का सुझाव रखा। सोवियत सरकार ने बाक़ायदा घोषणा की कि वह पोलिश गणतंत्र की आज़ादी और प्रभुसत्ता को बिना शर्त स्वीकार करती है और पोलैंड के जनगण और सोवियत रूस में अटूट शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध क़ायम करना चाहती है।

सोवियत सरकार ने ऐलान किया कि केवल एंटेंट के साम्राज्यवादी जो शांतिपूर्ण समझौते को हर तरह से तोड रहे है, रूस और पोलैंड को लड़ाना चाहते है। शांति के उद्देश्य से सोवियत राज्य भूक्षेत्र सम्बन्धी समस्या मे कई रिआयते देने को तैयार था। लेकिन पोलिश राज्य के वस्तुत. प्रधान पिलसूदस्की ने सोवियत सरकार के तमाम सुझावो को रद्द कर दिया।

२५ अप्रैल, १६२० को सफेद पोलिश फ़ौजो ने उक्रइना पर हमला बोल दिया। मई मे वे देश के अंदर दूर तक घुस आयी और ६ मई को कीयेव पर कब्जा कर लिया।

फिर व्रागेल ने क्रीमिया से आक्रमण शुरू किया। उसकी सेनाए दोन के क्षेत्रो, उक्रइना और कुबान के लिए खतरा बनी हुई थी। व्रागेल की सेना कोल्चाक, देनीकिन और युदेनिच से भी अधिक मात्रा मे ब्रिटिश-फ्रांसीसी-अमरीकी परोपकारियो द्वारा सुसज्जित थी।

सैनिक स्थिति फिर नाजुक हो उठी। फिर यह जरूरी हो गया कि मोर्चे के लिए पूरा जोर लगा दिया जाये। १६२० मे २५,००० कम्युनिस्टों को पोलिश और व्रागेल के मोर्चे पर भेजा गया। प्रथम सवार सेना उत्तरी काकेशिया से १ हजार किलोमीटर का फ़ासला तय करके आ पहुची। और पूर्व से एक बेहतरीन सोवियत डिवीजन—चापायेव की डिवीजन आ गयी।

पोलैंड से युद्ध दक्षिण-पश्चिम दिशा मे (उक्रइना मे) और पश्चिम की दिशा मे (बेलोरूस मे) हुआ। दक्षिण-पश्चिम मे (मोर्चे के कमांडर—येगोरोव, क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य—स्तालिन) महत्वपूर्ण भूमिका प्रथम सवार सेना ने अदा की जिसकी कमान बुद्योन्नी और वोरोशीलोव कर रहे थे। ५ जून १६२० को उसने दुश्मन के मोर्चे को तोड डाला और पश्चिम की ओर बढी। मध्य अगस्त मे वह पश्चिमी उक्रइना के सबसे बड़े शहर ल्वोव के पास पहुच गयी और उसपर धावा करने की तैयारिया करने लगी।

४ जुलाई को सुबह सवेरे पश्चिमी मोर्चे की सेनाओ ने आक्रमण शुरू किया (मोर्चे के कमांडर—तुखाचेव्स्की, क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य—उनश्लिख्त)। पश्चिमी मोर्चे की सेनाओं ने बेलोरूस को मुक्त किया और वारसा के निकट पहुचकर विस्तुला नदी के निकट लड़ाई छेड दी।

लेकिन विस्तुला पर सोवियत सेनाओं को सफलता नहीं हुई और उन्हें पीछे हटना पड़ा।

अक्तूबर, १९२० में रीगा में पोलैंड के साथ एक प्रारम्भिक शांति संधि हुई। पोलिश शासक सेठों को द्नेपर के पश्चिम उक्राइना और बेलोरूस पर से अपना दावा उठाना पड़ा। फिर भी गैलीसिया (पश्चिमी उक्राइना) और बेलोरूस के पश्चिमी भाग पर पोलैंड का कब्ज़ा कायम रह गया।

इस बीच दक्षिण में व्रांगेल से ज़बर्दस्त लड़ाई चलती रही। व्रांगेल दोनेत्स बेसिन तक आ पहुंचा जिससे कोयला का यह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र खतरे में पड़ गया।

अक्तूबर, १९२० के अंत में दक्षिणी मोर्चे की सोवियत सेनाओं ने (मोर्चे के कमांडर—फ्रूंजे, क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य—गूसेव और बेला कुन) व्रांगेल को लगातार कई शिकस्तें दीं और उसे दक्षिण उक्राइना से भगा दिया। व्रांगेल की सेना क्रीमिया हट गयी।

सोवियत सेनाओं को अब आखिरी ज़ोर लगाना था—क्रीमिया के रास्ते की मोर्चेबन्दियों को तोड़ना और व्रांगेल की सेना का अंत करना था। यह कोई आसान काम नहीं था। क्रीमियाई प्रायद्वीप महाद्वीप से पतली, तंग पेरेकोप और चोंगार स्थलडमरूमध्य और अरबात की भूजिह्वा के ज़रिये जुड़ा हुआ है। विश्वयुद्ध के अनुभव प्राप्त वैदेशिक विशेषज्ञों के निर्देशन में उस जगह मज़बूत मोर्चेबन्दियां खड़ी कर दी गयी थीं।

लाल सेना के रास्ते में कंटीले तारों का जाल कतार दर कतार बिछा हुआ था, खन्दकें, मिट्टी की मेड़ें और खाइयां थीं। ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर ज़बर्दस्त गोलाबारी की जा सकती थी। शत्रु को विश्वास था कि क्रीमिया का रास्ता पार करना असम्भव है।

फ्रूंजे ने क्रीमिया में व्रांगेल के दस्तों को ध्वस्त करने के लिए एक योजना बनाई। यह निश्चय किया गया कि पेरेकोप और चोंगार की मोर्चेबंदियों पर धावा किया जाये और साथ ही पेरेकोप और चोंगार स्थलडमरूमध्य के बीच शिवाश की दलदली खाड़ी—सड़ा समुद्र—को जिसे शत्रु अलंघ्य मानता था, पार किया जाये।

७ से ८ नवम्बर १९२० की रात को महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की तीसरी वर्षगांठ के अवसर पर सोवियत सेना ने हमला शुरू किया।

पतझड की अधेरी रात्रि मे लाल रेजिमेटें सिवाश के दलदल और नमकीन झीलो को पार करने लगी। दलदली कीचड मे घोडे और तोपगाडिया फसी जा रही थी। बर्फीली हवा चल रही थी और सैनिको के भीगे कपडे जमने लगे थे। बीच रात मे लाल सेना के अगुआ दस्ते क्रीमिया के उत्तरी हिस्से मे सफेद गार्ड की मोर्चेबदियो के निकट पहुचे। शत्रु की गोलियो की तूफानी बौछार मे धावामार दस्ता जिसमे लगभग सब के सब कम्युनिस्ट थे, आगे बढा। सफेद गार्ड दस्तो को पीछे धकेलकर सोवियत सैनिको ने क्रीमियाई तट पर अपना दखल जमा लिया।

८ नवम्बर को पेरेकोप मोर्चेबदियो पर प्रहार शुरू हुआ। कई घटो तक ५१वी पैदल सेना डिवीजन के दस्तो ने शत्रु की तूफानी गोलाबारी का सामना करते हुए अभेद्य तुरेत्स्की मेड़ पर हमला जारी रखा। पेरेकोप मोर्चेबदियो पर कब्जा कर लिया गया। इसके बाद चोगार स्थलडमरूमध्य पर शत्रु के मोर्चे मे दरार पड गयी। प्रथम सवार सेना की रेजिमेट उस मे घुस पडी।

व्रागेल की सेना को मुह की खानी पडी। इसके बचे-खुचे हिस्से जल्दी-जल्दी ब्रिटिश और फ्रासीसी जहाजो पर लदकर क्रीमिया से भाग निकले। इस विजय को सारे देश मे मनाया गया। "प्राव्दा" ने सोवियत जनगण की इस विजय की खबर पर लिखा "निस्स्वार्थ वीरता और बहादुराना प्रयास से क्राति के ओजस्वी सपूतो ने व्रागेल को खदेड दिया। लाल सेना, श्रम की महान सेना जिन्दाबाद!"

युद्धकालीन कम्युनिज्म

१९१८-१९२० मे देश के रक्षार्थ साधनो को जुटाने के लिए सोवियत सरकार ने अनेक असाधारण कार्रवाइया की जिन्हे युद्धकालीन कम्युनिज्म कहा जाता है।

इस विशेष नीति का निरूपण धीरे-धीरे हुआ। इसकी शुरूआत १९१८ के मध्य मे हुई। इसका स्वरूप अस्थायी था और गृहयुद्ध और अत्यत कठिन सैनिक स्थिति के कारण इसको लागू करना जरूरी हो गया था। सोवियत जनतत्र को अपनी सुरक्षा का सुचारु प्रबध करने के साथ ही साथ आर्थिक तबाही को भी दूर करने की जरूरत पडी जो जारशाही और

अस्थायी सरकार की नीतियों का नतीजा थीं। उसे एक ऐसे देश में अर्थव्यवस्था को सुव्यवस्थित करना था जो शत्रुओं से घिरा हुआ था और जिसे बाहर से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिल रही थी।

युद्धकालीन कम्युनिज़्म जवाब था पूंजीपति वर्ग के भीषण प्रतिरोध का जिसने सर्वहारा वर्ग को संघर्ष के निहायत तीव्र रूपों को अपनाने पर मजबूर कर दिया।

अक्तूबर क्रांति के बाद सोवियत राज्य ने योजना बनायी थी कि "नये सामाजिक-आर्थिक संबंधों में संक्रमण यथासम्भव धीरे-धीरे"* किया जाये, उसे "जहां तक हो सके उस समय के सम्बन्धों के अनुकूल बनाया जाये और पुरातन को जहां तक सम्भव हो कम से कम तोड़ा जाये।"** रूसी पूंजीपति वर्ग विश्व पूंजी की सहायता प्राप्त करके न तो कोई समझौता करने पर तैयार था और न राज्य नियमन और नियंत्रण को मानने पर। इसके बजाय उसने एक भीषण युद्ध छेड़ दिया जिससे सोवियत सत्ता का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ गया। लेनिन ने बताया कि पूंजीपतियों की इन हरकतों से सोवियत जनगण "एक भीषण और निर्मम संघर्ष के लिए मजबूर हो गया जिससे पुराने संबंधों को जितना हमने पहले सोचा था उस सेकहीं ज्यादा हद तक तोड़ने पर मजबूर होना पड़ा।"***

बड़े पैमाने के उद्योग के अलावा राज्य को मंझोले और छोटे उद्योगों का भी राष्ट्रीयकरण करना पड़ा। यह इसलिए आवश्यक हो गया था कि सारा औद्योगिक सामान राज्य के हाथों में केंद्रीभूत किया जा सके और वह सेना और ग्रामीण आबादी को उसे पहुंचाने की स्थिति में हो।

अन्न का राजकीय इजारा क़ायम किया गया और अनाज के निजी व्यापार पर रोक लगा दी गयी। ११ जनवरी, १९१९ को फ़ाज़िल अनाज और चारे की हुक्मी वसूली लागू की गयी। (आगे चलकर अन्य कृषि पैदावार को भी इसी वसूली-प्रथा के तहत ले आया गया)। इस प्रकार किसानों को अपनी सारी अतिरिक्त पैदावार राज्य के हवाले कर देनी पड़ती थी। राज्य संस्थाएं यह तय करती थीं कि किसानों को उपभोग

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३३, पृष्ठ ६५

**वही, पृष्ठ ६७

***वही।

और अगले साल की बुवाई के लिए कितने अनाज की जरूरत है और उन्हे अपने मवेशी के लिए कितना चारा चाहिए। इसके बाद जो कुछ बच रहता था वह सरकार को दे दिया जाता था। फसल की हालत देखकर यह अन्दाजा कर लिया जाता था कि हर गुबेर्निया को कितना अनाज देना है। फिर आगे चलकर उसी आधार पर उयेज़्द, वोलोस्त, गाव और प्रत्येक किसान परिवार का हिस्सा-बाट दिया जाता था।

यह वसूली लेनिन द्वारा निरूपित एक वर्गीय सिद्धात के आधार पर की जाती थी. गरीब किसानो को कुछ नही, मझोले किसानो को थोडा-सा और धनी किसानो को काफी मात्रा मे देना पडता था।

फिर काम करना सभी वर्गों के वास्ते अनिवार्य कर दिया गया। पूजीपति वर्ग के लोगो को शारीरिक काम करने पर बाध्य किया गया। इस तरह यह उसूल लागू किया गया कि "जो काम नही करेगा, वह खायेगा भी नही।"

अपने हाथो मे अर्थव्यवस्था के निर्णायक शिखरो का सकेन्द्रण कर लेने के बाद सोवियत राज्य ने देश की अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा निदेश करने का काम शुरू किया। कच्चे माल, ईंधन, खाद्यान्न तथा औद्योगिक सामानो का वितरण कडे केंद्रीकरण के अतर्गत ले आया गया। आर्थिक साधनो की चूकि बेहद कमी थी, इसलिए इस अत्यत कडे केंद्रीकरण की बदौलत उनका रक्षा की जरूरतो के अनुसार उपयोग सम्भव हुआ।

जमीदारो का एक वर्ग के रूप मे उन्मूलन, मेहनतकश किसानो को जमीन मिलना तथा लगानो और करो के भारी बोझ से उनकी मुक्ति ऐसी बाते थी जिनकी बदौलत सोवियत राज्य को मेहनतकश किसानो का पक्का समर्थन प्राप्त हो गया था, मजदूरो और किसानो की सैनिक-राजनीतिक एकजुटता को सुदृढ करने मे सहायता मिली।

मेहनतकश किसान हुक्मी वसूली और इसके कारण उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयो को स्वीकार करने को तैयार थे क्योकि सोवियत सत्ता जमीदारो और कुलको से उनकी रक्षा करती थी। किसान जानते थे कि सोवियत सत्ता से उन्हे जो जमीन मिली है उसे बचाने और जमीदारो और कुलको का मुकाबला करने के लिए उन्हे पूरा जोर लगाकर सोवियत सत्ता का समर्थन करना है जो किसानो के हितो की रक्षा कर रही है।

7*

युद्ध, शत्रु के घेरे और आर्थिक तबाही की कठिन स्थितियों में युद्धकालीन कम्युनिज़्म की ये कार्रवाइयां देश के तमाम साधनों को रक्षा के लिए जुटाने का एकमात्र उपाय थीं।

देश भर की मुक्ति

व्रांगेल की सेना की शिकस्त और क्रीमिया की मुक्ति का मतलब यह था कि शत्रु की मुख्य शक्तियों पर सोवियत जनगण ने विजय प्राप्त कर ली। लेकिन इसके बाद भी देश के कई भागों में लड़ाई जारी रही। ख़ासकर, काकेशिया, सुदूर पूर्व और मध्य एशिया में लड़ाई ने बहुत तूल खींचा। विदेशों के लिए इन सीमावर्ती इलाक़ों में अपने सैन्यदल भेजना और प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को हथियार और गोले-बारूद की रसद पहुंचाना आसान था। इस बात का महत्व भी कुछ कम नहीं था कि स्थानीय पूंजीपति और ज़मींदार आबादी के कुछ हिस्सों में कुछ दिनों के लिए राष्ट्रवादी भावना भड़काने में सफल हो गये थे। मगर अंत में इन इलाक़ों में भी आम जनता की विजय हुई।

ख़ीवा, बुख़ारा, आज़रबैजान और आर्मीनिया की श्रमजीवी जनता ने १९२० के दौरान विजय प्राप्त की। १९१८ में बाकू कम्यून के पतन के बाद आज़रबैजान में सत्ता पूंजीवादी-राष्ट्रवादी "मुसावात" पार्टी के हाथों में केंद्रित हो गयी थी। आज़रबैजान की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मेहनतकशों ने विद्रोह की तैयारी की।

२७ अप्रैल, १९२० को प्रातःकाल बाकू के मज़दूरों ने फ़ौजी बारिकों, जहाज़ घाट और रेलवे स्टेशन पर धावा बोल दिया। इसके बाद शहर के तमाम अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर दख़ल कर लिया गया। उस रात सत्ता आज़रबैजानी क्रांतिकारी सैनिक समिति के हाथों में चली गयी और आज़रबैजान सोवियत जनतंत्र बन गया। क्रांतिकारी समिति के प्रधान नरिमानोव थे।

उस समय आर्मीनिया में तीव्र संघर्ष चल रहा था। वहां सत्ता पूंजीवादी-राष्ट्रवादी पार्टी "दश्नकत्सुत्युन" (एकता) के हाथों में थी जिसने आर्मीनिया को तबाही के कगार पर पहुंचा दिया था। आर्मीनिया के मज़दूर और किसान दश्नकों की सत्ता स्वीकार करने पर राज़ी नहीं

थे। देश के विभिन्न भागो मे विद्रोह होते रहते थे। २६ नवम्बर, १६२० को दिलिजान उयेज्द के विद्रोहियो द्वारा स्थापित सैनिक क्रातिकारी समिति ने आर्मीनिया को सोवियत समाजवादी जनतन्त्र घोषित कर दिया। क्रातिकारी समिति के अध्यक्ष कास्यान थे जो १६०४ से पार्टी के सदस्य थे। कुछ दिनो बाद विद्रोही जनता ने आर्मीनिया की राजधानी येरेवान को मुक्त कर लिया।

आर्मीनिया मे सोवियत सत्ता स्थापित हो जाने के बाद काकेशिया मे प्रतिक्राति का एक ही गढ बच रहा और वह था मेशविक जाजिया। जाजियाई मेशविक अपने को समाजवादी और जनवादी कहा करते थे मगर समाजवादी सुधार करने का उनका कोई इरादा नही था।

फरवरी १६२१ मे जाजिया के लोगो ने विद्रोह का झडा उठाया। इसका नेतृत्व क्रातिकारी समिति कर रही थी जिसमे अनेक अनुभवी बोल्शविक–माखारादज (अध्यक्ष) ओराखलाश्वीली त्स्खाकाया एलिआवा आदि शामिल थ। २५ फरवरी को क्राति का लाल झडा तिफलिस (त्बिलीसी) पर लहराया गया।

विजयी क्राति का अतिम अध्याय मध्य एशिया की जातिया ने पेश किया। १६२० मे तुर्किस्तान सोवियत जनतत्र के साथ-साथ दो निरकुश राजतत्र–खीवा की खानशाही और बुखारा की अमीरशाही मौजूद थी। उज्बक, ताजिक और तुर्कमान जातियो की श्रमजीवी जनता खान और अमीर के क्रूर दमन का शिकार थी। बुखारा और खीवा मे समय मानो रुका हुआ था। इन दोनो राज्यो की स्थिति पुराने मध्य युग की याद दिलाती थी। स्कूलो और अस्पतालो का कोई नामोनिशान नही था। दस्तकारो और किसानो को भारी कर अदा करना पडता था। जब ये ग़रीब कर नही अदा कर पाते तो उनके बच्चो को दास बना लिया जाता। मामूली से कसूर पर आम लोगो का सर काट दिया जाता या बिच्छुओ से भरे तहखानो मे डाल दिया जाता। खान और अमीर ने सोवियत रूस के विरुद्ध जग की तैयारिया शुरू की। रेगिस्तान और पहाडो के रास्ते ऊट के कारवानो के ज़रिये ब्रिटिश राइफल मशीनगनें और कारतूस बुखारा और खीवा पहुचाये जाते।

मगर जनता के क्रोध के सामने ये भ्रष्ट निरकुश राजतत्र टिक नही सके। अप्रैल १६२० मे जन क्राति की बदौलत खीवा मे सोवियत सत्ता

क़ायम हुई और १९२० के अंत में बुख़ारा के मेहनतकशों ने विद्रोह का झंडा उठाया। लाल सेना की टुकड़ियों की सहायता से विद्रोहियों ने अमीर के लशकरों को खदेड़ दिया और जन सत्ता स्थापित की। पूरे मध्य एशिया में समाजवाद के निर्माण का काम शुरू किया गया।

हस्तक्षेपकारी शक्तियों का आख़िरी अड्डा सुदूर पूर्व में था। वहां जापानी हस्तक्षेपकारी और सफ़ेद गार्ड अभी भी जमे हुए थे। इनके विरुद्ध गुरिल्ला दस्तों ने लड़ाई संगठित की। १९२० में उस इलाक़े के मेहनतकशों ने सुदूर पूर्वी जनतंत्र की स्थापना की और गुरिल्ला दस्तों को मिलाकर एक जन क्रांतिकारी सेना का निर्माण किया गया।

१९२२ के शुरू में ब्लूख़ेर की कमान में इस सेना ने निर्णयकारी हमले की कार्रवाई शुरू की। ख़बारोव्स्क से कुछ ही दूर पर वोलोचायेव्का स्टेशन के ठीक निकट सफ़ेद गार्डों ने एक मज़बूत मोर्चेबन्दी की व्यवस्था की। यून-कोरान पहाड़ी पर जिसके आगे बर्फ़ीला मैदान फैला हुआ था, तोपें और मशीनगनें लगा दी गयीं। पहाड़ी तक पहुंचने के रास्ते पर गहरी जमी बर्फ़ वाली मेड़ों से खाइयों और अंतहीन कांटेदार तारों का जाल बिछा हुआ था।

१० फ़रवरी, १९२२ को मोर्चेबन्दी पर धावा बोल दिया गया। सबसे पहले छठी पैदल सेना की एक कम्पनी कंटीले तारों की बाड़ तक पहुंच गई, पर उसका एक-एक आदमी काम आ गया। परन्तु हानि के बावजूद क्रांतिकारी सेना के जवान पीछे नहीं हटे। वे बर्फ़ पर लेट गये और कुमक के पहुंचने की प्रतीक्षा करने लगे। कड़ाके की सर्दी और तूफ़ानी हिमपात के बावजूद वे डटे रहे यद्यपि अधिकांश के पास जाड़े का कपड़ा भी नहीं था। १२ फ़रवरी की सुबह को तोपख़ाने से गोलाबारी करने के बाद पहाड़ी पर दूसरी बार धावा किया गया। लड़ाई तीन घंटे चलती रही। कंटीले तारों के जाल को पार कर लेने के बाद सैनिकों ने संगीनों से हमला बोल दिया। वोलोचायेव्का पर दख़ल कर लिया गया।

क्रांतिकारी सेना ने प्रशान्त महासागर तट तक भागते शत्रु का पीछा किया। २५ अक्तूबर, १९२२ को तीसरे पहर जन क्रांतिकारी सेना ने व्लादिवोस्तोक में प्रवेश किया और इसके साथ ही देश वैदेशिक हस्तक्षेपकारियों और प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं से बिलकुल मुक्त हो गया।

• • •

अक्तूबर क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करने तथा अपनी समाजवादी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए रूस के जनगण को तीन बरस तक सशस्त्र संघर्ष करना पड़ा। इस कठोर घमासान संघर्ष में सोवियत जनतंत्र की सम्पूर्ण विजय हुई। हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्ड शक्तियों के पास साज-सामान और रसद कहीं अधिक थी, फिर भी उनके पैर उखड़ गये और उन्हें शिकस्त हुई। सोवियत राज्य का विनाश करने को सभी देशों के साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों का संयुक्त प्रयास बिलकुल विफल हुआ।

सोवियत राज्य की विजय इसलिए हुई कि हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों के ख़िलाफ़ इसका संघर्ष प्रतिक्रियावादी और पुरानी पड़ गई शक्तियों के विरुद्ध एक नयी, प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था का संघर्ष था जिसका जन्म समाजवादी क्रांति की बदौलत हुआ था। करोड़ों मेहनतकश जो एक नयी जीवन पद्धति का निर्माण करने के लिए व्याकुल थे, सर्वहारा वर्ग और उसकी हिरावल—कम्युनिस्ट पार्टी—के झंडे तले एकत्रित हो गये। उन्होंने अभूतपूर्व सृजनात्मक कार्यक्षमता और उत्साह का परिचय दिया। शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष में श्रमजीवी जनता ज़बरदस्त त्याग करने और भयंकर विपत्तियां झेलने के लिए तैयार थी और उसने रणक्षेत्र और देश के भीतर निस्स्वार्थ वीरता का सबूत दिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल एक सही नीति अपनायी जिसे जनता का सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त था, बल्कि वह जनता के सुरक्षा अभियान की मुख्य प्रेरक शक्ति और संगठनकर्ता बन गयी। पार्टी ने जन शक्ति को सही रास्ते पर लगाया, देश को एक सशस्त्र छावनी में बदल दिया, तमाम उपलब्ध शक्तियों को सुरक्षा के लिए जुटाया और मज़दूरों और किसानों की एक सेना का निर्माण किया।

दो व्यवस्थाओं—समाजवादी और पूंजीवादी—की प्रथम सामरिक टक्कर में नवजात समाजवादी राज्य की विजय हुई जिससे इसकी श्रेष्ठता, शक्ति और जीवन क्षमता साबित हो गई।

तीसरा अध्याय

नयी आर्थिक नीति।
राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार
१९२१–१९२५

राजनयिक विलगाव का अन्त

हस्तक्षेपकारी और सफ़ेद गार्ड शक्तियों की शिकस्त ने साम्राज्यवादियों द्वारा शस्त्रास्त्र के बल पर सोवियत राज्य का विनाश करने के प्रयासों का हमेशा के लिए अंत कर दिया। सोवियत जनतंत्र को शांतिपूर्ण परिस्थितियों में निर्माण योजनाएं शुरू करने का अवसर प्राप्त हुआ। लेनिन का यह दावा उस समय बिलकुल सही था कि "...हमें न केवल दम लेने का समय ही मिला है। हम तो एक नये दौर में प्रवेश कर रहे हैं, जिसमें पूंजीवादी राज्यों के जाल में हमने अपने बुनियादी अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व का अधिकार प्राप्त कर लिया है।"*

पूंजीवादी राज्यों के नेताओं को चाहे यह बात पसन्द हो या न हो, उन्हें मजबूर होकर एक समाजवादी राज्य के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ा। यद्यपि उन्होंने सोवियत रूस के विरुद्ध संघर्ष बन्द नहीं किया, फिर भी नवजात सोवियत राज्य तथा अन्य देशों में संबंध धीरे-धीरे स्थापित होने लगे।

इस क्षेत्र में बड़ी सफलताएं १९२१ के वसंत में ही प्राप्त हो गयी थीं। उस वर्ष १६ मार्च को लन्दन में एक एंग्लो-सोवियत व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते का महत्व केवल आर्थिक ही नहीं, राजनीतिक भी था, क्योंकि इसका मतलब यह था कि ब्रिटेन ने

* व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ४२, पृष्ठ २२

वास्तव मे सोवियत सरकार को मान लिया। लोक-सदन मे ब्रिटिश प्रधान मत्री लाइड जार्ज की बातो का मतलब भी यही था।

इसके बाद जर्मनी, इटली, नार्वे, आस्ट्रिया तथा अनेक अन्य देशो के साथ व्यापार समझौते हुए।

१९२१ के वसत मे तुर्की, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के साथ सधियो के माध्यम से सामान्य सबध स्थापित हुए। इन सधियो ने, जिनकी प्रारम्भिक तैयारी पहले कर ली गयी थी, यह प्रदर्शित कर दिया कि सोवियत राज्य और साम्राज्यवादी देशो की नीतियो मे उसूल का बुनियादी अन्तर है। पूरब के देशो को साम्राज्यवादी औपनिवेशिक विस्तार का लक्ष्य मात्र मानते थे। किसी महान शक्ति और पूरब के देशो के बीच ये सबसे पहली सधिया थी, जिनका आधार समानता, राष्ट्रीय स्वाधीनता और राज्य प्रभुता के सम्मान के सिद्धातो पर था।

अगले साल सोवियत राज्य को अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे और अधिक सफलताए प्राप्त हुईं। अप्रैल, १९२२ मे सोवियत जनतत्र के प्रतिनिधियो ने जेनोआ मे आयोजित एक अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे पहली बार भाग लिया।

सोवियत रूस की शिरकत से एक अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय ६ जनवरी, १९२२ को कैनिस मे एटेंट की सर्वोच्च परिषद की एक बैठक मे किया गया था। पश्चिम मे बहुत से लोग यह समझ रहे थे कि सोवियत प्रतिनिधियो को सम्मेलन मे आने का मौक़ा देकर वे राजनयिक दबाव के ज़रिये सोवियत रूस से बडी आर्थिक मागे मनवा सकेगे। कैनिस मे स्वीकृत प्रस्ताव से भी यही प्रकट होता था। सोवियत रूस के समक्ष पूर्वनिर्धारित शर्तें पेश करने के उद्देश्य से फ्रासीसी सरकार ने एक विशेष वक्तव्य मे कहा कि "यदि सोवियत या अन्य कोई सरकार अपने उत्तर या सरकारी घोषणाओ के ज़रिये यह बता देगी कि वह ६ जनवरी को (एटेंट की सर्वोच्च परिषद की कैनिस बैठक मे—सं०) पहले से तैयार की गयी शर्तों को पूर्णत· स्वीकार नही करती, तो फ्रासीसी सरकार के लिए जेनोआ सम्मेलन मे अपना प्रतिनिधिमडल भेजना सभव नही होगा।" इस प्रकार सोवियत राज्य पर दबाव डालने का क्रूर प्रयास किया गया। फ्रास ने सोवियत रूस को छोडकर एक प्रारम्भिक सम्मेलन आयोजित करने का भी प्रयास किया, ताकि पूजीवादी राज्य आपस मे

इस बात पर सहमत हो जायें कि जेनोआ सम्मेलन में क्या प्रस्ताव स्वीकार किया जाये।

सोवियत सरकार ने १५ मार्च, १९२२ के एक नोट में जेनोआ सम्मेलन के आयोजकों द्वारा समाजवादी राज्य के समक्ष पहले से स्वीकृत फ़ैसलों को एक निश्चित तथ्य के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयत्नों की निन्दा की।

सोवियत सरकार को जेनोआ एक प्रतिनिधिमंडल भेजने का निमंत्रण ७ जनवरी, १९२२ को मिला और दूसरे ही दिन उसने सम्मेलन के काम में भाग लेने पर अपनी तत्परता घोषित कर दी।

लेनिन ने अनेक भाषणों और लेखों में जेनोआ सम्मेलन में सोवियत प्रतिनिधिमंडल के लिए एक उचित कार्यक्रम पेश किया। इस कार्यक्रम के मुख्य सूत्र ये थे: सोवियत देश अन्य राज्यों के साथ सहयोग करने और उनके ऐसे सुझावों का समर्थन करने को तैयार है, जो शांति के हितों के विपरीत नहीं हैं। वह सभी देशों में राजनयिक तथा आर्थिक सहयोग के सर्वतोमुखी विकास का समर्थन करता है। सोवियत राज्य ने एक देश द्वारा दूसरे देश पर अपनी इच्छा थोपने और एक तरफ़ा संधियां लादने के तमाम प्रयत्नों का भी विरोध किया। जेनोआ में सोवियत प्रतिनिधिमंडल का मुख्य कार्य सुदृढ़ और स्थायी शांति हासिल करना, जातियों के आर्थिक सहयोग को निश्चित करना तथा सोवियत जनतंत्र और पूंजीवादी देशों में व्यापार संबंध स्थापित करना था।

जेनोआ सम्मेलन का उद्घाटन तेरहवीं शताब्दी के बने हुए पलाज्जो दि सां जोर्जो के दो बड़े हालों में से एक में १० अप्रैल को बड़े आडम्बरपूर्ण वातावरण में हुआ। शहर में प्रतिनिधिमंडलों के सदस्य और विभिन्न विशेषज्ञ कुल मिलाकर दो हज़ार व्यक्ति एकत्रित हुए थे।

सोवियत प्रतिनिधि के भाषण की प्रतीक्षा उत्सुकतापूर्वक की जा रही थी। चिचेरिन ने शांति को सुदृढ़ करने के लिए सोवियत सरकार का व्यापक कार्यक्रम पेश किया और परस्पर लाभ तथा समानता के आधार पर सभी देशों के साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंध स्थापित करने की उसकी उत्सुकता प्रकट की। सोवियत प्रतिनिधि ने हथियारों में सर्वव्यापी कटौती करने का प्रस्ताव भी पेश किया, जिसमें विषैली गैसों तथा आम आबादी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल होनेवाले तमाम शस्त्रों के प्रयोग पर

प्रतिबध भी शामिल था। हथियारो मे कटौती का इस प्रकार का यह सर्वप्रथम प्रस्ताव था। सम्मेलन के एक प्रतिनिधि ने उसका पुन स्मरण करते हुए कहा "चिचेरिन के भाषण का प्रभाव इतना जबर्दस्त था कि तालियो की गडगडाहट ने जब राजनयिक शिष्टाचार के सारे बन्धनो को तोड दिया, तो लगता था कि यह एक ऐसे अर्थशाली भाषण की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है "

चिचेरिन के भाषण और उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावो का ससार भर के जनवादी क्षेत्रो ने हार्दिक स्वागत किया। सम्मेलन अधिवेशन के दौरान ही सोवियत प्रतिनिधिमडल के पास बडी सख्या मे तार और पत्र पहुचने लगे, जिनम प्रतिनिधिमडल के काम का समर्थन और सराहना की गयी थी। लेकिन इन सुझावो के प्रति सम्मेलन मे पूजीवादी देशो के प्रतिनिधियो की प्रतिक्रिया कुछ और ही थी। सर्वव्यापी और सपूर्ण निशस्त्रीकरण के प्रस्ताव को बिना किसी विचार विमर्श के अस्वीकार कर दिया गया।

१८ अप्रैल को जेनोआ सम्मेलन की चारो समितियो की बैठको मे इस समाचार से खलबली मच गयी कि रेपैलो म सोवियत-जर्मन सधि पर हस्ताक्षर हो गये। ब्रिटेन, फ्रास तथा अन्य देशो के प्रतिनिधि जिस समय विभिन्न आयोगो मे समाजवादी राज्य पर अपनी शर्तें थोपने का प्रयत्न कर रहे थे, उस समय एक सोवियत-जर्मन समझौते के लिए जर्मन सरकार से सोवियत राज्य के प्रतिनिधियो का वार्तालाप जेनोआ म जारी था। इस सबध मे काम पहले ही बर्लिन मे शुरू हो चुका था। १६ अप्रैल को यह वार्तालाप सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उस दिन सोवियत-जर्मन सधि पर हस्ताक्षर हुए। इसमे निम्नलिखित बाते थी दोनो देशो मे राजनयिक सबध और कौंसुलेट की पुन स्थापना, युद्धकालीन क़र्ज़ों का परित्याग, सोवियत रूस म भूतपूर्व जर्मन सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण का जर्मनी द्वारा स्वीकरण "बशर्ते कि रूसी सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र की सरकार अन्य सरकारो के इसी प्रकार के दावो को स्वीकार नही करगी।"

रेपैलो सधि सोवियत जनतत्र की प्रथम मुख्य राजनयिक विजय थी। पहली बार एक प्रमुख पूजीवादी देश ने सोवियत जनतत्र से राजनयिक सबध स्थापित किया था। इससे अतर्राष्ट्रीय सबधो के क्षेत्र मे सोवियत राज्य की स्थिति को और सुदृढ बनाने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

जेनोआ सम्मेलन में अनेक प्रतिनिधियों ने खुले आम सोवियत-जर्मन संधि का विरोध किया। फ़्रांसीसी प्रतिनिधिमंडल ने तो उसको रद्द करने की मांग की। गर्मागर्म वाद-विवाद के बाद पश्चिमी देशों के प्रतिनिधियों ने राजनीतिक उपसमिति से जर्मन प्रतिनिधि को इस आधार पर अलग करने का निश्चय किया कि जर्मनी पहले ही सोवियत रूस से समझौता कर चुका है।

सम्मेलन में पूंजीवादी राज्यों के प्रतिनिधियों को आशा थी कि वे सोवियत सरकार से ज़ारशाही और अस्थायी सरकार द्वारा लिये गये क़र्ज़ों को स्वीकार करा लेंगे और वह एक तथाकथित रूसी क़र्ज़ समिति स्थापित करने पर राज़ी हो जायेगी। समिति का काम होता सोवियत सरकार द्वारा स्वीकृत ज़िम्मेदारियों के पालन का नियंत्रण करना। दूसरे शब्दों में समिति नवजात समाजवादी राज्य के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप करती। पश्चिमी राजनीतिज्ञ यह सपना भी देख रहे थे कि क्रांति के दौरान ज़ब्त की गयी सम्पत्ति उनके भूतपूर्व वैदेशिक मालिकों को वापस दिलायी जायेगी।

जैसा कि आशा की जानी चाहिए थी सोवियत जनतंत्र पर पूंजीवादी राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा अस्वीकार्य शर्तें लादने के सारे प्रयत्न विफल हुए। सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने उन तमाम सुझावों को अस्वीकार कर दिया, जिनका उद्देश्य देश के अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप करना था और जो समानता के सिद्धांत पर आधारित नहीं थे। उसने बताया कि ज़ारशाही और अस्थायी सरकार द्वारा लिये गये क़र्ज़ों के भुगतान की मांग सोवियत रूस से करना सर्वथा अनुचित है। वास्तव में ज़ारशाही और अस्थायी सरकारों ने ये क़र्ज़ क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने और युद्ध चलाने के उद्देश्य से लिये थे। जब रूस एंटेंट के पक्ष में लड़ रहा था, तो लाखों रूसी मारे गये थे और एंटेंट देशों को अंत में नये इलाक़े मिले थे और उन्होंने जर्मनी से हरजाने में बड़ी भारी रक़म वसूल की थी। सोवियत राज्य के विरुद्ध उनके हस्तक्षेप के कारण उसको कुल मिलाकर ३९ अरब स्वर्ण रूबल की क्षति हुई थी। और इसपर भी वे सोवियत रूस से धन की मांग कर रहे हैं। ज़ाहिर है इन मांगों को अस्वीकार कर दिया गया। इसी के साथ पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक और व्यावसायिक संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से सोवियत सरकार ने घोषणा

की कि वह युद्धपूर्व के कर्जों के सवाल पर पुन विचार करने को तैयार है बशर्ते कि क़र्जदाता देश युद्धकालीन क़र्जों को रद्द कर दें और रूस की वित्तीय सहायता करे।

लेकिन उस समय तक जेनोग्रा सम्मेलन वास्तव मे भग हो चुका था, क्योंकि पश्चिमी देश समान समझौतो की बात सुनने को भी तैयार नही थे। इस प्रश्न पर सयुक्त राज्य ग्रमरीका ने कडा रुख अपनाया। उसने सोवियत जनतत्र के प्रतिनिधियो से किसी भी बातचीत का विरोध किया। सयुक्त राज्य ग्रमरीका ने इस सम्मेलन मे भाग नही लिया ग्रौर केवल एक पर्यवेक्षक—इटली मे ग्रमरीकी राजदूत—को भेजा था। इसी के साथ सयुक्त राज्य ग्रमरीका के इजारेदार क्षेत्रो को डर था कि उनके प्रतिद्वद्वी कही सोवियत सरकार से किसी प्रकार का समझौता न कर ले। इसलिए उन्होंने जेनोग्रा सम्मेलन को भग करने की पूरी कोशिश की।

११ मई, १६२२ को सोवियत प्रतिनिधिमडल ने सम्मेलन मे विशेषज्ञो के वार्तालाप को पुन शुरू करने का सुझाव रखा। इस सुझाव पर विचार-विमर्श के ग्रत मे यह फैसला किया गया कि जून मे एक ग्रार्थिक सम्मेलन ग्रायोजित किया जाये, जिसमे जेनोग्रा मे उठाये गये सवालो पर विस्तारपूर्वक विचार किया जायेगा। इस प्रकार एक नया सम्मेलन, इस बार हेग मे ग्रायोजित करने की योजना बनी।

हेग सम्मेलन उसी वर्ष जून ग्रौर जुलाई मे हुग्रा। उसका भी कोई परिणाम नही निकला। इससे भी यही प्रदर्शित हुग्रा कि पूजीवादी देश तब भी यही ग्राशा कर रहे थे कि सोवियत रूस पर भारी ग्रार्थिक शर्तें लाद सकेगे, क्राति के दौरान राष्ट्रीयकृत उद्यम उनके वैदेशिक मालिको को वापस दिला सकेगे ग्रौर पुन पूजीवादी क्रियाकलाप जारी करायेंगे। जब पश्चिमी देशो का उद्देश्य पूरा नही हुग्रा, तो उन्होने जल्दी-जल्दी सम्मेलन को समाप्त कर दिया। सम्मेलन के परिणाम से यह भी साफ हो गया कि पूजीवादी जगत के ग्रनेक राजनीतिज्ञ ग्रभी भी समाजवादी राज्य की ग्रार्थिक नाकेबन्दी जारी रखने के पक्ष मे थे।

लेकिन जेनोग्रा ग्रौर हेग सम्मेलनो मे सोवियत प्रतिनिधिमडला के कार्यकलाप, उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावो ग्रौर ग्रत मे जर्मनी के साथ रेपैलो सधि सम्पन्न होने का राजनीतिक रगमच पर भारी प्रभाव पडा।

नवजात सोवियत जनतंत्र ने जहां सहयोग के लिए अपनी इच्छा प्रकट की, वहां यह भी साफ़ कर दिया कि वह अपने आन्तरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं बर्दाश्त करेगा।

यद्यपि जेनोआ अथवा हेग सम्मेलनों का कोई फल नहीं निकला, फिर भी यही बात कि सोवियत जनतंत्र को उनमें आमंत्रित किया गया और सोवियत प्रतिनिधिमंडलों ने उनके कामों में भाग लिया, बता रही थी कि समाजवादी राज्य के राजनयिक बिलगाव का अंत हो गया।

इन दो सम्मेलनों के बाद सोवियत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति लगातार मजबूत होती गयी। सोवियत राजनयिकों द्वारा शांति और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने के प्रयासों को नजरान्दाज नहीं किया जा सकता था। सुदूर पूर्व की मुक्ति के संबंध में लेनिन ने कहा: "यदि जापानियों ने अपनी सैनिक शक्ति के बावजूद घोषणा की कि वे अपनी फ़ौज वापस ले जायेंगे और उन्होंने अपना वादा पूरा किया, इसका श्रेय हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति को भी मिलना चाहिए।"*

जून, १९२२ में ही सोवियत सरकार ने फ़िनलैंड, एस्तोनिया, लाटविया और पोलैंड की सरकारों के समक्ष यह सुझाव रखा कि समानुपातिक निशस्त्रीकरण पर विचार करने के लिए मास्को में एक सम्मेलन आयोजित किया जाये। दिसम्बर, १९२२ में यह सम्मेलन मास्को में हुआ। सोवियत राजनयिकों ने ठोस प्रस्ताव पेश किया कि शिरकत करनेवाले देशों में शस्त्रास्त्र में कितनी कमी की जाये। यद्यपि उपस्थित पूंजीवादी क्षेत्रों के रुख के कारण मास्को सम्मेलन का कोई निश्चित परिणाम नहीं निकला, फिर भी इस सम्मेलन का आयोजन ही एक सकारात्मक घटना था। इससे दुनिया को यह पता लग गया कि सोवियत जनगण अपने पड़ोसियों के संग सहयोग करने की हार्दिक इच्छा रखते हैं और शस्त्रास्त्र में कटौती की जैसी महत्त्वपूर्ण समस्या पर उनसे समझौता करना चाहते हैं।

इस बीच प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों ने सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था पर चोट करने और उसकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बढ़ने से रोकने के लिए पूंजीवादी देशों का एक संयुक्त सोवियत विरोधी मोर्चा बनाने का एक और प्रयास किया।

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २७, पृष्ठ ३१७

८ मई, १९२३ को ब्रिटिश विदेश मंत्री लार्ड कर्जन ने सोवियत सरकार को एक चेतावनी भेजी, जिसका उद्देश्य सोवियत संघ के आर्थिक और राजनीतिक दृढ़ीकरण को कमजोर करना तथा सोवियत संघ की शांतिपूर्ण वैदेशिक नीति के संबंध में सन्देह के बीज बोना था। यह चेतावनी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का एक क्रूर प्रयास था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सोवियत सरकार ने शीघ्र ही यानी ११ मई को अपने नोट में इस चाल का सख्ती से जवाब दिया।

लेकिन कर्जन की चेतावनी सोवियत-विरोधी उकसावे की कोई अकेली हरकत नहीं थी। यह एक पूरे सिलसिले की एक कड़ी थी। १० मई, १९२३ को लोज़ान (स्विट्ज़रलैंड) में एक सफ़ेद गार्ड ने एक सोवियत राजनयिक वोरोव्स्की की हत्या कर दी।

परन्तु न तो कर्जन का नोट, न यह आतंकवादी हरकत और न ही प्रतिक्रियावादी शक्तियों द्वारा उकसावे की अन्य हरकतों से सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के दृढ़ीकरण और उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि को रोका जा सका। सोवियत संघ को मान्यता देने, उसके साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने का अभियान पश्चिम में निरन्तर ज़ोर पकड़ता जा रहा था। फ्रांस में भी यह अभियान व्यापक पैमाने पर विकसित हो रहा था, यद्यपि उस देश के पूंजीवादी क्षेत्र सोवियत संघ के शत्रुओं में दक्षिण पक्ष की चरमसीमा पर थे। फ्रांसीसी रेडिकल समाजवादी पोल पेंलेवे ने उस समय यह बात अकारण ही नहीं कही थी कि "इस घड़ी जो मंत्रिमंडल सोवियत संघ को मान्यता प्रदान करने पर तैयार नहीं होगा, वह सत्तारूढ़ नहीं रह सकेगा।"

१९२३ में ब्रिटेन के संसदीय चुनावों में लेबर पार्टी ने अपने चुनावपूर्व घोषणापत्र में एक नारा यह भी दिया था कि सोवियत संघ के साथ सामान्य संबंध स्थापित किये जायें। यहां तक कि उदारवादी पार्टी के नेताओं ने भी सोवियत संघ से राजनयिक संबंध स्थापित करने का आह्वान किया। इससे उन्हें कुछ अधिक वोट मिलने की आशा थी, क्योंकि १९२३ के अंत तक सोवियत संघ की मान्यता का नारा ब्रिटेन में बहुत जनप्रिय हो चुका था। ब्रिटेन, फ्रांस तथा अन्य पश्चिमी देशों में सभी जगह मजदूर सोवियत संघ की मान्यता की मांग के लिए आवाज़ बुलंद कर रहे थे।

जब जनवरी, १९२४ में ब्रिटेन में पहली बार लेबर पार्टी की सरकार बनी, तो सोवियत संघ से राजनयिक संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से वार्तालाप के लिए क़दम उठाये गये। उस साल १ फ़रवरी को मैकडानल्ड की सरकार ने मास्को स्थित सरकारी ब्रिटिश प्रतिनिधि हाजसन के ज़रिये एक पत्र इस आशय का भेजा कि ब्रिटेन ने सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ को मान्यता दे दी है। दूसरे दिन सोवियतों की दूसरी अखिल संघीय कांग्रेस ने एक विशेष प्रस्ताव स्वीकार कर ब्रिटिश सरकार की इस पहलक़दमी का अभिनन्दन किया। सोवियत संघ और ब्रिटेन के बीच राजनयिक संबंध की स्थापना सोवियत संघ के वैदेशिक संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युगांतरकारी घटना थी। ब्रिटेन की पहलक़दमी के बाद उसी वर्ष अनेक पूंजीवादी देशों – इटली, नार्वे, आस्ट्रिया, यूनान, स्वीडन, मेक्सिको, डेनमार्क और हेजाज़ ने भी यह क़दम उठाया। मई, १९२४ में चीन के साथ भी राजनयिक संबंध स्थापित हुए। चीनी जनतंत्र की प्रभुता के सम्मान पर आधारित इस संधि ने चीन में ज़ारशाही रूस द्वारा प्राप्त सभी विशेषाधिकारों को मिटाने की पुष्टि की।

सोवियत संघ और फ़्रांस के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना भी एक महत्वपूर्ण क़दम था। मई, १९२४ में संसदीय चुनावों के बाद पुआंकारे की सरकार उलट गयी और उसके स्थान पर पूंजीवादी जनवादी एडुअर्ड हेरिओ के नेतृत्व में सरकार बनी। हेरिओ फ़्रांस और सोवियत संघ के बीच व्यापारिक संबंध स्थापित और विकसित करने के पक्ष में थे। अक्तूबर, १९२४ में दोनों देशों में राजनयिक संबंध पूर्ण रूप से स्थापित हो गये।

१९२४ का साल सोवियत वैदेशिक नीति के इतिहास में अन्तर्राष्ट्रीय मान्यताओं का साल है। राजनयिक संबंधों के साथ-साथ सोवियत संघ तथा अन्य देशों के बीच आर्थिक संबंध भी क़ायम हुए। १९२४ में सोवियत संघ का प्रतिनिधित्व विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मेलों और प्रदर्शनियों में आस्ट्रिया (वियना), जर्मनी (कोलोन, लाइपज़िग और फ़्रैंकफ़ुर्ट आन मेन) और फ़िनलैंड (हेलसिंकी) में हुआ।

२० जनवरी, १९२५ को सोवियत संघ और जापान के बीच राजनयिक संबंध तथा कांसुलेट स्थापित करने के लिए एक उपसंधि पर हस्ताक्षर हुए।

१९२५ के प्रारम्भ तक सयुक्त राज्य अमरीका को छोडकर बाकी सभी प्रमुख पूजीवादी देशो ने सोवियत सघ को मान्यता दे दी थी। अमरीकी शासक क्षेत्रो ने सोवियत सघ को मान्यता देने की कम से कम शर्त यह पेश की कि जारशाही और अस्थायी सरकारो द्वारा लिये गये कर्जों को रद्द करनेवाली आज्ञप्तियो को तथा वैदेशिक नागरिको की निजी सम्पत्ति के राष्ट्रीकरण को मनसूख किया जाये। यह बात अमरीकी विदेश मत्री चार्ल्स एवान्स ह्यूज ने दिसम्बर, १९२३ मे खुले आम कही। साधारण बुद्धि के तकाजो और स्वय अपने देश के आर्थिक हितो को नजरअन्दाज करते हुए सयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादी क्षेत्रो ने केवल यही नही कि सोवियत सघ से राजनयिक सबध स्थापित करने से इनकार किया, बल्कि अन्य देशो मे भी सक्रिय सोवियत विरोधी नीति पर अमल किया।

इस प्रकार १९२१–१९२५ की अवधि मे अनेक कठिनाइयो के बावजूद सोवियत सघ ने अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे बडी सफलताए प्राप्त की और अतर्राष्ट्रीय सबधो के दायरे मे ऐसी स्थितिया सुनिश्चित की, जिनसे इसके अर्थतत्र की बहाली मे सहायता मिली।

नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण

युद्ध के लम्बे महीनो के दौरान सोवियत स्त्री और पुरुष अपना समाचारपत्र हाथ मे लेते ही सबसे पहले यह देखते थे कि मोर्चे की ताज़ा खबरे क्या है। आखिरकार घमासान युद्ध का अन्त हुआ। १५ दिसम्बर १९२० को समाचारपत्रो मे जनतत्र की क्रातिकारी सैनिक परिषद के रणभूमि प्रधान कार्यालय की अतिम रिपोर्ट छपी थी। इसमे सन्देह नही कि दूरवर्ती इलाको जैसे जनतत्र के सुदूर पूर्व मे छिटपुट लडाइया अभी जारी थी और १९२२ तक जारी रही; मगर १९२० के अत तक शत्रु की मुख्य शक्तियो को परास्त किया जा चुका था। सोवियत राज्य के जीवन मे शाति की अवधि शुरू हो चुकी थी।

उस समय देश की स्थिति बेहद कठिन थी। लडाई बन्द होने के फौरन बाद सोवियत देश की स्थिति का वर्णन करने के लिए लेनिन ने जिन शब्दो का प्रयोग किया, वे थे "कमरतोड तबाही, अभाव,

दरिद्रता..."* देश को लगातार सात वर्ष युद्ध की मुसीबत झेलनी पड़ी थी – पहले जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और तुर्की के खिलाफ़ और उसके बाद हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों के खिलाफ़। देश के तीन चौथाई भाग पर विदेशी या सफ़ेद गार्ड सेनाओं का क़ब्ज़ा रह चुका था। पीछे हटते समय शत्रुओं ने जान-बूझकर रास्ते में पड़नेवाली फ़ैक्टरियों और पुलों को नष्ट कर दिया था, वे मवेशी हंका ले गये थे और खाद्यान्न और कच्चे माल के भंडार लूट लिये थे। खानों में पानी भर दिया गया था और मशीनों को चकनाचूर कर दिया गया था। भट्ठियां बेकार पड़ी थीं और देश के अधिकांश कारखानों में कोई जान नहीं रह गयी थी।

युद्ध के दिनों में करोड़ों आदमी हताहत या अपंग हो गये थे। १९१४ और १९२० के बीच दो करोड़ से अधिक लोग मारे गये, १६ से ४९ वर्ष तक की आयु के ४४ लाख स्त्री और पुरुष पंगु हुए। लाखों बच्चे अनाथ और निराश्रय हो गये।

औद्योगिक उत्पादन का स्तर १९२० में गिरकर १९१३ के सातवें भाग और बड़े पैमाने के उद्योग में लगभग आठवें भाग के बराबर रह गया था।

यातायात की व्यवस्था भी तबाही की हालत में थी। अधिकांश रेलवे इंजनों और डिब्बों की मरम्मत की जरूरत थी, लाखों स्लीपर सड़ गये थे, सैकड़ों मील पुरानी रेलवे लाइनों को बदलना जरूरी था। हजारों पुल नष्ट कर दिये गये थे। १९२० में रेलवे की सामान ले जाने की क्षमता युद्धपूर्व का पांचवां भाग रह गयी थी। देश के विभिन्न भागों तथा देहातों और औद्योगिक केंद्रों को जोड़नेवाली आर्थिक कड़ियां टूट चुकी थीं।

इस बीच कृषि में जोत की जमीन बहुत घट गयी थी। उत्पादन बहुत गिर गया था। मवेशियों की संख्या बहुत कम रह गयी थी। १९२० में कृषि की कुल पैदावार युद्धपूर्व का केवल ६७ प्रतिशत थी।

इतने दिनों अपार कठिनाइयों और अभाव का शिकार रहने के बाद लोग थक चुके थे। आधा पेट खाकर रहते कई बरस हो गये थे और रोटी पर कड़ा राशन था। औद्योगिक मजदूरों और दफ्तरी कार्यकर्ताओं के राशन

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३२, पृष्ठ २४१

मे मास और मक्खन शायद ही कभी मिलता हो और चीनी तो बडी नेमत थी। शारीरिक थकावट और अल्पपोषण के चलते महामारिया फैलने लगी और १९२० मे ३५ लाख आदमी टाइफस का शिकार हुए। कपडे, जूते और दवाइयो की भी बडी कमी थी।

युद्ध के वर्षों मे इन कठिनाइयो की असल चोट मजदूर वर्ग पर पडी थी। उसकी सख्या बहुत घट गयी। और इसका मतलब यह था कि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का वर्गीय आधार कमजोर हो गया था। किसानो को भी अपार कठिनाइया और अभाव सहना पड रहा था। उन्होने भी युद्धकालीन कम्युनिज्म की कार्रवाइयो से अपनी नाराजगी प्रकट की। किसान चाहते थे कि अतिरिक्त अनाज की हुक्मी वसूली बन्द कर दी जाये और उन्हे अपनी अतिरिक्त पैदावार को आजादी के साथ बेचने का अधिकार मिल जाये।

प्रतिक्रातिकारियो और सफेद गार्डों ने सोवियत सत्ता के विरुद्ध अभी अपना सघर्ष छोडा नही था। वे आगे बढकर किसानो के असतोष को हवा देने लगे। कई क्षेत्रो मे धनी किसानो (कुलको) ने बगावत कर दिया। और कुछ मझोले किसान भी उनके साथ हो गये।

मार्च, १९२१ के शुरू मे पेत्रोग्राद के पास क्रोन्स्ताद्त की नौसैनिक गढ मे सोवियत-विरोधी बगावत हो गयी। इसका नेतृत्व कट्टर सफ़ेद गार्डवाले कर रहे थे। लेकिन इस अवसर पर उन्होने अपना असली चेहरा छिपाना चाहा। उनका कहना था कि सोवियत सत्ता से उनका कोई विरोध नही। विरोध हुक्मी वसूली से है। और यह कि वे समर्थक "सोवियतो की सत्ता के है, पार्टियो की नही"। इस नारेबाजी के जरिये उन्होने गढ गैरिजन के नौसैनिको के काफी बडे भाग का समर्थन प्राप्त कर लिया। इनमे बडी सख्या किसानो की थी, जो हाल ही मे भर्ती होकर आये थे।

इस बगावत को कुचल दिया गया। मगर यह एक खतरनाक चेतावनी थी। यहा साफ दिखाई दे रहा था कि आर्थिक समस्याए राजनीतिक समस्याओ से इस तरह जुड गयी है कि दोनो को अलग नही किया जा सकता। लेनिन ने उस समय लिखा "१९२१ के वसत मे अर्थव्यवस्था राजनीति मे बदल गयी. क्रोन्स्ताद्त।"*

---

* वही, पृष्ठ ३०६

उस समय फ़ौरी काम अर्थव्यवस्था को बहाल करना और मेहनतकश जनता की स्थिति को सुधारना था। यह बुनियादी ध्येय जीवन और मरण का सवाल बन गया था।

इस ध्येय की पूर्ति के लिए जनतंत्र की आर्थिक नीति में बड़ा परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। युद्धकालीन कम्युनिज़्म, जो युद्ध के वर्षों में एकमात्र सही हल था, नयी स्थिति का सामना करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

* * *

लेनिन के अध्ययनकक्ष के सामने बड़ी संख्या में लोग एकत्रित थे और देर से उनसे भेंट करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह एक असाधारण बात थी, क्योंकि लेनिन हमेशा लोगों से समय तय करके भेंट किया करते थे। वे सभी यह समझ रहे थे कि राज्य की कोई अत्यावश्यक समस्या या कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष का समय ले रहा था। वह कौन व्यक्ति हो सकता था, जिसे लेनिन ने इतना अधिक समय दिया था?

आख़िर लेनिन के अध्ययनकक्ष का दरवाज़ा खुला और एक दढ़ियल किसान, जो बस्त के जूते और भेड़ की खाल का पुराना कोट पहने हुआ था, बाहर निकला। वह ख़ास ग़रीब किसानों का प्रतिनिधि मालूम होता था, जो उन समय करोड़ों की संख्या में सारे रूस में फैले हुए थे।

"क्षमा कीजिये, आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी," लेनिन ने उन लोगों से कहा, जो बाहर एकत्रित थे। "ताम्बोव का यह किसान मुझे ऐसी दिलचस्प बातें बता रहा था कि मुझे समय का ध्यान नहीं रहा।"

इस घटना की चर्चा अमरीकी लेखक एल्बर्ट रीस विलियम्स ने की है। यह लेनिन की ख़ास आदत थी। वह साधारण मजदूरों और किसानों की बातें बहुत ध्यान से सुनते थे। वह उनसे अक्सर मिला करते थे और उनकी सलाह पूछा करते थे। वह उनकी आवश्यकताओं और आशाओं से खूब अवगत थे।

१९२० के अंत और १९२१ के प्रारम्भ में लेनिन ने ग्रामों के प्रतिनिधियों—ख़ासकर मास्को, ताम्बोव और व्लादीमिर प्रदेशों के किसानों—से बहुत बातचीत की।

परिस्थिति का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करने तथा व्यापक पैमाने पर संबंधित मामलो को ध्यान मे लेने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने लेनिन के नेतृत्व मे एक नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण की योजना तैयार की। इस योजना का उद्देश्य युद्ध तथा उसके कारण आर्थिक तबाही से पैदा होनेवाली समस्याओ का समाधान करना और जल्द से जल्द अर्थव्यवस्था को बहाल करना था। परन्तु लेनिन की योजना अल्पकालिक समस्याओ तक सीमित नही थी। कार्यनीतिक समस्याओ और रणनीतिक समस्याओ मे गहरा संबध था। नयी शातिपूर्ण स्थितियो मे समाजवादी निर्माण किस प्रकार करना चाहिए? देश के दो मुख्य वर्गों यानी मजदूरो और किसानो मे अनुकूल और सामजस्यपूर्ण सबध किस आधार पर विकसित किये जा सकते है? उनकी एकजुटता को, जो सोवियत समाज की सफल प्रगति की जमानत है, क्योकर सुदृढ किया जा सकता है? लेनिन और कम्युनिस्ट पार्टी ने इन तमाम सवालो का एकमात्र सही जवाब प्रस्तुत किया।

यह आवश्यक था कि मजदूर वर्ग समाजवाद का निर्माण श्रमजीवी किसानो के साथ मिलकर करे। यह बात रूस मे खासकर महत्वपूर्ण थी, जहा आबादी का बडा भाग किसान थे। १३ करोड की कुल आबादी मे १० करोड से अधिक लोग गावो मे रहा करते थे।

अधिकाश किसानो के पास छोटे-छोटे खेत ही थे। उन दिनो सामूहिक फार्म बहुत कम थे। समाज मे किसानो का स्थान दो विरोधी पक्षो पर आधारित था। एक ओर वह औद्योगिक मजदूरो की ही भाति मेहनत की अपनी कमाई से जीवनयापन करता था। दूसरी ओर वह स्वामी भी था, जो अपनी सम्पत्ति मे वृद्धि करना चाहता था। जब तक उत्पादन साधनो के निजी स्वामित्व पर आधारित लघु-किसानी माल-उत्पादन खेती का रिवाज था, तब तक पूजीवाद के पुन सिर उठाने की सभावना मौजूद थी। इस वर्ग के भीतर धनी किसान (कुलक) थे। यह एक अलग दल था, जो उजरती श्रम से काम लेता था।

कम्युनिस्ट पार्टी ने कृषि के समाजवादी रूपातरण का, बडे-बडे सामूहिक फार्म कायम करने और मानव द्वारा मानव के शोषण को मिटाने का बीडा उठाया। लेकिन यह कोई ऐसा काम नही था, जो तुरत पूरा हो जाये। इसके लिए किसानो को पुन शिक्षित करने मे लम्बी तैयारी

और जमकर मेहनत करने की जरूरत थी। और आवश्यक शर्तें पूरी किये बिना इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। उस समय किसानों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करना जरूरी था और ऐसा करते समय छोटे पैमाने की निजी खेती को बराबर ध्यान में रखना था, जो उन दिनों खेती का प्रधान रूप था।

युद्ध के दौरान शहर और देहात का संबंध युद्ध की स्थिति से निर्धारित होता था। नवजात जनतंत्र चारों ओर शत्रुओं से घिरा था। उसका अस्तित्व ही खतरे में था। उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए किसान बड़ा त्याग करने और बेहद कष्ट उठाने को तैयार थे। उन्होंने मजदूर वर्ग और सेना के लिए अपनी सारी अतिरिक्त अनाज की हुक्मी वसूली को स्वीकार कर लिया था, क्योंकि उन्होंने किसानों की तथा अक्तूबर क्रांति के चलते उनको मिली भूमि की रक्षा की थी। इस प्रकार मजदूर वर्ग और किसानों की सैनिक-राजनीतिक एकजुटता का जन्म हुआ था।

मगर शांति के समय जब जमींदार वर्ग के वापस लौट आने का वास्तव में कोई खतरा नहीं रह गया, तो किसान अब उतना त्याग करने को तैयार नहीं थे। वे चाहते थे कि उन्हें अपनी अतिरिक्त पैदावार को वे जिस तरह चाहें बेचने की आजादी मिले। इस तरह एक नया कार्यभार – मजदूरों और किसानों में एक नये प्रकार की एकजुटता – आर्थिक एकजुटता स्थापित करने का कार्यभार सामने आया। यह आवश्यक हो गया कि शहर और देहात में एक आर्थिक संबंध स्थापित किया जाये और कृषि की उपज और औद्योगिक सामान के विनिमय का ऐसा उपाय किया जाये, जिससे मजदूर ही नहीं, किसान भी संतुष्ट हों।

इसी उद्देश्य से लेनिन ने सुझाव रखा कि खाद्यान्न की हुक्मी वसूली के बजाय जिन्सी टैक्स लगाया जाये। इसका मतलब यह था कि किसानों को आजादी थी कि अपनी अतिरिक्त पैदावार का एक भाग मंडी में बेचें और उसके दाम से अपनी जरूरत का सामान खरीदें। लेनिन का विचार था कि किसानों को प्रोत्साहन की जरूरत है: "छोटे किसान को, जब तक वह छोटा रहता है, एक प्रेरणा की, प्रोत्साहन की आवश्यकता है, जो उसके आर्थिक आधार यानी अलग-अलग छोटे फ़ार्म के अनुसार हो।"*

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३२, पृष्ठ १९३

और जब हुक्मी वसूली के बजाय जिन्सी टैक्स लगाया गया, तो किसानों को यह प्रोत्साहन मिल गया। इससे किसानो को अधिक उत्पादन करने का प्रोत्साहन मिला और इसकी बदौलत कृषि की बहाली और उन्नति अधिक तेजी से हुई। इस उन्नति से उद्योग की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मगर निजी व्यापार की आजादी मे एक खतरे का बीज भी निहित था—पूजीवाद के किसी हद तक पुनरुत्थान और कुलकों और निजी व्यापारियो की अधिक शक्ति के खतरे का। शहर और देहात के पूजीवादी तत्व अपनी आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को सुदृढ करने मे कोई कसर उठा नही रखेंगे और सच तो यह है कि उन्होंने उठा नही रखी। महत्वपूर्ण सवाल यह था कि इस संघर्ष मे विजयी कौन होगा।

देश और विदेश के पूजीवादी विचारको और स्वय कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर ढुलमुल तत्वो ने यह नतीजा निकालना शुरू किया कि नयी आर्थिक नीति का मतलब है पूजी के आगे घुटने टेक देना, समाजवादी निर्माण को त्याग देना, इत्यादि। लेकिन इन धारणाओ का न तो कोई सैद्धांतिक आधार था और न व्यावहारिक सबूत। पूजीवादी तत्वो को कुछ देर के लिए, सीमित कार्यकलाप का मौका देने का मतलब कदापि पूजीवाद को लौटाना नही था। पूजीवादी तत्व विजेताओ के रूप मे आगे बढकर अपनी शर्तें नही मनवाने लगे। सोवियत राज्य का स्थिति पर काबू था और रहा। राजनीतिक सत्ता और अर्थव्यवस्था के "निर्णायक स्थान" दोनो पहले ही की तरह उसके हाथ मे रहे। सर्वहारा का अधिनायकत्व अर्थव्यवस्था के निचले स्तर से उभरते पूजीवाद को सीमित और नियंत्रित करने मे सफल रहा।

भूमि, कारखाने, परिवहन और राजकीय वित्त—समाज निर्माण के ये सभी शक्तिशाली आर्थिक उत्तोलक सोवियत राज्य के हाथो मे रहे। इन उत्तोलको के जरिये अल्पायु राज्य सफलतापूर्वक पूजीवाद का मुकाबला कर सका और यह सुनिश्चित कर सका कि अंत मे उसको पछाडा और मिटाया जा सके।

नयी आर्थिक नीति की कल्पना एक व्यापक ऐतिहासिक परिदृश्य मे की गयी थी। पूजीवाद को दी गयी अस्थायी सुविधाओ के रूप मे पीछे कदम हटाना उस नीति का केवल एक पहलू था। इस अस्थायी प्रत्यावर्तन

ग्रौर शक्तियों को पुनः एकत्रित कर लेने के बाद समाजवादी तत्वों को सर्वतोमुखी ग्राक्रमण करना ग्रौर उद्योग, व्यापार ग्रौर कृपि में रूसी पूंजीवाद के विरुद्ध ग्रंतिम ग्रौर निर्णयात्मक लड़ाई लड़ना था। वास्तव में नयी ग्रार्थिक नीति के प्रथम वर्षों में लेनिन ने सहकारिता की ग्रपनी योजना तैयार की, जिसमें कृपि के समाजवादी पुनर्निर्माण की व्यवस्था थी।

नयी ग्रार्थिक नीति पूंजीवाद से समाजवाद के पूरे संक्रमणकाल के लिए थी। नयी ग्रार्थिक नीति के कर्णधारों ने सर्वहारा क्रांति की विजय के बाद वर्गीय शक्तियों के ग्रनुपात का सही ग्रन्दाज़ा लगाया ग्रौर छोटे किसानों की कृपि की ख़ास विशेपताग्रों का सही मूल्यांकन किया ग्रौर इस ग्राधार पर उन स्थितियों को सुनिश्चित किया, जो समाजवाद के निर्माण के लिए ग्रनिवार्य थीं।

वर्तमान पूंजीवादी तत्वों के विरुद्ध कारगर संघर्प करने के लिए कम्युनिस्टों को ग्रर्थतंत्र के सही ग्रौर कुशल संगठन ग्रौर व्यावसायिक लेन-देन का ढंग सीखना पड़ा। एक महत्वपूर्ण, मगर कठिन काम उद्योग की, ख़ासकर भारी उद्योग की, वहाली ग्रौर विस्तार करना था, क्योंकि इसके विना समाजवाद की विजय की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

१९२० में लेनिन के सुझाव पर रूस के विजलीकरण की एक योजना (गोएलरो) तैयार की गयी। इस योजना में, जो १०–१५ वर्प की ग्रवधि के लिए थी, कुल मिलाकर १५ लाख किलोवाट की क्षमता के ३० वड़े विजलीघर वनाने का प्रवंध था। योजना का ध्येय पूरा हो जाने पर रूस की विजली उत्पादन की क्षमता १९१३ की क्षमता से दस गुना वढ़ जानेवाली थी। गोएलरो योजना में केवल विजलीघरों के निर्माण का ही नहीं, वल्कि देश की ग्रर्थव्यवस्था की सभी शाखाग्रों के विस्तार ग्रौर सुधार का प्रवंध था, क्योंकि उसमें उद्योग ग्रौर कृपि दोनों में विजली के व्यापक प्रयोग की कल्पना की गयी थी। इस ग्रवधि में कुल ग्रौद्योगिक पैदावार के दो गुना होने की कल्पना की गयी थी।

विजलीकरण की यह योजना, जिसका सूत्रपात लेनिन ने किया था, दिसम्वर १९२० में सोवियतों की ग्राठवीं ग्रखिल रूसी कांग्रेस के सामने ग्रनुमोदन के लिए पेश की गयी। क्रजिजानोव्स्की ने कांग्रेस के प्रतिनिधियों के सामने योजना के मुख्य कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने भावी

बिजलीघरो, बिजली से चलनेवाले कारखानो का उल्लेख किया और ज्यो-ज्यो वह बोलते गये एक विशाल नकशे पर, जो बोलशोई थियेटर के मच पर लटका दिया गया था, एक-एक करके विभिन्न रगो की बत्तिया जगमगा उठी। ठडे हाल म बैठे प्रतिनिधियो के सामने भावी रूस का—समृद्ध, शक्तिशाली और सुखी रूस का—चित्र आ गया।

मार्च, १६२१ मे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की १० वी काग्रेस ने हुक्मी वसूली के बजाय "जिन्सी टैक्स लागू करने" का प्रस्ताव स्वीकार किया। इस प्रस्ताव के साथ युद्धकालीन कम्युनिज्म से नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण की शुरूआत हुई। इस प्रकार शातिपूर्ण स्थितियो मे काम की एक ठोस योजना, समाजवादी निर्माण को आगे बढाने की योजना का खाका तैयार हुआ।

लेकिन इससे पहले कि यह रचनात्मक कार्य पूरा किया जाये अभी कुछ और समस्याए थी, जिनका समाधान करना था। १६२१ मे भारी सूखा पडा। अप्रैल म ही सख्त गर्मी पडने लगी और तापमान जून के औसत तापमान के बराबर हो गया। मई से जून तक असाधारण रूप से सूखा, गर्म मौसम रहा। हर दिन मौसम के अनुमान और समाचारो से लोगो की परेशानी बढती जा रही थी।

देश पर एक नयी बडी विपत्ति आयी। सोवियत रूस के सभी मुख्य कृषि क्षेत्र जबर्दस्त सूखे का शिकार हुए। वोल्गा क्षेत्र मे, पूर्वी उक्रइना, उत्तरी काकेशिया, उराल, कजाखस्तान और मध्य रूस के कई प्रदेशो और जिलो मे फसले बर्बाद हो गयी। सूखाग्रस्त इलाको मे कोई ३ करोड लोग रहते थे।

बुरी फसल की इतनी व्यापक प्रतिक्रिया का कारण केवल प्रतिकूल मौसम की स्थिति ही नही बल्कि यह बात भी थी कि जिन इलाको मे सूखा पडा, वे सफेद गार्ड और हस्तक्षेपकारियो के विरुद्ध लडाई मे पहले ही तबाह हो चुके थे। इन्ही इलाको मे गृहयुद्ध का घमासान मचा था, यहीं से होकर युद्ध मोर्चे की रेखा गुजरती थी।

युद्ध के कारण सारे देश मे जो व्यापक आर्थिक अव्यवस्था और बडे पैमाने पर दरिद्रता फैली, उसका प्रभाव भी कम महत्वपूर्ण नही था। श्रम का अभाव, खेती के पशुओ, सामानो, बीजो की कमी, खराब किस्म का बीज तथा अत्यावश्यक खाद का बिलकुल अभाव—इन सब बातो का

भूखे बच्चों को खाना दिया जा रहा है। समारा। १६२१

नतीजा यह हुआ कि किसान प्राकृतिक प्रकोप का सामना करने की स्थिति में नहीं थे।

सूखाग्रस्त गुबेर्नियाओं में लोगों को जैसी मुसीबत उठानी पड़ी, उसकी कल्पना भी कठिन है। अनेक जिलों में अधिकांश किसान भूखों मर रहे थे।

फलस्वरूप कृषि को पुनः अपने पैरों पर खड़ा करने का काम पहले के अनुमान से कहीं ज्यादा कठिन निकला। सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण काम भूखों मरनेवाले किसानों को समय रहते बचाना और सूखाग्रस्त इलाक़ों में खाद्यान्न और बोआई के लिए बीज पहुंचाना था।

लोग कमर कसकर स्थिति का मुक़ाबला करने को तैयार हुए। अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्षमंडल ने "रूसी जनतंत्र के सभी नागरिकों के नाम" अपनी अपील में "इस अभियान के लिए सभी शक्तियों को जुटाने" का आवाहन किया।

भूखों मरनेवालों की सहायता के लिए केन्द्रीय समिति ने, जिसके प्रधान अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष

मिखाईल इवानोविच कालीनिन थे, भुखमरी से बचाने का कार्य शुरू किया।

देश के सभी भागो से क्षतिग्रस्त इलाको मे खाद्यान्न और निधि भेजी गयी। स्वेच्छापूर्वक चन्दे से ही लगभग १,७६,००० टन खाद्यान्न और भारी रकमे इकट्ठा हो गयी। राज्य ने क्षतिग्रस्त इलाको मे हजारो टन रोटी, आलू तथा अन्य खाद्य पदार्थ भेजे, मवेशी के लिए चारा पहुचाया और १ करोड २५ लाख आदमियो के लिए ३० हजार भोजनालय खोले।

विदेशो से भी बडी मात्रा मे सहायता आयी। ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमरीका, फास, जर्मनी, इटली तथा अनेक अन्य देशो मे श्रमजीवी जनता ने वोल्गा क्षेत्र के भूखे किसानो को खाद्य पदार्थ, औषधि और कपडा भेजने के लिए निधि इक्ट्ठा की। उन्होने सोवियत रूस मे भूखो की अन्तर्राष्ट्रीय सहायता का सगठन करने के लिए एक समिति की स्थापना की। सोवियत जनगण ने इस भ्रातृत्वपूर्ण सहायता का बडी कृतज्ञता से अभिनन्दन किया। सोवियतो की नवी अखिल रूसी काग्रेस (दिसम्बर १९२१) ने घोषणा की कि "रूस की श्रमजीवी जनता यूरोप और अमरीका के मजदूरो के श्रम के घट्ठदार हाथो द्वारा *दी गयी भ्रातृत्वपूर्ण सहायता को विशेष रूप से मूल्यवान मानती है।* काग्रेस की नजरो मे यह सहायता मेहनतकशो की सच्ची अतर्राष्ट्रीय एकजुटता की अभिव्यक्ति है।"

अन्य वैदेशिक सगठनो जैसे रेड क्रास और क्वैकरो ने भी सहायता की। प्रसिद्ध नार्वेजियन ध्रुवीय गवेषक फ़ित्योफ नानसेन ने रूस के लिए अकालग्रस्तो की सहायता के लिए समिति की स्थापना की। इस समिति ने बाद मे ८० हजार टन खाद्य पदार्थ भेजा। कृतज्ञता तथा प्रशसा के तौर पर नानसेन को मास्को सोवियत का सम्मानित सदस्य बना दिया गया।

एक अमरीकी खैराती सगठन—"अमरीकी सहायता प्रशासन"—ने भी बडी मात्रा मे खाद्य पदार्थ रूस भेजा। लेकिन "अमरीकी सहायता प्रशासन" ने टीनबद खाद्य और आटे को केवल अकालग्रस्तो की सहायता के लिए नही, बल्कि सोवियत सत्ता के खिलाफ सघर्ष के लिए भी इस्तेमाल किया। "अमरीकी सहायता प्रशासन" के प्रतिनिधियो ने विशेष प्रयास करके वितरण करनेवाली प्रशासन की सस्थाओ मे प्रतिक्रातिकारी तत्वो को शामिल किया, जो सोवियत-विरोधी कार्यकलाप मे लगे।

१६२१ की गर्मियों के अंत में देश के सामने काम था सूखाग्रस्त इलाक़ों में जाड़े की बोग्राई के लिए बीज मुहैया करना। मगर राज्य के पास बीज का कोई भंडार नहीं था। मजबूरन इसे नयी फ़सल का अनाज वोल्गा के गांवों में इस काम के लिए भेजना पड़ा।

अगस्त में "प्राव्दा" के एक अंक में बड़े अक्षरों में यह शीर्षक छपा: "साथी किसानो! अपना जिन्सी टैक्स अदा करो, वोल्गा क्षेत्र के खेत रोपण की प्रतीक्षा कर रहे हैं! बीज में देर का मतलब है विनाश और मृत्यु!" इस अपील से ही प्रकट होता है कि उन दिनों स्थिति कितनी नाजुक थी।

सूखाग्रस्त इलाक़ों में २ लाख २४ हज़ार टन अनाज समय पर पहुंच गया। इस प्रकार किसानों को बड़ी आवश्यक सहायता मिली और जाड़े में साधारणतया जितनी भूमि पर खेती होती थी, उसके तीन-चौथाई को रोप लिया गया।

लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि ख़राब फ़सल के परिणामों पर क़ाबू पाने के प्रयत्नों में किसी प्रकार की ढिलाई की जा सकती थी। दूसरा काम था वसंत रोपण के लिए अनाज के बीज मुहैया करना। इन तूफ़ानी अभियान में भी सफलता हुई। सूखाग्रस्त इलाक़ों के किसानों को वसंत रोपण के लिए ६,५६,००० टन बीज मिल गया।

१६२२ में वसंत रोपण अच्छे ढंग से बड़े उत्साह के साथ किया गया। इन ग्रामीण क्षेत्रों के समाचारों से यह ज़ाहिर होता था कि किसानों ने खेतों में बड़ी लगन से काम किया, बीजों के वितरण के लिए वे बहुत कृतज्ञ हैं और रोपण का काम बहुत जल्दी और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अनिवार्यतः युद्ध और दरिद्रता के दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों का, जिनकी तीव्रता १६२१ की फ़सल की बर्बादी से बहुत बढ़ गयी थी, बहुत गहरा असर पड़ा। घोड़े और बैल की बड़ी कमी थी और खेती के जो साधन बर्बाद हो चुके थे, उनकी तत्काल क्षतिपूर्ति संभव नहीं थी। ऊपर बताया गया है कि राज्य ने बीज मुहैया करके किसानों की निर्णायक सहायता की। लेकिन ज़ाहिर है कि इस बीज से किसानों की सारी ज़रूरतें पूरी नहीं हो सकती थीं। इस का परिणाम यह हुआ कि १६२२ में जोत की ज़मीन में और कमी हुई।

१६२२ मे जब फसल का समय आया, तो लोग मौसम की भविष्यवाणी डर-डर कर सुनते और भयभीत थे कि कही कोई नया प्राकृतिक प्रकोप न टूट पडे। लेकिन उनका डर निराधार सिद्ध हुआ। १६२२ का साल अच्छा था और अनाज की कुल पैदावार ३ करोड ५२ लाख टन से अधिक हुई यानी पिछले दो वर्षों से ज्यादा अच्छी फ़सल हुई।

जब १६२२ मे जाडे की बोआई का समय आया, तो सारे देश म काश्त की जमीन का विस्तार किया गया। यह सोवियत कृषि के विकास मे एक मोड-विन्दु था। इस समय से खेती का पुनरुत्थान निरन्तर सफलता-पूर्वक होता रहा। सबसे कठिन लडाई जीती जा चुकी थी।

अकाल तथा उसके परिणामो के विरुद्ध अभियान बहुत महत्वपूर्ण था। बहुत बडे पैमाने पर, राज्य सस्थाओ और सोवियत जनगण द्वारा सुसगठित सहायता कार्य की बदौलत करोडो आदमियो को भुखमरी के चगुल से और ग्रामीण रूस के विशाल क्षेत्रो को तबाही और बर्बादी से बचा लिया गया था।

उस समय ऐसा लगा होगा कि अभूतपूर्व तबाही और उद्योग तथा परिवहन की दुर्व्यवस्था के कारण कृषि को बर्बादी से बचाना सभव नही होगा। परन्तु सोवियत सत्ता ने सफलतापूर्वक सभी उपलब्ध साधनो को जुटा लिया और एक अत्यत समन्वित योजना तैयार करके उन्हे इस अतिमहत्वपूर्ण और सर्वप्रधान कार्य को पूरा करने की खातिर एक क्षेत्र मे सकेद्रित किया।

इस प्रकार सोवियत राज्य के सामने जो एक बेहद कठिन बाधा उपस्थित हो गयी थी, उसपर तमाम जनगण के अथक प्रयासो के फलस्वरूप सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया।

अर्थव्यवस्था की सफलतापूर्वक बहाली

नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण के परिणाम शीघ्र अधिकाधिक स्पष्टता के साथ सामने आने लगे। कृषि के क्षेत्र मे १६२३ से निरन्तर विस्तार शुरू हुआ। उस साल फसल २,२६,५०० हजार एकड जमीन पर लगायी गयी थी, जिसका मतलब यह है कि गत वर्ष की तुलना मे

३४,६०० हज़ार एकड़ की वृद्धि हुई थी। अगले दो वर्षों यानी १६२४ और १६२५ में सालाना २४,८०० हज़ार से अधिक एकड़ की वृद्धि हुई। १६२५ तक कृषि का क्षेत्र लगभग युद्धपूर्व स्तर पर पहुंच गया था।

सभी बुनियादी फ़सलें अधिक बोयी जाने लगी थीं और १६२५ में कपास और चुक़न्दर की कुल उपज युद्धपूर्व के लगभग बराबर थी। आलू की रोपाई में भी बराबर विस्तार और उपज में वृद्धि हुई। १६२५ में इसकी पैदावार युद्धपूर्व की तुलना में ५० प्रतिशत अधिक थी। सूरजमुखी की पैदावार में वृद्धि इससे भी अधिक बड़ी थी।

पशु पालन की स्थिति में भी बड़ी तेज़ी से सुधार हुआ और १६२५ तक पिछले तमाम वर्षों की क्षतिपूर्ति हो गयी थी।

इस तरह कितनी ही कठिनाइयों के बावजूद कृषि की बहाली १६२५ तक लगभग पूरी हो चुकी थी। यद्यपि अभी बहुतेरी विषमताओं को दूर करना और कुछ पिछड़ेपन का उन्मूलन करना बाक़ी था, मगर मुख्य उद्देश्य पूरे हो चुके थे।

उद्योग की बहाली में भी सफलतापूर्वक प्रगति हुई। १६२१–१६२२ में ही कपड़े, जूते, माचिस, साबुन, काग़ज़ तथा सार्वजनिक उपभोग की अन्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि हुई। कोयले की पैदावार भी, ख़ासकर मुख्य कोयला-खनन केन्द्र–दोनेत्स बेसिन में बढ़ी। उद्योग के अन्य क्षेत्रों जैसे तेल निष्कासन (बाकू तेल क्षेत्र) और कृषि-संबंधी मशीनों के उत्पादन में ख़ासा सुधार हुआ।

परिवहन की व्यवस्था भी शीघ्र ही सामान्य रूप से काम करने लगी। १६२२ के अंत तक रेलवे की मरम्मत का बड़ा काम पूरा हो चुका था और सभी लाइनें फिर से चालू हो गयी थीं।

गृहयुद्ध के वर्षों की तरह ही इन वर्षों में भी मज़दूर वर्ग ने अपने कार्यभारों के प्रति बड़े त्याग और तत्परता का सबूत दिया। एक बार फिर उन्होंने छुट्टी के दिनों में बिना मुआवज़ा काम करने, ईंधन तैयार करने, मशीनों की मरम्मत करने आदि के लिए स्वेच्छापूर्वक श्रमदान किया।

मज़दूर वर्ग के सदस्यों ने उद्योग में नये आन्दोलन भी शुरू किये। १६२१ में पहली बार दोनेत्स बेसिन, उराल, पेत्रोग्राद (लेनिनग्राद), तूला और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में अग्रणी मज़दूरों के दस्ते बने। इन अग्रणी दस्तों के सदस्यों ने विशेष रूप से उच्च श्रम की उत्पादन क्षमता

स्थापित की, उत्पादन के नवीकरण सबधी सुझाव पेश किये, आदि। इस दशक के उत्तरार्द्ध मे यह आन्दोलन बहुत व्यापक हो गया और अधिकाश मजदूर इसमे भाग लेने लगे।

१६२१–१६२२ मे कारखानो मे पहली बार उत्पादन सबधी मामलो पर सभाए हुई, जिनमे मजदूरो ने उत्पादन सबधी महत्वपूर्ण समस्याओ के बारे मे फैसले किये, त्रुटियो की ओर ध्यान दिलाया और श्रम के सगठन मे सुधार की नयी सम्भावनाओ की खोज लगायी। १६२५ के अत तक उद्योग की सभी शाखाओ मे उत्पादन-सभाए नियमित रूप से होने लगी थी।

इस अवधि मे मजदूर वर्ग की सख्या भी तेज़ी से बढ़ रही थी। इसका कारण एक तो यह था कि खाद्य पदार्थों के अभाव के दिनो मे जो मजदूर गावो मे काम करने चले गये थे, वे शहरो मे वापस आ गये, और दूसरे, नौजवानो की एक नयी पीढी और कल के किसान भी मजदूरो की पाति मे आकर मिलने लगे थे।

१६२४ के शुरू मे मुद्रा सुधार किया गया, जिससे मुद्रा स्फीति का अत हुआ और वित्तीय व्यवस्था सुदृढ और स्थिर हो गयी।

१६२६ के *प्रारम्भ तक उद्योग की बहाली का काम मुख्यतया पूरा* हो चुका था। बड़े पैमाने के उद्योग मे कुल पैदावार १६१३ के स्तर से अधिक हो गयी थी (१०८ प्रतिशत), और कुछ शाखाओ मे (टर्बाइन, बायलर और मशीन टूल का उत्पादन) यह स्थिति एक बरस पहले ही हो चुकी थी। बिजली शक्ति के उत्पादन मे भी शानदार प्रगति हुई। गोएलरो योजना के अनुसार कुछ बिजलीघर—कशीरा और पेत्रोग्राद के बिजलीघर १६२२ मे, कीजेलोव, नीज्नी नोव्गोरोद और शतूरा के बिजलीघर १६२४–१६२५ मे—चालू होने लगे थे। प्रथम बड़े बिजलीघर का निर्माण १६२६ मे पूरा हुआ।

लेकिन उद्योग की कुछ अन्य शाखाएं अभी भी बहुत पीछे थे। उदाहरण के लिए कच्चे लोहे की पैदावार १६२० की तुलना मे १६२६ मे १६ गुना अधिक हो गयी थी, मगर युद्धपूर्व के मुकाबले मे केवल ५२ प्रतिशत थी।

तरह-तरह की बाधाओ के बावजूद अर्थव्यवस्था, जिसे युद्ध के वर्षों मे बडी क्षति पहुची थी, अत्यत कम समय मे पुन अपने पैरो पर खडा हो

चुका था। सोवियत जनगण की इस महान उपलब्धि का मतलब यह था कि देश अब अपने विकास की नयी मंजिल में प्रवेश कर सकता था।

समाजवादी निर्माण के लिए लेनिन की योजना

गृहयुद्ध के थोड़े ही दिनों बाद लेनिन ने समाजवादी निर्माण की एक योजना तैयार कर ली थी। इसमें क्रांतिकारी मार्क्सवादी सिद्धांत को सृजनात्मक ढंग से विकसित किया गया था, क्रांति के अनुभव का, प्रारम्भिक समाजवादी परिवर्तनों और एक नयी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया था। लेनिन की कृतियों में, जो १९२२ के अंत और १९२३ के प्रारम्भ में लिखी गयी थीं, समाजवाद की विजय के लिए संघर्ष का सामंजस्यपूर्ण और स्पष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था।

समाजवाद के निर्माण के लिए लेनिन की योजना के तीन मुख्य अंगभूत तत्व हैं—उद्योगीकरण, कृषि-सहकारिता और सांस्कृतिक क्रांति।

समाजवादी समाज के पास एक मजबूत और विश्वसनीय भौतिक और तकनीकी आधार का होना जरूरी है और खुद इसके लिए उद्योग और ख़ासकर भारी उद्योग का सर्वतोमुखी विकास आवश्यक है। इसी लिए लेनिन ने उद्योग को विकसित करने और नये कारख़ानों तथा बिजलीघरों के निर्माण पर ख़ास तौर पर जोर दिया। यह रूस जैसे अपेक्षाकृत पिछड़े देश में एक कठिन और पेचीदा काम था। लेनिन ने लोगों को सख़्त किफ़ायत करने और इस प्रकार जमा किये गये धन को उद्योग की बहाली और विस्तार के लिए उपयोग करने का आवाहन किया।

कृषि के संबंध में लेनिन ने इस बात की गुंजाइश रखी कि सोवियत राज्य किसानों को धीरे-धीरे सहकारिता की ओर प्रोत्साहित करेगा और यह कि किसानों को, जिन्होंने शुरू में सहकारिता के बहुत सादा रूप (बिक्री, सप्लाई, क़र्ज़ आदि की सहकारी संस्थाएं) अपनाये थे, शीघ्र स्वयं अपने अनुभव से सहकारिता प्रणाली के फ़ायदों का यक़ीन हो जायेगा और वे समझ लेंगे कि अलग-अलग किसान, जिनके पास अपने छोटे से खेत के सिवा और कुछ नहीं है, स्वयं अपने आप अपनी खेती को

लाभदायक नही बना सकेगे, लेकिन अगर वे आपस मे मिल जायें, समूहीकरण कर ले, तो जल्दी ही समृद्ध हो जायेंगे। सहकारिता के निम्न, सादा रूपो से उच्चतर रूपो यानी उत्पादको की सहकारी सस्थाओ तक, जिनमे भूमि, भारवाहक पशु, और खेती के मूल साधन का भी स्वामित्व साझे मे हो, सक्रमण को सहज बनाने के लिए योजनाए तैयार की गयी। सोवियत व्यवस्था के अन्तर्गत सहकारिता से किसानो के व्यक्तिगत और सार्वजनिक हितो को एक ही साथ बढावा देना सम्भव हो गया।

लेनिन ने सास्कृतिक पिछडेपन को दूर करने और व्यापक पैमाने पर सास्कृतिक क्राति को अमल मे लाने के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया। इसकी शुरूआत अतीत की भयकर विरासत – निरक्षरता – के उन्मूलन से की गयी थी और उसमे पुस्तकालयो और क्लबो के निर्माण के लिए साधन की व्यवस्था तथा बडे पैमाने पर नये बुद्धिजीवियो के प्रशिक्षण और विज्ञान और कला की भव्य प्रगति का उल्लेख है।

लेनिन को पूरा अन्दाजा था कि आगे आनेवाले वर्षों मे क्या-क्या कठिनाइया और पेचीदगिया उत्पन्न होगी। फिर भी उनका अटल विश्वास था कि जिन कामो का उन दिनो बीडा उठाया जा रहा था, उन्हे कामयाबी के साथ पूरा किया जा सकता है। वह जानते थे कि इस विजय को सुनिश्चित करनेवाली निर्णायक शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी है, जिसकी जडें जनगण मे मजबूती से जमी हुई है। इसी लिए लेनिन ने अपील की कि पार्टी की एकता को कायम रखने के लिए पूरी कोशिश की जाये, सगठित अनुशासन का सख्ती से पालन किया जाये और इस प्रकार पार्टी पक्तियो की एकजुटता को बनाये रखा जाये।

* * *

मार्च, १९२३ मे लेनिन बहुत बीमार हो गये। अभी वह ५३ वर्ष के भी नही थे, मगर बरसो निर्वासन मे अभाव का जीवन और गुप्त काम, शत्रु की गोलियो के जख्म का असर और हमेशा ही काम का जबरदस्त भार अब रग लाने लगा था।

२१ जनवरी, १९२४ को व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की मृत्यु हो गयी। उनकी मौत ने दुनिया को स्तब्ध कर दिया। उनके दुश्मन भी उनकी असाधारण प्रतिभा और विश्व इतिहास मे उनकी महान भूमिका
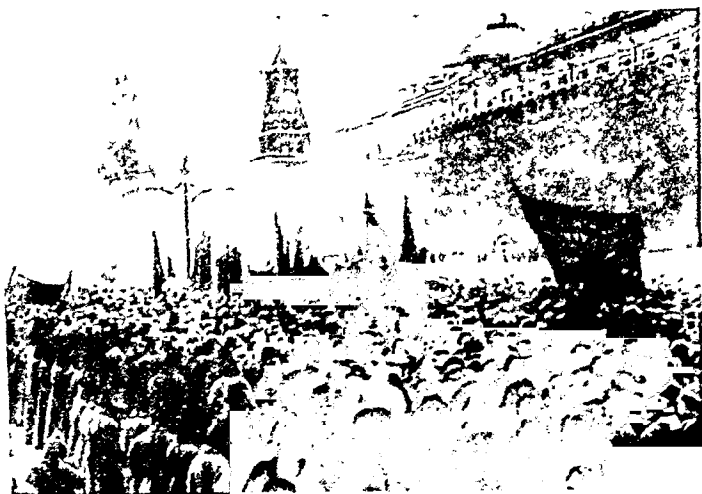
लेनिन का जनाज़ा। लाल चौक। जनवरी १९२४

से इनकार नहीं कर सकते थे। लेनिन का नाम मानवजाति के इतिहास मे एक नये युग के प्रादुर्भाव—पूंजीवाद के पतन और समाजवाद और कम्युनिज्म के उत्थान—से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। लेनिन के रूप में मज़दूर वर्ग को इतिहास के एक निर्णायक मोड़ पर एक प्रतिभाशाली नेता मिल गया था।

लेनिन की मौत से मेहनतकश जनता को अपार दुख पहुंचा। परन्तु वह घबराहट भरी निराशा का शिकार नहीं हुई। मज़दूर, किसान और बुद्धिजीवी जानते थे कि लेनिन का लक्ष्य अमर है और कम्युनिस्ट पार्टी इस महान नेता के बतलाये हुए मार्ग पर जनता का नेतृत्व करती रहेगी।

उन शोकपूर्ण दिनों में जब सोवियत जनगण लेनिन से विदाई ले रहे थे, कम्युनिस्ट पार्टी और जनगण की एकता बहुत स्पष्ट रूप में सामने आयी। इस एकता का प्रभावशाली इज़हार कम्युनिस्ट पार्टी में सामूहिक रूप से मेहनतकशों के शामिल होने में हुआ। लेनिन की मृत्यु के दूसरे ही दिन हज़ारों मज़दूरों ने सदस्यता के लिए दरख़ास्तें दीं। "गोसज़नाक"

की मास्को फैक्टरी के मजदूरो ने घोषणा की "यह कोई सयोग की बात नही है कि हम रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की पक्तियो म शामिल हो रहे है। बरसो से हमम से दर्जनो आदमी कम्युनिस्टो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रहे है और अब हम पार्टी म शामिल हो रहे है किसी विशेषाधिकार की खातिर नही, बल्कि उस क्षति को पूरा करने के लिए, जो हमारी महान सर्वहारा पार्टी को अभी उठानी पडी है।'

यह आन्दोलन लेनिन पार्टी भर्ती-अभियान के नाम स प्रसिद्ध है। इसके जरिये मजदूर वर्ग के सर्वोत्तम प्रतिनिधियो मे से २,४०,००० नये सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी म शामिल हुए। इसी क साथ १,७०,००० लडके-लडकिया रूसी नौजवान कम्युनिस्ट लीग में (जो अब सोवियत सघ की लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग या कोम्सोमोल के नाम से प्रसिद्ध है) शामिल हुए।

सामाजिक-राजनीतिक जीवन

अर्थव्यवस्था को पुन उसके पैरो पर खडा करने के साथ ही सोवियत व्यवस्था को भी सुदृढ बनाया जा रहा था। नयी आर्थिक नीति के जारी होते ही किसानो के रुख म एकाएक परिवर्तन हुआ। किसानो का मुख्य भाग शीघ्र ही सोवियत सत्ता का मजबूती से और दृढतापूर्वक समर्थन करने लगा। उसने अपनी नयी स्थिति पर अपना सतोष प्रकट किया। कुलको की बगावतो का जोर घटने लगा। सोवियत-विरोधी लूट-मार करनेवाले गिरोहो का उस समय तक सफाया कर दिया गया था। लेकिन तब भी समय-समय पर तोड-फोड करनेवालो के इक्का-दुक्का दलो का बाहर से देश के भीतर घुस आने का सिलसिला जारी रहा।

आर्थिक बहाली और उसके बाद मजदूरो और किसानो के जीवन स्तर मे सुधार की बदौलत उनके सामाजिक-राजनीतिक कार्यकलाप मे वृद्धि हुई। सोवियतो तथा दूसरे अनेक सार्वजनिक सगठनो के काम में करोडो आदमी शरीक होने लगे। लाखो मेहनतकशो ने सोवियतो की जनतत्रीय, गुबेर्नियाई, उयेज्द और वोलोस्त काग्रेसो के प्रतिनिधि, तथा सभी स्तरो पर सोवियतो से सबधित समितियो के सदस्यो की है- से सोवियतो के काम मे भाग लिया। मेहनतकशो के जन सम्मे-

आयोजन किया गया, जिन्हें मज़दूरों-किसानों का ग़ैर-पार्टी सम्मेलन कहा जाता था। अधिकाधिक स्त्रियों को राजकीय, सहकारी, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक संगठनों में काम पर लगाया गया। १६२३ के अंत में लगभग पांच लाख स्त्रियां सार्वजनिक कामों में सक्रिय भाग ले रही थीं। ट्रेड-यूनियनों, सहकारी संस्थाओं तथा कोम्सोमोल के सक्रिय सदस्यों की संख्या अधिकाधिक होती जा रही थी।

उसी ज़माने में मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी निम्नपूंजीवादी पार्टियों का हमेशा के लिए विगठन हो गया। ये पार्टियां अक्तूबर क्रांति के समय और उसके कुछ महीने पहले ही पूंजीपति वर्ग के साथ समझौता करने की अपनी तत्परता के कारण जनता का विश्वास खोने लगी थीं। गृहयुद्ध के दिनों में हस्तक्षेपकारियों और सफ़ेद गार्डों के साथ उनके जा मिलने से वे अपने असली रंग में सामने आ गयीं और जाहिर हो गया कि वे पूंजीवादी व्यवस्था की समर्थक हैं। गृहयुद्ध के बाद सोवियत सत्ता की सफलताओं और कम्युनिस्ट पार्टी के परचम तले जनता के जमा हो जाने से रहे सहे समाजवादी-क्रांतिकारी और मेन्शेविक संगठनों में कोई दम नहीं रहा और अपने आप उनका विगठन हो गया।

तीसरे दशक के मध्य में ही रूस में निम्नपूंजीवादी राजनीतिक पार्टियों का संगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में कोई अस्तित्व नहीं रह गया था। उनका अस्तित्व कहीं कुछ था तो गुप्त संगठनों के रूप में, जिनको जनता का कोई समर्थन नहीं था।

सभी पूंजीवादी और निम्नपूंजीवादी पार्टियों का विगठन और सफ़ाया हो जाने के बाद सोवियत संघ में एक ही पार्टी—रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक)* रह गयी। इसकी नीति की सत्यता लाखों मेहनतकशों के अनुभव से प्रमानित हो चुकी थी। उन्होंने देख और समझ लिया था कि यही एक पार्टी उनके हितों की रक्षा करती है और स्वतंत्रता और समृद्धि का रास्ता बतलाती है। इसी लिए उन्होंने इसी एक पार्टी का समर्थन

---

*कम्युनिस्ट पार्टी का यह आधिकारिक नाम १६१८ के वसंत से १६२५ तक था। १६२५ से १६५२ तक उसका नाम था अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) और १६५२ से उसका नाम हो गया सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी।

किया और अन्य सभी पार्टियो से मुह फेर लिया, जिन्होने नारे तो बहुत शानदार लगाये थे, मगर वास्तव मे जनता के हितो से गद्दारी की थी।

नयी आर्थिक नीति के प्रथम वर्षो मे शहर और देहात मे दोनो ही जगह पूजीवादी तत्वो की सख्या और कार्यकलाप मे कुछ वृद्धि हुई। शहरो मे नौपूजीपतियो की एक परत उत्पन्न हुई (निजी व्यापारी, रेस्तोरा और छोटे उद्योग-धन्धो के मालिक अथवा ठेकेदार आदि)। इसी दौरान मे देहातो मे एक ग्रामीण "पूजीपति वर्ग" (कुलक) की उत्पत्ति होने लगी थी। इस कारण पूजीवादी विचारधारा मे भी कुछ नयी जान आयी। पूजीवादी बुद्धिजीवियो मे यह धारणा पैदा हुई कि नयी आर्थिक नीति का मतलब यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी ने समाजवादी समाज के निर्माण का त्याग किया और आखिरकार उसे पूजीवाद की ओर लौटना पड रहा है। ये धारणाए खुले और स्पष्ट रूप मे उस सिद्धात मे व्यक्त हुई, जिसने अपना नाम लेखो के उस सकलन "स्मेना वेख" से लिया जिसे १९२१ मे *प्रवासी रूसियो ने प्राग मे प्रकाशित किया था। इस सिद्धात के अनुयायियो ने घोषणा की कि नयी आर्थिक नीति का रूस थोडे ही दिनो* मे पूजीवादी रूस बन जायेगा। इस उद्देश्य को सामने रखकर उन्होने माग की कि निजी उद्यमकर्ता को पूरी आजादी प्रदान की जाये, भूमि का राष्ट्रीयकरण मसूख किया जाये, इत्यादी।

कम्युनिस्ट पार्टी ने बिना किसी लगी-लिपटी के इन पूजीवादी धारणाओ को बेनकाब किया। लेनिन के भाषणो तथा पार्टी के प्रस्तावो मे इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि पूजीवादी विचारधारा की हर अभिव्यक्ति के खिलाफ अडिग सघर्ष करना कम्युनिस्टो का कर्तव्य है। बार-बार कम्युनिस्टो ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि नयी आर्थिक नीति देश को पूजीवाद नही, बल्कि समाजवाद की दिशा मे ले जा रही है। लेनिन ने यह बात मास्को सोवियत के सपूर्ण अधिवेशन मे २० नवम्बर, १९२२ के अपने भाषण मे बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी। उन्होने कहा था कि "नयी आर्थिक नीति का रूस समाजवादी रूस बनेगा।"*

उस समय स्वय कम्युनिस्ट पार्टी भी कठिन, तनावपूर्ण दौर से गुजर

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३३, पृष्ठ ४०५

रही थी। कुछ प्रमुख पार्टी कार्यकर्ता डगमगाने लगे तथा उन्होंने बहुमत की लेनिनवादी राजनीतिक लाइन के खिलाफ़ बोलना शुरू किया। इन विरोधी तत्वों के प्रधान त्रोत्स्की थे। उनको और उनके समर्थकों को विश्वास नहीं था कि बिना विश्व क्रांति के सोवियत संघ में समाजवाद विजयी हो सकेगा। उन्होंने मजदूर वर्ग और किसानों की एकजुटता का भी समर्थन नहीं किया, क्योंकि वे किसानों को शुद्ध प्रतिक्रांतिकारी शक्ति मानते थे। त्रोत्स्की ने पार्टी एकता के विरुद्ध बातें कीं। उनकी कोशिश थी कि विरोधी गुटों और गिरोहों को कार्यकलाप का पूरा अवसर मिले। १९२३ के वसंत में पार्टीव्यापी बहस में त्रोत्स्कीवादियों को बुरी तरह शिकस्त हुई। इस बहस में केवल १.३ प्रतिशत सदस्यों ने उनके समर्थन में वोट दिया।

जनवरी, १९२४ में १३ वें पार्टी सम्मेलन ने इस बात की पुष्टि की कि त्रोत्स्कीवादी विरोध-पक्ष "बोल्शेविकवाद में संशोधन का प्रयास मात्र और लेनिनवाद का स्पष्ट त्याग ही नहीं, बल्कि असंदिग्ध रूप से एक निम्नपूंजीवादी भटकाव है।"

त्रोत्स्कीवाद के खिलाफ़ अभियान में एक मुख्य भूमिका स्तालिन ने अदा की, जो १९२२ के वसंत में कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव बन गये थे।

लेकिन इस शिकस्त के बावजूद लेनिनवाद-विरोधी तत्व अभी सक्रिय थे। १९२५ में तथाकथित "नया विरोध-पक्ष" सामने आया, जिसका नेतृत्व जिनोव्येव और कामेनेव कर रहे थे। "नये विरोध-पक्ष" का कार्यक्रम मुख्यतया वही था, जो त्रोत्स्कीवादियों का था, जिन्हें सोवियत संघ में समाजवाद की विजय पर विश्वास नहीं था। पार्टी ने इस विरोध-पक्ष की निन्दा की और केन्द्रीय समिति के लेनिनवादी मार्ग का समर्थन किया। उस दौर के पार्टी प्रस्तावों में सोवियत संघ में समाजवाद की विजय की सम्भावना का स्पष्ट और साफ़ शब्दों में निरूपण किया गया है।

सोवियत संघ का संस्थापन

३० दिसम्बर, १९२२ को सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की सोवियतों की प्रथम कांग्रेस के २,२१५ प्रतिनिधि मास्को के बोल्शोई थियेटर में जमा हुए। उनमें से सबसे वृद्ध प्रतिनिधि स्मिदोविच ने कांग्रेस

का उद्घाटन किया। इसपर तालियों की गड़गड़ाहट "इंटरनेशनल" की धुन में डूब गयी। गान के शब्द विभिन्न भाषाओं में थे, मगर उसकी धुन और उत्साह एक ही था।

वह दिन सोवियत इतिहास में हमेशा स्मरणीय रहेगा, क्योंकि उसी रोज, ३० दिसम्बर १९२२ को एक बहुजातीय राज्य, सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ का निर्माण हुआ।

जैसा कि पिछले अध्यायों में उल्लेख किया गया भूतपूर्व रूसी साम्राज्य की धरती पर अक्तूबर क्रांति के बाद, जिसने जातीय उत्पीड़न की जंजीरों को तोड़ दिया था, अनेक जातीय जनतंत्रों की स्थापना हुई थी। करोड़ों उपेक्षित लोग, जो सभी अधिकारों से वंचित थे, अपने जातीय सोवियत राज्यत्व की स्थापना कर रहे थे। लेकिन इसका कदापि यह मतलब नहीं था कि इस कारण सारा देश कमजोर या विगठित हुआ। इसके विपरीत नवजात जातीय जनतंत्रों ने संघ में शामिल होने की प्रबल इच्छा प्रकट की। रूस की जातियों के आत्मनिर्णय और इसी के साथ-साथ सोवियत सत्ता और जातीय राज्यत्व की स्थापना ने प्रत्येक जाति के विकास और प्रगति के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा की तथा मजबूत और स्थायी एकता की जमानतें मुहैया की,। अतीत में "एकता" का आधार दम घोंटनेवाला उत्पीड़न था, मगर नयी प्रकार की एकता स्वेच्छापूर्वक ढंग से क़ायम हुई, वह जातियों की स्वयं अपनी आकांक्षाओं की अभिव्यंजना थी, क्योंकि वे अपनी शक्तियों को एकत्रित करने का जबर्दस्त महत्व समझ गयी थीं और एक होना चाहती थीं।

हस्तक्षेपकारियों और सफेद गार्डों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान सभी सोवियत जनतंत्रों ने क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करने के लिए एक दूसरे का साथ दिया। सोवियत जनतंत्रों की सैनिक एकता लड़ाई की आग में गढ़ी गयी और पक्की बनायी गयी थी और गृहयुद्ध के बाद इस एकीकरण की जरूरत और भी ज्यादा महसूस की जाने लगी थी। अगर वे एक दूसरे की सहायता करें और हाथ में हाथ देकर काम करें, तभी बर्बाद खेतों में पुन: बीज बोया जा सकेगा, धमन-भट्ठियों और जंग लगी मशीन टूलों को फिर से चालू किया जा सकेगा, केवल तभी वे समाजवादी निर्माण के महान कार्यों से निबट सकेंगे। शक्तियों को मिलाकर चलने की जरूरत इसलिए भी थी कि बाहरी दुश्मन का खतरा बराबर बना हुआ था।

सोवियत संघ का प्रथम राज्यचिह्न

साम्राज्यवादी क्षेत्रों ने सोवियत जातियों को गुलाम बनाने की अपनी योजनाओं को त्याग नहीं दिया। इस ख़तरे का मुक़ाबला करने के लिए सोवियत जनतंत्रों की अटूट एकता आवश्यक थी।

तीसरे दशक के प्रारम्भ में देश की धरती पर अनेक सोवियत जनतंत्र मौजूद थे। इनमें सबसे बड़ा रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र था, जिसकी आबादी ६ करोड़ ६५ लाख थी। रूसी जनतंत्र में मध्य रूस, दोन और वोल्गा क्षेत्रों, उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व के अलावा, जो मुख्यतया रूसियों से आबाद थे, दाग़िस्तानी, गोर्स्काया (पहाड़ी), तातार, बाशकिर, क़ज़ाख़, तुर्किस्तान और याकूत स्वायत्त जनतंत्र तथा अनेक स्वायत्त प्रदेश भी शामिल थे।
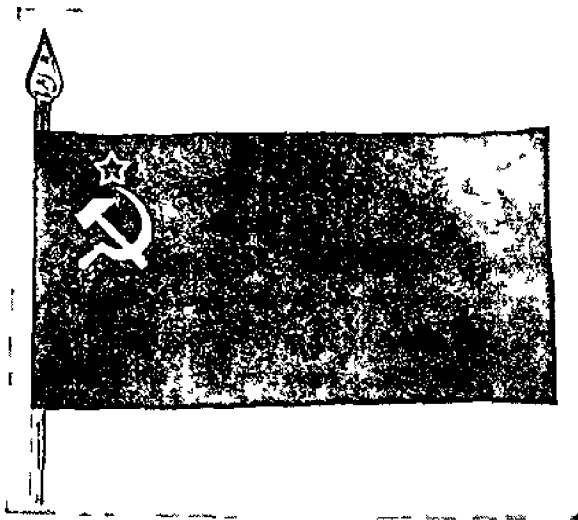
सोवियत सघ की राज्य पताका
लाल पृष्ठभूमि मे स्वर्ण हथौडा,
हसिया और सितारा

उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतत्र की आबादी २ करोड ६० लाख और बेलोरूसी सोवियत जनतत्र की १६ लाख थी। ट्रास काकेशिया के जनतत्रो – आजरबैजान, आर्मीनिया और जार्जिया, जिन्होने १६२२ मे मिलकर एक ट्रास-काकेशियाई सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र बनाया था – की आबादी ५६ लाख थी।

इन सभी जनतत्रो मे समान हितो, उद्देश्यो, ध्येयो का सबध था और उनका राजकीय ढाचा एक था। विभिन्न जनतत्रो के बीच बधुत्व के सबध सघीय सधियो के जरिये सुदृढ हो चुके थे। इन सधियो मे कई आर्थिक और प्रशासकीय सस्थाओ और सेना को सम्मिलित करने की व्यवस्था थी। लेकिन जनतत्रो को और भी घनिष्ठ एकता करके एक सघ मे एकताबद्ध होने की जरूरत महसूस हो रही थी। इस सवाल को सभी जनतत्रो मे मेहनतकशो ने स्वय उठाया। इससे यह बहस शुरू हुई कि

एकीकरण के विभिन्न रूपों में से सबसे उपयुक्त कौनसा है, खासकर इसलिए कि इतिहास में कोई ऐसी मिसाल नहीं थी, जिससे कोई मदद मिलती। देश में बसनेवाली सभी जातियों के हितों का सबसे अच्छी तरह और सबके परस्पर फ़ायदे के लिए पालन कैसे किया जा सकता है?

कम्युनिस्ट पार्टी ने एकीकरण के उपयुक्त रूपों की खोज में कोई कसर नहीं छोड़ी और अपेक्षाकृत लम्बे अर्से तक इन खास समस्याओं पर विशेष आयोग काम करते रहे। इस वाद-विवाद के दौरान कई ग़लत सुझाव भी पेश किये गये। इनमें कुछ ऐसे थे, जिनमें जनतंत्रों के बीच ढीले-ढाले संबंधों की व्यवस्था थी; इसके विपरीत कुछ ऐसे थे, जिनसे कई-कई जातियों के अधिकारों का उल्लंघन होता। लेनिन ने जो परिणाम निकाले, उनका आधार संचित राजनीतिक अनुभव और विभिन्न सुझावों का आलोचनात्मक मूल्यांकन था। वह पूरे देश और अलग-अलग हर जाति की ज़रूरतों से भली भांति अवगत थे। चुनांचे उन्होंने एकीकरण का वह रूप निकाला, जो जनतंत्रों की ज़रूरतों के लिए सबसे उपयुक्त था।

सभी स्वाधीन सोवियत जनतंत्र—रूसी जनतंत्र, उक्रइना, बेलोरूस तथा ट्रांस-काकेशियाई जनतंत्र—समान अधिकारों के आधार पर सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के संघ में एकताबद्ध हुए।

इस सुझाव का सारे देश में स्वागत किया गया। पूरे देश में सोवियतों की गुबेर्नियाई और जनतंत्रीय कांग्रेसों में एकीकरण के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

अंत में ३० दिसम्बर, १९२२ को सोवियत संघ की प्रथम कांग्रेस ने, जिसमें सभी जनतंत्रों की जातियों के प्रतिनिधि उपस्थित थे, सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ के निर्माण के संबंध में घोषणापत्र और संघीय समझौते का अनुमोदन किया। कांग्रेस ने एक केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति गठित की, जो कांग्रेसों के बीच में सर्वोच्च कार्यकारी संस्था थी। इस केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के प्रथम चार अध्यक्ष (प्रत्येक जनतंत्र के एक प्रतिनिधि) थे: कालीनिन, पेत्रोव्स्की, नरिमानोव और चेर्व्याकोव।

छः महीने बाद सोवियत संघ के प्रथम संविधान को केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के एक अधिवेशन में अनुमोदित किया गया और देश की प्रथम सरकार चुनी गयी—सोवियत संघ की जन कमिसार परिषद, जिसके प्रधान

लेनिन थे। सविधान को अतिम रूप में ३१ जनवरी, १६२४ को सोवियतो की दूसरी *अखिल सघीय काग्रेस मे स्वीकार किया गया।*

जब सोवियत सघ की स्थापना हुई, तो उस समय मध्य एशिया मे तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतत्र, जो रूसी जनतत्र मे शामिल था, और बुखारा और ख्वारज्म लोक सोवियत जनतत्र थे। इनम से हर एक जनतत्र मे अनेक जातियो के लोग रहते थे, परन्तु उनकी राज्य सीमाए मध्य एशिया मे विभिन्न जातियो के क्षेत्रीय विभाजन के अनुसार नही थी।

१६२४ मे मध्य एशिया मे जातीय और राज्य सीमाओ को निर्धारित किया गया। यह काम मध्य एशिया की जातियो की इच्छा के अनुसार, आबादी की जातीय बनावट के तफसीली और सूक्ष्म अध्ययन के बाद किया गया। परिणामस्वरूप उज्बेक और तुर्कमान सघीय जनतत्रो और साथ ही ताजिक*, किर्गिज तथा कराकल्पाक स्वायत्त जनतत्र की स्थापना की गयी।

उज्बेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान की सोवियतो की सस्थापन-काग्रेसो ने इन जनतत्रो की सोवियत सघ मे शामिल होने की इच्छा का ऐलान किया और १६२५ म सोवियतो की तीसरी अखिल सघीय काग्रेस ने उनके इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सोवियत राज्य छ जनतत्रो का सघ बन गया।

---

*ताजिक स्वायत्त जनतत्र को १६२६ मे सघीय जनतत्र बना दिया गया।

चौथा अध्याय

अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में प्रगति १९२६–१९२८

सोवियत संघ की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति।

अर्थव्यवस्था के समाजवादी पुनर्निर्माण का कार्य कठिन परिस्थितियों में शुरू किया गया था। समग्र रूप से सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति सुदृढ़ बनती जा रही थी, देश की प्रतिष्ठा मजबूत हो रही थी, तथा अन्य देशों के साथ अधिकाधिक राजनयिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध स्थापित हो रहे थे। लेकिन पूंजीवादी देशों में प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों ने एक संयुक्त सोवियत-विरोधी मोर्चा क़ायम करने का विचार त्याग नहीं दिया था। एक ओर इन क्षेत्रों को अभी भी यह आशा थी कि मिलकर कोशिश करने से वे सोवियत राज्य को नष्ट कर सकेंगे और, दूसरी ओर, उन्हें नज़दीक आते जा रहे आर्थिक संकट से बचने का एक संभव रास्ता अपने सोवियत-विरोधी अभियान को तेज़ करने में दिखाई दिया। लन्दन, पेरिस और वाशिंगटन के अनेक अखबारों ने सोवियत संघ से राजनयिक संबंध विच्छेद करने का आवाहन किया। १९२७ के वसंत में ब्रिटिश सरकार ने इसकी दिशा में सक्रिय क़दम उठाये: १२ मई को पुलिस ने लन्दन में सोवियत व्यापार निगम "आरकोस" की इमारत पर धावा किया। लेकिन सोवियत संघ पर ब्रिटेन-विरोधी हरकतों का आरोप लगाने के उद्देश्य से सोवियत व्यापार संगठन पर पुलिस का यह ग़ैर-क़ानूनी हमला, जो अंतर्राष्ट्रीय क़ानून के बिल्कुल विपरीत था, असफल रहा। जैसा कि आशा की जा सकती थी कोई ऐसी दस्तावेज़ नहीं मिली जिससे सोवियत संघ पर आरोप साबित किया जा सकता।

इसके बावजूद ब्रिटिश विदेश मंत्री आस्टिन चैम्बरलेन ने २७ मई को सोवियत संघ के पास एक नोट भेजा जिसमें एंग्लो-सोवियत व्यापार

सधि को मसूख करने तथा सोवियत सघ से राजनयिक सबध विच्छेद करने की घोषणा की गयी थी।

सोवियत-विरोधी उकसावे अन्य देशो मे भी आयोजित किये गये।

७ जून को किसी व्यक्ति ने पोलैंड मे सोवियत राजदूत वोइकोव की हत्या कर दी। पोलिश प्रतिक्रियावादी क्षेत्रो को आशा थी कि पोलिश-सोवियत सबध बिगड जायेंगे और हो सकता है कि दोनो की फौजें आपस मे टकरा जायें जिसमे अन्य शक्तिया भी शरीक हो जायेंगी। लेकिन इस चाल का भी कोई नतीजा नही निकला।

पूर्व मे भी उन्ही दिनो सोवियत-विरोधी उकसावे आयोजित किये गये। उसी १९२७ के साल अप्रैल मे पेकिंग मे सोवियत दूतावास पर हमला किया गया। इमारत की तलाशी ली गयी और सारा सामान नोच-खसोट डाला गया तथा दूतावास के कई आदमियो को गिरफ्तार कर लिया गया। शघाई और तीनत्सिन मे भी सोवियत कौन्सुलेटो पर हमला किया गया।

पूजीवादी राज्यो को आशा थी कि सोवियत सघ के विरुद्ध नाना प्रकार के कुत्सापूर्वक अभियानो का षड्यत्र रचकर वे एक सयुक्त सोवियत-विरोधी मोर्चे की स्थापना तथा प्रथम समाजवादी राज्य के खिलाफ एक नया जेहाद सगठित कर सकेंगे। इस सोवियत-विरोधी अभियान के फैलने के साथ-साथ पश्चिम मे हथियारबन्दी की होड तेज हो रही थी। फौजें बढ़ायी जा रही थी और सैनिक खर्च मे वृद्धि की जा रही थी। जर्मनी ने भी पुन शस्त्रीकरण शुरू किया और वेर्साई सधि द्वारा लगाये गये प्रतिबधो के बावजूद, १९२४ से १९२८ तक के चार वर्षों मे शस्त्रास्त्र पर उसका खर्च ११ गुना बढ गया। जाहिर है कि इस सदर्भ मे युद्ध और शाति के सवालो का महत्व बहुत बढ गया था। सोवियत सरकार ने शाति के लिए तथा सभी देशो के साथ सामान्य आर्थिक सबध स्थापित करने के लिए अपना अभियान जारी रखा।

सोवियत सघ के वैदेशिक व्यापार के सबधो को कमजोर करने मे प्रतिक्रियावादी क्षेत्रो को सफलता नही मिली। १९२७ मे सोवियत सघ का निर्यात और आयात दोनो ही १९२६ से अधिक था। १९२७ मे सोवियत सघ ने आइसलैंड, लाटविया, स्वीडन और ईरान से व्यापार सधिया की। अन्य देशो के साथ भी व्यापारिक सबधो मे काफी विकास हुआ। यद्यपि ब्रिटेन से व्यापार को धक्का पहुचा था, मगर अन्य देशो के

साथ सोवियत व्यापार में खासा विस्तार हुआ। सोवियत व्यापारिक संगठनों ने जिन चीजों को पहले ब्रिटेन से खरीदने की व्यवस्था की थी, उन्हें अब अन्य देशों से खरीदने का प्रबंध किया। इसका मतलब यह था कि ब्रिटेन के शासक वर्गों ने अपने उकसावों के जरिये सोवियत संघ को नहीं बल्कि स्वयं अपने हितों को चोट पहुंचाई।

इसी साल सोवियत संघ ने पहली बार जेनेवा में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलन में भाग लिया। ठोस उदाहरणों और तथ्यों का हवाला देकर सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि सोवियत संघ और पूंजीवादी देशों में आर्थिक सहयोग की बड़ी सम्भावनाएं मौजूद हैं।

उस समय सोवियत संघ निःशस्त्रीकरण की बातचीत में भी सक्रिय भाग ले रहा था। ३० नवम्बर, १९२७ को सोवियत प्रतिनिधियों ने पहली बार एक निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के तैयारी आयोग के काम में भाग लिया। यह सम्मेलन राष्ट्र संघ की परिषद द्वारा आयोजित किया जानेवाला था। सोवियत प्रतिनिधिमंडल के प्रधान थे लित्वीनोव। सोवियत सरकार की ओर से उन्होंने आम और संपूर्ण निःशस्त्रीकरण के लिए एक संक्षिप्त और ठोस सुझाव पेश किया। इस सुझाव में ये बातें थीं: प्रत्येक देश की हर प्रकार की सेनाएं भंग कर दी जायें; सभी हथियार और गोला-बारूद, क़िलाबन्दियां, नौसेना तथा वायुसेना के अड्डे नष्ट कर दिये जायें; सभी प्रकार के युद्धपोतों और सैनिक वायुयानों को भंग कर दिया जाये; अनिवार्य सैनिक सेवा का अंत करने के लिए क़ानून बनाये जायें तथा प्रशिक्षण के लिए रिज़र्व सैनिकों के जमघट पर प्रतिबंध लगा दिया जाये; हथियारों के कारखाने तोड़ दिये जायें और सैनिक खर्चों के लिए धन देना बन्द कर दिया जाये। यह सुझाव पेश करते समय सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने यह भी घोषणा कर दी कि वह निःशस्त्रीकरण की किसी भी अन्य योजना पर जिसमें ठोस सुझाव मौजूद हों, विचार करने को तैयार है। सोवियत संघ द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का प्रारूप बहुत ही सीधा-सादा था। इसमें केवल दो बातें थीं: (१) यह सुझाव रखा गया कि तैयारी आयोग सोवियत सुझावों के आधार पर आम और संपूर्ण निःशस्त्रीकरण संधि का विस्तृत मसविदा तैयार करने के वास्ते तुरंत काम शुरू कर दे; और (२) सोवियत सुझावों के आधार पर तैयार किये गये संधि के मसविदे पर विचार और उसे स्वीकार करने के लिए एक निःशस्त्रीकरण सम्मेलन मार्च, १९२८ तक आयोजित किया जाये।

सोवियत प्रस्ताव का गहरा असर पड़ा जिसे पूंजीवादी समाचारपत्रों ने भी स्वीकार किया। लेकिन प्रधान पूंजीवादी देश तो सैन्यकरण की नीति पर अमल कर रहे थे। उनके प्रतिनिधियों ने सोवियत सुझावों पर विचार किये बिना ही, उन्हें नजरअन्दाज कर दिया।

सोवियत सघ से सबध विच्छेद के बाद दो बरस का समय बीत चुका था। इस दौरान ब्रिटिश सरकार ने महसूस किया कि इससे न केवल ब्रिटेन के आर्थिक हितो को बहुत क्षति पहुची बल्कि उसने यह भी देखा कि सोवियत सघ की बढती हुई शक्ति को और उसकी अतर्राष्ट्रीय स्थिति के सुदृढ होने को रोका नही जा सका। १९२९ के वसत मे ८४ ब्रिटिश उद्योगपति पुन आर्थिक सपर्क कायम करने सोवियत सघ आये। लेबर और लिबरल पार्टियां सोवियत सघ से तुरत सबध स्थापित करने के पक्ष मे थी। उन्हे मई १९२९ के ससदीय चुनावो मे बहुमत प्राप्त हुआ।

जुलाई, १९२९ में ब्रिटिश सरकार ने सोवियत सरकार के सामने सुझाव पेश किया कि दोनो के बीच राजनयिक सबध पुन स्थापित किये जायें। फलस्वरूप उसी पतझड मे एक प्रोटोकोल पर हस्ताक्षर किये गये जिसमे राजनयिक सबध तुरत पुन स्थापित करने की बात थी।

अतः चौथे दशक के आरभ तक सयुक्त सोवियत-विरोधी मोर्चा कायम करने की सारी कोशिशो पर पानी फिर चुका था।

१९२९ मे पूजीवादी जगत मे आर्थिक सकट फूट पडा और उसने उन सभी विरोधाभासो को तीव्र कर दिया जो पूरी पूजीवादी व्यवस्था मे निहित थे। इस बीच सोवियत सघ की राजनीतिक स्थिति दिनोदिन मजबूत हो रही थी और देश के समाजवादी पुनर्गठन मे तेजी से प्रगति हो रही थी। सोवियत सघ और अन्य कई देशो के बीच व्यापारिक सपर्क का विकास भी द्रुत गति से हो रहा था। लेकिन सोवियत राजनयिकों को अपनी शक्ति मुख्यत शाति कायम रखने के सघर्ष मे लगानी पड रही थी। अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे दिनोदिन तनाव बढता जा रहा था। पूर्व मे जापान ने सैनिक कार्रवाई शुरू कर दी थी और जर्मनी से चिन्ताजनक समाचार आ रहे थे। वहा फ़ासिस्ट सत्ता पर कब्जा करने में प्रयासरत थे।

सितम्बर, १९३१ मे जापानी फौजे उत्तर-पूर्वी चीन में घुस गयी। १९३३ के वसत तक जापान ने चीन के चार प्रातो पर दखल कर लिया था। २७ मार्च को जापानी सरकार ने राष्ट्र सघ से त्यागपत्र देने की

घोषणा की। अतः उसने अपनी आक्रामक कार्रवाई के विस्तार के लिए अपने को मुक्त कर लिया। इस प्रकार सुदूर पूर्व में युद्ध का एक अड्डा तैयार हो गया।

इस बीच यूरोप में भी स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो चुकी थी। वैदेशिक क़र्जों की सहायता से १६२६ तक जर्मनी के शासक क्षेत्रों ने देश के अधिकांश सामरिक उद्योग को पुनः पहले के स्तर पर पहुंचा दिया था। चार साल बाद आर्थिक ह्रास तथा मज़दूर वर्गीय आन्दोलन के प्रत्यक्ष विकास को देखकर जर्मन पूंजीपति वर्ग ने सत्ता फ़ासिस्टों के हवाले कर दी जिन्होंने संसार के नक़्शे में हेरफेर करने के अपने उद्देश्य छिपाया नहीं था।

पूर्व और पश्चिम दोनों तरफ़ जब आक्रमण के अड्डे तैयार हो रहे थे, सोवियत संघ ने वैदेशिक नीति के क्षेत्र में अपना प्रयास अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने पर केन्द्रित किया। १६३१ की गर्मियों में एक सोवियत-अफ़ग़ान तटस्थता तथा अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर हुए और अगले साल, जुलाई महीने में पोलैंड के साथ भी इसी प्रकार की संधि पर हस्ताक्षर हुए। नवम्बर, १६३२ में सोवियत संघ और फ़्रांस ने और अन्य कई देशों ने भी अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किये। उस समय इस संदर्भ में सोवियत राजनयिकों ने जो क़दम उठाये उनका यह एक संक्षिप्त मगर बिल्कुल अधूरा विवरण है।

१६३२ में सोवियत संघ ने शस्त्रास्त्र में कटौती करने और प्रतिबंध लगाने के सवाल पर विचार करने के लिए जेनेवा में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। यद्यपि यह सम्मेलन राष्ट्र संघ के तत्वाधान में आयोजित किया गया था, सोवियत संघ सहित अनेक देशों ने, जो राष्ट्र संघ के सदस्य नहीं थे, इसमें भाग लिया। सम्मेलन ऐसे समय हुआ जब अंतर्राष्ट्रीय स्थिति क़ाबू से बाहर हुई जा रही थी। यही कारण था कि सोवियत प्रतिनिधियों ने निःशस्त्रीकरण की समस्याओं को अविलम्ब हल करने के लिए क़दम उठाने का सुझाव रखा। सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने एक कार्यक्रम पेश किया जो आम और संपूर्ण निःशस्त्रीकरण क़ायम करने के आधार का काम दे सकता था, और इसके सदस्यों ने यह भी घोषणा की कि सोवियत संघ अन्य सहयोगियों के सुझावों पर विचार करने के लिए तैयार है।

निःशस्त्रीकरण की समस्याओं के समाधान का एक स्वीकरणीय आधार तलाश करने के लिए सोवियत संघ की प्रबल इच्छा और अधिक स्पष्ट हो गयी जब सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने एक और निःशस्त्रीकरण कार्यक्रम पेश किया। इसमें कहा गया था कि सम्बद्ध देश हथियारों में सानुपातिक कटौती पर एक संधि तैयार करें।

सोवियत संघ द्वारा प्रस्तुत सीधे-सादे और ठोस सुझावों के विपरीत पश्चिमी देशों की योजनाओं ने सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडलों का ध्यान निःशस्त्रीकरण की समस्याओं के समाधान से दूसरी ओर मोड़ दिया।

परिणामतः कोई प्रगति नहीं हो सकी और अंतर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ता गया।

समाजवादी उद्योगीकरण का प्रारम्भ

दिसम्बर, १९२५ में मास्को में सरदी बहुत कड़ाके की पड़ रही थी, फिर भी समाचारपत्रों की दुकानों के सामने खुलने से बहुत पहले ही लोगों की कतार लग जाती थी। उन दिनों सोवियत राजधानी में कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस हो रही थी। लोगों को उससे बड़ी दिलचस्पी थी क्योंकि उसमें एक ऐसे सवाल पर विचार किया जा रहा था जो हर एक के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह सवाल था सोवियत समाज का विकास तथा सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के कार्यभारों और तरीकों का।

यह कोई साधारण कांग्रेस नहीं थी। दूसरे अधिवेशन के बाद जैसे ही केन्द्रीय पार्टी संस्थाओं की ओर से स्तालिन, मोलोतोव और कूइबिशेव ने मुख्य रिपोर्टें पेश की, प्रतिनिधियों के एक दल ने मांग की कि जिनोव्येव को बोलने का अवसर दिया जाये। जिनोव्येव ने एक सह-रिपोर्ट पेश की जिससे यह प्रकट हो गया कि पार्टी नियमों का उल्लंघन करते हुए एक गुट की स्थापना की गयी थी जो सिद्धांततः केन्द्रीय समिति और उसके पोलिट ब्यूरो की आम नीति से पथभ्रष्ट हो गया था। अतः संघर्ष का तनावपूर्ण और जटिल स्वरूप उन परस्पर-विरोधी सिद्धांतों का प्रतिबिंब था जो देश की जरूरतों के लिए सबसे अनुकूल विकास मार्ग के सवाल से संबंधित थे।

उस समय तक सोवियत संघ के सामाजिक-आर्थिक विकास के विश्लेषण से जाहिर था कि शहर और देहात दोनों ही में आर्थिक स्थिति

में निरन्तर सुधार हो रहा है। देश शीघ्र १६१३ के (ज़ारशाही के अंतर्गत अंतिम शांतिपूर्ण वर्ष के) स्तर पर पहुंचनेवाला था। रोज़गार के आंकड़ों और जीवन स्तर में बराबर प्रगति हो रही थी। राजकीय क्षेत्र का ख़ासकर उद्योग और व्यापार में विस्तार हो रहा था।

लेकिन अब भी देश कृषिप्रधान था। आबादी में पांच में चार जन (या ठीक-ठीक कहा जाये तो १६२६ की जनगणना के अनुसार १४ करोड़ ७० लाख आबादी का ८२ प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में रहते थे। कृषि का तरीक़ा मुख्यतया पिछड़ा हुआ था। देश की कुल पैदावार का केवल एक तिहाई औद्योगिक था और वर्तमान औद्योगिक उद्यमों में अधिकांश उपभोग का माल पैदा होता था। कुल औद्योगिक पैदावार में भारी उद्योग का भाग केवल ४० प्रतिशत था। तीसरे दशक के मध्य तक, १०–१२ वर्ष पहले ही की तरह, देश के पास काफ़ी विकसित इंजीनियरिंग उद्योग नहीं था, तथा रासायनिक और बड़े पैमाने के निर्माण उद्योगों की अनेक शाखाएं भी निम्न स्तर पर थीं। आधुनिक मशीनें, धातु, रबड़, कपास, ट्रैक्टर, घड़ियां और कई अन्य सामान बाहर से मंगाने पड़ते थे जैसा कि ज़ारशाही के अंतर्गत भी हुआ करता था। और जैसा कि लेनिन ने बताया था उसका तकनीकी सामान अमरीकी उद्योग की तुलना में दसवां भाग तथा जर्मन और ब्रिटिश उद्योग की तुलना में एक चौथाई था।

बहाली के दौर के अंत के पर्यवेक्षणों से पता चला कि देश की जनसंख्या का केवल १८ प्रतिशत समाजवादी क्षेत्र में काम कर रहा था और इस आंकड़े में शामिल थे मज़दूर, राजकीय उद्यमों तथा प्रतिष्ठान के कर्मचारी, सहकारी समितियों में ऐक्यबद्ध दस्तकार और वे किसान जिन्होंने सामूहिक फ़ार्म क़ायम कर लिये थे। आबादी का बड़ा हिस्सा अभी भी छोटे किसानों का था जिनके अपने अलग खेत थे। शहरी और ग्रामीण पूंजीपति वर्ग अभी भी काफ़ी प्रभावशाली थे और जनसंख्या में इनका अनुपात ७ प्रतिशत था। दूसरे शब्दों में सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना के सात बरस बाद भी शोषक वर्गों के अवशेष संख्या में उतने ही थे जितना मजदूर वर्ग, जिसकी संख्या आबादी का ७.७ प्रतिशत थी।

इस चित्र को पूरा करने के लिए यह उल्लेख भी जरूरी है कि देश के रोजगार कार्यालय में दस लाख बेरोज़गारों के नाम दर्ज थे, और निजी

पूजी शहरो मे अपने पैर जमा रही थी और गावो मे कुलको के फार्मों की सख्या बढ रही थी।

इस परिस्थिति के मूल्याकन मे विरोध-पक्ष ने अपना ध्यान उन बाधाओ पर केन्द्रित किया जिनके कारण सोवियत अर्थतत्र का विकास रुका हुआ था, लेकिन वे उन वास्तविक शक्तियो को देखने मे असमर्थ थे जिनकी सहायता से इन बाधाओ को दूर किया जा सकता था। वे फिर से इस बात से इनकार करने लगे कि एक देश मे समाजवाद का निर्माण करना सम्भव है। उन्होंने यह साबित करने का प्रयत्न किया कि अन्य सर्वहारा राज्यो की सहायता के बिना सोवियत सघ मे नये समाज का निर्माण असम्भव है। इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने तथा अन्य देशो मे सर्वहारा क्रातियो की विजय की प्रतीक्षा करने के सिवा और कुछ नही किया जा सकता।

उनमे से कुछ ने यह सुझाव रखा कि पूरा जोर लगाकर कृषि को विकसित करना चाहिए, निर्यात बढाना चाहिए, अन्न, कपास, इमारती लकडी, पटुआ की बिक्री करनी चाहिए और इस प्रकार धीरे-धीरे बडे पैमाने के उद्योग के निर्माण के लिए आवश्यक धन जुटाना चाहिए। इसका मतलब यह था कि सोवियत सघ को अभी कई बरसो तक कृषिप्रधान रहना पडता। उन्होंने इस तथ्य की ओर बिल्कुल ध्यान नही दिया कि ऐसी स्थिति म देश के पास अपनी सुरक्षा को सबल बनाने का कोई साधन नही होगा।

विरोध-पक्ष के सदस्यो ने लगातार इस नीति का समर्थन किया। उनका विश्वास था कि पहले यह आवश्यक है कि हल्के उद्योग को विकसित किया जाये और कपडे, जूते और अन्य आवश्यक वस्तुओ की बिक्री बढायी जाये, और उसके बाद ही, जब मुनाफ़े की बडी रकम जमा हो जाये, भारी उद्योग की बुनियाद डालने का काम शुरू किया जाये। इसमे सन्देह नही कि यह रास्ता बहुत प्रलोभनभरा लगता था। कम्युनिस्टो मे कौन था जिसने जनता को प्रचुर मात्रा मे उपभोग का सामान मुहैया करने का सपना नही देखा था? परन्तु सपने अगर हवाई कल्पना मात्र नही है, तो उनका वास्तविक आधार होना चाहिए। उस समय के सामाजिक विकास के बुनियादी नियमो और मुख्य विशेषताओ को ध्यान मे लिए

विना उपयुक्त नीति को निर्धारित और कार्यान्वित करना असम्भव था। विरोध-पक्ष के दृष्किोण की कमज़ोरी की जड़ यही थी।

देश के समक्ष उस समय जो भीषण कठिनाइयां थीं वे अतीत की विरासत थीं, वे "विकास की कठिनाइयां" थीं जिनका संबंध बहाली के कार्यों की पूर्ति से तथा पूरी अर्थव्यवस्था के तकनीकी और सामाजिक पुनर्गठन में संक्रमण से था। वे निर्णायक तत्व नहीं थीं। नयी स्थिति की मौलिक विशेषता यह थी कि मजदूर वर्ग राजनीतिक सत्ता का पूर्णतः स्वामी था, अर्थतंत्र में सर्वोच्च स्थान उसके पास थे, उसे मेहनतकश किसानों का समर्थन प्राप्त था और उसमें रास्ते की सभी बाधाओं पर क़ाबू पाने की शक्ति और दृढ़ संकल्प भी था।

कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस ने इस परिस्थिति का सामना करने के लिए एक योजना बनायी। विरोध-पक्ष के विचारों की आलोचना करने तथा उसकी गुटबन्दी की कारवाइयों की निन्दा करने के बाद पार्टी की सर्वोच्च संस्था ने अपने सारे फ़ैसलों का आधार लेनिन की इस प्रतिपत्ति पर रखा कि एक देश में समाजवाद का निर्माण सम्भव है। कांग्रेस दो सप्ताह चली जिसके बाद उसने एकमात्र सही नीति के लिए एक योजना पेश की, यानी ऐसी योजना, जो सोवियत संघ को मशीनरी और औद्योगिक सामान का आयात करनेवाले देश से परिणत करके मशीनरी और औद्योगिक सामान का उत्पादन करनेवाला देश बना दे, सोवियत संघ को, जो पूंजीवादी देशों से घिरा हुआ था, समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित एक स्वतंत्र आर्थिक इकाई बना दे। संक्षेप में उस कांग्रेस ने समाजवादी उद्योगीकरण की योजना तैयार की।

देश को एक औद्योगिक शक्ति में परिणत करने की दिशा में पहला क़दम भारी उद्योग के विकास की गति को तेज़ करना और देश की सुरक्षा क्षमता को सुदृढ़ बनाना था। केवल तभी यह सम्भव हो सकता था कि अभूतपूर्व ढंग से कम समय में देश के तकनीकी और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर किया जाये, मानव द्वारा मानव के शोषण और बेरोज़गारी का अंत किया जाये और करोड़ों किसानों के लिए नयी सम्भावनाओं के द्वार खोले जायें।

समाजवादी उद्योगीकरण की योजना कोई अप्रत्याशित घटना नहीं थी। लेनिन ने १६२१ में ही इस बात पर ज़ोर दिया था कि "समाजवाद के

लिए एकमात्र भौतिक आधार जो सम्भव है, वह है बड़े पैमाने का मशीन उद्योग जिसमे कृषि के पुनर्गठन का सामर्थ्य हो।"* उन्हे विश्वास था कि जब देश का बिजलीकरण हो जायेगा, जब अर्थतत्र के तमाम अनुभागो को आधुनिक बडे पैमाने के उद्योग की जरूरतो के अनुसार तकनीकी आधार मिल जायेगा तभी समाजवाद विजयी होगा। गृहयुद्ध हस्तक्षेपकारी युद्ध और आर्थिक बहाली के वर्षों मे इस प्रकार के उद्योग का निर्माण सम्भव नही था। लेकिन तीसरे दशक के प्रारभ मे योजनाओ मे युद्धपूर्व के स्तर से आगे पहुचने की गुजाइश पैदा हो रही थी। गोएलरो बिजलीकरण योजना के अतर्गत अनेक पुराने कारखानो को जो युद्ध मे तबाह होकर बन्द पडे थे, दोबारा खोला गया और उनका पुनर्गठन किया गया था। यही वह समय था जब देश ने अपने प्रथम डीजल इजन, प्रथम मोटरकारो और ट्रैक्टरो का उत्पादन किया। जारशाही रूस मे कभी इनका उत्पादन नही हुआ था। यह बात भी उल्लेखनीय है कि उस समय बिजली शक्ति उत्पादन, बिजली के उपकरण, वस्त्र उद्योग के करघो तथा कई प्रकार की कृषि तथा अन्य मशीनो के उत्पादन के आकडे १४वी पार्टी काग्रेस से काफी पहले ही १६१३ के आकडो से आगे बढ चुके थे।

जिन लोगो का दृष्टिकोण अभी भी अतीत से बधा हुआ था और जिन्होने पुराने साचो से नाता नही तोडा था, उनके लिए ये उपलब्धिया कठिनाइयो के समुद्र मे छोटे टापुओ के समान, आकस्मिक सफलताए मात्र थी। इसके विपरीत अखिल रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति ने तथा सोवियत सरकार ने इन उपलब्धियो का सर्वथा भिन्न मूल्याकन किया। उनमे उन्हे समाजवादी अर्थतत्र की जिसका उन दिनो निरूपण हो रहा था, श्रेष्ठता का प्रतिबिंब दिखाई दिया, उस पुनर्निर्माण का सकेत मिला जिसपर केन्द्रीयकृत योजनाओ के अनुसार काम चालू हो चुका था। तीसरे दशक के मध्य तक नयी आर्थिक नीति की बदौलत, एक ऐसा मोड बिन्दु आ गया था जहा एक समाजवादी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक भौतिक और तकनीकी आधार तैयार करने के सगठित प्रयत्न को तेज करना सम्भव था। १४वी पार्टी काग्रेस के ठीक पहले देश के विकास की इस नयी मजिल के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन करते

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३२, पृष्ठ ४३४

हुए स्तालिन ने १९२५ की तुलना अक्तूबर क्रांति के काल से करना ठीक समझा। "तब १९१७ में कार्य था पूंजीपति वर्ग की सत्ता से सर्वहारा वर्ग की सत्ता में संक्रमण करना। अब १९२५ में कार्य है वर्तमान अर्थतंत्र से जिसे पूर्ण रूप से समाजवादी नहीं कहा जा सकता, समाजवादी अर्थतंत्र, उस अर्थतंत्र में संक्रमण करना जो समाजवादी समाज के भौतिक आधार का काम देगा।"*

सोवियत इतिहास में कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस उद्योगीकरण की कांग्रेस के नाम से मशहूर है। १९२५ का अंत सोवियत संघ के विकास में जल विभाजक के समान था। देश में जीवन के अनेक पहलू बहुत कुछ उसी तरह थे जैसे वे सदियों से चले आ रहे थे। मग्नीत्नाया पहाड़ पर वृक्ष पहले ही की तरह सरसराया करते थे और मग्नितोगोर्स्क नगर ने नक़शे पर अभी अपनी जगह नहीं बनायी थी यद्यपि थोड़े ही दिनों में वह उराल तथा पूरे देश का मुख्य इस्पात उत्पादन केन्द्र बन जानेवाला था। द्नेपर नदी का पानी अभी चट्टानों के बीच मुक्त रूप में बहता जा रहा था और द्नेप्रोगेस (द्नेपर पनबिजलीघर) का शब्द अभी केवल उन इंजीनियरों में प्रचलित था जिनका उस निर्माण योजना से प्रत्यक्ष संबंध था। भावी तुर्कसिब रेलवे के पथ पर, जो मध्य एशिया और साइबेरिया को जोड़नेवाली थी, अभी ऊंटों के मंदगति क़ाफ़ले आया जाया करते थे। आबादी का बड़ा हिस्सा अभी भी निरक्षर था और उन दिनों ऐसे गांव इक्के-दुक्के ही थे जहां लोगों ने कोई ट्रैक्टर देखा हो, बहुतेरे वे लोग जो आगे चलकर देश के विभिन्न निर्माण स्थलों पर श्रम वीर की पदवी से सम्मानित हुए, उन दिनों दूसरों के खेतों पर मजदूरी किया करते थे। मगर समाचारपत्रों, रेडियो प्रसारणों तथा राजनीतिक प्रचार और सूचना व्यवस्था के हजारों कर्मचारियों के आंखों देखे वर्णन ने उद्योगीकरण शब्द को घर-घर पहुंचा दिया। वह उद्योग के त्वरित विकास, व्यापक पैमाने के मशीनीकरण, आम सांस्कृतिक विकास, अधिक समृद्धि और सामाजिक प्रगति सब का प्रतीक बन गया।

"क्रास्नी पुतीलोवेत्स" कारख़ाने के एक मजदूर के शब्दों में उन वर्षों के वातावरण का सजीव चित्रण मौजूद है। लेनिनग्राद के मजदूरों को

*ज० व० स्तालिन, रचनाएं, खण्ड ७, पृष्ठ २५२

सबोधित करते हुए उसने कहा : "जरा सोचो, अभी दो वर्ष पहले त्रोत्स्की हमारे कारखाने को बन्द कर देना चाहते थे, क्योकि उन्हे इसका कोई भविष्य नही दिखाई देता था। आज यह सोचकर कुछ अजीब सा लगता है। अब जरूरत है कि हमारी तरह की दस या शायद सौ फैक्टरिया और बनायी जायें और उनको चलाने के लिए बिजलीघरो तथा और भी बहुत कुछ का निर्माण हो जाये। मुझे इसका अधिक ज्ञान नही है, मैने तो अभी-अभी पढना लिखना सीखा है। लेकिन मजदूर वर्ग यह सब काम सभाल लेगा। हम बेरोजगारी, शहरी पूजीपतियो और कुलको सबको मिटायेगे। हमे लॉर्डों और पूजीपतियो का डर नही है।" यह समझना गलत होगा कि हर आदमी का विचार इसी ढग का था। ऐसे लोग भी थे जिन्हे इसमे सन्देह था और कुछ लोग खुले आम इसके विरोधी थे। उन्होने समाजवादी उद्योगीकरण की योजनाओ को कार्यरूप दिये जाने मे बाधा डालने के लिए कोई भी उपाय उठा नही रखा। और बात यहा तक जा पहुची कि तोड-फोड हुई, पार्टी तथा सरकारी पदाधिकारियो तथा उद्योग और निर्माण स्थलो पर आदर्श मजदूरो के खिलाफ आतकवादी कार्रवाइया की जाने लगी। समाचारपत्रो मे आगजनी, मशीनें तोडे जाने की वारदातो और हत्याओ की भी काफी चर्चा हुई।

१६२८ के शुरू मे दोनेत्स बेसिन मे एक तोड-फोड करनेवाले सगठन का भडा फूट गया। यह भूतपूर्व औद्योगिक विशेषज्ञो तथा भूतपूर्व खदान और फैक्टरी मालिको का एक बडा सोवियत-विरोधी दल था। श्रमजीवी जनता का गहरा आक्रोश अनेक जलसो और सभाओ मे व्यक्त हुआ और उन्होने सरकार से प्रतिक्रातिकारियो के विरुद्ध कडी कार्रवाई करने का आग्रह किया। इसी के साथ उन्होने अर्थतन्त्र को तेजी से विकसित करने के लिए पहले से बेहतर और अधिक मेहनत करने की प्रतिज्ञा की।

उन दिनो हर मौके पर चाहे वह शहर या ग्राम सोवियतो का चुनाव हो या ट्रेड-यूनियन और कोम्सोमोल की काग्रेस, वैज्ञानिको का सम्मेलन हो अथवा जन सगठनो की सभायें, हर जगह विचार का मुख्य विषय उद्योगीकरण होता था ' आम जनता को जहा तक हो सके पूरी तरह और अधिक व्यापक पैमाने पर इस मे कैसे शरीक किया जाये, पार्टी की आम उद्योगीकरण की नीति को कैसे जल्दी से जल्दी और यथासम्भव कारगर

ढंग से कार्यान्वित किया जाये। बोल्शेविकों द्वारा और उनकी देखरेख में जो विराट संगठनात्मक काम किया गया वह सार्थक हुआ। उद्योगीकरण के अभियान में शीघ्र ही करोड़ों शामिल हो गये और इससे उसकी सफलता पूर्वनिश्चित हो गयी।

जैसी कि सम्भावना थी पूंजीवादी सरकारों ने इस काम में सर्वहारा राज्य की कोई वित्तीय सहायता नहीं की। सोवियत संघ के लोगों को केवल अपने साधनों पर भरोसा करना पड़ा। सारा मुनाफ़ा जिसे पहले पूंजीपति और जमींदार हथिया लिया करते, जिसे ज़ार परिवार फूंक दिया करता था और जिसे विदेशी पूंजीपति तरह-तरह के क़र्ज़ों के सूद के रूप में वसूल किया करते थे, अब सोवियत राज्य द्वारा उद्योग में लगाया जाने लगा। बैंकिंग व्यवस्था और राज्य बजट का पूरी तरह उपयोग करते हुए सरकार ने कृषि तथा हलके उद्योग का कुछ मुनाफ़ा भारी उद्योग में लगाया। १९२७ में एक विशेष उद्योगीकरण क़र्ज़ जारी किया गया जो क़िस्त के आधार पर बंटा हुआ था। थोड़े ही समय में श्रमजीवी जनता ने अपने राज्य को २० करोड़ रूबल का क़र्ज़ दे दिया। १९२८ में एक दूसरा क़र्ज़ भी उतना ही सफल हुआ और इस बार उससे ५० करोड़ रूबल मिला। १९२६ और १९२९ के बीच विभिन्न प्रकार के पन्द्रह अन्दरूनी क़र्ज़ जारी किये गये।

इससे भी ज्यादा शानदार नतीजे श्रम की उत्पादिता बढ़ाने, सामान में किफ़ायत करने तथा कारख़ानों में काम के संगठन को सुधारने के जन अभियान में प्राप्त हुए। इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका अगुआ मज़दूरों के सामूहिक जत्थों ने अदा की। इनमें काज़ान रेलवे के मास्को स्टेशन की मरम्मत शाप के मज़दूरों ने विशेष रूप से कारगर पेशक़दमी का परिचय दिया। कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस के थोड़े ही दिनों बाद शाप के पार्टी मंत्री ने वहां काम करनेवाले कोम्सोमोल सदस्यों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा: "जवानो, पार्टी की चुनौती का तुम क्या जवाब देने जा रहे हो? तुम्हें एक मिसाल क़ायम करनी चाहिए। सारी शाप को दिखा दो कि तुम उत्पादिता में वृद्धि कर सकते हो। आख़िर तुम लोग कोम्सोमोल के सदस्य हो जो देश के नौजवानों का प्रगतिशील हिरावल, लेनिन के शब्दों में इसकी अग्रणी टुकड़ी हो।" इसके बाद बड़े उत्साह के साथ बहस हुई और अंत में एक युवक ब्रिगेड क़ायम करने का निश्चय

किया गया। यह तय किया गया कि यह ब्रिगेड बढिया से बढिया काम करने का प्रयत्न करेगा। सबो ने बडी मेहनत से काम किया तथा इसी के साथ एक-दूसरे की सहायता की। धीरे-धीरे वे अपने काम मे और निपुण हो गये। प्रत्येक चार आदमी पहले पाच का और फिर छ आदमियो का काम करने लगे। प्रारम्भिक नतीजे स्वय बहुत बडा प्रमाण थे इन नौजवान मजदूरो ने अपनी योजना से काफी अधिक कार्य पूरा किया और इनका वेतन शाप मे सबसे अधिक था।

इसी तरह के कोम्सोमोल युवक ब्रिगेड मास्को और लेनिनग्राद मे, उराल मे, दोनेत्स बेसिन और ताशकन्द के कारखानो मे सगठित किये गये। उन सबो ने बडे उत्साह से नये उच्चतर लक्ष्यो के लिए काम किया और उन्हे अग्रणी ब्रिगेड कहा जाने लगा।

यह कोई ढकी-छिपी बात नही कि कुछ लोग इन ब्रिगेडो पर तथा आम पहलकदमी की अन्य मिसालो पर तिरस्कारपूर्ण ढग से हसते या उनका मजाक उडाया करते थे। इन लोगो को यह विश्वास नही होता था कि रूस के पिछडेपन को जिसकी जडें बहुत गहरी थी, तेजी से दूर किया जा सकता है। वे यह समझने मे असमर्थ थे कि सर्वहारा राज्य मे एक महान ध्येय की खातिर साधारण श्रमजीवी जनता स्वेच्छापूर्वक कुर्बानिया करने और मुसीबते सहने को तैयार है। जाहिर था, उस समय की आम भावना कुछ आशाहीन लोगो की सशयवादी मनोभावना या जनता के दुश्मनो की नफरत से निर्धारित नही होती थी। उस भावना का निरूपण रेलवे मजदूरो, धातु और सूती मिल मजदूरो के श्रम कारनामो से होता था जिन्होने अपनी सारी शक्ति और उत्साह, अपनी बचत का पैसा तक उद्योगीकरण को समर्पित कर दिया था।

सारे जनगण के सम्मिलित प्रयास के फलस्वरूप १६२६–१६२७ के आर्थिक वर्ष मे ही उद्योग मे लगभग १ अरब रूबल लगाया गया। उद्योगीकरण के अभियान के पहले तीन वर्षो मे ३, ३० करोड रूबल उद्योग पर लगाये गये। यह अर्थतत्र के समाजवादी क्षेत्र मे हासिल किये गये मुनाफो, सार्वजनिक कर्जो और खर्च मे कडी किफायत से सम्भव हुआ। आय के वितरण से उन दिनो की प्राथमिकताओ का पता चलता है। विनियोग का बडा अश नये भारी उद्यमो के निर्माण के लिए अलग रख दिया गया। पहले जो निधि उपलब्ध होती उसे मुख्यतया उद्यमो की बहाली

और आम मरम्मत पर ख़र्च किया जाता था। मगर अब नये औद्योगिक उद्यमों को प्रधानता दी गयी। बड़ी कठिनाई यह थी कि उद्योग पर लगायी गयी पूंजी की भरपाई कम अर्से में नहीं हो सकती थी और उत्पादन की मात्रा तुरन्त बढ़ायी नहीं जा सकती थी। इन विनियोगों का अधिकतम लाभ कई वर्षों के बाद ही महसूस किया जा सकता था, परन्तु उन परिस्थितियों में और कोई रास्ता भी नहीं था। इसके अतिरिक्त उस समय की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में भी सोवियत संघ अपनी प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए मजबूर था। पूंजीवादी राज्यों की सेनाएं अपने आपको आधुनिकतम वायुयानों, टैंकों, बख़्तरबंद गाड़ियों तथा रासायनिक अस्त्रों से सुसज्जित कर रही थीं, जबकि उस राज्य में जहां सर्वहारा अधिनायकत्व स्थापित हुआ था अपनी वायुसेना या मोटर उद्योग का निर्माण अभी शुरू ही किया गया था, और रसायन उद्योग की ऐसी अनेक शाखाएं अभी खुली भी नहीं थीं जो कृषि के विकास तथा सीमाओं की सुरक्षा दोनों के लिए जरूरी थीं।

उद्योगीकरण के लिए दिये गये करोड़ों रूबल किन विशेष प्रयोजनाओं पर ख़र्च किये गये? १९२६ के अंत में वोलख़ोव नदी पर बना पन-बिजलीघर चालू हुआ जो उन दिनों यूरोप में अपनी क़िस्म का सबसे बड़ा बिजलीघर था। "प्राव्दा" ने इस उपलब्धि का स्वागत इन शब्दों में किया था: "क्या सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण का काम सम्पन्न हो सकता है? हां! इसका उत्तर उन हज़ारों बिजली बत्तियों ने दिया है जो दूर नदी तट के दलदलों में चमक रही हैं। इनके प्रकाश ने कोई सन्देह नहीं रहने दिया। अब कौन इस बात में अविश्वास कर सकता कि स्वीर, द्नेपर और दोन नदियों पर पनबिजलीघर बनेंगे बशर्ते कि बाहरी दुश्मन हमारे काम में अड़ंगा नहीं डालें। जहां तक मजदूर वर्ग की बात है, वह अब भी उन्हीं आन्तरिक साधनों को जुटा सकता है जो उसने वोलख़ोव पनबिजलीघर के निर्माण के लिए जुटाये हैं।"

चन्द महीने बाद निर्माण मजदूर द्नेपर के तट पर जहां भावी द्नेपर बिजलीघर का निर्माण होना था, पहुंच गये। दर्जनों भूवैज्ञानिकों के दल कीरोव्स्क के ख़िबीनी पहाड़ों, उराल और मध्य एशिया में भेजे गये। १९२७ में वोल्गा पर एक ट्रैक्टर कारख़ाना, और मग्नीत्नाया पहाड़ और क्रिवोई रोग के पास इस्पात कारख़ानों के निर्माण के लिए प्रारम्भिक काम शुरू किया गया।

एक-एक करके उद्योग की सभी शाखाए अधिक आधुनिक मशीनो से सुसज्जित कर ली गयी। मध्य एशिया से साइबेरिया तक एक रेलवे का निर्माण-कार्य शुरू हुआ।

बेरोजगारो की सख्या मे तेजी से कमी हो रही थी। १६२६–१६२६ की अवधि मे राजकीय क्षेत्र के उद्योगो मे मजदूरो के वेतन मे ७० प्रतिशत वृद्धि हुई। लगभग ६ लाख मजदूरो तथा उनके परिवारा को नया निवास स्थान दिया गया।

१६२७ मे देश ने क्राति की दसवी सालगिरह मनायी। उस अवसर पर यह घोषणा की गयी कि वेतन मे कटौती किये बिना ७ घटे का कार्यदिवस जारी किया जायेगा। किसानो की स्थिति मे भी काफी सुधार हुआ। समाजवादी उद्योगीकरण से श्रमजीवी जनता के सभी हिस्सो को लाभ हो रहा था।

कृषि का समूहीकरण

१६२७ मे कुल औद्योगिक पैदावार मे १३ प्रतिशत, उसके बाद के वर्ष मे २१ प्रतिशत और १६२६ मे २६ प्रतिशत वृद्धि हुई। इस दौरान म कृषि की स्थिति वहुत भिन्न थी। १६२७–१६२८ म कृषि उत्पादन मे केवल ३ प्रतिशत वृद्धि हुई और १६२६ मे ३ प्रतिशत कमी हो गयी। औद्योगिक विकास तथा कृषि की प्रगति की दर का अतर दिनादिन बढता जा रहा था।

ज्यो-ज्यो नये निर्माण स्थलो का उद्घाटन हुआ तथा अधिक कारखाने चालू हुए, मजदूरो तथा कर्मचारियो की सख्या बराबर बढती गयी। शहरा की आबादी बढी तो उनके लिए अधिक रोटी तथा अन्य सामग्रियो की जरूरत पडी। इस सबध मे एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्रमजीविया का वास्तविक वेतन बढ रहा था और उनकी भौतिक खुशहाली मे सुधार हो रहा था। १६२६–१६२७ मे शहरा म रोटी का उपभोग १६१३ की तुलना मे २७ प्रतिशत अधिक था हालाकि उस अवधि म शहरा की आबादी केवल १२ प्रतिशत बढी थी।

बढती हुई आबादी के लिए आवश्यक खाद्यान्न और उद्योग को कच्चा माल मुहैया करने मे किसानो को अधिकाधिक कठिनाई हो रही थी। कृषिगत क्षेत्र और पशुओ की सख्या (गाय, सुअर, भेड और बकरी)

युद्धपूर्व के आंकड़ों से अधिक हो गयी थी, मगर राज्य या ग़ैर-सरकारी बाज़ार में बेचने के लिए माल का उत्पादन बहुत कम था। यह कहना काफ़ी होगा कि जहां १९१३ में बाज़ार में २०,८ लाख टन अनाज बिका था, वहां १९१६ से १९२८ तक उसका आधा ही भाग बाज़ार में बेचा गया था। औद्योगिक केन्द्रों को खाद्यान्न की सप्लाई में गड़बड़ी होने लगी और दुकानों के सामने लम्बी कतारें देखने को मिलने लगीं। सट्टेबाज़ों, कुलकों और व्यापारियों ने इस स्थिति से लाभ उठाने में देर नहीं की। और फिर काफ़ी बेरोज़गारी होने की वजह से स्थिति और गम्भीर हो गयी। कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर विरोध-पक्ष के तत्वों ने उद्योगीकरण की रफ़्तार धीमी करने की आवाज़ ज़ोरों से उठायी।

शहरी आबादी और लाल सेना के लिए काफ़ी मात्रा में रोटी तथा अन्य रसद को सुनिश्चित करने के लिए सरकार को मजबूर होकर १९२८ में शहरों में राशनबन्दी करनी पड़ी।

इस परिस्थिति ने लेनिन के इन शब्दों की सत्यता साबित कर दी कि "छोटे पैमाने की खेती अभाव से मुक्ति नहीं दिला सकती।"* अक्तूबर क्रांति ने किसानों को ज़ारशाही उत्पीड़न और जमींदारों तथा बड़े पूंजीपतियों के शोषण से मुक्त कर दिया था। अब कृषि में मझोले किसानों की भूमिका का महत्व निर्णायक था। सरकार मझोले किसानों को दी जानेवाली सहायता में बराबर वृद्धि कर रही थी, उन्हें सहकारिता के आधार पर एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी और ग्रामीण पूंजीपतियों या कुलकों को रोके रखने के लिए उसने पूरा ज़ोर लगा दिया था। फिर भी देहाती क्षेत्र में अभी काफ़ी ग़रीबी थी, और उत्पादन की पूंजीवादी पद्धति का प्रभुत्व क़ायम था। यंत्रीकरण के संबंध में बुनियादी परिवर्तन अभी बहुत दूर थे, अधिकांश जमीन पर हाथ से काम किया जाता था, फ़सलें हाथ से बोयी और काटी जाती थीं, मवेशियों का सारा काम हाथ से किया जाता था। जैसा कि प्राचीन काल से होता आया था लकड़ी का हल, दरांती खेती के मुख्य औज़ार थे।

किसानों के खेत अभी भी छोटे टुकड़ों में बंटते जा रहे थे। १९२७ में किसानों के चकों की संख्या २ करोड़ ५० लाख यानी क्रांतिपूर्व की

---

*ब्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३९, पृष्ठ ३१४

सख्या से बीसियो लाख अधिक थी। किसानो का वर्गीय स्तरीकरण अभी भी जारी था यद्यपि उसकी रफ्तार अब पहले से धीमी थी। मझोले किसानो की सख्या बराबर बढ रही थी और उसी के साथ कुलको के खुशहाल फार्मों का अनुपात बढ रहा था और १६२६–१६२७ तक उनकी सख्या ३.६ प्रतिशत हो गयी थी। जिन किसानो को अपनी श्रमशक्ति बेचनी पडती उनकी सख्या मे भी वृद्धि हो रही थी। लगभग एक तिहाई किसान परिवारो के पास न मवेशी थे और न खेती के औजार।

छोटे-छोटे खेत, बहुत कम यत्रीकरण और श्रम की उत्पादिता का निम्न स्तर–ये ही वे मुख्य कारण थे जिनके फलस्वरूप बिक्नेयोग्य अनाज कम मात्रा मे उपलब्ध हुआ और किसान देश को पर्याप्त मात्रा मे कृषि की पैदावार मुहैया नही कर पाये। करोडो किसान परिवार पहले से कही अच्छी तरह जीवन बिताते और खा रहे थे लेकिन सरकार के हाथ बेचने के लिए उनके पास बहुत कम बचता था। पर स्थिति ऐसी थी कि अब वे ही मुख्य उत्पादक थे, न कि जमीदार और कुलक जो पहले अनाज और उद्योगोपयोगी फसले खासकर बेचने के लिए उपजाते थे। जहा तक समाजवादी क्षेत्र का सवाल है–यानी सामूहिक और राजकीय फार्मों का–उनमे कुल कृषि उत्पादन का केवल २ प्रतिशत और बाजार मे बिकनेवाली पैदावार का केवल ७ प्रतिशत पैदा होता था (१६२७ के आकडे)।

वर्गीय अन्तर्विरोधो के बढने के कारण देहात की स्थिति अधिक तनावपूर्ण हो गयी। एक ओर, गरीब और मझोले किसान सोवियत राज्य से प्राप्त होनेवाले समर्थन को देखते हुए अपना राजनीतिक कार्यकलाप तेज कर रहे थे और ग्रामीण पूजीपतियो की शोषणकारी आकाक्षाओ का विरोध अब वे अधिक साहस और दृढता के साथ करने लगे थे। दूसरी ओर, कुलक जनता पर अपना *शिकजा और ज्यादा कसने की कोशिश* कर रहे थे और इसकी खातिर कुछ भी करने को तैयार थे। भाडे पर मजदूर रखकर, उनकी जमीन ठेके पर लेकर, गरीब किसानो को अस्थायी तौर पर इस्तेमाल के लिए अपनी गाहने की मशीन या भारवाही पशु देकर वे किसानो पर अपना शिकजा कस रहे थे।

शोषक वर्गों के शेष प्रतिनिधि मध्य एशिया, काकेशिया, कजाखस्तान तथा देश के बहुतेरे अन्य गैर-रूसी छोरवर्ती क्षेत्रो मे, जो कुछ ही दिन पूर्व

रूसी साम्राज्य के सबसे पिछड़े भाग थे, ख़ास तौर पर शक्तिशाली थे। उज़्बेक जनतंत्र में भूमि और जल के राष्ट्रीयकरण की प्राज्ञप्ति पर १९२५ तक अमल नहीं किया गया था। ज़मीनों, मवेशी, जलस्रोतों और चरागाहों का काफ़ी बड़ा हिस्सा अभी तक धनी ज़मींदारों या उस इलाक़े की भाषा में बाय लोगों के हाथ में था।

१९२५ से १९२९ तक पूरे मध्य एशिया और क़ज़ाख़स्तान में भूमि और जल सुधार लागू किया गया। बड़ी सामंती जागीरें मिटा दी गयीं और कुलकों तथा मुल्लाओं और पादरियों की ज़मीनों का बड़ा भाग ज़ब्त कर लिया गया। इस प्रकार शोषण का दायरा बहुत सीमित कर दिया गया।

उस समय पूरे देश में कुलक अपनी सोवियत-विरोधी कार्रवाइयां तेज़ कर रहे थे। वे आतंकवादी हरकतों के लिए, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत अधिकारियों तथा राजनीतिक तौर पर सक्रिय किसानों की हत्या करने से भी बाज़ नहीं आते थे। सरकारी तौर पर १९२६ में ग्रामीण क्षेत्रों में ४००, १९२७ में ६०० और १९२८ में १,१२३ आतंकवादी कार्रवाइयां दर्ज हुईं। कोई दिन नहीं गुज़रता था जब कहीं न कहीं ख़ून ख़राबा, हत्या या आगज़नी की वारदात नहीं होती हो।

१९२८ में कुलकों ने एक प्रकार की अनाज-हड़ताल संगठित की जिसके फलस्वरूप राज्य द्वारा अनाज की ख़रीद आवश्यक लक्ष्य से बहुत कम हो गयी। कृषि की जो स्थिति थी उससे गांव देश को आवश्यक खाद्यान्न मुहैया करने में असमर्थ थे। उक्रइना और उत्तरी काकेशिया में फ़सल ख़राब होने से स्थिति और बिगड़ गयी। केवल यही नहीं कि इन इलाक़ों से सरकार को जितनी आशा थी उतना अनाज नहीं मिला, बल्कि उसे क्षतिग्रस्त इलाक़ों के लिए सहायता का प्रबंध करना पड़ा।

आर्थिक संस्थाओं तथा अनाज की वसूली करनेवाले कार्यकर्ताओं की ग़लतियों के चलते परिस्थिति और अधिक गम्भीर हो गयी। किसानों को औद्योगिक मालों की ज़रूरत थी मगर बिक्री व्यवस्था के कार्यकर्ताओं के कुप्रबंध के कारण ये माल गोदामों में पड़े रह गये। कर-संबंधी अधिनियमों को भी काफ़ी सख़्ती से लागू नहीं किया जा रहा था। हर मौक़े पर धनी किसान अपना कर अदा करने से किसी तरह बच निकलते थे। राज्य तथा राज्य के लिए अनाज ख़रीदनेवाली सहकारी संस्थाओं की प्रतियोगिता भी आड़े आती थी।

ग्रामीण पूजीपतियो ने इस स्थिति से खूब फायदा उठाया। वे अकारण ही अनाज का दाम बढा दिया करते या अपना जमा अनाज बेचने से सीधे-सीधे इनकार कर देते। खुले आम हडताल कर दी गयी, उसका उद्देश्य था अनाज की सप्लाई रोककर सोवियत राज्य को मजबूर करके सुविधाए लेना, पूजीवादी तत्वो को पुन चुनावो मे भाग लेने का अधिकार दिलवाना और सामान्य रूप से कुलको पर दबाव डालने से रोकना।

उस नाज़ुक घडी मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और जन कमिसार परिषद ने ३० हज़ार पार्टी सदस्यो तथा विशेष मज़दूर जत्थो को गावो मे भेजा। उनकी सहायता से गरीब किसानो ने तोड-फोड करनेवालो के खिलाफ कार्रवाई शुरू की। नयी कृषि नीति जो उन दिनो लागू की गयी थी किसानो को समझाने के लिए एक व्यापक अभियान शुरू किया गया। वित्तीय विभागो और व्यापारिक सस्थाओ के कार्यकर्ताओ ने लगन और कुशलता से अपना काम किया। गावो मे अधिक मात्रा मे औद्योगिक माल भेजा गया।

उसी समय सरकार ने कुलको और सट्टेबाज़ के विरुद्ध जो बहुत ऊचे दामो पर अनाज बेच रहे थे, अदालती कार्रवाई करने का निश्चय किया। जिन लोगो ने अपना बेशी अनाज सरकारी दाम पर बेचने से इनकार किया, उन्हे अदालतो के सामने तलब किया गया और उनसे बेशी अनाज ले लिया गया। जब्त किये गये बेशी अनाज का एक चौथाई गरीब किसानो के हवाले कर दिया गया।

अवश्य ही ये सभी सकटकालीन कार्रवाइया थी और कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार के नेताओ ने इनके उद्देश्य पर पर्दा डालने का कोई प्रयत्न नही किया। राज्य के पास उस समय न तो अनाज का सुरक्षित भडार था जिससे वह सकट का सामना कर सकता और न ही परिवर्तनीय मुद्रा थी जिससे बडे पैमाने पर अनाज का आयात किया जा सकता। मज़दूर वर्ग शहरी आबादी और लाल सेना के लिए अनाज की नियमित सप्लाई तभी सुनिश्चित कर सकता था जब उसे किसानो मे श्रमजीवी तत्वो का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता।

कार्य-योजना सही सिद्ध हुई और ग्रामीण पूजीपतियो को तुरत मुह की खानी पडी। बोल्शेविक केन्द्रीय समिति ने एक बार फिर यह दिखला दिया कि उसकी नीति सही है और पार्टी के दक्षिणपथी तत्व ग़लती पर हैं। ये लोग

कुलकों पर दबाव डालने का विरोध करते थे। इनका कहना था कि अंत में कुलक अपने आप समाजवाद को स्वीकार कर लेंगे। लेकिन तथ्य सामने थे। कुलक अपनी पुरानी सत्ता से वंचित हो जाने पर भी सरकार का विरोध करते और प्रतिरोध के नये रूप और तरीक़े तलाश करते रहे थे।

लेकिन १९२८ की घटनाओं से जाहिर था कि यह संकटकालीन नीति केवल थोड़े समय के लिए ही कारगर हो सकती थी। इन उपायों से आम तौर पर खाद्यान्न की उपज बढ़ाना असम्भव था। बोल्शेविक देख रहे थे कि इस पूरी समस्या का बुनियादी हल कुछ और है। वह यह हल है कि समाजवादी क्षेत्र को सुदृढ़ बनाया जाये, व्यापक पैमाने पर राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों का संगठन किया जाये, जो खाद्यान्न और कच्चे माल में देश की जरूरतों को पूरी कर सकेंगे। कम्युनिस्ट पार्टी की १५वीं कांग्रेस में दिसम्बर, १९२७ में जो अनुदेश तैयार किया गया उसमें यही बातें थीं।

कांग्रेस ने एक प्रस्ताव प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था कि "मौजूदा दौर में अलग-अलग किसानों के छोटे खेतों को बड़े सामूहिक फ़ार्मों में मिलाना और पुनर्गठित करना ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी का मुख्य कार्य होना चाहिए।"

इस प्रस्ताव के समय देश में करीबन १५,००० सामूहिक फ़ार्म थे जिनमें कोई दो लाख किसान परिवार शामिल थे। यह उनकी कुल संख्या के एक प्रतिशत से कम था। मुख्यतः ये सामूहिक फ़ार्म बड़े नहीं होते थे, इनमें १० से १५ चक तक हुआ करते थे। उनका लाभ केवल यहीं तक सीमित नहीं था कि आम तौर पर आमदनी बढ़ जाती थी। यह तो मिल-जुलकर काम करने और साधनों को एकत्र करने से होता ही है। राज्य की सहायता से सामूहिक फ़ार्म मशीनें, खाद तथा अन्य सामान रियायती दामों पर हासिल कर सकते थे और जल्द ही वे निजी तौर पर खेती करनेवाले किसानों से कहीं अच्छी तरह सुसज्जित हो गये। राज्य ने देखा कि सामूहिक फ़ार्म ही देहात में उसका मुख्य आधार हैं और उसने सचेत रूप से उनके विकास के लिए विशेष रूप से अनुकूल स्थितियां पैदा कीं। यद्यपि अधिकांश सामूहिक किसान पहले ग़रीब थे और उन्हें आर्टेल में काम करने का कोई अनुभव नहीं था, फिर भी उनकी फ़सल औसतन व्यक्तिगत फ़ार्मों द्वारा प्राप्त फ़सलों से अधिक होती थी।

लेकिन शुरू मे देहाती जनता को सामूहिक फार्मों की उपलब्धियो से अवगत कराना सभव नही हो पाया क्योकि इस कार्यक्षेत्र मे अनुभव, धन और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओ का अभाव था। दूसरी बाधा थी अधिकाश किसानो का ग्राम पिछड़ापन, उनमे स्वामित्व की मनोभावना की व्याप्ति जिससे कुलक लाभ उठाया करते थे। फिर शहरी उद्योग भी अभी इस स्थिति मे नही था कि ग्रामीण आबादी को मशीनें और औद्योगिक माल पर्याप्त मात्रा मे मुहैया कर सके। १६१६ मे देश के पास केवल १४ हजार ट्रैक्टर थे।

जब कम्युनिस्ट पार्टी की १५वी काग्रेस ने दिसम्बर १६२७ मे समूहीकरण की अपनी योजना घोषित की तो आशावादी लोग तक इस राय के थे कि सामूहिक फार्म आन्दोलन बहुत धीरे-धीरे बढेगा। लेकिन हुआ कुछ और ही। १६२८ की गर्मियो तक सामूहिक फार्मों की सख्या पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना मे ढाई गुनी हो गयी थी।

व्यापक पैमाने पर सामूहिक फार्म कायम करने की योजना ने शीघ्र ही अपना औचित्य साबित कर दिया।

किसानो के अधिकाधिक समूह सयुक्त रूप से ट्रैक्टरो और मशीनो की खरीदारी करने लगे। सहकारिता के अन्य रूप भी प्रचलित हुए। १५वी पार्टी काग्रेस के बाद उत्पादक सहकारी समितिया पहले से कही ज्यादा तेजी से फैली। इनका उद्देश्य सयुक्त आधार पर खेती करना और उपज को बेचना था। १६२६ मे पहले के आधे से ज्यादा गरीब और मझोले किसान सहकारी समितियो मे शामिल हो गये थे जिनमे पाच मे चार उत्पादक सहकारी समितिया थी। समूहीकरण आन्दोलन की देखरेख करने के लिए एक अखिल सघीय सामूहिक फार्म केन्द्र—कोलखोजत्सेन्त्र—कायम किया गया।

१६२८ की गर्मियो मे मास्को मे सामूहिक किसानो की प्रथम अखिल सघीय काग्रेस बुलायी गयी। इस काग्रेस मे ४०४ प्रतिनिधि उपस्थित थे और उन्होने उन निष्कर्षों पर विचार किया जो गुबेर्नियाई, प्रादेशिक और जिला स्तर पर इसी तरह की काग्रेसो मे निकाले गये थे।

सरकार की ओर से कालीनिन ने काग्रेस मे भाषण किया। उन्होने पूरे देश के जीवन मे सामूहिक फार्मों की भूमिका बतायी और कहा कि सामूहिक किसान "समाजवाद के निर्माता हैं, जिन्होने सचेत ढग से उस ससार

का जिसमें वे रहते हैं, युक्तियुक्त पुनर्निर्माण करने का बीड़ा उठाया है ताकि अर्थव्यवस्था को अपने क़ाबू में किया जा सके और उसके प्रवाह का नियंत्रण किया जा सके।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि "हम कोई दबाव नहीं डाल रहे हैं कि लोग सामूहिक फ़ार्मों में शामिल हों मगर स्वभावतः सरकार सामूहिक फ़ार्मों की सहायता करती है, और उसकी यह सहायता निजी तौर पर खेती करनेवाले किसानों को दी जानेवाली सहायता से अधिक होती है।" अधिकांश सामूहिक फ़ार्म उस समय भारवाही पशुओं तथा मानवश्रम पर निर्भर करते थे। मशीनें ख़रीदने में सामूहिक फ़ार्मों की सहायता करने के लिए राज्य ने उन्हें सुविधाजनक शर्तों पर क़र्ज़ दिये और जो किसान सामूहिक फ़ार्मों में शामिल नहीं हुए उनके हाथ ट्रैक्टरों की बिक्री पर रोक लगा दी। फिर भी सामूहिक फ़ार्मों की संख्या ट्रैक्टरों के उत्पादन से ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी। इस कारण उत्पन्न होनेवाली विसंगति को दूर करने के लिए यह तय किया गया कि सामूहिक फ़ार्मों को मशीनें राज्य द्वारा संचालित मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों के माध्यम से मुहैया की जायेंगी। इस प्रकार राज्य ने यह प्रबंध किया कि सामूहिक फ़ार्म बड़े पैमाने पर मशीनों का प्रयोग कर सकें जिसके लिए उन्हें अनाज तथा अन्य उपज की निश्चित मात्रा राज्य को देनी पड़ती थी। इन नयी प्रवृत्तियों और घटनाओं का मूल्यांकन करने के बाद गोसप्लान (राजकीय आयोजन आयोग) ने यह निश्चय किया कि प्रथम पंचवर्षीय योजना के वर्षों में यह सम्भव होगा कि ४०–५० लाख किसान खेतियों का समूहीकरण किया जाये।

उद्योग तथा भीतरी व्यापार से निजी पूंजी की बेदख़ली

समाजवादी उद्योगीकरण की नीति में संक्रमण और कृषि के समूहीकरण का अभियान यह परिलक्षित कर रहा था कि पूंजीपतियों के ख़िलाफ़, यानी शोषक वर्गों के उन शेष तत्वों के ख़िलाफ़ जो १६२१ में नयी आर्थिक नीति के लागू होने के बाद एक बार फिर उभर आये थे, सोवियत राज्य के संघर्ष में एक निर्णायक मंज़िल शुरू हो गयी है। इस समय तक देश में वर्गीय शक्तियों का संतुलन तथा आम आर्थिक और राजनीतिक स्थिति इस कार्य की पूर्ति के लिए सहायक हो गयी थी।

तीसरे दशक के मध्य मे शहरी और देहाती पूजीपति अपने परिवारो सहित कुल आबादी का केवल ४.६ प्रतिशत थे जबकि १६१३ मे उनका अनुपात १६.३ प्रतिशत था। इसका खास तौर पर ज़ोरदार इजहार मास्को के आकड़ो मे होता था। १६२६ मे उस शहर मे (फैक्टरी मालिको को छोड़कर (कोई ४ हजार मालिक ऐसे थे जो वेतनभोगी मज़दूरो से काम लेते थे। क्रातिपूर्व के आकडो का यह केवल पाचवा भाग था। इसी अवधि मे फैक्टरी मालिको की सख्या कम होकर १६१३ की कुल सख्या का बारहवा भाग रह गयी थी। उनकी सख्या केवल १४५ थी। यह स्थिति मास्को मे थी जहा निजी पूजी का पुनरुत्थान विशेष रूप से स्पष्ट था। अन्य नगरो मे पूजीपतियो की स्थिति और कमज़ोर थी।

साधारणत: निजी पूजी ने अर्थव्यवस्था की उन्ही शाखाओ मे अपने पैर जमाये थे जिनका आम उपभोक्ताओ से गहरा सबध था और जहा तेजी से मुनाफा कमाने की गुजाइश थी। निजी उद्यम मुख्यतया छोटे किस्म के थे। उनमे केवल कुछ ही मध्यम पैमाने के थे। मजदूरो की औसत सख्या राज्य के अपने कारखानो मे प्रति कारखाना २५७ थी मगर निजी स्वामित्व के कारखानो मे केवल २२ थी। बड़े पैमाने के उद्योग मे निजी स्वामित्व के उद्यमो का हिस्सा कुल पैदावार का केवल ४ प्रतिशत था और मजदूरो मे उसका केवल २ ५ प्रतिशत।

छोटे पैमाने के उद्योग का हाल इससे बिल्कुल भिन्न था। यहा निजी पूजीपति का प्रभुत्व था। १६२५-१६२६ के आर्थिक वर्ष मे छोटे पैमाने के उद्योग की कुल पैदावार मे निजी क्षेत्र का हिस्सा ८२ प्रतिशत था। फुटकर बिक्री मे भी खासकर कृषि की उपज की बिक्री मे निजी पूजी का महत्वपूर्ण स्थान था (कुल बिक्री मे उसका भाग ४३ प्रतिशत था)। निजी व्यापार की विशेषता यह थी कि इसके अतर्गत बहुत छोटी तथा सर्वत्र बिखरी हुई दुकानो का एक अत्यत व्यापक जाल बिछा हुआ था। १६२५-१६२६ मे निजी दुकानो की सख्या अपने शिखर पर पहुच गयी थी और ५ लाख से अधिक थी। लेकिन इनमे से आधे से अधिक छोटी दुकानें और स्टाल थे और इनमे अधिकाश नगरो मे थे।

इस समय तक वैदेशिक स्वामित्व के उद्यमो की कोई महत्वपूर्ण भूमिका सोवियत अर्थतत्र मे नही रह गयी थी। शक्तिशाली वैदेशिक पूजीपति सर्वहारा राज्य से सहयोग करने को तैयार नही थे और उन्होने परस्पर

लाभदायक संधियां करने से इनकार कर दिया था। वैदेशिक उद्यमकर्ताओं को दी गयी विशेष सुविधाओं के आधार पर उनका औद्योगिक उत्पादन १९२७-१९२८ में अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया था जब देश की कुल औद्योगिक पैदावार में उसका हिस्सा ०.६ प्रतिशत था। इन उद्यमों में सबसे बड़ा "लेना गोल्डफ़ील्ड्स" का कन्सेशन इर्कूत्स्क गुबेर्निया में स्थित था। इसके मालिकों को सोना, लोहा और अलोहीय धातु निकालने का अधिकार प्राप्त था। अमरीकी इजारेदारों ने जार्जिया में मंगनीज़ की खदान तथा स्वीडिश फ़र्म ने मास्को में बालबेयरिंग के उत्पादन का कन्सेशन प्राप्त कर लिया था। इन ठेकों पर हस्ताक्षर करते समय सोवियत सरकार ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि वैदेशिक पूंजी अर्थतंत्र की मुख्य शाखाओं में पैर जमा न पाये। उसने साम्राज्यवादियों द्वारा घोर हानि पहुंचानेवाली शर्तें लागू करने के प्रयत्नों को दृढ़तापूर्वक ठुकरा दिया था। १९२६ में सोवियत उद्योग में वैदेशिक विनियोग ५ करोड़ रूबल तक पहुंच गया था। तीन साल बाद देश में ५९ कन्सेशन थे। इनमें १२ जर्मन थे, ११ जापानी, ६ ब्रिटिश और ४ अमरीकी। इन सबों में कुल मिलाकर २० हज़ार मज़दूर तथा दफ़्तर कर्मचारी काम करते थे।

इन उद्यमों के मालिकों ने जो समझौते किये थे, उनका पग-पग पर उल्लंघन शुरू किया। उनमें से अधिकांश सोवियत संघ के प्राकृतिक साधनों को लूट-खसोट रहे थे। उन्हें श्रम प्रक्रियाओं के यंत्रीकरण तथा नये उपकरण लागू करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। "लेना गोल्डफ़ील्ड्स" ने शीघ्र ही अपने सोने की खदान की दुर्व्यवस्था कर दी और कई उद्यमों को बन्द करना पड़ा। इससे हज़ारों आदमी बेरोजगार हो गये और राज्य को बड़ी क्षति उठानी पड़ी। जार्जिया में अमरीकनों से सहयोग का भी कोई लाभदायक नतीजा नहीं निकला। इस प्रकार के केवल कुछ इक्के-दुक्के कन्सेशन समझौते ही पूरी तरह सफल हुए। इनमें स्वीडिश उद्यमकर्ताओं के साथ समझौता था जिन्होंने सोवियत संघ में बालबेयरिंग के उत्पादन को, जो पहले पहल उन्हीं दिनों शुरू किया गया था, बढ़ावा देने के लिए बहुत कुछ किया। अमरीकी करोड़पति हैमर द्वारा मास्को में संगठित पेंसिल उत्पादन भी सफल हुआ।

लेकिन कुल मिलाकर अपने उद्योग को विकसित करने के लिए कन्सेशन के रूप में वैदेशिक विनियोग को आकर्षित करने का सोवियत

सरकार का प्रयास सतोषजनक नही सिद्ध हुआ। इसका कारण सबसे बढकर पूजीवादी जगत के शासक क्षेत्रा की सोवियत-विरोधी नीति थी। जिन कन्सेशना के लिए हस्ताक्षर हो चुके थे उनमे अधिकाश प्रत्याशित नतीजे नही निकले। वैदेशिक फर्मों ने जिन्हें केवल अपने मुनाफे स मतलब था, थोडे ही दिना मे सोवियत कानूना का उल्लघन करना शुरू किया और उनके प्रति मजदूरा म द्वेष की भावना फैल गयी। उनके तकनीकी तथा आर्थिक कार्यकलाप के परिणाम नगण्य थे। ज्या-ज्यो समाजवादी उद्योगीकरण ने प्रगति की थी कन्सेशन अधिकाधिक पुराने पडते गये। १६३० म उनको बद करन के लिए दृढतापूवक कार्रवाई की गयी।

अगस्त, १६२६ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने ' वैदेशिक स्वामित्व के तथा निजी उद्यमो म पार्टी कार्य" के बारे मे एक निणय किया। यह जरूरी हो गया था क्याकि निजी और वैदेशिक उद्यमा के मालिका तथा उनम काम करनवाले मजदूरा मे जटिल तथा विरोधात्मक सबध उत्पन्न हो गये थे। मालिक दोमुही नीति अपना रहे थे। उन्हाने जो जिम्मेदारिया स्वीकार की थी, उन्हे उन्हान पूरा नही किया, जिससे मजदूरो को सक्रिय प्रतिरोध और हडताल का कदम उठाना पडा और उसी के साथ उन्हाने मजदूरा के विभिन्न समूहो मे झगडा खडा करने का प्रयत्न किया, उनमे से कुछ को रिश्वत देन की चेष्टा की और उन्ह मिलकर अपनी ट्रेड-यूनियन बनान स रोकना चाहा। कम्युनिस्ट पार्टी ने इन कारखाना म काम करनेवाले मजदूरो मे प्रचार काय को ज्यादा तेज करने का आवाहन किया। विशेप ध्यान पार्टी इकाइयो तथा ट्रेड-यूनियनो के काम पर दिया गया जिन्हें मजदूरा के आर्थिक, सास्कृतिक तथा रोजमर्रे के हिता की रक्षा करनी थी। राज्य ने निजी पूजीपतियो के विरुद्ध मजदूरो के सघर्प का हर तरह समथन किया। समाजवादी अदालतो ने भी इन मजदूरो के हितो की रक्षा की और सभी सोवियत लोग ने उनका समथन किया। श्रमजीवी जानत थे कि उद्योग तथा भीतरी व्यापार मे निजी पूजी जो उनके हितो को कुचल रही थी, कुछ ही दिनो की मेहमान है और वह दिन दूर नही जब पूजीपतिया का सदा के लिए नामोनिशान मिट जायेगा।

१४वी पार्टी काग्रेस ने समाजवादी उद्योग का सवतोमुखी विकास करने तथा राज्य व्यापार व्यवस्था को और सुदृढ बनाने और उसका विस्तार करने, उद्योग और भीतरी व्यापार दोनो से पूजीवादी तत्वा को

बेदख़ल करने तथा समाजवाद की आर्थिक और राजनीतिक विजय प्राप्त करने के लिए एक मार्ग निर्धारित किया था। जब तक समाजवादी क्षेत्र इस स्थिति में नहीं था कि पूरी तरह निजी पूंजी की जगह ले सके, तब तक उससे बिल्कुल छुटकारा पाना असम्भव था। इस स्थिति को स्वीकार करना था। अस्थायी रूप से निजी पूंजी से काम लेना सम्भव और जरूरी था और तब धीरे-धीरे उसको सीमित करके अंत में उसे पूर्णतः बेदख़ल करना था।

इस काम को हाथ में लेते समय सरकार ने सबसे पहले आर्थिक साधन इस्तेमाल किया। इनमें एक सबसे महत्वपूर्ण उपाय समाजवादी उद्योग तथा व्यापार की उन शाखाओं का विस्तार था जो पहले मुख्यतः या पूर्णतः निजी पूंजी के दायरे में थीं। सरकार ने निजी उद्यमकर्ता के दायरे को सीमित करने के लिए कई उपाय किये। मालों तथा कच्चे सामान के स्टाक को कम या बिल्कुल बन्द कर दिया, क़र्ज़ देने से इनकार किया, निजी उद्योगपति और व्यापारी के लिए माल भाड़ा बढ़ा दिया और करों में परिवर्तन किया।

ऐसी परिस्थिति में निजी व्यापारियों को मुनाफ़ा कमाते रहने के लिए मुख्यतया बाजार में दुर्लभ वस्तुओं का दाम बहुत बढ़ा देने का रास्ता अपनाना पड़ा। जिन वस्तुओं की सप्लाई पर्याप्त मात्रा में थी, उनके राजकीय तथा निजी व्यापार के दामों में बहुत कम अंतर था। जैसे मिसाल के लिए माचिस निजी बाज़ार में २ से ३ प्रतिशत महंगी थी। लेकिन जिन वस्तुओं की कमी थी उनके दाम में बड़ा अन्तर था। १९२६ में सूती कपड़ा निजी बाज़ार में ३० प्रतिशत से अधिक महंगा था। वही बात नमक पर लागू होती थी। लेकिन ज्यों ही सरकारी दुकानों में दुर्लभ वस्तुओं की आपूर्ति करना और उनका सरकारी दाम कम करना सम्भव हुआ, निजी क्षेत्र में भी तुरंत दाम कम होने लगे।

यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि निजी व्यापारियों तथा उद्यमकर्ताओं के प्रति श्रमजीवी जनता की भावना क्या रही होगी। बार-बार उन्होंने निजी उद्यम पर कड़े प्रतिबंध तथा निजी मुनाफ़े पर अधिक कर लगाने की मांग की।

औद्योगिक विस्तार के फलस्वरूप १६२७ में आम उपभोग के सामानों का दाम कम करना सम्भव हुआ और इसने सट्टेबाज की गुंजाइश बहुत कम हो गयी। देश भर में निजी व्यापारियों की दुकानें बन्द होने लगी। १६२७ के दौरान उनकी संख्या में २५ प्रतिशत कमी हो गयी तथा उनके कुल क्रयविक्रय में और अधिक कमी हुई।

लेकिन जहां तक कृषि की उपज का सवाल है निजी व्यापारियों का प्रभुत्व अब भी बना हुआ था। उदाहरण में १६२७ में एक मजदूर का आधा वेतन निजी क्षेत्र में से खाद्य पदार्थ खरीदने में खर्च हो जाता था।

१६२८–१६२६ में उद्योग में निजी क्षेत्र की हालत तेजी से खराब हो गयी। १६२१ का पारित क़ानून जिसके अनुसार निजी व्यक्तियों का सरकारी उद्यम ठेके पर लेने की आज्ञा थी, मंसूख कर दिया गया। निजी उद्यमकर्ताओं के ठेका की शर्तों पर पुनर्विलोकन किया गया। निजी उद्यमकर्ताओं और व्यापारियों के लिए राजकीय कारखानों से प्रतियोगिता करना सम्भव नहीं रहा था क्योंकि राजकीय कारखानों में अच्छा और सस्ता माल तैयार होने लगा था। मिसाल के लिए निजी पूंजी आटा पिसाई, चमड़े के काम और साधारण प्रकार के तम्बाकू के उद्योगों से बेदखल हो गयी। १६२६ में छोटे निजी संस्थानों तथा अलग-अलग दस्तकारों द्वारा जो अधिकांशत: पूंजीवादी उद्यमकर्ताओं तथा निजी दुकानों के मालिकों पर निर्भर करते थे, देश में बिकनेवाले ७५ प्रतिशत जूते बनाये जाते थे। राज्य केवल १ करोड़ जोड़े जूते मुहैया कर सकता था जबकि देश में जरूरत साढ़े चार करोड़ की थी। दो साल बाद यह स्थिति बदल गयी। राज्य ४ करोड़ १० लाख जोड़े जूते तैयार करने लगा।

निजी पूंजीपतियों ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अपने अधीन काम करनेवालों का शोषण तेज कर दिया, नाना प्रकार की गैर-कानूनी हरकतें की जैसे स्वयं अपनी देखरेख में आर्टेल स्थापित किये। इस कारण पूंजीवादी उद्यमों में वर्ग संघर्ष तेज हुआ और अधिक हड़तालें होने लगीं। अदालतों ने भी श्रमजीवी जनता के अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। हड़ताली मजदूरों ने मांग की कि जिन कारखानों में वे काम करते हैं उन्हें सरकार के हवाले कर दिया जाये।

उन दिनों किसान परिवार अपना ६७ प्रतिशत सूती कपड़ा, ८३ प्रतिशत कृषि उपकरण, अपनी छतों के लिए ८८ प्रतिशत लोहे की चादरें

तथा ९६ प्रतिशत कीलें राजकीय तथा सहकारी दुकानों से ख़रीदने लगे थे। पेचीदा कृषि मशीनें तथा खाद केवल सरकारी दुकानों से ही ली जा सकती थी। निजी मध्यस्थ व्यापारी की अब आवश्यकता नहीं रह गयी थी। इसके अलावा निजी व्यापारियों की मुनाफ़े की होड़ तथा देश की सामयिक आर्थिक कठिनाइयों से लाभ उठाने और सबसे बढ़कर दुर्लभ कच्चा माल हासिल करने की चेष्टा का मतलब यह था कि निजी क्षेत्र समाजवादी क्षेत्र के विकास में बाधा बन गया था। १९२८–१९२९ में राजकीय क्षेत्र कृषि के कच्चे माल के अभाव के कारण जूते तथा चमड़े के माल, स्टार्च तथा राब, तम्बाकू और वनस्पति तेल और मक्खन का योजना लक्ष्य पूरा नहीं कर सका। निजी क्षेत्र ने बड़ी मात्रा में ये सामान अपने पास जमाकर लिये थे मगर आधुनिक मशीनों के अभाव के कारण उसकी पैदावार कम और घटिया थी।

वित्तीय संस्थाओं ने कई जांच पड़ताल की जिसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि निजी व्यापार तथा औद्योगिक संस्थान, जो बन्द हो गये थे, वे भी, अपना मुनाफ़ा किस प्रकार बांटते हैं। इससे पता चला कि उनकी आमदनी का बड़ा भाग अवैध सट्टेबाजी के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

यह देखकर कि उद्योग अब मुख्यतया पुनः अपने पैरों पर खड़ा हो गया है और आम समूहीकरण का प्रथम फल सामने आने लगा है, और पूंजीवादी तत्व अवैध कार्रवाइयों में लगे हुए हैं, सोवियत सरकार ने निजी पूंजीपतियों के विरुद्ध आर्थिक और प्रशासकीय दबाव बढ़ाने का निश्चय किया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुल निर्मित सामान में निजी पूंजी का हिस्सा कम होते १९२९ में ०.३ प्रतिशत रह गया। उस समय केवल १७७ निजी उद्यम रह गये थे जिनमें १,७०० मजदूर काम करते थे। सोवियत राज्य अब पूंजीवादी उद्योग के राष्ट्रीयकरण को पूरा कर रहा था, जिसकी बुनियाद क्रांति के तुरंत बाद रख दी गयी थी।

कम्युनिस्ट पार्टी की १६वीं कांग्रेस (जून–जुलाई १९३०) में केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि की गयी कि यह सवाल कि पूंजीवादी तत्वों पर समाजवाद का प्रभुत्व होगा या पूंजीवादी तत्व समाजवाद को दबा लेंगे, हमेशा के लिए हल हो चुका है और इसका हल समाजवाद के पक्ष में है।

उस समय तक निजी पूजी को व्यापारिक व्यवस्था से भी कमोबेश पूर्णत बेदखल कर दिया गया था। राजकीय व्यापार व्यवस्था द्वारा देश के समस्त माल का क्रयविक्रय होने लगा था। १६३१ मे फुटकर क्रयविक्रय का १०० प्रतिशत इसके नियत्रण मे था।

निजी पूजी को अब जान के लाले पडे थे और इसलिए वह जान बचाने के सघर्ष मे कोई भी चाल चलने को तैयार था। पूजीपतियो ने राजकीय सस्थाओ मे घुसना चाहा, उनके कार्यकर्ताओ को रिश्वत देने की कोशिश की और अक्सर सीधे बडे आर्थिक अपराध और प्रतिक्रातिकारी हरकते करने लगे। इसका नतीजा यही हुआ कि उनकी बर्बादी का दिन करीब आ गया। समाजवादी अर्थव्यवस्था से प्रतियोगिता मे पूजीपतियो को पराजय हुई और यह जाहिर हो गया कि उनकी आर्थिक सरगर्मिया समयानुसार नही रही है।

पूजीवादी इतिहासकारो का कहना है कि नगरो मे निजी पूजी को मुख्यतया बल प्रयोग तथा दमन के जरिये बेदखल किया गया। लेकिन आकडो से बिल्कुल ही भिन्न चित्र सामने आता है। भूतपूर्व मालिको मे से केवल ४५ प्रतिशत को जेल या निर्वासन का दड दिया गया। इन सभी ने या तो अपराध किये थे या वे सट्टेबाजी, रिश्वत या धोखेबाजी मे पकडे गये थे। पूजीपतियो के विशाल बहुमत को यह तय करने की पूरी आजादी दी गयी कि वे भविष्य मे किस क्षेत्र मे काम करना चाहते है। उन्हे सभी मेहनतकशो के साथ समानता के आधार पर समस्त जनगण के सृजनात्मक श्रम प्रयासो मे भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया।

नयी आर्थिक नीति के दौरान उभरनेवाले पूजीपति कभी भी कोई महत्वपूर्ण आर्थिक या राजनीतिक शक्ति नही थे। इसका मतलब यह है कि सोवियत सरकार उनके खिलाफ कम से कम बल प्रयोग का सहारा लेकर वर्ग सघर्ष करने मे समर्थ थी। इसी लिए एक पूरे वर्ग को बलपूर्वक बेदखल करने का नारा देहाती पूजीपतियो या कुलको के सबध मे तो दिया गया मगर शहरी पूजीपतियो के सबध मे, जो उनसे कही अधिक क्षीण थे, बोल्शेविको ने बिल्कुल ही भिन्न तरीके अपनाये।

पांचवां अध्याय

प्रथम पंचवर्षीय योजना
१९२८–१९३२

योजना की तैयारी और स्वीकृति

२० मई, १९२९ को सोवियत संघ की सोवियतों की पांचवीं कांग्रेस मास्को में बोल्शोई थियेटर में हुई जहां लगता था कल ही की बात है कि प्रतिनिधिगण राजकीय बिजलीकरण योजना (गोएलरो) पर विचार कर रहे थे। तब, १९२० के अंत में समाजवादी अर्थव्यवस्था के निर्माण का एक १०–१५ वर्ष का कार्यक्रम विचाराधीन था। सीले, सर्द हाल के धीमे प्रकाश तथा प्रतिनिधियों के सैनिक वर्दी कोटों में और वक्ताओं के शब्दों में कितना वैषम्य था। तबसे शांतिकालीन कार्य के नौ वर्ष बीत चुके थे और स्थिति इतनी बदल गयी थी कि पहचानी नहीं जा सकती थी। हाल में बिजली का तेज प्रकाश था तथा स्टॉल्ज़ और बल्कनी कारखानों, निर्माण स्थलों और फ़ार्मों के लोगों से भरी हुई थीं।

इन वर्षों में प्राप्त अनुभव से आर्थिक विकास की एक पंचवर्षीय योजना का सवाल उठाना सम्भव हो गया था। बड़े पैमाने के पुनर्निर्माण कार्य, पूंजी विनियोजन में वृद्धि तथा सुलभ साधनों और निधि का जहां तक हो सके अत्यंत यथोचित उपयोग किये जाने के लिए केंद्रीकृत योजना व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना था। भावी कार्यभार के एक वैज्ञानिक ढंग से सुसम्पादित कार्यक्रम की जरूरत थी जिसमें ठोस आंकड़ों तथा समयसूची का उल्लेख किया जाये, और इस प्रकार अलग-अलग उद्यमों और क्षेत्रों के लिए और साथ ही पूरे उद्योग, कृषि और व्यापार के लिए विकास की सम्भावनाओं का विवरण किया जाये।

इस तरह की योजना का प्रारूप तैयार करना बहुत जटिल काम था। था। मानवजाति के इतिहास में इस तरह का प्रयोग पहले पहल किया जा रहा था।
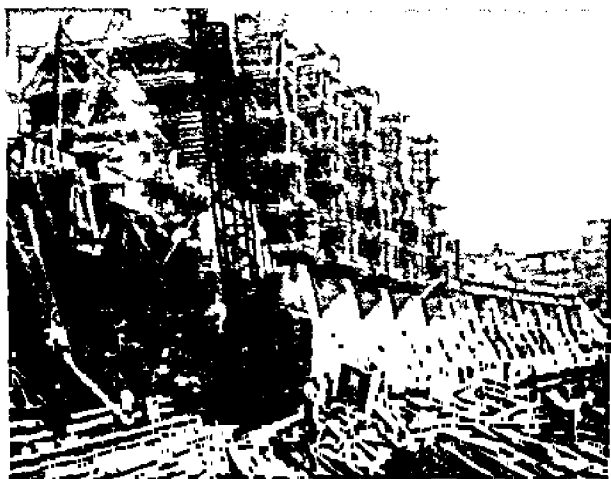
दनेपर पनबिजलीघर का निर्माण

प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रथम प्रारूप जो १९२६ मे तैयार किये गये थे, अस्वीकार करने पडे क्योकि उन सब मे कमोबेश त्रुटिया मौजूद थी। लेकिन पूर्वोदाहरण और प्रशिक्षित विशपज्ञो का अभाव ही समस्या का एकमात्र कारण नही था। राज्य नियोजन आयोग और सर्वोच्च राष्ट्रीय अर्थ परिषद तथा कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की प्रधान सस्थाओ मे बहुत दिनो तक इस बात पर एक मत नही हो सका कि पचवर्षीय योजना के मुख्य कार्यभारो का स्वरूप और उद्देश्य क्या होगा। त्रोत्स्की के समर्थको की माग थी कि योजना के प्रारम्भिक वर्षो मे पूजी विनियोग तथा औद्योगिक पैदावार का विकास अधिकतम हो और अवधि के अत तक उसे धीरे धीरे घटा दिया जाये। इस उद्देश्य से उन्होने सुझाव दिया कि इस नीति को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक धन पूरी आबादी और खासकर किसानो पर कर भार बढा कर जुटाया जाये।

दूसरी ओर दक्षिणपथी पथभ्रष्टो ने सुझाव दिया कि औद्योगिक विकास की ऊची दर की इच्छा नही करनी चाहिए और उत्पादन के साधनो के उत्पादन के बदले हलके उद्योग, उपभोग माल पर अधिक जोर देना

चाहिए। इस नीति के समर्थकों के नज़दीक कुलक उत्पादन को सक्रिय रूप से शरीक किये बिना आर्थिक प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती थी।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि इस ख़ास विषय पर वाद-विवाद कोई साधारण बहस नहीं थी, जो किसी भी नये प्रस्थान में अनिवार्य होती है। विचारों के भेद का स्वरूप राजनीतिक था और उसका कारण सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण के प्रति राजनीतिक दृष्टिकोणों में भिन्नता थी। मूलत: त्रोत्स्कीवादी तथा दक्षिणपंथी पथभ्रष्ट ऐसा दृष्टिकोण अपना रहे थे, जो पूंजीवादी विशेषज्ञों के दृष्टिकोण से मिलता-जुलता था, जो अपने ज्ञान तथा अपने विश्वासों के चलते पूंजीवादी विकास के नमूनों के सिवा कोई और बात स्वीकार करने में असमर्थ थे। उन्हें किसी और तरह सोवियत अर्थव्यवस्था को विकसित करने की सम्भावना में विश्वास नहीं था।

पार्टी ने दृढ़तापूर्वक "अति उद्योगीकरण" की स्कीम की निन्दा की क्योंकि इसका अटूट संबंध किसानों के शोषण से था। दक्षिणपंथी पथभ्रष्टों का भी कोई समर्थन नहीं किया गया जिनका नेतृत्व अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के तीन सदस्य कर रहे थे। वे थे बुख़ारिन, "प्राव्दा" के मुख्य संपादक, रीकोव, जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष तथा तोम्स्की, ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केंद्रीय परिषद के अध्यक्ष।

इन विरोध-पक्षियों की शिकस्त एक महत्वपूर्ण घटना थी। पार्टी की १५वीं कांग्रेस ने जो दिसम्बर, १९२७ में आयोजित हुई, इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि विरोध-पक्ष के विचार लेनिनवाद से पृथक हैं। त्रोत्स्कीवादी विरोध-पक्ष का समर्थन तथा इसके विचारों का प्रचार पार्टी सदस्यता के विपरीत घोषित किया गया।* कांग्रेस ने प्रथम पंचवर्षीय योजना तैयार करने के लिए निर्देश स्वीकार किये। आर्थिक विकास की

---

*नवम्बर, १९२७ में अक्तूबर क्रांति की दसवीं जयंती के समारोह के अवसर पर त्रोत्स्कीवादियों ने मास्को और लेनिनग्राद में स्वयं अपने प्रदर्शन संगठित करने का प्रयत्न किया। यह केवल पार्टी नियमों का ही उल्लंघन नहीं, सोवियत-विरोधी हरकत भी थी। उसी महीने, नवम्बर १९२७ में त्रोत्स्की और जिनोव्येव को कम्युनिस्ट पार्टी से निकाल दिया गया। पार्टी बहस के दौरान देखा गया कि ९९ प्रतिशत से अधिक कम्युनिस्टों ने केंद्रीय समिति की लाइन का समर्थन किया।

कार्यान्विति की ऐसी परिकल्पना की गयी थी जिससे प्रतिवर्ष उद्योग, कृषि तथा व्यापार मे राजकीय क्षेत्र का अश निरतर बढता रहेगा, और विकास की दर पूजीवादी देशो से कही ज्यादा ऊची होगी। भारी उद्योग को प्राथमिकता दी गयी।

१६२८—१६२६ मे दक्षिणपथियो के विचारो पर बहुत कडी आलोचना की गयी। पार्टी दस्तावेजो मे यह बात नोट की गयी कि उद्योगीकरण की रफ्तार धीमी करने तथा ग्रामीण पूजीपतियो के अधिकारो को पूणत सुरक्षित रखने के उनके आग्रह का कार्यरूप में परिणाम होता "पूजीवादी तत्वो से वर्गीय सहयोग की नीति, कुलको के खिलाफ सर्वहारा वर्ग सघर्ष की नीति के बदले 'कुलको का समाजवाद मे विलयन' की नीति।"

अप्रैल, १६२६ मे १६ वे पार्टी सम्मेलन मे दक्षिणपथी पथभ्रष्टो की पूर्णत शिकस्त हुई। उस समय तक पचवर्षीय योजना का प्रारूप पूरा हो चुका था। इसकी तैयारी मे महत्वपूर्ण हिस्सा केवल नियोजन आयोग तथा प्रधान वैज्ञानिक सस्थाओ ने ही नही, बल्कि स्वय मेहनतकशो ने भी लिया था। उनका कार्यकलाप स्पष्टत इस बात का सबूत था कि निर्माण-कार्य के महान लक्ष्य सचमुच जनता को प्रेरित कर रहे थे।

वैज्ञानिको ने दिलचस्प पहलकदमी प्रदर्शित की। मार्च, १६२८ मे प्रमुख वैज्ञानिको के एक बडे समूह ने जन कमिसार परिषद के नाम एक पत्र मे इस बात पर जोर दिया कि पचवर्षीय योजना मे रसायन की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया जाये। बाख, ज़ेलीस्की, कुर्नाकोव, फ़वोर्स्की, फेर्स्मन आदि वैज्ञानिक उस समय रूस तथा विदेशो दोनो जगह हो रहे काम मे दृष्टिगोचर प्रवृत्तियो का विश्लेषण करके यह बतलाने की स्थिति मे हो गये थे कि एक नये युग का आविर्भाव हो रहा है जो अपने साथ विकिरणशीलता तथा परमाणु ऊर्जा के प्रयोग की असीम सभावनाए लायेगा। सरकार के सदस्यो की उन वैज्ञानिको के साथ एक बैठक हुई जिसमे उनके सुझावो पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया और बाद मे इस बहस का नतीजा पचवर्षीय योजना के लक्ष्याको मे प्रदर्शित हुआ। इसी समय जन कमिसार परिषद ने अर्थव्यवस्था मे रसायन उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के एक सदस्य रुद्जुताक के तहत एक समिति नियुक्त की। योजना के विनिधाना मे वृद्धि की गयी और दो या तीन साल के भीतर विशालकाय रासायनिक

कारखानों का निर्माण वोबरिकी (अब नोवोमोस्कोव्स्क), बेरेज़निकी, ख़िबीनी, अक्तूबिन्स्क, मोगिल्योव, यारोस्लाव्ल, आदि में हुआ।

१६ वें पार्टी सम्मेलन ने पंचवर्षीय योजना के दो प्रारूपों – एक अल्पतम और दूसरे युक्ततम प्रारूप – पर विचार किया। युक्ततम में अल्पतम से २० प्रतिशत बड़े लक्ष्यांक पेश किये गये थे। सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने इसी को स्वीकार किया। इस तरह पार्टी ने आर्थिक विकास की दर को किसी प्रकार भी कम करनेवाले सभी सुझावों को दृढ़तापूर्वक रद्द कर दिया। अब योजना को क़ानून का रूप देने के लिए सोवियत संघ की सोवियतों की कांग्रेस द्वारा उसे स्वीकार होना था।

२० मई, १६२६ को मास्को के बोल्शोई थियेटर में राज्य नियोजन आयोग के प्रधान क्रजिजानोव्स्की ने रिपोर्ट पेश की। मंच पर एक विशाल नक़शे पर यह दिखाया गया था कि पांच वर्ष में सोवियत संघ क्या हो जायेगा। आख़िर में नक़शा आप अपनी कहानी कहने लगा जब दर्जनों सितारे, बिंदियां, वर्ग और रेखाएं ज्वलित हो उठीं। इससे नये बिजलीघरों, कोयला खदानों, तेलकूपों, ट्रैक्टर और मोटर कारख़ानों, सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों, रेलवे और नये नगरों का चित्र मन के सामने आ गया। जब रिपोर्ट के अंत में नक़शे पर सारी बत्तियां जल उठीं तो ऐसा लगा मानो जादू की छड़ी से देश के भविष्य पर से पर्दा हट गया और १६३३ का सोवियत संघ आंखों के सामने आ गया – एक महान औद्योगिक और सामूहिक कृषि की शक्ति। प्रतिनिधियों ने इस चित्र का ज़ोरदार स्वागत किया। हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। सब लोग उठकर खड़े हो गये और उन्होंने बड़े उत्साह से "इन्टरनेशनल" गीत गाया।

बहस कई दिनों तक चलती रही। २८ मई, १६२६ को देश की सर्वोच्च विधायक संस्था ने योजना को स्वीकार कर लिया।

उस समय को देखते हुए योजना बहुत भारी भरकम थी। उसके मुख्य लक्ष्यों, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों तथा देश के विभिन्न इलाक़ों के समक्ष ठोस कार्यभारों का विवरण तीन भारी खंडों में किया गया था। योजना के हर भाग में निर्माण कार्यक्रम का केंद्रीय महत्व था। देश की अर्थव्यवस्था में ६५ अरब रूबल का विनियोजन किया जानेवाला था यानी गत पांच वर्षों के विनियोग से ढाई गुना ज्यादा। दूसरे शब्दों में नये उद्यमों के

निर्माण तथा पुरानो के पुनर्निर्माण के लिए प्रतिदिन ३ करोड ५० लाख रूबल के हिसाव से विनिधान किया गया था। समस्त औद्योगिक विनिधान मे तीन चौथाई से अधिक भारी उद्योग के लिए निर्दिष्ट कर दिया गया था। आधुनिक मशीनरी से सज्जित १,५०० से अधिक बडे उद्यमा के निर्माण की योजनाए तैयार की गयी। उद्योग को देश के अर्थव्यवस्था मे सबसे आगे का स्थान ग्रहण करना और उसका प्रमुख क्षेत्र बनना था। इस नये औद्योगिक स्थिति के समर्थन से यह आशा की गयी थी कि कृषि मे समाजवादी क्षेत्र इतनी प्रगति कर लेगा कि १९३३ तक कुल पैदावार मे उसका हिस्सा १९२७–१९२८ के २ प्रतिशत के बदले १५ प्रतिशत हो जायेगा। कोई ५०–६० लाख किसाना की जोन की जमीना को सामूहिक और राजकीय फार्मों म एकत्रित करने की योजना बनायी गयी।

योजना के एक महत्वपूर्ण भाग मे सोवियत सघ मे सास्कृतिक क्रांति को उन्नति देने के कार्यभार निर्धारित किय गये थे। सार्विक प्राथमिक शिक्षा लागू करना, ४० साल से कम आयुवालो मे निरक्षरता का उन्मूलन करना तथा सास्कृतिक और शैक्षणिक सस्थानो की व्यवस्था का काफ़ी विस्तार करना था।

योजना का मुख्य उद्देश्य देश के उद्योगीकरण तथा कृषि के समूहीकरण को उन्नति देना, सोवियत सघ को एक कृषि प्रधान देश से एक औद्योगिक देश बनाना और ऐसा करके पूजीवादी तत्वों को अधिक कारगर ढग से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों से बेदखल करना और आखिरकार एक समाजवादी अर्थव्यवस्था की बुनियाद डालना था।

सोवियत सघ का औद्योगिक शक्ति बनना

प्रथम पचवर्षीय योजना तैयार करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ट्रेड-यूनियनो और कोम्सोमोल की सहायता से बडे पैमाने पर प्रचार कार्य भी कर रही थी जिसका उद्देश्य इन नये ध्येया को पूरा करने के काम म श्रमजीवी जनता को शरीक करना था। २० जनवरी, १९२९ को "प्राव्दा" ने पहली बार लेनिन का लेख "प्रतियोगिता कैसे सगठित की जानी चाहिए?" प्रकाशित किया। उस समय की स्थिति मे वह इतना प्रासगिक था कि लगता था कि उसे १९१७ के अत मे नहीं, बल्कि खास इस अवसर पर लिखा गया था।

लेनिन ने लिखा था कि केवल समाजवाद के अंतर्गत ही श्रमजीवी को अपने लिए, स्वयं अपने राज्य के लिए, अपने समस्त जनगण की समृद्धि के लिए काम करने का अवसर प्राप्त होगा। समाजवाद ने ही पहले पहल सार्वजनिक प्रतियोगिता का अवसर प्रदान किया। वर्षों के शोषण पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था ने निपुणता के असीम स्रोत को घोंट दिया और पैरों तले रौंद डाला था। समाजवाद में ही मेहनतकशों की बहुसंख्या के लिए सृजन-कार्य में भाग लेना, अपनी योग्यता को उन्नति देना और अपनी पहलक़दमी प्रदर्शित करना सम्भव होगा। मानव द्वारा मानव के शोषण का अंत होने के बाद ही होड़ के स्थान पर बिरादराना सहयोग और करोड़ों लोगों की श्रम में प्रतियोगिता क़ायम की जा सकती है।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं सोवियत संघ में ज्यों-ज्यों उत्पादन के नये संबंध सुदृढ़ हुए काम के प्रति इस नये रुख़ का जन्म हुआ और वह जड़ पकड़ने लगा। शुरू में इसका इज़हार कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक में और फिर अग्रणी ब्रिगेड आन्दोलन में हुआ। प्रथम पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ में आम प्रतियोगिता के लिए स्थिति बहुत ही अनुकूल थी। कारख़ानों तथा नये शहरों का निर्माण, और पुराने कारख़ानों का पुनर्निर्माण अधिकाधिक तेज़ी से हो रहा था, कुशल कार्यकर्ताओं की आवश्यकता बढ़ रही थी और सामान्यतः श्रमजीवियों की भौतिक स्थिति में सुधार हो रहा था। मज़दूर वर्ग के विघटन की प्रक्रिया बहुत पहले ही अतीत की बात हो चुकी थी। १९२९ तक देश के आधे से अधिक मज़दूर पुश्तैनी मज़दूर थे। पुनर्निर्माण आन्दोलन के प्रारंभ में केवल २० प्रतिशत मज़दूर उद्योग में नवागन्तुक थे। ८० प्रतिशत कम से कम तीन साल पहले से उद्योग में काम कर चुके थे और लगभग आधे मज़दूरों ने क्रांति के पहले उद्योग में काम शुरू किया था। अक्तूबर क्रांति के बाद निरक्षर मज़दूरों की संख्या बहुत कम हो गयी थी (१९२९ में १४ प्रतिशत तक कम)।

फिर भी ज़ाहिर है कि उद्योग में काफ़ी संख्या में पिछड़े लोग भी थे। बहुत से लोग जो कल तक किसान थे, जिनकी अपनी जोत की ज़मीन थी, अब भी सपने देखा करते कि पैसे बचाकर अपने गांव वापस जायेंगे और एक घोड़ा या गाय ख़रीदेंगे। कोई २० प्रतिशत फ़ैक्टरी मज़दूर अख़बार नहीं पढ़ते थे, हर सातवां आदमी तो अनपढ़ था ही। उस समय जबकि जीवन स्तर सापेक्षतः नीचा था, जब खाद्य पदार्थों की राशन लागू

थी, और बड़े पैमाने के गृह निर्माण-कार्य के लिए निधि नही थी, स्वभावत: ही कुछ मजदूर और दफ्तरी कर्मचारी सतुष्ट नही थे। लेकिन सोवियत सघ के मजदूर वर्ग का चरित्र-निरूपण उनके द्वारा नही होता था। मजदूर वर्ग की मुख्य अगुआ शक्ति पुराने अनुभवी मजदूर थे। १६२६ के वसत मे केवल १२ प्रतिशत फैक्टरी मजदूर कम्युनिस्ट थे और ८५ प्रतिशत कोम्सोमोल सदस्य थे। यही लोग शहरो के सर्वहारा का नेतृत्व करते थे। प्रथम पचवर्षीय योजना को पूरा करने मे कम्युनिस्ट पार्टी मुख्य समर्थन की आशा इन्ही मजदूरो से कर रही थी।

अग्रणी मजदूरो ने लेनिन के इस लेख को कदम उठाने के लिए पार्टी का आह्वान माना। ३५ वर्षीय पूतिन ऐसे ही एक मजदूर थे। वह लेनिनग्राद मे "क्रास्नी वोबोर्जेत्स" फैक्टरी मे ब्रिगेड नायक थे। वह केवल ब्रिगेड नायक ही नही, बल्कि प्रचारक भी थे। मजदूर उनकी बाते बडे ध्यान से सुना करते थे। उनका सारा ब्रिगेड उनके गिर्द जमा हो जाता, प्रश्न पूछे जाते और बहुत सी बातो पर बहस होती। एक दिन प्रतियोगिता पर लेनिन का लेख पढते-पढते वे आपस मे बाते करने लगे। उस समय उनका कारखाना योजना के अपने ध्येयो को पूरा नही कर पा रहा था। इसका कारण विशेषकर काम से अक्सर जी चुराना, देर मे काम पर आना और घटिया काम करना था। मगर पूतिन का ब्रिगेड प्रगतिशील समझा जाता था। इसके ८ व्यक्तियो मे चार पार्टी के सदस्य थे और एक कोम्सोमोल का। ये लोग हमेशा अपने कोटे की अतिपूर्ति किया करते थे लेकिन सवाल था दूसरो से उनका काम पूरा कराना। इस सवाल पर पहले भी काफी सोच विचार किया गया, लेकिन लेनिन के लेख ने उनको सही रास्ता दिखा दिया। उन्होने अन्य ब्रिगेडो के सामने प्रतियोगिता का प्रस्ताव रखने का निश्चय किया और कुछ देर सोच-विचार के बाद उन्होने मिलकर ये शर्ते तय की · कार्यमूल्य मे वे स्वेच्छापूर्वक १० प्रतिशत की कटौती स्वीकार करेगे, श्रम उत्पादिता मे १० प्रतिशत वृद्धि करेगे, खराब माल नही बनायेंगे और वर्कशाप मे अपने ब्रिगेड को सबसे अनुशासित सिद्ध करने का प्रयत्न करेगे। उन दिनो इतनी जिम्मेदारी भी बहुत थी क्योंकि बडी सख्या मे मजदूर पढना नही जानते थे, नियमित रूप से सारे धर्म त्योहार मनाया करते थे और इस नाम पर काम मे

अनुपस्थिति को उचित समझते थे। पूतिन और उनके साथियों के प्रस्ताव को शुरू में अत्यंत सन्देह की दृष्टि से देखा गया और उसकी बहुत कुछ कड़ी आलोचना भी हुई:

"नये वान बनने आये हैं!"

"तुम्हारा प्रस्ताव मेरे जैसों के लिए नहीं है!"

"तुम हमारी ही जेब खाली कराने चले हो!"

इस तरह की प्रतिक्रिया केवल १९२९ में ही सुनने में नहीं आती थी जब समाजवादी प्रतियोगिता पहले पहल व्यापक पैमाने पर संगठित की जा रही थी। प्रसिद्ध नवीकारक इज़ोतोव को १९३२ में भी इसी प्रकार की सन्देहजनक बातें सुनने का मौक़ा मिला। जब उन्होंने कोयला निकालने के प्रगतिशील उपायों के संबंध में "प्राव्दा" में एक लेख प्रकाशित किया तो बहुतेरे कोयला खोदनेवालों ने स्पष्टतः उसे नापसन्द किया: "बड़े उस्ताद बन कर काम का ढंग बताने चले हैं! अपना काम चुपचाप क्यों नहीं करते!" लेकिन पुरानी आदतें और पूर्वाग्रह जन उत्साह की उभरती लहरों को रोक नहीं सके। कम्युनिस्टों तथा कोम्सोमोल सदस्यों का संगठनात्मक कार्य सफल हुआ। बहुसंख्यक मज़दूर समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन का समर्थन करने और उसमें भाग लेने लगे। जो लोग कल तक किसान थे स्वेच्छापूर्वक अपने कार्यमूल्यों में कटौती करने पर राज़ी हो गये, युवा मज़दूरों ने अपना कर्तव्य बिना किसी आना कानी के पूरा किया, और पुराने अनुभवी लोगों ने अपने "काम के गुर" युवा मज़दूरों को सिखाये। इन सब बातों से काम के प्रति लोगों के दृष्टिकोण तथा उनकी सामाजिक चेतना में परिवर्तन लक्षित हो रहा था।

प्रतियोगिता आन्दोलन से पहलक़दमी और सम्मिलित कार्य को प्रोत्साहन मिला, अनुशासन में सुधार हुआ, मज़दूर अपने कार्य को एक नयी और अधिक सृजनात्मक दृष्टिकोण से देखने और स्वयं अपने को मालिक समझने लगे। धीरे-धीरे उद्योग के सभी प्रधान क्षेत्रों और देश के सभी मुख्य उद्यम तथा निर्माण-कार्यों में नयी व्यवस्था चालू हो गयी। जो लोग अपनी ज़िम्मेदारियां विशेष रूप से अच्छी तरह निभाते, उन्हें समय-समय पर प्रतियोगिता विजेता घोषित किया जाता। उन्हें लाल झंडे पुरस्कार दिये जाते तथा उनके संबंध में समाचारपत्रों में लेख लिखे जाते और रेडियो पर कार्यक्रम प्रसारित किया जाता। अग्रणी मज़दूरों को अवकाश

गृहो और आरोग्य निवासो के प्रवेशपत्र दिये जाते। वृद्ध मजदूरो ने आज तक उन विशेष प्रमाणपत्रो को सुरक्षित रखा है जो उन्हे प्रथम पचवर्षीय योजना काल मे बढिया काम के लिए प्रदान किया गया था।

१९२९ के अंत मे अग्रणी मजदूर ब्रिगेडो की अखिल सघीय काग्रेस मास्को मे आयोजित की गयी। उक्रइना, उराल, बेलोरूस, तथा मध्य एशिया, लेनिनग्राद और नीज्नी नोवगोरोद के मजदूरो ने अपनी अपनी उपलब्धियो के बारे म बतलाया। उत्सव का वातावरण होने के बावजूद मजदूरो ने अपने काम के सबध मे कारोबारी ढग से बहस की, भावी प्रयोजनाओ की रूपरेखा तैयार की और विभिन्न त्रुटिया को दूर करने के उपायो पर विचार किया।

काग्रेस के दौरान सोरमोवो के मजदूरो की पहलक़दमी पर श्रेष्ठ मजदूर कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये। इस तरह समाजवादी प्रतियोगिता को आयोजित तथा करोडो मजदूरो को उसमे शरीक होने के लिए प्रोत्साहित करके कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के सवश्रेष्ठ प्रतिनिधि बडी सख्या मे शामिल किये। समाजवाद के निर्माण-कार्य ने जोर पकडा और बहुत से काम जो कभी असम्भव लगते थे अब पूरे किये जा रहे थे।

आजकल उराल और साइबेरिया के औद्योगिक केंद्रो – मग्नितोगोर्स्क और नोवोकुज्नेत्स्क के औद्योगिक प्रतिष्ठानो की ख्याति सोवियत सघ की सीमाओ से बाहर दूर-दूर तक फैली हुई है। १९२९ मे आज के मग्नितोगोर्स्क के स्थान पर एक रेलवे स्टेशन तक नही था। एक रेल का डिब्बा उसके काम आया, फिर भी सारे देश मे लोग इसके नाम से परिचित थे। शहरो और गावो मे पोस्टर लगे हुए देखे जा सकते थे जिनमे लोगो से कहा गया था कि मग्नितोगोर्स्क का निर्माण-कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। हजारो आदमियो न इस चुनौती को स्वीकार किया और उराल के लिए रवाना हो गये।

हा, शुरू मे कठिनाइया बहुत थीं। अधिकाश काम हाथ से करना पडता था। निर्माण-कार्य के लिए इने गिने ट्रैक्टर और लारिया थी। अक्सर साधारण घोडा गाडियो, ठेला गाडियो, फावडो, गरम कपडो और तिरपाल के दस्तानो की भी कमी थी, और मजदूरो को बैरको मे रहना पडता था। जब बडी सख्या मे मजदूर आये थे तो उन्ह तहखानो मे रहना पडता। कुछ लोग कठिनाइयो से हार मानकर वापस चले गये, लकिन अधिकाश इस परीक्षा मे पूरे उतरे।

12*

ऐसी ही कठिन स्थितियों में ख़िबीनी में, तूला के निकट बेरेज़्निकी में, अक्तूबिन्स्क में रसायन कारख़ानों का तथा आज के नोवोकुज़्नेत्स्क नगर के निकट धातुकर्म कारख़ाने का निर्माण-कार्य शुरू हुआ। उन दिनों में न तो यह शहर था और न यह धातुकर्म कारख़ाना। योजना में उनका नाम ही नाम था। लेकिन १९२९ में ही दिन-रात काम पूरे ज़ोरों पर चल रहा था। रात में काम सर्चलाइटों की सहायता से किया जाता और तेज़ पाले में जब एक्सकेवेटर इस्तेमाल नहीं किये जा सकते तो आदमी स्वयं अपने हाथों हाथों में फावड़े लेकर सख़्त जमीन खोदते रहते। निर्धारित कार्य कोटा की अति पूर्ति, स्वेच्छापूर्वक वेशी समय तथा छुट्टी के दिनों में काम हर कहीं साधारण परम्परा बन गयी।

सर्वश्रेष्ठ, चेतन तथा सक्रिय मज़दूरों ने "पैसे ख़ोरों" को भी उत्साहित कर दिया। जब पार्टी और कोम्सोमोल सदस्य मज़दूर किसी आकस्मिक काम में सहायता देने बीच रात में उठा करते तो उनकी देखा देखी दूसरे भी उठते। जब साथी मज़दूर दिन भर के थका देनेवाले काम के बाद भी किसी आवश्यक कार्य की पूर्ति के लिए जुट जाते या छुट्टी के समय दूसरों को पढ़ना लिखना सिखाने लगते तो किसी के लिए भी उदासीन रहना असम्भव था।

उस समय के एक प्रसिद्ध निर्माण मज़दूर मीरसैइद अर्दुआनोव ने उन दिनों को याद करते हुए लिखा है: "शुरू में हमारा श्रमिक दल भौतिक लाभार्जन पर आधारित था। लेकिन जैसे-जैसे हम भावी कारख़ाने की नींव के लिए दसियों और सैंकड़ों घन मीटर मिट्टी काटते गये, हमें धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि हम क्या और किसके लिए निर्माण कर रहे हैं।" इस दल में ३५ बेलदार थे और उनमें बहुमत तातार और बाश्क़ीर थे। अनेक बार भूतपूर्व कुलकों ने जो बेरेज़्निकी रसायन कारख़ाने के निर्माण मज़दूरों में शामिल हो गये थे, मीरसैइद तथा उनके दल पर हावी होने का प्रयत्न किया जो समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन में भाग ले रहे थे। मीरसैइद के साथियों में एक की हत्या कर दी गयी और स्वयं उनको भी बहुत दिन अस्पताल में रहना पड़ा। लेकिन यह दुःसाहसिक कार्रवाइयां सफल नहीं रहीं, बल्कि इनके कारण हो रही घटनाओं का सार समझने में मदद मिली। बेलदार पहले से भी अच्छी तरह काम करने लगे, उन्होंने प्रयत्न किया कि श्रमिक दल के सभी साथी पढ़ना लिखना सीख लें, नये पेशे
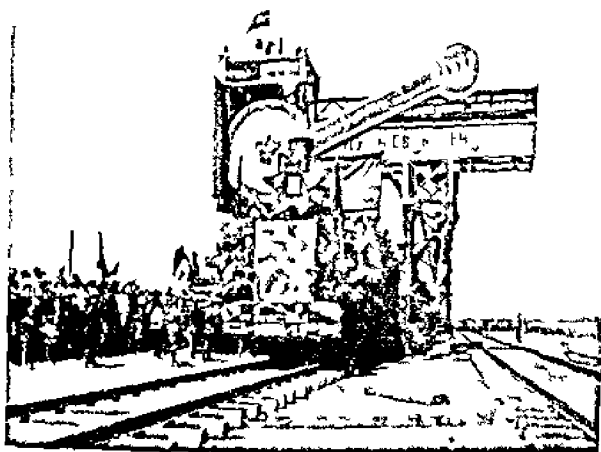
नयी तुर्किस्तान–साइबेरिया रेलवे पर पहली यात्रा। १६२६

सीखे। श्रमिक दल के चौदह आदमी मीरसैइद की अगआई मे पार्टी के सदस्य बने। श्रमिक दल एक अग्रणी ब्रिगेड बन गया।

मजदूर वर्ग का श्रम उत्साह बढता गया। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि प्रथम पचवर्षीय योजना के लक्ष्यो को समय से पहले ही पूरा करना सम्भव होगा। यह बात खासकर इसलिए और भी महत्वपूर्ण थी कि १६२६ की गर्मियो म सोवियत सघ की अतर्राष्ट्रीय स्थिति काफी कठिन हो गयी थी। साम्राज्यवादियो ने अपनी साधारण धमकियो और उकसावो के बजाय सीधे सैनिक हमले शुरू कर दिये थे जैसा कि मानचूरियन सेना तथा रूसी सफेद गार्ड द्वारा चीनी पूर्वी रेलवे पर कब्जा करने के प्रयत्न से जाहिर होता था। स्थिति का तक़ाज़ा था कि पचवर्षीय योजना के कार्यक्रम का पुन मूल्याकन किया जाये, जिसके बाद भारी उद्योग के विस्तार को, खासकर उसकी उन शाखाओ को जो सोवियत सघ की प्रतिरक्षा के लिए बुनियादी महत्व की थी, तेज करने का निश्चय किया गया। परिणामस्वरूप धन के सशोधित विनियोजन तथा उद्योगीकरण की दर मे अधिक तेजी और बढते समाजवादी प्रतियोगिता आदोलन के कारण

समाजवादी निर्माण में महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त हुईं। १ मई, १९३० को (निर्धारित योजना से सत्रह महीने पहले) मध्य एशिया और साइबेरिया को जोड़नेवाली रेलवे लाइन चालू हुई। इसे तुर्कसिब (तुर्किस्तान साइबेरियाई रेलवे) कहा जाता था। यह प्राय: १,५०० किलोमीटर लंबी थी और कज़ाखस्तान, किर्गिज़स्तान और रूसी संघ को जोड़ती थी। नई मशीनों को, निर्माण मजदूरों के काम और रहन-सहन को देखकर स्थानीय निवासी हैरान थे। बड़े बूढ़े पहली बार रेलवे इंजन देखकर यह समझे कि शैतान उन्हें चलाता है, लेकिन नौजवानों ने उनके अन्धविश्वास का जवाब हंसकर दिया। जुमअली उमरोव ने भी जीवन को एक नयी दृष्टि से देखा। छब्बीस वर्ष की आयु में जब उसे अभी पढ़ना लिखना भी प्राय: नहीं आता था वह तुर्कसिब निर्माण कार्यस्थल पर काम करने गया। काम के दौरान उसने शिक्षा प्राप्त की और कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया। लेकिन रेलवे जिस दिन खुल गयी उस दिन तक उसे यह विश्वास नहीं हो सकता था कि कभी उसे इस लाइन का निरीक्षक नियुक्त किया जायेगा।

जीवन के सभी क्षेत्रों में नई परिवर्तनाएं अपना असर दिखा रही थीं। स्वयं जनता ही जो अब देश की मालिक थी, इनका सृजन कर रही थी।

१७ जून, १९३० को स्तालिनग्राद में पहला ट्रैक्टर बनाया गया। सरातोव से क्षेत्रीय पार्टी सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि ट्रैक्टर कारखाने पहुंचे जिससे प्रतीत होता है कि उस समय प्रथम सोवियत ट्रैक्टर की उत्पत्ति को कितना महत्त्व दिया गया था। कुछ दिन बाद ट्रैक्टर नम्बर १ को राजधानी लाया गया। मास्को निवासियों ने हर्षध्वनि से उसका स्वागत किया। उसे बोल्शोई थियेटर तक लाया गया जहां कम्युनिस्ट पार्टी की १६वीं कांग्रेस हो रही थी। प्रतिनिधियों ने इस घोषणा का जयध्वनि से स्वागत किया कि देश का प्रथम ट्रैक्टर कारखाना निर्धारित समय से दस महीने पहले तैयार हो गया था।

जिन लोगों को मास्को जाने का अवसर मिले वे उस ट्रैक्टर को देख सकते हैं। अब वह अतीत की अन्य यादगारों के साथ क्रांति-म्यूज़ियम में रखा हुआ है। वह एक पुराने ढंग की मशीन है जो अपने शक्तिशाली आधुनिक प्रतिरूपों से बहुत भिन्न है। फिर भी वह साधारण अर्थ में "प्रदर्शनीय वस्तु" नहीं है: तेईस वर्ष तक इसने खेतों में समाजवाद के

ध्येय की सेवा की है और बिना अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है कि आज भी वह समाजवाद के ध्येय की सेवा कर रहा है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के वर्षों की उपलब्धियों में एक सबसे महत्वपूर्ण घटना संश्लिष्ट रबड़ उद्योग की स्थापना थी। इस बात की घोषणा से कि सोवियत संघ में संश्लिष्ट रबड़ का उत्पादन होने लगा है, सारी दुनिया में सनसनी फैल गयी थी।

इस बीच यारोस्लाव्ल, वोरोनेज और येफ़ेमोव में संश्लिष्ट रबड़ के बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण हो रहा था। १६३२ की पतझड़ में पहले दोनों कारखानों में उत्पादन शुरू हो गया था। जर्मनी ने इसके पांच वर्ष बाद संश्लिष्ट रबड़ का उत्पादन शुरू किया और संयुक्त राज्य अमरीका ने तो १६४२ में शुरू किया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना की उपलब्धियों में इस तरह के अनेक कारनामे हैं। सोवियत संघ से बाहर कम लोग यह विश्वास कर सकते थे कि एक दिन मास्को स्वयं अपना बेयरिंग पैदा करने लगेगा। लेकिन अविश्वासियों को निराश होना पड़ा—एक बेयरिंग फैक्टरी कायम हो गयी। जब सरकार ने इजोरा फैक्टरी को ब्लूमिंग मिल के लिए आर्डर दिया तो यह कल्पनालोक की बात लगती थी। अमरीकी इजारे सोवियत संघ से ब्लूमिंग के लिए बहुत अधिक दाम, वास्तविक दाम से सात गुना ज्यादा मांग रहे थे। उन्हें यक़ीन था कि सोवियत संघ के सामने अमरीका से ब्लूमिंग खरीदने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है। लेकिन उनका अनुमान गलत निकला। इजोरा फैक्टरी ने सरकारी आर्डर नौ महीनों में पूरा कर दिया।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के इतिहास में द्नेपर पनबिजलीघर के निर्माण को विशेष स्थान मिलना चाहिए।

देश के बिजलीकरण के नारे का पूरी आबादी ने बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया था। सबसे दक्ष कार्यकर्ता और आधुनिकतम मशीनें इसके निर्माण के लिए भेजी गयीं। इस निर्माण में वास्तव में सारे देश ने भाग लिया। एक प्रमुख सोवियत बिजली विशेषज्ञ और आगे चलकर अकादमीशियन वीन्तेर इसके प्रधान थे। १६३२ में ५,२०० से अधिक कम्युनिस्ट तथा ७,५०० कोम्सोमोल सदस्य इस निर्माण-कार्य में भाग ले रहे थे। वास्तव में यह एक अगुआ शक्ति थी जिसने दसियों हजारों निर्माणकर्मियों

के लिए नमूना पेश किया। कोई दिन ऐसा नहीं होता था जब मजदूर या इंजीनियर नवीन प्रक्रियाओं को अपनाने का सुझाव न प्रस्तुत करते हों जिनसे कार्य को निर्धारित समय से पहले सम्पन्न करना सम्भव हो सके। प्रथम टर्बाइन का ढांचा ३४ कार्य दिनों में खड़ा किया गया। निर्माण स्थल पर तकनीकी सलाहकार की हैसियत से काम करनेवाले अमरीकी विशेषज्ञों को विश्वास नहीं होता था – उनके देश में इस प्रकार के कार्य को सम्पन्न करने में औसतन ४५ कार्य दिन लगते थे। उन्हें इससे भी अधिक आश्चर्य तब हुआ जब पांचवें टर्बाइन को उनकी देखा देखी २४ कार्य दिनों में कर दिया गया।

बांध को निर्धारित समय से पहले पूरा कर लेने की खातिर निर्माण मजदूरों ने हर रोज अपनी पाली खत्म होने के बाद एक अतिरिक्त "समाजवादी घंटा" काम करने का निश्चय किया। कम्युनिस्ट तथा कोम्सोमोल सदस्यों की इस पहलक़दमी का शीघ्र ही हजारों ग़ैर-पार्टी मजदूरों ने भी समर्थन किया। समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन के दौरान अगुआ मजदूरों ने अपने कोटे से दुगुना काम किया।

दिन प्रति दिन, घंटा प्रति घंटा बांध में प्रगति हो रही थी। वह ७६० मीटर लम्बा और ६४ मीटर ऊंचा था, यानी एक बीस मंज़िला इमारत से भी ज्यादा ऊंचा। १ मई, १९३२ को द्नेपर पनबिजलीघर ने बिजली दी।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर अखिल संघीय केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के प्रतिनिधि कालीनिन तथा भारी उद्योग के जन कमिसार ओर्जोनिकीद्ज़े उपस्थित थे। सत्तर सर्वश्रेष्ठ निर्माण मजदूरों को सरकारी पदक दिये गये। इस निर्माण-कार्य में भाग लेनेवाले ४५,००० मजदूरों को बधाई देते हुए ओर्जोनिकीद्ज़े ने कहा: "यह बिजलीघर जिसे हमने स्वयं अपने प्रयास से बनाया है, संसार में अपने प्रकार का सबसे बड़ा है। इस महान कार्य की शुरुआत पर अविश्वासियों की सारी बक-बक और विदेशों में लोगों के द्वेषपूर्ण उल्लास के बावजूद अब हम अविश्वासियों और सन्देह करनेवालों की ओर मुड़कर कह सकते हैं – आइये और स्वयं देख लीजिये: द्नेपर पनबिजलीघर चालू हो गया है।"

१९३२ में मग्नितोगोर्स्क तथा कुज़्नेत्स्क की धमन-भट्ठियां कच्चे लोहे का उत्पादन करने लगी थीं। खिबीनी की ऐपेटाइट को लेनिनग्राद तथा

उक्रइना मे खाद के रूप मे तैयार किया जा रहा था। खारकोव मे ट्रैक्टर और नीज्नी नोवगोरोद (गोर्की) मे मोटर कारखाने क्लीन, मोगिल्योव और लेनिनग्राद म कृत्रिम रेशा फ़ैक्टरिया चालू हो चुकी थी, बेरेज़्निकी और वोस्क्रेसेन्स्क म रसायन कारखाने, क्रास्नोउराल्स्क म ताबा पिघल कारखाना तथा ताशकन्द कृषि मशीन कारखाना भी निर्मित हो चुके थे।

१ अक्तूबर, १६२८ और १६३२ की अवधि म कुल १५०० बडे औद्योगिक उद्यमो का निर्माण हुआ जिसका मतलब यह था कि रोज़ एक नया औद्योगिक उद्यम चालू किया जा रहा था।

पहले के पिछडे जातीय छोरवर्ती इलाको मे विकास विशेष तेज़ी के साथ हुआ। जहा पुराने औद्योगिक केद्रो मे उत्पादन की मात्रा मे १०० प्रतिशत वृद्धि हुई वहा जातीय जनतत्रो मे वृद्धि की दर २५० प्रतिशत थी। इस तरह लेनिन की जातियो सबधी नीति को कारगर ढग से कार्यान्वित किया जा रहा था। रूस की उत्पीडन के शिकार ग़ैर-रूसी जातियो के आर्थिक पिछडेपन के उन्मूलन की पक्की नीव डाली जा चुकी थी।

पुराने औद्योगिक केद्रो मे भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। अनेक फैक्टरियो का बडे पैमाने पर पुनर्निर्माण किया गया। बाकू तेल कूपा और दोनत्स बेसिन की कोयला खदानो मे नयी मशीनें लगायी गयी। बहुत पुराने उद्यमो जैसे मास्को की "क्रास्नी प्रोलेतारी" मशीन टूल फ़ैक्टरी, कोलोम्ना के रेलवे इजन कारखाने और लेनिनग्राद के "क्रास्नी त्रेऊगोल्निक" रबड कारखाने मे नयी जान डाली गयी।

पुराने "अमो" मोटर कारखाने के स्थान पर यूरोप का एक सबसे बडा मोटर कारखाना खडा हो रहा था, मास्को केवल सूती कपडा का केन्द्र नहीं रह गया था। सोवियत सघ की राजधानी मशीन-निर्माण उद्योग तथा बिजली इजीनियरिग का केन्द्र बन गयी थी।

देश भर मे श्रम के ज़रिये क़दम-क़दम पर देश का कायापलट हो रहा था। पूजीवाद पर समाजवाद की श्रेष्ठता जिसे पहले केवल सैद्धातिक रूप से सिद्ध किया जाता था, अब सोवियत सघ मे व्यवहार रूप मे प्रदर्शित हो रही थी। सोवियतो की धरती के मित्रो की निगाह खाद्य पदार्थ और रिहायशी मकानो के अभाव के अलावा बहुत कुछ देख रही थी। उनकी नज़रो के सामने निर्माणाधीन परियोजनाओ और सामूहिक फ़ार्मों का देश था, ऐसी जनता थी जिसने शापण और बेरोज़गारी को

मिटा दिया था, ऐसा राज्य था जिसने दुनिया में सबसे छोटा कार्य दिन जारी किया था और प्रत्येक श्रमजीवी को काम, अध्ययन तथा विश्राम के समान अधिकारों की जमानत दी थी।

वे सभी लोग जो समाजवाद के प्रति वर्गीय द्वेष की भावना से अन्धे नहीं हो गये थे, समझ रहे थे कि सोवियत संघ की कठिनाइयां विकास सम्बन्धी कठिनाइयों के सिवा और कुछ नहीं थी।

उस समय संसार के छठे भाग पर ही समाजवाद का उदय हुआ था। सोवियत लोग इससे भलि भांति अवगत थे, अपने उज्ज्वल भविष्य में विश्वास रखते थे और इसकी ख़ातिर अनेक प्रतिबंधों और अभावों को स्वीकार करने तथा कुर्बानी करने को तैयार थे। सोवियत उद्योग का विकास वास्तव में अविश्वसनीय दर से हुआ और १९३१ तक मशीन-निर्माण उद्योग, बिजली इंजीनियरिंग और तेल उद्योग में योजना नियत समय से पहले ही पूरी हो चुकी थी। जनवरी १९३३ में कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अधिवेशन ने इस बात की पुष्टि की कि सोवियत संघ को एक महान औद्योगिक शक्ति में परिवर्तित करने का निर्णायक क़दम उठाया जा चुका है, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की समस्त शाखाओं के तकनीकी पुनर्सज्जा की आधारशिला रखी जा चुकी है और समाजवाद की आर्थिक बुनियाद डाली जा चुकी है।

यह कम्युनिस्ट पार्टी, मज़दूर वर्ग और समस्त सोवियत जनता की एक महान विजय थी।

बीस बरस से कम ही अर्सा पहले, १९१३ में रूस की पैदावार में ६० प्रतिशत कृषि पैदावार होती थी। देश के सारे मशीन-निर्माण उद्योग की सालाना पैदावार केवल १,७५४ मशीन टूल थी। देश में एक भी ट्रैक्टर या मोटर का निर्माण नहीं होता था और १९२८ तक गांवों में शहरों से अधिक माल पैदा होता था।

पांच साल भी नहीं गुजरने पाये थे कि देश की अर्थव्यवस्था की कुल पैदावार में उद्योग का भाग आधे से कहीं अधिक हो गया और भारी उद्योग का कुलों उत्पादन हल्के उद्योग से अधिक हो गया। १९३२ में १९,७०० मशीन टूलों (१९२८ का १० गुना), ४९,००० ट्रैक्टरों (१९२८ का ३८ गुना), २३,९०० मोटर गाड़ियों (१९२८ का लगभग ३० गुना) का

निर्माण हुआ। बिजली शक्ति, खाद, गैस, तेल, सीमेंट, कागज़ आदि की पैदावार मे बडी वृद्धि हुई।

लेकिन महत्वपूर्ण तबदीलिया पैदावार की मात्रा तथा अर्थव्यवस्था के ढाचे के भीतरी परिवर्तनो तक सीमित नही थी। मूल बात यह थी कि ये सफलताए समाजवादी उद्योग द्वारा प्राप्त की गयी थी, ऐसे उद्योग द्वारा जो जनता की सम्पत्ति थी और जिसका निरन्तर विकास राजकीय योजना के अनुसार हो रहा था जिसकी प्रगति सर्वहारा अधिनायकत्व को सुदृढ बना रही थी। दुनिया ने इससे पहले किसी अर्थव्यवस्था को इतनी तेजी से विकास करते नही देखा था। समाजवाद का निर्माण पहले पहल हो रहा था और पहले पहल मानवजाति को इसके निर्णायक सुलाभो को देखने का मौका मिला था।

समूहीकरण की विजय

१९२६-१९२९ की अवधि मे तेज औद्योगिक विकास की प्राप्ति तथा कृषि के पुनर्गठन मे प्रारभिक प्रभावशाली सफलता से प्रेरित होकर अनेक पार्टी कार्यकर्ताओ ने, स्थानीय शासन सम्बन्धी सस्थाओ के प्रधान समूहीकरण को तेज करने का सुझाव दिया। मिसाल के लिए, जार्जिया मे सोवियतो की काग्रेस ने इस आशय का एक विशेष प्रस्ताव भी स्वीकार किया। १९२९ के वसत मे देश के केन्द्रीय इलाको तथा मध्य एशिया मे इसी तरह के विचार प्रकट किये गये। सर्वहारा राज्य को कृषि की उपज की सख्त जरूरत थी। अत मेहनतकश जनता को आवश्यक खाद्य पदार्थ तथा उद्योग को आवश्यक कच्चा माल यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र मुहैया करने की इच्छा स्वाभाविक थी। १९२९ के वसत और गर्मी मे कई इलाको मे सम्पूर्ण समूहीकरण का रुख अपनाया गया।

किसानो के बडे हिस्से सामूहिक फार्मो मे शामिल होने लगे। साल के अत तक गरीब तथा मझोले किसान परिवारो का प्राय पाचवा भाग सामूहिक फार्मो मे मिला लिया गया था। प्रथम पचवर्षीय योजना के लक्ष्याक प्रथम वर्ष समाप्त होने से पहले ही पूरे हो चुके थे। नवम्बर, १९२९ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के अधिवेशन ने सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण मे एक नये ऐतिहासिक दौर के प्रादुर्भाव पर जोर दिया।

१६२६ के उत्तरार्द्ध में गांवों में क्रांति के समय के जैसा उत्साह देखने में आया था। कृषि में काम करनेवाले करोड़ों लोगों का उत्साह नयी जीवन पद्धति की प्रेरणा का प्रतिबिंब था जो पहले ही से शहरों की विशेषता बन चुकी थी। हर रोज़ अख़बारों और रेडियो प्रसारण में नयी निर्माण परियोजनाओं तथा समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन के नये वीरों के समाचार मिला करते। नयी फ़ैक्टरियां बन रही थीं और अधिकाधिक गांवों में बिजली की बत्ती प्रकाश फैला रही थी। किसान घरों में परम्परागत देव प्रतिमाओं का स्थान लाउडस्पीकरों ने ले लिया था। ट्रैक्टर तथा अन्य मशीनें अधिकाधिक नज़र आने लगी थीं। शहरी मज़दूरों और किसानों के बीच सहयोग के नये-नये रूपों का प्रसार उस ज़माने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा था। पार्टी तथा ट्रेड-यूनियन संगठनों के प्रस्ताव के अनुसार बड़ी फ़ैक्टरियां अलग-अलग गांवों के सहायतार्थ ज़िम्मेदार बना दी जातीं और वे वहां अपने ब्रिगेड भेजा करतीं जो बोलशेविकों की कृषि सम्बन्धी नीति के बुनियादी पहलुओं की व्याख्या करते थे, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक काम में सहायता देते थे और अक्सर किसानों के रोज़मर्रे के काम में मदद करते। अलग-अलग गांवों और आगे चलकर पूरे के पूरे क्षेत्रों ने फ़ैक्टरियों के साथ उच्चतम उत्पादन के लिए प्रतियोगिता संबंधी विशेष इक़रारनामे किये। इनके अंतर्गत शहरी मज़दूर गांवों को समर्थन की ज़मानत देते और विभिन्न प्रकार का सामान जिनकी किसानों को बड़ी ज़रूरत थी, अधिक मात्रा में पैदा करने का वायदा करते; किसान सामूहिक फ़ार्मों की स्थापना के लिए अधिक संयुक्त प्रयास करते तथा कम से कम समय में सरकार को अनाज तथा अन्य कृषि पदार्थ मुहैया करने की योजना बनाते।

सामान्यतः सामूहिक फ़ार्मों के संगठन में सबसे सक्रिय भूमिका कम्युनिस्टों, कोम्सोमोल सदस्यों तथा ग़ैर-पार्टी कार्यकर्ताओं ने अदा की जो अपने-अपने ज़िलों के निवासियों में अच्छी तरह परिचित थे। इनमें से अक्सर ग़रीब किसान थे जो गृहयुद्ध में भाग ले चुके थे। किसानों में उनकी प्रतिष्ठा व्यापक समूहीकरण की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी ख़ासकर इसलिए कि अभी बड़ी भारी समस्याओं को हल करना बाक़ी था। पहले की ही तरह कृषि मशीनों का बड़ा अभाव था और पहले से ज़्यादा कुलकों के भयंकर प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था।

एक सामूहिक फार्म मे शामिल होनेवालो की भीड

उस समय कुल किसान परिवारो मे ४–५ प्रतिशत कुलको के थे यानी लगभग ११ लाख परिवार। कुलक पहले की ही तरह पूरी शक्ति लगा कर कृषि के समाजवादी पुनर्गठन का विरोध कर रहे थे। इसके लिए वे केवल सोवियत विरोधी आदोलन और धमकियो से ही काम नही ले रहे थे बल्कि आगजनी हत्याओ और आतक से भी बाज नही आते थे।

ग्रामीण सर्वहारा पहले के खेत मजदूर विशेष सुसगठित रूप से कुलको का विरोध कर रहे थे। कुलको के खिलाफ अपने सघर्ष मे उन्होने एक लाक्षणिक सर्वहारा अस्त्र—यानी हडताल का प्रयोग किया। १६२६ मे ट्रेड-यूनियन सगठनो ने इस प्रकार की लगभग ५० हडतालो का उल्लेख किया था। इन खेत मजदूरो ने शुद्ध आर्थिक मागो तक अपने आपको सीमित नही रखा उन्होने ग्रामीण क्षेत्रो मे अतिम शोषक वर्ग का अत करने के लिए पूरा जोर लगा दिया। उत्तरी काकेशिया मे इन हडतालो मे भाग लेनेवालो ने निम्नलिखित अपील की साथियो! हम सदा कमेरे नही रहेगे। हम कुलको के लिए सदा काम नही करेगे।

कुलको से बाज़ी मार ले जाने के लिए सामूहिक फार्मो मे शामिल हो जाइये, समाजवादी कृषि का निर्माण कीजिये।"

औद्योगिक मज़दूरो, सार्वजनिक सगठनो तथा राजकीय निकायो ने हड़तालियो का ज़बरदस्त समर्थन किया। मिसाल के लिए कीयेव के नज़दीक एक गाव मे दो सप्ताह की हड़ताल के दौरान कीयेव ट्राम डिपो और चर्म कारखाने के मज़दूरो ने अपने वेतन का एक भाग हडताली खेत मज़दूरो की सहायता के लिए भेजा। जो कुलक श्रम कानूनो का उल्लघन कर रहे थे उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की गयी। उक्रइनी राजकीय फार्म ट्रस्ट ने खेत मज़दूरो को काम देने के लिए एक और फार्म स्थापित किया।

१९२९ के उत्तरार्द्ध मे किसान समुदाय का विशाल बहुमत समूहीकरण आन्दोलन मे शामिल हो गया। मझोले किसान जो देहात मे सख्या मे सबसे अधिक और सबसे प्रभावशाली थे, सामूहिक फार्मो मे शामिल होने लगे और यही उस दौर की प्रमुख विशेषता थी। घटनाओ के विकास क्रम का तकाज़ा अब यह था कि कुलको को बेदखल करने तथा उनके कार्यक्षेत्र को सीमित करने की नीति के बजाय एक वर्ग के रूप मे कुलक समुदाय के परिसमापन की नीति अपनायी जाये। उस समय तक अन्न उत्पादन मे कुलको की भूमिका उतनी महत्वपूर्ण नही रह गयी थी जितनी कुछ समय पहले थी। १९२९ मे सामूहिक और राजकीय फार्मो ने राज्य के हाथ २० लाख टन अनाज बेचा, यानी उतना ही अनाज जितना एक साल पहले कुलको ने बेचा था। अत सामूहिक और राजकीय फार्मो ने उत्पादन शक्ति के रूप मे कुलको को बेदखल करने के लिए आवश्यक भौतिक आधार मुहैया कर दिया था।

एक वर्ग के रूप मे कुलको के परिसमापन का अर्थ कभी भी शारीरिक रूप से उनको तहस-नहस करना नही था। केवल सोवियत सत्ता के कट्टर दुश्मन ही जानबूझकर इस तरह के झूठ का प्रचार किया करते थे और आज भी करते है। वास्तव मे उद्देश्य कुलको को उत्पादन साधनो के निजी स्वामित्व से, श्रमजीवी जनता का शोषण करने की समस्त सम्भावनाओ से वचित करना था। प्रारम्भ मे अनेक सामूहिक फार्मो ने कितने ही भूतपूर्व कुलको को अपना सदस्य बनाया लेकिन अक्सर कुलक जो अधिक चतुर और अनुभवी सगठनकर्ता थे, शीघ्र ही जिम्मेदारी के

पदाधिकारी बनने और कृषि की नयी सामूहिक व्यवस्था को अन्दर ही अन्दर नुकसान पहुँचाते। कुलक अपनी सम्पत्ति फार्म के हवाले नहीं करना चाहते थे इसलिए उन्होंने अपने पशुओं को मार डाला अपने औजार बेच डाले और अन्य किसानों को भी यही करने के लिए उकसाने लगे। अंत में यह जरूरी हो गया कि इन विध्वंसक तत्वों की हरकतों को रोकने के लिए विशेष कारवाई की जाय। सरकार ने एक प्रस्ताव पेश किया जिसके अनुसार उन इलाकों में जहाँ सम्पूर्ण समूहीकरण किया जा रहा था जमीन को ठेके पर लेने और कमेरा रखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। स्थानीय सत्ता के निकायों को कुलकों की सम्पत्ति को जब्त करने और कुलकों को बेदखल करने का अधिकार दिया गया। जाहिर है कि कानून तोड़कों को सामूहिक फार्मों से बेदखल कर दिया गया। १९३० के शुरू से १९३२ तक की अवधि में कुल २४०००० कुलक परिवारों को उन क्षेत्रों से बेदखल किया गया जहाँ सम्पूर्ण समूहीकरण चालू था। कुलकों की यह बेदखली सीधे-सीधे एक प्रशासकीय कारवाई नहीं थी इसे स्वयं गरीब और मझोले किसानों ने किया था। स्थानीय निवासियों के आयोग कुलकों की सम्पत्ति की कुर्की करते और मवेशी को सामूहिक फार्मों के हवाले कर देते। बेदखल कुलकों के घरों में स्कूल क्लब और सार्वजनिक वाचनालय खोले जाते। कुलक परिवारों के केवल एक भाग को ही बेदखल किया गया था। सरकारी फैसले के अनुसार अदालती कारवाई केवल आतंकवादियों और विध्वंसकारी गिरोहों के खिलाफ ही की जा सकती थी। दूरवर्ती इलाकों में, कुलकों के एक हिस्से को ही बसाया जाता। अधिकांश कुलक परिवारों (लगभग ७५ प्रतिशत) को उन्हीं प्रशासकीय जिलों में बसा दिया जाता जहाँ के वे रहनेवाले थे और उन्हें अपनी सम्पत्ति का एक अंश रखने की दी जाती जो उजरती मजदूर रखे बिना स्वयं काम करने के लिए आवश्यक था।*

---

*सोवियत सरकार ने भूतपूर्व कुलकों की राजनीतिक प्रवृत्ति बदलने के लिए बहुत कुछ किया। उनमें से अधिकांश सामाजिक दृष्टि से लाभदायक काम में भाग लेने लगे और बाद में सोवियत संघ के समानाधिकारप्राप्त नागरिक बन गये। नाजियों के खिलाफ युद्ध के दिनों में काफी बड़ी संख्या में वे मोर्चे पर लड़े और साहस तथा वीरता के लिए सरकार द्वारा सम्मानित हुए।

कृषि के समूहीकरण के लिए, जो श्रमजीवी किसानों तथा पूरे देश की मेहनतकश जनता दोनों के फ़ायदे के लिए किया गया था, सोवियत समाज की अगुआ और सबसे संगठित शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और मज़दूर वर्ग को जबर्दस्त प्रयास करना पड़ा। १९२९ के अंत में सामूहिक फ़ार्मों के संगठन में सहायता करने के लिए २५,००० मज़दूरों को गांवों में भेजने का निश्चय किया गया। इनमें सर्वप्रथम कम्युनिस्ट भेजे जाते थे जिन्हें संगठनात्मक कार्य का बड़ा अनुभव था। लेकिन स्वयंसेवकों की संख्या उससे बहुत बढ़ गयी। १९३० के शुरू में लगभग ३५,००० मज़दूर गांवों को रवाना हुए। साथ ही साथ बीसियों औद्योगिक उद्यमों की सहायता बढ़ाई गई। कृषि मशीनरी, खाद तथा कृषि की जरूरत की अन्य वस्तुएं पैदा करनेवाली औद्योगिक शाखाओं—ट्रैक्टर उद्योग, रसायन, आदि—के और विकास के लिए अतिरिक्त निधि लगाई गयी।

पार्टी के केंद्रीय संगठनों की प्रत्यक्ष देख-रेख में ग्रामीण कम्युनिस्टों ने अपने कार्यकलाप को तेज़ किया। मई, १९३० में सामूहिक फ़ार्मों में ३,१३,००० से अधिक पार्टी सदस्य और ५,५३,००० से अधिक कोम्सोमोल सदस्य थे। यह संख्या श्रम योग्य ग्रामीण आबादी का केवल ६.५ प्रतिशत थी यानी प्रत्येक १०० ग़ैर-पार्टी किसानों के पीछे ३ कम्युनिस्ट और ६ कोम्सोमोल सदस्य थे। यह संख्या यों देखने में बड़ी नहीं थी, मगर उनकी ताक़त इसमें थी कि वे एक संगठित, अगुआ और एक लक्ष्यनिष्ठ दस्ता था जिसके सदस्य समान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सम्मिलित होकर काम करते थे। स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ता उनके समर्थन में एकत्रित हुए और आम जनता ने भी साथ दिया। इनमें से बहुतों को अक्सर प्राणों का ख़तरा उठाना पड़ता था। इन वर्षों के इतिहास में ऐसे बहुत से लोगों के नाम अंकित हैं जिन्होंने सोवियत कृषि में समाजवाद की विजय की ख़ातिर प्राणों की आहुति दी। सामूहिक फ़ार्मों, उद्यमों, बस्तियों, सड़कों और स्कूलों के नाम इन वीरों के नाम पर रखे गये हैं। परन्तु उनकी वीरता की सबसे महत्वपूर्ण यादगार वे समृद्ध सामूहिक फ़ार्म हैं जिनके निर्माण में तीसरे दशक के अंत और चौथे के प्रारम्भ में उन्होंने हाथ बंटाया था।

१९२९ के अंत में सोवियत संघ की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के एक अधिवेशन में राज्य नियोजन आयोग के अध्यक्ष क्रजिजानोव्स्की ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा था: "जब हम किसी क्षेत्र में ५० प्रतिशत

से अधिक खेतो का समूहीकरण करते है तो इसका क्या मतलब होगा? मतलब होगा ऐसी स्थिति पैदा हो जाना, जिनमे बाकी किसान उनका अनुसरण करेगे।" मोलोतोव ने, जो १९३० मे जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष नियुक्त हुए थे, यह विचार प्रकट किया कि १९३० मे हम "केवल समूहीकृत क्षेत्रो को ही नही, बल्कि पूरे के पूरे समूहीकृत जनतन्त्रो को उत्पन्न होते देखेंगे।"

ऐसे समय जब अतर्राष्ट्रीय स्थिति बेहद तनावपूर्ण थी, जब उद्योगीकरण तेजी से प्रगति कर रहा था और किसान बडी सख्या मे सामूहिक फार्मों मे शामिल हो रहे थे, कृषि को समाजवादी आधार पर पुनर्गठित करने की उत्सुकता बिलकुल स्वाभाविक और समझने योग्य थी। लेकिन जिन हालतो मे समूहीकरण आवश्यक तैयारियो के बिना किया गया, जब अनुभवी और योग्य सगठनकर्ताओ का अभाव था, गलतिया अनिवार्य थी। ऐसे अनेक उदाहरण थे जब किसानो को स्वेच्छापूर्वक सामूहिक फार्मों मे नही लाया गया। ऐसी भी मिसाले थी कि जो किसान सामूहिक फार्मों मे शामिल होने मे हिचक रहे थे या जो फैसला करने मे कुछ विलम्ब कर रहे थे, उनके साथ सोवियत-विरोधी तत्वो का सा व्यवहार किया गया। मझोले किसानो का नाम अक्सर कुलको की सूचि मे लिख दिया जाता तथा रिहायशी मकानो, भेड-बकरो, मुर्गे-मुर्गियो और सब्जी-तरकारियो के बगीचो का जबरदस्ती समूहीकरण कर लिया जाता। फिर कुछ अन्न उपजानेवाले इलाको मे समूहीकरण के सचालक विशालकाय फार्म कायम करने के विचार का शिकार हो गये जिनमे बहुत अधिक लोग थे।

उसी समय उराल, पश्चिमी साइबेरिया, उक्रइना तथा देश के कुछ और भागो मे कम्यूनो की स्थापना की गई थी। इनमे शामिल लोगो ने स्वेच्छापूर्वक मूलभूत उत्पादन साधनो को ही नही, बल्कि रिहायशी मकानो, भेड-बकरो और मुर्गे-मुर्गियो तक को कम्यून की सम्पत्ति बना लिया। आम तौर से वे सयुक्त आमदनी को भी बराबर भागो मे बाट लेते थे। आर्थिक तथा सास्कृतिक कार्यकलाप से सबधित सारे सवाल भी सामूहिक आधार पर तय किये जाते थे।*

---

*इसी प्रकार के, मगर आम तौर से कुछ छोटे आकार के कम्यून औद्योगिक केद्रो मे भी बनाये जाते। मजदूर वेतन मिला देते, मिलकर खाते-पीते, और रहन-सहन, छुट्टियो, शिक्षा, कपडो आदि के खर्च मे समान रूप से योगदान करते।

इस प्रकार के कम्यूनों की स्थापना (शहरों और देहातों दोनों जगह) सदस्यों की इस प्रबल इच्छा का नतीजा थी कि शीघ्रातिशीघ्र अपने जीवन को नये सिद्धांतों के आधार पर, सामूहिकता के सांचे में ढाल लें। लेकिन उत्पादन शक्तियों के स्तर, श्रमजीवियों की भौतिक स्थिति तथा समानता के आधार पर आमदनी के बंटवारे से उत्पादन के विकास में कोई सहायता नहीं मिली। यद्यपि अक्सर इन कम्यूनों से लोगों के मन से निजी स्वामित्व की भावना का उन्मूलन करने में सुविधा हुई और परस्पर सम्मान और भ्रातृत्व की भावना को प्रोत्साहन मिला, मगर इनमें से अधिकांश संस्थाओं ने वे आशाएं पूरी नहीं कीं जो उनसे की गयी थीं। उनमें से कुछ विगठित हो गये, औरों का फ़ैक्टरियों में उत्पादन दलों तथा देहातों में उत्पादन आर्टेलों—यानी सामान्य सामूहिक फ़ार्मों के रूप में पुनर्गठन कर दिया गया।

वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों ने अनेक अवसरों पर इस बात पर जोर दिया था कि कृषि के पुनर्गठन में बड़ी कठिनाइयां हैं क्योंकि निजी सम्पत्तिवाले किसान की मनोभावना छोटे मालिक की सी होती है। समूहीकरण का काम इससे भी कहीं जटिल था क्योंकि वह ऐसे समय चलाया जा रहा था जब विरोधी पूंजीवादी देशों के घेरे में सोवियत संघ को मजबूर होकर एक ही समय में औद्योगिक विस्तार को तेज़ करना, अपनी प्रतिरक्षा क्षमता को मज़बूत करना तथा अपनी कृषि को समाजवाद के आधार पर पुनर्गठित करना पड़ रहा था।

प्रारम्भिक अवस्था में ग़लतियों और पार्टी नीति की विकृति का नतीजा यह हुआ कि बहुत से किसान जो अभी-अभी सामूहिक फ़ार्मों में शामिल हुए थे, उनसे मुंह मोड़ने लगे। १९३० के वसंत में समूहीकृत खेतों की संख्या ५० प्रतिशत से अधिक थी, लेकिन उस साल के मध्य तक यह संख्या घटकर लगभग २४ प्रतिशत रह गयी।

परन्तु धीरे-धीरे गांवों के सामाजिक पुनर्गठन को दुरुस्त करने के लिए पार्टी और सरकार द्वारा की गयी कार्रवाइयों का असर हुआ। जो ग़लतियां हुई थीं, उनकी कड़ी आलोचना की गयी। स्तालिन के लेख "सफलता से हतबुद्धि" के साथ-साथ विशेष प्रस्तावों ने जनता को यह बताया कि ग़लतियों का कारण क्या था और कैसे और किन उपायों से उन ग़लतियों को सुधारना चाहिए। सामूहिक फ़ार्म का नया आदर्श नियम प्रकाशित किया

गया जिसमें यह व्याख्या की गयी कि सामूहिक फार्मों के कार्यभार क्या हैं, उनकी स्थापना कैसे करनी चाहिए, और सदस्यों को अपना रोजमर्रे का काम कैसे करना चाहिए। उनमें यह निर्धारित किया गया था कि हर सामूहिक किसान अपनी व्यक्तिगत खेती अपने निजी इस्तेमाल के लिए रख सकता है, उसके पास खेती के अपने छोटे औजार हो सकते हैं, और वह कुछ गायें, भेड़-बकरी और मुर्गे-मुर्गियां पाल सकता है। इसी के साथ इस बात पर जोर दिया गया था कि तमाम भारवाही पशुओं का, बीज भंडार का और उन खेती सम्बन्धी इमारतों का, जो सामूहिक फ़ार्म के कार्य के लिए जरूरी हैं, समाजीकरण कर लेना है। कुलक और दूसरे निर्वाचन अधिकारों से वंचित लोग सामूहिक फ़ार्मों के सदस्य नहीं बन सकते थे। उसी समय राज्य ने सामूहिक फ़ार्मों की अधिक आर्थिक सहायता की, उन्हें कई सुविधाएं दीं और कुछ करों से उन्हें विमुक्त कर दिया। पार्टी और सरकार ने सभी राजकीय और सार्वजनिक संगठनों को कृषि में समाजवादी उत्पादन पद्धति को सुदृढ़ करने के काम में लगाया।

१६३० की पतझड़ में इन कारंवाइयों का औचित्य सिद्ध हो गया। सामूहिक फ़ार्मों की फ़सल व्यक्तिगत खेती रखनेवाले किसानों से ज्यादा हुई और इन फार्मों ने अनाज की कुल पैदावार का एक तिहाई राज्य को सप्लाई किया। सबसे अच्छी हालत उन्हीं फ़ार्मों की थी जिन्हें राजकीय मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों की सेवाएं प्राप्त थीं। १६३१ तक इनकी संख्या १,४०० थी जिनमें कुल ६२,४०० ट्रैक्टर थे। १६३१ के वसंत में मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों ने तमाम सामूहिक फार्मों के २५ प्रतिशत की जरूरत पूरी की और उनकी खेती की जमीन के एक तिहाई से अधिक पर काम किया। सामूहिक किसानों की आमदनी व्यक्तिगत किसानों से अधिक थी, जिसका विशेष महत्व था। इन अधिक अनुकूल स्थितियों में सामूहिक फार्मों में किसान दूसरी बार बहुत बड़ी संख्या में शामिल होने लगे। यह कितने बड़े पैमाने पर हुआ, इसका अन्दाजा पाठकों को निम्न आंकड़ों से हो सकता है: हर रोज लगभग ११५ सामूहिक फार्म, एक या दो मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन और दो राजकीय फार्म स्थापित हो रहे थे।

धीरे-धीरे सामूहिक फार्मों की आमदनी के विभाजन के नये सिद्धांत विकसित हुए। अनुभव से यह जाहिर हो गया था कि आमदनी का विभाजन किसानों के परिवार के आकार की बुनियाद पर नहीं, न उनकी

ज़रूरतों या सामूहिक फ़ार्म में उनके द्वारा लायी गयी सम्पत्ति के आधार पर करना चाहिए। एक नयी पद्धति लागू की गयी जिसके अनुसार सामूहिक किसानों द्वारा किये गये काम को श्रम की एक विशेष इकाई – कार्य दिवस इकाइयों में नापा जाने लगा। ऐसा करने में काम की मात्रा और गुण तथा उसमें लगी श्रम चेष्टा को भी ध्यान में लिया जाता था। काम के हिसाब से अदायगी की व्यवस्था भी जारी की गयी। व्यावहारिक अनुभव के आधार पर काफ़ी विश्वसनीय परिशुद्धता के साथ यह अनुमान करना सम्भव था कि किस तरह का काम कितनी कार्य दिवस इकाइयों के बराबर है।

इस समय तक समूहीकरण के निर्णयात्मक नतीजे सामने आ चुके थे। सामूहिक फ़ार्मों की संख्या २,११,००० तक पहुंच गयी थी जिसमें १ करोड़ ५० लाख व्यक्तिगत खेती और कृष्ट भूमि का तीन चौथाई भाग शामिल था। एक तिहाई फ़ार्मों को मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों की सुविधाएं प्राप्त थीं। इन फ़ार्मों के पास सभी सामूहिक फ़ार्मों की कुल कृष्ट ज़मीन का आधा था। सोवियत कृषि के पास उस समय १,४८,५०० कृषि मशीनें थीं।

१९३२ में अभी ६०,००० कुलकों के फ़ार्म मौजूद थे (जिनके पास कुल मिलाकर १० लाख हेक्टर ज़मीन थी)। कुलक अब पहले की तरह अलग वर्ग के रूप में नहीं रह गये थे मगर देश के कुछ हिस्सों में, जैसे मिसाल के लिए, ताजिकिस्तान में १९३४ तक कुलकों के अधिकारों पर केवल कुछ प्रतिबंध लगा दिये गये थे। उज़्बेक जनतंत्र में कुलक वर्ग का अंत १९३४ में हुआ और दाग़िस्तान के पहाड़ी इलाक़ों में दूसरी पंचवर्षीय योजना के आख़िर में।

बचे-खुचे शोषक वर्गों के प्रतिरोध के कारण कृषि और सामान्य रूप से पूरे देश को काफ़ी क्षति पहुंची। सबसे बढ़कर इसका असर देश के पशुधन पर पड़ा जो प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में पहले से आधा रह गया था।

फिर भी सोवियत कृषि ने अपनी मुख्य समस्या – श्रमजीवी जनता को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न की तथा हल्के उद्योग को कच्चे माल की पूर्ति और रिज़र्व रखने की समस्या – को सफलतापूर्वक पूरा किया।

सम्पूर्ण समूहीकरण से पहले राज्य द्वारा अनाज की ख़रीदारी औसतन १ करोड़ १० लाख टन से अधिक सालाना होती थी मगर समूहीकरण के दौरान क़रीब दोगुनी वृद्धि हुई, यानी २ करोड़ १५ लाख टन से

अधिक की। समूहीकरण की बदौलत कपास की पूर्ति भी पर्याप्त मात्रा मे हुई। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण कोई और बात थी, वह यह थी कि कृषि से पूजीवादी तत्वो को बेदखल कर दिया गया था और उजरती खेत मजदूर भी अतीत की कहानी बन गया था। प्रथम पचवर्षीय योजना काल मे दस लाख से अधिक विगत खेत मजदूर सामूहिक फार्मों मे शामिल हुए और कोई नौ लाख राजकीय फार्मों और मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो पर काम करने लगे और बाकी फैक्टरियो मे चले गये या उन्हे शिक्षा प्राप्त करने और फिर दफ्तरी कर्मचारी बनने का अवसर दिया गया।

समूहीकरण ने मूलभूत उत्पादन साधनो के निजी स्वामित्व का अत कर दिया और करोड़ो विगत छोटी सम्पत्ति के मालिक सामूहिक ढग से काम करना सीखने लगे। ग्रामीण क्षेत्रो मे रोजगार का स्तर भी प्रत्यक्ष रूप से ऊचा हुआ। किसान अब कृषि जनसख्यातिरेक दरिद्रता और तबाही की छाया तले जीवन नही बिता रहे थे। सामूहिक किसान जो कुछ ही दिन पहले सोवियत सघ की जनसख्या का बहुत छोटा भाग थे अब सख्या की दृष्टि से सोवियत समाजवादी समाज का सबसे बड़ा वर्ग बन गये। इसका मतलब यह था कि समाजवाद गावो मे भी विजयी सिद्ध हुआ था।

कार्य तथा जीवन स्थिति मे परिवर्तन। बेरोजगारी का अत

प्रथम पचवर्षीय योजना से सोवियत जनगण की जीवन पद्धति मे बड़े परिवर्तन हुए। बहुत बड़ी सख्या मे कारखानो, खदानो तथा तेलकूपो के निर्माण ने उत्तर, कज़ाखस्तान, साइबेरिया और सुदूर पूर्व के कुछ इलाको को औद्योगिक केंद्रो मे बदल दिया। उस अवधि मे साठ शहरो और बड़ी औद्योगिक बस्तियो की उत्पत्ति हुई। यद्यपि नागरीकरण की प्रक्रिया पूजीवाद के दौरान ही शुरू हो चुकी थी और तेजी से बढ रही थी, मगर तीसरे दशक के अत और चौथे के प्रारम्भ मे ही उसने व्यापक रूप धारण किया। जब तक अर्थव्यवस्था का व्यापक पुनर्निर्माण नही शुरू हुआ तब तक शहरी और देहाती आबादी के अनुपात मे प्रथम विश्वयुद्ध से पहले की तुलना मे कोई परिवर्तन नही हुआ था यानी शहरी आबादी उस समय तक केवल १८ प्रतिशत थी। प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रथम

इसीलिए बेरोजगारो मे अयोग्य मजदूरो का विशाल बहुमत था। जहा तक बेरोजगार औद्योगिक मजदूरो का सवाल है उनकी सख्या कुल बेरोजगारो की १५–१७ प्रतिशत से अधिक नहीं थी और उसका मुख्य कारण मजदूरो की अन्यत्र अस्थिरता थी।

ब्रिटेन, फास, जर्मनी और सयुक्त राज्य अमरीका की स्थिति भिन्न थी। इन देशो मे बेरोजगारी का सम्बन्ध उद्योग के उतार-चढाव से था। पूजीवादी देशो मे बेरोजगारो मे हमेशा योग्य मजदूरो की बडी सख्या होती थी।

लेकिन तीसरे दशक मे सोवियत सघ मे भी बेरोजगारी की समस्या बहुत गम्भीर हो चली थी। उस समय राज्य के पास आवश्यक साधन नही थे जिनकी सहायता से स्थिति मे तेजी से परिवर्तन लाया जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नीति स्पष्ट थी यह नीति थी प्रत्येक सोवियत नागरिक के लिए काम करने का अधिकार सुनिश्चित करना और बेरोजगारी का पूर्ण रूप से उन्मूलन करना।

राज्य सगठन तथा ट्रेड-यूनियनें बेरोजगारो की जितनी भी सहायता कर सकती थीं, उन्होंने की। रोजगार कार्यालयो मे जितने लोगो के नाम दर्ज थे उन्हे कुछ विशेष सुविधाए दी गयी उन्हे सामान्य मकान भाडे का आधा देना था, रेल और जहाज भाडे मे भी उन्हे ५० प्रतिशत की छूट हासिल थी, उन्हें कई प्रकार की वृत्तिया मिली हुई थी और दिन का भोजन अगर मुफ्त नही तो सस्ता जरूर मिलता था। अनेक बेरोजगारो को सडक बनाने, पार्क और बगीचे लगाने, सडक पर झाडू देने और दलदलो को निष्कासित करने का काम दिया गया। कई ट्रेड-यूनियनो ने अपनी निधि का एक भाग बेरोजगारो की सहायतार्थ खर्च किया। फिर भी बेरोजगारी एक मुख्य सामाजिक समस्या बनी रही जिसका पूरी जनसख्या और खासकर मजदूर वर्ग के जीवन स्तर पर बुरा प्रभाव पड रहा था।

सोवियत सरकार, ट्रेड-यूनियन नेताओं और श्रम की जन कमिसारियत ने बेरोजगारी की समस्या का बाकायदा अध्ययन किया। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा पोलिट ब्यूरो की बैठको मे भी इसपर विचार किया गया। प्रथम पचवर्षीय योजना तैयार करते समय भी इस समस्या पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया। इसमे सदेह नही था कि इन पाच वर्षों के दौरान श्रम शक्ति की माग बहुत बढ जायेगी मगर योजना के

पूंजीवादी देशो म जनता को भीषण तबाही का सामना करना पड रहा है। इस सदर्भ मे एक ऐसे देश मे जहा समाजवाद का निर्माण अभी शुरू ही किया गया था, बेरोजगारी का उन्मूलन और भी अधिक महत्वपूर्ण था। इस मुख्य विजय का मतलब केवल यही नही था कि श्रमजीवी जनता के सभी हिस्सो की भौतिक स्थिति मे सुधार हुआ, बल्कि इसने लोगो म निस्वार्थ उत्साह की भावना जगाई और उन्ह पहले से कही ज्यादा दृढ विश्वास दिलाया कि उन्होंने जो मार्ग अपनाया है वह सही है।

इस विश्वास से सोवियत लोगो को उन कठिनाइयो का जो अभी भी उनके सामने मौजूद थी, शात चित्त से तथा दृढतापूर्वक मुकाबला करने मे सहायता मिली। खाद्य पदार्थ, आवश्यक उपभोग सामान–कपडे और जूते–की राशन बन्दी थी। कारखानो ने अपने भोजनालयो और दुकानो मे खाद्य पदार्थों की रसद को सुधारने के उद्देश्य से आलू और सब्जी-तरकारी उपजाना और पशुपालन आदि शुरू कर दिया था। अग्रणी मजदूरो को प्राथमिकता दी गयी बोनस के रूप मे उन्हे सेनेटोरियमो तथा अवकाश गृहो के लिए प्रवेशपत्र दिये जाते, इनाम के रूप म उन्हे सूट का कपडा, घडी या कभी-कभी जूतो के जोडे दिये जाते।

महनतकश जनगण अच्छी तरह अवगत थे कि ये समस्याए चन्द दिन की हैं। वे अपनी आखो से देख रहे थे कि काम और जीवन स्थिति मे दिनादिन सुधार हो रहा है, शहरो का चेहरा बदलता जा रहा है नित्य नये स्कूल और उच्च शिक्षा सस्थाए खुल रही हैं और अधिकाधिक व्यापक पैमाने पर नि शुल्क चिकित्सा सेवा का प्रबध किया जा रहा है।

मजदूरो के विशाल बहुमत के लिए सात घटे का कार्य दिवस कर दिया गया था और जमीन के नीचे या स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पेशावाले कवल छ घटे काम करते। किशोरो तथा गर्भवती औरतो के लिए विशेष सुविधाओ का प्रबध किया गया। प्रथम पचवर्षीय योजना के वर्षों मे सामाजिक बीमे पर राज्य व्यय बढकर लगभग ३ गुना हो गया तथा चिकित्सा सेवाओ पर ४ ५ गुना बढ गया। हर जगह बड पैमाने पर रिहायशी गृह निर्माण हो रहा था। मास्को, लेनिनग्राद तथा सभी सघीय जनतन्त्रो की राजधानियो और बडे शहरो मे नये मुहल्ले उभरते आ रहे थे। लेकिन इन शहरो की आबादी इससे भी अधिक तेजी से बढ रही
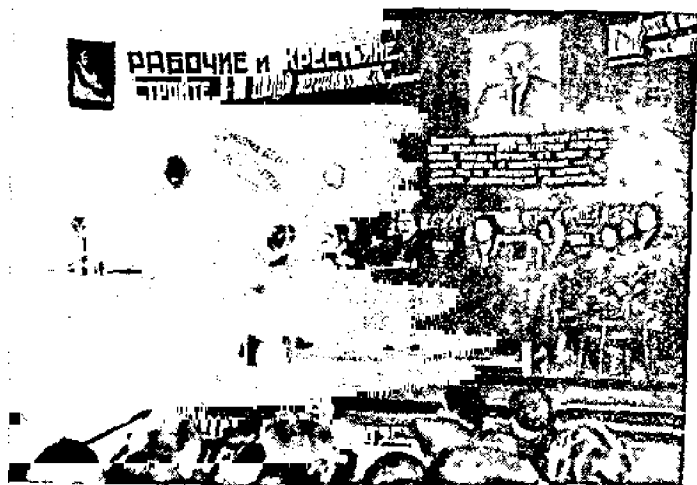
निरक्षरता निवारण सस्था की एक सभा मे
नादेज्दा क्रूप्स्काया भाषण कर रही है। १६२७

इसकी प्रौढ आबादी का विशाल बहुमत पढ़ना-लिखना जानता था। गैर-रूसी इलाको मे इसका परिणाम और भी प्रभावी था। १६२६ से १६३३ तक साक्षरता का स्तर ताजिकिस्तान मे ४ प्रतिशत से ५२ प्रतिशत, उज्बेकिस्तान मे १२ प्रतिशत से ७२ प्रतिशत और ट्रास-काकेशिया मे ३६ प्रतिशत से ८६ प्रतिशत तक पहुच गया था।

इसी दौर मे ८ से १५ वर्ष के बच्चो के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू की गयी। विशेषकर कम्युनिस्टो तथा कोम्सोमोल सदस्यो को शिक्षक की ट्रेनिंग लेने भेजा गया।

पाठ्यपुस्तको की सख्या में दर्जनो गुना की वृद्धि हुई जिनमे बहुत सी पुस्तके रूसी के सिवा सोवियत सघ की अन्य जातियो की भाषाओ मे थी। फलस्वरूप १६३३ तक यह सम्भव हो गया था कि चारवर्षीय अनिवार्य शिक्षा पूरे देश मे लागू कर दी जाये। शहरो मे अनिवार्य सातवर्षीय शिक्षा में सक्रमण शुरू हो चुका था और मूलत १६३४ तक सपन्न हो गया।

मे भाग लेने की इच्छा केन्द्रीय तथा स्थानीय समाचारपत्रो मे मजदूर और किसान सवाददाताओ के कार्य मे भी प्रतिबिंबित होती थी। लाखो व्यक्तियो ने अपने साथी मजदूरो की उपलब्धियो का वर्णन करने, नौकरशाही का भडाफोड करने, त्रुटियो की आलोचना करने के लिए कलम उठायी और विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये जिन सब का उद्देश्य लोगो की कार्य तथा जीवन स्थिति को सुधारना था। यह अकारण ही नही था कि कुलको तथा अन्य सोवियत-विरोधी तत्वो ने इन सवाददाताओ के काम का और गावो मे क्लबो और सार्वजनिक वाचनालयो को सगठित करनेवालो का घोर विरोध किया। केवल १९२८ मे १११ ऐसे सवाददाताओ की हत्या की गयी और ३४६ व्यक्तियो को मारा पीटा गया। प्रमुख सोवियत लेखक मक्सिम गोर्की ने लिखा: "सोवियत सघ के विशाल क्षेत्र मे एक सिरे से दूसरे सिरे तक, इसके दूर-दूर के सभी कोनो मे मजदूर वर्ग के पास— मजदूर और किसान सवाददाताओ की बदौलत—उसकी अपनी सतर्क आखे और आवाज है। आज तक किसी देश मे पत्रो ने जीवन का ऐसा ब्योरेवार चित्र जिसमे छोटी से छोटी तफसील आ गयी हो, प्रस्तुत नही किया जैसा इस देश मे किया जाता है।" इसमे जरा भी अतिशयोक्ति नही थी। १९३२ मे मजदूर और किसान सवाददाताओ की सेना मे ३० लाख लोग थे।

यही समय था जब शोलोखोव ने अपनी कृति "धीरे बहे दोन रे" से अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, जिसमे अक्तूबर क्राति के दौरान कज्जाक किसानो के जीवन और नियति का चित्रण किया गया है। उन्ही दिनो निकोलाई ओस्त्रोव्स्की ने क्रान्ति के समकालीनो और उसमे भाग लेनेवालो के बारे मे अपना जोशीला उपन्यास लिखा। गृहयुद्ध के जख्मो के कारण वह बिस्तर से लग चुके थे, और अन्धे और लगभग बिलकुल लकवा ग्रस्त होकर भी इस लेखक ने अपनी पीढी के लोगो की कहानी को सजीव बना दिया, उन लोगो की कहानी जिन्होने पूरी दृढता से क्राति की रक्षा की और निस्स्वार्थ समाजवाद का निर्माण किया। ओस्त्रोव्स्की के उपन्यास का शीर्षक है "अग्निदीक्षा"। इन शब्दो मे सोवियत युवा पीढी के मार्ग का सारतत्व प्रस्तुत कर दिया गया है। इस पुस्तक ने नौजवानो को जीवन निर्माण और सारी कठिनाइयो को झेलने का साहस प्रदान किया। वह नये जीवन के निर्माण के लिए, इसके लिए सघर्ष करने की एक जोशीली चुनौती थी और शीघ्र ही वह लाखो करोडो पाठको की प्रिय पात्र बन

विचारधारात्मक मनर्य तथा समाजवादी यथार्थवाद के कलात्मक पद्धति के सुदृढ़ीकरण के सदर्भ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण थे।

अगस्त, १९३२ मे शौकिया कलाकारो के प्रथम अखिल सघीय ओलिम्पियड का आयोजन मास्को म किया गया और शौकिया मडलियों ने २५ भिन्न भाषाओ मे प्रदर्शन किये।

उन वर्षों मे देश मे नाट्य-कला का विकास भी काफी ज़ोरा पर था। ऐसे-ऐसे इलाको मे थियेटर कायम किये गये जहा क्राति से पहले एक भी नही था। *उदाहरण के लिए मध्य एशिया मे १९३३ तक ५०* जातीय थियेटर कायम हो गये थे।

सोवियत साहित्य और समग्र रूप मे कला ने सोवियत जनगण के जीवन मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और इससे उन्हे तय मार्ग का स्पष्ट मूल्याकन करने मे तथा आशापूर्ण विश्वास के साथ भविष्य का सामना करने मे सहायता मिली।

नतीजा यह हुआ कि निधि और श्रम शक्ति बेकार खर्च हुई और उद्योग की अन्य अधीन शाखाओ मे विभिन्न नियोजित लक्ष्यो को पूरा करना असम्भव हो गया।
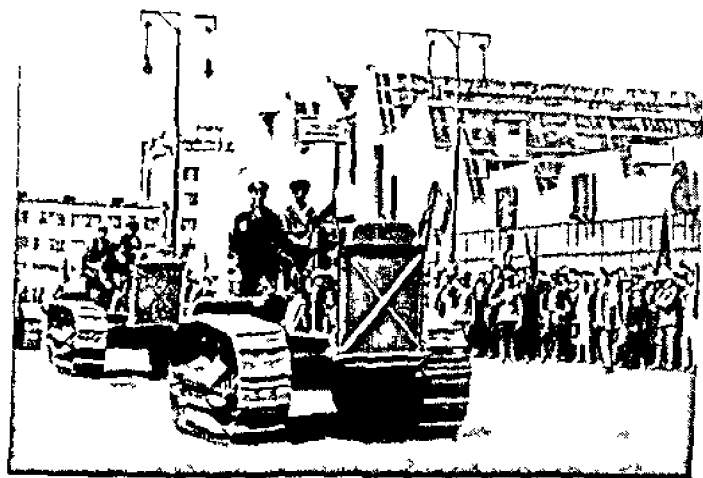
चेल्याबिन्स्क ट्रैक्टर कारखाने की पहली भेंट

नवनिर्मित कारखानो को पूर्णत चालू करना अत्यत जटिल कार्य साबित हुआ। प्रारभ मे यह मान लिया गया था कि नियोजित सामर्थ्य जल्द ही प्राप्त हो जायेगा लेकिन थोडे ही दिनो मे यह स्पष्ट हो गया कि कारखानो का निर्माण आसान है मगर कम समय के भीतर नये उपकरणो मे दक्षता प्राप्त करना बहुत कठिन है। स्तालिनग्राद मे विशालकाय ट्रैक्टर कारखाना नियत समय से पहले ही जून, १९३० मे तैयार हो गया था मगर वह १४४ ट्रैक्टर प्रतिदिन की अपनी नियोजित क्षमता तक अप्रैल, १९३२ से पहले नही पहुच सका। इस प्रकार की कठिनाइयो का कारण यही था कि आधुनिक मशीनो तथा कन्वेयर-लाइनो का प्रयोग करके व्यापक क्रमबद्ध उत्पादन देश ने अभी अभी शुरू किया था। इस नयी परिस्थिति का सामना करने के लिए लाखो मजदूरो और इजीनियरो को प्रशिक्षित करना था।

इन हालात में गत पांच वर्षों का अनुभव बेहद मूल्यवान था। पहले जहां यंत्रीकरण को प्राथमिकता दी जाती थी, वहां अब प्राथमिक आवश्यकता नये कारखानों को चलाने के लिए प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की थी। नयी प्रविधि तथा नये प्रकार के उत्पादन में दक्षता प्राप्त करने का अभियान दूसरी पंचवर्षीय योजना का केन्द्रीय प्रश्न बन गया। यही बात पूंजीगत निर्माण पर लागू होती थी जिसको और भी व्यापक पैमाने पर विकसित होना था।

स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारख़ाने की तुलना में ख़ारकोव और चेल्याबिन्स्क ट्रैक्टर कारख़ानों को चालू करना अधिक आसान साबित हुआ। मास्को मोटर कारख़ाने ने भी लगातार अपनी उत्पादन गति में वृद्धि की। उसके कुछ विभागों का अभी निर्माण ही हो रहा था जब हज़ारों मज़दूरों का तकनीकी स्कूलों में, विभिन्न उत्पादन तथा व्यवसाय संबंधी कोर्सों और कारख़ाने से संबद्ध आटोमोबाइल इंजीनियरिंग संस्थान के पत्र-व्यवहारवाले विभाग में प्रशिक्षण हो रहा था। आगे चलकर उपकरणों को नियत समय से पहले चालू करने तथा उसके प्रयोग के सबसे कारगर ढंग के लिए विभिन्न जत्थों में प्रतियोगिता संगठित की गयी। १९३५ तक मोटर कारख़ाना अपनी योजना से अधिक, प्रतिदिन ११० लारियों का उत्पादन कर रहा था।

बिजलीकरण की प्रगति से यह सम्भव हुआ कि प्रति मज़दूर उपलब्ध बिजली शक्ति अभिसूचक को दोगुने से अधिक बढ़ाया जाये। इसके साथ मज़दूरों की अधिक प्रवीणता और उत्पादन के बेहतर संगठन की बदौलत १९३३ और १९३७ के बीच श्रम की उत्पादिता में ८२ प्रतिशत वृद्धि हुई (योजना में जितनी गुंजाइश रखी गयी थी, उससे यह आंकड़ा कहीं अधिक था)। प्रथम पंचवर्षीय योजना में श्रम की उत्पादिता के परिकल्पित आंकड़े काफ़ी कम थे लेकिन फिर भी उनतक पहुंचना सम्भव नहीं हुआ था। उस समय पैदावार में वृद्धि करने के लिए अधिक मज़दूरों को उस काम पर लगा दिया जाता था। विचाराधीन अवधि में नयी कार्यपद्धति में दक्षता प्राप्त करने से अनेक कारख़ानों, फ़ैक्टरियों और निर्माण स्थलों में मज़दूरों की संख्या में कमी करना सम्भव हुआ। निर्माण उद्योग पर यह बात विशेषकर लागू होती थी, यद्यपि निर्माण-कार्य का विस्तार हुआ।

मजदूरो ने नयी प्रविधि का स्वागत किया क्योकि इसका मतलब था काम मे सुविधा वेतन मे वद्धि तथा अपनी योग्यता मे वृद्धि करने की सम्भावना। सारे देश मे बडी सख्या मे औद्योगिक मजदूरो की जरूरत थी और अथव्यवस्था के केन्द्रीकृत नियोजन के कारण यह सम्भव हो सका कि निर्माण उद्योग के भूतपूव मजदूरो की बदली आवश्यक व्यवसायो मे उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद कारखानो मे कर दी जाये।

चेल्यूस्किन खोजयात्रा के सदस्य मास्को पहुचे

पहले ही की तरह किसान बडी सख्या मे काम की तलाश मे शहरो मे आते रहे। लेकिन अब उनका समागम राज्य द्वारा नियत्रित कर लिया गया था। देहात के लोगो मे से औद्योगिक मजदूरो की भर्ती करने के लिए विशष सगठन स्थापित कर दिये गये थे।

नयी मशीनो और प्रविधि को उपयोग मे लाने तथा उनमे दक्षता प्राप्त करने का जोरदार उत्साह सारे देश मे फैल गया। १६३३–१६३४ मे उद्योग तथा परिवहन व्यवस्था को उतना ही उपकरण मिला जितना प्रथम पचवर्षीय योजना की पूरी अवधि मे मिला था। प्रथम श्रणी के मजदूरो की सख्या मे भी वृद्धि हुई।

दोनेत्स बेसिन की एक खदान में इज़ोतोव ने नियमित रूप से अपने कोटे की चार गुना अतिपूर्ति की। वह एक पाली में २० टन तक कोयला काट लिया करते थे। वह अपने साथी मजदूरों को भी गुर की बातें बताते रहते थे। राष्ट्रीय समाचारपत्रों ने अग्रणी मज़दूरों से उनका अनुसरण करने का आवाहन किया और उद्योग की सभी शाखाओं में इस अपील की व्यापक अनुक्रिया हुई। इसी जमाने में सभी योग्य मज़दूरों के लिए निश्चित तकनीकी जानकारी की अनिवार्य शर्त लागू की गयी।

१९३३ में पूरे देश ने मास्को से मध्य एशिया के रेगिस्तान तक सोवियत निर्मित कारों की यात्रा और वापसी में बड़ी दिलचस्पी ली। इस घटना के बाद सोवियत समतापमंडलीय गुब्बारे द्वारा समतापमंडल में अंतःप्रवेशन में विश्व रिकार्ड स्थापित किया गया। १९३२ में एक सोवियत बरफ़ तोड़क जहाज़ ने अर्खांगेल्स्क से व्लादीवोस्तोक तक उत्तरी महासागर-मार्ग एक ही नौगम्य मौसम में तय किया। इतिहास में यह पहली बार हुआ था। यह यात्रा स्वेज या पानामा नहर के रास्ते से सामान्य यात्रा की तुलना में दो गुनी कम थी। १९३३ की गर्मियों में एक और सोवियत जहाज़ "चेल्यूस्किन" एक महत्वपूर्ण ध्रुवीय अभियात्रा पर रवाना हुआ जिसको भीषण दुर्घटना का शिकार होना पड़ा। जहाज़ प्लावी हिमखंड से चूर-चूर हो गया और सारे नाविकों और यात्रियों ने जिनमें महिलाएं और बच्चे भी थे, चुकोत्का सागर के बीच हिमखंड पर साधनहीन अवस्था में शरण ली। "ओतो शिमद्त कैम्प" (अभियात्रा के नेता तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक ओतो शिमद्त के नाम पर) के लोगों ने अपने साहस और अनुशासन से सारे संसार को चकित कर दिया। देश के सबसे अच्छे विमान चालक उन्हें बचाने के लिए भेजे गये और ज़बर्दस्त कठिनाइयों के बावजूद वे अभियात्रा के सभी सदस्यों को वापस ले आने में सफल हुए। इस कारनामे के उपलक्ष्य में सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति ने १६ अप्रैल, १९३४ को सर्वोच्च सोवियत विभूषण—सोवियत संघ के वीर की पदवी स्थापित की। ध्रुवीय अभियात्रियों को बचानेवाले विमान चालकों को ही सबसे पहले इस पदवी से सम्मानित किया गया।

इन नाविकों, विमान चालकों तथा ध्रुवीय गवेषकों का कारनामा सोवियत नर-नारियों की वीरता और साहस का ही परिचायक नहीं था बल्कि इससे उनकी तकनीकी दक्षता तथा प्रवीणता भी उभरकर सामने

भायी जो भव वे देश की सेवा मे भर्पित करने के योग्य हो गये थे। जब ये ध्रुवीय गवेषक और निर्भीक विमान चालक भार्कटिक से लौटकर भाये तो पूरा मास्को उन वीरो का भव्य स्वागत करने सडको पर उमड़ पड़ा।

वर्तमान मनाभावना की उचित भभिव्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी की १७वी कांग्रेस के भाषणो और रिपार्टो म हुई जिसका भायोजन १९३४ के प्रारंभ म मास्को में हुआ। २६ जनवरी का, यानि जिस दिन कांग्रेस का उद्घाटन हुआ, "प्राव्दा" ने "विजेताओ की कांग्रेस" के शीर्षक से सपादकीय छापा।

स्तालिन द्वारा केन्द्रीय समिति की रिपार्ट पेश किये जाने के बाद कांग्रेस के डेलीगेट, २८ लाख सदस्योवाली पार्टी के भग्रदूत, एक-एक करके भाषण करने भाने गये। वक्ताओ म प्रतिरक्षा के जन कमिसार वारोशीलाव, भारी उद्योग के जन कमिसार भार्जोनिकीद्जे, भापूर्ति के जन कमिसार मिकोयान तथा वृहत पार्टी सगठना के नेता थे। प्रतिनिधियो ने क्रूप्स्काया का भाषण ध्यानपूर्वक सुना जिन्होने बताया कि सास्कृतिक क्रांति के बारे मे लेनिन के विचारो का किस तरह कार्यान्वित किया जा रहा है। दूसरी पचवर्षीय योजना के बारे म राज्य नियोजन भायोग के भध्यक्ष कुइबिशेव द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर भोजपूर्ण बहस हुई।

कांग्रेस के काम तथा उसके द्वारा पारित प्रस्तावो से इस बात का सबूत मिल रहा था कि पूरे सोवियत समाज ने मुख्य सफलताए प्राप्त की हैं भौर पार्टी की पक्तियो मे दृढ़ एकजुटता भौजूद है। इन सफलताओ भौर पार्टी की बढ़ती हुई प्रतीष्ठा ने सोवियत सघ के दुश्मनो को क्रोधाकुल कर दिया। १ दिसम्बर, १९३४ को एक प्रतिक्रातिकारी भातकवादी ने केन्द्रीय समिति के एक मत्री, लेनिनग्राद बोल्शेविको के नेता तथा कम्युनिस्ट पार्टी की प्रमुख हस्ती कीरोव की हत्या कर दी। इस हत्या के बाद सोवियत जनगण को समाजवाद के दुश्मनो के प्रति भपनी सतर्कता को भौर तेज करना पड़ा। गिरफ्तारियां हुईं। गिरफ्तार होनेवालो मे पार्टी के भीतर के भूतपूर्व विरोधी गिरोहो के नेता भी थे जिन्होने सोवियत-विरोधी हरकतो मे भाग लिया था। यह विश्वास करना कठिन था कि इनमे से कुछ लोग जो किसी समय पार्टी मे उच्च पदो पर रह चुके थे सोवियत सत्ता के शत्रु हो गये है।

इस दौरान में उद्योग तथा कृषि दोनों में नयी उपलब्धियों की बदौलत लोगों का मनोबल बढ़ गया था। १९३५ में सरकार ने औद्योगिक मज़दूरों के एक बड़े समूह को उनके श्रम के कौशलपूर्ण कार्यों के लिए पदकों से विभूषित किया और उनके प्रयत्नों के सम्मानित होने की अनुक्रिया के रूप में अगुआ मज़दूरों ने पहले से भी अधिक काम की ज़िम्मेदारी ली। वास्तव में उस वर्ष अनेक मुख्य सफलताएं देखने में आयीं। गोर्की ओटोमोबाइल कारख़ाने के मज़दूर श्रम की उत्पादिता के उसी स्तर पर पहुंच गये जो अमरीकी मोटर उद्योग द्वारा प्राप्त हो चुका था। मग्नितोगोर्स्क के मज़दूर उस समय तक देश में सबसे सस्ती धातु पैदा करने लगे थे और उन्हें राज्य की आर्थिक सहायता की ज़रूरत नहीं रही थी।

उस साल की एक सनसनी फैलानेवाली घटना मास्को में देश की प्रथम भूमिगत रेलवे का उद्घाटन था। उस समय राजधानी की जनसंख्या ३० लाख थी और उपलब्ध ट्राम, बस, ट्रालीबस (जो १९३३ में जारी की गयी थी) तथा टैक्सी की सेवाएं मुसाफ़िरों की यातायात की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाती थीं (शहर में उस समय तक घोड़ा गाड़ियां भी मौजूद थीं)।

पूरे देश के मज़दूरों ने इस प्रयोजना में योगदान किया: ५०० से अधिक विभिन्न उद्यमों ने इसके लिए उपकरणों का उत्पादन किया। मास्को कोम्सोमोल संगठन ने इसके निर्माण में सहायता करने के लिए १५ हज़ार नौजवान स्त्री-पुरुष भेजे। ज़रूरत पड़ने पर उन्होंने लगातार दो या तीन पालियों में काम किया और अपने तकनीकी ज्ञान का उपयोग करके तथा प्रयोजना में काम करनेवाले मज़दूरों, इंजीनियरों और वैज्ञानिकों के परस्पर कारगर सहयोग से फ़ायदा उठाकर उन्होंने नियमित रूप से अपने कोटे से अधिक काम पूरा किया। सरकारी उद्घाटन समारोह १५ मई, १९३५ को हुआ और प्रथम ट्रेनें रवाना हुईं। यह अवसर सोवियत वैज्ञानिकों और मज़दूरों की एक बड़ी विजय का द्योतक था।

१९३५ में एक और महत्वपूर्ण अवसर देश के पूर्व में निर्माण कार्य से संबंधित था। सोवियत उद्योग को स्वयं अपने तांबे की बड़ी ज़रूरत थी। उस समय तांबे के ज्ञात संग्रह का लगभग ६० प्रतिशत क़ज़ाख़स्तान में था। आज जहां कोउनरादस्की नगर खड़ा है वहां एक तात्र कारख़ाना

बनाने की योजना तैयार कर ली गयी थी। मगर निकटतम रेलवे स्टेशन वहा से ४८० किलोमीटर की दूरी पर था। ऐसी परिस्थिति मे एक ही उपाय था और वह यह कि ताम्र खदानो तथा रेलवे दोनो का निर्माण एक साथ किया जाये। पहले ५०० पार्टी सदस्यो तथा १ हजार कोम्सोमोल सदस्यो को कार्य स्थल पर भेजा गया और इससे एक और वीर गाथा का प्रारभ हुआ।

दो इजना के भाग तथा अनेक प्लैटफ़ार्म बल्खश झील के रास्ते कार्य स्थल तक लाये गये और वहा उन्हे एकत्रित किया गया। रेगिस्तान से उन्हे ले जाने के लिए अस्थायी रेले बिछायी जाती जिन्हे बार-बार एक जगह से उखाडा जाता ताकि आगे की लाइन बिछायी जाये। इस तरह एक-एक मील करके "चलती रेलवे लाइन" के जरिये मशीनें कोउनरादस्की तक लायी गयी। ताम्र खदानो पर काम ने थोडे ही दिनो मे जोर पकडा और शीघ्र ही एक तापन प्लाट, कारखाने तथा रिहायशी घरो का निर्माण होने लगा। १९३५ के पतझड तक क़रागन्दा–बल्खश रेलवे चालू हो गयी और इसका मतलब यह था कि ताम्र खदानो का रास्ता खुल गया।

आर्थिक विकास की इस तेज गति को कायम रखने के लिए पार्टी ने केवल सफलताओ का ही नही बल्कि उद्योग की त्रुटिया का भी ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया। स्थानीय, नगर तथा प्रादेशिक पार्टी समितियो और केन्द्रीय समिति ने अपनी बैठको मे फ़ैक्टरी मेनेजरो, अगुआ मजदूरो, इजीनियरो और वैज्ञानिको को सुना और उनकी रिपोर्टों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। सामूहिक विचार-विमर्श से पता चला कि श्रम की उत्पादिता मे और अधिक वृद्धि मे बाधा का बडा कारण उत्पादन का खराब सगठन तथा कोटा निर्धारण का पिछडा तरीक़ा था।

यह निश्चय किया गया कि अगुआ मजदूरो द्वारा पूरे किये गये कोटे ही मापदड का काम देंगे क्योकि इन मजदूरो ने आधुनिक कार्य पद्धतियो मे कुशलता प्राप्त की थी। यह निश्चय बहुत ही उचीत साबित हुआ।

१ सितम्बर, १९३५ को स्तखानोव का नाम पहली बार राष्ट्र के अखबारो मे शीर्षक रूप मे छपा। दोनेत्स बेसिन की "इर्मिनो-केन्द्रीय" खदान के इस नौजवान कोयला काटनेवाले ने अतर्राष्ट्रीय युवक दिवस के उपलक्ष्य मे एक नया रिकार्ड क़ायम करने की प्रतिज्ञा की। ३१ अगस्त को

अपनी रात की पाली में उसने १०२ टन कोयला काटा और इस तरह सामान्य कोटे की चौदह गुना अधिपूर्ति की। दोनेत्स खनक का यह कमाल केवल हाड़ मांस की बात नहीं थी: कुछ दिनों से अगुआ खनक कोयला काटने के अधिक सस्ते उपायों पर काफ़ी सोच-विचार कर रहे थे। पहले एक ही आदमी कोयला काटता, फिर कटाव खम्बे लगाता और तब दोबारा अपना न्यूमेटिक हैम्मर उठाता। स्तखानोव ने अधिक सुप्रवाहित श्रम विभाजन लागू करने का निश्चय किया। उनके साथ खम्बा लगानेवालों का एक जत्था भेजा गया और इससे उन्हें उत्पादिता को अभूतपूर्व शिखर तक पहुंचाने का मौक़ा मिल गया। इस रिकार्ड ने दूसरे लोगों को भी भीतरी सम्भावनाओं से काम लेने की प्रेरणा मिली।

कई दिनों बाद अख़बारों में समाचार छपे कि अन्य अगुआ मज़दूरों ने भी श्रम की उत्पादिता में रिकार्ड क़ायम किये: गोर्की मोटर कारख़ाने में बुसीगिन ने, लेनिनग्राद के "स्कोरोखोद" जूता कारख़ाने में स्मेतानिन ने, मास्को इंजीनियरिंग कारख़ाने में गूदोव ने, विचुगा सूती कारख़ाने में येव्दोकीया और मरीया विनोग्रादोवा ने, तथा परिवहन सेवा में क्रिवोनोस ने। बेशक ही ये सारे रिकार्ड एक रात में नहीं क़ायम हुए, वे ध्यानपूर्वक अध्ययन और तैयारी का नतीजा थे मगर ये सब रिकार्ड तोड़नेवाले अपने-अपने काम में सचमुच निपुण थे जो बहुत दिनों से योजना के ध्येयों की अधिपूर्ति कर रहे थे। इन व्यक्तियों और पूरे के पूरे जत्थों और कारख़ानों के उत्साह ने शीघ्र ही एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर लिया जिसका उद्देश्य वर्तमान उत्पादन दर को बदलना तथा श्रम की उत्पादिता में अत्यधिक वृद्धि करना था।

नवम्बर १९३५ के मध्य में कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा जन कमिसार परिषद ने स्तखानोव के समर्थकों का एक अखिल संघीय सम्मेलन आयोजित किया। मज़दूर वर्ग के ३ हज़ार सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि चार दिन क्रेमलिन में मीटिंग करते रहे। उन्होंने अपने-अपने अनुभव सुनाये, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के उपाय निकाले और यह निश्चय किया कि आगे सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार क्या हैं। क्रेमलिन के इस सम्मेलन ने हर प्रतिनिधि को चाहे वह मज़दूर हो या जन कमिसार, फ़ैक्टरी मैनेजर हो या पार्टी कार्यकर्ता, आर्थिक और राजनीतिक मामलों में अधिक ज्ञान देकर समृद्ध किया।

केवल दम बरम पहले स्तखानोव एक कुलक के खेत मजदूर थे और बुसीगिन १६२६ में अपना गाव का घर बेचकर शहर आये थे। मोर्लोव इन दोनों से उम्र में बहुत बडे थे। अपने बाप और दादा की ही तरह वह भी क्राति से पहले राज मिस्त्री का काम करते थे। मास्को में उन्होंने पत्थर की अनेक इमारतें बनायी थी मगर स्वय उनके लिए लकडी का झोपडा ही था। क्राति के बाद वह अपने पेशे के निपुण उस्ताद माने गये जिनके काम के तरीका को अनेक राज मिस्त्रियों ने अपनाया।

मास्को सम्मेलन के बाद मजदूरों के नये समूह समाजवादी प्रतियोगिता में शामिल हुए। एक माल के भीतर हर तीसरा या चौथा मजदूर इसम भाग ले रहा था। जो लोग वर्कशापो, फैक्टरियो तथा निर्माण प्रयोजनाम्रो के कार्य पालक थे, उन्होने स्तखानोव आन्दोलन को बढावा देने म महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे मजदूरा की दक्षता का स्तर ऊचा करते तथा देश के पूरे आर्थिक विकास के लिए उसके महत्व से भली भाति अवगत थे। ये कोई आश्चर्य की बात नही थी, क्योंकि अधिकाशत. उद्योग के प्रबधकर्ता ऐसे लोग थे जो शुरू में खुद भी मजदूर थे।

उनमे से एक कोरोबाव थे जो पहल एक धातुकर्मक मजदूर थे। उनका जन्म १६०२ म हुआ था और अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए उन्होने भी माकेयेव्का धातुकर्मक कारखाने मे लडकपन म ही काम करना शुरू कर दिया था। क्राति की बदौलत उनको और उनके भाइयो को उच्च शिक्षा मिली। कोरोबोव इजीनियर हुए और आखिरकार धातुकर्मक उद्यमो के मग्नितोगोर्स्क समूह के निदेशक नियुक्त किये गये।

इसी तरह का रास्ता तय किया था ओत्स ने जो लेनिनग्राद मे कीरोव इजीनियरिंग कारखाने के निदेशक थे, लिखाचोव ने जो मास्को मोटर कारखाने के निदेशक थे, ग्रानोव्स्की ने जो बेरेज्नीकी रासायनिक खाद फैक्टरी के निदेशक थे और फ्राकफुर्त ने जो कुज्नेत्स्क मे नये औद्योगिक केन्द्र के निर्माण की देखरेख कर रहे थे। इनमे सभी स्नातक इजीनियर नही थे, लेकिन वे सभी बहुत अनुभवी और कुशल सगठनकर्ता थे जिनमे जबर्दस्त इच्छा शक्ति और मुस्तैदी थी। उनमे उन गुणो का बहुत उपयुक्त समावेश हुआ था जो उद्योग तथा पार्टी कार्य दोनो के नेताओं के

खान मजदूर स्तखानोव
और उनके मजदूर साथी।
दोनेत्स बेसिन। १९३५

लिए जरूरी है और इसी बात ने उनको अपने साथियों में प्रमुख बना दिया।

१९३३ और १९३७ के बीच ४,५०० बड़े उद्यम चालू किये गये। यह प्रथम पंचवर्षीय योजना की कुल संख्या के तीन गुना से भी अधिक था। उसी अवधि में औद्योगिक पैदावार दोगुनी हो गयी। पहले ही की तरह सबसे अधिक तेजी से विकास भारी उद्योग का हुआ और १९३७ तक अर्थतंत्र की सभी मुख्य शाखाओं का तकनीकी पुनर्निर्माण बड़ी हद तक पूरा हो चुका था। परिणाम विशेष रूप से असाधारण उन जनतंत्रों और क्षेत्रों में हुए जहां ग़ैर-रूसी जातियों के लोग रहते थे। क्रांति के बाद जो बीस बरस गुज़रे थे उनमें उकइना ने अपने उद्योग का सात गुना

विस्तार कर लिया था और १९३७ मे इसकी पैदावार उतनी ही थी जितनी १९१७ मे पूरे ज़ारशाही रूस की थी। कज़ाखस्तान और मध्य एशिया मे उद्योग के विकास के साथ स्थानीय मजदूर वर्ग का विकास हो रहा था। १९३७ मे पूरे देश मे उद्योग मे काम करनेवालो की सख्या १ करोड से अधिक थी और मध्य एशिया मे १९३२ और १९३७ के बीच उद्योग मे काम करनेवाले लोगो की सख्या मे ६० प्रतिशत वृद्धि हुई याने पुराने औद्योगिक केन्द्रो और उक्रइना की तीन गुना वृद्धि।

विभिन्न गैर-रूसी जनतत्रो मे औद्योगिक विकास के स्तर तेजी से समतल होते जा रहे थे। कज़ाखस्तान थोडे ही दिनो मे कोयले, तेल तथा अलौह धातुओ का एक मुख्य केन्द्र बन गया। कोयला खनन ने किर्गिजस्तान का चेहरा बदल दिया। सोवियत उज्बेकिस्तान कृषि मशीनें, रेशमी और सूती कपडा और कपास पैदा करने लगा। तुर्कमानिस्तान मे तेलकूप और रासायनिक कारखाने बनाये गये, ताजिकिस्तान में औद्योगिक उद्यम बडी तेजी से फैल रहे थे और हर जनतत्र मे, हर प्रदेश मे इसी प्रकार का विकास देखने को मिलता था।

प्रथम पचवर्षीय योजना की तुलना मे १९३३-१९३७ की अवधि मे उपभोग सामान के उद्योग के विकास के लिए अधिक धन और प्रयत्न लगाया गया। उदाहरण के लिए जार्जिया मे चाय, डिब्बाबन्दी, शराब और जूते के उद्योग को प्रधानता दी गयी। मध्य एशिया विभिन्न प्रकार के कपडो तथा खाद्य पदार्थों का उत्पादन करने लगा।

१९३७ मे कुल औद्योगिक पैदावार का ८० प्रतिशत नये या पूर्णत पुनर्निर्मित कारखानो मे पैदा होता था। उत्पादक शक्तियो का महत्वपूर्ण स्थानातरण देश के पूर्वी भाग की ओर हुआ। कुज्नेत्स्क कोयला बेसिन और करागन्दा कोयला बेसिन का आर्थिक महत्व बढता गया। वोल्गा और उराल के बीच के इलाके मे तेल का पता लगा और वहा एक तेल उत्पादन केन्द्र विकसित हुआ। उराल, साइबेरिया तथा सुदूर पूर्व की औद्योगिक शक्ति प्रभावी रफ्तार से बढी।

अतर्राष्ट्रीय स्थिति के दिनोदिन बिगडते जाने, जर्मनी मे फासिज्म का उत्थान तथा जापान की आक्रामक आकाक्षाओ के बढने के कारण सोवियत सघ के लिए अपनी प्रतिरक्षा पर अधिक खर्च करना ज़रूरी हो गया। इसका मतलब यह था कि हल्के उद्योग मे कम धन लगाया जा सकता

पापानिन खोज दल के सदस्य। १९३६

था और इससे योजना के ध्येयों की पूर्ति पर असर पड़ा। शुरू में सोचा गया था कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत हल्के उद्योग का विकास भारी उद्योग से अधिक तेजी से होगा। मगर यह नहीं होनेवाला था। इस बीच लाल सेना को पुनः सुसज्जित करने का काम तेज कर दिया गया। १९३६ में देश के सिनेमा घरों में एक वृत्त चित्र "कीयेव की लड़ाई" दिखाया गया जिसने उस साल उक्रइना तथा बेलोरूस में ताजा सोवियत युद्धाभ्यास को चित्रपट पर पेश किया। इन युद्धाभ्यासों को देखनेवालों में विदेशी राजनयिक और संवाददाता भी थे जिन्हें इस प्रकार अपनी आंखों से सोवियत कवचित सैनिक दस्तों की उच्च गतिशीलता

तथा छतरी सेना की कार्यशीलता को देखने का अवसर मिला। दोनो चीजें देखकर पश्चिमी दर्शकों को आश्चर्य हुआ।

१९३७ मे सोवियत विमान चालको तथा सम्पूर्ण सोवियत वैमानिको ने ससार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था जब उस साल २१ मई को वोदोप्यानोव की कमान मे सोवियत विमान ने उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र मे हिमखण्ड पर उतरकर एक पूरे वैज्ञानिक खोज दल को वहा पहुचा दिया। पापानिन के नेतृत्व मे चार व्यक्तियो के इस खोज दल ने बहते हुए हिमखण्ड पर २७४ दिन गुजारे। जून मे उत्तरी ध्रुव के रास्ते मास्को से न्यूयार्क की पहली लगातार उडान हुई। तूपोलेव के डिजाइन किये हुए विमान पर च्कालोव के कर्मी दल ने ८,५०४ किलोमीटर की उडान ६३ घटे १६ मिनट मे तय की। एक महीने के बाद ग्रोमोव के नेतृत्व मे एक और कर्मी दल ने भी यही उडान की। इन विश्व रिकार्डों ने सारे ससार को प्रभावित किया और दुनिया मे चारो ओर पत्र-पत्रिकाए इन वीरो के छायाचित्रो से भरे पडे थे। विमान तथा उनके डिजाइनकारो की भी बडी प्रशसा की गयी।

यह कहने की जरूरत नही कि ये सफलताए समाजवादी उद्योगीकरण की उपलब्धियो तथा मजदूर वर्ग के त्यागपूर्ण प्रयासो की बदौलत ही सम्भव हो सकी।

१९३७ मे सोवियत सघ यूरोप की प्रमुख औद्योगिक शक्ति बन चुका था और ससार मे उसका स्थान दूसरा था। ये सब कुछ सचिति के अन्दरूनी साधनो का उपयोग करके तथा देशी उत्पादन को विकसित करके हासिल किया गया था। आयात मालो से भी सहायता मिली खासकर १९२९ और १९३२ के बीच जब १९१७ और १९३७ के बीच आयात के लिए निर्धारित कुल धन का ४० प्रतिशत इन पाच वर्षों मे विदेशी मशीनरी और कच्चा माल खरीदने पर खर्च किया गया। लेकिन प्रथम पचवर्षीय योजना की अवधि मे भी विदेशो मे खरीदा हुआ माल देश के उपभोग के ३–३ ५ प्रतिशत से अधिक नही था और बाद के पाच वर्षों मे यह आकडा कम होकर १ और ० ७ प्रतिशत के बीच पहुच गया था। १९३७ तक सोवियत सघ ने साबित कर दिया था कि वह तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से एक स्वावलम्बी शक्ति है।

सामूहिक कृषि का सुदृढ़ीकरण

दूसरी पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ तक सामूहिक कृषि व्यवहारतः सोवियत संघ में स्थापित हो चुकी थी। अधिकांश किसान स्वेच्छापूर्वक सामूहिक फ़ार्मों में शामिल हो चुके थे। काश्त की लगभग ८० प्रतिशत ज़मीन पर राजकीय तथा सामूहिक फ़ार्मों द्वारा खेती की जाती थी। लेकिन इस समय के कुछ वाद ही ये नये फ़ार्म सचमुच लाभदायक वनने की तथा अपनी करीवन असीम क्षमता से पूरी तरह काम लेने की आशा कर सकते थे। चौथे दशक के प्रारम्भ में कृषि उत्पादन में वृद्धि होने के वजाय कुछ कमी ही हो गई। इसपर सोवियत संघ के दुश्मनों ने वड़ी कटु और व्यंग्यात्मक आलोचनाएं कीं। वोल्शेविकों के विरुद्ध आरोपों का कोई अंत नहीं था। समाजवाद के अनेक विरोधी आज भी उस दौर की कठिनाइयों तथा अंतर्विरोधों की चर्चा वहुत आनन्द लेकर करते हैं। मगर शान्त चित्त तथा वस्तुनिष्ठा के भाव से यह जानने के लिए कि वास्तव में हुआ क्या था, इतिहास के प्रति वहुत भिन्न दृष्टिकोण अपनाने की ज़रूरत है।

उन दिनों अधिकांश फ़ार्म छोटे और आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर थे। औसतन हर एक में ७१ किसान परिवारों के चक शामिल थे, सामूहिक वोवाई की १,०७० एकड़ ज़मीन, १३ गाएं, १५ सूअर आदि थे। इन फ़ार्मों पर जो काम होता था उसका केवल पांच में एक भाग फ़ार्म मशीनों द्वारा किया जाता था, अन्यथा सव कुछ हाथ से या पशुओं की सहायता से किया जाता।

पार्टी इन समस्याओं के स्वरूप से जो कृषि के समाजवादी पुनर्गठन के कारण पैदा हो रही थीं, भली भांति अवगत थी और जानती थी कि यह परिघटना अस्थायी है। वड़े पैमाने की सामूहिक खेती के निर्णायक फ़ायदों में, राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों के उज्ज्वल भविष्य में उसका विश्वास एक क्षण के लिए भी कम नहीं हुआ। जनवरी, १९३३ में केन्द्रीय समिति के एक पूर्णाधिवेशन ने वताया कि "यह आशा करना हास्यास्पद होगा कि ये सभी अनेक नयी कृषि इकाइयां जो ग्रामीन क्षेत्रों में स्थापित की गई थीं जहां निरक्षरता तया पिछड़ी हुई विधियों का ज़ोर था, यकायक, एक साल के अर्से में, आदर्श, अत्यंत लाभदायक उद्यम वन जायेंगी। यह ज़ाहिर है कि सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों को संगठनात्मक

रूप से पुष्ट करने, अपकारी तत्वो को निकाल बाहर करने तथा परीक्षित बोल्शेविक मेनेजरो को सावधानी से चुनने और परिशिक्षित करने के लिए ताकि राजकीय और सामूहिक फार्मों को वास्तव म आदर्श उद्यम बनाया जा सके, समय की और दृढ, धैर्यपूर्वक उद्यमशील काम करने की जरूरत है।"

शीघ्र ही सामूहिक फार्मों को सुदृढ करने तथा उनके यन्त्रीकरण को तेज करने के लिए एक व्यापक अभियान शुरू किया गया। १६३३ के प्रारम्भ मे राज्य ने कृषि की पैदावार के भुगतान के नये नियम जारी किये जिनके अनुसार प्रत्येक सामूहिक फार्म को अपनी उपज की एक निश्चित मात्रा नियत दाम पर सरकार को देनी थी। यह एक प्रकार का कर था। यह कोटा दे देने के बाद सामूहिक किसानो को आजादी थी कि बाकी उपज आपस मे बाट ले। राज्य तथा फार्मों के बीच इस सबध का मतलब यह था कि किसानो को अपने सामूहिक फार्मों की पैदावार बढाने के लिए अधिक भौतिक प्रोत्साहन मिला।

इसी के साथ केन्द्रीय समिति ने मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो मे तथा राजकीय फार्मों मे विशेष पार्टी सस्थाए स्थापित की जिन्हे राजनीतिक विभाग कहा जाता था और जिनके नेता सीधे केन्द्रीय समिति द्वारा नियुक्त किये जाते थे। ये वास्तव मे पार्टी द्वारा आपातकालीन कार्रवाइया थी जिनका उद्देश्य कृषि विकास पर पार्टी की देखरेख को पुष्ट करना था। इन पदो पर पार्टी के कुछ सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि भेजे गये। उनमे से लगभग आधे उच्च शिक्षा प्राप्त थे और कोई दस बरस से पार्टी का काम कर रहे थे। इस नये रक्त के प्रवाह का असर ग्रामीण क्षेत्रो मे शीघ्र ही नजर आने लगा। १६३३ के प्रारम्भ मे सामूहिक फार्मों के अग्रणी कर्मियो की प्रथम अखिल सघीय काग्रेस मास्को मे आयोजित हुई। अगुआ किसानो ने पार्टी द्वारा सामूहिक कृषि को पुष्ट करने के लिए की गई कार्रवाई की सराहना की। इस काग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव मे कहा गया था "हम व्यवहार मे देख चुके है कि सोवियत सत्ता और बोल्शेविक पार्टी से हमे कितना लाभ होता है। यह हमारी अपनी सत्ता है। यह हमारी अपनी पार्टी है। ये हमारे अपने हाड मास के टुकडे हैं और उनके लिए हम कभी भी और किसी भी शत्रु के खिलाफ अतिम विजय तक लडने को तैयार हैं।"

राजनीतिक विभागो के कर्मियो ने राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय किसानो की सहायता से राजनीतिक तथा आर्थिक कार्य के ढाचे को तेजी से और

मूलतः पुनर्गठित किया। प्रबंधकर्ताओं को चुनने और प्रशिक्षित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया। प्रबंध कार्यों पर २.५ लाख से अधिक अगुआ सामूहिक किसान नियुक्त किये गये। उस समय ग्रामीण पार्टी इकाइयों की संख्या बहुत बढ़ गई। १९३० की गर्मियों में सामूहिक किसानों में पार्टी सदस्यों की कुल संख्या ४ लाख से कुछ ही अधिक थी, मगर १९३४ के अंत तक यह संख्या क़रीबन दोगुनी होकर ७,९०,००० तक पहुंच गई थी।

सामूहिक फ़ार्मों में प्रबंध तथा साधारण कार्यकर्ताओं में व्यापक हेरफेर तथा राजनीतिक तौर पर सक्रिय सदस्यों की संख्या में काफ़ी बड़ी वृद्धि का लाभदायक प्रभाव सामूहिक तथा राजकीय फ़ार्मों और मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों के सांगठनिक पुष्टीकरण तथा उनके काम की गुणावस्था पर पड़ा। थोड़े ही समय के भीतर यह सम्भव हो गया कि गांवों को शेष सोवियत-विरोधी तत्वों से, जो बराबर तोड़फोड़ की हरकतें किये जाते थे, मुक्त कर दिया जाये। पूर्ण रूप से यह काम जिसका उद्देश्य कृषि उत्पादिता को बढ़ाना था, बड़ी हद तक सफल हुआ जैसा कि निम्नलिखित आंकड़ों से जाहिर होता है।

१९३४ में भूतपूर्व व्यक्तिगत किसानों के ७१ प्रतिशत से अधिक चक सामूहिक फ़ार्मों में शामिल कर लिये गये थे जो देश की कुल जोत की जमीन के ८७ प्रतिशत पर खेती करते थे। पशुओं की संख्या में काफ़ी बड़ी वृद्धि हुई और कृषि की पूर्ण व्यवस्था में २,६१,००० ट्रैक्टर, ३३,००० कम्बाइन हार्वेस्टर और ३४,००० लारियां थीं। नयी मशीनों से काम लेने के लिए जरूरी था कि तकनीकी पाठ्यक्रम जारी किये जायें और ट्रैक्टर चलाने का प्रशिक्षण पूरे देश में हज़ारों आदमियों को दिया जाये जिनमें सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्ष, मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों के निदेशक तथा जिला और प्रादेशिक पार्टी समितियों के मंत्री भी शामिल हों। उन दिनों अंगेलिना की ख्याति घर-घर पहुंच गई: उन्होंने सोवियत संघ में नारी ट्रैक्टर चालकों का पहला जत्था संगठित किया। जब अंगेलिना ने पहले पहल ट्रैक्टर चलाना शुरू किया तो बहुत से लोगों ने नारियों द्वारा इस तरह का काम करने पर आपत्ति की। अंगेलिना तथा उनकी साथी नारी ट्रैक्टर चालकों को केवल बुरा भला सुनना नहीं पड़ा। उनपर हमले भी किये गये। लेकिन नये समाज की प्रगतिशील आचार-विधि की जीत हुई और

शीघ्र ही हजारो औरतो ने अगेलिना की मिसाल पर अमल किया और पूर्णत प्रशिक्षित ट्रैक्टर चालक बन गईं जो स्वीकृत कोटे से भी अधिक काम कर सकती थी।

श्रम अनुशासन मे भी सुधार हुआ। १९३४ मे प्रत्येक समर्थांग सामूहिक किसान ने औसतन १६६ कार्य दिवस इकाई काम किया था जो १९३२ के औसत से ४८ इकाइया अधिक था, और इनमे से प्रत्येक कार्य दिवस इकाई का मतलब था करीबन तीन किलो अनाज। अगुआ आर्टेल प्रति कार्य दिवस इकाई मे १२-२६ किलो अनाज, आलू और नकद धन भी दिया करते थे।

लेकिन कुछ अनुत्पादक आर्टेल भी थे जिनकी आमदनी कम थी। उनका होना ही इस बात का सबूत था कि बहुतेरे सामूहिक फार्मों की सामूहिक अर्थव्यवस्था अभी काफी विकसित नही थी। यहा सामूहिक किसान बडी हद तक अपने निजी जमीन के टुकडे पर निर्भर करते थे जिनमे वे आलू, सब्जी-तरकारी तथा सूरजमुखी उपजाते थे। इनसे वे अपने परिवार का पेट पालते और उपज का एक अश बेचते भी थे। यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि इन प्लाटो पर कर अपेक्षाकृत कम था।

आरम्भ की विभिन्न कठिनाइयो के बावजूद सामूहिक फार्म व्यवस्था ने शीघ्र ही जड पकड ली और इसका फल मिलने लगा। १९३४ मे राज्य को अनाज का भुगतान १९३२ की तुलना मे तीन महीने पहले ही पूरा हो गया था। अब आपातकालीन कार्रवाइयो का सहारा लेने की कोई जरूरत नही रही। राजनीतिक विभागो की भी जरूरत नही रही थी। मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो मे उन्हे विगठित कर दिया गया और केवल राजकीय फार्मों पर वे परिवर्तित रूप मे १९४० तक रह गये। १९३३-१९३४ मे राज्य को अनाज का भुगतान १९३२ से कही अधिक हुआ और इसका ९२ प्रतिशत सामूहिक तथा राजकीय फार्मों से मिला था। सोवियत कृषि की बढती हुई क्षमता का सबसे प्रभावी सबूत यह था कि रोटी तथा विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों पर १९२८ मे जो राशन लागू किया गया था, जब अनाज का मुख्य स्रोत व्यक्तिगत किसानो के खेत थे, उसे अब उठा दिया गया। नयी आर्थिक व्यवस्था शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो मे माल सचलन के विस्तार के अनुकूल थी।

फ़रवरी, १६३५ में सामूहिक फ़ार्म के अग्रणी कर्मियों की दूसरी अखिल संघीय कांग्रेस मास्को में आयोजित हुई। सारे देश के प्रतिनिधि आये। वे ५१ जातियों के प्रतिनिधि थे और उनमें कोई एक तिहाई महिलाएं थीं। इन आंकड़ों से सामूहिक कृषि की प्रगति स्पष्ट थी, जो अब पूरे देश में, उसकी तमाम जातियों तथा उपजातीय अल्पसंख्यकों में फैल गयी थी। कांग्रेस ने सामूहिक फ़ार्मों के नये नियम स्वीकार किये जिनमें यह पैरा भी था: "श्रमजीवी किसानों के लिए एकमात्र सही रास्ता समूहीकरण और समाजवाद का रास्ता है। आर्टेलों के सदस्य स्वयं यह जिम्मेदारी लेते हैं कि वे आर्टेल को सुदृढ़ बनायेंगे, ईमानदारी से काम करेंगे, श्रम के हिसाब से सामूहिक आय का वितरण करेंगे, सामूहिक संपत्ति की रक्षा करेंगे, अपने फ़ार्म के उपकरणों, इमारतों, ट्रैक्टरों, मशीनों और घोड़ों की पूरी देखभाल करेंगे तथा मजदूरों और किसानों के राज्य द्वारा निर्धारित कार्यभार को पूरा करेंगे, इस तरह अपने सामूहिक फ़ार्म को सचमुच एक बोल्शेविक उद्यम बनायेंगे और उन सभी लोगों की समृद्धि को सुनिश्चित करेंगे जो उसपर काम करते हैं।"

१६३५ की गर्मियों में जन कमिसार परिषद ने "कृषिक आर्टेलों को भूमि के स्थायी उपयोग का सरकारी पट्टा प्रदान करने के संबंध में" एक निर्णय लिया और इसके शीघ्र बाद ही ये पट्टे जारी कर दिये गये। यह एक महत्वपूर्ण अवसर था जिसके लिए संबंधित सामूहिक फ़ार्म के सभी सदस्य एकत्रित हुआ करते थे। १६३७ तक सभी सामूहिक फ़ार्मों को इस तरह के पट्टे मिल गये थे। करीबन ६२ करोड़ एकड़ जमीन सामूहिक फ़ार्मों को निशुल्क उनके अविच्छिन्न इस्तेमाल के लिए दे दी गई और यह इलाक़ा उस जमीन से जिसपर श्रमजीवी किसान १६१७ के पहले खेती करते थे, ढाई गुना अधिक था।

पूरे देश में किसानों के जीवन में बुनियादी परिवर्तन हो गया था। आंकड़ों की शुष्क भाषा से विदित था कि किसानों द्वारा अंडे, दूध और मांस और चर्बी दोनों के सम्मिलित उपभोग में क्रांतिपूर्व के काल की तुलना में क्रमशः ३०० प्रतिशत, ५० तथा ७० प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। चीनी जो क्रांति से पहले एक दुर्लभ वस्तु थी, अब किसानों के खाने की मेज पर साधारणतः नज़र आने लगी थी। निर्मित सामानों खासकर जूते, कपड़े और साबुन का किसानों द्वारा उपयोग कई गुना बढ़ गया। बाइसिकिल,

मोटर-साइकिल, घड़ी, रेडियो, ग्रामोफोन और कैमरे की माग देहाती आबादी मे थोडे ही दिनो मे बहुत बढ गई।

यह प्रगति सोवियत किसानो के त्यागपूर्ण काम का नतीजा थी। समाजवादी प्रतियोगिता जो औद्योगिक केन्द्रो मे मजदूर जीवन का एक परिचित पहलू थी, कृषि मे भी जोरो से फैल गई। उक्रइनी सामूहिक किसान नारी देमचेको ने चुकन्दर की रिकार्ड फ़सल -- २० टन प्रति एकड -- उपजायी। उज्बेकिस्तान मे यूनुसोव एक सामूहिक फ़ार्म के पहले किसान थे जिन्होने दो टन प्रति एकड कपास की फसल उपजायी। एक साइबेरियाई अनाज उत्पादक येफ़्रेमोव ने १५ टन प्रति एकड अन्न पैदा किया। इन पथ प्रदर्शको ने अपनी मिसाल से लाखो को प्रेरित किया। आज तक नारी ट्रैक्टर चालक अगेलिना, कम्बाइन हार्वेस्टर चालक बोरिन तथा उन वर्षों के समाजवादी प्रतियोगिता अभियान के अन्य प्रमुख विजेताओ के नाम सम्मान के साथ लिये जाते है क्योकि उनकी मिसाल ने सभी सामूहिक किसानो को बता दिया कि सामूहिक खेती मे कितनी सम्भावनाए और लाभ निहित हैं। इन पथ प्रदर्शको का अनुसरण करने के प्रयास मे सोवियत ग्रामीण जनगण ने कृषि मे समाजवाद की निश्चित विजय को सफल बनाया।

सांस्कृतिक क्रांति की महान प्रगति

चौथे दशक मे ज्यो-ज्यो उद्योगीकरण ने प्रगति की और कृषि की सामूहिक फार्म व्यवस्था का सुदृढीकरण हुआ, लोगो ने शिक्षा तथा कला के क्षेत्र मे भी विजय प्राप्त की जो कम महत्वपूर्ण नही थी।

यह कोई छिपी हुई बात नही कि १९१७ मे समाजवादियो मे भी बहुतो को यकीन था कि रूस मे सर्वहारा क्रांति विफल होगी अगर किसी और कारण नही तो इसलिए कि श्रमजीवियो मे अधिकाश अनपढ थे। शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने से चन्द दिन पहले एक प्रतिक्रियावादी पत्र ने लिखा था "अगर हम थोडी देर के लिए मान ले कि बोल्शेविक हमे परास्त कर देंगे, तो हम पर शासन कौन करेगा? शायद बावर्ची, ये कबाब और पुलाव के विशेषज्ञ, या साईस और कोयला झोकनेवाले? या शायद आयाए बच्चो का कपड़ा धोते-धोते राज्य परिषद की बैठको मे पहुच

जाया करेंगी? नये राजनयिक कहां से आयेंगे? शायद लोहार थियेटर चलायेंगे, नल बनानेवाले कूटनीति करेंगे और बढ़ई डाकतार सेवा का काम करेंगे? क्या ऐसी हालत हो जायेगी? क्या यह स्थिति सम्भव है? इस पागलपन के सवाल का जवाब इतिहास बोल्शेविकों को देगा।"

कम्युनिस्ट पार्टी खूब जानती थी कि अनपढ़ नर-नारियां देश के राजनीतिक जीवन में सक्रिय भाग नहीं ले सकते और न समाजवाद के सचेत निर्माता हो सकते हैं। लेकिन कम्युनिस्टों को विश्वास था कि अपने पुराने शोषकों से अपने को मुक्त कर लेने के बाद किसानों और मजदूरों का व्यापक जन समूह अपने पिछड़ेपन को दूर कर लेगा और यह कि पुराने बुद्धिजीवियों के सभी प्रगतिशील हिस्से उनकी तरफ़ आ जायेंगे।

अक्तूबर, १९१७ ने देश के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में ही नहीं बल्कि इसके सांस्कृतिक विकास में भी विभाजक रेखा का काम किया जिसके साथ ऐसी गहरी और व्यापक तब्दीलियां आयीं जो वास्तव में एक सांस्कृतिक क्रांति थी।

लेनिन के नजदीक इस सांस्कृतिक क्रांति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की संस्कृति को बदलकर एक ऐसी चीज़ बना देना था जो सचमुच, उस शब्द के व्यापकतम अर्थ में लोक संस्कृति हो। इस ध्येय के लिए सबसे पहले यह जरूरी था कि देश के सांस्कृतिक खज़ानों को, कलात्मक तथा वैज्ञानिक उपलब्धियों को एक छोटे से विशेष सुविधा प्राप्त गुट के बजाय पूरे जनगण के लिए सुलभ बनाया जाये, और तब श्रमजीवी जनता के सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाना और उन्हें बेहतर शिक्षा प्रदान करना था ताकि लोगों की योग्यताओं को विकसित होने का अवसर मिले।

इसी लिए लेनिन राज्य के शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्य को निर्णायक महत्व की चीज मानते थे। चौथे दशक के अंत तक क्रांति के नेता द्वारा निर्धारित, विश्व के प्रथम सर्वहारा राज्य की सांस्कृतिक उन्नति के मुख्य कार्यभार पूरे हो चुके थे।

चौथे दशक के प्रारम्भ तक शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को शहर और गांवों में केन्द्र तथा जातीय छोरवर्ती इलाक़ों, दोनों में, निरक्षरता निवारण का काफ़ी अनुभव प्राप्त हो चुका था।

इस प्रसंग में क़बार्दा-बल्क़ार स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतंत्र में एक दिलचस्प प्रयोजना पर अमल किया गया। उत्तरी काकेशिया के उस इलाक़े में

क्राति के पहले केवल एक प्रतिशत लोग पढना-लिखना जानते थे और तीसरे दशक के मध्य तक इस स्थिति मे कोई विशेष अतर नही हुआ था।

तब एक दिन एक प्रादेशिक कम्यनिस्ट पार्टी समिति के एक मत्री कलमिकोव ने स्थानीय परम्परा के अनुसार बडे बूढो से राय ली कि इस सबध मे क्या करना चाहिए। पहाडो के बडे बूढो ने भी निराशा से अपने सिर हिलाये कि कुछ नही हो सकता। उन बुजुर्गों की अनुभवी बुद्धिमत्ता भी इस मामले मे कुछ काम नही आयी। तब पार्टी मत्री ने अपना विचार उनके सामने रखा कि शायद एक विशेष शिक्षा केन्द्र का निर्माण किया जाये, एक प्रकार का बोर्डिंग स्कूल जहा युवक लोग ही नही बल्कि बडे बूढे भी अपनी शिक्षा मे प्रगति के लिए जमा हो सके।

यह सुनकर सबको आश्चर्य हुआ क्योंकि प्रदेश का बजट उन दिनो केवल १० लाख रूबल होता था। लेकिन निधि सबसे बडी बाधा नही थी। स्थानीय मुल्लाओ के बहकाने पर धार्मिक लोग अपने बच्चो को पहाडो मे ले जाकर खोहो और पशुओ के रखने की जगहो मे छिपाने लगे।

पार्टी और कोम्सोमोल सदस्यो ने घर घर जाकर बच्चो और बडो को स्कूल की शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और उच्च शिक्षा के लिए भर्ती करना शुरू किया। स्थानीय लेनिन शिक्षा केन्द्र मे इन सबका प्रबध किया गया था। वे पुरुष और स्त्रिया जिन्होने इस नये केन्द्र मे पाठ्यक्रम पूरा किया तथा उनके साथ वहा के शिक्षक जो मध्य रूस के शहरो से भेजे गये थे, निरक्षरता के विरुद्ध अगले अभियान मे आगे आगे थे। कुछ वर्षों मे जनतत्र के लगभग सभी जिला पार्टी मत्री, राजकीय फार्म निदेशक तथा सामूहिक फार्म अध्यक्ष लेनिन शिक्षा केन्द्र का पाठ्यक्रम पूरा कर चुके थे।

समाजवादी उद्योगीकरण कार्यक्रम के अतर्गत जो नयी प्रयोजनाए शुरू की गयी, वे भी सस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र साबित हुईं। अगुआ मजदूरो ने जिनकी चर्चा ऊपर की गयी (नोवोकुज्नेत्स्क के फिलीपोव, बेरेज्नीकी के अर्दुथानोव, गोर्की के बुसीगिन और तुर्कसिब रेलवे प्रयोजना पर काम करनेवाले ओमरोव) सबो ने उद्योग मे काम शुरू करने के बाद पढना-लिखना सीखा, और पहले समाजवादी प्रतियोगिता मे भाग लिया और तब अग्रणी मजदूर हुए। औद्योगिक मजदूरो की नौजवान पीढी ने भी

संध्या पाठशालाओं का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद उच्च शिक्षा से लाभान्वित होने की ओर क़दम बढ़ाया।

लेकिन इस प्रसंग में "नया जीवन" आरम्भ करना पुरानी पीढ़ीवालों के लिए ज्यादा कठिन था। अर्दुआनोव ने जब अपने जत्थे के अन्य सदस्यों के साथ पढ़ना-लिखना सीखना शुरू किया तो उस समय वे ४३ वर्ष के हो चुके थे। क़ानून के अनुसार वे सब लोग जो इस पाठ्यक्रम में शरीक थे, अपने कार्य दिवस में दो घंटा कम कर सकते थे, मगर अर्दुआनोव का जत्था अकसर स्वेच्छापूर्वक डटा रहता और अधिक समय काम करता। और थके मांदे होने के बावजूद वे पढ़ाई की कक्षा में जाते और किताबें लेकर पढ़ाई शुरू करते।

फ़िलीपोव पुरानी बातें याद करके कहते हैं: "मैं दूसरे मजदूरों को अख़बारों में मग्न, शब्दों को दोहराते देखा करता और मुझे ईर्षा होती। मुझे पढ़ने का तनिक भी ज्ञान नहीं था और मुझे यक़ीन था कि सभी पुस्तकों में अवश्य बहुत दिलचस्प बातें लिखी होंगी...

"मैं चालीस के लगभग हो चला था जब मैंने अक्षर ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया। पहले पहल पेंसिल चलाना ज़मीन पर कुदाल चलाने से अधिक कठिन मालूम होता था। पढ़ना-लिखना सीखने में मुझे कितनी बार अपनी आस्तीन से माथे का पसीना पोंछना पड़ा यद्यपि अपने काम की पूरी पाली के बाद भी मेरी कमीज कभी पसीने से भीगी नहीं थी। परन्तु अंत में मैं सफल हुआ। मगर इसके लिए मुझे अकसर अपनी नींद त्यागनी पड़ी। लेकिन जब पहली बार मैंने समाचारपत्र के शब्दों को अक्षर-अक्षर करके पढ़ा तो मानो मेरा दूसरा जन्म हो रहा था। मुझे ऐसा लगा मानो मेरी आंखों के सामने से पर्दा हट गया हो! मेरा ख़्याल है आजकल छात्रों को अपनी स्नातक की उपाधि मिलने पर भी उतना हर्ष नहीं होता जितना मुझे यह जान कर हुआ था कि अब मैं पढ़ सकता हूं।"

निरक्षरता निवारण का अभियान चौथे दशक में अपने शिखर पर पहुंच गया। जहां पहली पंचवर्षीय योजना की अवधि में देश में चारों ओर नये निर्माण स्थलों के मचान दिखाई दिया करते थे, वहां अब लोग कहा करते कि सारा देश किताबों से चिपका हुआ है। और इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं थी। हर आयु के लोग किसी न किसी प्रकार की पढ़ाई में लगे हुए थे।

आर्थिक क्षेत्र मे सफलता के कारण यह सम्भव हुआ कि स्कूलो की इमारतो, शिक्षको के प्रशिक्षण तथा शिक्षण व्यवस्था के आम सुधार पर अधिकाधिक निधि लगाई जा सके। उस समय तक युवको के अलावा पुरानी पीढी के अधिकाश लोगो ने भी पढना-लिखना सीख लिया था। इसका श्रेय केवल लिक्बेज (निरक्षरता निवारण) अभियान तथा विभिन्न अध्ययन मडलो और फैक्टरियो मे सगठित सामान्य विषया के कोर्सों को ही नही, बल्कि पूरी आर्थिक व्यवस्था को था जो मेहनतकशो से उच्चतर कुशलता तथा बेहतर शिक्षा की माग कर रही थी और जो इन दोनो को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सुविधाए भी मुहैया कर रही थी।

एक अतिथि इतालियन प्राध्यापक ने द्नेपर बिजलीघर के निर्माण मे काम करनेवाले एक निर्माण अधिकारी से पूछा कि उनके तहत काम करनेवाले मजदूरो मे कितने लोग किसी न किसी प्रकार का पाठ्यक्रम पढ रहे थे।

"दस हजार।" जवाब मिला।

"और आपके तहत मजदूर कितने है?"

"दस हजार।"

"तो काम कौन करता है?"

"वही लोग जो पढते है।"

१६३६ की जनगणना से पता चला कि आबादी मे नौ बरस से ऊपरवालो मे साक्षरता का प्रतिशत जो १८६७ मे २४ और १६२६ मे ५१ था, अब ८१ तक पहुच गया था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१६४१-१६४५) के प्रारम्भ मे लिक्बेज की धारणा ही इतिहास की चीज बन गई थी।

सास्कृतिक रगभूमि मे परिवर्तन जातीय छोरवर्ती इलाको मे खासकर सुस्पष्ट था।

१६३० मे दस वर्षीय यादगार स्कूल नही जाती थी। जब फरगाना घाटी मे एक बोर्डिंग स्कूल खुला तो वह उसकी छात्रा बन गई। एक दिन जब वह अपनी मा से मिलने गई तो स्थानीय मुल्ला और उसके सौतेले बाप ने परिवारवालो से मिलने आने से मना कर दिया। उसकी मा के आसू भी कुछ नही कर सके। स्कूल से निकलने पर यादगार जो उस समय तक कोम्सोमोल सदस्य बन चुकी थी, ताशकन्द रेल परिवहन

संस्थान में दाखिल हो गई। यह उज़्बेक लड़की जिसने कभी यरमाक और बुर्क़ा नहीं पहना था, ५०० और १,५०० मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में उज़्बेकिस्तान की चैम्पियन बनी और अंतर्राष्ट्रीय खेलकूद समारोहों में शरीक हुई। संस्थान से वह इंजीनियर बनकर निकली और उसने रेलवे लाइनों और पुलों का निर्माण किया। यही वह यादगार नसरुद्दीनोवा थी जो आगे चलकर उज़्बेकिस्तान की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मंडल की अध्यक्ष बनी।

किर्गिज़ लड़की उसमानोवा का जीवन भी कोई आसान नहीं था। तेरह वर्ष की अवस्था में वह एक स्थानीय धनी आदमी को दूसरी पत्नी बनाकर बेच दी गई। जब उसने स्कूल में पढ़ने की कोशिश की तो उसे मारा पीटा गया, उसपर केरासीन तेल छिड़का गया और जिन्दा जला देने की धमकी दी गई। लेकिन हिंसा के बावजूद उसने हिम्मत नहीं हारी। चौथे दशक में उसमानोवा पहली किर्गिज़ महिला थी जो सरकार की सदस्य बनी।

यद्यपि ग़ैर-रूसी इलाक़ों में स्कूल की पढ़ाई का स्तर केन्द्रीय इलाक़ों के स्तर के क़रीब पहुंच रहा था, लेकिन चौथे दशक के अंत तक अभी बहुत कुछ करना बाक़ी था। पारिवारिक जीवन और रोज़मर्रा रीति रिवाज में अतीत के बहुत से चिह्न बाक़ी थे।

सांस्कृतिक मोर्चे की मुख्य प्रगति और सामान्य रूप से समाजवादी निर्माण की उपलब्धियां सोवियत कला और साहित्य में जो अपने उद्देश्यों और भावना में पहले की कला और साहित्य से मूलतः भिन्न थे, सजीव बनकर सामने आयीं। लेखकों और कवियों, अभिनेताओं और संगीतज्ञों, चित्रकारों और मूर्तिशिल्पियों, फ़िल्म निर्माताओं और पत्रकारों की एक नयी पीढ़ी विकसित हो रही थी। उन सबोंने कम्युनिस्ट नैतिकता को क़ायम करने तथा समाजवाद के निर्माण में योगदान करने में जो कुछ बन पड़ा किया। उनके सृजन की मुख्य विशेषता जनगण से उनकी अगाध आत्मीयता, उनके आये दिन के दुख दर्द से उनका सक्रिय संबंध था। मक्सिम गोर्की ने एक बहुखंडीय "गृह युद्ध का इतिहास" की प्रयोजना बनायी, रूसी भाषा की पत्रिकाएं "निर्माणरत सोवियत संघ", "विदेश के समाचार" छपने लगीं, "प्रमुख व्यक्तियों के जीवन" नामक पुस्तक माला तथा फ़ैक्टरियों और कारखानों के इतिहास के बारे में अनेक पुस्तकों

का प्रकाशन शुरू हुआ जिनको तैयार करने मे स्वयं मेहनतकश जनता ने सहायता की।

इस दौर के साहित्य का गहरा संबंध देश के द्रुत जीवन से था जिसका एक प्रमुख नमूना मयाकोव्स्की की कविताओं में मिलता है।

मयाकोव्स्की की परम्परा का अनुसरण करते हुए देश के सर्वश्रेष्ठ लेखक और कवि मजदूरों की सभाओं में भाषण करते, देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करते और समाचारपत्रों के अमले में काम करते। "प्राव्दा" में नियमित रूप से पागोदिन, कोल्त्सोव के लेख तथा प्रबंध ईल्फ और पेत्रोव के व्यंगात्मक लेख, बेद्नी की कविताए तथा येफीमोव के व्यंग चित्र छपा करते थे।

अनेक मेधावी लेखकों, साहित्यकारों तथा पत्रकारों ने कई बरस उराल साइबेरिया तथा मध्य एशिया के मजदूरों के साथ रहकर काम किया। इन्ही अनुभवों से अनेक कृतियों का जन्म हुआ जैसे कतायेव की कहानी "काल, कदम रुके नही!", पौस्तोव्स्की की कोल्खीदा और करा-बुगाज", एरेनबुर्ग का उपन्यास 'दूसरा दिन' और "एक सांस में", यासेन्स्की का "कायाकल्प" तथा दर्जनों और कृतियां।

उन दिनों लेबेदेव-कुमाच, सुर्कोव और इसाकोव्स्की की सजीव आशापूर्ण कविताओं की बड़ी धूम थी। उनकी कविताओं को संगीतबद्ध किया दुनायेव्स्की, पोक्रास, ब्लान्तेर और सोलोव्योव-सेदोई ने। प्रातःकाल रेडियो कार्यक्रम का प्रारम्भ शोस्ताकोविच द्वारा रचित गान से होता था

नींद के माते जाग उठो
धन तुम्हारी राह देख रहा है
देश की धरती सूर्य का स्वागत करने
करवटें ले रही है
प्रकाशमय, प्रसन्न और महान

कवियों और लेखकों ने फैक्टरी समाचारपत्रों के प्रकाशन मे सहायता की और शीघ्र ही यह एक परम्परा बन गई। उनकी कविताए, वृत्तकथाए, सूक्तियां, तुकबन्दियां और व्यंगात्मक लेख मजदूरों को अपनी योजना के लक्ष्य पूरा करने, नये जीवन का निर्माण करने तथा

समाजवादी संस्कृति को विकसित करने में सारी शक्ति लगा देने के लिए प्रेरित करते।

जनता के साथ इस निकट संबंध से कला और साहित्य के कर्मियों को ऐसे पात्रों का सृजन करने में सहायता मिली जिनमें असाधारण गहराई, जीवन के प्रति अगाध निष्ठा हो और जिनकी विशेषता पार्टी तथा उच्च सिद्धांतों के प्रति गहरी वफ़ादारी हो।

फ़ूर्मानोव ने जो सफ़ेद गार्डों के ख़िलाफ़ चापायेव के साथ मिलकर लड़े थे, उस प्रसिद्ध कमांडर तथा जन नायक का सजीव चित्र प्रस्तुत करके साहित्यिक जगत में बड़ा नाम किया।

१९३४ में फ़ूर्मानोव के उपन्यास के आधार पर एक फ़िल्म भी बनाई गई। "चापायेव" के एक निर्देशक सेर्गेई वसील्येव क्रांति के दिनों में सरकारी तथा सैनिक चिट्ठियां पहुंचाने का काम करते थे। क्रांति के बाद यह भूतपूर्व पत्रवाहक उच्च शिक्षा संस्थान में दाख़िल हुए, उपाधि ली और फिर सिनेमा में काम करने लगे। गेओर्गी वसील्येव के साथ मिलकर उन्होंने "चापायेव" फ़िल्म बनायी जिसकी संसार भर में ख्याति हुई।

क्रांतिकारी विषयों को अनूठे शिल्पकौशल के साथ संयोजित करने की बदौलत अनेक सोवियत फ़िल्म निर्माताओं ने समाजवादी यथार्थवाद की महान कृतियों की रचना की। आइज़ेन्स्तेइन की "पोत्योम्किन युद्धपोत" की गणना संसार की महानतम फ़िल्मों में की गई है। १९२७ में पेरिस में अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में इसे प्रथम पुरस्कार मिला। दो साल बाद यह मंडली जिसने इस फ़िल्म का निर्माण किया था संयुक्त राष्ट्र अमरीका की यात्रा पर गई। वहां चार्ली चैपलिन ने पूछा: "आप लोग अमरीका क्या करने आये हैं?" आइज़ेन्स्तेइन के सहयोगी निर्देशक अलेक्सान्द्रोव को यह प्रश्न सुनकर अचंभा सा हुआ और वह धीमे स्वर में बोले कि वे देखने आये हैं कि अमरीका में फ़िल्में कैसे बनायी जाती हैं। इसपर महान चैपलिन ने उत्तर दिया: "फ़िल्में तो मास्को में बनायी जाती हैं; यहां लोग पैसा बनाते हैं।"

१९३२ में एक्क के "जीवन मार्ग" को प्रथम वेनिस अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में शानदार सफलता प्राप्त हुई, और वेनिस के अगले समारोह में अलेक्सान्द्रोव की "ज़िन्दादिल लोग" दिखायी गयी और उसे प्रथम पुरस्कार मिला।

मास्को मे प्रथम फिल्म समारोह जिसमे विदेशी प्रतिनिधियो को आमन्त्रित किया गया, १९३५ मे आयोजित हुआ था। वाल्टर डिसने की प्रसिद्ध कार्टून फिल्मे पेश की गयी और फासीसी निदेशक रेने क्लेर ने भी अपनी एक फ़िल्म भेजी। आस्ट्रिया ने कामेडी "पीटर" (अभिनेता के रूप मे फासिस्का गाल) पेश की जिसे जोरदार सफलता मिली। इन सभी फिल्मो की उचित प्रशसा की गई फिर भी अतर्राष्ट्रीय जूरी ने पहला पुरस्कार "चापायेव" तथा "मैक्सिम की युवावस्था" (एक फिल्मत्रय का पहला भाग, जिसे कोजिन्त्सेव और त्राऊबेर्ग ने १९३६ मे पूरा किया) को देने का निर्णय किया।

इसके तुरत बाद सोवियत सिनेमा की मुख्य उपलब्धियो मे रोम्म की फ़िल्मे "अक्तूबर मे लेनिन" (१९३७ मे) और "१९१८ मे लेनिन" (१९३९ मे) है। लेनिन की भूमिका दोनो फ़िल्मो मे श्चूकिन ने अदा की है।

नाटको मे भी नये विषय वस्तु पेश किये जाने लगे। नाटक की नयी प्रवृत्तियो के मार्गदर्शको मे प्रमुख थे स्तानिस्लाव्स्की, नेमिरोविच-दानचेको, मेयेरहोल्द, वख्तागोव, मिखोएल्स, ओख्लोप्कोव तथा चेर्कासोव।

मूर्तिकला मे मूर्तिकर्त्री मूखिना की "मजदूर और सामूहिक किसान नारी" नामक मूर्ति को विश्व व्यापी मान्यता प्राप्त हुई। इसे पेरिस की अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदर्शनी (१९३७) के सोवियत पैविलियन के लिए तैयार कराया गया था। प्रकृतिवादी और रूपवादी प्रवृत्तियो के विरुद्ध सघर्ष करने के अपने प्रयासो के जरिए देइनेका, पीमेनोव, नीस्सकी तथा कोरिन जैसे कलाकार प्रौढता के नये शिखर पर पहुच गये। कोचालोव्स्की, युओन, सार्यान तथा अबार ने प्रेरणा के नये स्रोत उद्घाटित किये।

१९३४ मे मास्को मे सोवियत लेखको की पहली काग्रेस हुई। सोवियत लेखक सघ ने जिसके सदस्यो की सख्या २,५०० थी, ५५७ प्रतिनिधि भेजे जो ५२ भिन्न जातियो के थे। इस काग्रेस से सोवियत सस्कृति का द्रुत विकास प्रदर्शित हो रहा था जिसका रूप जातीय और अतर्य समाजवादी था।

इस काग्रेस मे भाषण करते हुए मक्सिम गोर्की ने सोवियत लेखको की गत १७ वर्षो की उपलब्धियो का विश्लेषण किया। उन्होने कहा "हमारे सभी जनतत्रो की अनेक भिन्न-भिन्न भाषाओ का साहित्य सोवियतो की

मज़दूर तथा सामूहिक किसान नारी।
मूखिना की कृति

धरती के सर्वहारा वर्ग, सभी देशों के क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग और सारे संसार में उन लेखकों के सामने जो हमारे शुभ चिंतक हैं, एक सामंजस्यपूर्ण साहित्य के रूप में सामने आता है।"

ज़ाहिर है कि माध्यमिक और उच्च शिक्षा तथा विज्ञान और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में इतनी द्रुत गति से विस्तार के लिए काफ़ी धन की आवश्यकता थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९३३–१९३७) के दौरान इस क्षेत्र में ८० अरब रूबल लगाने का इरादा था मगर व्यवहार में सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थानों तथा संगठनों के विस्तार में क़रीबन

११० अरब रूबल लग गया, याने पहली पचवर्षीय योजना मे कुल जितना खर्च किया गया था उसका लगभग पाच गुना ज्यादा। नये समाज के भौतिक आधार का अच्छा खासा सुदृढीकरण हुआ जिससे स्कूल, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, रगमच, म्युज़ियम तथा मुद्रण व्यवस्था का विस्तार करने मे आसानी हुई। प्रत्येक सोवियत नागरिक पर औसत खर्च १९२८-१९२९ के ८ रूबल से बढाकर १९३८ म ११३ कर दिया गया। शीघ्र ही स्कूल पाठ्यक्रम की अवधि बढाकर सात वर्ष से दस वर्ष कर दी गई। १९३५ मे दस वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा करनेवाले स्कूली छात्रो की पहली टोली ने अपनी अतिम स्कूल परीक्षा दी। छात्रो को सात वर्ष की अनिवार्य पढाई पूरी करने के बाद यह अख्तियार था कि तीन वर्ष और स्कूल मे पढ़े और उसके बाद विश्वविद्यालय म प्रवेश-परीक्षा दे।

माध्यमिक स्कूलो म प्रशिक्षण के उच्च स्तर की बदौलत १९३३-१९३७ के वर्षों मे तीन लाख ७० हजार इजीनियर, शिक्षक चिकित्सक भूविशेषज्ञ, अर्थशास्त्री, इत्यादि सोवियत उच्च शिक्षा सस्थानो से स्नातक होकर निकले। अपने से पहले के छात्रो के विपरीत इन स्नातको को किताब, कापियो तथा शिक्षा के अन्य साधनो के अभाव का सामना नही करना पडा था। इन छात्रो ने व्यावहारिक प्रशिक्षण द्नेपर पनबिजलीघर, "अज़ोवस्ताल" तथा मग्नितोगोर्स्क इस्पात कारखाने, खिबीनी के खनन-रासायनिक फैक्टरी मे, पहली पचवर्षीय योजना के दौरान निर्मित विशालकाय आधुनिक कारखानो मे प्राप्त किया।

पार्टी और सरकार ने अगुआ मजदूरो, समाजवादी प्रतियोगिता के विजेताओ की ओर विशेष ध्यान दिया। प्रबध कर्मियो को नवस्थापित औद्योगिक अकादमियो मे जाकर अपनी योग्यता का स्तर ऊचा करने के लिए विशेष सुविधाए दी गई। इन अकादमियो के स्नातको मे राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त नवप्रवर्तक भी शामिल थे जैसे खनिक इजोतोव, लोहार बुसीगिन, इजन ड्राइवर क्रिवोनोस, बुनकरिन विनोग्रादोवा, इस्पात ढालनेवाले मजाई, आदि थे।

सोवियत उच्च शिक्षा की प्रगति के कारण देश के बुद्धिजीवियो का रूपातरण हो गया जिसका मुख्य हिस्सा अब मजदूरो और किसानो के बेटे-बेटियो का था। उनके आदर्शों का निरूपण अपनी समाजवादी

मातृभूमि की सेवा करने की देशभक्तिपूर्ण भावना से होता था। श्रमजीवियों को अब विज्ञान के सभी क्षेत्रों में प्रवेश के व्यापक अवसर प्राप्त थे। कुप्रेविच ने किसान की हैसियत से जीवन का प्रारम्भ किया और फिर बाल्टिक नौसेना में नौसैनिक बने थे। आगे चलकर उन्होंने वनस्पति विज्ञान और शरीरक्रिया विज्ञान में महत शोधकार्य किया और बेलोरूसी विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष बने। अकादमीशियन पेत्रोव जो आधुनिक स्वचलित प्रणालियों के संस्थापकों में हैं, पहले एक सामूहिक फ़ार्म पर हिसाब किताब लिखने का काम करते थे और फिर मास्को पावर इंजीनियरी इंस्टीट्यूट में दाखिल होने से पहले टर्नर थे। एक और अकादमीशियन अन्तरिक्षयानों के प्रसिद्ध डिज़ाइनर कोरोल्योव ने भी एक औद्योगिक मज़दूर की हैसियत से काम शुरू किया था।

वायुयान डिज़ाइनिंग के भावी महारतियों में अन्तोनोव, लावोच्किन, अर्त्योम मिकोयान तथा याकोव्लेव उन दिनों विद्यार्थी थे और अपने जीवन क्रम का प्रारम्भ ही कर रहे थे।

लेनिनग्राद में इयोफ़े के तहत भौतिकी इंजीनियरी संस्थान की स्थापना १६१८ में हुई थी। यहां कापित्सा, सेम्योनोव, कुर्चातोव, अर्त्सीमोविच, स्कोबेल्त्सीन तथा फ़्रेंकेल ने अपना शोध कार्य शुरू किया। उस समय तक इन लोगों का नाम नहीं हुआ था। मगर बाद में उनकी ख्याति सारे संसार में फैल गई। लन्दाऊ, अलेक्सान्द्रोव तथा कोन्द्रात्येव जो आगे चलकर अकादमीशियन हुए, इस संस्थान के शोधकर्ताओं के दल में शामिल हो गये थे। इनमें से बहुतेरे वैज्ञानिक बाद में मास्को, द्नेप्रोपेत्रोव्स्क, ख़ारकोव, उराल और जार्जिया चले गये, वहां उन्होंने नये संस्थान स्थापित किये जिन्होंने आनेवाले दिनों में महान उपलब्धियों के लिए रास्ता साफ़ किया।

सोवियत जेट इंजीनियरी तथा गगारिन और उनके अनुवर्ती कर्मियों द्वारा अंतरिक्ष उड़ान से संसार आश्चर्यचकित रह गया। पहले यह बात आश्चर्यजनक लगती है कि सोवियत जनगण ने ही संसार में सर्वप्रथम परमाणु बिजलीघर का निर्माण किया, अपने देश की रक्षा के लिए पहला हाइड्रोजन बम बनाया, पहला स्पुत्निक छोड़ा... इस सूचि को और आगे बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं। अगर हम दुबारा यह देखें कि चौथे दशक में शिक्षा और विज्ञान के लिए किस पैमाने पर धन का विनियोग

किया जा रहा था और उस समय युवा वैज्ञानिको की कैसी पीढी तैयार हो रही थी, तो न सिर्फ सोवियत विज्ञान और प्रविधि की आगे की उपलब्धियों का आधार स्पष्ट हो जाता है बल्कि यह बात भी आसानी से समझ मे आ जाती है कि समाजवाद ने वैज्ञानिक शोध कार्य के लिए कैसी अनुकूल स्थितिया मुहैया कर दी थी।

इन नये युवा विशेषज्ञो तथा पुरानी पीढी के प्रतिनिधियो का सहयोग बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ। विश्व प्रसिद्ध वायुयान डिज़ाइनर तूपोलेव की निम्नलिखित टिप्पणी से उस दौर के वातावरण पर उचित प्रकाश पडता है: "वह क्या चीज़ थी जिसने इन इजीनियरो को समाजवाद की सेवा करने पर बाध्य किया? हमे जिस चीज़ ने प्रेरित किया वह थी समस्त मानवजाति के भले के लिए काम करने की भावना, हमारी सृजन शक्ति के लिए अभूतपूर्व गुजाइशें तथा मौलिक महत्व के अति विविधतापूर्ण तकनीकी शोध कार्य मे भाग लेने का अवसर।"

अकादमीशियन येव्गेनी पतोन ने अपने सस्मरण मे लिखा है कि बहुत दिनो तक पचवर्षीय योजनाओ की पूरी धारणा को वह अत्यत सन्देह की दृष्टि से देखा करते थे। "ज्यो-ज्यो समय गुजरता गया और द्नेपर पन-बिजलीघर प्रयोजना पर काम शुरू हुआ जो पिछले शासन काल मे सर्वथा असम्भव था, तो मैं महसूस करने लगा कि मैं ग़लती पर था। जब मेरे सामने पार्टी और सरकार द्वारा चलायी गई नयी निर्माण योजनाए, मास्को के पुनर्निर्माण तथा अन्य कामो की प्रयोजनाए आयी तो मेरी विचारधारा मे अधिकाधिक गहरा परिवर्तन होता गया। मुझे एहसास होने लगा कि मैं सोवियत व्यवस्था को स्वीकार करने लगा था क्योकि इसने मेहनत को सर्वोच्च स्थान दिया था, और मेहनत सदा से मेरे जीवन का केन्द्रबिन्दु थी। मुझे व्यवहार मे इसका विश्वास होता गया और यह एहसास होने लगा कि एक नयी जीवन पद्धति के प्रभाव से मेरे विचारो का पुन निरूपण हो रहा था।"

सोवियत वैज्ञानिको द्वारा विश्व सस्कृति के विकास मे योगदान की विदेशो मे बडी सराहना की गई। सोवियत सघ के प्रतिनिधि लगभग सभी अतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक काग्रेसो मे शरीक होने लगे थे। जिन सोवियत वैज्ञानिको ने अनेक अवसरो पर इस प्रकार की काग्रेसो मे भाग लिया, उनमे गूबकिन, इयोफे, फ्रूमकिन, वावीलोव, वोलगिन, लुकीन और

पंक्रातोवा उल्लेखनीय हैं। १५वीं अंतर्राष्ट्रीय शरीरक्रिया विज्ञान का उद्घाटन सुप्रसिद्ध पावलोव ने किया। १९३७ में अंतर्राष्ट्रीय भूविज्ञान कांग्रेस मास्को में आयोजित हुई और गूवकिन इस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। वावीलोव, आनुवंशिकी तथा वरण विशेपज्ञ, अनेक वैदेशिक विज्ञान अकादमियों के सम्मानीय सदस्य चुने गये।

सोवियत संस्कृति, विज्ञान और कला की अति द्रुत प्रगति के वावजूद अभी वहुत सी समस्याओं का समाधान वाक़ी था। सोवियत संघ में सांस्कृतिक क्रांति उद्योगीकरण अभियान तथा कृपि के समूहीकरण के साथ-साथ हो रही थी और वह भी ऐसे समय जव अंतर्राष्ट्रीय स्थिति वहुत तनावपूर्ण थी। राज्य वजट से सांस्कृतिक विकास के लिए उदार विनियोग के वावजूद, कभी-कभी अनेक चीज़ों के अभाव का सामना करना पड़ता था। स्कूलों, क्लवों तथा सिनेमाघरों की संख्या में तेजी से वृद्धि होने के वावजूद श्रमजीवी जनता की सांस्कृतिक आवश्यकताएं और भी तेज़ी से वढ़ रही थीं। अकसर स्कूलों में तीन पाली की व्यवस्था थी और शिक्षकों, अभिनेताओं तथा संगीतज्ञों का वड़ा अभाव था। उदाहरण के लिए रूसी संघ में १९३४ तक शहरों में एक तिहाई और गांवों में आधे शिक्षक ऐसे थे जिन्हें शिक्षक की विशेप ट्रेनिंग नहीं थी।

१९३८ के प्रारम्भ में देश में कुल २८,५०० फ़िल्म प्रोजेक्टर थे और इनमें से आधे से कम सवाक् चित्रों के लिए उपयुक्त थे। उस साल तक देश में रेडियो की कुल संख्या ४० लाख तक पहुंच गई थी। यह एक वड़ी कामयावी थी! मगर इसपर भी देश में वहुतेरे परिवार ख़ासकर गांवों में ऐसे थे जिनके पास अपना रेडियो नहीं था।

लेकिन हर दिन शिक्षा और संस्कृति के फल आवादी के अधिकाधिक व्यापक हिस्सों तक पहुंचते जा रहे थे। सोवियत वैज्ञानिकों, लेखकों, संगीतज्ञों, फ़िल्मकारों की प्रेरणात्मक उपलव्धियों, रेडियो तथा शिक्षण व्यवस्था का वास्तव में करोड़ों आदमियों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

शौक़िया कला की जनप्रियता सारे देश में वेहद वढ़ती जा रही थी। सभी कारख़ानों, शहरों और गांवों के क्लवों में, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और सैनिक इकाइयों में शौक़िया कला मंडलियों की स्थापना हुई और उनके सदस्यों ने नाटकों का प्रदर्शन किया और विविध पकार की सरगर्मियों में भाग लिया। अपने मुख्य पेशे के साथ इन

सरगर्मियो मे भाग लेकर इन मडलियो के सदस्यो ने न केवल अपने सास्कृतिक अनुभव को समृद्ध और मानसिक क्षितिज को विस्तारित किया बल्कि जिन लोगो के साथ रहते और काम करते थे उनको सास्कृतिक प्रेरणा प्रदान की। १६३६ मे एक विशेष लोक कला का केन्द्रीय गृह स्थापित किया गया ताकि लोगो को इन गैर-पेशेवर मडलियो के सचालन का प्रशिक्षण दिया जाये और शीघ्र ही ट्रेड-यूनियनो ने इनके कामो का जनतत्रीय तथा प्रादेशिक पैमाने पर सर्वेक्षण शुरू किया। यह बात दिलचस्प है कि प्रसिद्ध गायक कोज्लोव्स्की, लेमेशेव और रमीर्या की प्रतिभा का राज इन्ही शौकिया मडलियो मे खुला। सगीतकार ब्लान्तेर ने पहले पहल मग्नितोगोर्स्क मे गैर-पेशेवर सगीत गोष्ठियो मे ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्हीनो प्लेनर गोर्बातोव, और साथ ही ट्रेन ड्राइवर अब्देयेन्को तथा मजदूर लिब्रेदीन्स्की लेखक बने। मास्को और लेनिनग्राद कोम्सोमोल थियेटर भी मूलत शौकिया मडलियो से ही विकसित हुए और यही बात सोवियत सेना की गायन तथा नृत्य की मण्डली के साथ जिसके निदेशक अलेक्सान्द्रोव थे तथा राजकीय रूसी लोक वाद्यवृन्द के साथ हुई।

चौथे दशक के मध्य तक गैर-पेशेवर कला मण्डलियो मे जो पूरे देश मे फैली हुई थी ३० लाख से अधिक लोग भर्ती हो चुके थे। सोवियत सघ की बहुजातीय आबादी की सभी जातियो के लोग इन सरगर्मियो मे भाग ले रहे थे और यह सोवियत सघ मे सपन्न सास्कृतिक क्राति की अथाह शक्ति का सबूत था।

वास्तव मे देश आश्चर्यजनक हद तक कम समय मे ज्ञानहीन पिछडेपन से जो शताब्दियो से चला आ रहा था छलाग लगाकर प्रगति तथा ज्ञानोद्दीप्ति के नये युग मे पहुच गया था।

क्राति के पूर्व लेनिन ने लिखा था "तोलस्तोय जैसे कलाकार से रूस म भी एक नगण्य अल्पमत ही परिचित है। अगर उसकी महान कृतियो को वास्तव मे सब की सम्पदा बनाना है तो समाज की इस व्यवस्था के खिलाफ सघर्ष करना होगा जो लाखो-करोडो लोगो को अज्ञानता, अन्धकार, कठोर नित्यश्रम तथा दरिद्रता का शिकार बनाती है – समाजवादी क्राति करनी होगी।"*

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २०, पृष्ठ १६

पंक्रातोवा उल्लेखनीय हैं। १५वीं अंतर्राष्ट्रीय शरीरक्रिया विज्ञान का उद्घाटन सुप्रसिद्ध पावलोव ने किया। १९३७ में अंतर्राष्ट्रीय भूविज्ञान कांग्रेस मास्को में आयोजित हुई और गूबकिन इस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। वावीलोव, आनुवंशिकी तथा वरण विशेषज्ञ, अनेक वैदेशिक विज्ञान अकादमियों के सम्मानीय सदस्य चुने गये।

सोवियत संस्कृति, विज्ञान और कला की अति द्रुत प्रगति के बावजूद अभी बहुत सी समस्याओं का समाधान बाक़ी था। सोवियत संघ में सांस्कृतिक क्रांति उद्योगीकरण अभियान तथा कृषि के समूहीकरण के साथ-साथ हो रही थी और वह भी ऐसे समय जब अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। राज्य बजट से सांस्कृतिक विकास के लिए उदार विनियोग के बावजूद, कभी-कभी अनेक चीज़ों के अभाव का सामना करना पड़ता था। स्कूलों, क्लबों तथा सिनेमाघरों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि होने के बावजूद श्रमजीवी जनता की सांस्कृतिक आवश्यकताएं और भी तेज़ी से बढ़ रही थीं। अक्सर स्कूलों में तीन पाली की व्यवस्था थी और शिक्षकों, अभिनेताओं तथा संगीतज्ञों का बड़ा अभाव था। उदाहरण के लिए रूसी संघ में १९३४ तक शहरों में एक तिहाई और गांवों में आधे शिक्षक ऐसे थे जिन्हें शिक्षक की विशेष ट्रेनिंग नहीं थी।

१९३८ के प्रारम्भ में देश में कुल २८,५०० फ़िल्म प्रोजेक्टर थे और इनमें से आधे से कम सवाक् चित्रों के लिए उपयुक्त थे। उस साल तक देश में रेडियो की कुल संख्या ४० लाख तक पहुंच गई थी। यह एक बड़ी कामयाबी थी! मगर इसपर भी देश में बहुतेरे परिवार ख़ासकर गांवों में ऐसे थे जिनके पास अपना रेडियो नहीं था।

लेकिन हर दिन शिक्षा और संस्कृति के फल आबादी के अधिकाधिक व्यापक हिस्सों तक पहुंचते जा रहे थे। सोवियत वैज्ञानिकों, लेखकों, संगीतज्ञों, फ़िल्मकारों की प्रेरणात्मक उपलब्धियों, रेडियो तथा शिक्षण व्यवस्था का वास्तव में करोड़ों आदमियों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

शौक़िया कला की जनप्रियता सारे देश में बेहद बढ़ती जा रही थी। सभी कारख़ानों, शहरों और गांवों के क्लबों में, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और सैनिक इकाइयों में शौक़िया कला मंडलियों की स्थापना हुई और उनके सदस्यों ने नाटकों का प्रदर्शन किया और विविध प्रकार की सरगर्मियों में भाग लिया। अपने मुख्य पेशे के साथ इन

सरगर्मियो मे भाग लेकर इन मडलिया के सदस्यो ने न केवल अपने सास्कृतिक अनुभव को समृद्ध और मानसिक क्षितिज को विस्तारित किया बल्कि जिन लोगा के साथ रहते और काम करते थे उनको सास्कृतिक प्रेरणा प्रदान की। १९३६ म एक विशेष लोक कला का केन्द्रीय गृह स्थापित किया गया ताकि लोगा को इन गैर-पेशेवर मडलिया के सचालन का प्रशिक्षण दिया जाय और शीघ्र ही ट्रेड-यूनियनो ने इनके कामो का जनतत्रीय तथा प्रादेशिक पैमाने पर सर्वेक्षण शुरू किया। यह बात दिलचस्प है कि प्रसिद्ध गायक कोज्लोव्स्की, लेमेशेव और स्मीर्या की प्रतिभा का राज इन्ही शौकिया मडलिया म खुला। सगीतकार ब्लान्तेर ने पहले पहल मग्नितोगोर्स्क म गैर-पेशेवर सगीत गोष्ठियो म ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया। उत्कृष्ट प्लेनर गार्बातोव, और साथ ही ट्रेन ड्राइवर अव्देयेन्को तथा मजदूर लिबेदीन्स्की लेखक बने। मास्को और लेनिनग्राद कोम्सोमोल थियेटर भी मूलत शौकिया मडलिया से ही विकसित हुए और यही बात सोवियत सेना की गायन तथा नृत्य की मण्डली के साथ जिसके निदेशक अलेक्साद्रोव थे तथा राजकीय रूसी लोक वाद्यवृन्द के साथ हुई।

चौथे दशक के मध्य तक गैर-पेशेवर कला मण्डलियो मे जो पूरे देश म फैली हुई थी ३० लाख से अधिक लोग भर्ती हो चुके थे। सोवियत सघ की बहुजातीय आबादी की सभी जातियो के लोग इन सरगर्मियो मे भाग ले रहे थे और यह सोवियत सघ मे सपन्न सास्कृतिक क्राति की अथाह शक्ति का सबूत था।

वास्तव मे देश आश्चर्यजनक हद तक कम समय मे ज्ञानहीन पिछडेपन से जो शताब्दियो से चला आ रहा था छलाग लगाकर प्रगति तथा ज्ञानोद्दीप्ति के नये युग म पहुच गया था।

क्राति के पूर्व लेनिन ने लिखा था "तोलस्तोय जैसे कलाकार से रूस म भी एक नगण्य अल्पमत ही परिचित है। अगर उसकी महान कृतिया को वास्तव मे सब की सम्पदा बनाना है तो समाज की इस व्यवस्था के खिलाफ सघर्ष करना होगा जो लाखो-करोडो लोगो को अज्ञानता, अन्धकार, कठोर नित्यश्रम तथा दरिद्रता का शिकार बनाती है — समाजवादी क्राति करनी होगी।"*

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २०, पृष्ठ १९

समाजवादी निर्माण के दौरान यह क्रांति संपन्न हुई। विश्व की तमाम श्रेष्ठ कृतियों ही की तरह तोलस्तोय की कृतियों का प्रकाशन करोड़ों श्रमजीवी जनता के लिए विशाल संख्या में किया जा रहा था। जहां १९१३ में पूरी आबादी में प्रति व्यक्ति ०.७ के हिसाब से पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा था, वहां १९३८ में प्रति व्यक्ति ४.१ के हिसाब से पुस्तक प्रकाशन हो रहा था और वह भी ऐसी स्थिति में जब कि इस बीच में जनसंख्या बहुत बढ़ गई थी। किताबें सोवियत संघ की सभी जातियों की भाषाओं में छप रही थी (जातियों की संख्या १०० से अधिक थी और इनमें ८० से अधिक ऐसी थी जिनकी कोई लिखित भाषा अक्तूबर क्रांति के पूर्व नहीं थी)। पुश्किन, गोर्की, तोलस्तोय तथा चेखोव की कृतियां विशाल संख्या में और इसी प्रकार विदेशी श्रेष्ठ कृतियां भी विशाल संख्या में छापी गयी जिनमें कुछ के नाम हैं, बायरन, गेटे, हाइने, डिकेन्स और सेर्वान्तेस।

पुस्तकों की संख्या तथा मुद्रण संख्या दोनों के हिसाब से प्रथम स्थान राजनीतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक साहित्य का था। इससे यही परिलक्षित होता था कि विज्ञान और संस्कृति की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने के प्रयासों में, सामाजिक विकास के स्वरूप और प्रवृत्तियों का बोध प्राप्त करने की उनकी आकांक्षा, तथा सामाजिक जीवन में सक्रिय भाग लेने की उनकी इच्छा और क्षमता में एक ही बुनियादी आदर्श काम कर रहा था। समय आ गया था जब वे ही लोहार, कोयला झोंकनेवाले तथा बढ़ई जिनके बारे में पूंजीवादी पत्रकार कहा करते थे कि उनका पिछड़ेपन तथा निरक्षरता बोल्शेविकों के पतन का कारण बनेगी, राज्य के कामकाज में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने लगे।

चौथे दशक के मध्य तक सोवियत जनगण के सांस्कृतिक स्तर में जो सुधार हुआ वह संस्कृति क्षेत्र की साधारण प्रगति से कहीं बड़ी चीज थी। अज्ञानता अन्य देशों में भी दूर हो रही थी परन्तु उसकी रफ्तार बहुत धीमी थी, हर जगह अधिकाधिक संख्या में वैज्ञानिकों की व्युत्पत्ति हो रही थी तथा अधिकाधिक संख्या में पुस्तकें और समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे थे। परन्तु सोवियत संघ में यह प्रगति एक छलांग में, बहुत ही कम समय में संपन्न हुई और इसके साथ-साथ नये, समाजवादी विचारों का प्रचार हुआ। सोवियत नर-नारियों ने ज्यों-ज्यों विज्ञान तथा संस्कृति के क्षेत्र में कदम रखा, उनका पुनर्जन्म समाजवादी समाज के सक्रिय सदस्यों, सच्चे सोवियत देशभक्तों की हैसियत से हुआ।

सातवां अध्याय

समाजवादी निर्माण की पूर्ति

संक्रमणकाल के परिणाम

जब कोई बच्चा पहला कदम उठाता है, तो बडो की उगली पकडकर चलता है। जब सोवियत राज्य का जन्म हुआ, तो उसे न केवल अपने सिवा किसी का सहारा नही था, बल्कि वह चारो ओर दुश्मनो से घिरा हुआ था। रूस के सामाजिक-आर्थिक तकनीकी और सास्कृतिक पिछडेपन के कारण स्थिति और जटिल हो गयी थी। इस पिछडेपन को दूर करने के लिए समय की जरूरत थी। अक्तूबर क्राति से बहुत पहले वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धातकारो ने चेता दिया था कि सर्वहारा वर्ग के सत्ता धारण कर लेने के बाद पुराने समाज को एक नये समाजवादी समाज मे बदलने मे काफी समय लगेगा। उनके अनुसार इसके लिए एक सक्रमणकाल की जरूरत पडेगी, जिसके दौरान मजदूर वर्ग अपनी सत्ता को सुदृढ बनायेगा, निजी सपत्ति तथा मानव द्वारा मानव के शोषण का अत करेगा।

१६१७ मे ही सोवियत जनगण ने पुराने समाज को परिवर्तित करने का काम शुरू कर दिया था। कोई भी पहले से नही कह सकता था कि सक्रमणकाल कितना लम्बा चलेगा, मगर बोल्शेविको को क्राति की शक्ति पर दृढ विश्वास था और उन्हे यकीन था कि उन्होने जो रास्ता चुना है, वह विजय की मजिल तक पहुचायेगा। मार्क्स ने अकारण ही क्राति को "इतिहास का इजन" नही कहा था। १६१७ मे स्वय अपने आपके तथा अपने देश के मालिक बन जाने के बाद सोवियत जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे आर्थिक और सामाजिक प्रगति के मार्ग पर बडे लम्बे डग भरे। सोवियत सघ की श्रमजीवी जनता ने अपने महान नेता लेनिन के आदेश को पूरा करके समाजवादी उद्योगीकरण कृषि के

16*

समूहीकरण की नीति पर अमल किया तथा एक सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया, और चौथे दशक के मध्य तक उनके देश में पूंजीवाद पर समाजवाद की विजय पूरी हो चुकी थी। इतिहास में पहली बार मजदूरों और किसानों के बहुजातीय समाजवादी राज्य की स्थापना हुई थी।

चौथे दशक के मध्य में सोवियत संघ संसार में सबसे बड़ा देश था, जो जनसंख्या की दृष्टि से (चीन तथा भारत के बाद) संसार का तीसरा सबसे बहुसंख्यक देश था। देश अब विदेशी और देशी पूंजी के प्रभुत्व से आज़ाद हो चुका था। औद्योगिक माल की पैदावार की मात्रा के हिसाब से सोवियत संघ का स्थान अब संसार में, संयुक्त राज्य अमरीका के बाद, दूसरा हो गया था।

सोवियत अर्थव्यवस्था की मौलिक विशेषता न तो केवल बड़े पैमाने पर उसकी वृद्धि और न उसके विस्तार की अभूतपूर्व गति थी। यह विशेषता थी सोवियत अर्थव्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन जिसने समाजवादी अर्थव्यवस्था का रूप ग्रहण कर लिया था। देश के अन्दर आर्थिक प्रतियोगिता में समाजवाद ने अन्य सभी आर्थिक व्यवस्थाओं – पूंजीवादी तथा लघु माल उत्पादन, आदि – पर विजय प्राप्त कर ली थी। १९२४ में प्रति १०० रूबल राष्ट्रीय आय में अर्थतंत्र के समाजवादी क्षेत्र का भाग केवल ३५ रूबल था। मगर १९३७ तक उसका भाग ९९ रूबल हो गया था। राष्ट्रीय आय के सृजन में राजकीय उद्योग तथा मजदूर वर्ग की भूमिका अब निर्णायक हो गयी थी।

मौलिक परिवर्तन अर्थतंत्र में ही नहीं, बल्कि आबादी की वर्गीय बनावट में भी हो गया था। तीसरे दशक के मध्य में आबादी के प्रत्येक सौ व्यक्तियों में से पांच पूंजीपति, मुख्यतया कुलक थे। १९३७ में पूंजीपति वर्ग का वैसे तो अस्तित्व नहीं रह गया था, मगर सौ व्यक्तियों में से छः ऐसे किसान थे, जो अलग-अलग व्यक्तिगत रूप से खेती करते थे। बाक़ी सब लोग या तो समाजवादी उद्योग में या सामूहिक या राजकीय फ़ार्मों में काम करते थे। जनसंख्या में ३६ प्रतिशत लोग औद्योगिक मजदूर तथा दफ़्तरी कर्मचारी थे।

इन परिवर्तनों की मूल विशेषता शोषक वर्गों की बेदख़ली तथा निजी स्वामित्व का विलोपन ही नहीं था। श्रमजीवी जनगण के वर्गों में भी

तबदीली नजर आने लगी थी। क्रांति के पहले मजदूर उत्पादन के साधनों के मालिक नहीं होते थे और वास्तव में सभी अधिकारों से वंचित थे। इसके विपरीत सोवियत संघ में मजदूर वर्ग आप अपना स्वामी बन गया था। वह समाजवादी समाज की मुख्य शक्ति हो गया था। क्रांति, गृह-युद्ध, हस्तक्षेप, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार और समाजवादी पुनर्निर्माण के दौरान मजदूर ही वर्ग वह शक्ति था, जिसने बाकी श्रमजीवी जनता को रास्ता दिखलाया। वह सबसे संगठित और एकताबद्ध वर्ग था।

बोल्शेविकों के दुश्मन तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के विरोधी रूस के भविष्य का रोना व्यर्थ ही रोया करते थे। जब रूस के राजनीतिक और आर्थिक जीवन का मार्गदर्शन मजदूरों ने करना शुरू किया, ठीक तभी अर्थव्यवस्था ने अभूतपूर्व गति से तरक्की की, उच्चतर जीवन स्तर सुनिश्चित हुआ और देश की राजनीतिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी।

प्रारम्भ में मजदूर वर्ग जनसंख्या का बहुत छोटा सा अंश था। क्रांति के दस वर्ष बाद भी राज्य कार्ययंत्र के अमले में कोई ४० लाख आदमी काम करते थे। और यह संख्या बड़े पैमाने के उद्योग में काम करनेवाले मजदूरों की संख्या से कहीं अधिक थी। लेकिन राजकीय कार्ययंत्र, देश के पूरे आर्थिक जीवन, देश के सामाजिक-राजनीतिक विकास की पूरी प्रक्रिया पर मजदूरों का वास्तविक प्रभाव केवल मजदूर वर्ग की संख्या पर ही निर्भर नहीं करता था, बल्कि उसके संगठन की मात्रा, उसकी एकता और प्रतिष्ठा तथा अंत में सोवियत समाज में मजदूरों के हिरावल, कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका पर भी निर्भर करता था। १९२७ में मजदूर वर्ग से संबंध रखनेवाले करीबन दो लाख कम्युनिस्ट राजकीय कार्ययंत्र में काम करते थे और इनमें से ८५ प्रतिशत उच्च पदों पर थे। राजकीय और सहकारी संस्थाओं, आर्थिक ट्रस्टों तथा औद्योगिक उद्यमों आदि के निदेशकों में अधिकांश ऐसे लोग थे, जो मजदूर वर्ग से आये हुए थे।

लाल सेना में सर्वहारा वर्ग के लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ती चली गयी, १९३० में सोवियत सेना में २३.४ प्रतिशत सैनिक तथा ५० प्रतिशत राजनीतिक कमिसार मजदूर वर्ग के लोग थे।

तीसरे दशक के अंत तथा चौथे दशक के प्रारम्भ में राजकीय कार्ययंत्र तथा आर्थिक कार्ययंत्र की अन्दर से सफाई की गयी, जिसका उद्देश्य सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को सुगठित करना था। इससे बड़ी हद

तक सर्वहारा वर्ग के विरोधी तत्वों को, नौकरशाहों तथा स्वार्थजीवियों को, ऐसे लोगों को, जो नयी आर्थिक नीति के दौर में बहक गये थे और अब मजदूर वर्ग के समर्थक नहीं रहे थे, कार्यालयों और कारखानों से निकालने में सुविधा हुई। इसी के साथ एक और समानान्तर प्रक्रिया भी चल रही थी। उच्च स्तरीय पदों पर अधिकाधिक ऐसे लोग नियुक्त किये जाने लगे थे, जो सिर्फ़ यही नहीं कि मजदूर वर्ग से आये हुए थे, बल्कि उच्च विद्यालयों के स्नातक थे, जिनमें से अधिकांश मजदूर वर्ग से आये थे। इसका मतलब यह था कि चौथे दशक के मध्य तक अधिकांश कारखानों के निदेशक मजदूर वर्ग से संबंध रखते थे और अनेक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे।

सोवियतों, ट्रेड-यूनियनों तथा कोम्सोमोल के संगठनों में भी ऐसी ही स्थिति थी। इसी समय सैन्य शक्तियों में भी पार्टी सदस्यों और मजदूरों की नयी भर्ती हुई। १९३४ के प्रारम्भ में लाल सेना में लगभग ४६ प्रतिशत सैनिक मजदूर वर्ग से आये हुए थे और क़रीब आधे सैनिक और कमांडर कम्युनिस्ट और कोम्सोमोल के सदस्य थे।

मजदूर वर्ग समाजवादी निर्माण में अग्रणी भूमिका अदा कर रहा था, मगर वह कभी भी अपना प्रभुत्व या विशेषाधिकार जमाना नहीं चाहता था। ज्यों-ज्यों समाजवादी व्यवस्था सबल होती गयी मजदूर वर्ग ने उन सुविधाओं को छोड़ना शुरू किया, जो १९२४ के सोवियत संविधान ने उसे प्रदान की थीं। चौथे दशक के मध्य तक सोवियत संघ में निर्वाचन अधिकार आबादी के सभी हिस्सों के लिए समान नहीं थे। निर्वाचन खुले मतदान के आधार पर और परोक्ष होता था। दूसरे शब्दों में स्वयं जनता केवल स्थानीय सत्ता के निकायों के लिए उम्मीदवारों को प्रत्यक्ष रूप से चुनती थी और वे अपने उच्चतर निकायों के लिए सदस्य चुना करते थे। ये प्रतिबंध उस समय लागू किये गये थे, जब शोषक वर्गों तथा उत्पादन साधनों के निजी स्वामित्व का अस्तित्व अभी बाक़ी था (ख़ासकर कृषि में)। प्राथमिक निर्वाचन इकाई शहरों में क्षेत्रीय नहीं थी, वह थी उत्पादन-संबंधी आर्थिक इकाई जैसे फ़ैक्टरी, कार्यालय या ट्रेड-यूनियन। उत्पादन के सिद्धांत की बदौलत राजकीय कार्ययंत्र तथा अग्रणी मजदूरों, पूरे मजदूर वर्ग का संबंध मजबूत हुआ। सोवियत संघ तथा सभी संघीय संविधानों

मे यह निश्चित कर दिया गया था कि सोवियतो की काग्रेसो मे किसानो और मजदूरो का प्रतिनिधित्व एक और पाच के अनुपात मे हो।

लेनिन ने सोवियत सविधान मे मजदूर वर्ग के लिए ये विशेषाधिकार निर्धारित करने की वस्तुनिष्ठ तथा ऐतिहासिक आवश्यकता पर जोर दिया और उसकी व्याख्या इस प्रकार की "सर्वहारा वर्ग का सगठन किसानो के सगठन की तुलना मे कही अधिक तेजी से हुआ, जिस स्थिति ने मजदूरो को क्राति की आधारशिला बना दिया और उन्हे एक वास्तविक सुविधा प्रदान की..

"हमारे सविधान मे इस असमानता को लागू करना अनिवार्य था, क्योंकि सास्कृतिक स्तर नीचा है और क्योकि हमारा सगठन कमजोर है।"*

१६२६ के निर्वाचन अभियान मे मजदूर वर्ग ने आबादी के अन्य हिस्सो की तुलना मे अधिक सक्रिय भाग लिया। यही बात १६२७ के निर्वाचन पर लागू होती थी, जिसमे ४७ प्रतिशत लोगो ने भाग लिया। १ करोड की शहरी आबादी मे ६० लाख ने निर्वाचन-अधिकार को इस्तेमाल किया। मास्को, लेनिनग्रद, तूला और स्तालिनग्राद के बडे कारखाना मे ६० प्रतिशत से लेकर १०० प्रतिशत तक लोगो ने निर्वाचनो मे भाग लिया। इन निर्वाचनो मे धातुकर्मी तथा छापेखानो के कर्मचारी विशेष रूप से सक्रिय थे, जो मजदूर वर्ग के सबसे योग्य, शिक्षित तथा राजनीतिक तौर पर चेतन दस्ते थे। १६२६ मे ६३ प्रतिशत से अधिक लोगो ने वोट दिया, १६३१ मे शहरो मे वोट देनेवालो की सख्या ७६ ६ प्रतिशत और देहातो मे ७० ४ प्रतिशत थी। तीन साल बाद ये आकडे क्रमश ६१ ६ प्रतिशत और ८३.३ प्रतिशत थे।

समाजवादी व्यवस्था की जडें ज्यो-ज्यो मजबूत होती गयी, उन लोगो की सख्या, जो वोट के अधिकार से वचित थे, कम होती गयी। १६३१ और १६३४ के बीच उन लोगो का अनुपात, जो वोट के अधिकार से वचित थे, शहरो मे ४६ प्रतिशत से कम होकर २४ प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रो मे ३७ प्रतिशत से कम होकर २६ प्रतिशत रह गयी।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २८, पृष्ठ १७२।

कृषि के समाजवादी पुनर्गठन के सम्पन्न होने से सोवियत किसानों के स्वरूप में मौलिक परिवर्तन हुआ। अब वह लघु माल उत्पादकों का वर्ग नहीं रहा था, जो लेनिन के शब्दों में स्वतःस्फूर्त ढंग से और व्यापक पैमाने पर पूंजीवाद और पूंजीवादी तत्वों को प्रोत्साहन दिया करता है, वह सामूहिक किसानों का एक समाजवादी वर्ग बन गया था। जहां व्यक्तिगत रूप से खेती करनेवाले किसानों के वर्ग में भिन्न सामाजिक समूह हुआ करते थे, वहां चौथे दशक के मध्य में सामूहिक खेती करनेवाले किसान सभी सामाजिक विभेदों से मुक्त हो चुके थे। वह एक ठोस वर्ग था, जिसे समाजवादीकृत कृषि उत्पादन ने एकताबद्ध कर दिया था।

उस समय ग्रामीण आबादी में सामूहिक किसान, राजकीय फ़ार्मों तथा मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों के कर्मी और ग्रामीण बुद्धिजीवी शामिल थे। उस समय तक सोवियत किसानों में नये समूहों की व्युत्पत्ति हो चुकी थी, जिनका अस्तित्व क्रांतिपूर्व रूस में सम्भव ही नहीं था: देहातों में सामूहिक फ़ार्म-उत्पादन के संगठन कर्ताओं की एक पूरी सेना विकसित हो गयी थी – कृषि-आर्टेलों के अध्यक्ष, ब्रिगेडों तथा टोलियों के मुखिया, दुग्धशालाओं तथा पशुशालाओं के प्रबंधक आदि। सामूहिक फ़ार्मों के कर्मियों में उस समय तक मशीन चालक भी बड़ी संख्या में शामिल हो चुके थे: ट्रैक्टर चालक, कम्बाइन हार्वेस्टर चालक तथा लारी ड्राइवर, मरम्मत करनेवाले मिस्त्री आदि। १९३७ में सामूहिक फ़ार्मों में मशीन चालकों की संख्या १० लाख से अधिक थी।

किसानों के श्रम का स्वरूप भी उस समय तक बदल चुका था। भूमि के छोटे अलग-अलग चकों तथा हाथ के औज़ारों का स्थान अब सामूहिक फ़ार्म और मशीनों ने ले लिया था। किसानों का श्रम अब सामाजिक आधार पर होता था। गांव में पहले निजी स्वामित्व की व्यक्तिवादी भावना व्याप्त थी, उसका स्थान अब ऐसी भावना ले रही थी, जो मूलतया सामूहिकता से ओतप्रोत थी। उस समय तक ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और संस्कृति के लिए अभियान में निर्णयात्मक सफलताएं प्राप्त हो चुकी थीं। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक देहाती आबादी में लगभग तीन चौथाई लोग पढ़ और लिख सकते थे, जब कि केवल बीस बरस पहले ज़ारशाही रूस में अधिकांश किसान अनपढ़ थे।

ग्रामीण जीवन के क्रांतिकारी परिवर्तन का एक प्रमुख लक्षण यह था कि सामूहिक फार्मों के किसान समाजवादी प्रतियोगिता मे, सामूहिक उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि के अग्रणी कर्मियो के अभियान मे सक्रिय भाग लेने लगे थे। सामूहिक किसान चुनाव अभियानो मे, सोवियत कार्यकारी निकायो के काम मे अधिकाधिक भाग लेने लगे।

समाजवादी सम्पत्ति के दोनो रूपो (राष्ट्रीय सम्पत्ति तथा सहकारी और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति) की समानता के कारण मजदूर वर्ग तथा किसानो मे एक दूसरे की जरूरतो और हितो की अधिक गहरी समझ पैदा हुई और उनकी एकता और सुदृढ हुई। शीघ्र ही सोवियत सघ मे न तो कोई विरोधी, वैरी वर्ग रहे और न तीक्ष्ण वर्गीय अतर्विरोध। सोवियत समाज दो मुख्य दोस्ताना वर्गों – मजदूरो और किसानो – तथा बुद्धिजीवियो का समाकलन बन गया।

सोवियत सत्ता के प्रथम दो दशको मे बुद्धिजीवियो के भी सामाजिक स्वरूप और बनावट मे मौलिक परिवर्तन हुआ। क्रांति की पूर्ववेला मे बुद्धिजीवियो मे मुख्यत रूस के पूजीवादी तथा जमीदार वर्गों के लोग थे, मगर १९३६ के अत तक ८० से ९० प्रतिशत तक बुद्धिजीवी मजदूर वर्ग या किसानो मे से आये हुए लोग थे। १९२६ मे सोवियत सघ मे कुल २,२५,००० इजीनियर और टेकनीशियन थे। मगर जनवरी १९३९ की जनगणना से पता चला कि इस बीच मे यह सख्या सात गुना बढकर १६,५६,००० तक पहुच गयी थी। इसी अवधि मे कृषि के विशेषज्ञो की सख्या ४५,००० से बढकर २,९४,००० हो गयी थी। चिकित्सा कर्मियो की सख्या बढकर १,८५,००० से ९,७९,००० तक पहुच गयी थी। वास्तव मे यही स्थिति सभी क्षेत्रो मे थी। ये ठोस फल सास्कृतिक क्रांति के थे, जिसने अन्य बातो के अलावा किसानो और मजदूरो के बीच से आये नये बुद्धिजीवियो की सृष्टि की थी। पुराने बुद्धिजीवियो को सोवियत व्यवस्था का समर्थक बनाने और उन्हे पुन शिक्षित करने का काम भी सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। चौथे दशक के अत मे बुद्धिजीवियो के इस हिस्से मे कोई १,५०,००० से २,००,००० तक लोग थे।

उसी समय जब समाजवाद अपनी अतिम विजय प्राप्त कर रहा था, सोवियत सघ के अन्दर नयी समाजवादी जातियो का निश्चित निरूपण हो रहा था। इस सबध मे निर्णायक महत्व की बात थी भूतपूर्व रूसी

साम्राज्य की उन पिछड़ी जातियों का समाजवाद में संक्रमण, जो पूंजीवाद की मंजिल से बचते हुए आगे समाजवाद के युग में पहुंच गयी। यह सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की स्थापना के कारण संभव हुआ और उस जबर्दस्त सहायता की बदौलत, जो देश के अधिक उन्नत इलाकों के मेहनतकश लोगों ने अपने साथियों को मध्य एशिया, कज़ाख़्स्तान, काकेशिया के विभिन्न क्षेत्रों तथा अन्य इलाकों में पहुंचायी थी। सोवियत सत्ता ने रूस की समस्त जातियों को उन्मुक्त किया, जातीय उत्पीड़न का अंत किया और एक सुसंगत नीति पर अमल किया, जिसका उद्देश्य देश की समस्त जातियों के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करना था।

भूतपूर्व रूसी साम्राज्य में बसी हुई अनेक जातियों ने पहली बार राष्ट्रीय राज्यत्व प्राप्त किया। भूमि और सिंचाई व्यवस्थाओं में सुधारों की बदौलत वे इस योग्य हुईं कि उत्पादन के पूंजीवादपूर्व संबंधों का अंत कर सकें और समाजवादी परिवर्तनों के लिए जमीन तैयार कर सकें। सोवियत संघ के उद्योगीकरण के दौरान राष्ट्रीय जनतंत्रों और प्रदेशों में उद्योग का विकास विशेष रूप से तेजी से हुआ। नये कारख़ानों, खदानों तथा अन्य उद्यमों के विकास के साथ-साथ इन इलाकों में एक राष्ट्रीय मजदूर वर्ग विकसित हुआ और नयी समाजवादी जातियों के निर्माण की निर्णायक शक्ति बन गया। किसानों के खेतों का सामूहीकरण आम कृषक समूह के लिए—काश्तकारों और भूतपूर्व ख़ानाबदोशों, दोनों के लिए—समाजवाद में संक्रमण की निर्णयात्मक सामाजिक-आर्थिक शर्त था। सांस्कृतिक क्रांति ने भी इन जातियों के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर दिये।

संक्रमणकाल का अंत होने तक, क्रांति के बीस बरस बाद सोवियत संघ में बसनेवाली जातियों की आर्थिक और सांस्कृतिक असमानता को, जो अतीत की विरासत थी, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में मिटा दिया गया। समाजवादी जातियों के विकास के आधार पर सोवियत संघ की जातियों में अटूट बन्धुत्व पैदा हुआ, रचनात्मक सहयोग के संबंध स्थापित हुए और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद की विचारधारा अत्यंत कारगर ढंग से अमल में लायी गयी।

संक्रमणकाल का अंत दूसरे पंचवर्षीय योजना की पूर्ति के साथ-साथ हुआ। वह नयी आर्थिक नीति की समाप्ति का परिचायक था, जिसका

उद्देश्य पूंजीवादी तत्वों पर समाजवादी तत्वों को विजयी बनाना था। इसका मतलब यह था कि सोवियत संघ में मुख्यतया एक समाजवादी समाज स्थापित हो चुका था।

पथगामियों के रास्ते में हमेशा विशेष रूप से अनेक समस्याएं उठा करती हैं। जो लोग पथप्रदर्शन करते हैं और अपने बाद आनेवालों के लिए अपने अनुभव छोड़ जाते हैं, उनसे केवल विजयें ही नहीं, बल्कि गलतियां और बड़े नुकसान भी होते हैं। समाजवादी समाज की ओर जानेवाले मार्ग पर सोवियत संघ के लोगों को बड़ी छोटी बहुत-सी बाधाओं का सामना करना पड़ा।

इनमें से अनेक का संबंध स्तालिन की व्यक्तिपूजा से था। कम्युनिस्ट पार्टी और समस्त सोवियत जनगण स्तालिन का आदर करते थे कि वह क्रांति के पहले गुप्त रूप से चलनेवाले बोल्शेविक आंदोलन के नेताओं में से एक थे और अक्तूबर के सशस्त्र विद्रोह, गृहयुद्ध तथा हस्तक्षेप के दौर के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। १९२२ में स्तालिन को अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति का महासचिव चुना गया। लेनिन ने जहां क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रति स्तालिन की प्रमुख सेवाओं की सराहना की, वहां उन्हें इस बात का डर भी था कि कहीं स्तालिन महासचिव की हैसियत से उस शक्ति का जो उनके हाथ में थी, दुरुपयोग न करें। लेनिन ने सुझाव दिया कि साथीगण कोई उपाय स्तालिन को उस पद से हटाने का और उनके स्थान पर किसी दूसरे आदमी को नियुक्त करने का सोचें, जो अन्य सभी पहलुओं से कामरेड स्तालिन से एक ही गुण में भिन्न हो, यानी साथियों के प्रति उनसे अधिक उदार, अधिक सद्निष्ठ, अधिक विनम्र और साथियों का अधिक ध्यान रखनेवाला और कम सनकी हो।

१९२४ में पार्टी की १३वीं कांग्रेस में प्रतिनिधियों ने लेनिन के सुझाव पर विचार किया। उस समय की ऐतिहासिक परिस्थिति, लेनिनवाद विरोधी गुटों के प्रति स्तालिन के अनम्य व्यवहार तथा त्रोत्स्कीवाद के विरुद्ध संघर्ष में उनके अनुभव को ध्यान में रखते हुए प्रतिनिधियों ने निश्चय किया कि स्तालिन के लिए पार्टी की केंद्रीय समिति का महासचिव बना रहना युक्तियुक्त है।

आनेवाले वर्षों में स्तालिन ने अन्य पार्टी और राज्य नेताओं के साथ

मिलकर पहले एक देश में समाजवाद की विजय के संबंध में लेनिन के सिद्धांत का प्रतिपादन करने के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष किया और ऐसा करने में उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी। उस समय तक वास्तव में उनके हाथ में जबर्दस्त शक्ति केंद्रित हो गयी थी, लेकिन इसे उस स्थिति में स्वाभाविक समझा गया जब कि देश पूंजीवादी देशों से घिरा हुआ था और शोषक वर्गों के अवशेषों के विरुद्ध तीव्र अन्दरूनी संघर्ष चल रहा था। स्तालिन को "आज का लेनिन" समझा जाने लगा। संसार के प्रथम सर्वहारा राज्य के नेता और निर्माता को जो स्नेह और सम्मान प्राप्त था, अनेक पहलुओं से स्तालिन को मिल गया, जिन्हें लेनिन का विश्वासी शिष्य समझा जाता था, जो सक्रिय रूप से लेनिन के महान उद्देश्य की पूर्ति कर रहे थे।

सोवियत जनगण भली भांति अवगत थे कि सर्वहारा अधिनायकत्व स्थापित किये जानेवाले प्रथम देश को जटिल अन्दरूनी और अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का सामना करना है। जासूसी तथा सोवियत-विरोधी तोड़-फोड़, जिसके पीछे उन वर्गों के अवशेषों का हाथ था, जिन्हें उनकी पुरानी सत्ता से वंचित कर दिया गया था, तथा विदेशों द्वारा उकसावे की शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयां कल्पना की सृष्टि मात्र नहीं थीं। त्रोत्स्की, बुख़ारिन, ज़िनोव्येव, कामेनेव, रीकोव तथा उनके समर्थकों द्वारा गुटबाजी की पार्टी-विरोधी हरकतें समाजवादी निर्माण के विकास में बड़ी बाधा थीं। इस कारण पार्टी के प्रसिद्ध भूतपूर्व नेताओं को ज़िम्मेदारी के पदों से हटाया जाना तथा कम्युनिस्ट पार्टी से उनका निकाला जाना बिल्कुल औचित्यपूर्ण जान पड़ता था। लोग देख रहे थे कि जीवन स्तर बराबर ऊंचा हो रहा है और इस आम प्रगति को उन्होंने स्तालिन के कार्यकलाप से, उनके सैद्धांतिक वक्तव्यों और व्यावहारिक नेतृत्व से जोड़ दिया।

इस बीच स्तालिन की वे त्रुटियां, जिनसे लेनिन ने चेता दिया था, अधिकाधिक उभरती आ रही थीं। स्तालिन ने पार्टी तथा सार्वजनिक जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानों का उल्लंघन शुरू किया। उनका यह सिद्धांत कि समाजवादी निर्माण में ज्यों-ज्यों अधिक सफलताएं प्राप्त होंगी, वर्ग संघर्ष और तीव्र होगा, बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। १९३७ में स्तालिन ने बाक़ायदा यह सिद्धांत पेश किया, जिसके अनुसार बावजूद इसके कि सोवियत संघ में शोषक वर्गों का उन्मूलन कर दिया गया था और मुख्यतया

समाजवादी निर्माण पूरा हो चुका था वर्ग संघर्ष तीव्र होता जा रहा था। व्यवहार में इस सिद्धान्त के परिणामस्वरूप पार्टी सेना उद्योग कृषि विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों का अनुचित दमन किया गया।

परिस्थिति की पेचीदगी इस बात में थी कि पहले ही की तरह स्तालिन का नाम समस्त समाजवादी सफलताओं का प्रतीक माना जाता था और इसलिए उनकी गलतियों की आलोचना के सारे प्रयत्नों को सुना अनसुना कर दिया गया। अनेक वर्षों के बाद ही यह जाहिर हुआ कि स्तालिन की व्यक्तिपूजा से कितना नुकसान हुआ था। केवल १९५३ में बेरिया पर जो कई बरसों तक राज्य सुरक्षा विभाग का संचालक था मुकदमा चलाने के बाद यह बात सामने आयी कि बहुतेरे मर्द और औरत जो पार्टी सेना और अर्थव्यवस्था में प्रमुख स्थान रखते थे मिथ्या झूठी निन्दा का शिकार हुए।

लेकिन यह बात कई बरस के बाद हुई और चौथे दशक के अंत में स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। स्तालिन उस समय सर्वमान्य नेता थे जिनपर जनता को अगाध विश्वास था। पंचवर्षीय योजनाओं को स्तालिन योजनाएं तथा १९३६ के संविधान को स्तालिन संविधान कहा जाता था। तब से आज तक जो समय बीत चुका है उसमें हमारे लिए यह सम्भव हो गया है कि सच और झूठ में खरे और खोटे में फर्क कर सकें। सच तो यह है कि आज भी स्तालिन को बोल्शेविक पार्टी का एक प्रमुख व्यक्ति और उस समय का सर्वमान्य नेता स्वीकार किया जाता है। इसी के साथ स्तालिन की व्यक्तिपूजा तथा इससे पैदा होनेवाले नकारात्मक नतीजों की तीव्र निन्दा की जाती है जिनकी अभिव्यक्ति सर्वप्रथम सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्तों से पथभ्रष्ट होने में पार्टी और सार्वजनिक जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानों का उल्लंघन करने में दमन की अनुचित कारवाइयों में हुई।

यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि कम्युनिस्टों ने इतिहास में प्रमुख व्यक्तियों की भूमिका से कभी इनकार नहीं किया। यह सभी जानते हैं कि मजदूर वर्ग अपने नेताओं का जनता के जाने-माने पथप्रदर्शकों का बहुत आदर करता है। उन लोगों की प्रतिष्ठा से इनकार करना हास्यास्पद होगा जिन्हें सामाजिक विकास के अपने गहन वैज्ञानिक विश्लेषण

घटनाओं के ऐतिहासिक विकास पर वस्तुनिष्ठ ढंग से प्रकाश डालने तथा विश्व के क्रांतिकारी परिवर्तन को निर्धारित करनेवाले मौलिक नियमों को पहचान लेने की अपनी योग्यता तथा जनता के मुक्ति संघर्ष में उसका नेतृत्व करने की अपनी कुशलता के कारण प्रमुख स्थान प्राप्त होता है। ऐसे नेताओं के बिना वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धांत को विकसित करना, शोषकों को परास्त करना तथा वर्गहीन समाज का निर्माण करना असम्भव होता। प्रतिभाशाली विचारक तथा महान व्यावहारिक कर्मी – मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन ठीक ऐसे ही लोग थे। उनमें से हर एक का जीवन इस बात का पक्का सबूत है कि सर्वहारा नेताओं की प्रतिष्ठा में ऐसी कोई बात नहीं, जो व्यक्तियों की पूजा के प्रयत्नों के समान हो और यह कि व्यक्तिपूजा की कल्पना ही मूलतः मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रतिकूल है।

आज समाजवाद के बहुतेरे विरोधी अक्सर यह कहते सुनाई देते हैं कि उन्होंने स्तालिन की हरकतों की निन्दा उन्हीं दिनों की थी, जब सोवियत संघ के लोग उनकी आलोचना सुनने को तैयार नहीं थे। वे यह भूल जाते हैं कि स्तालिन के कार्यकलाप के मूल्यांकन के प्रति सोवियत संघ के लोगों का दृष्टिकोण कम्युनिज़्म के दुश्मनों के दृष्टिकोण से मुख्यतया भिन्न है। स्तालिन को पदच्युत करने के अपने प्रयासों में, चौथे दशक में भी और आज भी, कम्युनिज़्म के शत्रुओं ने समाजवादी निर्माण के पूरे मार्ग को बदनाम करने और एक तरह से यह दिखाने की चेष्टा की कि व्यक्तिपूजा सोवियत समाज के विकास की वस्तुगत नियमितता है। सोवियत जनगण और वे सभी लोग, जो ईमानदारी से इस समस्या का समाधान करना चाहते हैं, बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण अपनाते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं के अवधानपूर्ण विश्लेषण से प्रकट होता है कि स्तालिन की व्यक्तिपूजा के कारण सोवियत संघ का विकास अवरुद्ध नहीं हुआ। व्यक्तिपूजा के बावजूद देश कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में आगे बढ़ता रहा और इसकी समाजवादी व्यवस्था के स्वरूप में कोई अंतर नहीं हुआ। इसका सबसे ज्वलंत प्रमाण देश की बढ़ती हुई ताक़त, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इसकी प्रतिष्ठा तथा सोवियत सत्ता के प्रथम बीस वर्षों के दौरान का उपयोगी अनुभव था और इसकी ठोस अभिव्यक्ति १९३६ के संविधान में हुई।

१६३५ के शुरू मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक पूर्णाधिवेशन मे प्रस्ताव पास किया गया कि सोवियतो की अगली काग्रेस के सामने विचारार्थ सोवियत सघ के सविधान मे अनेक मौलिक सशोधनो का सुझाव पेश किया जाये, जिनका उद्देश्य उसमे समाजवादी निर्माण के दौरान प्राप्त बुनियादी सामाजिक-आर्थिक प्रगति को स्थान देना था। समाजवादी निर्माण उस समय तक मुख्यतया पूरा हो चुका था। इन सशोधनो मे निर्वाचन प्रणाली को और अधिक जनवादी बनाने, सबको निर्वाचन सबधी समान अधिकार देने, परोक्ष के बजाय प्रत्यक्ष चुनाव तथा खुले मतदान के बजाय गुप्त मतदान जारी करने की व्यवस्था की गयी थी। शीघ्र ही सोवियतो की सातवी काग्रेस ने इस समस्या पर विचार किया और सोवियत सघ के सविधान को बदलने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

जून, १६३६ मे एक नये सविधान का मसविदा अखबारो मे प्रकाशित हुआ। पाच महीनो से अधिक तक उस ऐतिहासिक दस्तावेज पर आबादी के सभी स्तरो पर और सभी हिस्सो द्वारा बहस की गयी। दूसरे शब्दो मे इतिहास मे अभी तक किसी भी सविधान पर ऐसी राष्ट्रव्यापी बहस नही हुई थी। यह कहना काफी होगा कि श्रमजीवी लोगो ने सविधान के प्रारूप मे सशोधन और परिवर्द्धन करने के लिए १,७०,००० से अधिक सुझाव पेश किये। इस राष्ट्रव्यापी बहस की बदौलत जनता मे राजनीतिक तथा श्रमिक उत्साह उत्पन्न हुआ। यह सही है कि उस समय भी उन लोगो की आवाजे सुनाई पडती थी, जो शोषक वर्गों, पूजीवादी और राष्ट्रवादी पार्टियो के प्रतिनिधि थे, जिन्हे क्राति ने तितर-बितर कर दिया था। लेकिन ऐसी आवाजो की सख्या नगण्य थी। ऐसी हालत मे जब कि आबादी के विशाल बहुमत ने सविधान के प्रारूप को स्वीकार किया था, ये कुछ बिखरी और अलग-थलग आवाजें केवल यही साबित कर रही थी कि पुराने रूस के शोषक वर्गों को समाजवाद के विरुद्ध सघर्ष मे पूरी शिकस्त हुई थी।

२५ नवम्बर १६३६ को सोवियत सघ की सोवियतो की आठवी असाधारण काग्रेस मास्को मे आयोजित की गयी, ताकि नये सविधान पर

विचार और उसको स्वीकार किया जाये। इसके पहले सोवियतों की जिला, प्रदेशीय, क्षेत्रीय तथा जनतंत्रीय कांग्रेसें हो चुकी थीं। संविधान के प्रारूप में कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने, जो संशोधन स्वीकार किये, उनमें से अधिकांश का संबंध शब्दप्रयोग से था। लेकिन कुछ जगहों पर सिद्धांत के सवाल भी उठ गये थे: मिसाल के लिए एक जगह एक अनुपूरक जोड़कर इस बात पर बल दिया गया था कि सामूहिक फ़ार्म को ज़मीन केवल सदा के लिए ही नहीं दे दी गयी है, बल्कि मुफ़्त इस्तेमाल के लिए भी दी गयी है। यह भी जोड़ा गया कि नागरिकों को अपने काम से प्राप्त आय और बचत और एक रिहाइशी मकान पर अपनी निजी सम्पत्ति के रूप में अधिकार, साथ ही निजी सम्पत्ति विरासत में पाने का उनका अधिकार क़ानून द्वारा सुरक्षित होगा। कांग्रेस ने उन संशोधनों को भी स्वीकार किया, जिनका संबंध ग़ैर-रूसी जातीय जनतंत्रों और प्रदेशों के प्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रणाली से था। यह भी व्यवस्था की गयी कि सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा स्वीकृत क़ानूनों को सभी संघीय जनतंत्रों की भाषाओं में प्रकाशित किया जायेगा।

५ दिसम्बर, १९३६ को सोवियतों की आठवीं कांग्रेस ने सोवियत संघ के संविधान का मूलपाठ अंतिम रूप में स्वीकृत किया और तब से ५ दिसम्बर को एक राष्ट्रीय पर्व—संविधान दिवस—के रूप में हर साल मनाया जाता है।

१९३६ का संविधान सोवियत संघ में समाजवादी व्यवस्था की विजय की क़ानूनी अभिव्यक्ति था। संविधान के प्रथम पैरा में कहा गया था: "सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ मजदूरों और किसानों का समाजवादी राज्य है।" उसमें आगे चलकर बताया गया था कि सोवियत संघ में समाजवादी समाज का राजनीतिक आधार मेहनतकशों के प्रतिनिधियों की सोवियतें है तथा सोवियत संघ का आर्थिक आधार इसकी समाजवादी अर्थव्यवस्था तथा उत्पादन के औज़ारों और साधनों का समाजवादी स्वामित्व है, जिसके दो रूप हैं, राजकीय सम्पत्ति (जो समस्त जनगण की है) तथा सहकारी और सामूहिक फ़ार्मों की सम्पत्ति। संविधान ने व्यक्तिगत किसानों और दस्तकारों के छोटे निजी कारोबारों को भी आज्ञा दी, जो स्वयं उनके अपने श्रम पर आधारित हों और जिनमें दूसरों के श्रम के शोषण की गुंजाइश नहीं हो।

सविधान के अनुसार सोवियत सघ मे ग्यारह सघीय जनतत्र शामिल थे, जिनमे सभी को समान अधिकार प्राप्त थे।* देश मे राज्यसत्ता की सर्वोच्च सस्था सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत है। इसके दो सदन है—सघ की सोवियत तथा जातियो की सोवियत, और दोनो के अधिकार बराबर हैं। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमडल दोनो सदनो की सयुक्त बैठक मे चुना जाता है और इसी प्रकार सोवियत सरकार—सोवियत सघ का जन कमिसार परिषद—भी चुना जाता है।

सविधान मे कहा गया है कि सभी नागरिको को काम, अवकाश, शिक्षा, वृद्धावस्था मे तथा बीमारी या अक्षमता की हालत मे आर्थिक निर्वाह का समान अधिकार प्राप्त है। उसमे यह भी कहा गया है कि नर-नारियो को आर्थिक, राजकीय, सास्कृतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे समान अधिकार हासिल हैं। सविधान मे इन अधिकारो की जमानत नागरिको को व्यापक पैमाने पर इनके पूरे इस्तेमाल की भौतिक सुविधाए सुनिश्चित करके की गयी थी। वह अश खास तौर से महत्वपूर्ण था, जिसका सबध सोवियत सघ के तमाम नागरिको के समान अधिकारो से था, चाहे वे किसी कौम या नस्ल के हो। नस्ली या जातीय श्रेष्ठता की भावना फैलाना या नस्ल और जातीयता के आधार पर नागरिको के अधिकारो को सीमित करना नये सविधान मे कानून द्वारा दडनीय घोषित कर दिया गया।

१९३६ के सविधान मे सोवियत राज्य के जीवन मे कम्युनिस्ट पार्टी की अग्रणी भूमिका को सवैधानिक रूप दिया गया। इस खास विषय से सबधित पैरा मे कहा गया है "मजदूर वर्ग तथा श्रमजीवी जनगण के अन्य हिस्सो की पक्तियो मे से सबसे सक्रिय और राजनीतिक चेतन नागरिक अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) मे एकताबद्ध होते है, जो समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ और विकसित करने के लिए

---

*नये सविधान के अनुसार सोवियत सघ मे निम्नलिखित सघीय जनतत्र शामिल थे रूसी सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र, बेलोरूसी, उक्रइनी, आजरबैजानी, आर्मीनियाई, जार्जियाई, (इन तीनो को मिलाकर पहले ट्रास-काकेशियाई सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र बना दिया गया था), उज्बेक, तुर्कमान, ताजिक, कज़ाख तथा किर्गिज सोवियत समाजवादी जनतत्र।

श्रमजीवी जनगण के संघर्ष में उनकी हिरावल है, तथा श्रमजीवी जनता के सभी संगठनों, सार्वजनिक और राजकीय दोनों संगठनों का नेतृत्वकारी केन्द्र है।"

नये संविधान की स्वीकृति का मतलब यह था कि पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण अब पूरा हो चुका है। सोवियत इतिहास के प्रथम दो दशकों का यह दौर सर्वहारा अधिनायकत्व का दौर था। चौथे दशक के मध्य तक समाजवादी समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण मुख्यतया हो चुका था और वास्तव में शोषक वर्गों का उन्मूलन कर दिया गया था। इससे उत्पन्न स्थिति में अब देश के अन्दर शोषक तत्वों का दमन करने की आवश्यकता नहीं रह गयी थी, और राज्य के सबसे महत्वपूर्ण काम इस अवस्था में सर्वप्रथम संगठनात्मक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक थे। सर्वहारा अधिनायकत्व का स्थान धीरे-धीरे समस्त जनगण का राज्य ले रहा था।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के चुनाव दिसम्बर, १९३७ में नये संविधान के अनुसार किये गये। समान मताधिकार तथा गुप्त मतदान के आधार पर इन प्रत्यक्ष चुनावों के परिणाम इस प्रकार थे: कुल १,१४३ प्रतिनिधियों में ४१.५ प्रतिशत मजदूर, २९.५ प्रतिशत किसान तथा २९ प्रतिशत सोवियत बुद्धिजीवियों के नुमाइंदे थे। इस प्रसंग में दो तुलनात्मक उदाहरण बहुत अर्थपूर्ण हैं: अंतिम क्रांतिपूर्व दूमा में केवल ११ मजदूर तथा शिल्पकार थे; उनमें से पांच बोल्शेविक मजदूर थे, जिन्हें ज़ारशाही सरकार ने प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ में गिरफ़्तार करके साइबेरिया भेज दिया था।

१९३७ के चुनावों में कुल ९,४१,३८,१५९ रजिस्टर्ड मतदाताओं में से ९६.८ प्रतिशत ने मतदान में भाग लिया, और इनमें से ९८.६ प्रतिशत ने कम्युनिस्टों तथा ग़ैरपार्टी लोगों को वोट दिया। प्रतिनिधियों की कुल संख्या में ८७० अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के सदस्य थे और २७३ ग़ैरपार्टी लोग थे। उनमें १८७ महिलाएं थीं। सर्वोच्च सोवियत के सदस्यों में ६२ जातियों के लोग शामिल थे। कालीनिन सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष चुने गये। कालीनिन, जो कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत पुराने सदस्य थे, प्रारम्भ में त्वेर गुबेर्निया में किसान और फिर पेत्रोग्राद में धातुकर्मी मजदूर थे।

समाजवाद के निर्माण मे सोवियत सघ की उपलब्धियो से सारी दुनिया के प्रगतिशील नर-नारिया प्रभावित हुए। १९३७ मे प्रमुख जर्मन लेखक हाइनरिक मान ने "एक भाव का साकार रूप" के शीर्षक से एक लेख प्रकाशित किया, जिसमे लिखा था "समाजवाद ससार के सबसे बडे देश मे विजयी सिद्ध हुआ है और उसने अपनी प्रबल जीवन-शक्ति का परिचय दिया है... अब से मानवजाति के समस्त इतिहास मे प्रगति का एक ही मार्ग होगा।"

उसी साल एक और प्रसिद्ध लेखक तथा फासिज्म के विरोधी लिओन फॅख्तवागर ने भी मास्को की यात्रा की। उन्होने लिखा "मैं जब मास्को के लिए रवाना हुआ, तो हमदर्द था... लेकिन शुरू से ही मेरी हमदर्दी मे कुछ सन्देह भी मिला हुआ था।" सोवियत सघ से विदा होते समय लेखक निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुच चुके थे जब पश्चिम के असह्य वातावरण से निकलकर "आप सोवियत सघ की ताजा हवा मे पहुचते हैं, तो यकायक आप अधिक मुक्त रूप से सास लेने लगते है... कूड़ाकरकट और गदी शहतीरे अभी भी इधर-उधर पडी दिखाई देती है, लेकिन आलीशान इमारत की उज्ज्वल बाह्य रेखाए दूर से ही उभरी हुई दिखाई देने लगती हैं... पश्चिम के अरुचिकर दृश्य के बाद ऐसी कृति को देखना कितना सुखद है, जिसका आप तहेदिल से स्वागत किये बिना नही रह सकते"।

समाजवादी निर्माण, सास्कृतिक प्रगति तथा मेहनतकशो के विशाल जनसमूह के आम जीवनस्तर को ऊचा करने मे सोवियत जनगण की उपलब्धियो ने मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के वैज्ञानिक सिद्धात की जीवन-शक्ति सिद्ध कर दी। सोवियत जनगण, जिन्होने ससार मे सबसे पहले समाजवादी परिवर्तनो के मार्ग पर क़दम रखा, भविष्य के पथप्रदर्शक बन गये।

अक्तूबर क्राति की बीसवी जयती के अवसर पर अनेक देशो मे जुलूस, जन सभाए और समारोह हुए। केवल सोवियत सघ के ही शहरो और गावो मे ही नही, बल्कि विदेशो मे भी अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग ने उस जयती को एक महान त्योहार के रूप मे, सोवियत सघ के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग की एकजुटता के दिवस के रूप मे मनाया। लगता था हर जगह लोग १९१७ की क्राति के बाद की दो दशाब्दियो मे दो

व्यवस्थाओं – पूंजीवाद और समाजवाद – के विकास के परिणामों की तुलना कर रहे थे। वे सचेष्ट थे कि उन्हें सोवियत समाज के जीवन को अपनी आंखों से देखने का अवसर मिले। सोवियत संघ असंख्य विदेशियों, खासकर मजदूरों के प्रतिनिधिमंडलों का तीर्थस्थान बन गया। १ मई का दिवस तथा अक्तूबर क्रांति जयंती के समारोहों में भाग लेने के लिए लोग बड़ी संख्या में आये।

१ मई, १९३८ को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष कालीनिन ने विदेशी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा: "यहां की धरती पर आपको दूध और शहद की नदियां बहती नहीं मिलेंगी। हमारा राज्य मेहनतकशों का है। हमने अपना काम अत्यंत दरिद्रता की स्थिति में शुरू किया, या अधिक सजीव ढंग से यों कहेंगे कि राबिनसन क्रूसो की हस्त-निर्मित कुटिया से शुरू किया... शायद इस काम में बहुत-सी गलतियां की गयी हैं, शायद कुछ काम हमने गलत ढंग से किये, यह मैं मानने को तैयार हूं। लेकिन एक बात मुझे आपसे कहनी जरूरी है... सर्वहारा जगत जन्म ले रहा है... सोवियत संघ सर्वहारा वर्ग का मक्का है।"

बीस वर्ष की अवधि एक व्यक्ति के जीवन में भी छोटी अवधि है और जब किसी ऐसे देश के इतिहास की बात हो, जो अपने स्वतंत्र पथ पर अन्य किसी राज्य की सहायता के बिना अग्रसर हुआ हो, तो यह समय और भी छोटा हो जाता है। इसी लिए उन प्रथम दशाब्दियों के नतीजे और भी अधिक महत्वपूर्ण मालूम पड़ते हैं। विश्व के प्रथम राज्य में, जहां सर्वहारा अधिनायकत्व स्थापित हो चुका था, समाजवादी परिवर्तन एक ऐतिहासिक वास्तविकता बन चुका था।

आठवां अध्याय

सोवियत संघ महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की पूर्ववेला में १६३८-१६४१

सोवियत संघ का शांति के लिए संघर्ष

जनवरी, १६३३ में जर्मनी के वयोवृद्ध जर्मन राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने फ़ासिस्टों के नेता अडोल्फ़ हिटलर को जर्मन राज्य का चांसलर नियुक्त कर दिया। उस समय से जर्मनी ने युद्ध की तैयारियां तेज़ कर दी।

पश्चिमी राष्ट्रों की सहयोग करने की अनिच्छा के बावजूद सोवियत संघ ने अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने के अपने प्रयास जारी रखे। १६३३ में राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति मे सोवियत संघ ने आक्रमण तथा हमलावर पक्ष या आक्रमणकारी की व्याख्या करने का एक प्रस्ताव रखा। ३ जुलाई, १६३३ को अनेक देशो के प्रतिनिधियो ने लन्दन मे सोवियत प्रस्ताव पर आधारित एक क़रारनामे पर हस्ताक्षर किये जिसमें "हमले" की धारणा की व्याख्या की गयी थी।

१६३३ में सोवियत संघ से राजनयिक संबंध रखनेवाले देशो की संख्या में और वृद्धि हुई। जुलाई मे सोवियत संघ ने स्पेनी जनतंत्र के साथ, तथा अगस्त में ऊरुग्वे के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये। सितम्बर मे सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच राजनयिक संबंध की स्थापना की बाबत एक सरकारी घोषणा प्रकाशित हुई।

यह पूछा जा सकता है कि संयुक्त राज्य अमरीका के रवैये मे परिवर्तन का क्या कारण था, ख़ासकर यह देखते हुए कि वह देश कई वर्षों से सोवियत संघ की "अमान्यता" की नीति पर डटा हुआ था। इसके अनेक कारण थे: सोवियत सघ के प्रति अमरीकी जनगण के व्यापक भाग की सहानुभूति, सोवियत संघ के साथ लाभदायक ठेके करने की अमरीकी उद्योगपतियों की आशाएं, और किसी हद तक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के

घटनाचक्र। अन्य देशों में भी बड़ी संख्या में लोगों ने सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच राजनयिक संबंध स्थापित करने पर ज़ोर दिया।

विश्व निरस्त्रीकरण आयोग के मई १९३४ के अधिवेशन में सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने सुझाव रखा कि इसे स्थाई शांति सम्मेलन में परिणत कर दिया जाये। इस दौर में जब कि जर्मनी और इटली की फ़ासिस्ट सरकारें अपनी आक्रमणकारी योजनाओं को अमल में लाने की तैयारी कर रही थीं और सैन्यवादी जापान ने चीन पर हमला शुरू कर दिया था, यह अत्यावश्यक था कि शांति सम्मेलन शस्त्रास्त्रों में कटौती तथा प्रतिबंध की समस्याओं पर पुनःविचार करता रहे, यूरोपीय और केवल यूरोपीय ही नहीं, सुरक्षा को सुदृढ़ करने के उपाय ढूंढ़े तथा सैनिक टकरावों को रोकने के रास्ते निकाले।

यद्यपि सोवियत सुझावों को स्वीकार नहीं किया गया और सम्मेलन ने अपना काम वास्तव में बंद कर दिया, सोवियत सुझावों ने संसार को आक्रमण रोकने के वास्तविक उपाय दिखला दिये।

अधिक दूरदर्शी पश्चिमी राजनीतिज्ञों ने यूरोप में जर्मनी और इटली तथा सुदूर पूर्व में जापान की आक्रामक आकांक्षाओं के विरुद्ध सोवियत संघ के संघर्ष के महत्व को समझ लिया था। राष्ट्र संघ में सोवियत संघ के दाखिले का सवाल उठ खड़ा हुआ। १५ सितम्बर, १९३४ को फ़्रांस की पहल पर मास्को भेजे गये एक तार में सोवियत संघ को तीस देशों के नाम पर राष्ट्र संघ में शामिल होने का निमंत्रण दिया गया था।

युद्ध के खतरे को दूर करने के लिए सभी साधनों को जुटाने की ज़रूरत को देखते हुए सोवियत संघ ने राष्ट्र संघ की स्पष्ट कमज़ोरियों के बावजूद उसके साथ सहयोग करने का निश्चय किया। निमंत्रण के जवाब में सोवियत सरकार ने घोषणा की कि "वह प्राप्त संदेश को स्वीकार करने तथा अनुकूल स्थान धारण करने पर राष्ट्र संघ का सदस्य बनने को तथा राष्ट्र संघ के सदस्यों के लिए आवश्यक अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों और निश्चयों को पूरा करने पर तैयार है..."

राष्ट्र संघ के १५वें महाधिवेशन में सोवियत प्रतिनिधिमंडल के नेता लित्विनोव ने इस अंतर्राष्ट्रीय संगठन में सोवियत संघ के दाखिले के सवाल पर बोलते हुए बताया कि सोवियत संघ राष्ट्र संघ की सभी कार्रवाइयों

से सहमत नही है और "सगठन मे शामिल होनेवाले हर नये सदस्य की तरह वह उन्ही प्रस्तावो को नैतिक स्वीकार करता है जो उसकी शिरकत तथा सहमति से स्वीकार किये गये है।"

ज्यो ही सोवियत सघ राष्ट्र सघ का सदस्य बना उसने निशस्त्रीकरण की समस्या के समाधान सम्बन्धी कार्रवाइया करने का सवाल उठाया। यह बात खासकर इसलिए महत्वपूर्ण थी कि १९३५ मे जर्मन सरकार ने सार्विक सैनिक सेवा लागू करने की घोषणा कर दी थी। उसी समय इटली अपनी सेनाए अबीसीनिया (इथियोपिया) की सीमा पर जमा कर रहा था। सोवियत सघ ने आक्रमण को रोकने के लिए सभी शातिप्रेमी शक्तियो को एकजुट करने की अपील की। मगर अबीसीनिया पर इटली के हमले के बाद ही राष्ट्र सघ की परिषद ने इटली को आक्रमणकारी घोषित किया और उसके विरुद्ध वित्तीय तथा आर्थिक कारवाई करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। लेकिन १९३६ की गर्मियो मे ही ब्रिटिश प्रतिनिधिमडल की पहलकदमी पर राष्ट्र सघ ने उनको रद्द करने का फैसला किया।

१९३६ के वसत से दोनो फासिस्ट शक्तियो – जर्मनी और इटली – ने यूरोप मे अपनी योजनाओ को कार्यान्वित करना शुरू किया। ७ मार्च को जर्मन सेनाओ ने असैनिकीकृत राइनलैड मे प्रवेश किया। फासिस्ट जर्मनी ने आक्रमण का अपना पहला कदम उठाया। लगता था कि पश्चिमी शक्तिया अब आक्रमणकारियो के खिलाफ निर्णयकारी कदम उठायगी और युद्ध का रास्ता रोकने के लिए राष्ट्र सघ से काम लेगी। बर्लिन से जर्मन सेनाओ को यह आदेश भी जारी कर दिया गया था कि फ्रासीसी सेनाओ से मिलने पर उनसे लडना नही, बल्कि वापस लौट आना। मगर फ्रासीसी सेनाए वही विद्यमान नही थी।

१९३६ के वसत मे आक्रमणकारियो को पीछे हटने पर बाध्य करना आसान था। यूरोप तथा ससार भर को आनेवाले युद्ध से बचाने के लिए निर्णयात्मक फौरी कार्रवाई करनी जरूरी थी। ठीक इसी प्रकार की कारवाई करने का सुझाव सोवियत सरकार कर रही थी। लेकिन पश्चिमी देशो के शासक हलको की सोवियत सघ से सहयोग करने की कोई इच्छा नही थी और उनकी कार्रवाइया से वास्तव मे आक्रमणकारियो को प्रोत्साहन मिला। परिस्थितिवश राष्ट्र सघ भी कोई अमली कदम नही उठा सकता था।
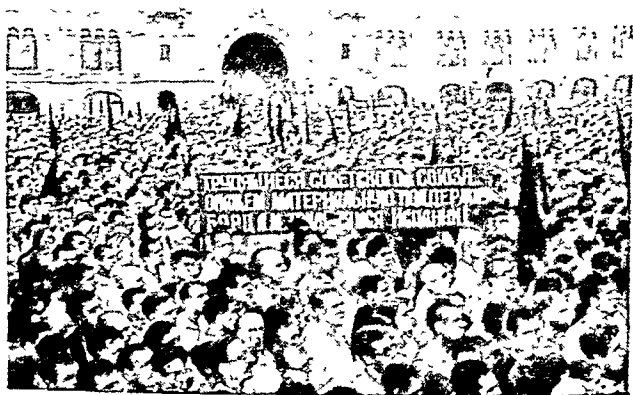
स्पेन की जुझारू जनता के समर्थन में लाल चौक में एक जन सभा।
मास्को, १९३६

आक्रमणकारी मनमाना करने लगे। १८ जुलाई, १९३६ को स्पेन की वैधानिक सरकार के विरुद्ध बग़ावत का झंडा उठाया गया। फ़ासिस्ट जर्मनी और इटली ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करके उसका समर्थन किया। सोवियत संघ एकमात्र देश था जिसने फ़ासिज़्म तथा आक्रमण के विरुद्ध स्पेनी जनता के समर्थन की सुसंगत नीति अपनाई।

पश्चिमी शक्तियां आक्रमणकारियों को प्रोत्साहन देती रहीं। १९३६ के अन्त में बर्लिन में जर्मनी और इटली में सहयोग संबंधी एक संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए जो "बर्लिन–रोम धुरी" के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके बाद जर्मनी ने जापान के साथ एक तथाकथित कमिंटर्न-विरोधी संधि पर हस्ताक्षर किया, और अगले वर्ष इटली इस संधि का तीसरा पक्षधर बन गया। इस तरह तीनों आक्रमणकारी देशों में एक सैनिक-राजनीतिक संघ बनाया गया जिसे आम तौर से "रोम–बर्लिन–टोकियो त्रिकोण" कहा जाता था। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के विरुद्ध संघर्ष में सहयोग की घोषणा करके, जर्मनी, इटली और जापान ने अपनी दूरव्यापी हस्तक्षेपकारी योजनाओं को पूरा करने के लिए कमिंटर्न-विरोधी संधि का इस्तेमाल किया।

युद्ध के बढ़ते खतरे और सैन्यवाद विरोधी भावनाओ के तेज होने की परिस्थितियो मे पश्चिम के शासक हल्के यूरोपीय सुरक्षा को सुदृढ बनाने के सोवियत सुझावो को बराबर रद्द नही कर सकते थे। १९३५ मे फ्रासीसी सरकार ने सोवियत सघ के साथ एक परस्पर सहायता की सधि की।

उसी समय सोवियत सघ ने फ्रास के मित्र राष्ट्र चेकोस्लोवाकिया के साथ भी एक परस्पर सहायता की सधि की। सोवियत-चेकोस्लोवाक सधि मे एक शर्त यह थी कि परस्पर सहायता उसी समय दी जायेगी जब फ्रास आक्रमण के शिकार देश की मदद के लिए आयेगा। इन दो सधियो के सपन्न होने से यूरोप मे सामूहिक सुरक्षा की व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा मे एक कारगर कदम उठाया गया। लेकिन पश्चिमी शक्तिया इससे आगे जाने को तैयार नही थी।

सुदूर पूर्व मे शाति को सुदृढ करने की खातिर सोवियत सरकार ने १९३६ मे मगोली जनवादी जनतत्र के साथ एक परस्पर सहायता सधिपत्र पर हस्ताक्षर किये। अगस्त १९३७ मे चीन के साथ एक अनाक्रमण सधि पर हस्ताक्षर हुए।

सोवियत सघ द्वारा शाति को प्रशस्त करने के स्पष्ट प्रयासो के बावजूद जापानी सरकार सोवियत सीमा पर उत्तेजना भरी कार्रवाइया करती रहती थी। १९३८ की गर्मी मे जापानी सैनिक नेताओ ने हसन झील के निकट सोवियत इलाके पर हमला बोल दिया। जापानी आक्रमणकारियो को मुह की खानी पडी और उन्हे सोवियत सघ से खदेड दिया गया।

इस बीच यूरोप मे आक्रमण के नये कदम उठाने की तैयारिया हो रही थी। १९३८ की वसत मे जर्मनी ने आस्ट्रिया को हडप लिया और शीघ्र ही चेकोस्लोवाकिया के कुछ इलाको पर दावे पेश किये।

जब यह बात स्पष्ट हो गई कि फ्रास चेकोस्लोवाकिया के साथ अपनी सधि के बावजूद उसकी सहायता के लिए नही आयेगा तो सोवियत सघ ने ऐलान किया कि अगर चेकोस्लोवाक सेना आक्रमण का सामना करने के लिए उठ खडी हो और चेकोस्लोवाक सरकार सोवियत सघ से सहायता मागे, तो सोवियत सघ उसकी सैनिक सहायता करने के लिए तैयार है। पूजीवादी चेकोस्लोवाकिया के शासको ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। पेरिस और लन्दन मे हिटलर से एक और सौदेबाजी की गई। सितम्बर, १९३८ के अत मे म्यूनिख मे फासिस्ट तानाशाहो हिटलर और मुसोलीनी

ने ब्रिटिश प्रधान मंत्री चेम्बरलेन तथा फ़ांसीसी सरकार के अध्यक्ष दलादिये से भेंट की। परिणामस्वरूप चेकोस्लोवाकिया के एक भाग पर जर्मनी ने बिना किसी प्रतिरोध के दख़ल कर लिया। "म्यूनिक" शब्द एक लोकोक्ति, हमलावरों से गंठजोड़, विश्वासघात का प्रतीक बन गया।

हसन झील के नजदीक जाग्रोज्योनाया पहाड़ी पर
लाल झंडा फहराया गया

जैसा कि आशा की जानी चाहिए थी ब्रिटेन तथा फ़ांस की इस रिआयत से नाजियों के क़दम नहीं रुके। १५ मार्च, १९३९ को उन्होंने पूरे चेकोस्लोवाकिया पर क़ब्ज़ा कर लिया।

उस समय जब नाज़ी जर्मनी यूरोप मे एक के बाद एक आक्रमणकारी कार्रवाई कर रहा था, ब्रिटिश और फ्रासीसी सरकारो ने सोवियत सघ से बातचीत शुरू करने का प्रस्ताव किया। लेकिन यह केवल एक चाल थी जिसका उद्देश्य, एक ओर इन दोनो देशो और सारे ससार मे जनता को धोखा देना, उन सरकारो द्वारा अपनाये गये राजनीतिक मार्ग की असली दिशा को छिपाना था और दूसरी ओर, सोवियत सघ के साथ इन दोनों देशों के मेल-मिलाप का डर दिखाकर जर्मनी से राजनयिक सौदेबाज़ी मे अपने लिए अधिक लाभदायक स्थिति को सुनिश्चित करना था।

सोवियत सघ ने जर्मन आक्रमण के खिलाफ सयुक्त कार्रवाई करने के लिए ब्रिटेन और फ्रास से समझौता करने का कोई प्रयास उठा नही रखा। लेकिन ब्रिटेन और फ्रास के साथ अगस्त, १९३९ मे मास्को मे जो वार्तालाप शुरू हुआ, उससे पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि लन्दन और पेरिस वास्तव मे सोवियत सघ के साथ सहयोग करने के इच्छुक नही थे।

ब्रिटेन और फ्रास दोनो अभी तक नाज़ी आक्रमण का रुख पूर्व की ओर मोड़ने के सपने देख रहे थे। उनके इस रवैये के कारण बाध्य होकर सोवियत सघ को हिटलरी जर्मनी द्वारा प्रस्तुत अनाक्रमण सधि का सुझाव स्वीकार करना पड़ा। अगस्त, १९३९ में यह सधि सपन्न हुई। "इज्वेस्तिया" के एक सवाददाता को एक इन्टर्व्यू मे मार्शल वोरोशीलोव ने बताया "ब्रिटेन तथा फ्रास से हमारी बातचीत इसलिए नही टूटी कि सोवियत सघ ने जर्मनी से अनाक्रमण सधि की, वास्तव मे सोवियत सघ को जर्मनी के साथ अनाक्रमण सधि करने पर मजबूर होना पड़ा क्योंकि अपार मतभेदो के कारण फ्रास और ब्रिटेन से सैनिक वार्तालाप शिखर पर पहुच चुका था।"

आगे के समस्त घटनाचक्र ने यह सिद्ध कर दिया कि १९३९ की गर्मी के उस तनावपूर्ण और जटिल वातावरण मे सोवियत सरकार ने एकमात्र सही रास्ता अपनाया।

उस समय घटनाए एक पर एक बड़ी तेज़ी के साथ हो रही थी। १ सितम्बर, १९३९ को जर्मनी ने पोलैंड पर हमला कर दिया। केवल उसके बाद ही ब्रिटेन और फ्रास ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने का निश्चय किया। लेकिन कोई बड़ी सैनिक कार्रवाई करने का उनका

कोई इरादा नहीं था। इस बीच हिटलर की सेनाओं ने डेनमार्क और नार्व पर अधिकार कर लिया और मई, १९४० में वे हालैंड, बेलजियम और लुक्ज़मबर्ग से होती हुई फ़्रांस में बढ़ीं।

उसी समय सोवियत संघ और फ़िनलैंड में टकराव हुआ। बात यह है कि सोवियत-फ़िनिश सीमा लेनिनग्राद से, देश के दूसरे सबसे बड़े नगर से ३२ किलोमीटर की दूरी पर थी। फ़िनलैंडवालों ने सीमा पर भारी तोपख़ानेवाली मोर्चेबन्दियां स्थापित कर दी थीं। विश्वयुद्ध की स्थितियों में साम्राज्यवादी शक्तियां अपनी सोवियत-विरोधी योजनाओं में फ़िनलैंड को इस्तेमाल करके लेनिनग्राद को सख़्त जोखिम में डाल सकती थीं। सोवियत सरकार ने फ़िनिश सरकार से एक परस्पर सहायता संधि करने का प्रस्ताव पेश किया। लेकिन इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया। तब सोवियत सरकार ने यह सुझाव रखा कि सोवियत-फ़िनिश सीमा रेखा को लेनिनग्राद से कुछ दूर पीछे हटा दिया जाये और उसके बदले में उसका दोगुना इलाक़ा करेलिया में देने का सुझाव रखा। मगर फ़िनलैंड के प्रतिक्रियावादी हल्के, जिन्हें पश्चिमी देशों की सरकारों द्वारा सक्रिय रूप में उकसाया जा रहा था, बराबर अड़े रहे तथा सोवियत-फ़िनिश सीमा पर छेड़-छाड़ की कार्रवाइयां करते रहे, जिन्होंने अंत में सशस्त्र टकराव का रूप ले लिया। मार्च, १९४० में सोवियत संघ और फ़िनलैंड के बीच शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार लेनिनग्राद के उत्तर-पश्चिम का इलाक़ा सोवियत संघ को मिला और करेलिया का एक बड़ा क्षेत्र फ़िनलैंड को दे दिया गया।

उस समय की तनावपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सोवियत संघ ने अपनी सुरक्षात्मक क्षमता को सुगठित करने में पूरा ज़ोर लगा दिया।

तीसरी पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ

जनवरी, १९३८ में देश के नये संविधान के अनुसार निर्वाचित सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत का प्रथम अधिवेशन मास्को में हुआ। प्रतिनिधियों ने कालीनिन की अध्यक्षता में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमंडल चुना। फिर सोवियत संघ की सरकार — जन कमिसार परिषद — की रचना की गई; मोलोतोव उसके अध्यक्ष चुने

गये। राज्य सत्ता के नवनिर्वाचित निकायो के समक्ष महान और जटिल कार्यभार थे। उस समय तक आर्थिक विकास के क्षेत्र मे प्राप्त सफलताए सर्वविदित थी। कुल औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से सोवियत सघ का स्थान यूरोपीय राष्ट्रो मे प्रथम और ससार म (सयुक्त राज्य अमरीका के बाद) दूसरा था। मगर जनसख्या के प्रति व्यक्ति पैदावार की मात्रा सयुक्त राज्य अमरीका ही नही, ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रास से भी कम थी। जहा तक बिजली शक्ति का सबध है, फ्रास, ब्रिटेन और जर्मनी की पैदावार सोवियत सघ की तुलना मे क्रमश १०० प्रतिशत से अधिक, लगभग २०० प्रतिशत और २५० प्रतिशत ऊपर थी। उपभोग सामान के मामले मे भी यही स्थिति थी।

परन्तु सोवियत अर्थव्यवस्था उस समय तक ऐसे स्तर पर पहुच चुकी थी जहा उन लक्ष्याको की पूर्ति के लिए निश्चित समय निर्धारित करना सम्भव हो गया जिनसे समाजवाद के सारतत्व की अधिकतम सपूर्ण अभिव्यक्ति होगी और पूजीवादी अर्थव्यवस्था पर उसकी श्रेष्ठता का परिचय मिलेगा।

सोवियत जनगण के सामने अब वह कार्यभार था जिसे लेनिन कई वर्ष पूर्व बता चुके थे और वह था प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन की दृष्टि से सबसे उन्नत पूजीवादी देशो तक पहुच पाना और उनसे आगे निकल जाना। यह कार्यभार–अब व्यावहारिक रूप मे–मार्च, १९३९ मे कम्युनिस्ट पार्टी की १८वी काग्रेस मे पेश किया गया। इससे कुछ ही पहले (जनवरी, १९३९ म) राष्ट्रव्यापी जनगणना से सोवियत समाज की सम्भावनाओ का पक्का सबूत मिल गया था जो महान, ऐतिहासिक दृष्टि से परिपक्व कार्यभार को पूरा करनेवाला था। १९३९ की जनगणना दूसरी अखिल सघीय जनगणना थी पहली १९२६ के अत मे की गई थी जब अर्थव्यवस्था का समाजवादी पुनर्निर्माण अभी शुरू ही किया गया था। दोनो जनगणनाओ मे प्राप्त आकडो से १९२६–१९३९ के परिणाम देखे जा सकते थे।

१९३९ मे कुल जनसख्या १७,०६,००,००० थी, याने १९२६ की तुलना मे कोई २,४०,००,००० अधिक। विचाराधीन अवधि मे आबादी मे सालाना वृद्धि सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास और जर्मनी की तुलना मे काफी अधिक थी। १२ वर्षो मे शहरी आबादी दोगुनी से अधिक हो गई

थी और लगभग एक तिहाई आबादी शहरों में रहने लगी थी। नये औद्योगिक केंद्र उत्पन्न हो गये थे जैसे क़रागन्दा, कोम्सोमोल्स्क-आन-आमूर, मग्नितोगोर्स्क, मगादान, ख़िबीनोगोर्स्क (जिसका नाम बाद में कीरोव्स्क पड़ा), चिरचीक (ताशक़न्द के पास) तथा अन्य दर्जनों शहर। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लगभग इन सब केंद्रों का निर्माण देश के पूर्वी भागों में किया गया था जो पहले रूसी साम्राज्य के सबसे पिछड़े इलाक़े थे। आबादी की सबसे अधिक वृद्धि सोवियत संघ के ग़ैर-रूसी जनतंत्रों में हुई थी।

मज़दूर और दफ़्तरी कर्मचारी (अपने परिवारों समेत) पूरी जनसंख्या में आधे के बराबर थे। जनगणना के अन्य आंकड़ों से भी एक नई जीवन पद्धति स्थापित करने में सोवियत राज्य की उपलब्धियों का पता चलता था। चौथी दशाब्दी के अंत तक आठ और पचास के बीच की आयु के लगभग सभी सोवियत नागरिक पढ़ लिख सकते थे और आबादी का क़रीब छठा भाग माध्यमिक या उच्च शिक्षा पूरी कर चुका था।

इस जनगणना के विश्लेषण तथा इसी प्रकार की अन्य सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण से सोवियत सरकार के लिए यह सम्भव हो गया कि १०-१५ वर्षों की अवधि के लिए देश के आर्थिक विकास की दीर्घकालीन योजना की तैयारी का काम शुरू करे। इस उद्देश्य की दिशा में पहला क़दम १९३८-१९४२ की अवधि की एक पंचवर्षीय योजना थी। इस अवधि के भीतर औद्योगिक उत्पादन की दोगुनी, कृषि उत्पादन की डेढ़गुनी वृद्धि और सभी लोगों की भौतिक स्थिति में काफ़ी उन्नति करनी थी।

निर्धारित लक्ष्यांकों की पूर्ति का काम जटिल स्थिति में हुआ। चौथी दशाब्दी के अंत में देश के आर्थिक विकास के रास्ते की बाधाओं को दूर करने के लिए पूरा ज़ोर लगाने की ज़रूरत थी। कृषि की अपनी गम्भीर समस्याएं थीं जिन्हें हल करना था। ट्रैक्टरों तथा अन्य कृषि मशीनों का उत्पादन बहुत घट गया था। १९३३-१९३७ की अवधि में मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों को औसतन प्रति वर्ष ४८,५०० ट्रैक्टर दिये गये थे, मगर तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान यह आंकड़ा घटकर १४,००० रह गया था। खनिज खाद की पैदावार भी कम हो गई।

इसके कारण प्रत्यक्ष थे। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ चुका था और सैनिक आक्रमण के ख़तरे की वजह से यह ज़रूरी हो गया था कि लाल सेना

के लिए सामान के उत्पादन मे बहुत विस्तार किया जाये और देश की प्रतिरक्षा क्षमता को प्रबल किया जाये। उद्योग की अनेक शाखाओ और अलग-अलग उद्यमो का पुनर्गठन करना पडा तथा विशिष्टीकरण और सहकारिता की व्यवस्था को भग करना पडा और उन उद्यमो का उत्पादन सीमित करना पडा जिनमे अत्यावश्यक कच्चा माल और साज-सामान इस्तेमाल किया जाता था। उपलब्ध राज्य कोष सीमित था और इसके अलावा बहुत थोडे समय मे उसका पुन वितरण करना था। जो जनतत्र और प्रदेश १६३९ और १६४० मे सोवियत सघ मे शामिल हुए थे (देखिये पृष्ठ २७५), उनमे समाजवादी अर्थव्यवस्था का सघटन और समायोजन करने के लिए बडे पैमाने पर अतिरिक्त धनविनियोजन की जरूरत थी।

सरकार तथा कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति ने अनेक विशेष निर्णय किये जिनकी तामील ने औद्योगिक उत्पादन के विकास मे बडी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उद्योग मे प्रबध के स्वरूपो को समानुकूल बनाया गया। उदाहरण के लिए मशीन निर्माण उद्योग की काफी विस्तारित जन कमिसारियत को भारी, मध्यम तथा सामान्य मशीन निर्माण की तीन जन कमिसारियतो मे बाट दिया गया। इसी प्रकार भारी मशीन निर्माण उद्योग की जन कमिसारियत को कोयला, तेल, लौह धातु तथा रासायनिक आदि उद्योगा की अनेक अलग-अलग जन कमिसारियतो मे विभाजित कर दिया गया। निर्माण की एक ही अखिल सघीय जन कमिसारियत गठित की गई। वेतन प्रणाली की सुव्यवस्था से, खासकर भारी उद्योग मे, मेहनतकशो के विशाल समूह के लिए भौतिक प्रेरणा मे वृद्धि हुई। राज्य और ट्रेड-यूनियनो ने अग्रणी मजदूरो को प्रोत्साहन के रूप मे अवकाश गृहो तथा सेनेटोरियमो और बेहतर रिहाइशी मकानो आदि की व्यवस्था की।

१६३९ मे अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओ के बीच राष्ट्रव्यापी समाजवादी प्रतियोगिता ने फिर जोर पकडा। भौतिक प्रोत्साहन के साथ ही साथ विशेष लाल ध्वजाए, सम्मानसूचक बैज और प्रमान-पत्र, प्रशसा-पत्र, समाचारपत्रो मे लेख और चित्र, रेडियो कार्यक्रम, सम्मान फलक, पदको और विशेष रूप से स्थापित तमगो ("सम्मानित श्रम के लिए" तथा "श्रम वीरता के लिए") से भी लोगो के श्रम प्रयत्न को तेज करने मे सहायता मिली। १६३८ मे श्रम मे असाधारण सफलता प्राप्त करनेवालो के लिए

"समाजवादी श्रम वीर" की एक उच्चतम उपाधि जारी की गई। जिन लोगों को इस उपाधि से विभूषित किया गया उन्हें लेनिन पदक तथा स्वर्ण सितारा जिसपर हंसिया और हथौड़ा खुदा हुआ था, प्रदान किया गया।

देश के सर्वश्रेष्ठ मज़दूरों द्वारा प्रदर्शित पहलक़दमी का व्यापक प्रचार किया गया और शीघ्र ही उनका अनुसरण करनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गई। क्रिवोई रोग के ड्रिलर सेमिवोलोस ने जब एक के बजाय अठारह कोयला निकास स्थानों की सेवा करनी शुरू की तो देश भर के कोयला खदानों के मज़दूर तथा इंजीनियर उनका काम देखने के लिए आने लगे। हज़ारों खान मज़दूरों ने सेमिवोलोस का तरीक़ा अपना लिया। शीघ्र ही उनके कई शिष्य उनसे भी आगे निकल गये। रेलवे इंजन दलों ने अपने रोज़मर्रे की मरम्मत का काम स्वयं करना आरम्भ किया। इसका ख़्याल सबसे पहले नोवोसिबीर्स्क के इंजन ड्राइवर लूनिन को आया और रेलवे तथा देश के भीतरी जलमार्गों और समुद्री बेड़ों के हज़ारों श्रमिक दलों ने उनका अनुसरण किया।

१६४० में कृषि में राज्य द्वारा ख़रीदारी की एक नई व्यवस्था जारी की गई। उससे पहले तक सामूहिक फ़ार्मों द्वारा अनिवार्य सप्लाई की मात्रा का अन्दाज़ा बुवाई के क्षेत्रफल और मवेशियों की संख्या पर निर्भर था। अब कृषि पैदावार की सप्लाई की मात्रा सामूहिक फ़ार्म के पास कुल ज़मीन के क्षेत्रफल पर निर्भर थी। इससे अपनी ज़मीन के बेहतर इस्तेमाल तथा पशुपालन के विकास में सामूहिक फ़ार्मों को प्रोत्साहन मिला। कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की सिफ़ारिश पर जारी की गई कृषि उत्पादन तथा मवेशी की संख्या में वृद्धि के लिए अतिरिक्त अनुदानों और बोनसों की व्यवस्था के भी अच्छे परिणाम निकले। इन सभी कार्रवाइयों से सामूहिक फ़ार्मों को सुदृढ़ करने में सहायता मिली और सामूहिक किसानों की समृद्धि बढ़ी।

कृषि उत्पादन में राजकीय फ़ार्मों की भूमिका भी बराबर बढ़ती जा रही थी। १६४० में अनाज की राजकीय ख़रीदारी में उनका दसवां हिस्सा था, मांस में छठा हिस्सा और कपास में ६ प्रतिशत था।

१ अगस्त, १६३६ को मास्को में सोवियत संघ की कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया जिसने व्यापक पैमाने पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उसने सोवियत देश की कृषि व्यवस्था की बढ़ती हुई क्षमता को प्रदर्शित

किया और साथ ही उन्नत कार्य पद्धतियो के प्रचार केंद्र का काम भी दिया।

१९४० के आकडो ने सिद्ध कर दिया कि सोवियत अर्थव्यवस्था का और अधिक विस्तार हुआ है। उस एक साल मे कुल पैदावार म काफी वृद्धि हुई थी। खनिज लोहे और मैंगनीज़ की निकासी १९३९ की तुलना मे ३० लाख टन अधिक थी, कोयले की लगभग दो करोड टन और तल की लगभग २० लाख टन अधिक थी। कच्चे लोहे और इस्पात का पिघलाव तथा मशीन टूल उद्योग का उत्पादन भी तेजी से बढ रहा था। अनाज की कुल पैदावार दूसरी पचवर्षीय योजना के वर्षों से अधिक थी। १९३८ से १९४० तक राज्य द्वारा अनाज की सालाना खरीदारी लगभग ३ करोड ३० लाख टन थी जबकि १९३३ से १९३७ तक के वर्षों म २ करोड ७५ लाख टन थी। चुकन्दर, फ्लेक्स और आलू जैसी फसलो की पैदावार और सुपुर्दगी म भी बडी वृद्धि हुई। १९४० मे कपास की कुल पैदावार १९१३ की तुलना मे तिगुनी अधिक थी।

इस आर्थिक प्रगति का अटूट सबध जनता के सृजनात्मक कार्यकलाप के आम उभार से तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय सगठनात्मक और विचारधारात्मक काम से था। उन दिनो श्रमजीवियो की आम राजनीतिक शिक्षा का काम बहुत बडे पैमाने पर हो रहा था। लोग देश के राज-नीतिक जीवन को तथा अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र की घटनाओ को अच्छी तरह समझना चाहते थे और बोल्शेविक पार्टी की रणनीति और कार्यनीति मे बहुत दिलचस्पी ले रहे थे। इसमे उन्हे "अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का सक्षिप्त इतिहास" से बडी सहायता मिली, जिसका प्रकाशन १९३८ मे हुआ था। वह पुस्तक सुबोध ढग से लिखी गई थी और अगरचे उसमे स्तालिन के व्यक्तित्व पर बहुत जोर दिया गया था, फिर भी उस किताब ने श्रमजीवी जनता की देशभक्तिपूर्ण शिक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, उसने उन्हे समाजवादी विचारो की विजय के लिए सघर्ष करना सिखाया तथा अपने ध्येय मे उनकी आस्था को पक्का करने मे सहायता दी।

१९४०-१९४१ के शैक्षणिक वर्ष मे प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलो मे छात्रो की सख्या ३ करोड ५५ लाख तक पहुच गई। गैर-रूसी जातियो के बच्चो को मातृभाषा मे शिक्षा दी जाती थी। साथ ही १९३८ से सभी

जनतंत्रों में रूसी भाषा पढ़ाई जाने लगी। १९४० में सरकार ने सभी माध्यमिक स्कूलों में विदेशी भाषाओं की अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी। सोवियत संघ में सफल शैक्षणिक कार्य की बदौलत ग्रामीण इलाकों में अनिवार्य ७ वर्षीय स्कूली शिक्षा तथा शहरों में १० वर्षीय स्कूली शिक्षा को लागू करने के सवाल पर विचार करना सम्भव हुआ।

उच्च शिक्षा तथा विशेषज्ञों के प्रशिक्षण में भी नई सफलताएं प्राप्त हुईं। युद्धपूर्व के तीन वर्षों में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या में ११७ की वृद्धि हुई। १९४१ में ८१७ उच्च शिक्षा संस्थान और विश्वविद्यालय थे जिनमें छात्रों की कुल संख्या ८ लाख १२ हजार थी। इनके अलावा लगभग १० लाख छात्र विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। १९४१ के प्रारंभ में कुल ९ लाख ८ हजार उच्च शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञ सोवियत संघ में काम कर रहे थे। इनमें २९० हजार इंजीनियर, ७० हजार कृषिविद, मवेशीविद तथा सलोतरी, १ लाख ४१ हजार डाक्टर, (दांत चिकित्सकों को छोड़कर) ३ लाख शिक्षक, लाइब्रेरियन तथा सांस्कृतिक क्षेत्र के अन्य कर्मी शामिल हैं। उस जमाने में भी सोवियत संघ में संयुक्त राज्य अमरीका से अधिक उच्च शिक्षाप्राप्त इंजीनियर थे।

सोवियत विज्ञान भी तेजी से उन्नति कर रहा था। युद्ध से ठीक पहले के वर्षों में सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी की संस्थाओं में कार्यकर्ताओं की कुल संख्या ४,७०० थी। विज्ञान अकादमी की शाखाएं ट्रांस-काकेशिया, कजाखस्तान और उराल में पहले से ही काम कर रही थीं, और नई शाखाएं उज्बेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान में खुलीं। सोवियत संघ तथा विदेशों के मुख्यतम वैज्ञानिक केंद्रों के जैसे नये वैज्ञानिक केंद्र उन जनतंत्रों में स्थापित किये गये जहां अभी कल तक पढ़े-लिखे लोगों की संख्या नगण्य थी। इन सभी संस्थानों ने वैज्ञानिक विचारों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा उद्योग और कृषि में सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारों के व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित किया। उन्होंने देश की प्राकृतिक सम्पदा की खोज की, उनके इस्तेमाल के नये तरीके निकाले, तथा नये खोजकर्ताओं को प्रशिक्षित किया।

निस्सन्देह, युद्धपूर्व वर्षों की कठिनाइयों के कारण सांस्कृतिक तथा प्रशिक्षण कार्य की आम प्रगति में बाधा पड़ी। फिर भी काफ़ी महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त हुईं। यह कहना काफ़ी होगा कि १९३८ और १९४१ के

बाद सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या लगभग दोगुनी हो गई और सबक् क्लिन ग्रामक्लबों की संख्या लगभग चौगुनी हो गई। १६४० में ८,८०६ विभिन्न समाचारपत्र प्रकाशित होते थे, जिनकी दैनिक बिक्री की प्रति-संख्या ३ करोड़ ३८ लाख थी, और १८२२ पत्रिकाएं जिनकी बिक्री प्रतियों की कुल संख्या २८ करोड़ ५० लाख से अधिक थी। देश में ५० लाख से अधिक लाउडस्पीकर और लगभग १० लाख रेडियो सेट थे। एक टेलीविजन व्यवस्था कायम करने का काम शुरू कर दिया गया था।

प्रोकोफ़ियेव, शोस्ताकोविच, कबलेव्स्की और खाचातूरियन के संगीत को उस समय तक व्यापक ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। दुनायेव्स्की के गीत देश भर में गूंज रहे थे। उस समय के सबसे जनप्रिय लेखक थे गोर्की, अलेक्सेई तोल्स्तोय, फ़देयेव, शोलोख़ोव, फ़ूर्मानोव, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की और गैदार। उनकी कृतियों का अनुवाद सोवियत संघ में बसी दर्जनों जातियों की भाषाओं में हो चुका था। कवि सीमोनोव और त्वार्दोव्स्की की ख्याति दूर-दूर तक पहुंच गई थी और सोवियत पियानोवादक गीलेल्स और फ़्लिएर ब्रसेल्स तथा वियना की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे। लाल सेना की गीत-नृत्य मण्डली के प्रदर्शन सोवियत संघ में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी बहुत सफल हुए थे।

यह सांस्कृतिक प्रगति देश की आम आर्थिक उपलब्धियों का प्रतिबिंब थी। तीसरी पंचवर्षीय योजना सफलतापूर्वक पूरी की जा रही थी। १६४१ के मध्य तक ३,००० से अधिक बड़े औद्योगिक उद्यम चालू हो चुके थे। यह कह देना आवश्यक है कि ये सफलताएं ऐसे समय प्राप्त की जा रही थीं जबकि दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ चुका था और प्रतिरक्षात्मक कार्रवाइयां अधिकाधिक जोर पकड़ रही थीं।

सोवियत संघ में नये जनतंत्रों और प्रदेशों का शामिल होना

१ सितम्बर, १६३६ को प्रातःकाल नाज़ी जर्मनी की फ़ौजों ने पोलैंड पर धावा बोल दिया। उस समय पश्चिमी उक्राइना और पश्चिमी बेलोरूस जिन्हें १६२० में बलपूर्वक सोवियत संघ से अलग कर लिया गया था, पोलैंड का भाग थे। उस स्थिति में उन प्रदेशों के लोग जो पहले ही पोलिश पूंजीपतियों और ज़मींदारों के अत्याचार का शिकार रह चुके थे,

अब नाज़ी जर्मनी की फ़ासिस्ट शासन व्यवस्था के अधीन हो जाते। सोवियत संघ के श्रमजीवियों के लिए यह नामुमकिन था कि पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरुस के अपने भाइयों को इस नसीबे से मुक्ति दिलाने के बजाय हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। सोवियत संघ ने पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरुस को अविलंब मुक्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझा।

१७ सितम्बर, १९३९ को सोवियत सेनाएं उन प्रदेशों में दाख़िल हुईं और जनगण ने लाल सेना का भव्य स्वागत किया। नव स्वाधीन शहरों और गांवों का जीवन सोवियत जनतंत्र में १९१७ की क्रांति के बाद के प्रथम महीनों के जीवन की याद दिला रहा था। शहरों में श्रमिक गार्ड, गांवों में किसान मिलीशिया तथा कारख़ानों में मज़दूर नियंत्रण समितियां स्थापित की गयीं। पुराने ज़मींदारों और चर्च की जागीरों का वितरण किया जाने लगा। जो परिवार झोंपड़ियों और तहख़ानों में रहा करते थे, पुराने शोषकों के मकानों में लाकर बसाये गये।

हर नागरिक को शासन व्यवस्था के बारे में अपनी राय प्रकट करने का अवसर दिया गया। अक्तूबर में पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरुस की लोक सभाओं के लिए चुनाव किये गये। ९० प्रतिशत से अधिक मतदाताओं ने उन उम्मीदवारों के लिए वोट दिया जो पूंजीपतियों और ज़मींदारों के शासन का उन्मूलन तथा सोवियत सत्ता की स्थापना की मांग कर रहे थे। नव निर्वाचित लोक सभाओं ने बैंकों और बड़े कारख़ानों का राष्ट्रीयकरण करने, बड़े ज़मींदारों और मठों की ज़मीनों को ज़ब्त करने तथा समस्त भूमि को राज्य की सम्पत्ति बनाने का निश्चय किया। सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ में शामिल होने की व्यापक श्रमजीवी जनता की इच्छा प्रकट करने के लिए विशेष प्रतिनिधिमण्डल मास्को भेजे गये।

१ और २ नवम्बर, १९३९ को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के एक विशेष अधिवेशन में नये प्रदेशों को सोवियत संघ में शामिल कर लिया गया। बलपूर्वक अलग की गई जातियों का पुनर्मिलन हो गया। १ करोड़ २० लाख से अधिक लोग जिनमें ६० लाख उक्रइनी और कोई ३० लाख बेलोरुसी थे, सोवियत नागरिक बन गये।

उसी समय सोवियत संघ की पहलक़दमी पर एक ओर एस्तोनिया,

लाटविया और लियुआनिया की सरकारो और दूसरी ओर सोवियत सघ की सरकार के बीच पारस्परिक सहायता सधिया सम्पन्न हुई। दोनो पक्षो ने यह सकल्प किया कि दूसरे पक्ष के किसी विरोधी गुट म शामिल नही होगे और किसी यूरोपीय शक्ति द्वारा उनम से किसी पर भी आक्रमण होने पर दूसरा पक्ष उसकी मदद को आयेगा। बाल्टिक क्षेत्र पर सोवियत सैनिक अड्डे क़ायम किये गये जिससे सोवियत सघ की रण कौशल सबधि स्थिति मे प्रत्यक्ष सुधार हुआ।

उस समय बाल्टिक देशो के श्रमजीवी लोगो की आर्थिक स्थिति कोई सतोषजनक नही थी। बेरोजगारी बढ़ रही थी और छोटे किसानो की जमीन का नीलाम होना आये दिन की बात थी। लाटविया, लियुआनिया और एस्तोनिया की प्रतिक्रियावादी सरकारो द्वारा अपनाई गई घरेलू और वैदेशिक नीति के विरुद्ध श्रमजीवी जनता के असतोष के कारण १९४० के वसत मे बहुत तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई थी। ये सरकारे हिटलर के आगे झुकने के लिए तत्पर थी। बाल्टिक देशो की श्रमजीवी जनता के क्रातिकारी आन्दोलन ने इन सरकारो का तख्ता उलटने का बीडा उठाया। वहा एक जन फासिस्ट-विरोधी मोर्चा कायम किया गया। श्रमजीवियो ने जन मोर्चे की सरकार की स्थापना की माग के समर्थन मे व्यापक हड़ताले तथा राजनीतिक प्रदर्शन सगठित किये।

इस बीच फासिस्ट गुट भी चुप नही बैठे थे। वे सत्ता पर कब्जा करने तथा जनवादी सगठनो से बदला लेने की तैयारी कर रहे थे। यह मालूम हुआ कि फासिस्ट तत्व जर्मनी से यह अनुरोध करनेवाले है कि वह अपनी सेनाए लाटविया, लियुआनिया और एस्तोनिया म ले आये। सोवियत सघ पर हमला करने के लिए नाजियो के हमले के अड्डे मे यह विस्तार सोवियत सरकार बर्दाश्त नही कर सकती थी। उसने तीनो बाल्टिक राज्यो की सरकारो से फासिस्ट प्रवृत्तिवाले तत्वो को निकाल बाहर करने की माग की। साथ ही उन देशो मे स्थित लाल सेना के दस्तो को और बढाने का सवाल उठ खडा हुआ।

श्रमजीवी जनता की सक्रिय कार्रवाइयो के लिए अनुकूल स्थिति उत्पन्न हुई। लियुआनिया, लाटविया और एस्तोनिया मे जन असतोष की एक महान लहर ने क्रमश १६, २० और २१ जून को फासिस्ट प्रवृत्तिवाली तानाशाही का सफ़ाया कर दिया।

वह घड़ी जब जनता ने अपनी क़िस्मत स्वयं अपने हाथों में ली मुख्यत: तीनों देशों में समान थी: मेहनतकश लोगों के विशाल प्रदर्शन हुए, पुलिस को निशस्त्र कर दिया गया और राजनीतिक बन्दी रिहा कर दिये गये। वह समाजवादी क्रांति थी। एक महीने बाद बाल्टिक देशों में संसदीय चुनाव हुए। मतदाता अभूतपूर्व संख्या में आये और उनके विशाल बहुमत ने श्रमजीवियों के उम्मीदवारों – मजदूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधियों के लिए वोट दिये। नवनिर्वाचित संसदों ने तीनों जनतन्त्रों में सोवियत सत्ता की पुन:स्थापना की घोषणा की। अगस्त १९४० के प्रारंभ में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत ने लिथुआनिया, लाटविया और एस्तोनिया को उनकी सरकारों के निवेदन पर समानाधिकारप्राप्त जनतंत्रों की हैसियत से सोवियत संघ में शामिल किया। सोवियत राज्यचिह्न की फ़ीतियों में, जिनमें सुनहरी बालियों की माला लिपटी हुई है, चार और फ़ीतियों की वृद्धि हुई। इनमें से प्रत्येक पर संघीय जनतन्त्रों की जातीय भाषाओं में "दुनिया के मजदूरो, एक हो!" लिखा हुआ है। उनमें से तीन बाल्टिक जनतंत्रों के प्रतीक थे और चौथे पर मोल्दावियाई भाषा में लिखा था। मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र का जन्म इस प्रकार हुआ। रूमानियाई राजतंत्र ने जो सोवियत संघ की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर स्थित था, सोवियत संघ के प्रति स्पष्ट रूप से शत्रुतापूर्ण रुख़ अपनाया। दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू की घटनाओं से जाहिर हुआ कि रूमानिया जर्मनी की आक्रामक नीति में खींचा जा रहा था। सोवियत सरकार ने अपनी दक्षिणी सीमाओं की सुरक्षा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से रूमानिया की सरकार के सामने यह सुझाव रखा कि वह सोवियत संघ को बेसाराबिया लौटा दे जिसे १९१८ में ही सोवियत देश से जबर्दस्ती हड़प लिया गया था, और साथ ही उत्तरी बुकोवीना भी हवाले कर दे जहां मुख्यतया उक्रइनी बसे हुए हैं। यह मांग स्वीकार कर ली गई और मोल्दावियाई तथा उक्रइनी जातियों को सोवियत संघ के भीतर पुन: एकताबद्ध होने का अवसर मिल गया।

१९४० में फ़िनलैंड के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद करेली स्थलडमरूमध्य तथा कुछ और इलाक़े फ़िनलैंड से सोवियत संघ को मिल गये। इन्हें करेली स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतंत्र में शामिल कर लिया गया जो बाद में करेली-फ़िनिश सोवियत समाजवादी जनतंत्र बना।

इन कार्रवाइयो के फलस्वरूप सोवियत सघ की पश्चिमी सीमाए काफी दूर बढा दी गई थी। नये इलाको मे भौतिक तथा सास्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे समाजवादी परिवर्तन जारी किये गये। जाहिर है इसके लिए अतिरिक्त धन राशि की जरूरत थी जिसे राज्य ने पूरा किया। पश्चिमी बेलोरूस तथा पश्चिमी उक्रइना मे प्रथम सामूहिक फार्म १६३६ की पतझड मे कायम किये गये, और फिर १६४० मे राजकीय फार्म और मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन स्थापित किये गये। राष्ट्रीयकृत कारखानो, तेल क्षेत्रो और कोयला खानो की उत्पादन क्षमता शीघ्र ही बढ रही थी। नि शुल्क चिकित्सा सेवा लागू करना, स्कूलो तथा सास्कृतिक-शैक्षणिक सस्थाओ का तेजी से विकास और निरक्षरता उन्मूलन अभियान इन सभी इलाको के लिए महत्वपूर्ण कार्रवाइया थी। विमुक्त इलाको मे राजकीय समाजवादी उद्योग के साथ ही साथ सहकारी उत्पादन की व्यवस्था भी जारी की गई – दस्तकारो तथा कारीगरो को बडी सख्या मे उत्पादन आर्टेलो मे सगठित होने का मौका मिल गया। उस समय तक एक पूजीवादी क्षेत्र भी कायम था जिसमे मुख्यत छोटे दस्तकारी कारखाने थे। कुल उत्पादन मे उसका कोई महत्वपूर्ण स्थान नही था। भूतपूर्व शोषक वर्गों के बाकी रह गये तत्वो ने कई बार तोड-फोड की तथा सोवियत-विरोधी कार्रवाइया करने का प्रयास किया, मगर इनका आम घटनाक्रम पर कोई खास असर नही पडा। इन नये सोवियत जनतत्रो और प्रदेशो मे श्रमजीवी जनता पूरे देश के आर्थिक, सास्कृतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन मे अधिकाधिक सक्रिय तथा चेतन भाग लेने लगी। कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड-यूनियनो तथा कोम्सोमोल सदस्यो की सख्या मे तेजी से वृद्धि हुई। मजदूरो, किसानो तथा जनवादी बुद्धिजीवियो का जीवन स्तर काफी ऊचा हुआ। हर जगह मजदूरी बढ़ाई गई, औरतो के लिए मजदूरी की समान दर जारी की गई, सामाजिक बीमे की राजकीय व्यवस्था की गई, किराया काफी घटा दिया गया। समाजवादी प्रतियोगिता, जिसने देश मे अक्तूबर क्राति के कोई बारह बरस बाद ही एक व्यापक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया था, इन क्षेत्रो मे १६४०–१६४१ में ही तेजी से जड पकडने लगी।

समाजवादी परिवर्तनो का जारी करना कोई आसान काम नही था। नये जनतत्रो तथा प्रदेशो के श्रमजीवी बरसो से पूजीवादी-जमीदाराना शासन व्यवस्था के अतर्गत रहते और काम करते चले आ रहे थे, जहा प्रचड

राष्ट्रीयतावाद और धार्मिक प्रचार का वातावरण छाया हुआ था। उन्हें बेरोजगारी, कृषि अतिजनसंख्या और सभी जनवादी आन्दोलनों के समर्थकों को पुलिस दमन का सामना करना पड़ता था। अतीत की सारी भयंकर विरासत को थोड़े ही समय में जड़ से उखाड़ फेंकना असम्भव था। बहुत ध्यानपूर्वक, सावधानी से काम करने की ज़रूरत थी। यह काम इसलिए और भी कठिन हो गया था कि युद्ध की तूफ़ानी घटाएं क्षितिज पर छाती जा रही थीं।

प्रतिरक्षा की तैयारियां

१९३८ में जब तीसरी पंचवर्षीय योजना पर काम शुरू हुआ तो कोई भी यह कह नहीं सकता था कि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध को छिड़ने में केवल तीन वर्ष रह गये हैं। नई पंचवर्षीय योजना पूर्णतः शान्तिकालीन रचनात्मक श्रम की ओर दिशामान थी। परन्तु फ़ासिस्ट जर्मनी की आक्रामक कार्रवाइयों ने, जिनके कारण दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया था, सोवियत सरकार को देश के आर्थिक विकास के मार्ग में भारी परिवर्तन करने पर मजबूर कर दिया। जापानी सैन्यवादियों द्वारा सोवियत संघ के सुदूर पूर्व में हसन झील के पास १९३८ में तथा ख़ाल्खिन-गोल नदी के तटवर्ती क्षेत्र में १९३९ में जो छेड़-छाड़ की गई थी, तथा १९३९ के अंत तथा १९४० के प्रारंभ में फ़िनलैंड से जो सशस्त्र मुठभेड़ हुई, उनसे यह साबित हो गया था कि लाल सेना तथा सुरक्षा उद्योग को सुदृढ़ करने और देश में युद्ध आधार का निर्माण करने के काम पर अधिक ध्यान देना ज़रूरी है। जो निधि शांतिकालीन निर्माण-कार्य के लिए निर्धारित की गई थी, उसे दूसरे काम में लगाना पड़ा। १९३८ में सुरक्षा व्यय २३ अरब रूबल, यानी राजकीय बजट के व्यय हिस्से का १८.७ प्रतिशत था। दो ही साल बाद यह रक़म बढ़कर ५७ अरब रूबल, अथवा राज्य व्यय के एक तिहाई तक पहुंच गयी थी। पूरे औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि की औसत सालाना दर १३ प्रतिशत थी मगर सुरक्षा उद्योग का उत्पादन इससे तिगुनी रफ़्तार से बढ़ रहा था। सुरक्षा उद्योग की जन कमिसारियत को विमानन, जहाज़ निर्माण, शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद की चार अलग जन कमिसारियतों में बांट दिया गया।

खासकर युद्धकालीन जरूरतो को पूरा करने के लिए उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व मे नये कारखाने स्थापित किये गये। अनेक उद्यम जो पहले ग़ैर-फौजी सामान तैयार करते थे अब पूर्णत या आशिक तौर पर फौजी साज-सामान तैयार करने लगे। अनेक मोटर कारखाने विमान इजन बनाने लगे। कई ट्रैक्टर बनानेवाले कारखाने टैको को तैयार करने लगे। देश के जहाज निर्माण कारखानो ने तिजारती जहाजो के बजाय युद्धपोत बनाना शुरू किया। चौथी दशाब्दी के अत मे देहातो को पहले से कम कृषि मशीनें मिलने लगी। फुटकर बिक्री के लिए घडियो, रेडियो सेट, बाइसिकिल, सिलाई मशीन और कैमरे का उत्पादन बहुत कम कर दिया गया। आरोप लगाया जाने लगा कि देश मे धातु नही है और कई प्रकार के कच्चे माल और साज-सामान की कमी पड गई है। मगर असल मे यह सब लाल सेना को तेजी से सुसज्जित करने और उसकी जुझारू ताक़त बढाने के लिए सामान इकट्ठा करने का नतीजा था।

१६३६ के प्रारम्भ मे सोवियत सघ की सरकार ने नये लडाकू विमानो, बममारो तथा आक्रामक विमानो के डिजाइन और उत्पादन के काम को तेज करने के उपायो पर विचार करने के लिए एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया। उसी वर्ष डिजाइनर इल्यूशिन ने टैको और थल सेना के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए इल-२ बख्तरबन्द आक्रामक विमान तैयार किया। यह नया विमान विश्व विमान डिजाइनकारी की एक प्रमुख उपलब्धि थी। इल-२ ४००—६०० किलोग्राम वजन के बम ले जा सकता था। इसमे दो तोपें, दो मशीनगन और ४–८ मिसाइल यूनिटें थीं। अकारण ही नही नाजियो ने इस विमान को "काली मौत" का नाम दिया।

१६४० के प्रारम्भ मे डिजाइनर याकोव्लेव द्वारा निर्मित नये याक लडाकू विमान सेना को सुपुर्द कर दिये गये। बाद मे, युद्ध के दौरान जब फ्रासीसी विमान चालको को, जो "नार्मांडी-नेमन" स्क्वाड्रन मे सोवियत विमान चालको के साथ-साथ युद्ध मे भाग ले चुके थे, अमरीकी, ब्रिटिश या सोवियत विमानो मे से किसी एक को चुनने को कहा जाता, तो वे सब निरपवाद याकोव्लेव का विमान चुनते।

सोवियत त-३४ टैक ने भी ऐसी ही ख्याति पायी। इस मशीन के पहले दो नमूने १६४० के प्रारम्भ मे आये। इस टैक की विशेषता यह थी कि वह शक्तिशाली बख्तरवाला, सुगठित, नीचा और फुर्तीला था।

दुश्मन युद्ध के वर्षों में भी इस तरह की कोई मशीन बनाने में सफल नहीं हो सका। जर्मन जनरलों ने स्वीकार किया कि रूसी त-३४ के नमूने का टैंक बनाने के प्रयास असफल रहे।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध शुरू होने से चौबीस घंटे से भी कम समय पहले पार्टी तथा सरकार के नेताओं ने उस अभूतपूर्व हथियार की जांच की जिसे आगे चलकर सोवियत सैनिक प्यार से "कात्यूशा"* कहा करते थे। संसार ने इससे पहले इस तरह का हथियार कभी नहीं देखा था। मिसाइल प्रक्षेपकों को तैयार करने का काम कई साल तक पहले से चल रहा था। सोवियत लड़ाकू विमानों द्वारा इस्तेमाल किये गये प्रथम मिसाइल ने ख़ाल्खिन-गोल की लड़ाइयों में अपनी श्रेष्ठता साबित की। बाद में इन मिसाइल यूनिटों को लारियों पर लगाया गया और उनपर भी ये बहुत कारगर साबित हुए।

राइफ़लों के डिज़ाइन पर, आधुनिकतम तोपों के आविष्कार तथा नौसेना के निर्माण पर भी काफ़ी ध्यान दिया गया। १९३७ में ही एक विशाल जलपोत निर्माण कार्यक्रम शुरू कर दिया गया था। सबसे पहला स्थान बड़े जहाजों जैसे भारी युद्धपोतों और क्रूज़रों को दिया गया था। जहाज़ निर्माण में तीन से पांच साल का समय लग जाता था और फिर ख़र्च बहुत पड़ता था, इसलिए १९४० की वसंत में इस कार्यक्रम में परिवर्तन किये गये। स्थल सेनाओं के लिए शस्त्रास्त्र के उत्पादन में तेजी से विस्तार किया गया जिसके लिए धातु की जरूरत बराबर बढ़ती गई। भारी युद्धपोतों तथा क्रूज़रों का निर्माण रोक दिया गया, लेकिन पनडुब्बियों, विध्वंसक पोतों, सुरंग ट्रेलर पोतों और टारपीडो बोटों का निर्माण तेज़ी से चल रहा था। १९४० में ही इस प्रकार के एक सौ से अधिक जहाज़ उतारे गये और अन्य २६९ का निर्माण कार्य जारी था। १९४१ तक सोवियत संघ के पास कुल मिलाकर लगभग ६०० लड़ाकू जहाज थे जिनमें १० भारी युद्धपोत और क्रूज़र, ५९ विध्वंसक पोत और २१८ पनडुब्बियां शामिल थीं।

सोवियत सैनिक वैज्ञानिकों ने अपनी योजनाओं का आधार इस मान्यता पर रखा था कि अगला युद्ध इंजनों का, यंत्रसज्जित सेनाओं का युद्ध होगा। लेकिन निस्सन्देह आदमियों के बिना मशीन बेकार है। और दूसरी

---

*औरतों के रूसी नाम कात्या का प्यारभरा लघु रूप।

ग्रोर अगर हथियारो का प्रयोग अनुभव के आधार पर ... के ...
किया जाये तो वे अधिक कारगर हो जाते हैं। इसी लिए कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने सेनाओ के प्रशिक्षण पर, युद्ध क्षमता और राजनीतिक चेतना पर बराबर जोर दिया। बिगडती हुई अतर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण सोवियत सघ को मजबूरन अपनी सैन्य शक्तियो मे वृद्धि करनी पड़ी। जनवरी १९३९ और जून १९४१ के बीच इनमे ढाई गुना वृद्धि हुई। कुल मिलाकर वे ५० लाख हो गई थी।

१९३९ की पतझड मे एक सार्विक सैनिक सेवा कानून जारी किया गया जिसमे सैनिक सेवा के लिए बुलावे की आयु १९ वर्ष निश्चित की गई थी, सैनिक सेवा की अवधि बढा दी गई थी तथा सैनिक रजिस्टरी और भर्ती से पहले प्रशिक्षण व्यवस्था को बेहतर बनाया गया था।

सेना के लिए कुमक जुटाने का काम हो रहा था। अग्रणी मजदूरो, सबसे अच्छे छात्रो, सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओ को कोम्सोमोल द्वारा सैनिक स्कूलो मे विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। और यह एक साधारण सा कायदा बन गया कि नौजवान लोग काम का दिन समाप्त होने पर अपनी फैक्टरियो मे निशानाबाजी सीखें, मशीनगन चलाने का दो महीने का प्रशिक्षण या नर्स का प्रशिक्षण हासिल करे। लडके-लड़कियो के लिए गैतेओ का बैज प्राप्त करना सम्मान की बात थी। ये अक्षर उन रूसी शब्दो के सूचक है जिनका अर्थ है श्रम तथा प्रतिरक्षा के लिए तैयार। इससे यह विदित होता कि उन्होंने अनेक विशेष अभ्यास पूरे किये है जिनसे उनकी ताकत, फुर्ती और सहन शक्ति का पता चलता है।

विशेष मडलिया जहा स्कूली छात्रो और बालिग्रो को रासायनिक हथियारो से बचाव के उपाय तथा हवाई हमलो से प्रतिरक्षा के तरीके सिखाये जाते थे बहुत लोकप्रिय थी। विशेष रूप से प्रसिद्ध हवाई क्लबो मे हर साल कई हजार हवाबाजो को प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रसिद्ध विमान चालक इवान कोजेदूब ने भी, जिन्हे सोवियत सघ के वीर के तीन स्वर्ण सितारे प्रदान किये गये, पहले पहल ऐसे ही एक हवाई क्लब मे उडना सीखा।

लाल सेना का सम्मान और उसपर गौरव की भावना तथा अपनी मातृभूमि की रक्षा के देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य की चेतना सोवियत लोगो मे

स्कूली वर्षों से ही जगाई जाती थी। युद्धपूर्व काल में जो पीढ़ी पलकर बड़ी हुई, उसके दिलों में एक पुस्तक का विशेष स्थान था और वह थी गृहयुद्ध के वीर निकोलाई ओस्त्रोव्स्की का उपन्यास "अग्नि-दीक्षा" और उसकी जनप्रिय फ़िल्म "चापायेव" थी। उन दिनों के एक बहुत जनप्रिय गाने की कुछ पंक्तियां ये हैं: "हम शांतिप्रिय लोग हैं, मगर हमारी बख़्तरबन्द रेलगाड़ी तैयार खड़ी है।" युद्ध के ठीक पहले सेनानायक सुवोरोव, बोग्दान ख़्मेल्नीत्स्की तथा गृहयुद्ध वीर श्चोर्स के बारे में फ़िल्में और क्रांतिकारी मजदूर मक्सिम से संबंधित प्रसिद्ध त्रिकांड फ़िल्म माला दिखाई गई। शोलोख़ोव ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास "धीरे बहे दोन रे" तथा अलेक्सेई तोलस्तोय ने अपना "अग्नि-परीक्षा" पूरा किया। इसी समय क्रांति के पारख़ोमेन्को और कोचुबेई जैसे प्रसिद्ध वीरों के बारे में भी उपन्यास प्रकाशित हुए।

पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, सिनेमा और साहित्य सभी का प्रयत्न सोवियत देशभक्ति की भावना तथा फ़ासिज़्म के प्रति घृणा की भावना पैदा करना था।

देश की प्रतिरक्षा क्षमता में वृद्धि करने के उद्देश्य से जो जोरदार कार्य किया जा रहा था, उसकी राह में अनेक कठिनाइयां थीं। चालू कारख़ानों का पुनर्निर्माण और नये कारख़ानों का निर्माण करने के संबंध में सरकार की विज्ञप्ति को पूरा करना सम्भव साबित नहीं हुआ। आधुनिकतम विमानों, टैंकों, टैंकमार तथा स्वचालित शस्त्रों तथा कुछ प्रकार की तोपों के बड़े पैमाने पर उत्पादन का काम बहुत धीरे-धीरे हो रहा था। आर्मर्ड, मोटरचालित तथा छतरीबाज सैनिक दस्तों के निर्माण का कार्य अभी शुरू ही हुआ था।

युद्ध के ठीक पहले की स्थिति के कारण सोवियत जनगण के जीवन में तथा देश की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ़ करने की नीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन करने पड़े। बहुतेरी ग़लतियों को सुधारा गया और सीमावर्ती इलाक़ों में मुठभेड़ों को रोकने, और सम्भव हमले को टालने के लिए भरसक सब कुछ किया गया। चालू काम को पूरा करने, विद्यमान त्रुटियों को दूर करने तथा शक्ति और साधनों को जुटाने के लिए समय दरकार था। इस दौरान देश की आम नीति—शान्ति के लिए संघर्ष के साथ ही प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ़ करना था। जब असाधारण कार्रवाइयों की जरूरत

पडी तो लोगो ने पार्टी और सरकार के निश्चयो को समझबूझ के साथ स्वीकार किया।

१९४० की गर्मियो मे सोवियत सघ मे कार्य दिवस सात से बढाकर आठ घटे कर दिया गया और छ दिन के बजाय सात दिन का सप्ताह जारी किया गया (पहले हर महीने की ६, १२, १८, २४ तथा ३० तारीख छुट्टी का दिन होती थी)। इसका मतलब यह था कि मजदूर तथा दफ्तरी कर्मचारी महीने मे ३३ अतिरिक्त घटे, या महीने मे चार अतिरिक्त दिन, और साल मे डेढ महीने से ज्यादा अतिरिक्त काम किया करते थे। देश की औद्योगिक क्षमता को सुदृढ करने मे श्रमजीवी जनता का यह काफी बडा योगदान था। इस योगदान का मतलब था उद्योग मे ही लगभग १० लाख मजदूरो की वृद्धि।

वेतन मे कोई तबदीली नही हुई। श्रमजीवी जनता के नाम एक अपील मे ट्रेड-यूनियन नेताओ ने घोषणा की कि "राष्ट्र की प्रतिरक्षा क्षमता को और भी सुदृढ करने के लिए सोवियत सघ के मजदूर वर्ग को अनिवार्य कुर्बानिया करनी पडेंगी।' श्रमजीवियो ने अनेक जन सभाओ मे पार्टी तथा सरकार के इन फैसलो का सहर्ष अनुमोदन किया।

उसी वर्ष पतझड मे राजकीय श्रम रिजर्व के निर्माण का फैसला किया गया। व्यावसायिक स्कूलो तथा फैक्टरी प्रशिक्षण केद्रो की कुल व्यवस्था के जरिए नौजवान मजदूरो को प्रशिक्षित करने के लिए एक विशेष अभियान राष्ट्रव्यापी पैमाने पर सगठित किया गया।

१९४० मे ही सरकार ने एक आज्ञप्ति जारी करके मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो के काम बदलने पर प्रतिबध लगा दिया। बिना आज्ञा अनुपस्थिति के लिए कडी सजा रखी गई। थोडे ही दिनो बाद जन कमिसारो को इजीनियरो तथा दक्षताप्राप्त मजदूरो को उनकी पसन्द-नापसन्द पर ध्यान दिये बिना देश के किसी भी भाग मे किसी भी उद्यम मे बदली करके भेजने का अधिकार दिया गया। ये कडी, कठोर कार्रवाइया थी और सोवियत सत्ता के दुश्मनो ने अक्सर उनके असली महत्व को तोड-मरोडकर पेश करने मे कोई कसर उठा नही रखी। लेकिन सोवियत लोग इन कार्रवाइयो के असली कारणो से भली भाति परिचित थे। सोवियत राज्य की आजादी कायम रखने, देश के प्रतिरक्षार्थ बलिदान देने तथा पूजीवादी घेरे मे ही नही, बल्कि युद्ध के खतरे की स्थिति मे एक नये समाज का

निर्माण करने का सवाल था। क्रियाशीलता, अनुशासन और रोज़मर्रे के कार्यभारों के प्रति जिम्मेदारी सर्वत्र देखने में आती थी।

१९४० में जब फ़ासिस्टों का आक्रमण कोई छः मास दूर रह गया था, आर्थिक विकास के क्षेत्र में उपलब्धियों का खुलासा इस प्रकार था: कच्चे लोहे का उत्पादन—लगभग १ करोड़ ५० लाख टन; इस्पात—१ करोड़ ८३ लाख टन; तेल—३ करोड़ १० लाख टन से अधिक और कोयला लगभग १७ करोड़ टन। यह बात उल्लेखनीय है कि इस्पात, रालिंड स्टाक तथा कोयले की पैदावार का एक तिहाई भाग सोवियत संघ के पूर्वी क्षेत्रों से आया था। वोल्गा क्षेत्र और उराल में तेल के उत्पादन में काफ़ी वृद्धि हुई थी। मध्य एशिया, क़ज़ाख़स्तान, साइबेरिया और सुदूर पूर्व की आर्थिक क्षमता बड़ी तेजी से बढ़ रही थी। कृषि में उन्नति के कारण रई, गेहूं, जई, आटा तथा अन्य कृषि पदार्थों का राजकीय संचय करना सम्भव हुआ।

५ जून, १९४१ को कालीनिन ने अत्यंत अर्थपूर्ण शब्द कहे: "हम नहीं जानते कि कब हमें लड़ना पड़ेगा—कल या परसों। ऐसी स्थिति में आज ही तैयार रहना जरूरी है।" लेकिन प्रतिरक्षा की तैयारियों को पूरा करना सम्भव नहीं हुआ। युद्ध की आग सोवियत भूमि पर ऐसे समय फैल गई जबकि देश अभी फ़ासिस्टों का मुक़ाबला करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हुआ था। परन्तु मुख्य कार्यभार पूरा हो चुका था—पार्टी तथा जनता ने समाजवाद का निर्माण पूरा कर लिया था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के प्रारंभ में यही सोवियत संघ की निर्णयकारी श्रेष्ठता थी।

नवां अध्याय

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध
१६४१-१६४५

युद्ध के प्रारम्भिक महीने

२२ जून, १६४१ की तिथि ऐसी है, जिसको सोवियत जनगण अपने देश के इतिहास के एक मोड-बिन्दु के रूप मे हमेशा याद रखेगे।

उस दिन प्रात काल नाजी जर्मनी की सेनाओ ने अनाक्रमण सधि का उल्लघन करके सोवियत सीमा पार की और सोवियत देश पर हमला कर दिया। यह एक कठोर युद्ध की शुरूआत थी, जिसने समस्त जनगण के जीवन को बदल दिया, उनसे माग की कि अपने प्रयत्नो मे कोई कसर उठा नही रखें, जिसने लाखो-लाख लोगो का जीवन-दीप बुझा दिया और देश के बडे इलाको को तबाह-बर्बाद कर दिया।

आक्रामक नाजी नीति का उद्देश्य ससार पर प्रभुत्व कायम करना था। सोवियत सघ पर हमला इस नीति का स्वाभाविक नतीजा था। यूरोप के अधिकाश भाग के लोगो को गुलाम बना लेने के बाद हिटलर ने देखा कि उसकी अपहारक योजनाओ को और आगे कार्यान्वित करने में मुख्य बाधा सोवियत सघ है। उसने सोचा कि सोवियत सघ को परास्त करके वह उन जातियो का, जो अपनी आजादी के लिए सघर्ष कर रही थी, आखिरी सहारा भी तोड देगा, समाजवाद और प्रगति के किले को ढा देगा और इस प्रकार उसे एक विशाल आधार भी मिल जायेगा, जहा से वह विश्व पर अधिकार करने का अभियान सगठित कर सकेगा।

इस युद्ध के लिए जर्मनी ने पूरी-पूरी तैयारी की। उसके पास बेहिसाब साधन मौजूद थे, यूरोप मे अधीन बनायी गयी जातिया भी उसके पास इस प्रकार के साधन के रूप मे मौजूद थी। पूरी तरह सगठित और प्रशिक्षित जर्मन सेना ने, जो आधुनिकतम हथियारो से सुसज्जित थी और

"देश को आप की जरूरत है!"
१९४१ का एक पोस्टर

जिसने उस समय तक आधुनिक युद्ध करने का काफ़ी अनुभव प्राप्त कर लिया था, इटली, फ़िनलैंड, रूमानिया, हंगरी और स्लोवाकिया की सेनाओं सहित सोवियत संघ पर हमला कर दिया। चूंकि १९४१ में पश्चिमी मोर्चे पर कोई बड़ी कार्रवाइयां नहीं हुईं, इसलिए नाज़ी कमान के लिए पूर्व में अपनी शक्तियों के बड़े भाग को संकेन्द्रित करना सम्भव हुआ।

सोवियत संघ पर इस आक्रमण की योजना, जिसे हिटलर के जनरलों ने तैयार किया और जिसका सांकेतिक नाम "बार्बरोसा योजना" था, ब्लिट्ज़क्रिग के नमूने पर आधारित थी। योजना यह थी कि लाल सेना

को एक "अत्यत द्रुत गति से सैनिक कार्रवाई" करके परास्त कर दिया जाये और अर्खांगेल्स्क से आस्त्रखान तक मोर्चा कायम कर दिया जाये।

सोवियत सीमा पर बारेंट सागर से काले सागर तक एक बहुत विशाल शक्ति एकत्रित कर ली गई थी। यह १६० डिवीजनो की सेना थी जिनके पास ५०,००० तोपें तथा मार्टर, ३,५०० टैंक और ५,००० विमान थे।

२२ जून को प्रात काल से पहले जर्मन विमान उडे, तोपें गरजने लगी और अत मे स्थल सेनाओ ने सीमा पार किया। आक्रमण शुरू हो गया था। युद्ध के प्रथम दिनो मे नाजी सेनाओ को बडी सफलताए प्राप्त हुई। जर्मन वायु सेना के प्रहारो से सोवियत विमानो को भारी क्षति पहुची। २२ जून की दोपहर तक १,२०० विमान नष्ट कर दिये गये थे और इनमे ८०० उडने भी नही पाये थे।

वायु क्षेत्र मे शत्रु की प्रधानता निर्विवाद थी और धरती पर भी पहलक़दमी उसी को हासिल थी। सोवियत सेनाए सीमावर्ती इलाको मे जर्मन डिवीजनो को आगे बढने से रोकने मे असमर्थ थी। जर्मन टैंको की कतारें तेजी से सोवियत सघ की धरती पर बढती गयी।

आनेवाले तीन सप्ताह के दौरान नाजी सेनाए ३०० से ५५० किलोमीटर तक बढ गयी और उन्होने लाटविया, लिथुआनिया तथा उक्रइना, बेलोरूस और मोल्दाविया के बडे भाग पर क़ब्जा कर लिया। आनेवाले सप्ताहो मे भी उनका आगे बढना जारी रहा, अगरचे इसकी रफ्तार कुछ धीमी हो गयी थी।

१९४१ के पतझड तक हमलावरो ने एस्तोनिया पर अधिकार कर लिया और लेनिनग्राद के नजदीक पहुच गये। पूरे बेलोरूस को पार करने और स्मोलेन्स्क पर क़ब्जा करने के बाद शत्रु की सेनाओ से मास्को के लिए खतरा पैदा हो गया था। उस समय तक वे लगभग पूरे उक्रइना पर अधिकार करने और रोस्तोव-आन-दोन तक पहुचने मे सफल हो चुकी थी।

इन प्रारम्भिक सप्ताहो मे युद्ध की गति पर कई बातो का असर पडा। सबस महत्वपूर्ण बात यह थी कि जर्मन हमला अचानक हुआ था और जर्मन सेना पूरी तरह सगठित और लडाई के लिए तैयार थी और आधुनिक युद्ध करने का काफी अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। उधर अनेक सोवियत

डिवीजनों को शत्रु की गोलाबारी के बीच युद्ध के लिए अपने मोर्चे बनाते थे। सोवियत सेना के बुनियादी दस्तों का संगठन युद्ध शुरू होने के बाद किया जा रहा था, जिसका मतलब यह था कि थोड़े समय में शत्रु के बराबर सेना मैदान में उतारना असम्भव था। सोवियत सेना की एक बड़ी कमज़ोरी यह थी कि अनेक जनरलों, अफ़सरों और सैनिकों को लड़ाई का अनुभव नहीं था। इसके अतिरिक्त युद्ध के पहले निराधार दमन के कारण अनुभवी अफ़सरों की कमी हो गयी थी।

सोवियत संघ उस समय तक एक महान औद्योगिक शक्ति बन चुका था, उसके पास अपनी सेना को आधुनिक शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करने के आवश्यक साधन मौजूद थे। लेकिन युद्ध छिड़ने के समय सेना को नये शस्त्रास्त्रों की दृष्टि से पुनःसज्जित करने का काम पूरा नहीं हुआ था, नवीनतम टैंक कम थे और हवामार तथा टैंकमार तोपों का अभाव था। युद्ध के शुरू में केवल १७ प्रतिशत सोवियत विमान नवीनतम क़िस्म के थे।

१९३९ की सीमा की पुरानी क़िलाबंदियों से हथियार छीन लिया गया और उनकी जगह नयी सीमा की बहुत तेज़ी से क़िलाबन्दी की जा रही थी, मगर यह काम समय पर पूरा नहीं हो सका।

अनेक चेतावनियों के बावजूद कि जर्मन हमला जल्द ही होनेवाला है, स्तालिन को अंतिम क्षण तक विश्वास था कि युद्ध को टालना अभी भी सम्भव है। इसलिए वह सेना में फ़ौरी भर्ती करने के लिए कोई आपातिक कार्रवाई करना नहीं चाहते थे। वह समझते थे कि इससे हिटलर को युद्ध की घोषणा करने का बहाना हाथ आ जायेगा।

उन प्रारम्भिक सप्ताहों की कठिन स्थितियों में लाल सेना के जवानों ने शत्रु की संख्या की दृष्टि से बड़ी सेनाओं का साहसपूर्वक मुक़ाबला किया। उन्होंने शत्रु को भारी नुक़सान पहुंचाया। दुश्मन की शक्तियों को बढ़ने से रोकने या उन्हें पीछे हटाने के लिए जो कुछ हो सकता था, उसको पूरा किया। यह ज़माना लाल सेना के जवानों और अफ़सरों द्वारा वीरता के अनगिनत कारनामों के लिए प्रसिद्ध है। सैनिक अंतिम गोलीतक लड़ते रहे और उन्होंने अपनी रक्षा-पांत छोड़ने से इनकार कर दिया। वे दुश्मन से वीरतापूर्वक आमने-सामने लड़ रहे थे। सैनिकों ने जब देखा कि उनका पिल-बाक्स (क़िलाबंदी बुर्जी) घिर गया है, तो हथियार डालने के बजाय उन्होंने पिल-बाक्स सहित अपने आपको उड़ा दिया।

विमान चालकों के पास जब गोले नहीं रहे, तो वे शत्रु के विमानों से सीधे भिड गये। अक्सर ऐसा हुआ कि विमान जब लडाई में गोले लगने के कारण उडने के लायक नहीं रह, तो विमान चालकों ने उन्हें जान-बूझकर शत्रु की सेनाओं पर गिरा दिया। पहला विमान चालक, जिसने ऐसा किया कप्तान गस्तेल्लो थे। २६ जून, १९४१ को उनकी पट्रोल की टंकी दुश्मन के गोले का टुकड़ा लगने से टूट गयी और गस्तेल्लो अपने जलते हुए विमान को उस दिशा में ले चले, जहा दुश्मन की मोटरगाडियां और पेट्रोल टंकियों का दस्ता खड़ा था।

सोवियत सैनिकों के असाधारण साहस का लोहा दुश्मन ने भी माना। यह जर्मन सैनिकों की चिट्ठियों और रोजनामचों से तथा उनके संस्मरणों से जाहिर होता है, जो युद्ध के बाद प्रकाशित हुए।

अनेक प्रतिरक्षात्मक लडाइयों में, जो १९४१ की गर्मी और पतझड में लडी गयी, सोवियत सैनिकों ने दुश्मन को थकाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और फासिस्ट सैन्य दलों को बहुत क्षति पहुचायी। अनेक अवसरों पर उन्होंने सफलतापूर्ण प्रत्याक्रमण किया। प्रतिरक्षात्मक लडाइयों में सबसे महत्वपूर्ण थीं स्मोलेन्स्क की लडाई, जो दो महीने तक चली, कीयेव की लडाई, जो ७३ दिन चली, और लेनिनग्राद के निकटवर्ती क्षेत्र की लडाई।

युद्ध के इन प्राथमिक महीनों की एक मुख्य विशेषता यह थी कि अनेक शहरों और किलों के रक्षक जब दुश्मन से घिर गये, तो उन्होंने अत्यंत दृढतापूर्वक उसका प्रतिरोध किया। इस प्रकार का प्रतिरोध सही मानों में वीरतापूर्वक था। सोवियत सैनिकों ने इन परिस्थितियों में अभूतपूर्व धैर्य तथा साहस से काम लिया और मौत की तनिक परवाह नहीं की। ब्रेस्त के सीमावर्ती किले का गैरीजन पूरे एक महीने तक शत्रु के हमलों का प्रतिरोध करता रहा, हालांकि मुख्य जर्मन सेना के तेजी से आगे बढ जाने के कारण शीघ्र ही वह दुश्मन के पिछवाडे में रह गया था।

खाको प्रायद्वीप के नौसैनिक अड्डे का २५,००० सैनिक गैरीजन, जो फिनलैंड की खाडी के उत्तर के निकटवर्ती भाग की रक्षा कर रहा था, १५० दिनों तक डटा रहा। काले सागर तट पर ओदेस्सा की बन्दरगाह चारों ओर से बिल्कुल घिर जाने पर भी १८ रूमानियाई और जर्मन डिवीजनों को फसाये रही। नौसैनिकों, सिपाहियों और नागरिकों ने १० अगस्त से १६ अक्तूबर, १९४१ तक शहर की रक्षा की।

यद्यपि १९४१ की गर्मी और पतझड़ में नाज़ी सेनाओं ने बड़ी सफलताएं प्राप्त कीं, लेकिन वे अपनी मुख्य रणनीतिक योजना को कार्यान्वित करने में समर्थ नहीं हुईं। सोवियत सेनाओं के मुख्य भाग को परास्त नहीं किया गया था और न कोई ब्लिट्ज़क्रिग हासिल किया जा सका था। दुश्मन को लम्बी, कठिन लड़ाइयां लड़ने पर बाध्य होना पड़ा था और इस कारण युद्ध के आगे के घटनाक्रम में मौलिक परिवर्तन हुआ।

जब ये लड़ाइयां चल रही थीं, सोवियत राज्य ने अपनी समस्त सर्वांगीण शक्तियों और साधनों को राष्ट्रव्यापी पैमाने पर जुटाने का प्रबन्ध किया, इसके लिए सोवियत समाज में अंतर्निहित सुविधाओं से पूरा लाभ उठाया और हमलावर को परास्त करने के लिए आम जनगण की दृढ़ प्रतिज्ञा को आधार बनाया।

इस लामबन्दी और युद्धकालीन संगठन में कम्युनिस्ट पार्टी ने एक मौलिक भूमिका अदा की थी। युद्ध के प्रथम छः महीनों में लगभग १० लाख कम्युनिस्ट सेना तथा नौसेना में शामिल हुए। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का कोई एक तिहाई भाग मोर्चे पर था। ब्रेज्नेव, बुल्गानिन, वोरोशीलोव, ज्दानोव, इग्नातोव, काल्नबेर्जिन, कुज़्नेत्सोव, मनुईल्स्की, सूस्लोव, ख्रुश्चेव और श्चेर्बाकोव सहित प्रमुख पार्टी नेताओं ने, केन्द्रीय समिति के सदस्यों तथा उम्मीदवार सदस्यों, प्रदेशीय समितियों तथा संघीय जनतंत्रों की केन्द्रीय समितियों के मंत्रियों ने सेना के नियंत्रण में सक्रिय भाग लिया।

पार्टी के जो अग्रणी कार्यकर्ता मोर्चों से दूर पिछवाड़े में रह गये थे, उन्होंने आम कम्युनिस्टों में त्याग, एकजुटता तथा उत्साह के साथ अधिकतम काम करने की भावना का समावेश किया, ताकि मोर्चे पर लोगों को पर्याप्त रसद पहुंचाने का निश्चित प्रबंध हो।

३० जून, १९४१ को अखिल रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल तथा जन कमिसार परिषद ने स्तालिन की अध्यक्षता में एक राजकीय प्रतिरक्षा समिति स्थापित करने का संयुक्त निश्चय किया। यह समिति एक असाधारण संस्था थी, जिसमें सारी सत्ता संकेन्द्रित कर दी गयी थी और जिसके अन्तर्गत राजकीय और सैनिक संस्थाओं, पार्टी तथा अन्य संगठनों का काम सम्मिलित किया गया था।

एक सर्वोच्च कमान के जनरल हेडक्वार्टरस स्थापित किया गया और ८ अगस्त को स्तालिन सर्वोच्च प्रधान सेनापति नियुक्त किये गये।

अर्थव्यवस्था को युद्धकालीन आधार पर सगठित करने के लिए जबर्दस्त प्रयास करने की जरूरत थी। कारखानो ने सामरिक उत्पादन आरम्भ कर दिया और जहा तक सम्भव था अधिकतम घटे काम करने लगे। कारखानो मे स्त्रियो, बूढे अवकाशप्राप्त लोगो तथा लडके-लडकियो ने उन आदमियो की जगह सभाली, जो मोर्चे के लिए रवाना हो गये थे।

दुश्मन की सेनाए बढती आ रही थी और उन्होने औद्योगिक इलाको पर कब्जा कर लिया था और आदमियो, मशीनो और औद्योगिक साज-सामान से भरी रेलगाडियो का अतहीन काफिला मोर्चे से पूर्व की ओर चला जा रहा था। उद्योगो का बडे पैमाने पर स्थानातरण कराया जा रहा था। जुलाई और नवम्बर १९४१ के बीच १,५२३ औद्योगिक उद्यम हटाये गये और इसमे कुल मिलाकर १५ लाख मालगाडियो को काम करना पडा।

इस काम को एक विशेष स्थानातरण परिषद ने सगठित किया, जिसके प्रधान श्वेर्निक तथा उनके सहायक कोसीगिन थे।

ये ट्रेने पूर्व मे – उराल, वोल्गा क्षेत्र, साइबेरिया, मध्य एशिया और कजाखस्तान के सुदूर स्थानो के लिए रवाना होती थी, जहा पहुचकर इन कारखानो को नयी जगहो पर तुरत दोबारा खडा कर लिया जाता था। मजदूरो को अक्सर खुली हवा मे, बारिश और जाडे पाले मे काम करना और तहखानो और खेमो मे रहना पडता था। काम दिन-रात अविराम गति से चलता रहा। बहुतेरे उद्यम आश्चर्यजनक तौर पर कम समय यानी तीन-चार सप्ताह मे ही काम शुरू करने के लिए तैयार हो जाते थे।

उन दिनो उद्योग मे परिस्थिति बहुत कठिन थी। बडे औद्योगिक केन्द्रो के दुश्मन के हाथ मे चले जाने के बाद अवश्य ही युद्ध के प्रथम महीनो मे उत्पादन गिर गया। लेकिन ऊपर उल्लिखित कार्रवाइयो की बदौलत दिसम्बर, १९४१ तक यह गिरावट रुक गयी और जनवरी, १९४२ से औद्योगिक उत्पादन मे आम वृद्धि शुरू हुई।

युद्ध के प्रारम्भिक काल की सभी कठिनाइयो और असफलताओ के बावजूद सोवियत जनगण ने सत्रास और निराशा को राह नही दी। सोवियत नर-नारियो को अतिम विजय का विश्वास था और उसको निकटतर लाने

के लिए उन्होंने यथाशक्ति काम किया। पार्टी का नारा: "हर चीज़ मोर्चे के लिए! हर चीज़ विजय के लिए!" समस्त जनगण ने अपना लिया। मोर्चे पर सोवियत सैनिकों ने जान लड़ा दी। बीसियों हज़ार लोग स्वयंसेवक जत्थों–नागरिक सेना–में भर्ती हुए। मास्को में स्वयंसेवकों की संख्या १,२०,००० और लेनिनग्राद में १,६०,००० थी।

सामरिक उद्योग में मज़दूर अपने काम के लिए नियत समय की परवाह किये बिना मोर्चे पर सैनिकों के लिए आर्डर पूरा करते रहे। फ़ैक्टरी मज़दूरों ने अपने दैनिक कोटा से दोगुना और उससे भी अधिक उत्पादन करना शुरू किया। इस आन्दोलन के साथ इस प्रकार के नारे लगाये जाते थे: "लड़ाई की भांति काम में जुट जाओ!" या "अपना और मोर्चे पर गये अपने साथी का भी काम करो!"

इस तरह पीछे हटने के क्रम के बीच, असफलताओं के उन माहों के बीच भावी विजय की आधारशिला रखी जा रही थी। जर्मन सेनाएं अभी भी बढ़ रही थीं और नाज़ी प्रचार उनकी ताज़ा सफलताओं की ख़बरों से भरा होता था। मगर उनके चीफ़ आफ़ स्टाफ़ जनरल हाल्डर ने ११ अगस्त, १९४१ को ही पश्चात्तापपूर्ण भाव से कह दिया: "आम स्थिति से अधिकाधिक स्पष्टता और सफ़ाई के साथ प्रकट होता जा रहा है कि हम विशालकाय रूस को... कम करके आंकते रहे हैं। यह बात देश की अर्थव्यवस्था तथा आम संगठन के सभी पहलुओं, संचार के साधनों और ख़ासकर सैनिक मामलों पर लागू होती है।"

हिटलर ने उम्मीदें बांध रखी थीं कि वह सोवियत संघ को दूसरे देशों से अलग-थलग कर सकेगा, परन्तु उसकी उम्मीदें पूरी नहीं हुईं।

ज़ाहिर है कि पश्चिमी देशों में–ख़ासकर संयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटेन में–प्रतिक्रियावादी आवाज़ों की कोई कमी नहीं थी, जिनकी हार्दिक इच्छा थी कि सोवियत संघ हार जाये या कम से कम उसकी शक्ति बहुत कम हो जाये। सिनेटर हैरी ट्रूमन ने, जो बाद में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति बने, २४ जून, १९४१ को एक वक्तव्य दिया, जिसने काफ़ी कुख्याति प्राप्त की: "अगर हम देखें कि जर्मनी जीत रहा है, तो हमें रूस की सहायता करनी चाहिए और अगर रूस जीत रहा हो, तो हमें जर्मनी की सहायता करनी चाहिए और इस तरह उन्हें एक दूसरे को अधिक से अधिक मारने देना चाहिए..."

परन्तु सारे ससार के लिए फ़ासिस्ट खतरा इतना प्रत्यक्ष और इतना भयकर था कि पश्चिमी राजनीतिज्ञो म जो अधिक दूरदर्शी थे, उन्ह सोवियत सघ का समर्थन करने पर बाध्य हाना पडा। साथ ही उन्ह अपने देशो के आम जनमत को भी ध्यान मे लेना पडा, जो फासिस्ट विरोधी तथा सोवियत समर्थक था। इसी लिए ब्रिटिश प्रधान मत्री विन्सटन चर्चिल और अमरीकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट को जर्मनी के विरुद्ध लडाई मे सोवियत सघ का समर्थन करने की खुल्लम-खुल्ला घोषणा करनी पडी।

फासिज्म के खिलाफ युद्ध का मुख्य भार सोवियत सघ को उठाना पडा और वह अन्तर्राष्ट्रीय फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन का हिरावल बन गया।

मास्को के निकट लडाई

१९४१ के पतझड तक सोवियत सघ की सैनिक स्थिति और भी अधिक नाज़ुक हो चुकी थी। नवम्बर, १९४१ तक दुश्मन की सेनाए व्यापक क्षेत्रो पर कब्जा कर चुकी थी, जहा युद्ध के पहले जनसख्या का ४० प्रतिशत बसा हुआ था और जहा से देश को ६३ प्रतिशत कोयला और ५८ प्रतिशत इस्पात मिला करता था। सोवियत सेनाओ को देश के भीतर दूर तक धकेल देने के बाद जर्मन सेनाओ ने जाडा शुरू होने से पहले सोवियत सघ पर निर्णायक प्रहार करने तथा मास्को और लेनिनग्राद पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। जर्मन सर्वोच्च कमान की धारणा थी कि उसकी सेनाओ के पास इस ध्येय को पूरा करने के लिए सारे आवश्यक साधन मौजूद हैं और वह समझता था कि युद्ध लगभग जीता हुआ है।

मुख्य जमन सेनाए मास्को के निकट जमा थी। सितम्बर के अत तक सेना ग्रूप "केन्द्र" के सेनापति जनरल फान बोक के पास ८० डिवीजन थे, जिनमे १४ टैंक और ८ मोटरचालित डिवीजन शामिल थे। उसके कमान म सोवियत पक्ष से कही अधिक सैनिक, टैंक, विमान, तोपें और मार्टर थे।

जमनो ने १९४१ के पतझड मे मास्को पर अधिकार करने की अपनी योजना को "टाइफून" कार्रवाई का नाम दिया था। उसमे नगर को घेर लेने के लिए तीन ओर से एकसाथ बढने की योजना थी—उत्तर से (कालीनिन, क्लीन और सोलनेचनोगोर्स्क से होकर), दक्षिण से (ओर्योल,

तुला और कशीरा से होकर) और पश्चिम से (व्याज़्मा, मोजाइस्क और वोलोकोलाम्स्क से होकर)।

३० सितम्बर को जनरल गुडेरियन के कमान में जर्मन दूसरे टैंक ग्रूप ने ब्रियान्स्क के दक्षिण में अपना आक्रमण शुरू किया, जिसका उद्देश्य ओर्योल तक निकल पहुंचना था। २ अक्तूबर को मुख्य जर्मन सेनाओं ने बढ़ना शुरू किया। यह मास्को पर कूच का प्रारम्भ था। अक्तूबर में जर्मन डिवीजनों ने बड़ी सफलताएं प्राप्त कीं। कालीनिन (मास्को–लेनिनग्राद रेलवे पर स्थित) ले लेने के बाद वे उत्तर से मास्को को अपने घेरे में लेने लगीं। ओर्योल और कलूगा पर उनका क़ब्ज़ा होने के बाद मास्को के लिए दक्षिण से सीधा ख़तरा पैदा हो गया। मोर्चे के केन्द्रीय भाग से जर्मन सचमुच मास्को के निकट पहुंच गये। व्याज़्मा के निकट और ब्रियान्स्क के दक्षिण में अनेक सोवियत सेनाएं दुश्मन से घिर गयी थीं।

नयी कुमक पहुंचाने के बाद जर्मन सर्वोच्च कमान ने १५–१६ नवम्बर को एक और हमला बोल दिया। जर्मन टैंक राजधानी के निकटतर होते जा रहे थे और मास्को के आस-पास के इलाक़ों में लड़ाइयां हो रही थीं। कुछ जगहों पर जर्मन नगर के २५ – ३० किलोमीटर के भीतर पहुंच गये थे।

पूरे देश के लिए ये अत्यंत तनावपूर्ण कठिनाई के दिन थे। सभी नर-नारियां स्थिति को सांस रोके देख रहे थे। इससे पहले देश को कभी इतने बड़े ख़तरे का सामना नहीं करना पड़ा था।

पर यही वह घड़ी थी जब सोवियत जनगण ने धैर्य और साहस का सबूत दिया, अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा की गहरी भावना उभरकर सामने आयी, उसकी रक्षा के हेतु उन्होंने सारी कठिनाइयों का मुक़ाबला करने की अपनी तत्परता प्रकट की। और इसी समय सोवियत व्यवस्था की श्रेष्ठता, निर्णायक क्षण में अत्यावश्यक साधनों को संकेन्द्रित करने की सोवियत राज्य की क्षमता ने अपना चमत्कार दिखाया।

मास्को के निकट लड़ी गयी प्रतिरक्षात्मक लड़ाइयों की विशेषता थी, उनसे पहले की लड़ाइयों की तुलना में कहीं अधिक, सोवियत अफ़सरों और जवानों की व्यापक वीरता। इस प्रकार की अनेक मिसालों में एक दुबोसेकोवो रेलवे स्टेशन (मास्को से कोई १०० किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में) की लड़ाई थी। १६ नवम्बर को ३१६वीं पैदल डिवीजन के २८ सैनिकों ने

(जिसको बाद मे उसके कमाडर जनरल पन्फीलोव के नाम पर, जो मास्को की लडाई मे शहीद हुए, पन्फीलोव डिवीजन कहा जाने लगा था) सब मशीनगनो से लैस सैनिको के साथ अग्रसर हो रहे दुश्मन के ५० टैंको के प्रहार का मुकाबला किया। सैनिक अपने राजनीतिक निदेशक क्लोच्कोव की अगुआई मे अपनी जगह डटे रहे। क्लोच्कोव ने अपने जवानो से कहा "रूस बडा है, परन्तु पीछे हटने की जगह नही, क्योकि हमारे पीछे मास्को है।" ये शब्द मास्को के सभी रक्षको के लिए एक सूत्र बन गये। लडाई चार घटे चली और इसके दौरान क्लोच्कोव मारे गये। बुरी तरह घायल होने के बाद वह हथगोलो का एक गुच्छा बनाकर शत्रु के एक टैंक के नीचे लेट गये और उसे उडा दिया। उनके लगभग सभी जवान दुश्मन के १८ टैंको और दर्जनो सैनिको को नष्ट करने के बाद मारे गये।

व्याज्मा के निकट और ब्रियान्स्क के दक्षिण जो सोवियत सैनिक शत्रु द्वारा घिर गये थे, उन्होंने जमकर प्रतिरोध किया। उन्होने बहुत से जर्मन सैनिको को फसाये रखा, उनका दम निकाल दिया और उनका घेरा तोडकर लडते हुए बाहर निकलने मे सफल हो गये।

जर्मन सेनाओ को भारी क्षति उठानी पडी। १६ नवम्बर और ५ दिसम्बर के बीच उनके ५५,००० आदमी मारे गये और घायल होकर और पाले के मारे इनके अलावा एक लाख से अधिक आदमी बेकार हुए। इसी अवधि मे उनके ७७७ टैंक, ३०० तोपें और मार्टर नष्ट हुए। इससे जर्मन रेजिमेटो और बटालियनो की शक्ति काफ़ी क्षीण हुई, उनकी आगे बढने की गति धीमी पडी तथा अफ़सरो और जवानो के मनोबल को बडा धक्का लगा।

इस बीच अत्यत गुप्त रूप से सोवियत सर्वोच्च कमान ने मास्को क्षेत्र मे ताजा कुमक पहुचा दी। तीन सोवियत मोर्चों पर बडी कुमक पहुचायी गयी कालीनिन (मोर्चा सेनापति जनरल कोन्येव), पश्चिमी (मोर्चा सेनापति जनरल जूकोव) और दक्षिण-पश्चिमी (मोर्चा सेनापति मार्शल तिमोशेंको)। स्वय मास्को और उसके नगराचल मे बैरीकेड और टैंकमार प्रतिरक्षा प्रबध खडे किये जा रहे थे। ५ लाख से अधिक मास्कोवासी नगर की प्रतिरक्षा मोर्चाबदी करने आगे आये और नयी स्वयसेवक बटालियनें बनायी गयी। बावजूद अधिकाधिक हवाई हमलो के मास्को के कारखाने जोरो से काम कर रहे और मोर्चे के लिए हथियार बना रहे थे।
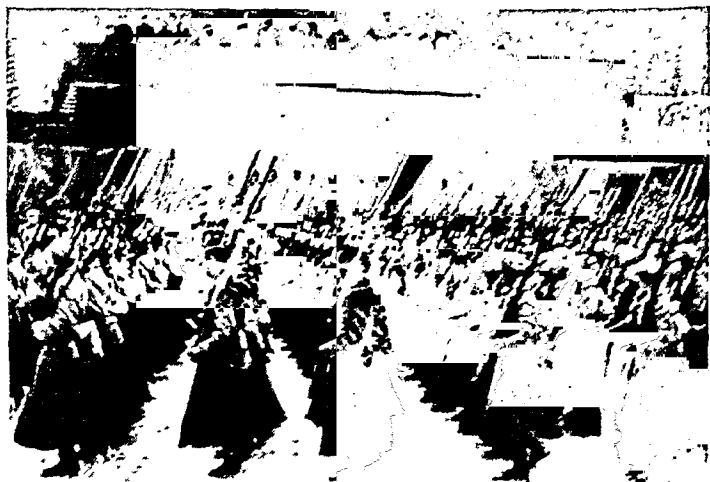
७ नवम्बर, १९४१ को लाल चौक मे सैनिक परेड

अक्तूबर क्रांति की २४वी जयंती की पूर्ववेला मे मास्को सोवियत की एक समारोही सभा मास्को भूमिगत रेलवे के एक स्टेशन के हाल मे आयोजित हुई, जिसमे स्तालिन ने एक महत्वपूर्ण भाषण दिया।

दूसरे दिन ७ नवम्बर को लाल चौक में परम्परागत सैनिक परेड हुआ। पैदल और सवार सेना के दस्ते, तोपें और टैंक क्रेमलिन की दीवारों के सामने बर्फ़ से ढंके मैदान से गुज़रे और स्तालिन ने लेनिन के मक़बरे के ऊपर से सेनाओं से अपील की कि वे अपना महान उत्तरदायित्व पूरा करें, हमलावरों को खदेड़ दें तथा यूरोप के लोगों को गुलामी से आज़ाद करें।

बर्फ़ीली, तेज़ हवा लाल झंडो से टकरा रही थी। जिन सैनिको ने उस परेड में भाग लिया, वे अपनी लड़ाई की वर्दी में आये थे। लाल चौक से वे सीधे मोर्चे की ओर रवाना हो गये।

दिसम्बर, १९४१ के प्रारम्भ में मास्को की प्रतिरक्षा करनेवाली सेनाओं ने प्रत्याक्रमण कर दिया। ५ दिसम्बर को प्रातःकाल सोवियत तोपख़ाने

ने कालीनिन मोर्चे पर बर्फ से ढकी वोल्गा नदी किनारे गोलाबारी शुरू की। तोपो से गोलाबारी के बाद पैदल डिवीजनो ने बर्फ को पार करके शत्रु के ठिकाना पर धावा बोल दिया। ६ दिसम्बर को पश्चिमी मोर्चे तथा दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे के दाहिने पक्ष की सेनाओ ने हमला कर दिया।

मास्को के तीन ओर एक विशाल अर्द्धवृत्ताकार मोर्चे पर जो कालीनिन से येलेत्स (लीपेत्स्क के नजदीक) तक सैकडो किलोमीटर तक फैला हुआ था, भयकर लडाइया शुरू हुईं। इस बार पहल सोवियत सेनाओ के हाथ मे थी। जर्मन सेनाओ को कई गम्भीर शिकस्ते उठानी पडी। इस हमले के दौरान सोवियत सेनाए १६४२ के वसत तक जर्मनो को अनेक स्थानो पर ३५० किलोमीटर तक पीछे धकेलने मे सफल हुईं। जर्मन सेनाओ के कोई ५ लाख आदमी मारे गये। सेना ग्रुप "केन्द्र" का लगभग ८० प्रतिशत हथियार और सामान बर्बाद हुआ। बर्फ से ढकी सडको पर जर्मनो की छोड़ी हुई मोटरगाडिया, टैंक और तोपें बिखरी पडी थी।

यह बात उल्लेखनीय है कि मास्को के निकट इस प्रत्याक्रमण मे सोवियत सेनाओ की सख्या अपेक्षाकृत अधिक नही थी। उनके पास शत्रु की तुलना मे कम सैनिक, अफसर, तोपे, मार्टर और टैंक थे। केवल विमान ही ऐसे थे, जिन्ह सोवियत सर्वोच्च कमान अपनी सेनाओ को शत्रु से अधिक सख्या मे मुहैया कर सका था। मास्को की लडाई मे विजय का श्रेय सर्वप्रथम सोवियत सेनाओ के निस्स्वार्थ साहस को जाता है, जिनका मनोबल निस्सन्देह आक्रमणकारी सेनाओ से कही ज्यादा ऊचा था। इसका निस्सन्देह श्रेय सोवियत सर्वोच्च कमान को भी है, जिसने प्रत्याक्रमण की योजना शानदार दक्षता से तैयार की थी और उसे कार्यान्वित किया था।

मास्को के निकट लडाई मे जनरल रोकोस्सोव्स्की, जनरल गोवोरोव, जनरल लेल्युशेंको, जनरल येफ्रेमोव और जनरल बोल्दिन की सेनाओ ने विशेषकर बडा नाम कमाया। जनरल बेलोव और जनरल दोवातोर के घुडसवार कोरो तथा कर्नल कतुकोव और जनरल गेत्मान की टैंक सेनाओ ने भी महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त की। कुछ सबसे श्रेष्ठ कोरो, डिवीजनो, ब्रिगेडो और रेजिमेंटो को गार्ड की पदवी से सम्मानित किया गया।

मास्को की लडाई केवल सैनिक दृष्टि से ही नही, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यत महत्वपूर्ण थी। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान पहली बार जर्मन सेनाओ को केवल यही नही कि रोक दिया गया था, बल्कि काफी

क्षति उठाकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया गया था। यह स्पष्ट हो गया कि जर्मन सेनाओं को, जो कुछ ही दिनों पहले तक अजेय लगती थीं, शिकस्त दी जा सकती है। यह दूसरे विश्वयुद्ध में एक नयी मंज़िल का मार्गचिह्न साबित हुआ।

इस हार का मतलब यह भी था कि हिटलर का मुख्य रणनीतिक उद्देश्य यानी ब्लिट्ज़क्रिग करने और जाड़ा पड़ने से पहले सोवियत सेनाओं को खदेड़ने का उद्देश्य नाकाम रहा। ज़ाहिर था कि अब लड़ाई बहुत तूल पकड़नेवाली थी और जर्मनी के लिए इसकी सम्भावनाएं कुछ उत्साहवर्धक नहीं थीं।

१९४१–१९४२ के पतझड़ और जाड़ों में मास्को के निकट तथा सोवियत-जर्मन मोर्चे के अन्य स्थानों में जो सैनिक कार्रवाइयां हुईं उनमें कभी सोवियत पक्ष का, तो कभी शत्रु का पलड़ा भारी रहा। १९४१ के पतझड़ में जर्मन सेनाएं उक्रइना में और आगे बढ़ गयी तथा उत्तरी काकेशिया तक जा पहुंचने और रोस्तोव-आन-दोन पर अधिकार करने में सफल हुईं। लेकिन उसी साल नवम्बर और दिसम्बर में दक्षिणी मोर्चे की सोवियत सेनाओं ने भारी प्रत्याक्रमण किया और रोस्तोव को मुक्त कर लिया।

जर्मन सेनाओं ने लगभग पूरे क्रीमियाई प्रायद्वीप पर भी दख़ल कर लिया था। इस समय तक केवल सेवास्तोपोल बन्दरगाह और महत्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा कारगर प्रतिरोध कर रहा था। सेवास्तोपोल का घिराव २५० दिन रहा। जुलाई, १९४२ में बहुत दिनों की कठोर लड़ाई के बाद फ़ील्ड मार्शल फ़ान मानश्तैन के तहत ११ वीं जर्मन सेना ने उस नगर पर क़ब्ज़ा कर लिया।

युद्ध की इस मंज़िल पर लेनिनग्राद के निकट भी स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। अगस्त के अंत और सितम्बर के प्रारम्भ में जर्मन सेना ग्रुप "उत्तर" के सैनिक फ़ील्ड मार्शल लेयेब के कमान में उस नगर के निकट पहुंच गये थे, जो सोवियत संघ का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण नगर था और जिसकी जनसंख्या मास्को के बाद सबसे बड़ी थी। ३० अगस्त को म्गा रेलवे स्टेशन पर दख़ल कर लेने के बाद जर्मन सैनिकों ने बाक़ी देश के साथ लेनिनग्राद का अंतिम रेल-संबंध भी काट दिया। ८ सितम्बर को जर्मनों ने श्लीसेलबुर्ग पर क़ब्ज़ा कर लिया जो उस स्थान पर स्थित है,

जहा नवा नदी लादोगा झील म आकर गिरती है। उस दिन स जमीन से होकर लनिनग्राद की ओर आनेवाले सारे रास्त बद हो गये।

इसका मतलब यह था कि वह विशाल नगर बिल्कुल घिर गया और लगभग सब तरफ स कट गया था। शहर क बहुत निकट घमासान लडाइया चल रही थी, और जमन सर्वोच्च कमान को अपनी विजय मे पूरा विश्वास था। लेनिनग्राद क अस्तोरिया होटल म विजय क उपलक्ष्य म भोज समारोह क वास्त दिन तक तय किया जा चुका था। परन्तु वह दिन कभी नही आया। जमन सनाए कभी लेनिनग्राद म प्रवश नही कर सकी। सोवियत सनाए (प्रारम्भ म मार्शल वोरोशीलोव के और फिर १३ सितम्बर स ७ अक्तूबर तक जनरल जूकोव के कमान म) तथा बाल्टिक बड क नौसैनिक (एडमिरल त्रिबुत्स के कमान मे) शत्रु को सफलतापूवक रोक रहे। सनिक इकाइयो को काफ़ी सहायता नगर के लोगो से मिली जिनका नता और प्ररक प्रथम सचिव ज्दानोव की अगुआई म लेनिनग्राद कम्युनिस्ट पार्टी सगठन था। दसियो हजारो लनिनग्रादवासी नागरिक सेना म भर्ती होकर नियमित सना के साथ कध स कधा मिलाकर लड और लाखो न प्रतिरक्षा क मोर्चों क निर्माण-काय म भाग लिया। लेनिनग्राद कारखानो क मजदूर अपनी वकशापो से सीधे लडाई के मोर्चे पर तोप और आमड टरेट पहुचाया करत थे और शस्त्रास्त्र तथा फौजी सामान की मरम्मत किया करत थे।

सितम्बर क अत तक यह साफ हो गया कि लेनिनग्राद को एक तूफानी हमल म अपन क़ाबू म करने के प्रयत्न सफल नही हो सकते और जमनो ने शहर को घरे म रखन का निश्चय किया। लेनिनग्राद का घरा लगभग ९०० दिन रहा और दूसरे विश्वयुद्ध की अत्यत आश्चयजनक घटनाओ मे स है। अगरचे लनिनग्राद के लोगो की खासी सख्या को घरा शुरू होने के पहले सफलतापूवक वहा से हटा दिया गया था फिर भी २५ लाख आदमी वहा रह गये थे जिनम ४ लाख बच्चे थे।

लेनिनग्राद तक पहुचने का केवल एक ही रास्ता रह गया था जिसे शत्रु काटने म सफल नही हुआ था और वह था लादोगा झील के दक्षिणी भाग से होकर। जमन सर्वोच्च कमान ने तीखविन शहर पर कब्जा करके इस अतिम रास्ते को भी बद करने की चेष्टा की। लेकिन नवम्बर १९४१ के अत और दिसम्बर के प्रारम्भ तक सोवियत सेनाओ ने सफलतापूवक शत्रु को पीछ धकेल दिया और तीखविन को मुक्त कर लिया।

खाद्यान्न, ईंधन और गोला-बारूद लादोगा झील के रास्ते लेनिनग्राद लाया जाता था। सामान से भरे बजरे दुश्मन के विमानों की गोलाबारी में झील की तूफानी लहरों में होकर आया करते थे। नवम्बर के अंत में झील पर बर्फ जम गयी और तब उसपर लारियां चलने लगीं। इस तरह बर्फ का रास्ता या लेनिनग्रादवासियों के शब्दों में "जीवन मार्ग" कायम हुआ था। जाड़े की अंधेरी रातों में लारियां कई दर्जन किलोमीटर की लम्बी सड़क पर सफर तय करतीं, जिनपर बर्फ होती और जगह-जगह दरारें होतीं। लादोगा झील पर अक्सर तूफान आया करते, जिनके कारण बर्फ अपनी जगह से सरक जाया करती और कहीं बर्फ के टीले बन जाते और कहीं बीच में पानी निकल आता। बर्फीली हवाएं लारी के मार्ग-चिह्न मिटा देतीं और रास्ते में बर्फ के ऊंचे ढेर आगे बढ़ने में बाधा डालते। इनके बावजूद, इन भयंकर कठिनाइयों का मुकाबला करते हुए लारियां लेनिनग्राद में सामान पहुंचाती रहीं।

इन सभी प्रयत्नों के बावजूद इस एक रास्ते से आवश्यक मात्रा में खाद्यान्न और ईंधन शहर में पहुंचाना असम्भव था और १९४१-१९४२ के जाड़ों का समय अत्यंत कठिन और मुसीबतों से भरा हुआ था। घरों को गर्म करने के लिए पर्याप्त ईंधन नहीं था, नगर का परिवहन ठप्प पड़ गया था और पानी के नलों में पानी नहीं था और मलप्रणाली की व्यवस्था काम नहीं कर रही थी। दैनिक राशन में रोटी का छोटा सा टुकड़ा मिला करता, जिसका आधा भाग गेहूं के आटे के बजाय किसी और चीज का होता था। डिस्ट्रोफ़ी और स्कर्वी के रोग फैल गये थे और दिसम्बर में बहुत से लोग भूख से मर गये। लगभग प्रत्येक परिवार में लोग मर रहे थे। हजारों चिट्ठियों-पत्रियों में, रोजनामचों और कहानियों में लोगों ने इस दुखद स्थिति का आंखों देखा हाल लिखा है। निस्सहाय माताओं की आंखों के सामने बेटे-बेटियों ने दम तोड़ दिया और अक्सर ऐसा हुआ कि मां-बाप मरे पड़े हैं और उनके नन्हे-मुन्ने बालक वहीं लेटे बिलख रहे हैं। और इस पूरे समय जर्मन सेनाओं ने शहर के रिहायशी इलाकों की बमबारी बराबर जारी रखी!

१९४२ के पूर्वार्द्ध में घिरे हुए लेनिनग्राद में छ लाख से अधिक लोग मरे, लेकिन शहर ने हथियार नहीं डाले। भूखे, प्यासे, रोग पीड़ित लेनिनग्रादवासियों ने ऐलान किया कि "हम लड़ते रहेंगे। हम कभी हथियार

नही डालेगे। विजय हमारी होगी।" प्रतिरक्षा उद्योग के लिए जो फ़ैक्टरियां सबसे महत्वपूर्ण थी, उन्हे चालू रखा गया और नयी क़िलाबन्दियां की गयी। वीर लेनिनग्राद उन क़िलों मे था, जिन्होंने सफलतापूर्वक जर्मन डिवीजनो के प्रहार का मुक़ाबला किया।

स्तालिनग्राद की लड़ाई

युद्ध के दूसरे वर्ष के दौरान सोवियत जनगण को नयी अग्नि-परीक्षाओं और लम्बी कठिन लड़ाइयों के बीच से गुजरना पड़ा। सोवियत संघ ने अपने आपको जिस सैनिक तथा अंतर्राष्ट्रीय स्थिति मे पाया वह अत्यंत जटिल और अंतर्विरोधों से भरी हुई थी।

एक ओर अंतर्राष्ट्रीय हिटलर-विरोधी एकता बढ रही और शक्तिशाली होती जा रही थी। दिसम्बर, १९४१ मे पर्ल-हार्बर के अमरीकी नौसैनिक अड्डे पर जापानी हमले के बाद जापान, जर्मनी और इटली से संयुक्त राज्य अमरीका का युद्ध छिड गया। अन्य देश भी फासिस्ट राज्यो के खिलाफ युद्ध में शामिल हुए। १९४२ की गर्मियो तक २८ देश हिटलर-विरोधी संयुक्त मोर्चे मे शामिल हो गये। मई, १९४२ में लंदन मे एक एंग्लो-सोवियत संश्रय संधि पर हस्ताक्षर हुए और एक महीने बाद सोवियत-अमरीकी संश्रय संधि भी सम्पन्न हुई। संयुक्त राज्य अमरीका ने सोवियत संघ को वायुयान, टैंक तथा अन्य प्रकार के हथियार और सामरिक सामान देने का वादा किया। इस लिहाज से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे सोवियत संघ की स्थिति मजबूत हुई और सोवियत संघ का विलगाव करने की हिटलर की आशाओं पर पानी फिर गया। उलटे, फासिस्ट गुट का ही विलगाव हो गया।

लेकिन इस बीच ब्रिटेन और अमरीका के शासक क्षेत्रों ने सोवियत संघ के साथ संबधो मे नेकनीयती के अभाव का परिचय दिया, हथियारो की रसद पहुचाने में देरी की और सबसे गम्भीर बात यह थी – १९४२ मे एक दूसरा मोर्चा खोलने के बारे मे अपना वादा पूरा नही किया, जिससे सोवियत संघ की स्थिति काफी खराब हुई। स्तालिन ने १३ अगस्त, १९४२ को लिखा: "सोवियत सर्वोच्च कमान ने गर्मी और पतझड के लिए कार्रवाइयों की अपनी योजनाएं इस विश्वास के साथ तैयार की थीं कि १९४२ मे यूरोप मे दूसरा मोर्चा खुल जायेगा।

"यह बात सहज ही समझी जा सकती है कि यूरोप में १९४२ में एक दूसरा मोर्चा खोलने से ब्रिटिश सरकार का इनकार सोवियत जनमत के लिए एक नैतिक चोट है, जिसने आशा की थी कि दूसरा मोर्चा खोला जायेगा, इससे मोर्चे पर लाल सेना की स्थिति जटिल होती है और सोवियत सर्वोच्च कमान की योजनाओं को नुक़सान पहुंचता है।"

दूसरे मोर्चे की अनुपस्थिति से लाभ उठाते हुए जर्मनी, शीतकालीन अभियान की शिकस्त के बावजूद, सोवियत संघ में विशाल शक्तियां संकेन्द्रित करने में सफल हुआ। १ मई, १९४२ तक सोवियत-जर्मन मोर्चे पर १७७ जर्मन डिवीजन, ९ ब्रिगेड और ४ हवाई बेड़े और जर्मनी के सहयोगियों द्वारा भेजी गयी ३९ डिवीजन, १२ ब्रिगेड और वायुसेना जमाकर ली गयी थी। तुलना के लिए यह उल्लेख दिलचस्प होगा कि उत्तरी अफ़्रीका १९४१ और १९४२ की लड़ाइयों में, जहां कभी एक पक्ष को तो कभी दूसरे पक्ष को सफलताएं मिलतीं, इटली और जर्मनी ने कभी १०-१२ से अधिक डिवीजन इस्तेमाल नहीं किये।

१९४२ की गर्मियों के अभियान में जर्मन सर्वोच्च कमान अब इस स्थिति में नहीं थी कि पूरे रूसी मोर्चे पर हमला कर सके, इसलिए उसने मुख्य प्रहार मोर्चे के दक्षिणी क्षेत्र में, वोरोनेज, स्तालिनग्राद तथा उत्तरी काकेशिया पर किया। गर्मियों की घमासान लड़ाइयों में जर्मन सेनाओं को फिर अनेक बड़ी सफलताएं प्राप्त हुईं। अगस्त में फ़ान पाउलुस की कमान में छठी सेना स्तालिनग्राद के निकट वोल्गा जा पहुंची। उस गर्मी और पतझड़ के दौरान जर्मन सेनाओं ने उत्तरी काकेशिया के एक बड़े इलाक़े पर दख़ल कर लिया और मुख्य काकेशियाई पर्वतमाला के दर्रों में भी लड़ाइयां हुईं। जर्मन सबसे आगे यहीं तक पहुंच पाये। ट्रांसकाकेशिया पहुंचने की उनकी चेष्टा विफल हुई।

इस बीच वोल्गा की लड़ाई अधिकाधिक रणनीतिक महत्व ग्रहण करती जा रही थी। स्तालिनग्राद (जिसे अब वोल्गोग्राद कहा जाता है) के निकट लड़ाई लम्बी और बहुत भयंकर थी।

अगस्त के अंत में जर्मन वायुसेना ने स्तालिनग्राद पर हमला करने के लिए कई सौ बमबार भेजे। कई घंटों की लगातार बमबारी के बाद छः लाख की आबादी का यह शहर एक विशाल भट्ठी की तरह जल रहा था। लोग, जिनका न घर रह गया था और न ही सामान, जलती सड़कों में

दौड़ते हुए वोल्गा नदी की ओर भाग रहे थे। उनको लगातार शत्रु की गोलाबारी की हालत में शहर के बाहर पहुचाया गया। तीन लाख से अधिक आदमी सफलतापूर्वक नदी पार कर पूर्वी तट पर पहुचे। लेकिन इस समय तक जर्मन बटालियनें शहर पर प्रहार कर रही थी और सडको पर लडाइयां हो रही थी।

स्तालिनग्राद की ऐतिहासिक लडाई के बाद शहर क्या रह गया था।

स्तालिनग्राद की रक्षा इस कारण और भी जटिल हो गयी थी कि वह शहर वोल्गा के पश्चिमी तट पर ६० किलोमीटर तक अपेक्षाकृत पतली सी पट्टी के रूप में फैला हुआ था। भारी लडाइयो के बाद (मसलन रेलवे स्टेशन १३ बार कभी इस हाथ तो कभी उस हाथ पहुचता रहा) जर्मन सेना ने सितम्बर तक नगर के अधिकाश भाग पर कब्जा कर लिया और कई स्थानो पर नदी तक जा पहुची। सोवियत रेजिमेंटो के कब्जे मे नदी किनारे एक पतली सी पट्टी रह गयी थी मगर उसको भी शत्रु कई जगहो से भेदने मे सफल हुआ था। उस रक्षा क्षेत्र की चौडाई २०० मीटर से १५ किलोमीटर तक थी। जमीन का चप्पा-चप्पा शत्रु की गोलाबारी का निशाना बना हुआ था। लगता था कि ऐसी स्थिति मे एक दिन भी डटा

रहना असम्भव होगा। मगर स्तालिनग्राद के रक्षकों ने जीतकर ही दम लिया।

खुद स्तालिनग्राद में लड़ाई का असली भार जनरल चुइकोव के तहत ६२वीं सेना उठा रही थी: यह सेना स्तालिनग्राद मोर्चे का एक भाग थी। इस मोर्चे के कमांडर जनरल येर्योमेंको थे। जनरल वत्यूक, कर्नल गूर्त्येव, जनरल ल्यूदनिकोव और जनरल रोदीम्त्सेव आदि की रेजिमेंटों और डिवीजनों ने विशेष रूप से नाम कमाया।

भयंकर लड़ाइयां रात या दिन कभी भी एक क्षण के लिए नहीं रुकीं। स्तालिनग्राद की प्रतिरक्षा (शहर के आसपास की लड़ाइयों सहित) १२५ दिन चली और शहर की सड़कों पर लड़ाई ६८ दिन।

वोल्गा के ऊंचे तट पर खोदी हुई ख़न्दक़ों में, मकानों के खंडहरों में और बमों से बर्बाद घरों के तहख़ानों में सोवियत सैनिकों ने आख़िरी दम तक शहर की रक्षा की। जर्मन सेनाओं ने ७०० से अधिक हमले किये और हर क़दम की, जो उन्होंने बढ़ाया, भारी क़ीमत उन्हें अदा करनी पड़ी। तोपें मोर्चे की पांत के आर-पार गरज रही थीं, मार्टर शेलों और टैंकों का स्वर सुनाई दे रहा था। ऊपर विमानों का शोर एक क्षण के लिए बन्द नहीं होता था (जर्मन रोज़ १०० से २,५०० उड़ानें करते थे)। मामाई पहाड़ी की ढलान पर, जो लड़ाई का एक मुख्य केन्द्र था, स्तालिनग्राद की लड़ाई के बाद बमों, गोलों, मार्टर शेलों और हथगोलों के ५०० से १,२०० तक टुकड़े प्रति वर्ग मीटर में पाये गये थे।

सोवियत सैनिकों का साहस और सहनशक्ति अविश्वसनीय थी। फ़ैक्टरी-वर्कशापों और बमबारी से बर्बाद घरों में कई-कई दिन घोर लड़ाइयां होती रहीं। हर कमरे, हर कारखाने, हर सीढ़ी के लिए लड़ाई हुई।

"पाव्लोव गृह" की रक्षा की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। इस आधे विध्वस्त चारमंज़िला मकान पर, जो जर्मन पंक्तियों के अंदर धंस गया था, सितम्बर के अंत में सार्जेंट पाव्लोव के मातहत सैनिकों ने एक दस्ते से दख़ल कर लिया। ये सैनिक उस घर में ५८ दिन तक डटे रहे और जर्मनों ने अनंत हमलों के बाद आख़िर उसपर क़ब्ज़ा करने का प्रयत्न छोड़ दिया।

स्तालिनग्राद की रक्षा का इतिहास निस्स्वार्थ साहस, सहनशक्ति और सामरिक दक्षता के उदाहरणों से भरा पड़ा है। सभी सैनिक और

अफसर निशानेबाज जाइत्सेव के इन शब्दो को दुहराने के अधिकारी थे: "हमारे लिए वोल्गा के परे कही धरती नही है। हम डटे रहे है और अत तक डटे रहेगे।"

जर्मन सेनाए स्तालिनग्राद मे फस गयी थी और सफलता उनकी पहुच से बाहर थी। उनकी सबसे बढिया डिवीजनो को स्तालिनग्राद मे और उसके आसपास भारी क्षति उठानी पडी थी और जो विशाल सेना इस लडाई के लिए वहा जमा की गयी थी, वह अब पस्त गयी थी। सोवियत सैनिको के वीरतापूर्ण कारनामो ने जर्मन सर्वोच्च कमान की योजनाओ को विफल कर दिया। अब सोवियत सेनाओ के लिए प्रत्याक्रमण करने का समय आ गया था।

जब सेवास्तोपोल, वोरोनेज और स्तालिनग्राद के निकट और काकेशिया मे घमासान की लडाइया हो रही थी, तो बाकी देश मे युद्ध सबधी उद्योग विकसित करने के लिए अथक प्रयास किया जा रहा था।

ऊपर यह उल्लेख किया जा चुका है कि अनेक मुख्य आर्थिक क्षेत्रो पर शत्रु का कब्जा हो जाने के बावजूद जनवरी, १९४२ के बाद सोवियत औद्योगिक उत्पादन मे कुल मिलाकर वृद्धि होती जा रही थी। उस वर्ष के दौरान यह वृद्धि तेजी से जारी थी। देश के पूर्वी क्षेत्रो—उराल, वोल्गा क्षेत्र तथा मध्य एशिया—मे युद्ध सबधी उद्योग की पैदावार मे कई गुना वृद्धि हुई। उराल मे यह औद्योगिक उत्पादन युद्धपूर्व की तुलना मे पाच गुना, वोल्गा क्षेत्र मे ९ गुना और पश्चिमी साइबेरिया मे २७ गुना अधिक हो गया था। १९४२ के मध्य तक १,२०० फैक्टरिया, जो पश्चिम से हटा दी गयी थी, काम करने लगी थी और नयी फैक्टरिया अभूतपूर्व तेजी से बैठायी जा रही थी। १९४२ मे १०,००० से अधिक निर्माण-कार्य चालू थे। यहा यह बताने की कोई विशेष आवश्यकता नही है कि इतने विराट कार्य के लिए कितने भारी प्रयासो की जरूरत पडी होगी।

१९४२ मे २५,००० से अधिक विमानो, २४,००० टैको और कोई ५७,००० तोपो का उत्पादन हुआ। सेना की, जिसमे १९४२ के पतझड तक ६० लाख से अधिक सैनिक और अफसर थे, अब पर्याप्त मात्रा मे हथियारो और गोले-बारूद की रसद निश्चित हो चुकी थी। इस प्रकार युद्धकालीन स्तर पर अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन से प्रत्याक्रमण का मार्ग प्रशस्त हुआ और यह युद्ध के लिए एक मोड-बिन्दु सिद्ध हुआ।

सितम्बर में ही सर्वोच्च प्रधान सेनापति स्तालिन, उनके सहायक जनरल ज़ूकोव ग्रौर चीफ़ ग्राफ़ जनरल स्टाफ़ जनरल वसिलेव्स्की ने स्तालिनग्राद के निकट ग्राक्रामक कार्रवाई की योजना बनानी शुरू कर दी थी। दिन बीत रहे थे ग्रौर स्तालिनग्राद में प्रतिरक्षात्मक लड़ाई निरंतर जारी थी। साथ ही प्रत्याक्रमण की योजना तैयार की जा रही थी, जिसमें विभिन्न संबंधित मोर्चों तथा सेनाग्रों के प्रतिनिधियों ने सीधे भाग लिया ग्रौर नवम्बर के प्रारम्भ में "उरान" नामक इस योजना का ग्रंतिम रूप में ग्रनुमोदन कर दिया गया।

नये सोवियत सैन्य कोर ग्रौर डिवीजन वोल्गा के पूर्व स्तेपी में, दोन तथा स्तालिनग्राद के उत्तर-पश्चिम में पहुंचा दिये गये। कुछ जगहों पर सेना के ग्रावागमन के लिए नयी रेलवे लाइनें बनानी पड़ीं। दूसरे सैनिक दस्ते ३०० से ४०० किलोमीटर की दूरी तय करके संयोजन स्थान पर ग्रा पहुंचे। फ़ौज के दस्ते रात में चला करते थे ग्रौर मोटरगाड़ियां ग्रपनी बत्तियां जलाये बिना चलती थीं। टैंक ग्रौर मोटरगाड़ियों को वोल्गा के पार ले जाने के लिए स्तालिनग्राद के उत्तर ग्रौर दक्षिण में ख़ास तरह के पुल रात में लगा दिये जाते थे।

नवम्बर के उत्तरार्ध तक लगभग १० लाख सोवियत सैनिक स्तालिनग्राद क्षेत्र में जमा कर दिये गये थे। वे शत्रु पर, जिसकी संख्या १० लाख से कुछ ग्रधिक थी, हमला करने के लिए तैयार थे। १९ नवम्बर, १९४२ को स्तालिनग्राद के उत्तर-पश्चिम में दोन तटवर्ती स्तेपी में घना, ठंडा कोहरा छाया हुग्रा था। सुबह ७ बजकर ३० मिनट पर इस कोहरे को चीरते हुए सैकड़ों मिसाइल दुश्मन के ठिकानों की ग्रोर उड़े। इन "कात्यूशा" मिसाइल प्रक्षेपकों को सोवियत सेनाग्रों ने पहले १९४१ में इस्तेमाल किया था ग्रौर वे बहुत कारगर साबित हुए थे। इन्हीं मिसाइल की बौछार से स्तालिनग्राद में सोवियत प्रत्याक्रमण शुरू हुग्रा। "कात्यूशाग्रों" के बाद तोपख़ानों तथा मार्टरों ने गोलाबारी की ग्रौर एक घंटे बीस मिनट बाद टैंक ग्रौर पैदल सेना ग्रागे बढ़ने लगी।

"उरान" कार्रवाई की योजना क्या थी?

स्वयं स्तालिनग्राद में ग्रौर उसके ठीक ग्रासपास जर्मन, इतालवी ग्रौर रूमानियाई सेनाग्रों का बड़ा जमाव था: फ़ान पाउलुस के मातहत छठी जर्मन सेना, चौथी जर्मन टैंक सेना, ग्राठवीं इतालवी सेना

और तीसरी रूमानियाई सेना। इतालवी और रूमानियाई सेनाए मुख्य सेना के दोनो ओर स्तालिनग्राद के उत्तर-पश्चिम और दक्षिण मे खडी थी।

सोवियत सर्वोच्च कमान ने एकसाथ शत्रु के उत्तर पक्ष पर हमला करने तथा इसके लिए जनरल वतूतिन के तहत दक्षिण-पूर्वी मोर्चे के और जनरल रोकोस्सोव्स्की के मातहत दोन मोर्चे के सैनिको से काम लेने, और दक्षिण पक्ष पर स्तालिनग्राद मोर्चे के सैनिको से काम लेकर हमला करने और इस प्रकार शत्रु की मुख्य सेना को घेर लेने और अपने चगुल मे पकड लेने का फैसला किया।

इस योजना पर सफलतापूर्वक काम हुआ। उत्तर और दक्षिण दोनो मे शत्रु के रक्षा-प्रबध को तोडकर घुसने के बाद सोवियत टैंक चालको और सवार सेना ने शत्रु को पीछे से घेर लिया। २३ नवम्बर को शाम के चार बजे घेरा पूरा हो गया। ३ लाख से अधिक शत्रु सैनिक और उनके साथ ढेरो हथियार और फौजी सामान इस विशाल "कडाहे" मे फास लिये गये।

हिटलर के व्यक्तिगत आदेश के अनुसार घिरी हुई सेनाओ ने हथियार डालने से इनकार किया, यद्यपि सैकडो जर्मन सैनिक भूख, पाले और बमबारी से मर रहे थे। १० जनवरी को जनरल रोकोस्सोव्स्की और जनरल वोरोनोव के तहत सोवियत सेनाओ ने जर्मन ठिकानो पर प्रहार शुरू किया। २ फरवरी को लडाई के अतिम गोले चलाये गये। मानवजाति के इतिहास की यह एक महानतम लडाई समाप्त हो गयी। बंदियो की अनन्त पातिया बर्फ से ढकी स्तेपी को पार करके देश के भीतर की ओर चली। उनकी सख्या ९०,००० से अधिक थी।

वोल्गा की इस विजय ने युद्ध का रुख मोड दिया। जर्मनी को जितनी भारी क्षति पहुची, उससे उसकी सैन्य शक्ति बहुत कम हो गयी थी। रणनीतिक पहल जर्मन सर्वोच्च कमान के हाथ से निकल गया था।

स्तालिनग्राद की लडाई का ऐतिहासिक महत्व सारी दुनिया ने स्वीकार किया। सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने लिखा कि "उनकी शानदार विजय ने हमले की लहर को रोक दिया और आक्रमण की शक्तियो के खिलाफ मित्र-राष्ट्रो के युद्ध का मोड-बिन्दु साबित हुई।"

वोल्गा की लडाई के बाद लाल सेना ने उत्तरी काकेशिया मे, मोर्चे के केन्द्रीय भागो मे और लेनिनग्राद क्षेत्र मे बडे पैमाने पर हमला किया। सोवियत सेनाओ ने शत्रु के ११३ डिवीजनो को परास्त किया और यह उस

व्यापक हमले की शुरुआत थी, जिसने हमलावरों को सोवियत धरती से निकाल बाहर किया। सोवियत सेनाएं कई जगहों पर ६००–७०० किलोमीटर तक बढ़ गयीं और रास्ते में उन्होंने पूरे के पूरे प्रदेशों और अनेक बड़े शहरों को मुक्त किया।

लेकिन अभी भी जर्मनी के पास काफ़ी शक्ति थी और लगभग पूरे पश्चिमी और मध्य यूरोप पर उसका क़ब्ज़ा था। सोवियत संघ में भी बहुत बड़ा इलाक़ा शत्रु के हाथ में था। नाज़ी जर्मनी पर विजय पाने के लिए अभी लम्बा और कठिन रास्ता तय करना बाक़ी था।

युद्ध, जिसके मोर्चे की रेखा कहीं नहीं थी

सोवियत संघ पर फ़ासिस्ट आक्रमण के तुरंत बाद ही सभी अधिकृत क्षेत्रों में एक जन प्रतिरोध आन्दोलन शुरू हुआ। यह एक ऐसा युद्ध था, जिसके मोर्चे की रेखा कहीं नहीं थी, मगर जो मुख्य लड़ाई के समान ही तीव्र और कठोर था। सोवियत नर-नारियों ने, जिन्हें जर्मन अधिकार के अंतर्गत जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था, अपने देश, सोवियत सत्ता और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी श्रद्धा और वफ़ादारी का काफ़ी सबूत दिया।

पाठकों के सामने सोवियत जनगण द्वारा प्रतिरोधी संघर्ष का स्पष्टतर चित्र पेश करने के लिए आवश्यक है कि भूमिका के रूप में नाज़ियों द्वारा अधिकृत इलाक़ों में स्थापित शासन व्यवस्था का संक्षिप्त विवरण किया जाये। यह क्रूर, निर्मम हिंसा तथा आतंक का शासन था। नाज़ियों का उद्देश्य यह था कि सभी कम्युनिस्टों, कोम्सोमोल सदस्यों तथा स्थानीय सोवियत और ट्रेड-यूनियन संगठनों के कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी जाये। यहूदी आबादी औरतों, बच्चों और बूढ़ों सहित मार डाली जाये। कीयेव में कोई २ लाख नागरिक मारे गये। युद्ध के वर्षों में सोवियत भूमि ने कुल मिलाकर कोई एक करोड़ नागरिक और युद्धबन्दी काल-कवलित हुए तथा यातनाओं का शिकार हुए। अधिकृत इलाक़ों में नज़रबन्दी कैम्पों का जाल सा बिछा हुआ था, जहां बन्दियों के भाग्य में भूख या मारपीट और यन्त्रणाओं से मर जाना बदा था। गांवों और शहरों में लोगों को बड़ी संख्या में मौत के घाट उतारा गया। ज़रा-ज़रा सी बात नहीं मानने पर कड़े से कड़ा दंड दिया जाता और खुले प्रतिरोध पर तो कहना ही क्या।

गाव के गाव जला दिये जाते और बन्धक बनाये गये व्यक्तियो को गोली मार दी जाती।

अधिकृत इलाको को नियमित रूप से लूटा जाता था। एक के बाद एक रेलगाडियो मे भर-भरकर मास, चर्बी, अनाज और चीनी जर्मनी भेजी जाती। औद्योगिक उद्यमो तथा वैज्ञानिक सस्थानो से छीना हुआ सामान और उसके साथ सचित कोयला, कच्चा लोहा, इमारती लकडी आदि भी देश से बाहर भेज दी जाती। बहुमूल्य कलाकृतिया और ऐतिहासिक यादगारे भी जर्मनी भेज दी जाती थीं।

१९४१ के अत मे जर्मनो ने काम करने योग्य नर-नारियो (खासकर नौजवान पीढी के लोगो) को अपने कारखानो और खेतो मे काम करने के लिए ले जाना शुरू किया। उनके क़ब्ज़े की अवधि मे कोई ५० लाख आदमी जर्मनी भेजे गये।

नाज़ी हमलावरो को आशा थी कि इस तरह के आतक का राज स्थापित करके वे लोगो के मनोबल तथा प्रतिरोध की प्रतिज्ञा को कमजोर कर सकेगे। लेकिन निर्मम अत्याचार अधिकाश लोगो को भयभीत करने मे असफल रहा और यही नही, इसके विपरीत लोगो के मन मे हमलावरा से घृणा और तेज हो गयी।

इन इलाक़ो के रहनेवाला ने हमलावरो से लडने के अत्यत विविध उपाय निकाले। प्रतिरोध का मुख्य रूप गुरिल्ला (छापामार) आन्दोलन था। १९४१ मे ही गुरिल्ला दस्ते शत्रु की पातो के पिछले भागो म सक्रिय हो गये। स्कूल की छात्रा जोया कोस्मोदेम्यास्काया, कोम्सोमोल कार्यकर्त्री लीज़ा चाइकिना तथा गुरिल्ला जवान अलेक्सान्द्र चेकालिन के नाम देश भर मे प्रसिद्ध हो गये। इन सभी ने युद्ध के पहले महीनो मे ही दुश्मन की पातो के पिछले भागो मे लडाई की और बाद मे नाज़ियो ने उन्हे यत्रणाए दे देकर मार डाला।

१९४२–१९४४ मे गुरिल्ला आन्दोलन बहुत व्यापक हो गया। १९४३ के अत तक गुरिल्ला दस्तो मे कुल मिलाकर कोई २,५०,००० सशस्त्र योद्धा थे।

छोटे गुरिल्ला दस्तो के अलावा काफी सख्या मे अत्यत सगठित दस्ते भी स्थापित होने लगे। इनमे से कुछ बडे छापेमार दल, जिनमे १ हज़ार या उससे अधिक आदमी होते थे, शत्रु की पातो के पिछले भागो मे बडे पैमाने पर छापे मारा करते थे। सबूरोव और बोगातीर की कमान मे जितोमिर

गुरिल्ला दल ने, जिसमें १,६०० आदमी थे, १६४२ के पतझड़ में ब्रियान्स्क के जंगलों से द्नेपर के पश्चिमी तट तक ६०० किलोमीटर की दूरी सारे रास्ते लड़ते हुए तय की। कोव्पाक और रुद्नेव के तहत १,००० व्यक्तियों के सूमी गुरिल्ला दल ने उन्हीं दिनों छापा मारा, जिसमें वे देस्ना, द्नेपर और प्रिप्यात नदियों से होते हुए पोलेस्ये इलाक़े में सार्नी रेलवे जंकशन तक पहुंच गये। १६४३ के प्राथमिक महीनों में कोव्पाक दल ने कीयेव के पास शत्रु की सेना पर प्रहार किया और उस साल की गर्मियों में उसने कारपेथियन्स के इलाक़े पर प्रहार किया। यह गुरिल्ला हमला सबसे बड़ा था। कुल मिलाकर गुरिल्ला दस्तों ने २,००० किलोमीटर की दूरी तय की और रोज़ दुश्मन से मुठभेड़ करते रहे। उन्होंने दुश्मन के सत्रह बड़े गैरीज़न नष्ट किये और ५,००० से अधिक सैनिकों और अफ़सरों को मारा। कोव्पाक का दल एक-एक क़दम पर लड़ते हुए आगे बढ़ता रहा और अंत में कारपेथियन तेल क्षेत्र तक पहुंचने में सफल हुआ।

कोव्पाक ने लिखा: "तो हम आख़िर द्रोगोविच तेल क्षेत्र में पहुंच ही गये हैं! इतनी दूर आने में एक महीने से अधिक समय लग गया। रास्ते में दर्जनों बड़ी-छोटी लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। मगर आख़िर हम मंजिल पर आ ही पहुंचे। जनता के धन को इस तरह नष्ट करते हुए मन बहुत दुखी होता है। मगर युद्ध के नियम बड़े निर्मम होते हैं। आज हमें यह करना ही पड़ता है। दुश्मन को कमज़ोर करने और विजय का दिन नज़दीक लाने के लिए यह ज़रूरी है। लगभग एक सप्ताह तक पहाड़ों में कभी अन्धेरा नहीं हुआ। बित्कूव-याब्लुनोव तेल क्षेत्र में आग के शोले भड़क रहे थे।"

और भी दस्तों ने वीरतापूर्वक अनेक छापे मारे, जैसे नाऊमोव और अनीसिमेंको के तहत उक्रइनी स्तेपी में सवार दलों और मेल्निक के तहत वीन्नित्सा दल ने।

अनेक क्षेत्रों में जर्मन गैरीज़नों और प्रशासकीय निकायों को नष्ट करने के बाद गुरिल्ला दस्तों ने वास्तव में दोबारा सोवियत सत्ता स्थापित कर दी। १६४३ की गर्मियों में गुरिल्ला दस्तों द्वारा नियंत्रित इलाक़ा २,००,००० वर्ग किलोमीटर था।

सभी अधिकृत इलाक़ों में—करेलिया और बाल्टिक क्षेत्र से लेकर उत्तरी काकेशिया तक सैकड़ों गुरिल्ला दस्तों ने जर्मनों को आतंकित कर दिया

था। वे दुश्मन के गैरीज़नो पर प्रहार करते, पुल उडाते, दुश्मन की सैनिक रेलगाडियो को पटरी से गिराकर नष्ट करते और मोटर-सडको पर घात लगाकर हमले किया करते।

अगस्त, १६४३ मे एक कार्रवाई, जिसे बाद मे "रेल युद्ध" कहा जाता था, शुरू हुई। अनेक क्षेत्रो खासकर बेलोरूस मे सक्रिय गुरिल्ला दस्तो ने दुश्मन के रेल परिवहन को नष्ट करने के लिए व्यापक पैमाने पर कार्रवाई प्रारम्भ की। थोडे ही समय मे उन्होने केवल एक बेलोरूस मे २,११,००० रेले उडा दी।

गुरिल्ला कार्रवाइयो की बदौलत १६४३ मे दुश्मन की लगभग ६ हज़ार ट्रेनें बर्बाद हो गयी। ६ हज़ार रेलवे-इजन और मालगाडियो के लगभग ४० हज़ार डिब्बे बेकार कर दिये गये। ५५ हज़ार पुल और २२ हज़ार से अधिक मोटरगाडिया नष्ट कर दी गयी। यह कल्पना करना कठिन नही कि इन कारनामो को पूरा करने के लिए कितनी जानो की बाज़ी लगानी पडी होगी, कितनी भयकर लडाइया लडनी पडी होगी, कितना प्रयत्न करना और कितनी क्षति उठानी पडी होगी!

जून, १६४४ मे बेलोरूसी गुरिल्ला दस्तो ने अनेक मुख्य रेलवे-लाइनो पर रेल परिवहन को नष्ट कर दिया। गुरिल्ला आन्दोलन का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि १६४३ मे जर्मन सर्वोच्च कमान ने छापेमारो के खिलाफ़ बाकायदा सेना के २५ डिवीजन भेजे। पुलिस और उसके सहकारी दस्ते उसके अलावा थे।

नाज़ी-विरोधी प्रतिरोध का एक और रूप था शहरो, बस्तियो तथा गावो का अडरग्राउड आन्दोलन (गुप्त रूप से कार्य)। लगभग सभी अधिकृत नगरो और क्षेत्रो मे फासिस्ट-विरोधी अडरग्राउड सगठन कायम हुए और उनकी सरगर्मियो का दायरा बहुत व्यापक था। इस अडरग्राउड प्रतिरोध आन्दोलन के सदस्य स्थानीय नाज़ी अधिकारियो के काम मे, जो खाद्यान्न तथा अन्य बहुमूल्य सामान इकट्ठा करके जर्मनी भेजा करते, गडबडी पैदा करते। वे कारखानो और परिवहन मे तोड-फोड कराते, गुरिल्ला दस्तो की सहायता करते, सोवियत नागरिको के विदेश ले जाने मे बाधा डालते, तोड-फोड की कार्रवाइया करते, सोवियत परचे और समाचारपत्र छापते और बाटते, तथा जर्मन सेनाओ की आमद-रफ्त के बारे मे सूचना इकट्ठा करते।

इनमें से कुछ अंडरग्राउंड संगठनों के बारे में आज तक बहुत कम जानकारी प्राप्त हो सकी है, क्योंकि उनके सदस्य नाजियों द्वारा मार डाले गये थे।

अंडरग्राउंड प्रतिरोध-आन्दोलन का इतिहास निःस्वार्थ वीरता के उदाहरणों से भरा पड़ा है। पूर्वी उक्रइना के छोटे कोयला खान नगर क्रास्नोदोन में एक अंडरग्राउंड संगठन "तरुण गार्ड" के नाम से था। इसके नेताओं में थे कोम्सोमोल सदस्य कोशेवोई, तुर्केनिच, त्रेत्याकेविच, ग्रोमोवा, ज़ेम्नुख़ोव, त्युलेनिन और शेव्त्सोवा—इन सब को गेस्टापो ने भयंकर यातनाएं देने के बाद एक खान की सुरंग में जिन्दा डाल दिया।

रोव्नो नगर में, जहां उक्रइना के लिए राइख़सकमिसार एरिख कोख का सरकारी निवास-स्थान था, अंडरग्राउंड प्रतिरोध-आन्दोलन के सदस्य जर्मन जनरल फ़ान इल्गेन को, जो उक्रइना में स्थित विशेष दंडाधिकारी सेना का कमांडर था, सफलतापूर्वक भगा ले गये। इस कार्रवाई को कुज़्नेत्सोव ने संगठित किया था, जिन्होंने उक्रइना में नियुक्त मुख्य नाज़ी न्यायाधीश अल्फ़्रेड फ़ुंक और कोख के सहायक जनरल हेरमान क्नुत को भी मौत के घाट उतार दिया।

१९४३ में सितम्बर महीने की एक रात को प्रतिरोध-आन्दोलन की एक वीर महिला मज़ानिक ने बेलोरूस के लिए हिटलर के हाई कमिश्नर विल्हेल्म कूबे के मीन्स्क निवास-स्थान को उड़ा दिया।

नाज़ी हमलावर जितने दिनों सोवियत धरती पर रहे, उन्हें डर के मारे अपनी जान के लाले पड़े रहते थे। उनके गैरीज़नों, हेडक्वार्टरों, गोदामों, हवाई अड्डों और परिवहनों पर गुरिल्ला दस्तों तथा अंडरग्राउंड प्रतिरोध-आन्दोलन के सदस्यों द्वारा नितांत हमले किये जाते थे। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि नाज़ी हमलावरों के ख़िलाफ़ संघर्ष में लाखों सोवियत नागरिकों ने सक्रिय भाग लिया था। केवल एक बेलोरूस में ४,४०,००० से अधिक नर-नारियां गुरिल्ला और अंडरग्राउंड आन्दोलनों में भाग ले रहे थे।

दुश्मन के पिछवाड़े में फ़ासिज़्म के विरुद्ध वास्तव में इस राष्ट्रव्यापी लड़ाई का नेतृत्व कम्युनिस्ट संगठन कर रहे थे। लगभग सभी अधिकृत क्षेत्रों और शहरों में अंडरग्राउंड पार्टी समितियां और प्राथमिक पार्टी संगठन

कायम हो गये थे और प्रतिरोध को सगठित करने मे सक्रिय भाग ले रहे थे। युद्ध के इन्ही वर्षों की बात है कि अधिकृत इलाको मे हजारो नर-नारिया कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुए।

सोवियत सघ से हमलावरो को निकाल भगाया गया

सोवियत-जर्मन मोर्चे पर कुछ दिनो की मदगति के बाद १९४३ की गर्मियो मे फिर एक बडे पैमाने पर लडाई हुई।

जर्मन सर्वोच्च कमान ने गर्मियो मे एक और हमले का प्रयास करने का निश्चय किया। जर्मनी मे "सर्वव्यापी" लामबन्दी की गयी, जिससे सेना को और २० लाख सैनिक मिल गये। इस बीच जर्मन उद्योग मे युद्ध-सामान की पैदावार बढ रही थी। नये शक्तिशाली "टाइगर" और "पैन्थर" टैंक और "फर्डिनाड" स्वत चालित तोपें मोर्चे पर आने लगी। लेकिन अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे जर्मनी की स्थिति निश्चित रूप से बिगडती जा रही थी। ब्रिटिश और अमरीकी सेनाए (नवम्बर, १९४२ मे) उत्तरी अफ्रीका मे और बाद मे (जुलाई, १९४३ मे) सिसिली मे उतारी जा चुकी थी, जिससे फासिस्ट गुट की रणनीतिक स्थिति काफी कमजोर हुई। लेकिन इन कार्रवाइयो से जर्मन सेनाओ के एक बहुत छोटे से भाग को ही आकृष्ट किया जा सका। जर्मन डिवीजनो का विशाल भाग पहले की ही तरह अभी भी सोवियत-जर्मन मोर्चे पर था। वहा जर्मन सर्वोच्च कमान के पास २३२ डिवीजन थे, जिनके बल पर उसे विजय की आशा थी। फिर भी नये हमले की योजना अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र पर बनायी गयी। कार्रवाई "सिटाडेल" का उद्देश्य कूर्स्क के इलाके मे सोवियत सेनाओ को घेर लेना था और उसके बाद देश के अन्दर और आगे बढना था। उस क्षेत्र मे सोवियत सेनाए धरती की एक ऐसी पट्टी पर जमा थी, जो जर्मन मोर्चे मे घुसी हुई थी। इसे "कूर्स्क की लडाई" कहते थे।

५ जुलाई, १९४३ को प्रात काल जर्मन सेनाओ ने आक्रमण शुरू किया। उन्होने सैकडो टैंक लडाई मे झोक दिये। इससे उन्हे आशा थी कि सोवियत रक्षा-व्यवस्था को शीघ्र तोडकर आगे बढना सम्भव होगा। लेकिन यह नही होना था। जनरल रोकोस्सोव्स्की के तहत केन्द्रीय मोर्चे और जनरल

वतूतीन के तहत वोरोनेज मोर्चे की सोवियत सेनाओं ने पहले से अच्छी तरह तैयार रक्षा-व्यवस्था से खूब काम लेकर सख़्त मुक़ाबला किया। जर्मन सेनाएं भारी क्षति उठाकर एक सप्ताह में सिर्फ़ १२ – ३५ किलोमीटर आगे बढ़ सकीं।

१२ जुलाई को लड़ाई अपनी चरम-सीमा पर पहुंच गयी। उस दिन कूर्स्क के दक्षिण में प्रोख़ोरोव्का के निकट घमासान टैंक लड़ाई छिड़ गयी। दुश्मन के श्रेष्ठतम टैंक डिवीजन "तोतेनकोप्फ़", "राइख" और "अडोल्फ़ हिटलर" एक पहाड़ी मैदान से होकर आगे बढ़े। जनरल रोतमिस्त्रोव के ५वीं गार्ड टैंक सेना के टैंक उनका सामना करने चले और शीघ्र ही १,१०० टैंक जीवन-मरण की लड़ाई में एक दूसरे से भिड़ गये। छः खंडीय "महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के इतिहास" में उस लड़ाई का वर्णन इन शब्दों में किया गया है: "रणक्षेत्र टैंकों से खचाखच भरा था। दोनों पक्षों के लिए अलग होकर पुनः पांति जमाने के लिए न तो समय था और न ही स्थान। थोड़ी दूरी से चलाये गये गोले टैंकों के सामने और बग़ल की दीवारों में छेद करते हुए अन्दर घुस जाते थे, जिससे अक्सर गोले-बारूद का धमाका होता और टैंक टरेट उड़कर टूटे-फूटे टैंकों से कई मीटर की दूरी पर आ गिरते... थोड़ी ही देर में सारा आकाश जलते टैंकों के धुएं से भर गया। काली, झुलसी हुई धरती पर जलते टैंकों के शोले चमक रहे थे।"

कूर्स्क की लड़ाई में रूसी सेना को काटकर अलग कर देने के जर्मनों के प्रयत्न सफल नहीं हो पाये। इस बीच सोवियत सेनाओं ने शत्रु को दम लेने का अवकाश दिये बिना स्वयं हमला बोल दिया। जर्मन सेनाओं को मजबूरन पीछे हटना पड़ा। अगस्त में उन्होंने ओर्योल, बेलगोरोद और ख़ारकोव को त्याग दिया। इन्हीं जगहों से उन्होंने अपना कूर्स्क आक्रमण शुरू किया था। कूर्स्क की लड़ाई में सोवियत सेनाओं को शानदार विजय हुई। पचास दिनों में जर्मन सेना के पांच लाख आदमी मारे गये, घायल हुए या लापता हो गये (सरकारी जर्मन आंकड़ों के अनुसार)। कूर्स्क के हमले में ७० जर्मन डिवीजन इस्तेमाल किये गये थे, जिनमें से ३० बर्बाद हो गये।

उस समय से लेकर युद्ध के ठीक अंत तक रणनीतिक पहल सोवियत सेनाओं के हाथों में रही। लगभग २०० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर व्यापक आक्रमण किया गया।

अगस्त और सितम्बर मे जनरल मलिनोव्स्की और जनरल तोल्बूखिन की सेनाओ ने दोनेत्स बेसिन को, जो देश मे कोयले और धातुकर्म का एक मुख्य केन्द्र था, मुक्त कर लिया।

सोवियत आक्रमण का एक महत्वपूर्ण मार्गचिह्न द्नेपर के लिए लडाई थी। नाज़ी सर्वोच्च कमान ने इस बीच लम्बी-खिंची लडाई और रणनीतिक रक्षा की नीति अपना ली। उसे भरोसा था कि द्नेपर के मोर्चे पर वह अपनी स्थिति को और मजबूत बना लेगा। हिटलर के प्रचारक द्नेपर की अपनी रक्षा व्यवस्था को "महान पूर्वी दीवार" कहा करते थे।

लेकिन सोवियत सेनाओ ने लडते-लडते द्नेपर तक पहुच जाने के बाद तुरत उस चौडी, तेजी से बहनेवाली नदी को पार करने की तैयारी शुरू कर दी। रात के अधियारे मे और दिन को कृत्रिम धुए के बादलो की आड मे छोटे-छोटे प्रहारक दलो और सारी बटालियनो ने द्नेपर को पार किया। जर्मनो ने द्नेपर मे सभी सोवियत जहाजो और नौकाओ को या तो डुबो दिया था या उनपर क़ब्ज़ा कर लिया था, इसलिए सोवियत सैनिको को जो कुछ हाथ आया, वही साधन इस्तेमाल करना पडा। मछलीमारो के बजरे, लकडी के लट्ठो, तख्तो या खाली पीपो को बाधकर बनाये बेडे, टूटे-फूटे घरो के दरवाजे, भूसा-भरी तबू-तिरपाल – सोवियत सैनिको ने सब कुछ इस्तेमाल किया। उनके पीछे-पीछे इजीनियर दस्ते चले, जिन्होने टैको, तोपो और मोटरगाडियो के लिए मजबूत नाव-पुल बनाये। द्नेपर के उस क्षेत्र मे, जो ७०० किलोमीटर लम्बा था, यह वीरतापूर्वक हमला इतना आश्चर्यजनक था कि जर्मन सेनाओ के होश उड गये। नदी पार करनेवाले सोवियत सैनिको पर वे बराबर गोलियो की बौछार करते रहे, उन सोवियत दस्तो पर, जो द्नेपर के पश्चिमी तट पर उतरे, उन्होने सख्त प्रहार किये, मगर स्थिति को सभालना उनके बस मे नही था।

उस साल सितम्बर और अक्तूबर मे द्नेपर के पश्चिमी तट पर सोवियत सेनाओ के कई महत्वपूर्ण अड्डे स्थापित किये गये। आगे हमले की तैयारी करने के लिए कई प्रहारक सेनाए जमा की गयी। जनरल वतूतिन ने उक्रइना की राजधानी कीयेव के उत्तरी भाग में अपनी सेनाए एकत्रित की। ३ नवम्बर के भोर मे हमला शुरू हुआ। सोवियत सैनिक कीयेव को मुक्त करना चाहते थे। कर्नल स्वोबोदा के नेतृत्व मे प्रथम चेकोस्लोवाक पृथक ब्रिगेड ने इस लडाई मे सोवियत सैनिको के सग कन्धे से कन्धा मिला-

कर भाग लिया। स्वोबोदा ने अपने सैनिकों से कहा कि "कीयेव के लिए इस तरह लड़ो जैसे प्राग और ब्रातिस्लावा के लिए लड़ रहे हो।"

शत्रु ने जबर्दस्त मुक़ाबला किया और सोवियत पक्ष से जनरल रिबाल्को के नेतृत्व में तीसरी गार्ड टैंक सेना भेजी गयी। एक रात टैंक हमले के दौरान वह सेना जर्मन प्रतिरक्षा-पांत को तोड़कर आगे बढ़ गयी। ५ नवम्बर को सोवियत सैनिक कीयेव के छोर तक पहुंच गये और उसी रात शहर के अन्दर भी सड़कों और गलियों में लड़ाइयां छिड़ गयीं। प्रातःकाल चार बजे लड़ाइयां समाप्त हो गयीं और उक्रइना की राजधानी, "रूसी नगरों की मां" आख़िर मुक्त हो गयी।

१९४३ में सोवियत सेनाओं को मुख्य सफलताएं प्राप्त हुईं। युद्ध का पलड़ा हिटलर के ख़िलाफ़ भारी हो गया था। हमलावरों को सोवियत धरती से अधिकाधिक तेजी से खदेड़कर निकाला जा रहा था। लाल सेना सैकड़ों किलोमीटर पश्चिम की ओर बढ़ गयी थी और जर्मन क़ब्ज़े से कोई दो तिहाई सोवियत इलाक़ा आजाद कर लिया था।

पीछे हटती हुई जर्मन सेनाओं ने नियमित रूप से "भूमिध्वंस" नीति अपनायी, कारख़ाने, बिजलीघर, रेलवे स्टेशन, अनुसंधान संस्थाएं तथा रिहायशी इमारतें उड़ा दिये और पूरे के पूरे गांवों को जला डाला। विशेष विध्वंसक दल बारूद बिछाते और घरों पर पेट्रोल छिड़कते चलते। जितनी मशीनें, सामान और कच्चा माल ट्रेनों में ले जाया जा सकता, जर्मनी भेज दिया गया।

विशाल क्षेत्रों को बिल्कुल नष्ट कर दिया गया था। इन इलाक़ों के लोगों की हालत, जिन्हें जर्मन क़ब्ज़े की मुसीबतें झेलनी पड़ी थीं, और ख़राब हो गयी। बीसियों लाखों आदमियों को तहख़ानों और झोंपड़ियों में शरण लेनी पड़ी। नगरों में पानी या बिजली का कोई प्रबंध नहीं था।

सोवियत सरकार ने इन पूर्वाधिकृत इलाक़ों के लोगों को हर प्रकार की सहायता देने के लिए सक्रिय कार्रवाइयां कीं। अगस्त, १९४३ में "जर्मन क़ब्ज़े से मुक्त इलाक़ों की अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार के लिए तत्काल कार्रवाइयों" के बारे में एक विशेष विज्ञप्ति निकली। आवश्यक सामान और खाद्यान्न की सप्लाई के मामले में इन इलाक़ों को प्राथमिकता दी गयी। कारख़ानों, बिजलीघरों, खदानों, धमन भट्टियों और रिहायशी इमारतों के पुनरुद्धार का काम शुरू किया गया। देहाती क्षेत्रों को ट्रैक्टर, अन्य

तेहरान। १९४३

कृषि-उपकरणो और मवेशी भी भेजे गये। बडी कठिनाइयो का सामना करने के बावजूद धीरे-धीरे जीवन साधारण रास्ते पर आने लगा था।

१९४३ मे सोवियत सेनाओ द्वारा प्राप्त सफलताओ के कारण फ़ासिस्ट गुट अधिकाधिक कमज़ोर होता गया। सोवियत-जर्मन मोर्चे पर इटली के श्रेष्ठतम डिवीजनो की शिकस्त से मुस्सोलिनी की फ़ासिस्ट तानाशाही का सकट और भी तीव्र हो उठा। इससे सिसिली मे और आगे चलकर (१९४३ की गर्मियो मे) स्वय एपीनाइन्स प्रायद्वीप मे ब्रिटिश और अमरीकी सेनाए उतारना आसान हो गया और शीघ्र ही इटली ने हथियार डाल दिये। वह युद्ध से बाहर हो गया। लेकिन जर्मन सेनाए देश के एक बडे भाग पर दखल करने मे कामयाब हुई और इतालवी फ़ासिस्टो की सहायता से उन्होने अग्रेज़ो तथा अमरीकनो का आगे बढ़ना रोक दिया।

इस बीच हिटलर-विरोधी सयुक्त मोर्चा अपनी शक्ति को सुदृढ कर रहा था, सोवियत सघ, ब्रिटेन और सयुक्त राज्य अमरीका के बीच कार्रवाइयो के सबध मे पहले से अधिक गहरा समन्वय हो गया था। इसकी

अभिव्यक्ति ख़ासकर तेहरान में त्रिदेशीय सम्मेलन में हुई। स्तालिन, चर्चिल और रूज़वेल्ट पहली बार सम्मेलन की मेज के चारों ओर तेहरान ईरान की राजधानी में (२८ नवम्बर से १ दिसम्बर, १९४३ तक) मिले। इस समय भी चर्चिल ने दूसरा मोर्चा खोलने (फ़्रांस में बड़ी सेनाएं उतारने) में टाल-मटोल करना चाहा, और भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में सामरिक कार्रवाई तेज करने पर अधिक ज़ोर दिया, हालांकि सैनिक दृष्टि से इस कार्रवाई का महत्व गौण था। सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने ज़ोर दिया कि फ़्रांस में सेनाएं उतारने में मई, १९४४ से अधिक देर नहीं की जाये, क्योंकि वह जानता था कि युद्ध का शीघ्रातिशीघ्र अंत करने के लिए यह ज़रूरी था। और ठीक यही बात थी, जिसपर तेहरान सम्मेलन में तीनों देश एकमत हुए जैसा कि सम्मेलन की घोषणा में उल्लिखित है।

फ़ासिस्ट गुट को बिल्कुल परास्त करने के लिए जिस संयुक्त कार्रवाई को कार्यान्वित करना था, उसका उल्लेख त्रिदेशीय घोषणा में इन शब्दों में किया गया था: "संसार में कोई शक्ति हमें जर्मन स्थल सेनाओं को, समुद्र में उनकी पनडुब्बियों को और विमानों द्वारा उनके सामरिक कारख़ानों को नष्ट करने से नहीं रोक सकती। हमारा हमला निर्मम और अधिकाधिक विस्तृत होगा।"

१९४४ के प्रारम्भ तक मोर्चे से दूर नागरिकों के सफल निस्स्वार्थ श्रम की बदौलत सोवियत सेना के पास जर्मनों से अधिक तोपें, टैंक और विमान हो चुके थे। फिर भी जर्मन सेना अभी बहुत शक्तिशाली थी। १९४४ की गर्मियों तक जर्मनी अपने सामरिक उद्योग की पैदावार का विस्तार करता रहा। सोवियत-जर्मन मोर्चे पर लगभग ५० लाख अफ़सर और सैनिक श्रेष्ठतम शस्त्रों से लैस थे। जर्मनी और उसके मित्र-राष्ट्रों की मुख्य सेनाएं— कोई ७० प्रतिशत—अभी भी सोवियत धरती पर थीं। सोवियत-जर्मन मोर्चा अभी भी युद्ध का मुख्य और निर्णायक मोर्चा था।

१९४४ के प्रारम्भ में सोवियत सेनाओं ने अनेक बड़े हमले किये। विजय के पथ पर एक महत्वपूर्ण मार्ग-शिला लेनिनग्राद को घेरनेवाली शत्रु की फ़ौजों की हार थी। ये फ़ौजें वहां १९४१ की पतझड़ के समय से जमी हुई थीं। जनवरी, १९४३ में ज़बर्दस्त प्रयास कर सोवियत सेनाएं आठ-नौ किलोमीटर चौड़ी पट्टी पर क़ब्ज़ा करने में सफल हुईं, जिससे लादोगा झील से दक्षिण शहर तक जाने का स्थलीय रास्ता मिल गया।

यह शहर को बचाने की दिशा मे एक महत्वपूर्ण कदम था, लेकिन इससे घेरा समाप्त नही हुआ। जर्मन तोपखाना शहर के रिहायशी इलाको पर निरतर बमबारी करता रहा। जर्मन सेना ग्रूप "उत्तर" ने जनरल कूखलेर के तहत शहर के उपनगर की सीमा पर शक्तिशाली प्रतिरक्षा-पात कायम कर रखी थी, कवच, कक्रीट और पत्थर से सुरक्षित अनेक प्रतिरोधी अड्डे बनाये थे। रेलवे की मेडें, बाध, नहरे और पत्थर के मकान – इन सबसे स्थायी प्रतिरोध का काम लिया जा रहा था। जर्मन इस प्रतिरक्षा-पात को "उत्तरी दीवार" और "इस्पात का चक्र" कहा करते थे।

मगर जनरल गोवोरोव और जनरल मेरेत्स्कोव के तहत लेनिनग्राद और वोल्खोव मोर्चों की सेनाए १४ जनवरी, १९४४ को शुरू किये गये अपने हमले के दौरान शत्रु की प्रतिरक्षा-पात को तोडने मे सफल हुई। आखिरकार लेनिनग्राद का घेरा, जो ९०० दिन तक रहा और जिसके कारण नगरवासियो को इतना कष्ट और मुसीबत उठानी पडी समाप्त हो गया।

इस बीच मोर्चे के दक्षिणी भाग मे जनरल कोन्येव और वतूतिन की सेनाए शत्रु पर वीरतापूर्वक प्रहार कर रही थी और अत मे कोर्सुन-शेव्चेंकोव्स्की के निकट (कीयेव के दक्षिण मे) वे एक बडे जर्मन सैनिक ग्रूप को घेरने और नष्ट करने मे सफल हुई। शत्रु के ७०,००० से अधिक सैनिक हताहत हुए या बन्दी बना लिये गये। वसत मे बर्फ पिघलने से पैदा हुई कठिनाइयो के कारण सोवियत सेनाओ को तेज़ बहती हुई अनगिनत छोटी-बडी नदिया पार करनी पडी। इसके बावजूद वे पश्चिम की ओर बढी और उकइना और मोल्दाविया की भूमि पर पहुची। २६ मार्च को अग्रणी दस्तो को अगूर की बेलो से ढकी पहाडियो से प्रूत नदी का चौडा पाट दिखाई दिया। सोवियत सघ की राज्य-सीमा इसी नदी के साथ-साथ जाती थी।

अप्रैल के प्रारम्भ मे क्रीमिया मे तोपे गरजने लगी। जनरल येर्योमेको और जनरल तोल्बूखिन की सेनाए और काले सागर स्थित नौसेना के (एडमिरल ओक्त्याब्रुस्की की कमान मे) तथा अज़ोव सागर सैनिक बेडे के (एडमिरल गोर्श्कोव के तहत) जहाज क्रीमिया प्रायद्वीप को मुक्त करने के लिए आगे बढे। कुछ ही दिनो मे क्रीमिया का मुख्य भाग मुक्त कर दिया गया। शत्रु ने सेवास्तोपोल मे मोर्चाबदी करने की कोशिश की। पूरी तैयारी

के वाद सोवियत सेनाओं ने अंतिम हमला शुरू किया। ७ मई को सेवास्तोपोल के निकट सपून पहाड़ी के लिए घमासान लड़ाई हुई। यह पहाड़ी जर्मनों का मुख्य प्रतिरोध केन्द्र थी, जिसपर छः परतों में ख़न्दकें खुदी हुई थीं, सुरंगें बिछी थी और कंटीले तारों की कई क़तारें वांधी गयी थीं। सोवियत सैनिक लाल झंडे उड़ाते गोलियों की वौछार में वढ़ते गये। झंडावरदार गिरते, मगर दूसरे सैनिक आगे वढ़कर झंडे थाम लेते। दिन समाप्त होते-होते ये झंडे सपून पहाड़ी की चोटी पर फहरा रहे थे। ६ मई को सेवास्तोपोल पूरी तरह मुक्त हो गया।

सोवियत सैनिकों द्वारा प्राप्त सफलताओं से यह निर्विवाद रूप से प्रकट हो गया था कि नाज़ी जर्मनी की मुकम्मल शिकस्त दूर नहीं है और यह कि सोवियत संघ इस स्थिति में था कि पूर्णतया अपने साधनों के वल पर उस शिकस्त को सुनिश्चित करे और यूरोप की अधीन जातियों को मुक्त करे। तव कहीं संयुक्त राज्य अमरीका और व्रिटेन के राजनीतिक और सैनिक नेताओं ने यह तय किया कि अव दूसरा मोर्चा खोलने में टाल-मटोल से काम नहीं लेना चाहिए। ६ जून को आइज़नहावर के तहत व्रिटिश और अमरीकी सेनाएं नार्मांडी (उत्तरी फ़्रांस) में उतरीं। पतझड़ के समय तक वे फ़्रांसीसी प्रतिरोध-आन्दोलन की सहायता से जर्मन सेनाओं को फ़्रांस से और फिर वेल्जियम, लक्ज़ेम्वर्ग और हालैंड के भी एक काफ़ी वड़े हिस्से से निकालकर वाहर करने में सफल हुईं। उन्हें कोई ६० जर्मन डिवीजनों का मुक़ावला करना था, जवकि उस समय सोवियत मोर्चे पर शत्रु के २२८ डिवीजन और २२ व्रिगेड थे।

१६४४ की गर्मियों में सोवियत आक्रमण ने वड़ी तेजी से ज़ोर पकड़ा। उत्तर-पश्चिम में वड़े पैमाने की एक कार्रवाई के फलस्वरूप सोवियत फ़ौजों ने मनेरहाइम रेखा की मजवूत क़िलावन्दियों को तोड़ दिया और फ़िनिश सेनाओं को परास्त कर दिया। तव फ़िनलैंड ने युद्ध-विराम का आग्रह किया और उस मोर्चे पर लड़ाई की कार्रवाइयां ४ सितम्वर को रोक दी गयीं।

युद्ध की उस मंज़िल की वड़ी कार्रवाइयों में से एक थी जुलाई और अगस्त, १६४४ में वेलोरूस में हमले की कार्रवाई। इसका मोर्चा कोई ५०० किलोमीटर तक फैला हुआ था। जनरल वग्रम्यान, जनरल चेर्न्याख़ोव्स्की, जनरल ज़ख़ारोव और जनरल रोकोस्सोव्स्की के तहत सोवियत सेनाओं ने एक सबसे शक्तिशाली जर्मन

फौज को नष्ट कर दिया। यह फील्ड मार्शल मोडेल के तहत सेना ग्रूप "केन्द्र" था। जनरल बेर्लिंग के तहत प्रथम पोलिश सेना ने, जो सोवियत भूमि पर सगठित की गयी थी, इस कारंवाई मे भाग लिया, जिसमें शत्रु के ५,४०,००० आदमी काम आये। उस समय तक पूरा बेलोरूस और लिथुआनिया का बड़ा भाग मुक्त हो चुका था। शत्रु का पीछा करती सोवियत सेनाओ ने पोलिश क्षेत्र मे प्रवेश किया।

उस साल गर्मी और पतझड के दौरान सोवियत सेना ने बाल्टिक जनतत्रो – एस्तोनिया, लातविया तथा लिथुआनिया – को मुक्त कर लिया और अगस्त तथा सितम्बर मे सफल यास्सी-किशिनेव कारंवाई की बदौलत काफी प्रगति हुई। जनरल मलिनोव्स्की और जनरल तोल्बूखिन की सेनाओ ने यास्सी-किशिनेव इलाके मे २२ जर्मन डिवीजनो को घेरकर नष्ट कर दिया, जिससे वे पूरे मोल्दाविया को मुक्त कर सके और उन्हे रूमानिया के भीतर होकर जाने का रास्ता मिल गया। २३ अगस्त को रूमानिया मे देशभक्तिपूर्ण शक्तियो ने अन्तोनेस्कू फासिस्ट तानाशाही का तख्ता उलट दिया और उसके स्थान पर नयी रूमानियाई सरकार बनी, जिसने नाजी जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

सोवियत सेनाओ ने रूमानिया पार कर जाने के बाद बल्गारिया मे प्रवेश किया और इससे उस जन-विप्लव को और अधिक बल मिला, जिसकी तैयारी बल्गारिया के कम्युनिस्ट दिमीत्रोव के नेतृत्व मे कर रहे थे। बल्गारियाई गुरिल्ला दस्ते पहाडो से नीचे आने और शहरो तथा गावो पर कब्जा करने लगे। ६ सितम्बर को सोफिया रेडियो ने घोषणा की कि विप्लव सफल हुआ और पितृभूमि मोर्चे की सरकार कायम हो गयी है। उसके बाद बल्गारिया ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

२३ सितम्बर को सोवियत पैदल सेनाओ ने यूगोस्लाविया की क्रातिकारी सरकार की सहमति से यूगोस्लाविया की सीमा पार की। तीन साल से अधिक मुद्दत से जर्मन नाजियो द्वारा अधिकृत यूगोस्लाविया मे एक राष्ट्रीय मुक्ति-सघर्ष चलता आ रहा था और कम्युनिस्टो के नेतृत्व मे श्रमजीवी जनता ने काफी सफलताए प्राप्त की थी। लेकिन अब भी जर्मन फौजे यूगोस्लाविया मे महत्वपूर्ण स्थानो पर दखल किये हुए थी और जर्मनो के अतिम प्रतिरोध को कुचलने के लिए सोवियत सेनाओ की सहायता जरूरी थी।

पहाड़ों में लड़ते और दो नदियां डेन्यूब तथा मोरावा पार करते हुए सोवियत डिवीजन तीतो की कमान में यूगोस्लाव राष्ट्रीय मुक्ति सेना के संग बेलग्रेड की ओर बढ़े और २० सितम्बर को यूगोस्लाविया की राजधानी मुक्त हो गयी।

उस समय पोलैंड में हृदयविदारक घटनाएं हो रही थीं। पोलिश जनगण हमलावरों के विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ रहे थे। पोलैंड के मेहनतकशों ने स्वयं अपने सशस्त्र दस्ते और अंडरग्राउंड सत्ता निकाय ("रादा नरोदोवा") क़ायम कर लिये थे। जब १९४४ की गर्मियों में पूर्वी पोलैंड मुक्त हुआ, तो "क्रायोवा (केन्द्रीय) रादा नरोदोवा" ने राष्ट्रीय मुक्ति की एक पोलिश समिति स्थापित की, जिसे आगे चलकर अस्थायी सरकार के रूप में पुनर्गठित किया गया। इस समिति में विभिन्न प्रगतिशील राजनीतिक दलों और संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे। वह केन्द्रीय कार्यकारिणी संस्था थी, जिसकी जड़ें जन मुक्ति संग्राम में जमी हुई थीं और जिसका आम जनता से गहरा संबंध था। लेकिन उस समय एक और समानान्तर सरकार भी थी और वह थी लन्दन में प्रवासी सरकार। लन्दन सरकार ने पोलैंड में स्वयं अपनी अंडरग्राउंड फ़ौज बनायी, जिसका नेतृत्व प्रतिक्रियावादी शक्तियों के हाथ में था। वे सशस्त्र फ़ासिस्ट-विरोधी संग्राम करने का विरोध करतीं और अपनी ताक़त भविष्य के लिए बचाकर रखना चाहती थीं। "अच्छा है सोवियत सेनाएं और पोलिश गुरिल्ला जर्मनों के ख़िलाफ़ लड़ाइयों में अपना ख़ून बहायें। जब वे जर्मनों को निकाल बाहर कर देंगे, तो हम ताजादम और अपनी शक्ति को ज्यों का त्यों लेकर सत्ता पर अधिकार करने आयेंगे।" इसी आधार पर प्रतिक्रियावादियों का मन काम करता था।

१९४४ की गर्मियों में उन्होंने सोचा कि समय आ गया है: सोवियत सेनाएं पोलैंड में प्रवेश कर चुकी थीं और वारसा की ओर बढ़ रही थीं।

१ अगस्त को लन्दन सरकार की ओर से जनरल बूर-कोमारोव्स्की ने वारसा में विद्रोह शुरू करने का आदेश जारी किया। पोलिश राजधानी के निवासियों ने, जिन्हें विद्रोह संगठित करने के पीछे असल उद्देश्यों का पता नहीं था, शत्रु के विरुद्ध वीरतापूर्वक संघर्ष शुरू किया। वे दो महीने तक लड़ते रहे, लेकिन शत्रु की तुलना में उनकी शक्ति नगण्य थी। हिटलर

के खास आदेशानुसार शहर को हवाई बमबारी और तोपो की गोलाबारी के जरिये मलियामेट कर दिया गया और वारसा के निवासियो की बेदर्दी से हत्या की गयी। वारसा काड मे लगभग २ लाख पोल मौत के घाट उतारे गये। "प्रतिक्रियावाद लाशो के अम्बार को सत्ता की प्राप्ति का केवल एक साधन मानता था।" ये शब्द कम्युनिस्टो के नेता गोमूल्का ने लिखे।

यद्यपि जनरल बूर-कोमारोव्स्की ने विद्रोह के सबध मे अपनी योजना को सोवियत सर्वोच्च कमान के साथ समन्वित नही किया था और अपने निश्चय की सूचना भी नही दी थी, फिर भी सोवियत सेना ने यथाशक्ति विद्रोहियो की सहायता करने मे कोई कसर नही छोडी। सोवियत विमानो ने जर्मन ठिकानो पर बमबारी की और विद्रोहियो के लिए हथियार, गोला-बारूद और दवादारू का सामान गिराया। सोवियत डिवीजन लडते हुए आगे बढते आ रहे थे, लेकिन स्थिति बहुत पेचीदा थी। चालीस दिन तक आक्रमण मे कभी कोई ढिलाई नही की गयी थी, सोवियत सेनाए बराबर लडती हुई ५०० से ७०० किलोमीटर तक बढ आयी थी। वे थकी-मादी थीं और रसद और तोपखानेवाले दस्ते पीछे रह गये थे। पैदल सेना के पास गोला-बारूद की बहुत कमी थी, टैंको मे ईंधन नही रहा था और वायुसेना के दस्तो को नये हवाई अड्डो पर अपनी शक्ति पुनर्गठित करने का मौका नही मिला था। इसके विपरीत जर्मन सर्वोच्च कमान ने वारसा के बाहर विस्तुला नदी तट पर शक्तिशाली प्रतिरक्षा-पात कायम कर रखी थी, उस क्षेत्र मे नयी सेनाए भेज दी थी और कई जवाबी हमले किये थे। यही कारण था कि सोवियत सेनाए वारसा मे घुस नही सकी। उन्ह भारी क्षति उठानी पडी (अगस्त मे और सितम्बर, १९४४ के पूर्वार्द्ध म प्रथम बेलोरूसी मोर्चे के १,६६,००० आदमी पोलैंड मे हताहत हुए और केवल अगस्त मे प्रथम उक्रइनी मोर्चे के १,२२,००० आदमी काम आये) और अत मे उन्हें रक्षात्मक नीति अपनानी पडी। एक नये हमले की तैयारी करने के लिए काफी समय की जरूरत थी।

१९४४ का वर्ष, जिसमे सोवियत सेनाओ ने बडी विजयें प्राप्त की थी, जब समाप्त होने लगा, तो पूरा सोवियत सघ नाजी आक्रमण-कारियो से मुक्त हो चुका था (केवल लाटविया के पश्चिम म एक अतिम

मास्को में जर्मन युद्धवन्दी। १६४४

घिरा हुआ जर्मन ग्रूप समुद्र की ओर पीठ किये युद्ध के ठीक अंत तक डटा रहा)।

अपनी मुक्ति-भूमिका को पूरा करने के दौरान सोवियत सेनाओं ने फ़ासिस्टों को पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी यूरोप के अनेक देशों से खदेड़ा। फ़ासिस्ट गुट वास्तव में छिन्न-भिन्न हो चुका था।

इन सभी सफलताओं के लिए सोवियत सेनाओं को भारी क़ीमत चुकानी पड़ी। शत्रु ने बड़ा ज़बर्दस्त प्रतिरोध किया था। फ़ासिस्ट प्रचार द्वारा अधिकांश जर्मन सैनिकों और अफ़सरों को यह विश्वास दिला दिया गया था कि अगर जर्मनी की हार हुई, तो सोवियत इलाक़े में की गयी बर्बादी और हिंसा का बदला लेने के लिए उन्हें एक-एक करके नष्ट कर दिया जायेगा। इस बीच फ़ासिस्टों ने अपनी सेनाओं में अनुशासन क़ायम रखने के लिए अपने आतंक के शासन को अभूतपूर्व सीमा तक पहुंचा दिया था।

संपूर्ण विजय प्राप्त करने, फ़ासिज़्म का नामोनिशान मिटाने और यूरोप की जातियों को हिटलर के आतंक से मुक्त करने के लिए सोवियत सेनाओं की दृढ़ प्रतिज्ञा फ़ासिस्ट सेनाओं की क्रूरता से, जिनका विनाश

अब स्पष्टत सामने था, सर्वथा भिन्न थी। यही कारण था कि सोवियत सैनिको ने इन आखिरी दिनो के आक्रमण के दौरान भी पहले ही की तरह, युद्ध की पहले दौर की रक्षात्मक लडाइयो के दौरान की ही तरह साहस का परिचय दिया। ऐसी कितनी ही घटनाए हुईं, जिनमे सैनिको ने शत्रु के पिल-बाक्सो मे मशीनगनो के लिए बने सूराखो को अपने शरीर से ढाक दिया (इसका एक उदाहरण सैनिक मत्रोसोव का कारनामा है) या अपनी जान देकर शत्रु के टैंको को उडा दिया। इस युद्ध का इतिहास सभी सेनाओ के प्रतिनिधियो—पैदल सैनिको, सफरमैना के लोगो, टैंक-चालको तथा विमान-चालको, तोपचियो और नौसैनिको—के नि स्वार्थ साहस के आश्चर्यजनक, अविस्मरणीय कारनामो से भरा पडा है।

युद्ध की अंतिम मजिल

१९४५ मे आक्रमणकारी अतिम रूप मे पराजित हुए और दूसरे विश्व-युद्ध का अत हुआ। सोवियत-जर्मन मोर्चे पर लडाइया अत तक तीव्र रही। अतिम लडाइया भी उतनी ही भयकर थी जितनी पहले की और उनमे दोनो पक्षो को भारी क्षति पहुची।

निर्णायक सोवियत हमला जनवरी मे दूसरे सप्ताह के मध्य मे शुरू हुआ। वह निश्चित दिन से कुछ पहले ही शुरू किया गया, ताकि पश्चिमी मोर्चे पर ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओ की स्थिति को, जो दिसम्बर, १९४४ के उत्तरार्द्ध मे फ़ील्ड मार्शल मोडेल के २५ डिवीजनो द्वारा अर्डेनस पहाडो (बेल्जियम) मे बुरी तरह दबी हुई थी, कुछ सुधारा जा सके। चर्चिल ने ६ जनवरी, १९४५ को स्तालिन को सूचित किया कि "पश्चिम मे लडाई बहुत भयकर हो रही है" और मित्र-राष्ट्रो के लिए सहायता मागी। स्तालिन ने तुरत उत्तर दिया कि "पश्चिमी मोर्चे पर अपने मित्र-राष्ट्रो की स्थिति को देखते हुए सर्वोच्च कमान के जनरल हेडक्वार्टरस ने फैसला किया कि जल्दी से तैयारिया पूरी कर ली जायें और शत्रु पर बडे पैमाने पर प्रहार शुरू किया जाये।"

ये प्रहार अभूतपूर्व पैमाने पर किये गये। वे कमोबेश एकसाथ बाल्टिक सागर से कारपेथियन्स तक १,२०० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर शुरू हुए। सारा रास्ता लडाइया लडते हुए मार्शल जूकोव, मार्शल कोन्येव, जनरल

रोकोस्सोव्स्की और जनरल चेर्न्याखोव्स्की की सेनाएं तेजी से पश्चिम की ओर बढ़ीं। १७ जनवरी को वारसा मुक्त हुआ।

युद्ध द्वारा नष्ट पोलैंड में सोवियत सेनाओं को फ़ासिस्टों के अपराधों के नये अकाट्य प्रमाण मिले। जब उन्होंने ओस्वीत्सिम नगर के निकट बन्दी-शिविर में प्रवेश किया, तो उन्होंने अविश्वसनीय लोमहर्षक दृश्य देखे। नाज़ियों को गैस-कोठरियां नष्ट करने का अवसर नहीं मिला था, जहां वे रोज़ लगभग १० हज़ार आदमियों को मार डालते थे। दाह गृह, जहां शव जलाये जाते थे, अभी गर्म थे। गोदामों में ७ टन इनसानी बाल थे, जो दसियों हज़ार औरतों के सरों से काटे गये थे और आदमियों की हड्डियों के पाउडर से भरे सन्दूक़ थे, जिन्हें जर्मनी भेजा जानेवाला था। मई, १९४० से युद्ध का अंत होने तक नाज़ियों ने ओस्वीत्सिम मृत्यु शिविर में ४० लाख से अधिक लोगों को मार डाला। इनमें कितने ही सोवियत नागरिक भी थे।

पोलैंड को मुक्त करने के बाद सोवियत सेनाओं ने सीमा पार करके जर्मनी के विभिन्न भागों, पूर्वी प्रशा, पोमेरानिया और सिलेशिया में प्रवेश किया। इस बीच जनरल मलिनोव्स्की और जनरल तोल्बूख़िन के तहत सोवियत सेनाओं ने शत्रु के एक बड़े सेना ग्रूप को पराजित करने के बाद हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट को मुक्त किया और तब चेकोस्लोवाकिया और आस्ट्रिया में प्रवेश किया, जहां उन्होंने ब्रातिस्लावा और वियना को मुक्त किया।

जर्मन सर्वोच्च कमान ने इस बढ़ाव को रोकना चाहा, प्रत्याक्रमण संगठित किये और पश्चिमी मोर्चे से नये डिवीजन पूर्व की ओर भेजे। जब ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओं ने १९४५ के बसंत में पश्चिम में आक्रामक कार्रवाइयां शुरू कीं, तो उन्हें केवल ३५ डिवीजनों का सामना करना था, जिनके पास सैनिक भी नियत संख्या में नहीं थे और जो स्वीट्ज़रलैंड से उत्तरी सागर तक एक विशाल मोर्चे पर फैले हुए थे। मित्र-राष्ट्रों ने शीघ्र ही राइन को पार कर लिया और जर्मनी के भीतर तेज़ी से घुसने लगे।

इस समय युद्ध की अंतिम लड़ाइयां लड़ी जा रही थीं। नाज़ी जर्मनी की आमूलचूल पराजय को इने-गिने दिन रह गये थे। सोवियत सेनाएं, जो ओडर और नाइसे नदियों तक पहुंच गयी थीं, अंतिम मुक़ाबले के लिए

–बर्लिन पर धावा बोलने के लिए–तैयार थी, जो अब केवल ६०–७० किलोमीटर दूर रह गया था।

नाजी नेता, जिनकी पराजय अब करीब थी, बेमतलब प्रतिरोध करते रहे। युद्ध को लम्बा चलाकर वे जर्मन जनगण को और अधिक मुसीबत और क्षति का शिकार बनाते रहे। बर्लिन मे, जहा पहले ही से शक्तिशाली किलाबन्दिया मौजूद थी, जिनमे कोई ३७ मीटर की गहराई पर लोहे और कक्रीट से बने रक्षागार भी थे, सैनिक और नागरिक जोरो पर खन्दके खोद रहे थे, बैरीकेड खडे कर रहे और पिल-बाक्सो का निर्माण कर रहे थे। घरो को गोले चलाने का स्थान बनाया जा रहा था।

बूढो और किशोरो की भर्ती की गयी। हिटलर का एक अतिम छायाचित्र उसके इस आदेश के भयकर सत्य को प्रकट करता है कि "आखिरी आदमी और आखिरी गोली तक मुकाबला करते रहो।" चित्र मे हिटलर के गाल पिचके हुए है और कन्धे धस गये है, कोट का कालर खडा किया हुआ है और फौजी टोपी आखो के ऊपर आ गयी है। वह बेतरतीब पातो मे खडे किशोरो के सामने, जो फौजी वर्दी पहने है, खडा है। यह फासिस्ट तनाशाह अपनी बर्बादी को टाल देन के लिए इन किशोरो की जिन्दगी कुर्बान करना चाहता था।

१५ अप्रैल की रात मे बर्लिन के पूर्व जर्मन ठिकानो पर गोलो की लगातार बौछार होने लगी। इस गोलाबारी के बाद बडी सख्या मे तेज सर्चलाइटस चमक उठी और रात के अन्धेरे को चीरते हुए इस चकाचौध करनेवाले प्रकाश मे सोवियत टैक और पैदल सेना आगे बढी। यह बर्लिन पर आक्रमण की शुरूआत थी। मार्शल जूकोव की फौजे एक-एक बस्ती के लिए लडाई करते हुए जर्मन राजधानी की ओर बढी। सैनिको का एक भाग उत्तर की तरफ से नगर को घेर रहा था। मार्शल कोन्येव की फौजे दक्षिण से बर्लिन को घेर रही थी। २५ अप्रैल को घेरा पूरा हो गया। लेकिन उस समय भी नाजी नेताओ ने प्रतिरोध रोकने का आदेश नही दिया। उन्हे आशा थी कि सोवियत सघ और पश्चिमी राष्ट्रो के मतभेदो के कारण उन्हे अतिम क्षण मे बच निकलने का मौका मिल जायेगा।

स्वय बर्लिन मे लडाई दस दिन चली, जिसमे दोनो पक्षो के बहुत से लोग हताहत हुए। लडाई के दौरान असख्य इमारते बर्बाद हुई। बर्लिन के केन्द्र मे लडाई सबसे तीव्र थी, जहा सोवियत सेनाओ ने मुख्य सरकारी

इमारतों पर, राइख़सकाञ्ज़ली पर, जहा हिटलर छिपा हुआ था और राइखस्ताग पर हमला किया। ३० अप्रैल की रात में सार्जंट येगोरोव और सैनिक कंतारिया ने राइखस्ताग पर लाल झंडा – विजय-पताका – फहरा दिया।

उससे चन्द घंटे पहले नाज़ी जर्मनी के फ़्यूहरर हिटलर ने राइख़सकांजली की इमारत के नीचे एक कई मंज़िला तहख़ाने में आत्महत्या कर ली थी। बर्लिन के गैरीज़न की बिल्कुल हतोत्साहित बची-खुची टुकड़ियां हथियार डालने लगी। जर्मन सैनिकों के समूह तहख़ानों, गुप्त स्थानों और खंडहरों से सफ़ेद झंडे लिये सड़को पर निकल आने लगे।

"विजय! राइख़स्ताग हमारा है!"

यूरोप में युद्ध की अंतिम कार्रवाई चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग की मुक्ति थी। उस समय तक चेकोस्लोवाकिया का बड़ा भाग सोवियत सेनाओं द्वारा मुक्त कराया जा चुका था, मगर एक बड़ा जर्मन समूह, कोई ६,००,००० आदमियों की फ़ौज, चेक भूमि पर था।

५ मई को एक फ़ासिस्ट-विरोधी विद्रोह शुरू हुआ और जर्मन कमान ने टैंकों, तोपों और विमानों का उपयोग करते हुए विद्रोहियो को कठोरता-पूर्वक दबाना शुरू किया।

सोवियत टैंक सेना को प्राग की सहायता के लिए तुरत रवाना होने का आदेश मिला। टैंक चालक इस समय तक लम्बे अरसे की निरतर लडाई से थक कर चूर हो रहे थे और बहुतेरे टैंको को मरम्मत की जरूरत थी। लेकिन अपने चेक भाइयो की सहायता के जोश मे वे सारी कठिनाइयो को भूलकर निकल पडे। जनरल रिबाल्को और जनरल लेल्युशेको की टैंक सेनाए बडी तेजी से प्राग की ओर उत्तर से ड्रेस्डेन तथा पहाडो की चढाइया पार करती हुई बढी। ८ मई की रात मे उन्होने प्राग मे प्रवेश किया और दूसरे दिन सुबह तक शहर को मुक्त कर दिया। इस तरह चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति पूरी हो चुकी थी। कारपेथियन्स मे दुकला दर्रे मे, स्लोवाकिया और मोराविया मे और प्राग के पास १,४०,००० सोवियत सैनिको और अफ़सरा ने अपनी जानें दी।

युद्ध की समाप्ति को कानूनी रूप दिया गया, जब बर्लिन के एक उपनगर कार्ल्सहोर्स्ट मे बिलाशर्त आत्मसमपण पत्न पर हस्ताक्षर हो गये।

हस्ताक्षर समारोह दोमजिला मकान के हाल मे हुआ, जो जर्मन सैनिक इजीनियरो के एक स्कूल का भोजनालय हुआ करता था। सोवियत सर्वोच्च कमान का प्रतिनिधित्व मार्शल जूकोव कर रहे थे और मित्र-राष्ट्रो की सैनिक शक्तियो का प्रतिनिधित्व ब्रिटेन की वायुसेना के मुख्य मार्शल टेडुर तथा सयुक्त राज्य अमरीका के वायुसेना कमाडर जनरल स्पाटस तथा फ्रासीसी सेना के चीफ आफ स्टाफ जनरल दलातर दे तास्सिन्यी ने किया।

जर्मनी की सैन्य शक्तिया के प्रधान सेनापति फील्ड मार्शल कैतेल, एडमिरल फ्रीदेबुर्ग और कर्नल जनरल श्लुम्फ ने स्थल, सागर तथा वायु मे सारी जर्मन शक्तियो के तत्काल और बिलाशर्त आत्मसमर्पण पत्न पर हस्ताक्षर किये।

दूसरे दिन सोवियत सघ ने विजय-दिवस मनाया। सभी शहरो और गावो मे सोवियत जनगण युद्ध की समाप्ति पर खुशी मनाने सडको पर निकल आये। सोवियत नर-नारिया १,४१७ दिन मोर्चे पर और मोर्चे से दूर कठिन मुसीबते उठाते रहे थे। उन कठोर दिनो में भी, जब पीछे हटना या शिकस्त उठानी पडती थी, वे बिना हिम्मत हारे लडते और काम करते रहे और भावी विजय के लिए कोई प्रयत्न उठा नही रखा था। २ करोड सोवियत लोग इस युद्ध मे काम आये थे। एक परिवार

ऐसा नहीं था, जिसका कोई व्यक्ति युद्ध में काम नहीं आया हो। प्रत्येक व्यक्ति ने इसलिए अब खुशी मनायी कि उसे यह एहसास था कि अब जब कि युद्ध का अंत आमूलचूल विजय में हुआ, वे कुर्बानियां बेकार नहीं गयीं।

अगरचे यूरोप में सैनिक कार्रवाइयां समाप्त हो गयी थीं, मगर अभी दूसरे विश्वयुद्ध का अंत नहीं हुआ था। प्रशांत महासागर के क्षेत्र में एक ओर जापान और दूसरी ओर चीन, संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन तथा उनके मित्र-राष्ट्रों में लड़ाई जारी थी। १९४५ में यद्यपि जापान को कई भारी शिकस्तें हुई थीं, मगर उसके पास अभी भी शक्तिशाली स्थल सेनाएं थीं। जापानी नेता युद्ध को लम्बा चला देना और इस प्रकार समझौता करना चाहते थे। १९४५ तक सोवियत संघ ने जापान के ख़िलाफ़ युद्ध में भाग नहीं लिया था। लेकिन साम्राज्यवादी जापान ने कई वर्षों से सोवियत संघ के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति अपना रखी थी। मंचूरिया पर दख़ल करने के बाद जापानियों ने वहां एक बड़ी सेना जमा कर दी थी और सुदूर पूर्व में सोवियत संघ की सीमाओं पर बराबर सैनिक झगड़ों की आग भड़काते रहते थे। वस्तुस्थिति यह थी कि सुदूर पूर्व में प्रशांत महासागर में सोवियत संघ का रास्ता जापान ने बन्द कर रखा था। उस समय जापानी जनरल स्टाफ़ सोवियत संघ पर हमले की योजना तैयार कर रहा था। इन्हीं सब कारणों से सोवियत संघ की आक्रमण के इस स्रोत–जापानी सैन्यवाद–को ख़त्म करने में दिलचस्पी थी। साथ ही सोवियत संघ चाहता था कि दूसरा विश्वयुद्ध जल्दी से जल्दी समाप्त हो जाये, सर्वव्यापी शांति क़ायम हो और इस तरह मानवजाति की पीड़ाओं का अंत हो। और वह अपने मित्र-राष्ट्रों की सहायता भी करना चाहता था, जिन्होंने जर्मन फ़ासिज़्म के विरुद्ध लड़ाई में उसका साथ दिया था।

इन्हीं कारणों से याल्ता में फ़रवरी, १९४५ में दूसरे त्रिराष्ट्रीय सम्मेलन में जिसमें सोवियत संघ, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका का प्रतिनिधित्व स्तालिन, चर्चिल और रूज़वेल्ट कर रहे थे, सोवियत संघ जर्मनी के आत्मसमर्पण के दो या तीन महीने बाद ही जापान के ख़िलाफ़ युद्ध में शामिल होने पर राज़ी हो गया। एक विशेष समझौते द्वारा, जिसपर तीनों नेताओं के हस्ताक्षर थे, यह तय पाया कि सख़ालीन द्वीप का दक्षिणी

भाग (जिसे बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रूस से छीन लिया गया था) और क्यूराइल द्वीप समूह, जिनसे प्रशांत महासागर को जानेवाले मार्ग की रक्षा होती है, सोवियत संघ के हवाले कर दिये जायें।

८ अगस्त, १९४५ को सोवियत संघ ने जापान के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा की। उस रात १५ लाख से अधिक सोवियत सैनिकों और अफ़सरों ने ४,००० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर हमला बोल दिया। यह कार्रवाई मार्शल वसिलेव्स्की की कमान में हुई और उनकी फ़ौजें शत्रु की वरसों में मज़बूत बनायी हुई क़िलाबन्दियों को तोड़ने में सफल हुईं। कुछ ही दिनों में सोवियत फ़ौज ने क्वातुंग सेना की मुख्य शक्तियों को चकनाचूर कर दिया, कई गहरी नदियां पार कीं, पर्वतमालाओं और रेगिस्तानों से गुज़रते हुए सैकड़ों किलोमीटर का फ़ासला तय किया। और इस तरह उत्तर-पूर्वी चीन और उत्तर कोरिया के विशाल इलाक़े मुक्त किये गये।

उसी समय जब कि नर-नारियां आनेवाली विजय तथा दूसरे विश्वयुद्ध के अंत की कल्पना करके खुश हो रहे थे, एक ऐसी घटना घटी, जिसने मानवजाति के इतिहास को कलंकित कर दिया। ६ अगस्त को प्रातःकाल दो अमरीकी बी-२९ बमबार हिरोशीमा के जापानी नगर के ऊपर दिखाई दिये और ८ बजकर १५ मिनट पर उनमें से एक ने पैराशूट के साथ एक बम गिराया। इससे कुछ ही मिनट के भीतर धमाका हुआ और चकाचौंध करनेवाली रोशनी चमकी और उसके बाद विशाल कुकुरमुत्ते की तरह का बादल नगर के ऊपर फैल गया। हिरोशीमा पर यह एक परमाणविक बम फटा। तीन दिन बाद ९ अगस्त को नागासाकी नगर पर एक और परमाणविक बम गिराया गया। इन दो बमों के धमाका से ४ लाख ४७ हज़ार नागरिक मरे गये और अपंग हो गये। परमाणुशस्त्र के प्रयोग को सैनिक आवश्यकता की दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह नागरिकों के प्रति अक्षम्य क्रूरता की हरकत और अमरीका की एटमी धमकियों की भावी नीति की दिशा में पहला कदम था।

कोरिया और मंचूरिया में सोवियत फ़ौज द्वारा जापानी सेना की शिकस्त के बाद जापान के लिए कोई आशा नहीं रह गयी थी। २ सितम्बर को जापान के बिलाशर्त आत्मसमर्पण पत्र पर टोकियो खाड़ी में संयुक्त राज्य अमरीका के युद्धपोत "मिस्सूरी" में हस्ताक्षर हो गये। दूसरा विश्वयुद्ध ५ करोड़ मानवों की आहुति लेने के बाद समाप्त हो गया।

उस युद्ध में सोवियत संघ ने निर्णायक भूमिका अदा की। उसने नाज़ी जर्मनी के ख़िलाफ़ लड़ाई का अधिकांश भार उठाया और भयंकर लड़ाई में अकेले उसकी सेनाओं को शिकस्त दी थी। इस प्रकार फ़ासिस्ट ग़ुलामी का जो ख़तरा मानवजाति के सरों पर मंडरा रहा था, दूर हो गया। युद्ध, जो सोवियत संघ के लिए एक कठिन घड़ी में आया था, सोवियत सामाजिक व्यवस्था के लिए एक कठिन परीक्षा साबित हुआ। इस परीक्षा ने सोवियत सामाजिक तथा राजकीय व्यवस्था और उसके समाजवादी अर्थतंत्र की ताक़त और जीवन की शक्ति तथा सोवियत संघ की जातियों के बीच अटूट मैत्री की मज़बूती को प्रकट कर दिया।

सोवियत जनगण की देशभक्ति और समाजवादी पितृभूमि के प्रति उसकी निष्ठा की अभिव्यक्ति युद्ध के दौरान उनके आम वीरतापूर्ण कारनामों में हुई। ७० लाख से अधिक सोवियत अफ़सरों और सैनिकों को पदक और तमग़े मिले।

युद्ध के फलस्वरूप सोवियत संघ ने केवल यही नहीं कि विश्व साम्राज्यवाद की सबसे आक्रामक शक्तियों के हमले को परास्त किया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी स्थिति को सुदृढ़ भी बनाया। अवश्य ही युद्ध ने, जिसके कारण देश को अविवर्णीय कष्ट उठाने, बलिदान करने पड़े और बर्बादी सहनी पड़ी, देश की प्रगति के मार्ग में एक भारी बाधा का काम किया।

मगर इन कठिनाइयों और हानियों के बावजूद युद्धकाल में सोवियत व्यवस्था और मज़बूत हुई। जनता की नैतिक-राजनीतिक एकजुटता बढ़ी। कम्युनिस्ट पार्टी की मार्गदर्शक भूमिका और प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी। मोर्चे पर और मोर्चे से दूर कम्युनिस्ट ही थे, जिन्होंने हमेशा आगे बढ़कर सबसे कठिन कार्यभारों को पूरा किया। ३० लाख से अधिक पार्टी सदस्य हमलावरों के विरुद्ध संघर्ष में काम आये। हर महीने पार्टी में शामिल होनेवाले नये सदस्यों की संख्या बढ़ती गयी। मोर्चे पर स्थिति जितनी कठिन होती गयी, उतनी ही अधिक संख्या में लोग पार्टी में शामिल होते गये। युद्ध के दौरान ५० लाख लोग पार्टी के उम्मीदवार और ३५ लाख सदस्य बने।

बड़ी लड़ाइयों के पूर्व हज़ारों अफ़सरों और सैनिकों की ओर से इस तरह की दरख़ास्तें आतीं "मैं लड़ाई पर जा रहा हूं और अनुरोध करता

हू कि मुझे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल कर लिया जाये।" इससे जाहिर है कि कम्युनिस्ट पार्टी की, जो उस कठिन संघर्ष के वर्षों में जनगण का नेतृत्व कर रही थी, प्रतिष्ठा कितनी बड़ी थी।

उस युद्ध में सोवियत जनगण की विजय विश्व ऐतिहासिक महत्व का कारनामा थी। अपनी मातृभूमि की, जहा समाजवाद सबसे पहले विजयी हुआ था, सफल रक्षा करके, सोवियत जनगण ने विश्व प्रगति के क़िले को सुरक्षित और सुदृढ़ कर लिया था।

सोवियत जनगण ने फ़ासिज़्म को परास्त करने तथा अधीन जातियों को मुक्त करने में निर्णायक भूमिका अदा की। इसने सारे ससार में श्रमजीवी जनता के मुक्ति सग्राम को बहुत सुगम बनाया।

दसवां अध्याय

सोवियत संघ में समाजवाद की संपूर्ण विजय की दिशा में प्रगति

१९४६–१९५८

अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में मौलिक परिवर्तन

दूसरे विश्वयुद्ध के उपरांत अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन हुए। शांति, जनवाद और समाजवाद की शक्तियों का सुदृढ़ीकरण और विकास और पूंजीवाद की शक्तियों की कमजोरी उनकी विशेषता थी। औपनिवेशिक व्यवस्था के पतन से भी, जिसकी शुरूआत युद्ध के बाद हुई, पूंजीवादी जगत को जबर्दस्त धक्का पहुंचा।

यूरोप में जर्मन और इटालियन फ़ासिस्टों और सुदूर पूर्व में जापानी सैन्यवाद पर विजय की बदौलत सारी दुनिया में जनवादी और प्रगतिशील शक्तियों की सक्रियता में वृद्धि की सम्भावनाएं पैदा हो गई थीं। पोलैंड, बल्गारिया, अल्बानिया, हंगरी, रूमानिया, चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया के आर्थिक और राजनीतिक जीवन में बुनियादी तबदीलियों के कारण इन देशों में जनवादी शासन व्यवस्था की स्थापना सम्भव हो गई। अक्तूबर, १९४९ में जर्मन जनवादी जनतंत्र का जन्म हुआ जिसने समाजवादी विकास का रास्ता अपनाया।

जनवादी शासन व्यवस्था कोरिया और वियतनाम के एक भाग में भी विजयी हुई, जहां कोरियाई लोक जनतंत्र और वियतनामी जनवादी जनतंत्र की स्थापना हुई। चीन में क्रांति की विजय के फलस्वरूप अक्तूबर, १९४९ में चीनी लोक जनतंत्र स्थापित हुआ।

लोक जनवाद के इन जनतंत्रों की स्थापना की बदौलत समाजवाद ने एक विश्व व्यवस्था का रूप ले लिया। शांति, प्रगति और जनवाद के

लिए संघर्ष तथा सोवियत संघ के पूंजीवादी घेरे के अंत के लिए अधिक अनुकूल स्थितियां उत्पन्न हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति मे परिवर्तन से विश्व की युद्धोत्तर समस्याओ के शांतिपूर्ण समाधान पर गहरा असर पड़ा। इन समस्याओ पर युद्ध के दौरान और युद्ध के बाद भी अनेक कान्फ्रेंसो और सम्मेलनो मे विचार-विमर्श होता रहा था।

बर्लिन के निकट पोट्सडाम मे तीन महान शक्तियो की सरकारो के प्रधानो की कान्फ्रेंस अत्यंत महत्वपूर्ण रही। पोट्सडाम (बर्लिन) कान्फ्रेंस १७ जुलाई से २ अगस्त, १९४५ तक हुई और इसमे स्तालिन, ट्रूमैन और चर्चिल ने भाग लिया (संसदीय चुनावो के बाद एटली)। पोट्सडाम कान्फ्रेंस ने एक स्थायी निकाय, पांच देशो (सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन) की विदेश मंत्री परिषद स्थापित करने का निश्चय किया जिसके ज़िम्मे नाज़ी जर्मनी के यूरोपीय मित्र-राष्ट्रो के साथ शांति संधियो के प्रारूप तैयार करना, यूरोप मे युद्ध की समाप्ति से उत्पन्न होनेवाले अनिर्णीत भूक्षेत्रीय सवालो के समाधान सम्बन्धी सुझाव तैयार करना और जर्मनी के शांतिपूर्ण निबटारे की शर्तों की रूपरेखा भी बनाना था। कान्फ्रेंस ने जर्मनी के संबंध मे मित्र-राष्ट्रो की आम नीति के आधारभूत राजनीतिक तथा आर्थिक सिद्धांतो की व्याख्या भी की, जो देश के जनवादीकरण, असैनिकीकरण तथा नाज़ीवाद उन्मूलन पर आधारित थे। तीनो महान शक्तियां इस नतीजे पर पहुंची कि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से जर्मनी को एक अभिन्न इकाई मानकर चलना चाहिए।

पोलैंड की पश्चिमी सीमाओ के बारे मे एक फैसला भी किया गया भूतकाल मे उसके जिन इलाको को जर्मन आक्रमणकारियो ने हड़प लिया था, वे पोलैंड को लौटा दिये गये।

पोट्सडाम कान्फ्रेंस के फैसलो के अनुसार जर्मनी के पक्ष मे युद्ध मे भाग लेनेवाले देशो – इटली, फिनलैंड, बल्गारिया, रूमानिया और हंगरी के साथ शांति संधियां सम्पन्न करने के लिए प्रारम्भिक काम शुरू कर दिया गया। सोवियत संघ यह मानकर चलता था कि प्रत्येक देश के ऐतिहासिक विकास की विशेषताओ को ध्यान मे लेना जरूरी है। इन देशो के जनगण को शांतिपूर्ण जनवादी विकास का रास्ता अपनाने और अपनी-अपनी राष्ट्रीय

अर्थव्यवस्था को विस्तारित करने का अवसर मिलना चाहिए। पश्चिमी शक्तियां इन शांति संधियों में ऐसी शर्तें रखना चाहती थीं, जिनसे इटली, फ़िनलैंड बल्गारिया, रूमानिया और हंगरी की प्रभुसत्ता पर पाबन्दी लग जाती और उन्हें इन देशों के आर्थिक और राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जाता। लेकिन पश्चिमी शक्तियों की यह कोशिश असफल रही। फ़रवरी, १९४७ में गर्मागर्म बहसों के बाद शांति संधियों पर हस्ताक्षर कर दिये गये।

इन संधियों पर हस्ताक्षर करना शान्तिप्रिय शक्तियों की उल्लेखनीय विजय था। मुख्यतः ये दस्तावेज़ें हस्ताक्षर करनेवाले देशों के हितों के अनुकूल थीं और उनसे शांति तथा यूरोप में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के सुदृढ़ीकरण में सुविधा हुई।

लेकिन वांछित शांति से अंतर्राष्ट्रीय तनाव में कमी नहीं हुई।

जनवरी, १९४६ में संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेंब्ली का प्रथम अधिवेशन हुआ। यह संगठन शांति बनाये रखने और उसको सुदृढ़ करने के लिए एक स्वैच्छिक संस्था के रूप में क़ायम किया गया था। इसके पहले ही अधिवेशन में सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने शस्त्रास्त्र में सार्विक कटौती का सुझाव रखा मगर वाशिंगटन और लन्दन वास्तव में इन सुझावों के विरुद्ध थे। संयुक्त राज्य अमरीका परमाणविक शस्त्र का एकमात्र स्वामी था और वह अपने इस एकाधिपत्य को क़ायम रखना चाहता था। सोवियत संघ द्वारा उठाया गया परमाणविक शस्त्र निषेध का सवाल हल नहीं हो पाया। पश्चिमी शक्तियां, ख़ासकर संयुक्त राज्य अमरीका युद्ध के तुरंत ही बाद सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के प्रति "बल प्रयोग" की नीति का अनुसरण करने लगे। इसके लक्षण पोट्सडाम कांफ़्रेंस में और पराजित राष्ट्रों के साथ शांति संधियों की तैयारी के काम के दौरान भी साफ़ दिखाई दिये। इसी से सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के विरुद्ध पश्चिमी शक्तियों के तथाकथित "शीत युद्ध" की शुरुआत हुई। मार्च, १९४६ में अमरीका के फ़ुल्टन नगर में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति ट्रूमैन की उपस्थिति में चर्चिल का भाषण शीत युद्ध का वास्तविक कार्यक्रम बन गया।

फ़ुल्टन भाषण के बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने अन्य पश्चिमी देशों से मिलकर समाजवादी शिविर के ख़िलाफ़ कई कार्रवाइयां कीं जिनका

उद्देश्य था यूरोपीय जनवादी जनतंत्रो मे पूजीवाद को बहाल करना, सोवियत सघ के साथ उनके सहयोग को तोडना और साथ ही पश्चिमी यूरोप के देशो मे, खासकर फ्रास और इटली मे, प्रगतिशील शक्तियो के विकास और सुदृढीकरण को रोकना।

सितम्बर, १९४७ मे सयुक्त राज्य अमरीका तथा लैटिन अमरीका के देशो के बीच एक सैनिक सधि पर हस्ताक्षर हुए जो साम्राज्यवाद का विश्व प्रभुत्व क़ायम करने की नीति का एक कदम था।

मार्च, १९४८ मे ब्रिटिश राजनयिको ने ब्रसेल्स मे ब्रिटेन, फ्रास, हालैड, बेल्जियम और लक्जेम्बर्ग के बीच आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक तथा सैनिक सहयोग की सधि सम्पन्न करवाई।

४ अप्रैल, १९४९ को वाशिग्टन मे १२ देशो (सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास, इटली, कनाडा, आइसलैड, नार्वे, डेनमार्क, हालैड, बेल्जियम, लक्जेम्बर्ग और पुर्तगाल)* ने उत्तर-एटलैटिक सैनिक सगठन (नाटो) स्थापित करने की सधि पर हस्ताक्षर किये। इस सगठन की कल्पना और स्थापना सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो के विरुद्ध आक्रमणकारी अस्त्र के रूप मे इस्तेमाल करने के लिए की गई थी। शीत युद्ध का असर सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो से व्यापार पर प्रतिबध तथा पूजीवादी और समाजवादी देशो के बीच व्यवसायी और सास्कृतिक सबध तोडने के प्रयत्नो मे भी जाहिर हुआ।

लेकिन साम्राज्यवादियो की कोई भी चालबाजी विश्व समाजवादी व्यवस्था के सुदृढीकरण को रोक नही सकी। थोडे ही समय के भीतर यूरोप तथा एशिया के समाजवादी निर्माण के मार्ग पर अग्रसर हो रहे देशो ने राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक विकास मे बडी सफलताए प्राप्त की।

भविष्य के अन्तर्राष्ट्रीय सबधो के बारे मे लिखते हुए वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सस्थापक कार्ल मार्क्स ने कोई एक सौ वर्ष पहले ही यह कह दिया था " . आर्थिक दरिद्रता और राजनीतिक पागलपन सहित पुराने समाज के मुकाबले मे एक नया समाज जन्म ले रहा है जिसका

---

*बाद मे इसमे तुर्की, यूनान और सघात्मक जर्मनी शामिल हुए।

अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत होगा – शांति, क्योंकि हर राष्ट्र का एक ही शासक होगा – श्रम।"*

दूसरे विश्वयुद्ध के अंत और प्रारम्भिक युद्धोत्तर वर्षों में समाजवादी देशों के बीच अनेक पारस्परिक लाभदायक समझौतों और संधियों पर हस्ताक्षर हुए। दिसम्बर, १९४३ में सोवियत संघ ने चेकोस्लोवाकिया से मैत्री, परस्पर सहायता और युद्धोत्तर सहयोग की संधि सम्पन्न की। इसी प्रकार की संधियां अप्रैल, १९४५ में यूगोस्लाविया और पोलैंड से भी सम्पन्न हुईं। इन संधियों में सोवियत संघ और जनवादी जनतंत्रों में एक दूसरे की स्वाधीनता और प्रभुसत्ता के सम्मान तथा एक दूसरे के अन्दरूनी मामलों में अहस्तक्षेप के आधार पर घनिष्ठ सहयोग की व्यवस्था की गई थी। हस्ताक्षर करनेवालों ने अपने ऊपर यह जिम्मेदारी भी ली कि जर्मनी या किसी और राज्य द्वारा जो आक्रमण करने के उद्देश्य से जर्मनी से मिल गया हो, आक्रमण की स्थिति में एक दूसरे की सहायता करेंगे।

बाद में सोवियत संघ ने अन्य समाजवादी देशों से भी समझौते किये: अल्बानिया (नवम्बर, १९४५), मंगोलिया (फ़रवरी, १९४६); रूमानिया (फ़रवरी, १९४८), हंगरी (फ़रवरी, १९४८), बल्गारिया (मार्च, १९४८) और चीन (फ़रवरी, १९५०)। साथ ही अन्य समाजवादी देशों के बीच, जैसे पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया में, बल्गारिया और रूमानिया, आदि में कई संधियों पर हस्ताक्षर हुए।

पहले तो समाजवादी देशों के अंतर्राजकीय संबंधों का विकास द्विपक्षीय आधार पर हुआ। लेकिन उन वर्षों में भी समाजवादी देशों की संयुक्त कार्रवाई की अनेक मिसालें सामने आने लगी थीं।

व्यापार के क्षेत्र में भी समाजवादी देशों के बीच के संबंध सुदृढ़ हुए। आगे चलकर समाजवादी देशों के बीच आर्थिक सहयोग में विस्तार होने की बदौलत जनवरी, १९४९ में पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद की स्थापना हुई, जिसने पारस्परिक तकनीकी सहायता देने तथा कच्चे माल, खाद्य पदार्थ, मशीनरी तथा अन्य औद्योगिक साज-सामान की पारस्परिक सप्लाई का नियंत्रण करने का बीड़ा उठाया।

---

*मार्क्स तथा एंगेल्स, रचनाएं, दूसरा रूसी संस्करण, खंड १७, पृष्ठ ५

सर्वहारा अतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धातो को मानकर चलते हुए सोवियत सघ ने पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के काम मे महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कहना काफी होगा कि पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया ने १९५०–१९५५ की अवधि मे अपनी खनिज लोहे की क्रमश ६४ तथा ७४ प्रतिशत आवश्यकता सोवियत निर्यात के जरिये पूरी की। सोवियत सघ ने अनेक औद्योगिक उद्यमो का निर्माण करने मे सभी समाजवादी देशो की सहायता की। इस सहायता के कारण समाजवादी देशो मे औद्योगिक विकास की रफ्तार तेज हुई। १९५६ तक पोलैंड का औद्योगिक उत्पादन युद्धपूर्व के स्तर से चारगुना ज्यादा था, और बल्गारिया, हगरी, रूमानिया और चेकोस्लोवाकिया के लिए यह आकडे क्रमश पाचगुना से ज्यादा, साढे तिगुना, लगभग तिगुना और दोगुना से अधिक थे।

समाजवादी शिविर द्वारा प्राप्त सफलताओ ने साम्राज्यवादियो को अधिकाधिक भयभीत कर दिया। उनके देखते-देखते तथा उनके प्रयत्नो के बावजूद, शाति समर्थको का आन्दोलन बढ रहा था साथ ही उपनिवेशवाद-विरोधी राष्ट्रो का स्वाधीनता सग्राम दिनोदिन फैलता जा रहा था। ठीक उसी समय पाचवे दशक के अत तथा छठे के शुरू मे, पश्चिम के अनेक राजनीतिक और सामरिक नेताओ ने सोवियत सघ के खिलाफ युद्ध का खुला आवाहन किया। सयुक्त राज्य अमरीका ने नाटो के अपने साझीदारो से मिलकर समाजवादी राज्यो की सीमाओ के साथ-साथ सैनिक अड्डो का एक पूरा जाल सा बिछा दिया और पश्चिमी जर्मनी का पुन सैनिकीकरण करना शुरू किया।

१९५० की गर्मिया मे दक्षिणी कोरिया के प्रतिक्रियावादियो और सयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादी हल्को ने कोरियाई लोक जनवादी जनतत्र के विरुद्ध एक जग छेड दी। अमरीकी शासक हल्का की नीतियो की बदौलत खतरा था कि यह युद्ध एक स्थानीय युद्ध न रहे और इसके शोले एक देश की सीमाओ से बाहर बहुत दूर तक फैल जायें। सोवियत सरकार ने तुरत सुझाव पेश किये जिनका उद्देश्य लडाई को जल्दी से जल्दी रोकना और शातिपूर्ण ढग से कोरियाई सवाल को हल करना था। बातचीत १९५१ की गर्मियो मे ही शुरू हुई और केवल अमरीकी तथा दक्षिणी कोरियाई प्रतिनिधियो द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण के कारण कोरिया मे युद्ध का अत कही दो साल बाद हुआ।

इस बीच पश्चिमी यूरोपीय शक्तियां पश्चिमी जर्मनी का पुन: सैनिकीकरण करने की दिशा में नये क़दम उठा रही थीं। १९५४ की पतझड़ के दिनों में लन्दन में ९ देशों (संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ़्रांस, संघात्मक जर्मनी, इटली, बेल्जियम, हालैंड, लक्ज़ेम्बर्ग और कनाडा) की एक कांफ़्रेंस हुई जिसमें इन देशों ने बिना सोवियत संघ से समझौता किये अपने आप ही एक निर्णय कर लिया कि पश्चिमी जर्मनी को ५,००,००० की सेना, १,५०० विमान और स्वयं अपनी नौसेना रखने की अनुमति दी जाये। १९५५ की वसंत में संघात्मक जर्मनी नाटो में शामिल हो गया।

समाजवादी देशों को अपनी प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए जवाबी कार्रवाई करनी पड़ी। इस उद्देश्य से मई, १९५५ में वारसा में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें सोवियत संघ, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, बलगारिया, जर्मन जनवादी जनतंत्र, हंगरी और अल्बानिया ने भाग लिया। इस सम्मेलन में वारसा संधि पर हस्ताक्षर हुए जिसमें समाजवादी देशों का एक सैनिक प्रतिरक्षात्मक संघ बनाने की बात थी। इसके अलावा उस संधि में, जिसमें कोई देश भी शामिल हो सकता था, उल्लिखित था कि ज्यों ही यूरोप में सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था स्थापित हो जायेगी वह संधि रद्द हो जायेगी। इससे एक बार फिर जाहिर हो गया कि इस संधि का एकमात्र प्रतिरक्षात्मक स्वरूप है।

१९५५ में सोवियत संघ ने अनेक कार्रवाइयां शुरू कीं जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विकास में बहुत महत्वपूर्ण साबित होनेवाली थीं। इन कार्रवाइयों में कुछ ऐसी थीं—सोवियत सैन्य शक्ति में कटौती, हथियारों में कटौती के लिए नये सुझाव, परमाणविक और हाइड्रोजन शस्त्रों पर निषेध तथा आस्ट्रिया के साथ एक राज्य संधि सम्पन्न करना।

१९५६ की घटनाओं से यह भलि भांति स्पष्ट हो गया था कि अंतर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के सभी सुझावों को पश्चिमी शक्तियां क्यों अस्वीकार कर देती हैं। २६ जुलाई, १९५६ को मिस्र की सरकार ने स्वेज़ नहर कम्पनी का राष्ट्रीयकरण कर लिया। इस बिल्कुल क़ानूनी कार्रवाई से पूंजीवादी इजारेदारों में बड़ा रोष फैला और ब्रिटेन, फ़्रांस और इस्राइल ने तो मिस्री जनता के खिलाफ़ फ़ौजी हस्तक्षेप तक कर दिया।

उन्ही दिनो हगरी मे एक प्रतिक्रातिकारी बलवा शुरू हुआ जिसकी तैयारी मे देशी और विदेशी प्रतिक्रियावादी शक्तियो ने भाग लिया था। षड्यत्रकारियो ने हगरी मे सफेद आतक शुरू कर दिया लेकिन प्रतिक्रियावादियो ने गलत अनुमान लगाया था। हगरी के श्रमजीवियो के अनुरोध पर सोवियत सघ सहायतार्थ आया। सोवियत सघ ने अपना अतर्राष्ट्रीय कर्तव्य पालन किया और सोवियत सेना ने हगेरियाई सैनिक दस्तो तथा श्रमजीवी जनता के सशस्त्र दस्तो के साथ मिलकर बलवाइयो को कुचल दिया तथा देश मे सुव्यवस्था बहाल कर दी।

साथ ही सोवियत सघ ने मिस्री जनता की भी कारगर सहायता की और इससे मिस्र विरोधी हस्तक्षेप का दिवाला निकल गया।

छठे दशक के अत तक यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि साम्राज्यवाद की शक्तियो की आक्रमणकारी नीति असफल रही। क्या कारण था कि शीत युद्ध की नीति असफल रही? मध्य पूर्व मे प्रतिक्रियावादियो की योजनाए विफल क्यो हुई थी? हगरी की जनता प्रतिक्रातिकारी शक्तियो के मुकाबले मे विजयी क्यो रही थी? इन सब सवालो का एक ही जवाब था विश्व मे मौलिक परिवर्तन हो चुके थे और अब मानवजाति की भाग्य निर्णायक भूमिका पूजीवाद नही, बल्कि समाजवादी शिविर अधिकाधिक अदा कर रहा था।

पुन शातिकालीन निर्माण

फासिज्म के खिलाफ सोवियत जनगण के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध ने देश के जीवन को मानो दो कालावधियो मे विभक्त कर दिया। घटनाओ के सबध मे अभी तक कहा जाता कि युद्ध के पहले की बात है या बाद की। यद्यपि उन स्मरणीय दिनो को एक शताब्दी की चौथाई से अधिक का समय बीत चुका है, लोग अक्सर इन वर्षो को युद्धोत्तर काल कहा करते हैं। अगर हम इन वर्षों को वैज्ञानिक दृष्टि से देखें ताकि उन सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओ का विश्लेषण किया जाये जो महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बाद सोवियत सघ के जीवन की विशेषता रही है, तो दो मुख्य मजिले देखने मे आती है। इनमे से पहली १९४६–१९५८ के दौर पर हावी है जो देश के युद्धपूर्व आर्थिक स्तर पर पहुचने तथा उससे आगे भी बढने के लिए काफी था। विश्व समाजवादी व्यवस्था

की स्थापना और सोवियत संघ की आर्थिक और प्रतिरक्षात्मक क्षमता के सुदृढ़ीकरण से समाजवाद के हित में अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन में परिवर्तन हुआ था। उसने सोवियत संघ में पूंजीवाद की बहाली के ख़िलाफ़ एक शक्तिशाली ज़मानत मुहैया कर दी और समाजवाद की अंतिम विजय सुनिश्चित कर दी थी।

छठे दशक के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि सोवियत संघ के सामाजिक विकास की एक नयी मंज़िल नज़दीक आ पहुंची है। जनवरी, १९५९ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वीं कांग्रेस ने इस प्रस्थापना का निरूपण किया और इसे अपने फ़ैसलों में शामिल किया। आइये, उन अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं पर नज़र डालें जो उस दौर में सोवियत जनगण के जीवन में घटीं और उस रास्ते को देखें जिसे देश ने शांतिकालीन विकास के १२ वर्षों में तय किया।

* * *

८ मई १९४५ की रात को किसी सरकारी घोषणा से पहले ही घरों घर, कानों कान ख़बर फैल गयी: "बस! युद्ध समाप्त हो गया!" प्रत्येक व्यक्ति लाउडस्पीकर से चिपका बैठा इन शब्दों को सुनने के लिए बेताब था जिसकी प्रतीक्षा बहुत दिनों से की जा रही थी कि "जर्मनी ने हथियार डाल दिये..." कुछ ही मिनट बाद राष्ट्रव्यापी हर्षोल्लास शुरू हुआ। खिड़कियों में बत्तियां जल उठीं और लोग सड़कों पर उमड़ पड़े। मास्कोवासी लाल मैदान की ओर बढ़े और वहां सूर्योदय तक रहे। ९ मई का दिन छुट्टी का दिन घोषित कर दिया गया और अभूतपूर्व महोत्सव बन गया। यह बात केवल राजधानी में ही नहीं दिखाई दे रही थी। लेनिनग्राद के ऊपर विमानों से अभिनंदन पत्र छितराये गये। कीयेव, मीन्स्क तथा अन्य नगरों और छोटे-बड़े गांवों में समारोह सभाएं, जुलूस तथा हर्षोल्लास का दृश्य चारों ओर दिखाई दे रहा था।

२४ मई, १९४५ को सोवियत सरकार ने सोवियत सेनानायकों के सम्मान में क्रेमलिन में एक स्वागत समारोह आयोजित किया। ठीक एक महीने बाद मास्को में विजय परेड हुआ। २४ जून को, रविवार के दिन सभी मोर्चों के प्रतिनिधि सैनिकों ने लाल मैदान में मार्च किया। ज़ोरों की वर्षा हो रही थी (नागरिकों का जुलूस तक रद्द कर दिया गया

था) मगर कोई भी मच से हटा नही। हजारा मास्को निवासी चौको और सडको म हर जगह विजताग्रा का स्वागत कर रहे थे।

लाल मदान म आर्केस्ट्रा बजना यकायक बद हो गया और ढोला की टकोर म सोवियत सनिक पराजित शत्रु के २०० झडा को लिये लेनिन समाधि तक गये वहा घूमकर झडा को धरती पर पटक दिया। मूसलधार बारिश हो रही थी फासिस्ट झड कीचड म लत-पत हो गये। यह दश्य लाक्षणिक भी था।

सध्या समय नगरा और गावा के निवासी फिर उत्सव मनाने घरो से निकल पडे। मास्को विजय परेड के बाद आम उत्सव मनाया जाने लगा। अब सभी लोग विजताओ के घर वापस आने की राह देखने लगे।

हा युद्ध के असर अभी भी दिखाई दे रहे थ। पराजित हिटलरी सेना के बच-खुचे गिरोहा ने अभी तक हथियार नही डाले थे। सोवियत
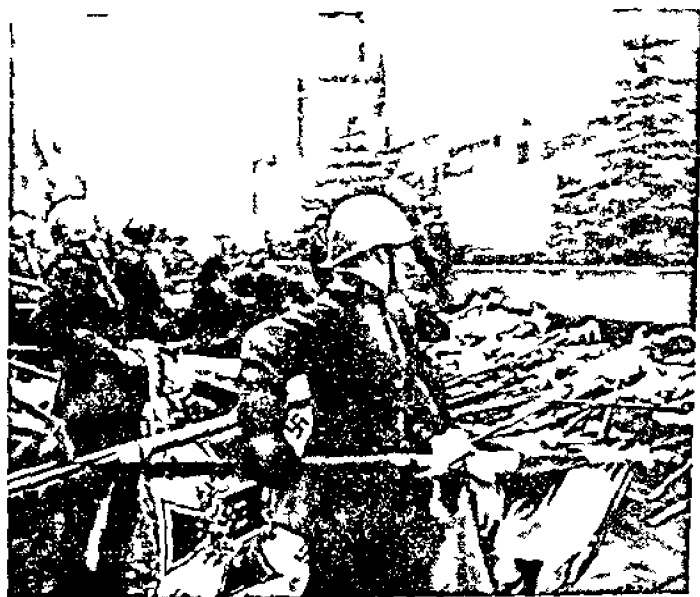
हिटलर के आक्रमण का यह अत!

सूचना विभाग को अभी भी सामरिक घटना-वर्णन जारी करना पड़ता था। बाल्टिक जनतंत्रों, पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस के कुछ भागों में राष्ट्रवादी ग़द्दारों के गिरोह अभी भी घूम रहे थे।

बहुत कुछ अभी भी युद्ध की याद दिलाया करता। मगर सभी लोग अब शांतिपूर्ण श्रम में संलग्न थे।

समाचारपत्रों में फ़ैक्टरी तथा खेतिहर जीवन से संबंधित लेख अधिक स्थान ले रहे थे, और सभी और अर्थव्यवस्था की शीघ्रातिशीघ्र बहाली के लिए अपीलें सुनाई दे रही थीं। अब हवाई हमलों का ख़तरा नहीं रह गया था और रातों को अंधेरा करने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी। गैस तथा बम रक्षाघर बने तहख़ाने अब फिर कारख़ानों और दफ़्तरों के हवाले कर दिये गये। मास्को, लेनिनग्राद, तूला तथा और बहुतेरे औद्योगिक केंद्रों के आसपास की टैंकरोधक मोर्चेबन्दियां तोड़ दी गईं, खाइयां और खन्दकें भर दी गईं। अधिकाधिक लोग फिर शांतिपूर्ण श्रम में लगने गये।

१३ जुलाई, १९४५ को मास्को ने प्रथम सेना वियोजित दस्तों का स्वागत किया। दर्जनों सैनिक रेलगाड़ियां घर लौट रही थीं और हर जगह उनका वीरों की तरह हार्दिक स्वागत किया जा रहा था। पर शायद ही कोई ऐसा परिवार था जिसके लिए ख़ुशी की यह घड़ी दुख भी साथ न लाती हो, उन प्रिय-पात्रों और सगे संबंधियों की दुख भरी याद, जिन्होंने मातृभूमि के नाम पर वीरगति पायी।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनगण को विजय की भारी क़ीमत चुकानी पड़ी थी। १ जनवरी, १९४० को सोवियत संघ की जनसंख्या १९,४१,००,००० थी, लेकिन १९४५ में १७ करोड़ से कम थी। दस वर्ष बाद, १९५५ में ही, वह युद्धपूर्व के स्तर तक पहुंची। उक्रइना की जनसंख्या १२ वर्ष बाद और बेलोरूस की जनसंख्या १८ वर्ष से भी अधिक के बाद ही युद्धपूर्व स्तर तक पहुंची। १९५९ तक की जनगणना के अनुसार लेनिनग्राद, नोवोरोस्सीयस्क, स्मोलेन्स्क, केर्च, वीतेब्स्क, र्जेव, क्रेमेन्चूग जैसे नगरों की आबादी १९३९ से कम थी।

२ करोड़ से अधिक सोवियत नागरिक लड़ाई में काम आये, फ़ासिस्टों द्वारा अस्थाई रूप से अधिकृत इलाक़ों या जर्मनी के नज़रबंद कैंपों में मारे गये। असंख्य लोग पंगु बन गये।

१३ सितम्बर, १९४५ को "प्राव्दा" मे फासिस्ट हमलावरो के अत्याचारो के सबध म असाधारण राज्य आयोग की एक सूचना प्रकाशित हुई। इस आयोग द्वारा जमा किये गये आकडा के अनुसार आक्रमणकारियो ने सोवियत सघ मे १,७१० नगरो और बस्तियो और ७०,००० से अधिक गावो को तहस-नहस किया, जलाया और लूटा, ३१,८५० औद्योगिक उद्यमो और ६५,००० किलोमीटर रेलवे लाइन को पूर्णत या अशत बर्बाद किया, और ६८,००० सामूहिक फार्मों, १८,०७६ राजकीय फार्मों और २,८९० मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो को लूटा फासिस्टो के अपराधो की सूची से समाचारपत्र के कई पृष्ठ भर गये। मानवजाति के इतिहास मे कभी *किसी देश को इतनी अधिक क्षति नही उठानी पडी थी।* कुल मिलाकर १९४१–१९४५ मे सोवियत सघ की क्षति का अनुमान २६ खरब रूबल (युद्धपूर्व के दामो मे) लगाया गया था। इन आकडो का पूरा अन्दाजा करने के लिए यह बता दें कि १९४० मे सपूर्ण राज्य आय १८ खरब रूबल थी। दूसरे शब्दो मे सोवियत सघ की क्षति युद्धपूर्व की सालाना राज्य आय की कोई पन्द्रह गुना थी।

जिन इलाक़ो पर शत्रु ने क़ब्ज़ा कर लिया था वहा युद्ध से पहले देश का एक तिहाई औद्योगिक उत्पादन और कृषि की आधी उपज हुआ करती थी। अभूतपूर्व क्षति के कारण अर्थव्यवस्था कठिन स्थिति मे पड गयी। सीमेट और इमारती लकडी का उत्पादन १९२८–१९२९ के स्तर पर पहुच गया था, ट्रैक्टर का उत्पादन, तेल की निकासी और कच्चे लोहे का पिघलाव १९३०–१९३३ के स्तर पर, और कोयले, इस्पात और लौह धातु का उत्पादन १९३४–१९३७ के स्तर पर पहुच गया था। दूसरे शब्दो मे युद्ध ने सोवियत अर्थव्यवस्था को कम से कम दस वर्ष पीछे कर दिया था।

सवाल था कि कैसे और किन साधनो के जरिये सोवियत सघ की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को शीघ्रातिशीघ्र बहाल किया जा सकता है?

पश्चिमी देशो के पूजीवादी अखबार दावा करते थे कि अमरीकी कर्जों के बिना सोवियत रूस की बहाली मे दर्जनो वर्ष लगेगे। फिर से उनका अन्दाजा गलत साबित हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन मे और एकमात्र अपने साधनो पर निर्भर करते हुए समाजवादी देश ने अपनी आर्थिक बहाली की समस्या को आश्चर्यजनक रूप से कम समय मे हल कर लिया।

सोवियत सेना वियोजन १९४५ की गर्मियो मे ही शुरू हो गया था। सितम्बर, १९४५ मे सैन्यवादी जापान की शिकस्त के बाद इसकी रफ्तार खासकर तेज हो गई। साल के अंत तक ३० लाख से अधिक लोग गैर-फौजी कामो में लौट चुके थे। १९४८ के शुरू तक कुल मिलाकर ८५ लाख आदमी सेना वियोजित हो चुके थे। उस समय तक सोवियत सेना जिसमें मई, १९४५ में ११३ लाख लोग थे, अपनी युद्धपूर्व संख्या पर पहुंच गई थी।

इसका विशेष ध्यान रखा गया कि वियोजित सैनिकों को काम मिल जाये। बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण का प्रबंध किया गया ताकि कल के सिपाहियो तथा अफ़सरो को गैर-फौजी पेशो का प्रशिक्षण दिया जा सके अथवा उनको युद्धपूर्व की गैर-फौजी पेशे की योग्यता को बेहतर बनाया जा सके।

साथ ही अर्थव्यवस्था को शातिकालीन आधार पर वापस ले जाने के लिए कई कदम उठाये गये। मई, १९४५ मे ही राज्य प्रतिरक्षा समिति ने शस्त्र उत्पादन मे कटौती के संबंध मे उद्योग को पुनर्गठित करने का फ़ैसला किया। बहुत से कारखाने और फैक्टरिया जो सामरिक साज-सामान का उत्पादन करते थे, पुन. गैर-फौजी उत्पादन करने लगे। भारी उद्योग के विभिन्न उद्यमो मे उपभोग का माल पैदा करने के लिए वर्कशाप खोल दिये गये। १९४५ की पतझड तक ही गैर-फौजी जरूरते पूरी करनेवाला उत्पादन कुल सैनिक उत्पादन से बढ गया था।

राष्ट्रीय बजट मे उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। १९४६ मे प्रतिरक्षा व्यय बजट का २४ प्रतिशत था, जो युद्धपूर्व के अतिम वर्ष के आकडे से काफी कम था।

युद्धोत्तर उद्योग ढाचे के बारे मे सभी कारखानो, अनुसधान सस्थानों और दफ्तरो मे विजय दिवस के बहुत पहले ही सोच-विचार किया गया था। यही कारण था कि १९४५ की गर्मियो मे ही स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारखाने मे ५००वा कैटरपिलर ट्रैक्टर बनकर तैयार हो चुका था, लेनिनग्राद मे "क्रास्नी ओक्त्याब्र" फैक्टरी की स्लूमिग मिल पुन. काम करने लगी, येफ्रेमोवो (तुला प्रदेश) मे सश्लिष्ट रबड़ का फिर से उत्पादन होने लगा था, ल्वोव नगर मे बिजली बाल्ब बनने लगे, क्रिूकोवो (पोल्तावा प्रदेश) मे रेल के डिब्बे और खार्कोव मे ग्राइडिंग मशीनें आदि बनने लगी।

शातिकालीन उत्पादन की स्थिति मे वापस लौटना कठिन कार्यभार साबित हुआ। उद्योग की विभिन्न शाखाओ मे सबध पुन स्थापित करना, उत्पादन का विशिष्टीकरण और सहकारिता को फिर से गठित करना था और सामानो और मशीनो की नियमित सप्लाई व्यवस्था ठीक करनी थी। समस्या थी युद्धपूर्व उत्पादन की बहाली पुराने रूप मे नही, बल्कि प्राप्त अनुभव तथा आधुनिकतम वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियो को ध्यान मे रखते हुए अधिक ऊचे स्तर पर करनी थी। स्थिति इस कारण और जटिल हो गई कि साज-सामान का काफी बडा भाग घिस घिस गया था और बहुत दिनो से उसकी ठीक से मरम्मत नही की गई थी। काफी मशीनरी पुरानी पड गई थी।

निर्माण मजदूरो को विराट निर्माण कार्य करना पडा। उनका काम इसलिए और भी बहुत कठिन था कि इमारती सामान की बहुत कमी पड गयी थी। १९४५ मे सीमेट का उत्पादन कम होकर १९२८ के स्तर पर पहुच गया था। ईंटो का हाल इससे भी बुरा था और शीशे का उत्पादन शातिपूर्व से भी कम था।

मशीनें और साज-सामान भी बहुत कम था। इस क्षेत्र मे बडे पैमाने पर उत्पादन अभी सगठित करना था। ऊचे निर्माण क्रेनो की नगण्य तादाद थी। १९४५ मे कुल १० एक्सकेवेटर और १७ मोटरचालित क्रेन जोडकर तैयार हुए। प्लास्तरिंग और रगसाजी की तो बात ही क्या, खोदाई और कक्रीट का काम भी अधिकाशत हाथो से करना पडता था।

सबसे नाजुक सवाल था श्रमिको का अभाव। युद्ध पूर्व की अवधि की तुलना मे मजदूरो और दफ्तरी कर्मचारियो की कुल सख्या ५० लाख से अधिक घट गई थी (१९४० मे ३ करोड ३९ लाख थी, १९४५ मे २ करोड ८६ लाख रह गई थी)। उद्योग मे लगभग १४ प्रतिशत और परिवहन व्यवस्था मे ६ प्रतिशत की कमी हो गई थी। किसानो की आबादी १५ प्रतिशत घट गई थी और कृषि का अधिकाश काम औरते, बूढे लोग और किशोर किया करते थे।

उद्योग मे काम करनेवालो की योग्यता कम हो गई थी। १९४५ मे इजीनियरो और टेकनीशियनो की कुल सख्या १९४० की तुलना मे १,२६,००० कम थी। औद्योगिक मजदूरो मे आधे से ज्यादा औरते थी और बडी सख्या मे किशोर थे। कुशलताप्राप्त मजदूरो की सख्या काफी कम हो गई।

ऐसी स्थिति में युद्धोत्तर अर्थतंत्र के पुनर्गठन में बड़ी कठिनाई हुई। १९४६ में औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा में ही नहीं, बल्कि श्रम उत्पादकता में भी कमी हुई और पैदावार की लागत बढ़ गई।

नये मजदूरों के प्रशिक्षण के लिए, उनकी कुशलता बढ़ाने के लिए, नई मशीनों से काम लेने के लिए समय और अतिरिक्त खर्च की जरूरत थी और इनके अलावा जीवन स्तर को ऊंचा करना आवश्यक था।

यह बात ध्यान में रखनी जरूरी है कि दिसम्बर, १९४७ तक शहरों में महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय ही की तरह खाद्य पदार्थों और उपभोग के बहुत से सामान की राशनबन्दी थी। यद्यपि इससे औद्योगिक मजदूरों और दफ्तरी कर्मचारियों को आवश्यक चीजें मिलीं (और वह भी युद्धपूर्व के दामों पर), मगर उपभोग का कोटा क़ायम था।

देश भर में रिहायशी मकानों की कमी थी। १९४६ के शुरू में कुज्नेत्स्क बेसिन के मजदूरों की बड़ी संख्या होस्टलों में रहती थी। वे दो तले बिस्तरों पर सोया करते और वास्तव में प्रति व्यक्ति रिहायशी क्षेत्रफल दो वर्ग मीटर से अधिक नहीं था। मग्नितोगोर्स्क, नीज्नी तगील और अनेक अन्य शहरों में स्थिति इससे भिन्न नहीं थी। जिन इलाक़ों पर फ़ासिस्टों का क़ब्ज़ा रह चुका था वहां लोग अभी तक प्रायः तबाहशुदा घरों में या नमदार तहखानों में रहा करते थे।

सोवियत जनता ने युद्धोत्तर तबाही की कठिनाइयों का दृढ़ता से मुक़ाबला किया। सभी लोग कठिनाइयों के कारणों से पूरी तरह अवगत थे।

एक बार मास्को के मोटर कारखाने के व्यावसायिक स्कूल में एक ब्रिटिश प्रतिनिधिमंडल आया। विदेशियों ने छात्रों से सवाल किये:

"क्या आपके घरों में गर्म पानी की व्यवस्था है?"

"आप के पिता के पास कितने सूट हैं?"

"क्या आप के घर में गैस व्यवस्था है?"

तब स्कूल के निदेशक ने उन लड़कों से उठ खड़े होने को कहा, जिनके पिता युद्ध में खेत रहे। एक के सिवा सभी लड़के उठ खड़े हुए। परेशान होकर विदेशियों ने उस लड़के से पूछा:

"क्या तुम्हारे पिता युद्ध में लड़े नहीं थे?"

"मेरे पिता जीवित हैं लेकिन युद्ध में उनकी दोनों टांगें बेकार हो गईं..."

फिर घरेलू सुविधाओ के बारे मे सवाल नही उठे।

सोवियत लोगो को मालूम था कि कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार अर्थव्यवस्था के शीघ्रातिशीघ्र विकास के लिए, श्रमजीवी जनता की भौतिक स्थितिया सुधारने के लिए और युद्ध के सभी अवशेषो को मिटाने के लिए दृढ़तापूर्वक कदम उठा रहे है।

प्रथम युद्धोत्तर वर्ष मे ही फिर से आठ घटे का कार्य दिवस जारी किया गया, श्रम की लामबन्दी तथा अनिवार्य अतिरिक्त काम बन्द कर दिया गया, नियमित और अनुपूरक छुट्टियो की व्यवस्था फिर से शुरू की गई और बच्चो के लिए रोटी का राशन बढाया गया। १९४३ मे ही सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि वीर-नगर स्तालिनग्राद, रोस्तोव-आन-दोन, स्मोलेन्स्क, ओर्योल जैसे बडे केन्द्रो को शीघ्रातिशीघ्र पुनर्निर्मित कर दिया जायेगा। १९४४ मे दोनेत्स बेसिन तथा लेनिनग्राद की बहाली के लिए फौरी कार्रवाइयो का विशेष निर्णय किया गया। इसका मतलब यह था कि युद्ध का अत होने से पहले ही बहाली का काम शुरू कर दिया गया।

अर्थव्यवस्था की युद्धोत्तर बहाली तथा आगे के विकास के कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का देश भर मे सहर्ष स्वागत किया गया। उस कार्यक्रम की मुख्य स्थापनाए स्तालिन द्वारा ९ फरवरी, १९४६ को मतदाताओ के सामने एक भाषण मे पेश की गई (१० फ़रवरी को सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रथम युद्धोत्तर चुनाव हुए थे)।

दीर्घकालीन दृष्टि से (पन्द्रह वर्षों की अवधि के लिए) सोवियत जनता के सामने अर्थव्यवस्था के व्यापक विस्तार, जिससे औद्योगिक उत्पादन को युद्धपूर्व स्तर के मुकाबले मे तिगुना ऊचा किया जा सके, करने का कार्यभार पेश किया गया था। इस कार्यक्रम की पूर्ति की दिशा मे पहला कदम चौथी पचवर्षीय योजना (१९४६–१९५०) थी।

युद्ध जनित स्थितियो मे अर्थव्यवस्था का विकास १० वर्षों के लिए ठप्प हो गया था, इसलिए १९४० के स्तर को पार करने और उससे काफी आगे प्रगति करने का विचार सोवियत लोगों को प्रभावित किये बिना नही रह सकता था। उन्होने बडी दिलचस्पी और ध्यान के साथ सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के उस अधिवेशन के काम को देखा जिसे चौथी पच-वर्षीय योजना को स्वीकार करना था।

था, अपनी असफलता के लिए बहाने बनाते हुए हिटलर से कहा था कि "हम ने जो कुछ बर्बाद किया है उसे बहाल करने में रूस को २५ वर्ष लग जायेंगे।"

विशालकाय धातुकर्मक कारखाने चालू कर दिये गये और वह भी इतनी तेजी से कि सबसे अनुभवी विशेषज्ञ भी आश्चर्यचकित रह जाते। वे खूब जानते थे कि आक्रमणकारियों ने इन औद्योगिक प्रतिष्ठानों को चालू करने के लिए भरसक सब कुछ कर लिया। उदाहरण के लिए द्नेप्रोद्ज़ेर्जीन्स्क में फ़ासिस्टों के ६२६ दिनों के प्रयत्न के बावजूद वे इस्पात कारख़ाने को चालू न कर पाये। इसके विपरीत सोवियत मजदूरों और इंजीनियरों ने इस कारख़ाने में बहाली का काम शुरू करने के २६वें दिन इस्पात का उत्पादन शुरू कर दिया।

ईंधन और बिजली स्रोतों, धातुकर्मक उद्यमों, पक्की सड़कों और रेलवे लाइनों की फ़ौरी बहाली से न सिर्फ़ शत्रु से आज़ाद किये गये क्षेत्रों, बल्कि देश भर की आर्थिक प्रगति की रफ़्तार तेज़ करने में सहायता मिली। इसी के साथ नये कारख़ानों, खानों और तेलकूपों का निर्माण भी हो रहा था। बहाली का काम और नवनिर्माण कार्य औद्योगिक विकास की एक ही प्रक्रिया के अंग थे। अनपेक्षित बाधाएं भी तेज़ प्रगति को रोकने में असमर्थ थीं।

१९४६ में देश में भयंकर सूखा पड़ा, जैसा गत ५० वर्षों में नहीं पड़ा था। उक्रइना, क्रीमिया, मोल्दाविया और वोल्गा तटवर्ती क्षेत्र में हज़ारों सामूहिक और राजकीय फ़ार्म सूखाग्रस्त हुए (वे न सिर्फ़ सरकार का कोटा नहीं दे सके, बल्कि स्वयं उन्हें सहायता की ज़रूरत पड़ी)। सूखा के कारण राशन की व्यवस्था को एक वर्ष और जारी रखना पड़ा। कच्चे माल की कमी के कारण सूती कारख़ानों, खाद्य उद्यमों तथा जूते की फ़ैक्टरियों में काम की अव्यवस्था होने लगी। सूखा के कारण कहीं महामारी न फैल जाये और प्रभावग्रस्त इलाक़े निर्जन न हो जायें जैसा कि अतीत में हुआ करता था, इसके लिए अतिरिक्त प्रयास और धन की ज़रूरत पड़ी और राज्य रिज़र्व से व्यापक पैमाने पर काम लेना पड़ा। सोवियत जनता इस संघर्ष में भी विजयी हुई।

१९४८ की पतझड़ में एक और मुसीबत आ पड़ी। एक भयंकर भूकंप से अश्क़ाबाद का बड़ा हिस्सा बर्बाद हो गया। लेकिन दूसरे ही दिन

सुबह से तुर्कमानिस्तान की राजधानी मे विमानो का ताता लग गया जो अन्य सघीय जनतत्रो से डाक्टरी दस्ते लेकर पहुच रहे थे। चारो ओर से सहायता आ रही थी। डाकखानो मे उन दिनो एक नोटिस लगी रहती थी "अश्काबाद के पार्सल औरो से पहले लिये जायेगे।" उक्रइना, बेलोरुस, जार्जिया, और उजबैकिस्तान से पायनियरो और कोम्सोमोल सदस्यो ने अश्काबाद के बच्चो और जवानो को पुस्तके, कापिया और सभी प्रकार की भेंटें भेजा करते थे। लेनिनग्राद और स्वेर्दलोव्स्क के मशीन निर्माणकर्मियो ने अश्काबाद के औद्योगिक उद्यमो के आर्डर समय से पहले पूरा करने का जिम्मा लिया। विभिन्न देशो के पत्रकारो को जो भूकप स्थल पर पहुचे थे, सोवियत सघ के जनगण की मैत्री का एक और सबूत मिल गया।

जनता की आवश्यकताओ के प्रति कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार का रोज का ध्यान तथा युद्धोत्तर वर्षों मे प्रारम्भिक सफलताओ ने सोवियत जनगण को वीरतापूर्ण श्रम के लिए प्रेरित किया, उन्हे प्रोत्साहित किया, उनमे दृढविश्वास और आशा की ज्योति जगाई और समाजवाद के लिए सघर्ष मे और भी घनिष्ठ रूप से एकत्रित किया। इसका जीता जागता प्रमाण सोवियत सघ की तथा सघीय जनतत्रो की सर्वोच्च सोवियतो के चुनावो मे, राज्य ऋण मे लोगो के स्वैच्छिक योगदान मे, सरकार की वैदेशिक नीति के एकमत समर्थन तथा रोजमर्रे के अन्य हजारो छोटे-बडे कामो मे देखने मे आया।

कारखाने पुन चालू करने, कच्चे माल तथा अन्य सामान के खर्च मे किफायत करने, आदि मे प्रतियोगिता देश भर मे फैलती जा रही थी। लेनिनग्राद की पहल पर "पचवर्षीय योजना को चार वर्ष मे पूरा करना।" आन्दोलन शुरू हुआ।

यद्यपि समाजवाद के शत्रुओ का कहना था कि बहाली के काम मे दर्जनो वर्ष लग जायेंगे और अमरीकी कर्जों के बिना तो इसकी कल्पना ही नही की जा सकती, सोवियत सघ मे औद्योगिक उत्पादन १९४८ मे ही युद्धपूर्व के स्तर पर पहुच गया। इस सबध मे यह विचारणीय है कि पश्चिमी यूरोप मे उद्योग १९४८ मे अपने युद्धपूर्व के स्तर पर नही पहुचा था हालाकि उसे सोवियत उद्योग की तुलना मे कही कम क्षति पहुची थी। इसके अलावा पश्चिमी यूरोप को अमरीकी बैको से बडे क़र्ज़ मिल रहे

थे, जबकि संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति सोवियत संघ को क़र्ज़ देने पर प्रतिबंध लगा रहे थे। एक पूर्व सम्पन्न संधि का उल्लंघन करते हुए संयुक्त राज्य अमरीका के व्यापार मंत्रालय ने तकनीकी साज़-सामान की सोवियत संघ को रवानगी बन्द कर दी और बाद में सोवियत संघ से क्रैब और कुछ प्रकार के पोस्तीनों की ख़रीदारी पर भी रोक लगा दी।

अपनी ओर से सोवियत सरकार ने देश की इतनी कठिनाइयों के बावजूद फ़्रांस को बड़ी मात्रा में अनाज भेजा। १६४७ में सोवियत जनगण ने चेकोस्लोवाकिया के सहायतार्थ भी ६,००,००० टन अनाज भेजा। प्राग के समाचारपत्रों ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि यह अनाज संसार भर में सबसे कम दाम पर भेजा गया था। सोवियत संघ ने और भी कई देशों की सहायता की जिन्हें फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ युद्ध में क्षति उठानी पड़ी थी। उदाहरण के लिए चीन को बहुत सुविधाजनक शर्तों पर क़र्ज़ दिया गया।

यह बता देना भी आवश्यक है कि सोवियत जनगण को अपनी अर्थव्यवस्था की बहाली दूसरी बार करनी पड़ रही थी: पहली बार गृहयुद्ध और हस्तक्षेप के बाद करनी पड़ी थी जो १६१४–१६१८ के प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत हुए थे। अब दूसरी बार फ़ासिज़्म की पराजय के बाद इस बार बहाली का काम आधे समय में पूरा हो गया। इस समय तक सोवियत अर्थव्यवस्था का भौतिक और तकनीकी आधार और स्वयं मज़दूर वर्ग भी बदल चुका था। १६४५ में उराल और पश्चिमी साइबेरिया ही १६१३ में सारे रूस की पैदावार का लगभग दोगुना कोयला और इस्पात पैदा कर रहे थे, और इन दो इलाक़ों में ख़रादों का उत्पादन क्रांतिपूर्व रूसी साम्राज्य से ४८७ प्रतिशत अधिक था।

यह भी मालूम है कि तीसरे दशक के शुरू में इस्पात कारख़ानों और दोनेत्स बेसिन की खानों की बहाली एक अत्यंत जटिल समस्या साबित हुई, उधर वोलख़ोव बिजलीघर का निर्माण-कार्य बहुत धीरे-धीरे हो रहा था। यह ऐसा समय था जब सोवियत संघ के प्रथम ट्रैक्टर, मोटरकार, रेलवे इंजन ही नहीं, बल्कि तथाकथित "लाल निदेशक" भी सामने आये। उन्हें न विशेष ज्ञान था और न व्यावहारिक अनुभव, उन्हें अध्ययन का समय नहीं मिला था। उनमें से विशेषज्ञों की संख्या बहुत कम थी।

दो दशकों के बाद परिस्थिति बिलकुल बदल गई। हा, कठिनाइया अब भी थी मगर अब सोवियत अर्थव्यवस्था के पास उन कठिनाइयो को थोडे समय मे दूर करने के साधन हो गये थे। शातिकालीन मोर्चे के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रो का निदेशन करने का काम समाजवादी उद्योगीकरण की प्रथम परियोजनाओ मे अनुभव प्राप्त लोगो को सौपा गया। नौजवान राइज़ेर मैग्नितोगोर्स्क निर्माण परियोजना मे साधारण सुपरिटेंडेट थे। युद्ध के बाद वह धातु और रसायन उद्योग निर्माण के मत्री बने। दीमशित्स और कोम्जिन ने चौथे दशक मे एक जैसा रास्ता तय किया था। १९४५ मे पहले को ज़पोरोज्ये के विशाल उद्यमो की बहाली की जिम्मेदारी सौपी गई और दूसरे ने सेवास्तोपोल के पुनर्निर्माण का निदेशन किया।

१९४७ मे दिगाई एक निर्माण मत्रालय के प्रधान थे। यह युवा इजीनियर उन्नति करके एक साधारण मजदूर से बडे औद्योगिक ट्रस्ट का मेनेजर बना था। ज़स्याद्को जब मत्रिपद पर नियुक्त हुए तो उनकी आयु और भी कम थी। उनका जन्म १९१० मे एक मजदूर परिवार मे हुआ था। नौजवान फिटर को कम्युनिस्ट पार्टी सगठन ने उच्च शिक्षा लेने के लिए भेजा। इजीनियर होकर वह दोनेत्स बेसिन लौट आये और युद्ध का अत होने के कुछ ही दिनो बाद वह कोयला उद्योग मत्री नियुक्त हुए।

स्तखानोव आन्दोलन के पथ-प्रदर्शको की जीवनी भी इनसे कम उल्लेखनीय नही है। यह आन्दोलन चौथे दशक के मध्य मे शुरू हुआ था। बुनकर विनोग्रादोवा ने औद्योगिक अकादमी मे एक पाठ्यक्रम पूरा किया और उसके बाद एक सूती कपडा मिल की उपनिदेशक बनी। इजन ड्राइवर बोग्दानोव इजीनियर बने और मास्को–कीयेव रेलवे के प्रधान नियुक्त हुए। खनक स्तखानोव और इजन चालक क्रिवोनोस को भी प्रशासकीय पदो पर नियुक्त किया गया। बुसीगिन ने १९३५ मे क्रेमलिन मे हुए नवप्रवर्तको के एक सम्मेलन मे कहा था कि "मै कम पढा हू मेरी इससे बड़ी और कोई इच्छा नही कि अध्ययन कर सकू। मै केवल एक लोहार नही बनना चाहता, बल्कि यह भी जानना चाहता हू कि हथौडा मशीन कैसे बना है और मै उसे खुद बनाना चाहता हू।" पाचवे दशक के अत मे वह गोर्की मोटर कारखाने की उसी वर्कशाप के निदेशक थे जहा उन्होने अमरीकी लोहारो के काम का रिकार्ड तोडा था।

उद्योग के सभी प्रबंधकर्ताओं ने काफ़ी अनुभव प्राप्त कर लिया था। जनता के राजनीतिक और श्रम अनुभव का संपूर्ण स्तर आश्चर्यजनक रूप से ऊपर उठ चुका था।

प्रथम बहाली अभियान के दौरान मज़दूर वर्ग को बेरोज़गारी तथा श्रम शक्ति के बिखराव का सामना करना पड़ता था। उस समय तक निजी तौर पर उजरती श्रम से काम लेने की सरकारी आज्ञा थी; कुछ कारख़ानों में श्रम संबंधी टकरावों के कारण हड़तालें भी हुई थीं। समाजवादी क्रान्तिकारी और मेंशेविक संगठनों के अवशेष अभी भी क़ानूनी तौर पर काम कर रहे थे और मध्य एशिया और क़ज़ाख़स्तान के कुछ इलाक़ों में ज़मींदार और धनी लोग अभी मौजूद थे।

१९२१ में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या बस ७ लाख से कुछ ऊपर थी और कोम्सोमोल सदस्यों की संख्या २५० हज़ार तक भी नहीं पहुंची थी। आधे या आधे से भी कम मतदाता सोवियतों के चुनावों में भाग लिया करते थे।

पांचवें दशक तक इस स्थिति में मौलिक परिवर्तन हो चुका था। उस समय तक समाजवादी निर्माण पूरा हो गया था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान सोवियत समाज का अगुआ दस्ता—सोवियत संघ का मज़दूर वर्ग—भारी क्षति उठाने के बावजूद और भी शक्तिशाली तथा तपकर इस्पाती बन चुका था। उस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या ६० लाख तक पहुंच गई थी और कोई १ करोड़ तरुण कोम्सोमोल में शामिल हो चुके थे। ९९ प्रतिशत से अधिक मतदाता नियमित रूप से सभी चुनावों में भाग लिया करते थे।

इन सब बातों से जनता के स्वतःस्फूर्त रचनात्मक प्रयास की एक विशाल लहर उठी और समस्त सोवियत जनगण में युद्धोत्तर वर्षों में देशभक्तिपूर्ण उत्साह की भावना जाग उठी और इससे उन्हें उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त करने में सहायता मिली।

चौथे पंचवर्षीय योजना काल (१९४६–१९५०) के दौरान कुल ६,२०० उद्यम निर्मित या बहाल हो चुके थे, यानी औसतन रोज़ तीन से अधिक बड़ी औद्योगिक परियोजनाओं का निर्माण पूरा हो रहा था। उद्योग में काम करनेवाले मज़दूरों और दफ़्तरी कर्मचारियों की संख्या में ३० लाख से अधिक की वृद्धि हुई। मज़दूर वर्ग की बनावट में

उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। बहुत से पुराने अनुभवी लोग पेंशनयाफ्ता हो चुके थे और उनका स्थान युद्ध से लौटनेवाले सैनिकों ने सम्भाल लिया था। उद्योग मे स्त्रियो और किशोरो का अनुपात घट गया। वे कोयला खानो और खनिज लौह खदानो मे काम करते और लारिया और रेलवे इजन चलाते बहुत कम दिखाई देते थे। जो लोग योग्यता प्राप्त करना या बढाना चाहते थे, उनके लिए बडी सुविधाए उपलब्ध थी। नयी मशीनो के चालू होने से नये पेशो के मजदूरो की सख्या बढ गई।

पहले ही की तरह अब भी गैर-रूसी जातीय जनतन्त्रो और प्रदेशो मे औद्योगिक विकास की ओर बहुत ध्यान दिया जा रहा था। आर्मीनिया मे (सेवान झील पर), जार्जिया मे (खामी और सुखूमी) और उज्बेकिस्तान मे (फरहाद) सबसे पहले पनबिजलीघर बनाये जा रहे थे। ट्रान्स-काकेशिया और मध्य एशिया मे इस्पात उत्पादन केन्द्र स्थापित किये जा रहे थे।

वोल्गा और उराल के बीच तेलकूपो के ऊपरी ढाचो का जाल-सा बिछा जा रहा था। यह तेल केन्द्र सोवियत अर्थव्यवस्था मे उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगा जितनी भूमिका तेल उद्योग का सर्वमान्य केन्द्र आजरबैजान अदा किया करता था।

उन दिनो प्रथम लम्बी गैस पाइप लाइनें बनाई गईं जिनके जरिये मास्को, लेनिनग्राद, कीयेव, तथा अनेक अन्य केन्द्रो को इस ईंधन की सप्लाई सुनिश्चित हो गई।

सबसे तेज औद्योगिक विकास उक्रइना, बेलोरूस, मोल्दाविया के पश्चिमी भागो और बाल्टिक जनतन्त्रो मे हो रहा था जो १९४० मे सोवियत सघ मे शामिल हो गये थे। १९४० तक ये सभी दस्तकारी उद्योग के इलाके थे; बेरोजगारी का दौर दौरा था। बाल्टिक जनतन्त्रो मे भी जहा प्रथम विश्वयुद्ध से पहले उद्योग का स्तर रूसी साम्राज्य के अन्य भागो से ऊचा था, उद्योग का पतन हुआ था और पूजीवादी-जमीदाराना पार्टियो के सत्तारूढ होने के जमाने मे औद्योगिक विकास का स्तर बहुत गिर गया था।

फासिस्ट हमलावर शक्तियो के निकाल बाहर किये जाने के तुरत बाद ही इन नवजात सोवियत जनतन्त्रो और प्रदेशो मे उद्योग का समाजवादी पुनर्निर्माण फिर से शुरू हुआ जिसमे महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध
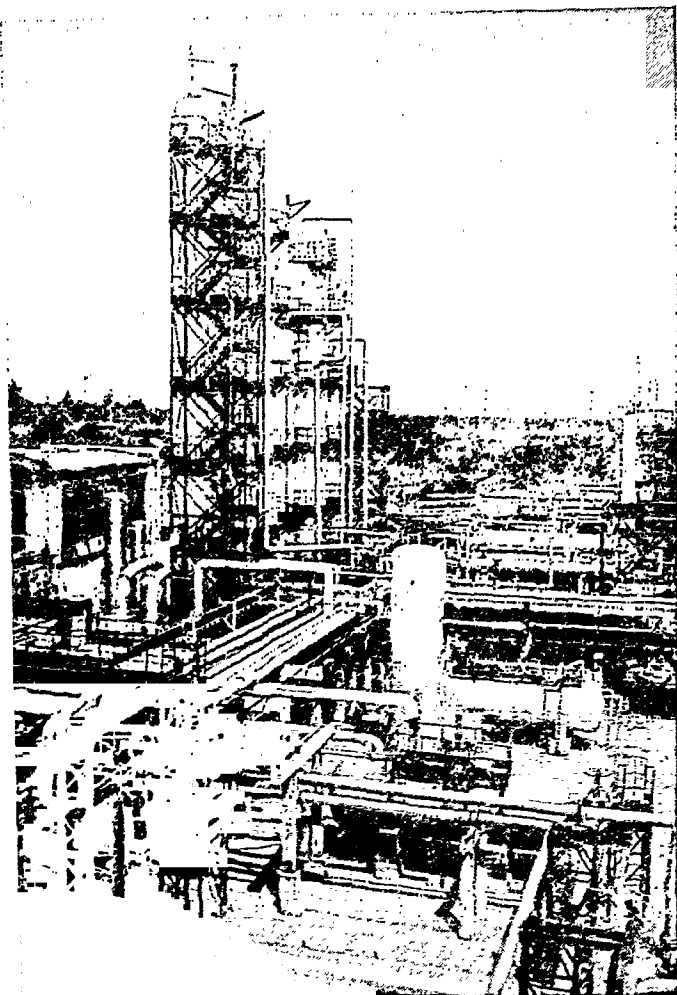
बाशकिर जनतंत्र में
तेल शोधक कारख़ाना

के कारण बाधा पड़ गई थी। ये जातियां अन्य सोवियत जनतंत्रों की सहायता से थोड़े ही दिनों में अपने आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने में सफल हुईं। इसके लिए पूरे देश की ओर से काफी प्रयास और अतिरिक्त धन की जरूरत पड़ी। प्रथम युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना के सामने वैसे भी बड़े-बड़े कार्यभार थे, इसके बावजूद केवल बाल्टिक जनतंत्रों में अर्थव्यवस्था के तेज विकास के लिए जो पूंजी निवेश कर दी गयी थी, वह उस रकम से काफी अधिक ही थी जो १६१८–१६३२ के बीच पूरे मध्य एशिया और क़ज़ाख़स्तान के लिए की गई थी। उदाहरणार्थ १६४६–१६५० की अवधि में एस्तोनियाई उद्योग को उससे अधिक पूंजी निवेश मिला जितना पूरे युद्धपूर्व दौर में आर्मीनिया को दिया गया था। उक्रइना का पुराना शहर ल्वोव एक प्रधान औद्योगिक केन्द्र बनता जा रहा था। पश्चिमी मोल्दाविया की अर्थव्यवस्था भी बदल रही थी।

युद्ध के घावों को दूर करते हुए सोवियत सरकार देश के सभी भागों में समान स्तर पर समाजवादी निर्माण को बड़ा महत्वपूर्ण समझती थी।

छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में आर्थिक प्रगति की मुख्य विशेषता थी विशालकाय पनबिजलीघरों का निर्माण। कामा, वोल्गा, दोन और द्नेपर नदियों के बिजलीघरों का निर्माण विशेष जोरों पर हो रहा था। वोल्गा और दोन को मिलानेवाली, जहाजरानी योग्य एक नहर तथा कूइबिशेव और स्तालिनग्राद में विशालकाय पनबिजलीघरों के निर्माण के संबंध में सरकार ने अनेक विशेष निश्चय किये। निर्माण मजदूरों को सोवियत संघ में निर्मित आधुनिकतम मशीनरी की–२५ टन तक का बोझ उठा सकनेवाली टीप-अप-लारियां, बुलडोजर और सक्शन ड्रेज मशीनें, हर तरह के क्रेन तथा अन्य मशीनों की–नियमित रूप से सप्लाई हो रही थी। ख्यातिप्राप्त ड्रेगलाइन एक्सकेवेटर का डिजाइन और उत्पादन स्वेर्दलोव्स्क में "उरालमाश" कारखाने में किया गया था। इनमें से हर एक की ऊंचाई एक पांच मंजिला मकान के बराबर थी। उनकी १०० मीटर लम्बी बूम के जरिये १५,००० घन मीटर मिट्टी रोज खोदी और हटाई जा सकती थी। वोल्गा-दोन नहर के निर्माण में इन्हीं विशालकाय मशीनों से काम लिया गया। अर्थशास्त्रियों ने अनुमान लगाया था कि १७ मजदूरों की एक टोली ऐसे एक एक्सकेवेटर की सहायता से एक साल में इतना काम कर सकती थी जितना हाथ से करने में ५०० साल लग जाते।

१९५२ की गर्मियो मे १०१ किलोमीटर लम्बी वोल्गा-दोन नहर खुल गई। उसने दोन तटवर्ती मैदानो की सिंचाई की और पाच सागरों (सफेद, वाल्टिक, अजोव, काले, कास्पियन सागरो) को एक जल-परिवहन व्यवस्था मे जोड़ दिया।

देश के मध्य क्षेत्रो मे और मध्य एशिया में नहरे खोदने से और खेतों की सुरक्षा के लिए बड़े वन क्षेत्र लगाने से आखिरकार सूखे से बचना और मैदानी हवाओ और भूक्षरण को रोकना सम्भव हो गया। कृषि के विकास को तेज करने की इच्छा अधिक प्रवल थी क्योंकि अर्थव्यवस्था की इस शाखा की वहाली में जितनी आशा थी उससे अधिक समय लग रहा था। सामूहिक और राजकीय फार्मों का विकास कठिन सावित हो रहा था। युद्ध से सोवियत देहात को बड़ी क्षति पहुंची। जब प्रसिद्ध ट्रैक्टर चालक अगेलिना युद्ध के बाद उक्रइना लौटकर आयी तो उसने देखा कि उसके खेतो पर गायें हल चला रही थी और खेतो मे चारो ओर खन्दकें खुदी पड़ी थी। मोगिल्योव प्रदेश के एक सामूहिक फ़ार्म मे जहा सोवियत संघ के वीर ओर्लोव्स्की ने युद्ध के बाद फार्म अध्यक्ष की हैसियत मे आने का निश्चय किया, न घोडे थे, न गायें और न बीज ही उपलब्ध थे। युद्ध के पहले ये दोनो आदर्श सामूहिक फ़ार्म माने जाते थे, जिनके पास मशीनें और आवश्यक साज-सामान था और उनके सामूहिक किसानो को बड़ी आमदनी होती थी।

युद्ध के दौरान जिन इलाको पर शत्रु का कब्जा हुआ, वहा १९४१ के पहले देश की आधी उपज हुआ करती थी। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, फासिस्ट सेनाओ ने ९८,००० सामूहिक फ़ार्म, १८,०३६ राजकीय फार्म और २,८९० मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन लूट लिये। मवेशियो की संख्या भी बहुत कम रह गई थी।

औद्योगिक व्यवस्था जो अभी अपने आपको शातिकालीन स्थितियो के अनुकूल ढालने की प्रक्रिया से गुजर रही थी, इस योग्य नही हुई थी कि फ़ार्मों को मशीनें, खाद, घासपात तथा कीट नाशक रसायन मुहैया कर सके जिनकी उन्हे जरूरत थी। उदाहरण के लिए १९४५ मे केवल ३०० अनाज हारवेस्टर बनाये गये, जबकि १९३७ मे उनकी संख्या लगभग ४४,००० थी और केवल ७,७०० ट्रैक्टर बनाये गये, जबकि १९३६ मे १,१३,००० बनाये गये थे। चुकन्दर, आलू, मकई, कपास और

फ्लैक्स की फसल काटने के लिए मशीनें उपलब्ध नही थी। मोटरगाडियो और खनिज खाद का उत्पादन भी ५०-६५ प्रतिशत कम हो गया था।

सवाल था प्राथमिकता किसे दी जाये। कम्युनिस्टो, अगेलिना तथा ओर्लोव्स्की जैसे अनुभवी कृषि सगठनकर्ताओ ने पहला कदम अपने-अपने सामूहिक फार्मों के सदस्यो को एकत्रित करने के लिए उठाया। उन्होने कठिनाइया नही छिपाईं, कार्यभारो की व्याख्या की, निस्स्वार्थ श्रम के उदाहरण पेश किये। सामूहिक किसानो ने देखा कि अगेलिना अथक रूप से नौजवानो को ट्रैक्टर चलाना तथा खेत जोतना और रात मे ट्रैक्टरो की मरम्मत करना सिखाती है। ओर्लोव्स्की की अथक मेहनत ने औरो को भी प्रभावित किया। लडाई मे उनका एक हाथ कट गया था लेकिन उन्होने अपनी पेंशन की आमदनी पर मास्को मे आराम का जीवन बिताने का ख्याल छोड दिया। उन जैसे और भी अनेक सगठनकर्ता थे जिनका अनुसरण किसानो ने उत्साहपूर्वक किया और थोडे ही दिनो मे काफी फार्मों की हालत सुधरने लगी।

परन्तु यह स्थिति हर जगह नही थी। हजारो आर्टेलो को चालू करने के लिए बाहरी सहायता की जरूरत पडी। राज्य के पास इतनी निधि और साधन नही थे कि सभी सामूहिक और राजकीय फार्मों को फौरन काफी सहायता दे पाता। उद्योग को, उत्पादन साधनो के उत्पादन को ही पहले पहल सहायता देनी थी। राजकीय बजट म फार्मों का उनकी जरूरत से बहुत कम अनुदान दिया गया था। १९४६–१९५० की योजना के अनुसार कृषि पर राज्य व्यय २,००० करोड रूबल था, दूसरे शब्दो मे उद्योग मे लगाई गई रकम से आठगुना कम। स्वय सामूहिक फार्मों ने जो पूजी लगाई, वह ३,८०० करोड रूबल थी।

फार्मों पर अनुभवी अमले की बडी कमी थी। १९४६ मे सामूहिक फार्मों के लगभग आधे अध्यक्षो, दल नेताओ और पशुपालन फार्मों के निदेशको को यह काम करते हुए एक साल से अधिक समय नही हुआ था। औसतन सामूहिक फार्मों के २५ अध्यक्षा मे केवल एक माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त था। सगठनकर्ताओ की अक्सरियत एसी थी जिसे केवल चार साला स्कूली शिक्षा मिली थी।

१९४६ के सूखे से सोवियत कृषि को बडा धक्का लगा।

उन दिनो कृषि के प्रशासन म जिन बातो का रिवाज था, वे कई

लिहाज से बहुत असंतोषजनक थीं। योजनाएं केन्द्र से बनाकर भेजी जाती थीं और उनमें अलग-अलग इलाकों की ठोस सम्भावनाओं और खास स्थितियों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। आर्थिक प्रोत्साहन के उसूल का गलत इस्तेमाल होता था।

इन बातों को सुधारने के लिए पार्टी और सरकार ने तात्कालिक कारंवाइयों का एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों को मशीनों और सामान की सप्लाई बढ़ाई जाये और अनुभवी और प्रशिक्षित कार्यकर्ता वहां भेजे जायें। कृषि मशीनों की सप्लाई में वृद्धि हुई। युद्ध से पहले ट्रैक्टरों का उत्पादन स्तालिनग्राद, खारकोव और चेल्याबिन्स्क में तीन कारखानों में हुआ करता था। लेकिन अब उनकी संख्या बढ़ाई गई—अब उनमें लीपेत्स्क, व्लादीमिर, रुबत्सोव्स्क (अल्ताई इलाका) और बाद में कुछ और गये। १९५० में युद्धपूर्व के किसी भी साल की तुलना में अधिक मशीनें फ़ार्मों को भेजी गयीं। नये डिजाइन के ट्रैक्टर और मशीनें, चुकन्दर, आलू, कपास और फ़्लैक्स की फ़सलें काटने के कम्बाइन भी खेतों में देखने में आये।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल ने कृषि में अग्रणी श्रमिकों को पदकों से विभूषित करने की पद्धति निर्धारित की। इनमें जो सबसे अच्छे थे, उन्हें समाजवादी श्रम वीर की पदवी प्रदान की गई।

धीरे-धीरे इन कारंवाइयों के नतीजे सामने आने लगे: बोआई अधिक बड़े क्षेत्र में की जाने लगी, अनाज, आलू और औद्योगिक फ़सलों की पैदावार बढ़ी। इससे १५ दिसम्बर, १९४७ को खाद्य की राशनबन्दी उठाना सम्भव हो गया। इसका मतलब यह था कि युद्ध का एक और अवशेष अतीत की बात बन गया।

पांचवें दशक के अंत तक सामूहिक फ़ार्मों पर १९४० से कम लोग काम कर रहे थे, मगर सामूहिक फ़ार्म अपने युद्धपूर्व के उत्पादन स्तर पर पहुंच गये थे और राजकीय फ़ार्म तो उससे भी आगे बढ़ गये थे। राजकीय फ़ार्मों के मजदूरों को राज्य द्वारा निश्चित एक निम्नतम वेतन मिलता था और जब योजना के लक्ष्यांकों की अतिपूर्ति होती तो और बहुत कुछ मिलता था। राजकीय फ़ार्मों को श्रेष्ठतम मशीनों से सुसज्जित किया गया था और श्रम व्यवस्था वहां सामूहिक फ़ार्मों की तुलना में ज्यादा ऊंचे स्तर की थी।

उस दौर में बाल्टिक जनतंत्रों तथा उक्रइना, बलोरूस और मोल्दाविया के पश्चिमी भागों में कृषि में मौलिक परिवर्तन हुए। वहां पांचवें दशक के उत्तरार्द्ध में फार्मों को समाजवादी आधार पर पुनर्गठित करने का काम, जो नाजी आक्रमण की वजह से रुक गया था, फिर शुरू किया गया। राज्य ने नये राजकीय तथा सामूहिक फ़ार्मों को नयी मशीनरी और इमारती सामान का खासा बड़ा हिस्सा भेजा और अतिरिक्त कर्ज और बीज भी दिया। स्थानीय राष्ट्रवादियों और कुलकों ने, भूतपूर्व पुलिसवालों और पदाधिकारियों ने समूहीकरण का विरोध किया। ऐसी स्थिति पैदा हो गई जो कई लिहाज से प्रथम पंचवर्षीय योजना के समय की याद दिलाती थी। इस संघर्ष के दौरान काफी बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट पार्टी और काम्सोमोल कार्यकर्ता मारे गये। लेकिन इन बातों से नयी जीवन पद्धति को जन्म लेने से नहीं रोका जा सकता था। पिछड़े हुए अलग-अलग व्यक्तिगत खेतों के बजाय बड़े सामूहिक फ़ार्म लहलहाने लगे। समाजवादी कृषि की परम्परा, सामूहिक फार्मों की जीवन पद्धति और पास-पड़ोस (पूर्व) के इलाकों का अनुभव वर्ग दुश्मनों तथा सदियों पुराने पूर्वाग्रहों से अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए। १६५० तक सभी नये क्षेत्रों में समूहीकृत कृषि की जीत हो चुकी थी। यह समाजवादी कृषि की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विजय थी जो ऐसी कठिन स्थिति में प्राप्त की गई थी जब एक-एक ट्रैक्टर, एक-एक हारवेस्टर, एक-एक किलोग्राम अनाज, एक-एक किलोग्राम रूई का बड़ा मूल्य था।

उन वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि कपास उत्पादकों ने प्राप्त की थी। *मध्य एशिया, कज़ाखस्तान और आजरबैजान के सैकड़ों सामूहिक फार्मों ने* कपास की अभूतपूर्व फसल हासिल की। १६५० में ३७००००० टन कपास राज्य को बेचा गया, जो योजना के लक्ष्य से ६५०००० टन अधिक था। इसका कारण केवल यही नहीं था कि कपास उपजानेवाले क्षेत्रों को युद्ध के समय उतनी क्षति नहीं पहुंची थी जितनी उन जनतंत्रों और क्षेत्रों को जिनपर शत्रु ने अधिकार कर लिया था। कपास उपजानेवालों की आमदनी उन फ़ार्मों से अधिक थी जिनकी विशिष्टता अनाज उपजाना और पशुपालन थी। ट्रांस-काकेशिया के उन सामूहिक फार्मों की आमदनी भी औसत से काफी अधिक थी जो अंगूर और साइट्रस उपजाते थे।

अधिक ख़राब स्थिति उन फ़ार्मों की थी जिनसे राज्य अनाज, मांस तथा आलू ख़रीदता था क्योंकि इन चीज़ों का दाम अक्सर उनपर लगे श्रम के अनुकूल नहीं होता था।

इस अदायगी पद्धति के कारण उत्पादन के विकास में बाधा पड़ रही थी और बहुतेरे सामूहिक किसानों की प्रवृत्ति यह थी कि सामूहिक क्षेत्र में यथासम्भव कम श्रम करें और अधिक से अधिक समय अपने निजी खेत के टुकड़े में लगायें।

निस्सन्देह युद्धोत्तर वर्षों की उन कठिन स्थितियों में भी, जो अक्सर अंतरविरोधों से भरी होती थीं, स्थानीय पार्टी संगठन, सार्वजनिक संस्थाएं जिनका कृषि से संबंध था और अगुआ कृषि संगठनकर्ता लगातार कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए, भौतिक प्रोत्साहन और नैतिक प्रेरणा में सही तालमेल बिठाने के लिए और आधुनिक कृषि प्रविधि जारी करने के लिए पूरी ताक़त से काम करते रहे। १९५० और १९५३ के बीच सामूहिक फ़ार्मों को मिलाकर बहुत बड़े फ़ार्म बनाये गये। फ़ार्मों की कुल संख्या २,५४,००० से घटकर ९३,००० रह गई। छोटे आर्टेलों के मिल जाने से कृषि मशीनों का ज़्यादा उचित उपयोग किया जाने लगा और प्रशासकीय ख़र्च में कमी की गई। फिर भी कृषि उत्पादन में उतनी अधिक वृद्धि नहीं हुई जितनी पूरी अर्थव्यवस्था के हितार्थ आवश्यक थी। प्रगति अवश्य हुई, मगर ज़रूरत उससे बहुत ज़्यादा की थी। योजना के लक्ष्य, ख़ासकर जहां तक पशुपालन का संबंध था, पूरे नहीं हो पाये। समूहीकृत कृषि में जो ज़बर्दस्त सम्भावनाएं निहित थीं, उनका पूरा उपयोग नहीं किया गया था, उसका उद्योग के काम पर तथा पूरी आबादी के लिए विभिन्न सामान और खाद्य पदार्थों की सप्लाई पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

लेकिन कुल मिलाकर श्रमजीवी जनता का जीवन-स्तर बराबर ऊंचा हो रहा था। हर साल आम उपभोग की चीज़ों के दाम कम होते रहते थे और काम करने और रहन-सहन की परिस्थितियां बराबर सुधरती जा रही थीं। हर साल शहरों में २ करोड़ से ज़्यादा वर्ग मीटर रिहायशी क्षेत्रफल की वृद्धि की जा रही थी (देहातों में बनाये जानेवाले रिहायशी मकानों को छोड़कर)। सेनेटोरियमों, अवकाश गृहों, अस्पतालों, जच्चाख़ानों, किंडरगार्टनों और शिशुगृहों की संख्या भी बढ़ रही थी। मलेरिया, तपेदिक़, पोलियो पीड़ित रोगियों की संख्या बहुत घट गयी

थी और जनसख्या मे वृद्धि (आबादी के प्रत्येक १,००० व्यक्तियो पर) सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, स्वीडन, जर्मन सघात्मक गणराज्य से अधिक थी।

युद्धपूर्व के स्कूलो की सख्या १९४५–१९४६ के शिक्षा वर्ष मे ही प्राप्त कर ली गई थी। फिर शहरो और देहातो मे अनिवार्य सार्विक सातसाला स्कूली शिक्षा जारी कर दी गयी थी। जो लाग स्कूल मे दस साल पूरा कर लेते, उनके लिए दूसरे दरजे की स्कूली सनद और जो विद्यार्थी प्रमुख स्थान प्राप्त करे, उनके लिए स्वर्ण तमगे जारी किये गये जो उच्च शिक्षा सस्थाओ मे प्रवेश पाना सुगम बनाते थे।

१९५० मे देश मे कुल ८८० उच्च शिक्षा सस्थाए थी जिनमे छात्रो की कुल सख्या १२,४७,००० थी। युद्ध से ठीक पहले की तुलना मे यह सख्या डेढ गुनी थी। उन वर्षो के प्रतिभाशाली छात्रो को तो गिनना भी मुश्किल है। उनमे नोबल पुरस्कार विजेता अकादमीशियन बासोव, विज्ञान के डाक्टर अतरिक्षयात्री फेओक्तीस्तोव, और फिल्म निर्देशक चुखराई शामिल है।

सोवियत सघ का सास्कृतिक जीवन प्रतिवर्ष अधिक विविधतापूर्ण और समृद्धशाली होता जा रहा था। फदेयेव, पोलेवोय तथा कजाकेविच की कृतिया जिनमे महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीरो का गुणगान किया गया था, अत्यधिक सख्या मे छापी जा रही थी। इस दौर के साहित्य, फिल्म, नाटक तथा चित्र कला पर युद्ध सबधी विषय हावी थे। सोवियत कलाकारो ने अपनी समस्त मेधा और प्रतिभा फासिज्म के विरुद्ध सघर्ष के उन वीरतापूर्ण दिनो को अमर बनाने मे लगा दी ताकि आनेवाली पीढियो के दिलो मे उनकी स्मृति सदा बनी रहे। साथ ही सभी सास्कृतिक कृतियो ने शाति के ध्येय का समर्थन किया। चाहे सीमोनाव की कविताए हो, येफीमोव के और कुक्रिनीक्सी व्यग्यकारो के कार्टून हो, वूचेतिच की मूर्ति कला हो, शोस्ताकोविच का सगीत हो या एरेनबुर्ग की रचनाए हो, वे सब के सब देश के भीतर और बाहर बहुत लोकप्रिय हो जाती थी।

सोवियत वैज्ञानिको, आविष्कारको और डिजाइनरो ने अपना कार्य शाति की रक्षा को समर्पित किया। १९४६ के वसत मे प्रथम सोवियत जेट लडाकू विमानो की परीक्षा की गई और विमान दिवस के उपलक्ष्य

में आयोजित एक परेड में हज़ारों-हज़ार आदमियों को उन्हें देखने क
अवसर प्राप्त हुआ। विदेशी पर्यवेक्षकों ने स्वीकार किया कि उरे
देखकर वे आश्चर्यचकित रह गये थे। विदेशी वैज्ञानिकों को भी यह विश्वास
नहीं था कि सोवियत संघ शीघ्र ही परमाणु बम के रहस्य को खोल
देगा। परन्तु १९४६ में ही कुर्चातोव के निरीक्षण में सोवियत संघ और
यूरोप का प्रथम परमाणु रिएक्टर चालू हो गया। १९४९ में सोवियत संघ के
पास परमाणु शस्त्रास्त्र थे और १९५३ में उसने हाइड्रोजन बम की परीक्षा
कर ली थी। सोवियत सेना को आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित करने
के लिए और भी क़दम उठाये गये लेकिन यह सब देश की प्रतिरक्षा
क्षमता को सुदृढ़ बनाने के लिए ही किया गया था।

ताशक़न्द विश्वविद्यालय

१९५० मे शाति आन्दोलन के समर्थकों ने परमाणु शस्त्रो पर बिना शर्त रोक लगाने की माग करते हुए प्रसिद्ध स्टाकहोम अपील जारी की। सोवियत सघ के ११,५०,००,००० से अधिक निवासियो ने, या दूसरे शब्दो मे सारी बालिग़ आबादी ने उस ऐतिहासिक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये। १२ मार्च, १९५१ को सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने शाति की रक्षा का क़ानून पास किया जो देश के श्रमजीवी जनगण की आशाओ और आकाक्षाओ का प्रतिबिम्ब था। युद्ध का प्रचार मानवजाति के विरुद्ध एक भयकर अपराध घोषित किया गया।

इस प्रकार शान्तिकाल मे सक्रमण पूरा करके सोवियत जनगण ने समाजवादी निर्माण का काम, जो नाजी आक्रमण की वजह से रुक गया था, नये उत्साह से शुरू किया।

सोवियत समाज के जीवन मे लेनिनवादी प्रतिमानों की सुसंगत तामील

छठे दशक के प्रारम्भ मे आर्थिक विकास युद्धपूर्व के मुख्य सूचकांको को पीछे छोड चुका था। सोवियत देश ने इतनी अल्पावधि मे फासिस्ट आक्रमण की लाई हुई सारी विपदाओ को मिटाकर जैसी सफलताए प्राप्त की थी, उन्हे शारीरिक और मानसिक दृष्टि से सशक्त लोग ही प्राप्त कर सकते थे।

उस अवधि मे प्राप्त अनुभव का विश्लेषण अधूरा रहेगा अगर उसके साथ उस समय की विभिन्न कठिनाइयो और असफलताओ का उल्लेख नही किया जाये। योजनाओ के लक्ष्याको की अतिपूर्ति के साथ ही साथ (धातु, कोयला, तेल और बिजली उद्योग मे), उद्योग की कुछ शाखाए ऐसी भी थी जहा लक्ष्य पूरे नही हुए थे। इस सम्बन्ध मे डीजल इजनो, रेलवे गाड़ियो, मोटरगाड़ियो, सूती मिल मशीनरी और टर्बाइन के उत्पादन का उल्लेख किया जा सकता है। कृषि मे युद्धपूर्व का उत्पादन-स्तर प्राप्त कर लिया गया था, लेकिन १९४० की पैदावार की तुलना मे २७ प्रतिशत वृद्धि हासिल करने का कार्यभार पूरा नही किया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि हल्के और खाद्य उद्योग मे रुकावटें पडी, उपभोक्ता माल के उत्पादन की योजना पूरी करना असम्भव हो गया और व्यापार अव्यवस्थित होने लगा।

खुद योजनाओं में भी कुछ त्रुटियां मौजूद थीं। शुरू में उनमें बड़ी संख्या में कम क्षमतावाले बिजलीघर बनाने का प्रबंध था। आधुनिक रसायन के महत्व को कम करके आंका जाता था, खासकर उन क्षेत्रों के महत्व को जिनका संबंध प्लास्टिक, कृत्रिम रेशे और संश्लिष्ट रबड़ से था। प्राकृतिक रबड़ पर तथा भूमिगत कोयले के गैसीकरण पर बेबुनियाद ज्यादा जोर दिया गया था।

इससे पूंजी विनियोजन में भी ग़लतियां हुईं। ऐसा भी हुआ कि उद्योग की जिन शाखाओं में विशेष सम्भावनाएं निहित थीं, उन्हें पर्याप्त मात्रा में धन नहीं मिलता था और उत्पादन की कम लाभदायक शाखाओं के विस्तार पर काफ़ी धन खर्च कर दिया जाता था।

कुछ भूतपूर्व प्रशासकों ने इस स्थिति को उचित बताने का प्रयत्न भी किया। उदाहरण के लिए कागानोविच ने जो परिवहन व्यवस्था के लिए ज़िम्मेदार थे, बिजली और डीज़ल रेलवे इंजनों का विरोध किया। १९५४ तक वह यही कहते रहे कि "मैं वाष्प रेलवे इंजनों का समर्थक हूं और उन हवाई क़िले बनानेवालों का विरोधी हूं जो समझते हैं कि इनके बिना काम चल सकता है।"

कुछ ऐसे लोग भी थे जो पार्टी और जनता से सच्चाई छिपाने का प्रयत्न करते थे। मिसाल के लिए मलेंकोव ने जिन्हें सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति ने कृषि के लिए ज़िम्मेदार बनाया था, १९५२ में सरकारी तौर पर यह घोषणा की कि सोवियत संघ में अनाज की समस्या हल कर ली गई है, जबकि वस्तुस्थिति यह थी कि अनाज की कुल उपज १९४० से कम थी और देश की आवश्यकताएं पूरी नहीं हुई थीं।

विज्ञान और प्रविधि में सोवियत संघ की उपलब्धियों के महत्व को कम आंकने का खूब विरोध किया जाने लगा, लेकिन साथ ही विदेशों की अनेक सफलताओं को प्रायः महत्व नहीं दिया जाता था।

आज यह जानकर आश्चर्य होगा कि उदाहरण के लिए साइबरनेटिकी जैसे विषयों के अध्ययन को उस समय प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था। आनुवंशिकी के कुछ क्षेत्रों में भी अनुसंधान कार्य ठप पड़ गया था। अर्थशास्त्र में गणितीय विधियों को लागू करने की ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान नहीं दिया गया। इन क्षेत्रों में सोवियत वैज्ञानिकों के कामों को, जो कई वर्ष पूर्व सफलतापूर्वक शुरू हो चुके थे, उचित समर्थन नहीं मिला।

इन सब कारणो से सोवियत अर्थव्यवस्था के तेज विकास मे बाधा पडी और कुछ हद तक विषमता उत्पन्न हो गई जिसको दूर करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पडा।

इससे इनकार नही किया जा सकता कि अर्थव्यवस्था की युद्धोत्तर बहाली और एक नये विश्वयुद्ध को रोकने तथा शाति का सुदृढ करने के निरन्तर सघर्ष की आवश्यकता से सबधित वस्तुनिष्ठ कठिनाइया बहुत अधिक थी। युद्ध के दौरान जनहानि को भी अनदेखा नही किया जा सकता। राज्य बजट मे इतनी गुजाइश नही थी कि देश के समक्ष सभी तात्कालिक कार्यभारा का एकसाथ समाधान किया जा सके। स्थिति इस कारण और भी जटिल हो गई थी कि इन वस्तुनिष्ठ कठिनाइयो के रहते हुए समाजवादी जनवाद के सिद्धातो से पथभ्रष्टता के कारण सामाजिक जीवन के कुछ प्रतिमानो का उल्लघन भी हो रहा था।

सोवियत लोग इस बात के आदी हो गये थे कि समाजवादी निर्माण से सबधित सभी मुख्य समस्याओ पर कम्युनिस्ट पार्टी काग्रेसो, पूर्णाधिवेशनो, सम्मेलनो और बैठको मे विचार-विमर्श किया जाये। अलग-अलग उद्यमो और जिलो, प्रदेशो और जनतत्रो मे पार्टी की बैठके और सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित होते रहे, मगर राष्ट्रीय स्तर पर सर्वमान्य प्रतिमानो का स्पष्टत उल्लघन होने लगा था। कम्युनिस्ट पार्टी की १८वी काग्रेस को १९३७ मे होना था मगर वह कही १९३९ मे आयोजित की गई और उसके उपरात अगली काग्रेस १३ वर्ष बाद ही हुई।

जब १९वी पार्टी काग्रेस आखिरकार अक्तूबर, १९५२ मे आयोजित हुई तो देश भर मे लोगो ने इसके काम को सतोष की दृष्टि से देखा। काग्रेस ने उन घटनाओ का खुलासा किया जो १९३९ के बाद घट चुकी थी और उसने १९५१–१९५५ की पचवर्षीय योजना के निर्देश स्वीकार किये। उसमे और अधिक आर्थिक विकास, जनता के जीवन-स्तर मे वृद्धि तथा सास्कृतिक विकास की व्यवस्था की गई। काग्रेस द्वारा स्वीकृत फैसले तथा राष्ट्र की पूरी जीवन पद्धति वर्गहीन समाज की दिशा मे सोवियत सघ की अनिवार्य प्रगति का सबसे स्पष्ट सबूत था।

नयी आर्थिक नीति के प्रारम्भिक वर्षों से १९३९ तक कम्युनिस्ट पार्टी की नियमावली मे मजदूरो तथा श्रमजीवी लोगो के अन्य तबको के लिए पार्टी मे शामिल होने की विभिन्न शर्तें थी। १९वी काग्रेस तक

नियमावली में पार्टी की व्याख्या करते हुए कहा गया था कि वह "सोवियत संघ के मजदूर वर्ग का अगुआ, संगठित दस्ता, उसके वर्ग संघटन का सर्वोच्च रूप है।" लेकिन चूंकि सोवियत संघ में शहरों और देहातों में समाजवाद की पूर्ण विजय हो चुकी थी और उसके आधार पर सोवियत समाज की सामाजिक तथा राजनीतिक एकता उत्पन्न हुई, इस लिए १८वीं पार्टी कांग्रेस में ही कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होने की समान शर्तें निश्चित कर दी गई थीं चाहे अमुक व्यक्ति का सामाजिक मूल या हैसियत कुछ भी क्यों न हो। यह निश्चय इस ऐतिहासिक तथ्य का प्रतिबिम्ब था कि श्रमजीवी लोगों के ग़ैर-सर्वहारा हल्कों के जीवन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में ही नहीं, बल्कि उनकी चेतना तथा मनोवृत्ति में भी मूलभूत परिवर्तन हुए। ये सब समाजवाद की विजय और सुदृढ़ीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम थे।

१९वीं पार्टी कांग्रेस ने अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की नयी नियमावली अनुमोदित की तथा पार्टी का नाम बदलकर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी रखने का फ़ैसला किया। एक साथ "कम्युनिस्ट" और "बोल्शेविक" शब्दों के प्रयोग का प्रारम्भिक महत्व अब नहीं रह गया था, क्योंकि देश में अब कोई मेंशेविक नहीं थे और न किसी नये मेंशेविक आन्दोलन के शुरू होने की सम्भावना ही थी। समाजवादी निर्माण काल के दौरान देश में मजदूर वर्ग के विरोधी तथा मजदूर वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच ढुलमुल वर्ग तथा सामाजिक तबक़े थे। उस समय पार्टी सर्वहारा वर्ग की वर्गीय स्थितियों का मूर्त रूप थी। उसने समस्त जनगण द्वारा मजदूर वर्ग के रुख़ अपनाने के लिए कठिन तथा अडिग संघर्ष किया था। जैसे-जैसे यह संघर्ष सफल होता गया, कम्युनिस्ट पार्टी समस्त जनगण की पार्टी बनती गई।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की १९वीं कांग्रेस के शीघ्र ही बाद, ५ मार्च, १९५३ को स्तालिन का देहांत हो गया। समाजवाद के शत्रुओं ने आशा बांधी कि पार्टी और जनगण में घबराहट पैदा होगी और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की आम लाइन की तामील करने में डगमगाहट होगी। एक बार फिर उनकी इन आशाओं से प्रकट हुआ कि वे समाजवादी समाज के स्वरूप को, कम्युनिज़्म की दिशा में उसके अडिग बढ़ाव के स्वरूप को, समझ नहीं पाये थे। पार्टी

के सामने जो कार्यभार सामने आये, उनका समाधान करने मे वह सफल रही।

पार्टी जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानो, पार्टी और राज्य के सभी स्तरो पर सामूहिक नेतृत्व के लेनिनवादी सिद्धातो को बहाल करने तथा उनका अधिक विस्तार करने का कार्यभार इस दौर मे बहुत महत्वपूर्ण हो गया। १९५३ की गर्मियो मे पार्टी की केद्रीय समिति ने बेरिया और उसके सहकारियो की मुजरिमाना गतिविधियो का खात्मा कर दिया। राज्य सुरक्षा निकायो के ये नेता इन निकायो को पार्टी और राज्य के नियत्रण से बाहर लाना और देश का नेतृत्व अपने हाथो मे लेना चाहते थे। सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण ने इन दुस्साहसिकतावादियो के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई का अनुमोदन किया।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति ने ऐसा रास्ता अख्तियार किया जिसका उद्देश्य समाजवादी जनवाद के सिद्धातो से सभी भटकावो का शीघ्रातिशीघ्र अन्त सुनिश्चित करना था। पार्टी की केद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन तथा औद्योगिक, कृषि सबधी तथा सास्कृतिक विकास पर विचार करने के लिए अखिल सघीय और जनतत्रीय बैठके नियमित रूप से होने लगी। सभी स्तरो पर सोवियतो, ट्रेड-यूनियनो और कोम्सोमोल का काम अधिक सक्रिय हो गया।

थोडे ही समय मे उन नागरिका के हकबहाल कर दिये गये जिन्हे अन्यायपूर्ण ढग से दमन का शिकार बनाया गया था। चेचेन, इनगुश, कलमीक, बाल्कर और कराचाई जातियो को पुन राष्ट्रीय स्वायत्त शासन का अधिकार दिया गया जिससे उन्हे पाचवे दशक के प्रारम्भ मे वचित कर दिया गया। बाबेल, कोल्त्सोव और यासेन्स्की की पुस्तके फिर प्रकाशित होने लगी और इसी तरह ववीलोव और तुलाइकोव जैसे वैज्ञानिको तथा विज्ञान और सस्कृति के जगत की प्रमुख हस्तियो की कृतिया भी जिनके नाम बहुत दिनो से विस्मृति के गर्भ मे थे, फिर से प्रकट होने लगी। तुखाचेव्स्की, ब्लूखेर, यकीर तथा लाल सेना के अन्य सेनापति गृहयुद्ध के प्रसिद्ध वीरो की पक्ति मे अपने उचित स्थान पर वापस पहुचा दिये गये, जिन्हे पहले बदनाम तथा गैरकानूनी दमन का शिकार बनाया गया था।

१९५७ मे सरकार ने लेनिन पुरस्कार पुन जारी किये जो १९२५ मे ही प्रचलित किये गये थे और जो विज्ञान और प्रविधि, कला और

साहित्य में श्रेष्ठ कृतियों के लिए प्रदान किये जाते थे। १९३९ में जारी किये गये स्तालिन पुरस्कार राज्य पुरस्कार कहलाने लगे।

जनता को स्तालिन द्वारा की गई ग़लतियां बताना बड़े साहस का काम था क्योंकि तीस साल से अधिक मुद्दत तक वही पार्टी और राज्य के कर्णधार रहे थे, उन्होंने लेनिन के शिष्य और सच्चे उत्तराधिकारी की हैसियत से, सभी प्रकार के विरोध-पक्ष के कट्टर दुश्मन और बुनियादी पार्टी लाइन के जोशीले समर्थक की हैसियत से नाम कमाया था।

अगर सभी तथ्यों को जनता के सामने प्रकट करने से कड़वाहट, गहरे दुख और कभी-कभी हतोत्साहपूर्ण भावना न पैदा होती तो वह अस्वाभाविक ही होता। साथ ही ऐसा भी हुआ कि ग़लतियों का सुधार करने में पिछली घटनाओं का ग़लत मूल्यांकन किया गया और पहले के प्राप्त अनुभव की निराधार आलोचना भी सामने आयी।

फ़रवरी, १९५६ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं कांग्रेस हुई जिसमें केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव ख्रुश्चेव ने पेश की। इस कांग्रेस ने पार्टी के जीवन और सोवियत समाज के विकास में एक नयी महत्वपूर्ण मंज़िल शुरू की। ७२,००,००० कम्युनिस्टों के प्रतिनिधियों ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये, उनमें इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया था कि वर्तमान विकासक्रम की इस मंज़िल की ख़ास विशेषता यह है कि समाजवाद अब एक देश के अन्दर सीमाबद्ध नहीं रहकर एक विश्व व्यवस्था बन गया है। पार्टी ने विश्वयुद्ध को रोकने के लिए यथार्थवादी उपाय भी पेश किये। समाजवाद में संक्रमण के विभिन्न रूपों के बारे में, जिन्हें विभिन्न देश अपना सकते हैं, तथा समाजवादी क्रांति के शांतिपूर्ण विकास की सम्भावना के बारे में लेनिन के सिद्धांत को इस कांग्रेस में और भी विकसित किया गया।

२०वीं कांग्रेस ने विगत पांच वर्षों के दौरान आर्थिक विकास का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और छठी पंचवर्षीय योजना (१९५६–१९६०) के मुख्य उद्देश्यों पर विचार-विमर्श किया।

पार्टी कांग्रेस ने स्तालिन की व्यक्ति पूजा के असर को मिटाने के लिए कार्रवाइयों को स्वीकृति दी। इसके शीघ्र ही बाद केन्द्रीय समिति ने एक विशेष निर्देश दिया जिसमें विस्तारपूर्वक बताया गया कि किन परिस्थितियों में और क्यों व्यक्ति पूजा को पनपने का मौक़ा मिला और किन रूपों में

यह प्रकट हुई और यह भी बताया गया कि स्तालिन के कार्यकलाप के कौनसे पहलू लाभदायक थे और कौनसे हानिकारक।

जो लोग अभी भी नेतृत्व के पुराने, समाजवादी जनवाद और वैधता को सीमित करनेवाले तौर-तरीकों के समर्थक थे, वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं कांग्रेस में घोषित नीति के विरुद्ध उठ खड़े हुए। इनमें ऐसे लोग थे जो बरसों पार्टी और राज्य में प्रमुख पदों पर नियुक्त थे, जैसे मालोतोव, कागानोविच और मालेंकोव। लेकिन उनके समर्थकों की संख्या नगण्य थी। १९५७ की गर्मियों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में उनके द्वारा अपनाई गई लाइन की निन्दा की गई और वे लोग केन्द्रीय समिति से निकाल दिये गये।

सोवियत जनगण ने उन कार्रवाइयों के असली महत्व को समझा जिनका उद्देश्य विगत गलतियों और विकृतियों को सुधारना और यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य में उनके दोबारा होने की सम्भावना न रहे। इस लाभप्रद कदम का थोड़े ही दिनों में नतीजा यह हुआ कि आर्थिक विकास की रफ्तार तेज हो गई, श्रमजीवियों का जीवन-स्तर काफी ऊंचा हुआ तथा विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण, नयी उपलब्धियां हुईं।

आर्थिक प्रगति। परती जमीन का विकास

कालीनिन से एक बार किसी ने पूछा "सोवियत सत्ता के लिए किस का महत्व अधिक है, मजदूर का या किसान का?" और उन्होंने बुद्धिमतापूर्ण जवाब दिया "किसी आदमी के लिए किसका महत्व अधिक है, उसके दाहिने पैर का या बायें पैर का? मैं कहूंगा कि यह कहना कि क्रांति के लिए मजदूर का महत्व किसान से अधिक है, वैसा ही है जैसा किसी आदमी का दाहिना या बायां पैर काट लेना।"

यहां बहुत ठोस रूप से बताया गया है कि कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य मजदूरों और किसानों की एकता को कितना महत्व देते हैं। इसी लिए पांचवें दशक के अंत और छठे के प्रारम्भ में कृषि के पिछड़ जाने से कम्युनिस्ट घबराये बिना नहीं रह सके। शीघ्रातिशीघ्र कृषि के विकास को तेज करने के लिए आवश्यक कार्यक्रम तैयार किया गया।

१९५३ की पतझड़ में केन्द्रीय समिति का एक पूर्णाधिवेशन कृषि की स्थिति पर विचार करने के लिए मास्को में आयोजित किया गया। उस समय जो विश्लेषण किया गया, उससे यह प्रकट हुआ कि बहुत समय से सरकार कृषि के विकास के लिए उतना ही अनुदान नहीं कर सकी थी जितना भारी और हलके दोनों उद्योग के लिए किया गया था। १९२९ से—जब व्यापक समूहीकरण शुरू हुआ—१९५२ तक राज्य ने बुनियादी निर्माण-कार्य और भारी उद्योग के साज-सामान पर ३,६८ अरब रूबल, परिवहन व्यवस्था पर १,९३ अरब रूबल, हलके उद्योगों पर ७२ अरब रूबल खर्च किया था, जबकि कृषि को ९४ अरब रूबल मिला था, यानी केवल अकेले भारी उद्योग पर ही जितनी रक़म लगाई गई, उससे चौगुना कम। लगभग उसी अवधि में कुल औद्योगिक पैदावार में (मूल्य के हिसाब से) १६ गुना वृद्धि हुई थी जबकि कृषि की उपज कमोबेश उतनी ही रह गई थी। कृषि पर युद्ध का असर भी बेहद बुरा पड़ा था और प्रशासन में त्रुटियों तथा योजना में खराबियों के कारण स्थिति और जटिल हो गई थी।

सितम्बर, १९५३ के सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्णाधिवेशन के बाद कृषि उत्पादन में वृद्धि करने का अभियान राष्ट्रव्यापी पैमाने पर चलाया गया। फ़ार्मों को बहुत बड़ी रक़म और अभूतपूर्व संख्या में मशीनरी दी गई। कृषि के लिए नियोजन व्यवस्था में भी परिवर्तन किया गया और सामूहिक तथा राजकीय फ़ार्मों से ज्यादा अधिकार दिये गये। राज्य ने कृषि की उपज की खरीदारी का दाम बढ़ा दिया और शहरों से बहुत से अनुभवी प्रशासक गांवों में काम करने भेजे गये। १९५४ से १९५८ के बीच सामूहिक फ़ार्मों में कम्युनिस्ट पार्टी सदस्यों की संख्या में लगभग २.५ लाख की वृद्धि हुई। अब सभी फ़ार्मों में पार्टी संगठन मौजूद थे, जबकि युद्ध से पहले केवल आठ में से एक फ़ार्म में पार्टी संगठन हुआ करता था।

उसी अवधि में उद्योग ने मौजूद ट्रैक्टरों और अन्य कृषि मशीनों की जगह नये और ज्यादा आधुनिक नमूने के ट्रैक्टर और मशीनें दीं। १९५८ में १० लाख से अधिक ट्रैक्टर और ५ लाख से अधिक अनाज हारवेस्टर काम कर रहे थे। उस समय तक प्रति किसान बिजली शक्ति की उपलब्धि १९४० की तुलना में लगभग तिगुनी बढ़ गई थी। लगभग आधे सामूहिक फ़ार्मों का बिजलीकरण हो चुका था।

इन कार्रवाइयों का उत्साहवर्द्धक फल मिला। १९५७ तक एक सामूहिक

फार्म की औसत आमदनी १२,५०,००० रूबल हो गई थी, जबकि १९४९ मे वह १,११,००० रूबल थी। उद्योग के लिए कृषि से कच्चे माल तथा आबादी के लिए खाद्य पदार्थों की रसद मे काफी वृद्धि हुई।

सामूहिक फार्म व्यवस्था के सुदृढीकरण मे एक और कार्रवाई से बहुत लाभ हुआ और वह था मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो को पुनर्गठित करने का फैसला। चौथे और यहा तक कि पाचवे दशक मे भी, वे देहातो मे तकनीकी प्रगति के मुख्य साधन थे और बडे पैमाने पर सामूहिक कृषि का सगठन करने मे उन्होने प्रमुख भूमिका अदा की थी। जिस समय कृषि का समाजवादी आधार पर पुनर्गठन किया जा रहा था मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की राजनीतिक भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। लेकिन छठे दशक म जब समाजवादी कृषि अपने विकास की एक नयी मजिल पर पहुच गई थी यह बात अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी थी कि कृषि मशीनरी खुद सामूहिक फार्मों के हवाले कर देनी चाहिए। शहर और देहात मे आम जनगण द्वारा इस सवाल पर व्यापक विचार किये जाने के बाद मार्च १९५८ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन ने एक फैसला किया जिसमे मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के पुनर्गठन और सीधे सामूहिक फार्मों को कृषि मशीनें बेचने का निर्णय किया गया था। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के उसी अधिवेशन मे ख्रुश्चेव को सोवियत सघ के मत्रिपरिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। साथ ही वह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव भी बने रहे जिस पद पर वह सितम्बर, १९५३ मे चुने गये थे। लेकिन आगे चलकर यह जाहिर हुआ कि इन दो मुख्य पदो पर एक ही व्यक्ति की नियुक्ति अनुचित और अनावश्यक भी थी। इससे एक व्यक्ति के हाथ मे बहुत अधिक सत्ता सिमट आयी जिससे आगे चलकर सामूहिक नेतृत्व के सिद्धात का उल्लघन हुआ और कई समस्याओ के समाधान मे आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाया गया।

१९५८ के उत्तरार्द्ध मे सोवियत कृषि जीवन मे बडे-बडे परिवर्तन हुए। अधिकाश सामूहिक फार्मों ने कृषि मशीनें खरीदी थी जो पहले मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की, यानी राज्य की सम्पत्ति हुआ करती थी। इस तबदीली का मतलब यह भी था कि १० लाख से अधिक मैकेनिक और विशेषज्ञ जो पहले मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के अमले से सबध रखते थे, अब सामूहिक फार्मों के स्थायी सदस्य बन गये।

इन्हीं दिनों कृषि पैदावार की वसूली की व्यवस्था में एक और परिवर्तन किया गया। राज्य अब सीधे सामूहिक फ़ार्मों से उनकी उपज ख़रीदने लगा।

उसी समय देश के पूर्वी क्षेत्र कृषि उन्नति में ख़ासी बड़ी भूमिका अदा करने लगे थे, जहां परती ज़मीन को विकसित करने का अभियान चलाया गया।

देश के पूर्व, ख़ासकर साइबेरिया और क़ज़ाख़स्तान में विशाल, प्रायः ग़ैर-आबाद इलाक़े पड़े हुए थे जिनपर कभी खेती नहीं की गई थी। इसके कई कारण थे—इन इलाक़ों में प्राकृतिक स्थितियां अनुकूल नहीं थीं, वे आबाद केन्द्रों से बहुत दूर थे, उन तक पहुंचना कठिन था, वहां पानी का अभाव था, आदि। ज़मीन को विकसित करने के लिए सख़्त प्रयासों की ज़रूरत थी और बड़ी मात्रा में आधुनिक मशीनों की सहायता से ही यह काम किया जा सकता था।

विशेष सर्वेक्षण दलों ने साइबेरिया और क़ज़ाख़स्तान के इन विशाल इलाक़ों का पर्यवेक्षण किया। अर्थशास्त्रियों, कृषि विशेषज्ञों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने विस्तारपूर्वक इस योजना पर विचार किया।

१९५४ के प्रारम्भ में ही यह बात साफ़ हो चुकी थी कि परती ज़मीन के व्यापक इलाक़ों के विकास से बड़े अच्छे परिणाम होंगे और समूची सोवियत अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से यह ज़रूरी था। ३२० लाख एकड़ ज़मीन पर खेती करने की योजना बनायी गयी। थोड़े समय में इतने बड़े क्षेत्र को कृषियोग्य बनाने के लिए सचमुच महान प्रयास की ज़रूरत थी। और वह किया भी गया।

सर्वप्रथम कम्युनिस्ट पार्टी ने देश के नौजवानों को सम्बोधित किया। लेकिन इस अपील पर आनेवालों में केवल नौजवान ही नहीं थे। १९५४—१९५५ में कई लाख आदमी परती ज़मीन की ओर चल पड़े। इनमें ३,५०,००० कोम्सोमोल के भेजे हुए थे। उनको पहले से काफ़ी रुपये दिये गये, वहां तक मुफ़्त में जाने और रहन-सहन की सुविधाओं का प्रबंध पहले से ही कर दिया गया था। प्रारम्भ में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जिनको दूर करके ही इस विशाल क्षेत्र पर खेती की जा सकती थी। श्रमिक इतनी बड़ी संख्या में आ रहे थे जिनको ठहराने का उचित प्रबंध नहीं हो पाता था, सड़क निर्माण का काम धीरे-धीरे हो रहा था और पानी का भी कभी अभाव होता था। भोजन व्यवस्था ठीक करना, दुकानें

खोलना, सिनेमाघरो, क्लबो, पुस्तकालयो आदि का प्रबध करना अभी बाकी था। स्वय प्रकृति इस योजना की विरोधी मालूम पडती थी। गर्मियां मे धूप असहनीय होती थी परन्तु जाडे मे कडाके की सरदी पडती थी और प्रचण्ड तूफान चलते थे।

जोशीले जवानो ने जो इस परती जमीन को विकसित करने आये थे, धीरे-धीरे इन कठिनाइयो पर काबू पा लिया और इन इलाको को आबाद करने के लिए दृढतापूर्वक काम करने लगे। नौजवान पीढी के लोगो को अक्सर अपने पूर्वजो से ईर्ष्या होती थी जिन्हे अपने देश की वीरतापूर्वक सेवा करने का मौका मिला था – उन्होने खिबीनी खनिज खाद के स्रोतो को विकसित किया था, दनेपर को काबू मे किया था, मग्नितोगोर्स्क औद्योगिक उद्यम का निर्माण किया था और साइबेरियाई जगलो के वीराने मे कोम्सोमोल्स्क-आन-आमूर नगर खडा कर दिया था। मगर अब की नौजवान पीढी को भी ऐसे कारनामे करने का मौका मिल गया जिनमे क्रातिकारी रोमाटिकता का पुट था, जो श्रम-वीरता से ओत प्रोत थे। एक के बाद एक राजकीय फार्म वहा पूर्व मे बनते गये। ये ऐसे फार्म थे जिन्हें परती जमीन के विकास के प्रयोजन के लिए सबसे उपयुक्त बताया गया था। वहा अच्छी बस्तिया बनाई गई। जब फसल काटने का समय आया तो स्थानीय किसानो की सहायता के लिए देश के बडे शहरो से विद्यार्थी और उक्रइना तथा उत्तरी काकेशिया, कुबान से मैकेनिक और ट्रैक्टर चालक आ गये। १९५५ मे पहली बार अन्य समाजवादी देशो से युवक दल सोवियत सघ के नौजवानो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने आये। नये फ़ार्म शीघ्र ही श्रम-वीरता, मैत्री और भ्रातृत्व का दृश्य प्रस्तुत करने लगे।

परती जमीन के विकास के लिए जो प्रारम्भिक लक्ष्य निश्चित किये गये थे, उन्हे शीघ्र ही कई गुना पूरा कर दिया गया। यह केवल एक मुख्य उपलब्धि ही नही थी। इससे अनेक भारी समस्याए भी उत्पन्न हुई। यह पता चला कि योजना बनानेवालो के कई फैसले बहुत जल्दबाजी मे किये गये थे और इतने व्यापक पैमाने के प्रयोजन पर जितना ध्यानपूर्वक विचार करने की जरूरत थी, वह नही किया गया था। स्थानीय स्थितियो का पर्याप्त विश्लेषण नही किया गया था, इन इलाको मे पशुपालन के कम विकास का असर भी पडा और श्रम का मौसमी स्वरूप भी बाधा डालता था। लेकिन इससे उन लोगो के कारनामे का महत्व कम नही होता जिन्होने परती जमीन के विकास का बीडा उठाया था।

इस प्रयोजन का निर्णायक पहलू यह था कि इससे अनाज की उपज में काफ़ी वृद्धि करना सम्भव हुआ, जो समस्त कृषि उत्पादन की आधारशिला थी। राज्य ने १९५६–१९५८ में जितना अनाज ख़रीदा, उसका आधे से ज़्यादा भाग इन नवविकसित इलाक़ों से ख़रीदा गया था। परती ज़मीन से देश को केवल अनाज ही नहीं मिला। लाखों नौजवानों ने वहां जीवन का बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किया। १९५७ में सरकार ने कोम्सोमोल को परती ज़मीन के विकास में उसकी भूमिका के लिए लेनिन पदक प्रदान किया। ३० हज़ार से अधिक नवयुवकों और नवयुवतियों को उनकी सेवाओं के लिए पदकों और तमग़ों से विभूषित किया गया और २६२ व्यक्तियों को समाजवादी श्रम के वीर की पदवी प्रदान की गई।

१९५८ में अनाज की कुल उपज क्रांति के बाद से सबसे अधिक, लगभग १३,४० लाख टन थी। राज्य द्वारा अनाज की ख़रीदारी १९५३ की कोई दोगुना थी। मांस का उत्पादन ७७ लाख टन और दूध का ५,८७ लाख टन था और ये दोनों आंकड़े भी १९५३ से बहुत अधिक थे। कुल मिलाकर कृषि उत्पादन में ५१ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

इस उल्लेखनीय प्रगति का संबंध इस बात से था कि सभी संघीय जनतंत्रों में कृषि का सफल विस्तार हुआ था और समस्त सोवियत किसानों का जीवन-स्तर ऊंचा हुआ था। किसानों की प्रति व्यक्ति आय—सामूहिक फ़ार्म और निजी जोतों दोनों काम से—१९५३ से ५० प्रतिशत और १९४० के स्तर से १२० प्रतिशत अधिक थी। पहले सामूहिक किसानों को आमदनी केवल साल के अन्त में मिलती थी जब राज्य को जो कुछ मिलना था, वह सब दे दिया जाता। १९५६ से सामूहिक किसानों को हर महीने और तिमाही के अन्त में नियमित रूप से निश्चित आमदनी मिलने लगी। कृषि वर्ष के अन्त में अन्तिम हिसाब-किताब करते समय उसके परिणामों के अनुसार उनकी आमदनी तय की जाने लगी।

मगर कृषि की पैदावार बढ़ाने सम्बन्धी सभी फ़ैसले सही नहीं निकले। उनमें कुछ आर्थिक दृष्टि से ग़लत थे। परती ज़मीन की योजना को जितनी बड़ी मात्रा में धन और मशीनें दी गईं, उसका नतीजा यह हुआ कि देश के केन्द्रीय भाग में, खेती और पशुपालन के परम्परागत केन्द्रों में कृषि उत्पादन की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया। यद्यपि मवेशी, मुर्ग़े-मुर्ग़ियों, दूध, मक्खन, सब्ज़ी, अनाज और औद्योगिक फ़सलों की राज्य द्वारा

खरीदारी का दाम लगभग तिगुना बढा दिया गया था, मगर वह अब भी लागत से कम था। पर इन त्रुटियो के बावजूद कृषि मे आम सुधार सर्वविदित था। फसलें पहले से कही अच्छी थी, चारे की सप्लाई कही ज्यादा नियमित रूप से होती थी, पशुओ की सख्या मे बहुत वृद्धि हुई थी और इसी के अनुसार मास, दूध और मक्खन का उत्पादन बढा था।

कृषि की यह प्रगति उन तबदीलियो का बहुत ठोस प्रतिबिम्ब थी जिन्होने पूरे राष्ट्र के जीवन को, राज्य की बढती हुई क्षमता को प्रभावित किया था। जहा कृषि के विस्तार को प्राथमिकता दी गई थी, वही इस बात का ध्यान भी रखा गया था कि उद्योग का विस्तार जारी रहे। अर्थतत्र की इन दोनो शाखाओ के अन्तरसम्बन्धित विकास से देश की पूरी अर्थव्यवस्था के विकास को प्रोत्साहन मिला।

१९५५ की गर्मियो मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सरकार ने निर्माण-कर्ताओ, उद्योग के प्रबधको और अग्रणी मजदूरो का सम्मेलन इस उद्देश्य से बुलाया कि उस समय तक प्राप्त अनुभव का विश्लेषण किया जाये, त्रुटियो के कारण और नये ध्येयो की व्याख्या की जाये। कई मत्रालयो और विभागो के कामो की त्रुटियो की कडी आलोचना की गई। द्रुत तकनोकी प्रगति को मुख्य कार्य बताया गया और नवोकारको और आविष्कारको तथा मजदूरो और किसानो के पूरे समुदाय की रचनात्मक पहलक़दमी को प्रोत्साहन दिया गया। सरकार ने उत्पादन मे नयी तकनीक को इस्तेमाल करने से सबधित एक नया नियम जारी किया। ट्रेड-यूनियनो ने आविष्कारको तथा नवोकारको की अखिल सघीय संस्था स्थापित की।

इस बीच आर्थिक प्रबध के अधिक कारगर रूपो और तरीको की खोज जारी रही। १९५४ के अत मे "प्राव्दा" ने इस विषय पर एक लेख-माला प्रकाशित की – उद्योग तथा निर्माण-कार्य के प्रबध मे सुधार, नियोजन व्यवस्था मे सशोधन तथा आर्थिक योजनाओ की तैयारी और तामील मे जनता की शिरकत की भूमिका बढाने की समस्याए। सघीय जनतत्रो के आर्थिक अधिकारो का विस्तार करने से और उन्हे कई औद्योगिक शाखाओ का निरीक्षण करने की अनुमति देने से (यह तबदीली १९५४–१९५६ मे की गई थी) बहुत लाभ हुआ। लेकिन इससे भी ज्यादा बुनियादी कार्रवाई की जरूरत थी। १९५७ मे देश मे कुल मिलाकर २ लाख से अधिक राज्य उद्यम और १ लाख से अधिक निर्माण परियोजनाए चालू थी। इतने व्यापक

क्षेत्र में अत्यंत तीव्र गति से होनेवाले काम का कारगर ढंग से निरीक्षण करना केन्द्रीय मंत्रालयों के लिए अधिकाधिक कठिन होता जा रहा था। अत्यधिक केन्द्रीयकरण स्थानीय कार्यकर्ताओं की पहलकदमी के रास्ते में रुकावट बना हुआ था।

१९५७ में इस क्षेत्र में सुधार, यानी मंत्रालयों के स्थान पर राष्ट्रीय आर्थिक परिषदों की स्थापना के सम्बन्ध में देश भर में विचार-विमर्श हुआ। यह सुझाव दिया गया था कि कुछ मंत्रालयों को नहीं तोड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए अकादमीशियन बोन्तर के विचार में बिजलीघरों, कृषि और परिवहन मंत्रालयों को क़ायम रखना जरूरी था। ऐसे सुझाव भी पेश किये गये थे कि अंतिम फ़ैसला करने से पहले अनेक आज़मायशी राष्ट्रीय आर्थिक परिषदें (मिसाल के लिए मास्को, लेनिनग्राद और स्वेर्दलोव्स्क में) क़ायम की जायें। लेकिन बहुमत का विचार कुछ और था जो, जैसा कि हम देखेंगे, ग़लत साबित हुआ। मई, १९५७ में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन में एक क़ानून स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार उद्योग और निर्माण कार्य का प्रबंध क्षेत्रीय आधार पर, आर्थिक-प्रशासकीय आधार पर पुनर्गठित किया गया। अधिकांश मंत्रालयों को तोड़ दिया गया और जो उद्यम तथा निर्माण परियोजनाएं उनकी परिधि में आती थीं अब राष्ट्रीय आर्थिक परिषदों के सुपुर्द कर दी गईं।

उद्यमों के प्रबन्धकों को योजना बनाने, बुनियादी निर्माण कार्यों और वित्तीय मामलों में विस्तृत अधिकार दिये गये। श्रम संघटन और वेतन व्यवस्था को परिष्कृत किया गया।

ट्रेड-यूनियनों की ११वीं कांग्रेस और कोम्सोमोल की १२वीं कांग्रेस ने जो १९५४ में आयोजित की गई थीं, इस सवाल पर भी विचार किया था कि सार्वजनिक संगठनों के काम में, श्रम की उत्पादिता बढ़ाने, मशीनरी का अधिकतम उपयोग करने और आबादी का सांस्कृतिक स्तर और जीवन स्तर ऊंचा करने के संघर्ष में श्रमजीवियों के व्यापकतर हिस्सों को कैसे शरीक किया जाये।

समाजवादी प्रतियोगिता अधिकाधिक व्यापक पैमाने पर चल रही थी। लगभग रोज़ ही समाचारपत्रों में नवीकारकों के नाम और अगुआ श्रमिक दलों की उपलब्धियों के बारे में लेख छपा करते थे। अब, जबकि नव-विकसित इलाकों में निर्माण कार्य तेज़ी से हो रहा था, श्रम के कारनामे

सोवियत देश के रोजमर्रे के जीवन का श्राम दस्तूर बन गये थे। रेडियो श्रौर समाचारपत्रो मे वोल्गा, द्नेपर श्रौर कामा के पनबिजलीघरो के निर्माण सबधी समाचार नियमित रूप से छपा करते थे। ब्रात्स्क मे एक विशाल निर्माण-कार्य के समाचार श्राने लगे थे।

इस क्षेत्र के बारे मे इस समय से पहले बहुत कम जानकारी थी। १९५१ मे प्रकाशित वृहत सोवियत विश्वकोष मे निम्नलिखित सूचना थी. "ब्रात्स्क श्रगारा नदी के बायें तट पर एक गाव है। इसकी स्थापना १६३१ मे एक किले – ब्रात्स्की श्रोस्त्रोग – के रूप मे हुई थी।" छठे दशक के मध्य मे ब्रात्स्क साइबेरिया का श्रौद्योगिक रूपातरण करनेवाला केद्र बनता जा रहा है। पहले कम ही लोगो ने मास्को से ४,००० किलामीटर दूर जगल मे उस स्थान का नाम सुना होगा मगर श्रब घर-घर इसकी चर्चा होने लगी। १९५५ मे इस स्थान पर एक विराटतम पनबिजलीघर का निर्माण-कार्य शुरू हुश्रा।

यही वह समय था जब सोवियत सघ के उत्तर-पश्चिमी भाग मे चेरेपोवेत्स मे नये धातुकर्म केद्र का निर्माण-कार्य शुरू हुश्रा। दक्षिणी उराल श्रौर ट्रास-काकेशिया मे भी श्रभी-श्रभी निर्मित धातु कारखाने चालू हुए। भूवैज्ञानिको ने लेना नदी के क्षेत्र याकूतिया मे बडी मात्रा मे तल की खोज की। याकूतिया मे ही हीरे के इतने ही विशाल स्रोत खोज निकाले थे जिनके सामने ट्रासवाल तथा श्रोरेज नदी के प्रसिद्ध खजाने फीके पड गये थे।

श्रौद्योगिक मोर्चे से रोज मन को उमगित करनेवाले समाचार श्रा रहे थे। स्ताव्रोपोल तथा मास्को के बीच यूरोप की सबसे बडी गैस पाइप लाइन चालू हो चुकी थी। वोल्गा नदी पर लेनिन बिजलीघर का जो उस समय तक ससार का सबसे बडा पनबिजलीघर था, बहुत जोरदार समारोहो के बीच उद्घाटन किया गया। नये-नये सागर, नयी-नयी नहरे, नये-नये मार्ग तथा नयी-नयी रेलवे लाइने नक्शे पर प्रकट हो रही थी, नये-नये हवाई मार्ग चालू किये जा रहे थे।

इसी श्रवधि मे नये प्रकार की प्रतियोगिता का श्रीगणेश करनेवालो ने बडा नाम कमाया। १९५६ मे दोनेत्स बेसिन के एक खनक मामाई ने श्रपने ब्रिगेड के श्रन्य सदस्यो से मिलकर यह सुझाव पेश किया कि हर खनक को रोज श्रपने कोटे की निश्चित मात्रा से एक टन श्रधिक कोयला काटना चाहिए ताकि हर खान मे जितने खनक है, उतना टन श्रधिक कोयला

रोज़ मिला करे। इस सुझाव को दोनेत्स बेसिन में ही नहीं, केवल कोयला खानों में ही नहीं अपनाया गया। विभिन्न पेशों और अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं के श्रमिकों ने अपने-अपने सामान्य कोटा से अधिक टन या मीटर उत्पादन करना या अधिक एकड़ जमीन जोतना शुरू कर दिया।

इस प्रकार की समाजवादी प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। कोलचिक के ब्रिगेड के खनकों ने एक और सुझाव दिया, वह यह कि प्रत्येक अतिरिक्त टन कोयले का उत्पादन अधिकतम कार्यकुशलता के साथ किया जाये ताकि राज्य को प्रत्येक टन पर एक रूबल की बचत हो। इसका मतलब यह था कि उत्पादन मात्रा संबंधी आंकड़ों के साथ ही उत्पादन के गुणात्मक आंकड़े भी सामने आयें।

मामाई, कोलचिक और उनके सहकर्मियों द्वारा चलाये गये अभियान जनगण की तीव्र रचनात्मक सरगर्मी उनके अधिक ऊंचे सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर से संबंधित थे। नवीकारकों ने अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं में उत्पादन योजनाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और सामूहिक फ़ैसले किये कि मुलभ श्रम शक्ति तथा विभिन्न प्रकार के सामानों का अधिक अच्छा प्रयोग कैसे किया जाये। मजदूर अपने काम से संबंधित अन्य पेशों में दक्षता प्राप्त करते और उद्योग की अपनी ख़ास शाखा के अर्थशास्त्र का अध्ययन करते। इससे उत्पादन प्रबंध के काम में मजदूरों की प्रत्यक्ष दिलचस्पी ज़ाहिर हुई। यह इस बात का सबूत था कि व्यक्तिगत तौर पर मजदूरों में अपने देश की प्रतिष्ठा और भविष्य के प्रति जिम्मेदारी की भावना बढ़ रही है। उस समय की स्थिति का जीता-जागता चित्र निम्नलिखित आंकड़ों से मिलता है: युद्ध के पहले नवीकारकों तथा आविष्कारकों की संख्या ५,२६,००० थी, १९५० में ५,५५,००० और उसके बाद के आठ वर्षों में ये आंकड़े तिगुना से अधिक बढ़कर १७,२५,००० तक पहुंच गये थे। प्रत्येक नवीकरण संबंधी सुझाव को भौतिक प्रोत्साहन मिला। राज्य ने उद्यमों के प्रबंधकों के लिए अनिवार्य घोषित कर दिया कि इनमें से सबसे महत्वपूर्ण सुझावों को वे नयी प्रविधि जारी करने की अपनी भावी योजनाओं में शामिल करें।

१९५८ म सोवियत सघ के उद्योग म कोई २ करोड मजदूर और दफ्तरी कर्मचारी काम कर रहे थे, जबकि १९४० म उनकी सख्या १ करोड १० लाख स कम थी। उनम ४० प्रतिशत स अधिक लोगो ने १० साल स अधिक काम किया। इसका मतलब यह था कि देश के पास अत्यत योग्यताप्राप्त श्रम शक्ति थी। उसे अपने पेशे का बडा अनुभव प्राप्त था और वह प्रथम पचवर्षीय योजनाओ के उद्योगीकरण अभियान के वीरो, युद्ध के वर्षों तथा युद्धोत्तर बहाली के दिनो के अगुआ मजदूरो की श्रेष्ठ परम्पराओ की वारिस थी। सोवियत उद्योग द्वारा प्राप्त सफलताए मजदूर वर्ग की परिपक्वता का सबसे पक्का सबूत थी। देश उचित ही अपनी उपलब्धियो पर गौरव कर सकता था।

१९५४ म ससार के सर्वप्रथम परमाणु बिजलीघर न मास्को के निकट ओबनिन्स्क म बिजली का उत्पादन शुरू किया। चार साल बाद एक और परमाणु बिजलीघर की पहली मजिल के निर्माण का काम शुरू हुआ। यह बिजलीघर कही अधिक बडी क्षमतावाला था। कुछ ही दिन पहले ससार का प्रथम परमाणु चालित बर्फ तोडक जहाज "लेनिन" का जलावतरण हुआ था।

इस दौर की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की सर्वोच्च उपलब्धि थी सोवियत धरती से ४ अक्तूबर, १९५७ को ससार मे प्रथम कृत्रिम उपग्रह का अतरिक्ष मे भेजा जाना। एक साल बाद तीसरा सोवियत कृत्रिम स्पुतनिक जिसका वजन १,३२७ किलोग्राम था और जो वास्तव मे एक वैज्ञानिक-अनुसधान प्रयोगशाला था, पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगा रहा था।

सोवियत आर्थिक विकास की द्रुत गति, जो तकनीकी प्रगति की तेज रफ्तार, *कृषि की सामूहिक फार्म व्यवस्था के सुदृढीकरण, परती जमीन के विकास और यह सबसे अहम बात है, जनगण के तेज रचनात्मक कार्यकलाप* और गलतियो के उन्मूलन से जुडी हुई थी, की बदौलत सोवियत सघ की भौतिक तथा सास्कृतिक जीवन की परिस्थितियो के सभी पहलुओ मे जबर्दस्त परिवर्तनो का मार्ग प्रशस्त हुआ।

विदेशी यात्री जो पाचवे दशक के अत और छठे दशक के प्रारम्भ मे सोवियत सघ आये थे और फिर १९५८ मे लौटकर आये, वे अनेक परिवर्तनो को देखकर आश्चर्यचकित रह गये

तु १०४ विमान को मास्को के पास व्नूकोवो हवाई अड्डे पर उतरते देखकर यात्री को छठे दशक के अन्त मे जो चीज अपनी ओर

आकर्षित करती थी वह थी इल-१८, अन-१० और तू-११४ विमानों की भरमार, अगरचे कुछ ही वर्ष पहले सोवियत संघ के पास एक भी जेट वायुयान नहीं था।

आगंतुक ज्यों-ज्यों राजधानी की ओर बढ़ते, उन्हें उस जगह चारों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें, पार्क और सुन्दर रिहाइशी मुहल्ले दिखाई देते जहां १९५० में वीरान मैदान और लकड़ी के छोटे घरों के सिवा और कुछ नहीं था, और जहां बस ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केन्द्रीय परिषद की पांच मंज़िला इमारत अकेली खड़ी दिखाई देती थी। अब वह कई मंज़िला इमारतों के झुंड में नज़रों से ओझल हो गई थी और शहर की सीमा कई किलोमीटर आगे बढ़ गई थी।

१९५८ में यात्रियों ने मास्को की प्रथम गगनचुम्बी इमारतें देखीं जिनकी नींवें १९४९ में डाली जा रही थीं, उन्होंने लुज्निकी स्टेडियम देखा जहां १ लाख से अधिक आदमी बैठ सकते हैं। बड़ी संख्या में नयी इमारतें और राजधानी के निवासियों की लिबास-पोशाक देखकर यात्रियों को काफ़ी आश्चर्य हुआ होगा जब उन्होंने १९५८ की हालत की तुलना पांचवें दशक के अंत की हालत से की होगी। छठे दशक के अंत में मास्को की सड़कें ऐसे लोगों से भरी हुई थीं जो रंग-बिरंगे, अच्छे क़िस्म के कपड़े, फ़ैशनेबुल सूट और कृत्रिम रेशे की बनी चीज़ें पहने होते थे। युद्धपूर्व के फ़ैशन के कपड़ों, फ़ौजी कोटों, ऊंचे बूटों और रूईदार जैकटों का अब कोई सवाल नहीं था।

१९५८ में मास्को के यात्री जो १० वर्ष पहले शहर को देख चुके थे, शहर के बहुतेरे भागों को इतना बदला हुआ पाते थे कि उन्हें पहचानना मुश्किल होता था, और यही हाल कीयेव और मीन्स्क, वोल्गोग्राद और नोवोसिबीर्स्क, ताशक़न्द और अश्क़ाबाद का था। जहां कहीं वे जाते, उन्हें नये रिहायशी मुहल्ले, अस्पताल, थियेटर, स्कूल और क्लब दिखायी देते। अंगार्स्क, ब्रात्स्क, वोलज्स्की, दुब्ना और जिगुल्योव्स्क जैसे शहरों में जिनका अभी जन्म ही हुआ सैकड़ों निर्माण क्रेन हवा में सर उठाये दिखाई देते थे।

लेनिनग्राद भूमिगत रेलवे जो देश में दूसरी थी, १९५८ तक चालू हो चुकी थी और कीयेव में निर्माणाधीन थी। १९५८ तक टेलीविज़न के एरिएल चारों ओर दिखाई देने लगे थे (उस समय तक देश में ७० से

मास्को विश्वविद्यालय

अधिक टेलीविजन केन्द्र हो गये थे, जबकि १९५० मे केवल २ थे, और कार्यक्रम सप्ताह मे केवल दो बार प्रसारित हुआ करते थे)। सडको पर रगीन पोस्टरो की चमक-दमक थी जो थियेटरो और स्टेडियमो मे लोगो को आमन्त्रित करते थे। विदेशी कलाकारो और खिलाडियो का नियमित रूप से आगमन होने लगा था। पत्र-पत्रिकाओ तथा असख्य क्लबो मे आधुनिक साहित्य, भावी मानव, साइबरनेटिकी तथा अर्थशास्त्र मे गणितीय पद्धतियो को लागू करने पर गर्मागर्म बहस-मुबाहिसे चल रहे थे।

विदेशी यात्री जब पूछते कि क्रेमलिन को देखने का क्या उपाय हो सकता है तो उन्हे बताया जाता कि वहा जाने की कोई मनाही नही है,

और जब वे कहते कि वे लड़कों या लड़कियों का कोई माध्यमिक स्कूल देखना चाहते हैं तो उनसे कहा जाता कि १६५४ से सारे स्कूलों में सहशिक्षा है।

स्पुतनिक उस दौर का प्रतीक था। उस स्मरणीय दिन से जब उनमें से पहला अक्तूबर क्रांति की चालीसवीं जयंती के अवसर पर छोड़ा गया था, संसार के सभी जनगण ने इस शब्द को अपना लिया था, और सोवियत संघ को आनेवाले यात्री चाहे किसी भी देश के हों, चाहे उनकी व्यक्तिगत दिलचस्पियां कुछ ही क्यों न रही हों, वे सब प्रथम सोवियत स्पुतनिक का माडेल देखने जरूर जाते। आर्थिक उपलब्धियों की प्रदर्शनी देखनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गई। इसमें कोई सन्देह नहीं रह गया था कि अंतरिक्ष यात्रा की दिशा में पहला क़दम धरती के वासियों ने उठा लिया था। प्रथम स्पुतनिक का अतरिक्ष में भेजा जाना समाजवाद की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक था।

संयुक्त राज्य अमरीका के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चेस्टर वाउल्स को भी कहना पड़ा कि "प्रथम सोवियत स्पुतनिक के पहले प्राय: किसी को अमरीका की औद्योगिक, सामरिक और वैज्ञानिक श्रेष्ठता पर सन्देह नहीं हुआ था। तब एकाएक स्पुतनिक आ गया जिसने संसार में धूम मचा दी और करोड़ों आदमी पूछने लगे कि क्या आख़िर कम्युनिज़्म की जीत तो नहीं होकर रहेगी?"

लेकिन क्या वास्तव में प्रथम स्पुतनिक की उत्पत्ति कोई आकस्मिक बात थी?

सोवियत इतिहास के प्रारम्भ में लेनिन ने नेक्रासोव की पंक्तियों की याद दिलाई थीं जिनमें कवि ने देश की दुर्दशा से दुखित होकर अपने मन की पीड़ा को व्यक्त किया था और साथ ही मातृभूमि की अंतर्निहित शक्ति में अपना प्रबल विश्वास प्रकट किया था। उन्नीसवीं शती में उस कवि ने लिखा था:

ओ दरिद्रिणी,
रत्न-गर्भिणी,
शक्ति-युता तू,
सत्व-हृता तू,
जननि रूस हे!

लेनिन का कहना था कि यह काम बोल्शेविकों का है कि रूस "दरिद्रिणी और मत्व-हृता न रह जाये, बल्कि सदा के लिए रत्न-गर्भिणी और शक्ति-युता बन जाये।"*

सोवियत जनगण के जबर्दस्त सृजनात्मक प्रयत्नों तथा उनके द्वारा समाजवादी निर्माण की बदौलत दरिद्रता, पिछड़ापन और निर्बलता शीघ्र ही अतीत की बात बन गई। इसकी अभिव्यक्ति खासकर छठे दशक के अंत में महान अक्तूबर क्रान्ति की चालीसवीं जयंती के अवसर पर हुई।

१६५८ में इस्पात का उत्पादन ५ करोड़ ५० लाख टन, तेल का उत्पादन ११ करोड़ ३० लाख टन तक पहुंच गया था और २,३३ अरब किलोवाट घंटे बिजली पैदा होने लगी दूसरे शब्दों में उस वर्ष के एक ही महीने इस्पात और तेल का इतना उत्पादन हुआ जितना १६१३ के पूरे साल में नहीं हुआ था। १६५८ में तीन दिनों में इतनी बिजली पैदा हुई जो साम्राज्य के दिनों में साल भर की कुल पैदावार के बराबर थी।

संसार के किसी भी देश का विकास इतनी तेजी से नहीं हुआ था। लेनिन ने यह बता दिया था कि क्रांति का हर महीना, साधारण "शांतिकालीन" (यानी ग़ैर-क्रांतिकारी) विकास के बरसों के बराबर होता है। सोवियत संघ ने जो रास्ता अपनाया, उससे इस विचार का औचित्य केवल बुनियादी सामाजिक परिवर्तनों के संबंध में नहीं, बल्कि आर्थिक परिवर्तनों के संबंध में भी साबित हो गया। १६१७ में जो क्रांतिकारी विकास शुरू हुआ, वह जारी था।

सोवियत जनगण ने समाजवादी निर्माण के प्रथम चालीस वर्षों में आगे की ओर जो जबर्दस्त छलांग लगाई थी, उसे पूंजीवादी अखबारों को भी मानना ही पड़ा। अक्तूबर, १६५७ में "टाइम्स" ने लिखा "जब शिशिर प्रासाद पर धावा बोला जा रहा था और सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस के अधिवेशन ने विजय-घोषणा की तो रूसी कैलेंडर पर तिथि २५ अक्तूबर थी। रूस – तब पश्चिमी कैलेन्डर से १३ दिन पीछे – पश्चिमी उद्योग से एक सौ साल पीछे और उसके राजनीतिक और सामाजिक ढांचे से कम से कम डेढ़ सौ साल पीछे था। अब सोवियत संघ और उसके मित्र-राष्ट्र ७ नवम्बर को महान अक्तूबर क्रांति की चालीसवीं जयंती की तैयारी करते

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २७, पृष्ठ १३४

हुए अपनी महान उपलब्धियों का लेखा-जोखा ले रहे हैं। उनके पास जो कुछ है, उसपर उन्हें गर्व होना यक़ीनन उचित है।"

"टाइम्स" को यह स्वर उस समय अपनाना पड़ा जब सोवियत संघ ने संसार में पृथ्वी का प्रथम कृत्रिम उपग्रह छोड़ा था, हालांकि विगत वर्षों में असंख्य अवसरों पर पूंजीवादी समाचारपत्रों ने भविष्यवाणी की थी कि बोल्शेविकों का विनाश अवश्यम्भावी है...

सोवियत विकास के प्रथम चालीस वर्ष इतिहास में शिशिर प्रासाद पर धावे से लेकर अंतरिक्ष पर धावे तक के दिन वीरता का परिचय देनेवाली प्रगति के दिन माने जायेंगे। जब देश ने छठे दशक में प्रवेश किया तो सोवियत विकास के एक नये युग का श्रीगणेश हुआ।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के जयंती अधिवेशन के अवसर पर सभी समाजवादी देशों से पार्टी तथा सरकारी प्रतिनिधिमंडल, ६४ बिरादराना कम्युनिस्ट और मज़दूर पार्टियों के प्रतिनिधि और ट्रेड-यूनियनों, नवयुवकों तथा महिलाओं के अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रमुख व्यक्ति मास्को में एकत्रित हुए। इस अधिवेशन में गत चालीस वर्षों के सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों का खुलासा पेश किया गया। ऐतिहासिक दृष्टि से चालीस साल की अवधि भले ही अत्यल्प प्रतीत हो, यह बात अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि उन चालीस वर्षों में से अठारह वर्ष युद्ध और युद्धोत्तर आर्थिक बहाली के वर्ष थे। इससे सोवियत जनगण की उपलब्धियों की महत्ता और भी उभरकर सामने आती है। इस अत्यंत छोटी अवधि में सोवियत संघ के लोगों ने अपने देश का रूप इतना बदल दिया था कि उसे अब पहचानना असम्भव था। उन्होंने उसे औद्योगिक और सामूहिक कृषि शक्तिवाला एक प्रमुख देश बना दिया था।

सोवियत संघ में कम्युनिज्म का व्यापक निर्माण
१९५९-१९७०

दुनिया मे प्रगति और
समाजवाद की शक्तियो का और अधिक सुदृढ़ीकरण

सोवियत सघ ने कम्युनिज्म का व्यापक निर्माण ऐसे समय शुरू किया जब विश्व समाजवादी व्यवस्था को दुनिया मे एक बडी शक्ति के रूप मे माना जाने लगा था। १९५९ की एक अत्यत महत्वपूर्ण घटना क्यूबा मे जनता की साम्राज्यवाद विरोधी क्राति की विजय थी। पश्चिमी गोलार्ध मे यह पहला राज्य था जिसने समाजवादी विकास का रास्ता अपनाया था।

विश्व समाजवादी व्यवस्था का आर्थिक और राजनीतिक विकास दिनोदिन जारी था। समाजवादी देशो के अनुभव से यह प्रत्यक्ष हो गया था कि समाजवादी व्यवस्था का विकास निम्नलिखित बुनियादी नियमो के अनुसार होता है सानुपातिक आर्थिक विकास, जनता म सृजनात्मक पहलक़दमी का प्रबल होना, अतर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रम विभाजन को बराबर दोषरहित और उन्नत करते रहना, समाजवादी समुदाय के तमाम देशो के सामूहिक अनुभव का अध्ययन, हर देश की विशेष स्थितियो और राष्ट्रीय विशेषताओ पर ध्यानपूर्वक विचार सहयोग तथा भ्रातृत्वपूर्ण पारस्परिक सहायता का सुदृढ़ीकरण।

समाजवादी देशो के बीच आर्थिक सबधो मे सबसे महत्वपूर्ण तत्व इस समय तक यह था कि हर देश के हितो का ध्यान रखते हुए उत्पादन म सहयोग, आर्थिक योजनाओ म सामजस्य, उत्पादन का विशिष्टीकरण और तालमेल स्थापित किया जाये। १९६७ के लिए सयुक्त राष्ट्र सघ के आकडो के अनुसार पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो ने आपसी सहयोग से स्वय अपने उत्पादन और परस्पर विनिमय पर निर्भर करते हुए मशीनो

और उपकरणों की अपनी ६५ प्रतिशत जरूरत पूरी कर ली। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशों ने अभी ही यह तय कर लिया था कि इंजीनियरिंग उद्योग की २,००० से अधिक वस्तुओं और रसायन उद्योग की २,००० से अधिक पदार्थों का उत्पादन विशेष देशों के दायरे में रहेगा। अन्य क्षेत्रों में भी विशिष्टीकरण को सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है। इन सबसे समाजवादी देशों के आर्थिक विकास की रफ़्तार तेज होती है। संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि सोवियत संघ में तथा यूरोप के अन्य समाजवादी देशों में १९५६ और १९६६ के बीच राष्ट्रीय आयों में वृद्धि की सालाना दर विकसित पूंजीवादी देशों के संबंधित आंकड़ों से कोई ८० प्रतिशत ज्यादा थी, कि उनके औद्योगिक और कृषि उत्पादन में वृद्धि की दर क्रमशः ८० प्रतिशत और १३० प्रतिशत अधिक थी, और दोनों देश समूहों में निर्माण कार्य में वृद्धि की दर में सोवियत संघ का पलड़ा ११० प्रतिशत भारी था।

समाजवादी देशों की आर्थिक क्षमता में वृद्धि से यूरोप में तथा संसार भर में शांति को सुदृढ़ करने के लिए एक विश्वसनीय ज़मानत हो गई। यह बात ख़ासकर इसलिए महत्वपूर्ण थी कि सातवें दशक के प्रारम्भ में अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो गई थी। संयुक्त राज्य अमरीका ने, जो ऐसे घिनौने तरीक़े अपनाने पर उतारू था जो अंतर्राष्ट्रीय क़ानून के बिल्कुल विपरीत थे, मई, १९६० में एक गुप्तचर विमान सोवियत संघ के इलाक़े में भेजा। अप्रैल, १९६१ में संयुक्त राज्य अमरीका ने क्यूबा पर सैनिक आक्रमण संगठित कराया। इसमें उसे मुंह की खानी पड़ी। १९६२ के वसंत में संयुक्त राज्य अमरीका ने पुनः पृथ्वी के वायुमंडल में परमाणु बमों का परीक्षण शुरू किया और उस वर्ष के पतझड़ में उस देश के प्रतिक्रियावादी क्षेत्र क्यूबा पर दोबारा आक्रमण की योजना बनाने लगे और अमरीकी युद्धपोतों ने उसकी नाकाबन्दी कर दी। सोवियत संघ की सुदृढ़ मगर लचकदार नीति की बदौलत ही इस झगड़े का निबटारा शांतिपूर्ण ढंग से किया जा सका।

इस दौर में सोवियत संघ ने अंतर्राष्ट्रीय तनाव में कमी करने के उद्देश्य से व्यावहारिक कार्रवाइयां शुरू करने के लिए अपनी कोशिशें एक दिन के लिए बन्द नहीं कीं और जनवरी, १९६० में उसने अपनी सैन्य शक्तियों में एकपक्षीय कटौती करने का फ़ैसला किया और पश्चिमी देशों

से भी ऐसा ही करने की अपील की। सयुक्त राज्य अमरीका, जर्मन सघीय गणराज्य और उनके मित्र-राष्ट्रो ने इस अपील के जवाब मे यूरोप मे तनाव को और भडकाया, पश्चिमी बर्लिन से सगठित की जानेवाली विध्वसक कार्रवाई को और तेज किया और सोवियत सघ के विरुद्ध एक नया युद्ध छेडने की खुली धमकी दी। इससे मजबूर होकर सोवियत सघ को अपनी सैन्य शक्तियो मे कटौती बन्द करनी पडी जो १६६१ मे की जानेवाली थी, और प्रतिरक्षा का खर्च बढाना पडा। १६६३ मे वारसा सधि के देशो ने पश्चिमी शक्तियो के समक्ष एक सुझाव रखा कि वारसा सधि के सदस्य राज्यो तथा नाटो देशो के बीच एक अनाक्रमण सधि की जाये। लेकिन इस सुझाव को रद्द कर दिया गया।

औपनिवेशिक व्यवस्था के उन्मूलन को तेज करने के उद्देश्य से सोवियत सघ ने २३ सितम्बर १६६० को सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली के विचाराधीन "औपनिवेशिक देशों और जातियो को स्वतत्रता प्रदान करने की घोषणा" पेश की। सोवियत घोषणा की मुख्य बातो को इस प्रश्न पर ४३ अफ्रीकी तथा एशियाई देशो द्वारा प्रस्तुत सुझावो मे शामिल किया गया और जनरल असेम्बली ने उन्हे स्वीकार कर लिया।

सोवियत सघ ने सयुक्त राष्ट्र सघ की विभिन्न सस्थाओ के समक्ष प्रस्तावो के मसविदे और सुझाव पेश करके ही बस नही किया बल्कि साथ ही हमेशा उन जातियो की प्रत्यक्ष सहायता की जो अपनी आजादी और अपने अधिकारो के लिए सघर्षशील थी। सोवियत सघ ने पश्चिमी ईरियन को देश के केन्द्रीय भागो से मिलाने के लिए इन्दोनेशियाई जनता के प्रयत्नो का समर्थन किया और जब भारत ने गोआ, दमन और दिऊ के पुर्तगीज उपनिवेशो को मुक्त करने के लिए कानूनी कदम उठाया तो सोवियत सघ ने उसका साथ दिया। कागो के भीषण सघर्ष मे सोवियत सघ सदा कागो की जनता का पक्षधर रहा और कागो के गणराज्य के प्रथम प्रधान मत्री पैट्रिस लुमुम्बा ने १६६० मे कहा था "महान शक्तियो मे एकमात्र सोवियत सघ ही ऐसा है जिसने शुरू ही से कागो की जनता के सघर्ष मे उसका समर्थन किया है। मै इस सामयिक और महत्वपूर्ण नैतिक सहायता के लिए जो आपके देश ने कागो के नवजात जनतत्र को साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के खिलाफ उसके सघर्ष मे दी है सोवियत जनता के प्रति कागो की जनता की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू।"

सोवियत संघ ने वियतनाम में अमरीकी आक्रमण को बन्द करने के लिए जो प्रयत्न किये उनका स्थान सातवें दशक में इसकी वैदेशिक नीति में बड़ा है। १९६४ की गर्मियों में संयुक्त राज्य अमरीका ने वियतनाम में बड़ी सेनाएं भेजकर और वियतनाम के जनवादी जनतंत्र के शहरों और गांवों की बमबारी शुरू करके अपने हस्तक्षेप को बहुत बढ़ा दिया। परन्तु अमरीकी साम्राज्यवाद की ये बर्बरतापूर्ण हरकतें वियतनामी जनता की दृढ़ प्रतिज्ञा को कमज़ोर नहीं कर सकीं। वियतनाम में अमरीकी आक्रमण की निन्दा संसार के सभी प्रगतिशील लोगों ने की। इस "गन्दे युद्ध" के ख़िलाफ़ प्रतिरोध की लहर स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका में फैल गई। सोवियत संघ ने विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध बिरादराना वियतनामी लोगों की सर्वांगीण सहायता करना हमेशा अपना दायित्व समझा और उनकी सहायता की।

वियतनाम की वीर जनता ने अपनी आम वीरता की बदौलत तथा सोवियत संघ, अन्य समाजवादी देशों और दुनिया के सभी ईमानदार लोगों की सहायता प्राप्त करके एक बड़ी विजय हासिल की। जनवरी, १९७३ में युद्ध को बंद कर देने की संधि पर हस्ताक्षर किये गये। वियतनाम की धरती पर पुनः शान्ति स्थापित की गई।

जटिल अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के प्रति वस्तुवादी दृष्टिकोण सोवियत सरकार की विदेश नीति की हमेशा विशेषता रहा है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण था पृथ्वी के वायुमंडल में, अंतरिक्ष में तथा समुद्र के भीतर न्यूक्लियर शस्त्रों के परीक्षण पर प्रतिबंध लगानेवाली मास्को संधि। प्रारम्भ में इस संधि पर सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटेन के हस्ताक्षर थे मगर शीघ्र ही एक सौ से अधिक राज्यों ने इसपर हस्ताक्षर कर दिये। न्यूक्लियर शस्त्रास्त्र के भूमिगत परीक्षणों पर भी प्रतिबंध लगाने के लिए सोवियत राजनीतिज्ञों का प्रयत्न जारी है।

सातवें दशक के उत्तरार्द्ध में सोवियत सरकार ने अपनी विदेश नीति पर अमल ऐसे समय किया जब सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी क्षेत्र इतिहास की घड़ी की सूई को एक बार फिर पीछे ले जाने का प्रयास कर रहे थे। उस दशक में संयुक्त राज्य अमरीका वियतनाम में युद्ध की आग भड़काता रहा जिसके शोले समूचे हिन्दचीन में फैल गये। सरकारों में प्रतिक्रियावादी उलटफेर घाना (१९६६) में और यूनान में (१९६७ में) हुए। १९६७

की गर्मी मे इजराइल ने अरब जातियो के विरुद्ध आक्रमणकारी युद्ध छेड दिया जिसपर सोवियत सघ ने तुरत सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली का असाधारण अधिवेशन बुलाने की माग की। परन्तु सयुक्त राज्य अमरीका और उसके सामरिक मित्रो के बाधा डालने के कारण असेम्बली ने सोवियत सुझाव को स्वीकार नही किया जिसमे अधिकृत इलाको से इजराइली सेना को बिना शर्त वापसी और क्षतिपूर्ति के लिए हरजाना देने की माग की गई थी। सोवियत सरकार तथा ससार भर की सभी प्रगतिशील शक्तिया की कोशिशो से नवम्बर, १९६७ मे सुरक्षा परिषद ने समस्त अधिकृत अरब इलाको से इजराइली सेना की वापसी की माग करते हुए एक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। परन्तु इजराइल ने सयुक्त राज्य अमरीका के समर्थन से विश्व के जनगण के विशाल बहुमत की इच्छा का पालन नही किया।

१९६८ की गर्मियो मे चेकोस्लोवाकिया की समाजवाद-विरोधी शक्तियो ने अपनी कार्रवाई तेज कर दी और प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तियो ने खुल्लम-खुल्ला उनका समर्थन किया। यह समाजवाद के हित के लिए भयकर खतरा था। इस समय से बहुत पहले यूरोपीय समाजवादी देशो ने जो वारसा सधि के सदस्य थे, प्रत्येक सदस्य देश मे समाजवाद की सयुक्त रक्षा के लिए एक प्रस्ताव स्वीकार किया था। और अब निर्णायक कदम उठाने का समय आ गया था। अगस्त, १९६८ मे बल्गारिया, हगरी, जर्मन जनवादी जनतन्त्र, पोलैंड और सोवियत सघ की सेनाओ ने चेकोस्लोवाकिया मे प्रवेश किया और इससे अन्दरूनी प्रतिक्राति तथा अतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की शक्तियो द्वारा चेकोस्लोवाकिया मे समाजवादी व्यवस्था का तख्ता उलटने तथा समाजवादी समुदाय की शक्ति को खोखला करने की चेष्टाओ को नाकाम कर दिया गया।

जून, १९६९ म मास्को म कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो का अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन मे ७५ कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन मे विचार विमर्श का मुख्य विषय वर्तमान युग की मूल समस्या—साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष था। इस सम्मेलन मे विचारो के आदान प्रदान से मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात समृद्ध हुआ, और मजदूर वर्ग की अपनी मुक्ति के लिए तथा सर्वहारा अतर्राष्ट्रीयतावाद के उसूलो के आधार पर अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन

की एकजुटता के लिए मजदूर वर्ग के संघर्ष की वर्तमान अवस्था की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के स्पष्टीकरण में सुविधा हुई। सम्मेलन ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध समस्त क्रांतिकारी शक्तियों के संयुक्त संघर्ष में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत संघ की नेतृत्वकारी भूमिका की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उसने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के भीतर दिखाई देनेवाली समस्त अवसरवादी और राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों पर निर्णायक चोट की। चीनी नेताओं की गुटबन्दी की कार्रवाइयों के हानिकारक प्रभाव पर विशेषकर ज़ोर दिया गया। सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि कम्युनिस्ट आन्दोलन विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद आधुनिक जगत की सबसे प्रबल राजनीतिक शक्ति, समस्त साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों का अगुआ दस्ता है।

सोवियत कम्युनिस्टों ने सम्मेलन के नतीजों को सर्वसम्मति से स्वीकार किया। सभी सोवियत जनगण स्वयं यह देख सकते थे कि विश्व समाजवादी व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग तथा समस्त क्रांतिकारी शक्तियां मानवजाति की प्रगति के मुख्य रास्ते को निर्धारित कर रही थीं।

सातवर्षीय योजना का प्रारंभ

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वीं कांग्रेस मास्को में जनवरी, १९५९ में हुई। कांग्रेस इस नतीजे पर पहुंची कि सोवियत संघ में समाजवाद की संपूर्ण और अंतिम विजय हो चुकी है। विगत चार दशकों के दौरान सोवियत जनगण ने पूंजीवादी संबंधों का अन्त करने के बाद सामाजिक उत्पादन की समस्त व्यवस्था को बदल दिया और समाजवाद में संक्रमण की दिशा में क़दम उठाये। छठे दशक के अंत तक समाजवादी निर्माण पूरा हो चुका था और एक उन्नत समाजवादी समाज की उत्पत्ति हो चुकी थी। अन्य समाजवादी देशों की उत्पत्ति से शत्रुतापूर्ण पूंजीवादी घेरा टूट गया। उस समय तक सोवियत संघ का जीवन एक ऐसी मंज़िल पर पहुंच चुका था जब देश के भीतर या बाहर ऐसी कोई शक्ति नहीं रह गई थी जिसमें सोवियत संघ को वापस पूंजीवाद के रास्ते पर ले जाने की क्षमता हो। यह सही है कि साम्राज्यवाद का शिविर अभी क़ायम है और इसकी कोई शत प्रतिशत ज़मानत नहीं है कि पूंजीवादी जगत के नेता किसी अत्यंत

खतरनाक मुहिम या जोखिम नही उठायेंगे, लेकिन इस समय तक कोई चीज सोवियत सघ मे पूजी और निजी स्वामित्व के राज को पुन स्थापित नही कर सकती। सोवियत सघ मे समाजवाद हमेशा-हमेशा के लिए स्थापित हो चुका है।

२१वी काग्रेस के आयोजन से कुछ ही पहले सोवियत सघ मे २० वर्ष के बाद राष्ट्रीय जनगणना हुई। विगत जनगणना १९३९ मे हुई थी। इस जनगणना के दौरान जो सामग्री जमा की गई, उससे यह सम्भव हो गया कि आबादी की बनावट मे हुए परिवर्तनो के स्वरूप को निश्चित किया जाये तथा देश के श्रम साधन की स्थिति का विश्लेषण किया जाये। पिछली जनगणना के बाद के बीस वर्षों के दौरान जनसख्या १७,०६,००,००० से बढकर २०,८८,००,००० हो गई थी। इस वृद्धि मे आधे से कुछ अधिक लाटविया, लिथुआनिया, मोल्दाविया, एस्तोनिया तथा बेलोरूस और उक्रइना के पश्चिमी भागो के लोग थे जो युद्ध से कुछ पूर्व सोवियत सघ मे शामिल हो गये थे। मगर दूसरी ओर अगर युद्ध के दौरान इतनी भयकर क्षति नही उठानी पडती तो आबादी मे स्वाभाविक वृद्धि कही अधिक होती।

१९५९ मे ४८ प्रतिशत लोग शहरो मे रहते थे। देश के पूर्वी भागो मे जनसख्या मे विशेषकर अधिक वृद्धि हुई। जनसख्या मे कुल वृद्धि ९ ५ प्रतिशत हुई मगर उराल मे ३२ प्रतिशत, पश्चिमी साइबेरिया मे २४ प्रतिशत, पूर्वी साइबेरिया मे ३४ प्रतिशत, सोवियत सुदूर पूर्व मे ७० प्रतिशत और मध्य एशिया और कजाखस्तान मे ३८ प्रतिशत वृद्धि हुई।

जैसा कि पिछली जनगणना के समय प्रतीत हुआ था, उसी तरह १९५९ मे भी सोवियत सघ मे कोई आदमी बेरोजगार नही था। प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यावहारिक रूप से यह सम्भव था कि काम करने के अपने अधिकार का उपयोग करे और जनगणना से यही साबित हुआ कि आबादी की श्रम सरगर्मी का स्तर बहुत ऊचा है। औसतन काम करने योग्य प्रत्येक १०० नागरिको मे ८३ भौतिक तथा बौद्धिक मूल्यो के सृजन मे हाथ बटा रहे थे।

इस जनगणना की एक और मुख्य विशेषता यह थी कि इससे जनगण का उच्च शैक्षणिक स्तर जाहिर हुआ। लगभग ५ करोड ९० लाख लोग उच्च, माध्यमिक या अपूर्ण माध्यमिक (सात साल से कम नही) शिक्षा पूरी कर चुके थे, और मजदूर वर्ग मे ३२ प्रतिशत लोग इसी श्रेणी मे आते थे।

१९५९ तक आबादी में तीन चौथाई लोग ऐसे थे जिनका जन्म क्रांति के बाद हुआ था जिसका मतलब यह था कि अधिकांश श्रमजीवी जनता के शिक्षा-दीक्षा के वर्ष और सारा बालिग़ जीवन समाजवाद के अंतर्गत बीता था। उस समय तक सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य संख्या ९० लाख तक, कोम्सोमोल के सदस्यों की संख्या कोई दो करोड़ और ट्रेड-यूनियन की सदस्य संख्या छः करोड़ तक पहुंच गई थी।

लेनिन ने अपने ज़माने में संकेत किया था कि सोवियत संघ के पास पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक साधन और श्रम भंडार मौजूद है और जनगण के पास काफ़ी सृजनात्मक क्षमता है जिससे देश के समाजवादी विकास के अनन्त समृद्धशाली भविष्य को सुनिश्चित किया जा सके। क्रांति के बाद के प्रथम चालीस वर्षों के दौरान समाजवादी निर्माण की सफल प्रगति से सोवियत जनगण की भौतिक समृद्धि तथा मनोबल को ज़बर्दस्त बढ़ावा मिला और भविष्य में और भी शानदार प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ। १९५९ में ही सोवियत संघ में विश्व औद्योगिक उत्पादन का पांचवां भाग पैदा होने लगा था जब कि १९१३ और १९३७ में क्रमशः केवल ३ प्रतिशत से कुछ अधिक और लगभग १० प्रतिशत हुआ करता था।

पार्टी की २१वीं कांग्रेस ने देश की अन्दरूनी स्थिति और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसकी अवस्था का विश्लेषण करने के बाद घोषणा की कि सोवियत संघ विकास की एक नयी मंज़िल में दाख़िल हो चुका है और वह व्यापक कम्युनिस्ट निर्माण की मंज़िल है। बताया गया कि देश का मुख्य कार्यभार कम्युनिज़्म की भौतिक और तकनीकी बुनियाद के निर्माण तथा सोवियत जीवन के सभी क्षेत्रों में कम्युनिस्ट सिद्धांतों के सुदृढ़ीकरण का अभियान है।

विकास की इस नयी ऐतिहासिक मंज़िल में प्रवेश करनेवाले जनगण के सामने विशाल रचनात्मक कार्यभार था। इसको पूरा करने के लिए ज़रूरत थी एक दीर्घकालीन योजना तैयार करने की जिसमें कम्युनिज़्म के व्यापक निर्माण के संदर्भ में देश के आर्थिक विकास की मुख्य प्रवृत्तियों और ध्येयों की व्याख्या की जाये। इस दिशा में पहला क़दम १९५९–१९६५ की सातवर्षीय योजना थी जिसकी तैयारी १९५७ में ही शुरू कर दी गयी थी। आर्थिक प्रबंध के ढांचे की नये सिरे से रचना का, जो उस समय जारी कर दी गई थी, यह मतलब था कि अलग-अलग संघीय

जनतत्रो तथा आर्थिक प्रशासकीय क्षेत्रो मे योजना तैयार करने का काम बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। पहले की योजना ने पूर्व मे अनेक महत्वपूर्ण खनिज पदार्थों की खोज को ध्यान मे नही लिया था जिसका पता योजना तैयार होने के बाद लगा था और न उसमे १६५७ और १६५८ के फैसलो को पूरा करने का प्रबध किया गया था जिनका उद्देश्य रिहायशी घरो के निर्माण का विस्तार तथा रासायनिक और अन्य उद्योगो के विकास को तेज करना था। इसकी वजह से यह फैसला किया गया कि छठी पचवर्षीय योजना के पूरा होने से पहले ही १६५६–१६६५ की योजना के लक्ष्याक तैयार किये जाये (यानी छठी पचवर्षीय योजना की शेष अवधि तथा पूरी अगली पचवर्षीय योजना का तखमीना तैयार किया जाये)।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वी काग्रेस ने योजना के लक्ष्याको पर, जो अखबारो मे छप चुके थे, राष्ट्रव्यापी विचार विमर्श के दौरान प्राप्त नतीजो की समीक्षा की और सर्वसम्मति से नयी योजना को स्वीकार किया। नये आर्थिक कार्यक्रम के ध्येय सोवियत सघ के लिए भी असाधारण थे। अगले सात वर्षों के दौरान आर्थिक विकास के लिए लगभग उतना ही धन लगाने का निश्चय किया गया जितना १६१७ के बाद की अवधि मे अब तक लगाया गया था। बिजलीघरो के निर्माण, तेल और गैस के उत्पादन, रासायनिक उद्योग के विकास और अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ के बिजलीकरण पर विशेष जोर दिया गया था। योजना मे कृषि उत्पादन मे भी काफी वृद्धि का प्रबध किया गया था। इसकी व्यवस्था भी की गयी थी कि कार्य सप्ताह को कम किया जाये, एक विशाल रिहायशी गृह निर्माण कार्यक्रम शुरू किया जाये तथा सोवियत नागरिको की भौतिक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ को यथासम्भव पूरा करने के उद्देश्य से और अनेक उद्यमो का निर्माण किया जाये।

सातवर्षीय योजना के उदात्त ध्येयो तथा पार्टी द्वारा निर्धारित नये क्षेत्रो को जीतने के लक्ष्य ने सोवियत जनगण का मन उत्साह से भर दिया। काग्रेस का अधिवेशन अभी शुरू भी नही हुआ था कि हजारो मेहनतकश समूहो ने अपनी श्रम कारगुजारी मे और अधिक वृद्धि करने का बीडा उठाया।

काग्रेस का उद्घाटन जिस जनोत्साह के माहौल मे हुआ वह पहले की समान परिस्थितियो से बिल्कुल भिन्न था: यह ताजातरीन समाजवादी

प्रतियोगिता उस समय शुरू की जा रही थी जब देश आर्थिक विकास के बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंच गया था। जब १९३५ में स्तखानोवा आन्दोलन की शुरुआत हुई तो इसके प्रवर्तकों को १०२ टन कोयला काटने में छः घंटे लगे थे जो उन दिनों के लिए आश्चर्यचकित कर देनेवाला रिकार्ड था। बीस साल बाद एक "दोनबास-२" कोयला काट मशीन की मदद से उतना कोयला एक घंटे से भी कम समय में काटा जा सकता था।

१९३५ में रेलवे इंजन चालक क्रिवोनोस अपनी मालगाड़ी को ३२ से ३४ किलोमीटर तक प्रति घंटे की रफ़्तार से ले जाने में सफल हुआ था जबकि आम तौर से स्वीकृत रफ़्तार २४ किलोमीटर प्रति घंटा थी। इस प्रकार उसने एक रिकार्ड क़ायम किया था। इस बीच १९५९ तक सोवियत मालगाड़ियों के चलने की औसत रफ़्तार ४० किलोमीटर प्रति घंटा हो गई थी।

१९३५ में समाचारपत्र "प्राव्दा वोस्तोका" ने दोनों हाथों से रूई चुनने के एक प्रगतिशील तरीक़े के बारे में एक लेख प्रकाशित किया। चौथाई शती बाद तुर्सुनाई आखुनोवा, उज़्बेकिस्तान की रूई फ़सल चुननेवाली मशीन चलानेवाली प्रथम महिला ने लिखा: "आज हम भी दोनों हाथों से एकसाथ काम लेते हुए रूई की फ़सल चुनते हैं लेकिन हमारे हाथ एक आज्ञापालक मशीन को चलाते होते हैं। मिसाल के लिए एक मेरी ही मशीन औसत कार्यकौशल के सौ रूई चुननेवालों का काम करती है।"

यह उस असाधारण प्रगति की चन्द मिसालें हैं जो अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं में उस समय तक हासिल हो चुकी थी। चौथे दशक के रिकार्ड १९५९ तक साधारण हो चुके थे, पीछे छूट चुके थे। तबदीली केवल मशीनों में नहीं हुई थी। सातवर्षीय योजना के समय तक जनता का शिक्षा स्तर बिल्कुल बदल चुका था। चौथे दशक के प्रमुख श्रम वीरों को अधिकांशतः केवल प्राथमिक शिक्षा मिली थी यानी उन्होंने केवल चार वर्ष स्कूल में पढ़ा था। छठे दशक के अंत में समाजवादी प्रतियोगिता अभियान में भाग लेनेवाले प्रमुख मजदूर ऐसे नर-नारियां थे जिन्होंने दसवर्षीय स्कूल की शिक्षा पूरी कर ली थी या स्कूल में सात साल पढ़ने के बाद किसी तकनीकी स्कूल में भी चार साल का पाठ्यक्रम पूरा किया था। १९३९ की जनगणना के अनुसार प्रत्येक हज़ार मज़दूरों में औसतन ८२ कम से कम सातवर्षीय स्कूल पास थे, और जनवरी, १९५९ तक यह आंकड़ा ३८६

तक पहुच गया था और टर्नर, इजन ड्राइवर और मिलिग मशीन चालको के लिए ये आकडे क्रमश ६६७, ६०२ और ६८३ थे।

श्रमजीवियो की शैक्षणिक और तकनीकी योग्यता ही नही बहुत बढी थी बल्कि इस अवधि म उनकी राजनीतिक चेतना, देश के औद्योगिक तथा सामाजिक जीवन मे सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा कही ज्यादा प्रबल हो चुकी थी। उस समय के आम वातावरण से प्रभावित होकर मास्को सोर्तोरोवोच्नाया रेलवे स्टेशन के नौजवान मजदूरो ने सुझाव पेश किया कि समाजवादी प्रतियोगिता को अधिक व्यापक पैमाने पर सगठित करना चाहिए, लक्ष्याको की अधिपूर्ति की परम्परागत जिम्मेदारी के साथ यह भी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि नियमित पाठ्यक्रम शुरू किया जाये और निर्दोष जीवन बिताया जाये। उन्होने यह भी सुझाव दिया कि प्रमुख दस्तो को आपस मे प्रतियोगिता करनी चाहिए और जो सफलतापूर्वक तीनो जिम्मेदारिया पूरी करे उन्हे कम्युनिस्ट श्रम दल की उपाधि देनी चाहिए। अखबार "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" ने नौजवान मजदूरो के सुझावो का समर्थन किया और पत्र-पत्रिकाओ, रेडियो, और पार्टी, ट्रेड-यूनियन तथा कोम्सोमोल सगठना द्वारा चलाये गये सगठनात्मक कार्यकलाप सभी ने नये समाजवादी प्रतियोगिता अभियान को शुरू करने मे अपनी-अपनी भूमिका अदा की। हजारो दलो, वर्कशापो, फैक्टरियो तथा निर्माण जत्थो ने नौजवान रेलवे मजदूरो के पदचिह्नो पर चलते हुए नयी जिम्मेदारिया स्वीकार की। इस नये प्रतियोगिता अभियान ने अभूतपूर्व पैमाने पर योजनाओ की अधिपूर्ति के उद्देश्य से श्रमजीवी जनता को नित्य नये प्रयत्न के लिए प्रेरित किया और बडी सख्या मे मजदूरो को प्रोत्साहित किया कि रात्रि पाठशालाओ मे नाम लिखायें, तकनीकी स्कूलो और इस्टीट्यूटो मे बाहरी पाठ्यक्रम मे शामिल हो और व्यावसायिक स्कूलो मे दाखला ले। अनेक शहरो और गावो मे जन सास्कृतिक विश्वविद्यालयो की स्थापना हुई जिनमे मेहनतकश जनगण को वैज्ञानिक, तकनीकी, साहित्यिक, कला सबधी आदि अनेक विषयो पर नियमित रूप से भाषण सुनने का मौका मिला। हर जगह निवासियो की समितिया सगठित की गई जिनका काम मुहल्लो मे वृक्ष और पौधे लगाना, बच्चो के खेल के मैदान तैयार करना और यह देखना था कि सामाजिक व्यवस्था के नियमो का पालन किया जाये।

वीश्नी वोलोचोक से वालेन्तीना गागानोवा द्वारा पेश की गई एक स्कीम शीघ्र ही देश भर में प्रसिद्ध हो गई। वह एक बुनकर थीं और उन्हें सामाजिक ज़िम्मेदारी का बड़ा ख़्याल था। उनका श्रम दल काम में सबसे आगे रहता था लेकिन उन्होंने अपनी इच्छा से उस दल को छोड़कर एक ऐसे दल के साथ काम करना शुरू किया जो पिछड़ा हुआ था। अपने नये सहयोगियों को अपने व्यापक अनुभव से अवगत करके गागानोवा ने उन्हें उनकी मशीनों की बेहतर जानकारी करायी। और इसका नतीजा यह हुआ कि उनके सूती कारख़ाने में वह श्रम दल सब पर बाज़ी ले गया। शुरू में इस दल में आने पर गागानोवा का वेतन कम हो गया था। मगर गागानोवा ने हिम्मत नहीं हारी। गागानोवा की निस्वार्थता से प्रेरित होकर देश के सभी भागों में कितने ही लोगों ने उनका अनुसरण किया।

कम्युनिस्ट श्रम दल या कम्युनिस्ट ढंग से श्रम करनेवाले मज़दूर की उपाधि का योग्य साबित होना कोई आसान बात नहीं थी। यह उन्हीं उद्यमों या अलग-अलग मज़दूरों को प्रदान की जाती थी जो सचमुच इनके योग्य होते थे। इस उपाधि के लिए प्रतियोगिता में भाग लेनेवालों की संख्या शीघ्र ही सभी जनतंत्रों में बहुत बढ़ गई। १९६१ के अंत तक इस प्रकार की समाजवादी प्रतियोगिता में सोवियत संघ के शहरों और देहातों के १ करोड़ आदमी शामिल हो गये थे। उनके कड़े परिश्रम की पैदावार ने सोवियत आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन नर-नारियों का काम और इनकी आकांक्षाएं सोवियत समाज के विकास में एक नयी मंज़िल की शुरूआत का संकेत कर रही थीं।

जनता द्वारा प्राप्त अनुभव के सहारे और सामाजिक विकास के नियमों के विश्लेषण के आधार पर कम्युनिस्ट पार्टी ने फ़ैसला किया कि कम्युनिज़्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण के लिए एक दीर्घकालीन योजना तैयार करना सम्भव और वास्तव में आवश्यक है। सोवियत जनगण जो उस समय निस्वार्थ कम्युनिस्ट निर्माण कार्य में लगे हुए थे, यह जानने का अधिकार रखते थे कि कितने समय में और किन उपायों से यह युग परिवर्तनकारी ध्येय प्राप्त होगा और उस मंज़िल तक पहुंचने के रास्ते में किन मुख्य पूर्वदर्शित मार्गचिह्नों से गुज़रना होगा। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नये तीसरे कार्यक्रम ने उस मंज़िल का रास्ता दिखाया।

देश भर मे प्रत्येक स्तर पर राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श के बाद सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी कांग्रेस ने १९६१ मे कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया।

सोवियत संघ की
कम्युनिस्ट पार्टी का नया कार्यक्रम

कम्युनिस्ट पार्टी के तीसरे कार्यक्रम के महत्व को पूरी तरह समझने के लिए जरूरी है कि इससे पहले के दोनो कार्यक्रमो का कुछ ब्योरा दिया जाये।

जुलाई–अगस्त, १९०३ मे रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस हुई थी और २६ पार्टी संगठनो के ४३ प्रतिनिधियो ने रूस की मजदूर पार्टी के प्रथम कार्यक्रम के मसविदे पर विचार किया। उस कार्यक्रम मे उस समय की पश्चिमी यूरोपीय सामाजिक-जनवादी पार्टियो द्वारा तैयार की हुई उसी तरह की दस्तावेजो की कोई बात नही थी। वह एक अस्त्र था जिसे पहले पूंजीवादी-जनवादी और फिर एक समाजवादी क्रांति को विजयी बनाने के संघर्ष मे इस्तेमाल करना था और वह उस समय का एकमात्र कार्यक्रम था जिसमे सर्वहारा अधिनायकत्व की धारणा निरूपित की गई थी। उस कांग्रेस मे अवसरवादियो के विरुद्ध कडे संघर्ष के दौरान "बोल्शेविक" शब्द का जन्म हुआ। इसके प्रारम्भिक मानी बहुत स्पष्ट थे। इसका प्रयोग उन लोगो के लिए किया गया था जो लेनिन का समर्थन करनेवाले बहुमत मे शामिल थे और जिन्होने लेनिन द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम के पक्ष मे वोट दिया था। वह शब्द, "सारी सत्ता सोवियतो को दो!" के नारे ही की तरह अभी बाकी दुनिया को नही मालूम था। उस समय किसी के सपने मे भी यह बात नही होगी कि रूस मे क्रांतिकारी मार्क्सवादियो का वह छोटा सा दल शीघ्र ही एक विशाल संगठन का रूप धारण कर लेगा जिसे करोडो जनसाधारण का नेतृत्व करके एक ऐसे क्रांतिकारी भविष्य मे ले जाना है जो शेष मानवजाति के लिए ऐतिहासिक प्रगति का रास्ता रोशन करेगा।

मार्च, १९१९ मे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की आठवी कांग्रेस ने दूसरा कार्यक्रम स्वीकार किया क्योकि पहला कार्यक्रम पूरा हो चुका था। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी सत्तारूढ हो चुकी थी, नये जनतंत्र की

क्रांतिकारी उपलब्धियों की रक्षा और समाजवादी निर्माण का कार्यभार पूरा करने में जनगण का नेतृत्व कर रही थी। उस कांग्रेस में ४०३ प्रतिनिधियों ने भाग लिया जो ३,१३,००० कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे नये कार्यक्रम पर विचार करने इकट्ठा हुए थे जिसमें पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण के पूरे दौर के लिए पार्टी के कार्यभार व्यक्त किये गये थे। कांग्रेस समाप्त होने पर प्रतिनिधि देश के विभिन्न भागों में अपने घरों को लौटे जिसकी हालत उस समय एक ऐसे क़िले की थी जो दुश्मन के घेरे में हो। नये कार्यक्रम पर अमल करने से पहले प्रतिक्रांतिकारियों और वैदेशिक हस्तक्षेपकारियों से समाजवाद को बचाने के लिए अभी कितनी ही संगीन लड़ाइयां लड़नी थीं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वीं कांग्रेस अक्तूबर, १९६१ में क्रेमलिन के कांग्रेस प्रासाद में हुई। इस बार ४,८१३ प्रतिनिधि लगभग १ करोड़ कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस कांग्रेस ने सोवियत संघ में कम्युनिस्ट निर्माण का कार्यक्रम स्वीकार किया। इस कार्यक्रम का मसविदा कांग्रेस से ढाई महीने पहले प्रकाशित कर दिया गया था ताकि पार्टी तथा सार्वजनिक संगठनों के सभी स्तरों पर इसपर विचार-विमर्श किया जा सके। पार्टी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए विभिन्न बैठकों और सभाओं में कोई ९० लाख आदमी शरीक हुए। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और स्थानीय पार्टी संगठनों के पास तीस हज़ार चिट्ठियों में तरह-तरह के सुझाव भेजे गये।

इस कार्यक्रम की तैयारी वैज्ञानिक कम्युनिज़्म के सिद्धांत और व्यवहार में एक महत्वपूर्ण योगदान थी। सबसे पहले कार्ल मार्क्स और फ़्रेडरिक एंगेल्स ने कम्युनिस्ट समाज के सबसे बुनियादी पहलुओं और उसके विकास की दो मंजिलों की व्याख्या की थी। आगे चलकर लेनिन ने एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल में, समाजवाद से कम्युनिज़्म में विकास के मौलिक नियमों का पता लगाया। "पूंजीवाद से गुज़रकर मानवजाति सीधे केवल समाजवाद में जा सकती है, यानी उत्पादन साधनों पर सामाजिक स्वामित्व तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये गये काम की मात्रा के अनुसार पैदावार के वितरण की अवस्था में। हमारी पार्टी इससे आगे देखती है: समाजवाद अनिवार्यतः विकसित होकर धीरे-धीरे कम्युनिज़्म का रूप लेगा, जिसके

परचम पर लिखा होगा, 'हर एक से उसकी क्षमता के अनुसार और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।'"*

लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि "कम्युनिज्म समाज का एक उच्चतर रूप है और उसका विकास तभी हो सकता है जब समाजवाद की पूरी तरह स्थापना हो चुकी हो।"** उन्होने बताया " समाजवाद और कम्युनिज्म मे एकमात्र वैज्ञानिक अतर यह है कि पहला शब्द पूजीवाद की कोख से उत्पन्न होनेवाले नये समाज के लिए इस्तेमाल होता है, जबकि दूसरे का मतलब उससे अगली और उच्चतर मजिल है।"*** सोवियत सघ का अनुभव बतलाता है कि एक से दूसरे मे सक्रमण एक लगातार ऐतिहासिक प्रक्रिया है। महान अक्तूबर क्राति के बाद के प्रथम चार दशको मे एक उन्नत समाजवादी समाज की उत्पत्ति हुई। उन वर्षों मे सोवियत जनगण ने समाजवाद का निर्माण करते हुए भावी कम्युनिस्ट समाज के तत्वो की रचना भी की, और इस प्रकार कम्युनिज्म मे धीरे-धीरे सक्रमण का रास्ता साफ किया।

छठे दशक के अत और सातवे दशक के प्रारम्भ मे कम्युनिज्म का फौरी निर्माण ही सोवियत जनगण का मुख्य सृजनात्मक काम बन गया।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की ठोस मजिले बतायी गई हैं और यह कि इस कार्यभार को किस प्रकार पूरा करना चाहिए। इस निर्माण के दौरान तीन परस्पर सबधित ऐतिहासिक कार्यों को पूरा करना है कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना है, कम्युनिस्ट सामाजिक सबध विकसित करने हैं, लोगो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा करनी है। सर्वप्रथम कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार तैयार करना जरूरी है जिससे सभी नागरिको के लिए भौतिक और सास्कृतिक धन की बहुतायत होगी। इस आधार को तैयार करने का मतलब है देश का सपूर्ण बिजलीकरण, और इस आधार पर देश के बिजलीकृत उद्योग और कृषि को यानी अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २४, पृष्ठ ६२

**वही, खड ३०, पृष्ठ २६०

***वही, खड २६, पृष्ठ ३८७

में सामाजिक उत्पादन की मशीनरी, प्रविधि और संगठन-कार्य को उच्चतर स्तर पर ले आना। इसके अलावा इसके लिए यह भी जरूरी होगा कि उत्पादन का सर्वांगीण मशीनीकरण और स्वचलीकरण किया जाये, रासायनिक उपायों का व्यापक प्रयोग किया जाये, नयी प्रकार की ऊर्जा और सामग्री द्रुत गति से विकसित की जायें जिनमें प्राकृतिक, भौतिक तथा श्रम साधनों का रंगारंग और विवेकसंगत प्रयोग किया गया हो, विज्ञान और उत्पादन में निकट संबंध हो, वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति तेजी से हो तथा श्रम की उत्पादिता में काफ़ी वृद्धि हो।

इस कार्य की पूर्ति से जो देश में निर्मित उत्पादन शक्तियों की लगातार प्रगति की रोशनी में सम्भव है, सोवियत संघ आर्थिक दृष्टि से संसार का सबसे शक्तिशाली देश बन जायेगा। इस कार्यक्रम में दिये गये ध्येय ज्यों-ज्यों पूरे होंगे शहरों और गांवों के मेहनतकश जनगण की खुशहाली बढ़ेगी जिसका मुख्य रूप वेतन में नियमित वृद्धि के साथ क़ीमतों में कमी और धीरे-धीरे कर व्यवस्था का उन्मूलन होगा। एक साधारण नागरिक के जीवन में सामाजिक उपभोग निधियों की भूमिका अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जायेगी और उनकी वृद्धि की दर वेतन में बढ़ोतरी की दर से अधिक होगी। इन सामाजिक उपभोग निधियों से किंडरगार्टनों और बोर्डिंग स्कूलों में बच्चों के मुफ़्त रहने-सहने का प्रबंध किया जायेगा, रिहायशी मकान, सार्वजनिक सेवाएं, परिवहन, आदि मुफ़्त हो जायेंगे। प्रत्येक परिवार को सुसज्जित फ़्लैट दिया जायेगा और कार्य सप्ताह और कार्य दिवस संसार में सबसे छोटा होगा। इन चीज़ों से संस्कृति-विकास की रफ़्तार और तेज़ होगी और व्यक्ति की क्षमता के सर्वांगीण विकास तथा सामाजिक जीवन के तमाम क्षेत्रों में उसकी सृजनात्मक शिरकत की आवश्यक स्थितियां सुनिश्चित हो जायेंगी।

उत्पादक शक्तियों के इस विकास तथा देश के आर्थिक ढांचे में तबदीली से कम्युनिस्ट सामाजिक संबंधों के सुदृढ़ीकरण को प्रोत्साहन मिलेगा। उनकी उत्पत्ति का मतलब यह होगा कि वर्ग भेदभाव, शहर और देहात के, मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच मौलिक अंतर मिट जायेगा। इन पेचीदा प्रक्रियाओं की शुरूआत १९१७ में हुई, सर्वहारा अधिनायकत्व द्वारा उठाये गये पहले क़दमों में, उन प्रारम्भिक कार्रवाइयों में हुई जिनका उद्देश्य उत्पादन साधनों पर निजी स्वामित्व का उन्मूलन था।

जैसा कि लेनिन ने बताया था, "वर्गों को मिटाने का मतलब है तमाम नागरिकों को जहा तक उत्पादन के साधनो का सबध है जो समस्त समाज की सम्पत्ति हैं, समान आधार पर खडा कर देना।"* सोवियत सघ मे १६१७ के बाद स्वामित्व के दो रूपो – राजकीय स्वामित्व और सामूहिक-सहकारी स्वामित्व – का जन्म हुआ। इनके साथ-साथ विकास से अत मे दोनो का विलयन समस्त जनगण के एकमात्र कम्युनिस्ट स्वामित्व के रूप मे हो जायेगा। यह परिघटना मजदूर वर्ग और किसानो के अतर को दूर करने की आर्थिक शर्त है।

इसी प्रक्रिया के समानातर शहर और गाव के सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक भेद भी रहन-सहन की स्थितियो के भेद के साथ मिट जायेगे। कृषि श्रम भी बस एक प्रकार का औद्योगिक श्रम हो जायेगा। शारीरिक काम करनेवाले मजदूरो की भी शैक्षणिक तथा तकनीकी योग्यता मानसिक काम करनेवाले श्रमिको के स्तर पर पहुच जायेगी। मानसिक तथा शारीरिक श्रम करनेवालो मे श्रमजीवियो का वास्तविक विभाजन मिट जायेगा। उसके बाद मजदूरो, सामूहिक किसानो और बुद्धिजीवियो के सहयोग के बजाय एक वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज के कार्यकारी सदस्यो के बीच सहयोग क़ायम होगा।

विभिन्न जातियो के मानवो के बीच भी सबधो के विकास म एक नयी मजिल का प्रादुर्भाव होगा। समाजवाद ने जातीय प्रश्न मे दो परस्पर सबधित प्रवृत्तियो को जन्म दिया एक है प्रत्येक जाति के सर्वांगीण विकास की प्रवृत्ति और दूसरी है विभिन्न जातियो के अधिकाधिक मिलाप, और एक दूसरे पर उनके अधिकाधिक प्रभाव की प्रवृत्ति। देश की आर्थिक क्षमता मे ज्यो-ज्यो वृद्धि होती है और सामाजिक भेद मिटते जाते हैं सघीय जनतत्रो और स्वायत्त क्षेत्रो के बीच भौतिक तथा सास्कृतिक मूल्यो का आदान प्रदान बढना चाहिए।

सोवियत सघ की जातियो की सस्कृति का समाजवादी, अतर्राष्ट्रीय अतर्य एक है, जातीय रूप मे भी उसका भेद कम होता जायेगा। एक सयुक्त अतरजातीय समुदाय की उत्पत्ति होगी जातीय भेदभाव, खासकर भाषा के भेद को मिटने मे वर्गीय भेदभावो के उन्मूलन से अधिक समय

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २०, पृष्ठ १२८

लगेगा। लेकिन यह भी एक वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो बुनियादी तौर से प्रगतिशील है। जब सारी दुनिया में कम्युनिज़्म की विजय हो जायेगी तो विश्व की जातियां अलग-अलग इकाइयों के रूप में नहीं रहेंगी तथा जातीय भेद धीरे-धीरे मिट जायेंगे। सर्वहारा अधिनायकत्व से समस्त जनगण के समाजवादी राज्य में राज्य के विकास और उसके एक कम्युनिस्ट स्वशासित समाज में विकास से संबंधित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम की प्रतिपत्ति वास्तव में समस्त संसार के लिए एक ऐतिहासिक महत्व रखती है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में कहा गया है: "कम्युनिज़्म के पहले दौर – समाजवाद की पूर्ण और अन्तिम विजय प्राप्त करने तथा पूरे परिणाम में कम्युनिज़्म के निर्माण की ओर समाज का संक्रमण सुनिश्चित करने के बाद, सर्वहारा अधिनायकत्व अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा कर चुका है और अब वह अन्दरूनी विकास के कार्यभारों की दृष्टि से सोवियत संघ में अनिवार्य नहीं रहा। वह राज्य जो सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के रूप में उत्पन्न हुआ था, नये, आधुनिक दौर में समस्त जनगण का राज्य ... बन गया है।"* समस्त जनगण का राज्य समस्त सोवियत जनगण की इच्छा का मूर्तिमान होगा, समस्त सोवियत समाज की सामाजिक एकता को प्रतिबिम्बित करेगा हालांकि उसमें निर्णयकारी भूमिका मज़दूर वर्ग की होगी। वह कम्युनिज़्म की अंतिम विजय तक क़ायम रहेगा और इसके अस्तित्व का कारण ही उस विजय को प्राप्त करना है।

कार्यक्रम में सोवियतों के कार्यकलाप को, सार्वजनिक संगठनों के अधिकारों और कार्यों में विस्तार को तथा समाजवादी जनवाद को सुधारने की दिशा में सभी सम्भव प्रयासों को विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि इन्हीं उपायों के माध्यम से राज्य के प्रशासन में, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के निरीक्षण में, राजकीय अमले के काम में तथा जनगण द्वारा उसके कार्यकलाप के नियंत्रण में सभी नागरिकों की शिरकत सुनिश्चित की जा सकती है। आख़िरकार सभी मेहनतकश जनगण सार्वजनिक प्रशासन और सार्वजनिक मामलों में भाग लेने लगेंगे और इसके परिणामस्वरूप जनवाद के विस्तार से शत प्रतिशत कम्युनिस्ट स्वशासन का मार्ग प्रशस्त होगा।

---

*सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को, १९६२, पृष्ठ ११३

कम्युनिस्ट निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार नये मानव की शिक्षा-दीक्षा है। पार्टी ने इस बात का बीडा उठाया है कि व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास के लिए जिसमे बौद्धिक सम्पन्नता, नैतिक कर्मनिष्ठता और शारीरिक चुस्ती शामिल है, काफी गुजाइश मुहैया की जाये। जहा तक रोजमर्रे के काम का सबध है यह एक मुख्य कार्यभार है जिसका उद्देश्य सभी लोगो मे उच्चतम वैचारिकता तथा कम्युनिज्म के ध्येय के प्रति अत्यत निष्ठा की भावना, काम तथा समस्त अर्थव्यवस्था के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण पैदा करना है। नये मानव, वर्गहीन समाज के सक्रिय निर्माता की शिक्षा-दीक्षा के लिए आवश्यक है कि सभी सोवियत नर-नारियो मे मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व दृष्टिकोण विकसित किया जाये, स्वय अपने देश के जीवन तथा विश्व के भावी विकास की सम्भावनाओ का गहरा अवबोधन कराया जाये। पार्टी के कार्यक्रम मे कम्युनिज्म के निर्माता की नैतिक सहिता है, जिसके सिद्धात सोवियत जनगण के अनुभव पर, सारे ससार के मेहनतकशो के रोजमर्रे के जीवन पर आधारित है। इनमे सन्निहित है मजदूर वर्ग की क्रातिकारी नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक हितो की समानता जिसकी तह मे यह उसूल है एक सबके लिए, सब एक के लिए।

समस्त मानवजाति के विकास की वर्तमान अवस्था और उसके कम्युनिस्ट भविष्य का सर्वेक्षण करते हुए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस ने युद्ध और शाति के प्रसग मे अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। कम लोग इस बात से इनकार करेगे कि वर्तमान युग की यही सबसे प्रधान समस्या है। हमारी धरती पर थरमो न्यूक्लियर युद्ध का खतरा मडरा रहा है जिससे पूरे के पूरे देश और जातिया नष्ट हो सकती है। इसी लिए काग्रेस ने इस बात पर जोर दिया कि श्रमजीवी जनता का मुख्य कार्यभार साम्राज्यवादियो पर समय रहते लगाम कसना है और उन्हे विनाशकारी हथियारो का उपयोग करने तथा थरमो न्यूक्लियर युद्ध छेड़ने से रोकना है।

काग्रेस ने विश्वास प्रकट किया कि सारी दुनिया मे समाजवाद की अतिम विजय से पहले भी, ससार के एक भाग मे पूजीवाद के कायम रहने पर भी पृथ्वी के जीवन से विश्वयुद्ध के खतरे को दूर कर देने की सम्भावना मौजूद है। जबतक साम्राज्यवाद है युद्ध का खतरा बना रहेगा।

मगर वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय वातावरण की विशेषता है सारी दुनिया में समाजवाद, जनवाद और शांति की शक्तियों की स्पष्ट वृद्धि। विश्व के विकास की मुख्य धारा को अब साम्राज्यवाद नहीं बल्कि समाजवाद निश्चित करता है।

एक बार फिर पार्टी ने यह स्पष्ट किया कि उसकी समझ में सोवियत संघ में कम्युनिज्म का निर्माण सोवियत जनगण का महान अंतर्राष्ट्रीय कार्यभार है, जिससे पूरी विश्व समाजवादी व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग और समस्त मानवजाति का हितसाधन होता है।

सातवर्षीय योजना की पूर्ति

सोवियत जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी की २२वीं कांग्रेस में स्वीकृत सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम को समस्त जनगण का कार्यक्रम माना। इससे उन्हें सातवर्षीय योजना के ध्येयों को पूरा करने के लिए, जिसे उन्होंने कम्युनिज्म के निर्माण के अपने प्रयत्नों के तात्कालिक मार्गचिह्न के रूप में देखा, और अधिक लगन से काम करने की प्रेरणा मिली।

१९६२ में मग्नितोगोर्स्क के मजदूरों की श्रम उत्पादिता संयुक्त राज्य अमरीका के अगुआ इस्पात कारखानों के स्तर तक पहुंच गई। दोनेत्स बेसिन के खनिकों ने एक महीने में ८०,००० टन से अधिक कोयला काटकर संसार भर में एक नया रिकार्ड कायम किया। तातार जनतंत्र के अगुआ तेल मजदूर उसी १९६५ साल के योजना-ध्येय की काफ़ी ज़्यादा अधिपूर्ति करने में सफल हुए।

युद्ध के पूर्व की पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान सारे देश ने समाजवादी उद्योगों के प्रथम उद्यमों की उत्पत्ति का उत्सव मनाया था। सातवें दशक के दौरान उनसे कहीं अधिक क्षमता की फ़ैक्टरियों, कारखानों, बिजलीघरों, आदि का निर्माण तथा उन्हें चालू होना साधारण सी घटना हो गया। अखबार में ऐसी घटनाओं के समाचार को अपेक्षाकृत कम स्थान दिया जाता। अग्र लेखों का विषय अब कम्युनिस्ट निर्माण के विशालकाय प्रयोजन होते हैं जैसे साइबेरिया में बननेवाले जबर्दस्त पन-बिजलीघर, द्रूज्बा (मैत्री) तेल पाइपन-लाइन जो वोल्गा से पोलैंड,

कुल मिलाकर सातवर्षीय योजना सफलतापूर्वक पूरी की जा रही थी। रासायनिक उद्योग तेजी से प्रगति कर रहा था और गैस और तेल उस समय तक देश के ऊर्जा-साधनों में निर्णायक स्थान प्राप्त कर चुके थे। रेलवे में अधिकांश काम बिजली और डीज़ल इंजन करने लगे थे। निर्माण-कार्य में लौह कंक्रीट के बने पूर्वनिर्मित हिस्सों का इस्तेमाल सचमुच बहुत व्यापक पैमाने पर होने लगा था। गृहनिर्माण कार्यक्रम तेज़ी से प्रगति कर रहा था और उसका बराबर विस्तार किया जा रहा था। १९६१ में देश की शहरी आबादी पहली बार देहाती आबादी के बराबर हो गई।

इस औद्योगिक प्रगति के आधार पर १९६१ में चेष्टा की गई कि योजना के मुख्य ध्येयों पर पुनः विचार किया जाये ताकि उन्हें और बढ़ाया जाये। लेकिन बाद की घटनाओं ने योजना बनानेवालों को अपना ध्यान दूसरे सवालों की ओर आकृष्ट करने पर मजबूर किया। वे सवाल थे: पूंजी विनियोग का बिखर जाना, उद्योग के समान प्रगति करने में कृषि की असफलता, उत्पादन साधनों के उत्पादन तथा उपभोग माल के उत्पादन में अंतर और श्रम उत्पादिता में वृद्धि की मंद गति के कारण।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में अधिक संकेन्द्रित आर्थिक विश्लेषण की ओर, आर्थिक योजनाओं को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने की आवश्यकता की ओर अधिक ध्यान देने पर जोर दिया था। अख़बारों में बड़ी संख्या में लेख छापे गये जिनमें उत्पादन के ज्यादा कारगर तरीक़ों की और ज्यादा होशियारी से योजना बनाने और दाम-व्यवस्था निर्धारित करने की मांग की गई थी। वैज्ञानिकों, प्रबंध-अधिकारियों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने अलग फ़ैक्टरियों, निर्माण-स्थलों, प्रबंध-विभागों और आर्थिक परिषदों में सुअवसरों की उपेक्षा की बाबत लिखा। १९५७ में आर्थिक प्रशासन की जो व्यवस्था अपनाई गई थी, उसमें बहुत सी त्रुटियां देखने में आयीं। शुरू में आर्थिक परिषदों ने अपने निरीक्षण के ख़ास क्षेत्र के भीतर उद्यमों की सफल पहलक़दमी को प्रोत्साहित करने में काफ़ी तत्परता दिखाई दी, मगर बाद में इस नयी व्यवस्था से स्थानीय हितों को प्रधानता देने की भावना को बढ़ावा मिला। अलग-अलग शाखाओं के अनुसार आर्थिक प्रशासन से विचलन के कारण अर्थव्यवस्था के प्रबंध का काम अनावश्यक रूप से जटिल हो गया, बड़ी संख्या में आर्थिक संस्थायें स्थापित हो गई थीं जिनपर विशेष शाखाओं में विकास की जिम्मेदारी नहीं थी।

देश के आर्थिक प्रशासन के ढांचे मे बार-बार उलट फेर स्पष्टत आवश्यक नही था। ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी जिसमे उद्योग और कृषि को सुधारने का साधन प्रशासनीय कार्ययंत्र के पुनर्गठन को माना जाने लगा था। अगरचे आर्थिक परिषदो को विस्तारित करने का प्रयास किया गया और नये विभागो की व्यवस्था कायम की गई, वाछनीय परिणाम नही हासिल हुआ। थोडे ही दिनो मे निम्नलिखित रूप मे गतिरोध की स्थिति उत्पन्न हो गई उत्पादन और पूजीगत निर्माण की योजनाओ पर नजरसानी एक तरह की सस्थाए करती थी, सप्लाई का काम दूसरी तरह की और नयी प्रविधि जारी करने और सीखने का काम तीसरी तरह की सस्थाए करती थी। व्यवहार मे इसका मतलब यह हुआ कि कोई एक केन्द्र ऐसा नही रह गया था जहा किसी एक उद्योग के विकास का परिवेक्षण किया जाता। इसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि इस अवधि मे अनेक फैसले किये गये मगर प्रगति की रफ्तार धीमी थी और वैज्ञानिक अनुसधान तथा वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारो को लागू करने का कार्यक्रम पूरा नही हो पाया। यह बात नयी मशीनो के उत्पादन और स्वचलीकरण तथा सर्वतोमुखी मशीनीकरण की मद गति के सबध मे बिल्कुल स्पष्ट थी।

यद्यपि समग्र रूप से सातवर्षीय योजना के ध्येय पूरे हो गये थे उद्योग की कुछ शाखाओ मे प्रगति सतोषजनक नही थी। १९५३-१९५८ की अवधि की कृषि की सफलताओ के बाद कुछ सचालको के दृष्टिकोण मे आत्मसतोष की झलक दिखाई देने लगी थी। सातवर्षीय योजना बनानेवालो ने सोचा था कि मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के भग होने और उनकी मशीनो के सामूहिक फार्मों के हाथ बेच दिये जाने के बाद कृषि मशीनो का इस्तेमाल पहले से ज्यादा अच्छी तरह होने लगेगा। इसलिए कृषि मशीनो के उत्पादन मे कुछ कमी करने का फैसला किया गया था।

योजना के प्रथम वर्षों मे इस मिथ्या अनुमान के असर को दुरुस्त करने के लिए कार्रवाई करनी पडी। १९६२ मे कुछ प्रकार के पशु उत्पादन का खरीदारी का दाम बढाना पडा, जिसकी वजह से मास और मक्खन का फुटकर दाम बढ गया। ट्रैक्टर, अनाज हार्वेस्टर और खनिज खाद का उत्पादन बढाने के लिए अतिरिक्त धन हासिल करने का प्रयास करना पडा। कृषि प्रशासन के पुनर्गठन से उस समय बडे परिवर्तनो की आशा

की गई थी मगर कोई ख़ास सुधार नहीं हुआ, उलटे इसका नतीजा यह हुआ कि बहुत से अनुभवी फ़ार्म नेता व्यावहारिक काम छोड़कर केवल प्रशासन के काम में लग गये।

१९६३ में मौसम की ख़राबी से सामूहिक फ़ार्मों और राजकीय फ़ार्मों की अर्थव्यवस्था को बड़ा धक्का लगा। कड़ाके की सरदी के बाद गर्मी के सूखे के कारण फ़सल बहुत कम हुई, और सोवियत संघ को मजबूरन अपनी जरूरत के अनाज का एक हिस्सा विदेशों से ख़रीदना पड़ा। जाहिर है प्रकृति के उतार चढ़ाव का अनुमान लगाना किसी के बस की बात नहीं, मगर इससे यह बात और उभरकर सामने आयी कि देश की कृषि व्यवस्था को विकास के उस स्तर पर पहुंचाना जरूरी है जहां मौसम के उतार चढ़ाव का उसपर असर नहीं पड़े और आवश्यक मात्रा में अनाज हमेशा गोदामों में रहे। अगरचे १९५५–१९५९ की अवधि में कृषि की कुल पैदावार में औसतन ७.६ प्रतिशत सालाना वृद्धि हुई थी, सातवर्षीय योजना के प्रथम पांच वर्षों में २ प्रतिशत की वृद्धि भी नहीं हुई और अनाज की उपज में बहुत थोड़ी वृद्धि देखने में आयी।

जीवन ने खुद यह बताया था कि कृषि और औद्योगिक दोनों पैदावार के संबंध में सही दाम निश्चित करने की नीतियों पर अमल करना तथा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की गई सभी कार्रवाइयों का वैज्ञानिक विश्लेषण कितना जरूरी है। इस मार्ग से हर भटकाव का नतीजा यह हुआ कि कम्युनिस्ट निर्माण में बाधाएं पड़ने लगीं।

इसका एक स्पष्ट सबूत सभी कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत, ट्रेड-यूनियन और कोम्सोमोल संगठनों का दो भागों में विभाजन था, एक कृषि के लिए और एक उद्योग के लिए, जिसपर १९६३ के प्रारम्भ में अमल किया गया। इस तबदीली के समर्थकों का विश्वास था कि केन्द्र और प्रांतों दोनों जगह इससे आर्थिक प्रशासन ज्यादा कारगर, उद्देश्यपूर्ण और कार्यसाधक हो जायेगा। लेकिन वे ग़लती पर थे। इस विभाजन से कुछ हद तक उद्योग और कृषि का नाता टूट गया जिससे शहर और देहात के सम्पर्क या मजदूर वर्ग और किसानों के सहयोग को सुदृढ़ करने में कोई सुविधा नहीं हुई।

इन बातों से देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने में कोई सहायता नहीं मिली और इन्हें सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं, २१वीं

और २२वीं कांग्रेसों द्वारा निर्धारित आम लाइन के अनुकूल भी नही कहा जा सकता था। सच तो यह है कि इनसे सोवियत जनगण के कामो मे बाधा पड रही थी। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नये कार्यक्रम मे आर्थिक प्रशासन के प्रति, जनता की सृजनात्मक पहलकदमी के सगठन के प्रति एव नये दृष्टिकोण की माग की गई थी। यही कारण था कि पूरे देश ने केन्द्रीय समिति की अक्तूबर (१९६४) के पूर्णाधिवेशन के फैसला का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। इसके फैसला से पार्टी जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानो तथा पार्टी नेतृत्व के लेनिनवादी सिद्धातो को विकसित करने, सख्ती के साथ उनका पालन करने की पार्टी की दृढ प्रतिज्ञा जाहिर हुई। पार्टी ने आर्थिक प्रबध मे आत्मनिष्ठता की सभी अभिव्यक्तियो की कडी आलोचना की और इस सबध मे की गई गलतियो को ठीक करना आवश्यक माना। पूर्णाधिवेशन ने ख्रुश्चेव को सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव की जिम्मेदारियो से मुक्त कर दिया। उन्होने सोवियत सघ के मत्रिपरिषद के अध्यक्ष पद से भी त्याग पत्र दे दिया। लेओनीद इल्यीच ब्रेज्नेव सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव चुने गये और अलेक्सेई निकोलायेविच कोसीगिन सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमडल द्वारा सोवियत सघ के मत्रिपरिषद के अध्यक्ष चुने गये।

उस समय ब्रेज्नेव ५८ वर्ष के थे। उनका जन्म एक मजदूर परिवार मे हुआ था और एक तकनीकी स्कूल मे भूमि व्यवस्था का अध्ययन करने के बाद वह एक धातुकर्म सबधी सस्थान के स्नातक हुए। १९३१ मे वह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुए। उन्होने कृषि मे काम किया और कारखाने मे इजीनियर भी रह चुके थे। बाद मे वह द्नेप्रोपेत्रोव्स्क मे पार्टी सगठन के प्रधान थे और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान मोर्चे पर राजनीतिक काम कर रहे थे। १९५२ मे वह केन्द्रीय समिति के एक मत्री चुने गये थे।

कोसीगिन का जन्म भी एक मजदूर परिवार मे हुआ था। वह १९०४ मे पैदा हुए और २३ वर्ष की आयु मे कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये। वह भी उच्च शिक्षा प्राप्त है। उनका कार्यकारी जीवन एक सूती कारखाने मे शुरू हुआ जहा वह फोरमैन से उन्नति करके वर्कशाप के निदेशक बने, और उसके बाद कपडा उद्योग के जन कमिसार

हुए। आगे चलकर उन्होंने गोसप्लान (राजकीय नियोजन आयोग) के अध्यक्ष, वित्त मंत्रालय के प्रधान, सोवियत संघ के मंत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष के पद पर काम किया।

ब्रेज्नेव और कोसीगिन कई बार केन्द्रीय समिति में चुने गये और सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य भी रहे हैं। राज्य ने अनेक मौक़ों पर उनकी सेवाओं को उचित मान्यता प्रदान की है और दोनों समाजवादी श्रम के वीर भी हैं।

अक्तूबर, १९६४ में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा लिये गये फ़ैसलों का शीघ्र ही सोवियत संघ के जीवन के सभी पहलुओं पर प्रभाव पड़ा। १९६४ के अंत में पार्टी संगठनों में कृषि और उद्योग का कृत्रिम विभाजन समाप्त कर दिया गया। एकीभूत पार्टी संगठनों के पुनर्स्थापन से पार्टी संगठनों की भूमिका बढ़ी और उनका काम अधिक प्रभावशाली हो गया। कोम्सोमोल संगठनों में भी इसी तरह के परिवर्तन किये गये।

१९६५ के वसंत में श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों के चुनाव हुए। कृषि और औद्योगिक विभागों में सोवियतों के विभाजन का भी अंत कर दिया गया। सोवियतें अपने कार्यकलाप में आम जनगण की सहायता ले सकती हैं। १९६५ में ऐसे स्वैच्छिक सहायकों की संख्या २ करोड़ ३० लाख थी। (१९६१—लगभग २ करोड़)। श्रम-जीवी जनगण के अधिकाधिक व्यापक हिस्सों को देश के रोज़मर्रे के सार्वजनिक मामलों में, राजकीय निकायों और अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं के काम में शरीक करने के प्रयास में कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार ने पार्टी और राज्य नियंत्रण के संगठनों को (जो १९६२ में केन्द्र और प्रांतों दोनों में स्थायी समितियों के रूप में स्थापित की गई थीं) जन नियंत्रण के रूप में पुनर्गठित किया। उनके नाम से ही उनके कार्यकलाप का स्वरूप अधिक स्पष्टतः और पूर्णतः व्यक्त था और उस कार्यकलाप का उद्देश्य था आम जनता को राज्य के प्रशासकीय कार्य में शरीक करना और यह निश्चित करना कि सरकारी फ़ैसलों की तामील पर नियमित नियंत्रण रहे।

जनता के निश्चित समर्थन तथा सार्वजनिक मामलों में शहरों और गांवों दोनों के निवासियों की अधिकाधिक सरगर्मी पर भरोसा करते हुए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार ने आर्थिक संबंधों को दोषरहित बनाने, आर्थिक प्रबंध और आयोजन की

व्यवस्था को सुधारने तथा उत्पादन को तेज करने पर ध्यान केन्द्रित किया। इससे १९६५ मे ही उपलब्ध श्रम शक्ति और रिजर्व का पुन बटवारा किया गया, कृषि और उद्योग दोना के उत्पादन मे वृद्धि हुई और जनगण का जीवन स्तर ऊचा हो गया।

सोवियत अर्थव्यवस्था के सगठन मे समाजवाद के आर्थिक नियमो को और पूरी तरह लागू करने के प्रयासो का मतलब पूजीवादी देशो म बिल्कुल गलत और पूर्वकल्पित ढग से लगाया गया। सोवियत सघ मे जो कुछ होता है उसे पूजीवादी अखबारो ने हमेशा काफी स्थान दिया है। यह आशा करना हिमाकत होगी कि उनम एक वर्गहीन समाज के निर्माण का वर्णन शातचित्त और निर्पेक्ष भाव स किया जायेगा। १९६५ मे पूजीवादी अखबार इस प्रकार की घोषणा करने लगे कि सोवियत सघ "अब वास्तव मे सनसनीखेज आर्थिक पुनर्गठन की देहली पर है।' बहुत से पत्र-पत्रिकाओ ने इस प्रकार के लेख केवल अपने पाठको को भरमाने के लिए छापे, क्योकि वास्तव म किसी को आश्चर्यचकित कर देनेवाली कोई बात नही हुई थी। अगर पूजीवादी अखबारो का उद्देश्य सोवियत सघ के जीवन का सच्चा चित्रण करना होता तो वे आसानी से सोवियत अखबारो, रेडियो और टेलीविजन सामग्री का प्रयोग कर सकते थे।

अनेक वर्षों से सोवियत वैज्ञानिक और आर्थिक अधिकारी नियोजन, दाम निर्धारण और आर्थिक प्रबध की सारी व्यवस्था मे सुधार लाने के ठोस उपायो पर विचार कर रहे थे। लोग योजना बनाने के प्रति किसी सकीर्ण विभागीय दृष्टिकोण के, नियोजन को जरूरत से ज्यादा सीमित रखने के खिलाफ थे। विचाराधीन समस्या थी तकनीकी प्रगति के लिए, प्रत्येक नये आविष्कार को लागू करने के प्रति एक सचमुच राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए सबसे अनुकूल परिस्थितिया मुहैया करना। वैज्ञानिक मामलो तथा सपूर्ण अर्थव्यवस्था के विकास म नालायक प्रशासको द्वारा हस्तक्षेप की कडी निन्दा की गई।

अक्तूबर, १९६४ मे केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के बाद विशेषकर गम्भीर वैज्ञानिक विचार विमर्श शुरू हुआ। इससे पार्टी को देश के आर्थिक जीवन के सगठन के प्रति एक नया दृष्टिकोण तैयार करने मे, सोवियत राज्य के, वर्तमान जरूरतो के अनुकूलतम आर्थिक सिद्धातो की व्याख्या करने मे सहायता मिली।

दिसम्बर, १९६४ में अगले साल की योजना और बजट पर सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन में विचार किया गया। सदस्यों ने आर्थिक परिषद व्यवस्था की त्रुटियों और गत वर्षों में कृषि संबंधी नीति की गलतियों के ठोस उदाहरण दिये। अधिवेशन ने अपने प्रस्ताव तैयार करते समय उनकी आलोचनाओं को ध्यान में रखा।

मार्च, १९६५ में केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने सोवियत कृषि के भावी विकास के संबंध में फ़ौरी कार्रवाइयों पर विचार किया। केन्द्रीय समिति के सभी सदस्यों ने सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों की उत्पादन वृद्धि दरों को तेज़ करने के उद्देश्य से एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया। फ़ैसला किया गया कि देहाती इलाकों में अधिक कृषि मशीनरी मुहैया की जाये, और कई साल पहले से (१९७० तक के लिए) कृषि उपज की वसूली की निश्चित योजनाएं तैयार की जायें।

इन नयी कार्रवाइयों का लाभदायक असर साल पूरा होने से पहले सामने आने लगा। उस साल सूखे से भी कृषि उत्पादन की कुल वृद्धि में कमी नहीं हुई। इतनी वृद्धि इससे पहले कभी नहीं हुई थी। नतीजा यह हुआ कि सामूहिक फ़ार्मों की कुल आय और सामूहिक किसानों की आमदनियों में १६ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

उद्योग में भी मौलिक परिवर्तन किये गये। अब विचाराधीन सवाल यह था कि वर्तमान स्थिति में राजकीय नियोजन के लिए तथा अलग-अलग उद्यमों के काम पर नियंत्रण रखने के लिए किन आंकड़ों को आधार बनाया जाये। इसका पक्का बन्दोबस्त करना था कि फ़ैक्टरियों के पास न तो कच्चे माल, ईंधन और अर्द्ध तैयार सामान का अभाव हो, और न दूसरी ओर इनका ज़रूरत से ज़्यादा उत्पादन हो, और फिर यह भी, कि जिन चीज़ों की मांग न रहे फ़ैक्टरियां उनका उत्पादन बन्द कर दें। यह निश्चित करने के उपायों पर विचार किया गया कि देश के प्रत्येक श्रमिक और प्रत्येक उद्यम का हित पूरे राज्य के हितों के साथ कैसे मिलाया जाये। बीसियों ऐसे सवालों पर वैज्ञानिकों, आर्थिक अधिकारियों, पार्टी कार्यकर्ताओं और ट्रेड-यूनियन कर्मियों ने विचार किया। उनमें से कुछ लोगों का विचार था कि अर्थव्यवस्था का विकास नियोजन के उस दायरे से बढ़ गया था जिसे हिसाब-किताब के परम्परागत संसाधनों तथा पुराने गणना यंत्रों द्वारा चलाया जाता था। उनका कहना था कि नयी प्रविधि

जरूरी है और तब यह बिल्कुल ठीक होगा कि केन्द्र मे प्रत्येक उद्यम की योजनाए तैयार की जाती रहे जिनमे उनके तफसीली कार्यभार और उनके कार्यकलाप का दायरा निश्चित किया जाये।

इस विचार विमर्श मे भाग लेनेवाले अन्य लोगो की राय थी कि देश के विकास की पहले की अवस्थाओ मे जिस प्रकार का कठोर प्रशासकीय नियत्रण अनिवार्य था, यह अब नये ध्येय यानी कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण और इससे सबधित फौरी कार्य के अनुकूल नही रह गया था। वर्तमान स्थिति मे जबकि माल मुद्रा सबध अभी तक जारी थे और देश की अर्थव्यवस्था विकास के बहुत ऊचे स्तर पर पहुच गयी थी, केन्द्रीयकृत नियोजन का काम केवल सर्वोपरि (यानी सबसे महत्वपूर्ण) प्रवृत्तियो तथा सूचकाको की ओर सकेत करना है। विभिन्न प्रकार के दसियो हजारो पदार्थों का विभाजन अब केन्द्रीय आधार पर करना जरूरी नही था। यह आवश्यक हो गया था कि अलग-अलग उद्यमो को अधिक आजादी और जिम्मेदारी दी जाये और चीजो का सगठन इस तरह किया जाये कि उनका अधिक स्थिर स्वार्थ अपने कारखाने को लाभदायक ढग से चलाने मे, उनकी पैदावार के गुण, मात्रा और विविधता मे निहित हो।

इन प्रश्नो के उत्तर की खोज मे सरकार ने प्रयोग के तौर पर १९६४–१९६५ मे अनेक उद्यमो मे नियोजन के नये तरीको और आर्थिक प्रोत्साहनो से काम लिया। पहले इन कारखानो के काम का मूल्याकन सर्वप्रथम उनकी कुल पैदावार के अनुसार किया जाता था, यानी सबसे अधिक ध्यान उनके द्वारा उत्पादित माल के कुल मूल्य की ओर दिया जाता था। अब कुल पैदावार के अलावा नये सूचकाक भी जोडे गये बिक्री और मुनाफे के ध्येय की प्राप्ति भी अब जरूरी थी। इन प्रयोगो के सिलसिले मे मास्को और गोर्की मे अनेक कपडा फैक्टरियो को आज्ञा दी गई कि वे दुकानो के सीधे आर्डर के अनुसार माल पैदा करे। इन फैक्टरियो और दुकानो के मजदूरो और कर्मचारियो को स्वय यह फैसला करने की आज्ञा दी गई कि सूटो के लिए कैसे फैशन और रग के कपडे तैयार करे और कब और कितनी मात्रा मे उन्हे ग्राहको के हाथ बेचा जाये। यह प्रयोग सही साबित हुआ और इन कारखानो का मुनाफा बढा। इसके अतिरिक्त बोनसो की एक विशेष व्यवस्था जारी की गई जिससे मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो के मासिक वेतन का लगभग ४०–५०

प्रतिशत उन्हें नियमित वेतन अनुपूरक के रूप में देना सम्भव हुआ। साल्स्की और लेनिनग्राद की मोटर परिवहन सेवाओं और उकटना की खदानों में भी इसी तरह के परिणाम हासिल हुए। इसका नतीजा यह हुआ कि मशीनों का बेकार पड़ा रहना बन्द हो गया और योजना से काफ़ी अधिक मुनाफ़ा मिलने लगा। वेतन में भी काफ़ी वृद्धि हुई और इसके अलावा उद्यमों के निवेदन पर मुनाफ़े का एक भाग उत्पादन को सुधारने और उसके नवीकरण पर, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों और सेवाओं पर खर्च किया गया।

इन्हीं प्रयोगों तथा योजना व्यवस्था और आर्थिक संगठन को सुधारने के लिए पार्टी के कुल प्रयासों के कारण १९६५ की गर्मियों में पूंजीवादी अख़बार इतने उत्तेजित हो उठे थे।

लेकिन खुद सोवियत जनगण के लिए इन कार्रवाइयों में कोई रहस्यमय या सनसनीखेज़ बात नहीं थी। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सरकार के शांत, विश्वासपूर्ण कार्यकलाप में सोवियत लोगों को इस अडिग संकल्प के सिवा और कोई चीज़ नज़र नहीं आयी कि वर्गहीन समाज के निर्माण को तेज़ करने के लिए समाजवादी व्यवस्था की सुविधाओं से अधिकतम लाभ उठाया जाये। सितम्बर, १९६५ में जब एक नया आर्थिक सुधार लागू किया गया तो देश इसके लिए भली भांति तैयार था और उसने तबदीलियों को आसानी से स्वीकार कर लिया। व्यावहारिक अनुभव से ज़ाहिर हो गया था कि आर्थिक परिषदों को भंग करके मंत्रालय क़ायम करना ज़्यादा लाभदायक था जो अर्थव्यवस्था की अलग-अलग शाखाओं के लिए ज़िम्मेदार हों और जिनका काम एक ही आर्थिक नीति पर, जिस रूप में वह उनकी विशेष शाखाओं में लागू होती हो, अमल करना था। जिन लोगों को यह भ्रम था कि इसका मतलब प्रशासन की उस पुरानी प्रथा की ओर लौटना है जो १९५७ से पहले क़ायम थी, वे ग़लती पर थे। वे सितम्बर, १९६५ में केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के फ़ैसलों की तह तक पहुंचने में असमर्थ रहे थे।

१९६५ की पतझड़ में जो आर्थिक सुधार पहले पहल जारी किया गया, उसका तक़ाज़ा था कि आर्थिक प्रशासन के शाखा और क्षेत्रीय सिद्धांतों को एक दूसरे के अनुकूल और अनुपूरक होना चाहिए और समग्र आर्थिक विकास के अंतर-शाखा क्षेत्रों के संदर्भ में लागू होना चाहिए।

परन्तु स्थिति का एक और पहलू भी था। वह था योजना व्यवस्था मे परिवर्तन, अलग-अलग उद्यमो की पहलक़दमी मे बढ़ाव तथा भौतिक प्रोत्साहन का बढ़ा हुआ महत्व।

नयी व्यवस्था से उद्यमो को लाभदायक कारोबार का रूप धारण करने का प्रोत्साहन मिला। सुधार से पहले मेनेजरो और मजदूरो ने भी श्रम की उत्पादिता मे वृद्धि के लिए अभियान चलाया था ताकि उद्योग की कोई शाखा घाटे पर नही चले और अधिक मुनाफा मिले और सामाजिक उपभोग निधि मे वृद्धि हो। लेकिन सुधार के पहले लागत खाता जारी करना सम्भव नही था। भौतिक प्रोत्साहन के रूप और पैमाना श्रम के अनुसार वितरण-प्रणाली और सोवियत अर्थव्यवस्था की सम्भावनाओ के अनुकूल नही थे। उदाहरण के लिए १९५९–१९६३ मे उद्योग म प्रति व्यक्ति मुनाफे मे ४४ प्रतिशत वृद्धि हुई मगर उद्यम फड केवल १० प्रतिशत बढा, और इस फड से प्रोत्साहन के रूप मे दिये गये बोनस तथा अतिरिक्त प्रतिदान सिर्फ २ प्रतिशत बढे। यह अतर एक ऐसा कारण था जिससे औद्योगिक विकास दर कम होकर १९५९ मे ११४ प्रतिशत और १९६४ मे ७ ३ प्रतिशत हो गयी थी। उद्योग मे श्रम की उत्पादिता मे भी वृद्धि निर्धारित दर से कम हुई। १९६१–१९६५ की अवधि मे इसका औसत ४६ प्रतिशत था जब कि इससे पहले के पाच वर्षों की अवधि मे ६५ प्रतिशत वृद्धि हुई थी।

उद्योग को अब उत्पादन कोष तथा पजी विनियोग का उपयोग अधिक कारगर ढग से करना था और यह निश्चित करना था कि पैदावार उच्च कोटि की हो। यह आर्थिक प्रबध व्यवस्था के जनवादी आधार का विस्तार किये बिना असम्भव था। नये आर्थिक सुधार ने उत्पादन सगठन मे श्रमजीवी जनगण को भाग लेने का ज्यादा व्यापक अवसर प्रदान किया।

इस सबध मे एक महत्वपूर्ण काम यह था कि अर्थशास्त्र के ज्ञान का अधिक प्रचार किया जाये तथा आर्थिक विशेषज्ञो का प्रशिक्षण किया जाये। १९६५ के प्रारम्भ मे स्नातको की कुल सख्या मे अर्थशास्त्र के स्नातको की सख्या ६ प्रतिशत से अधिक नही थी। सरकार ने उच्च शिक्षा के सस्थानो को आदेश दिया कि सभी मुख्य औद्योगिक उद्यमो मे सुशिक्षित आर्थिक विशेषज्ञ मुहैया करने के लिए क़दम उठाये जायें।

जब कम्युनिस्ट पार्टी ने इस आर्थिक सुधार को लागू करने का काम शुरू किया जिसमें कई वर्ष लगे, तो उसने इस क्षेत्र में बहुत अनुभव प्राप्त कर लिया था। वह विशेषज्ञों की बड़ी संख्या की सलाह और सहयोग पर निर्भर कर सकती थी। १९६५ में २० लाख से अधिक औद्योगिक कार्यकर्ता विशिष्ट माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त थे, और ४० लाख से अधिक कम्युनिस्ट उद्योग में काम कर रहे थे। १९२८ में जब समाजवादी उद्योगीकरण अभी शुरू ही हो रहा था तो प्रत्येक सौ मजदूरों पर औसतन केवल चार इंजीनियर और टेकनीशियन थे और इनमें केवल एक स्नातक होता था। सातवें दशक के मध्य तक प्रत्येक सौ मजदूरों पर १४ इंजीनियर और टेकनीशियन थे और इनमें आठ स्नातक थे।

१९६५ में उद्योग में २ करोड़ २० लाख से अधिक मजदूर काम कर रहे थे और इसका मतलब यह था कि सातवर्षीय योजना के प्रारम्भ की तुलना में ५० लाख मजदूरों की वृद्धि हुई थी। उस समय तक अनुभवी दक्ष मजदूरों की बड़ी संख्या जिनका जन्म इस शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था, अवकाश ग्रहण कर चुके थे और उनका स्थान नयी पीढ़ी के लोगों ने ले लिया था जो युद्ध के बाद बड़े हुए थे। इन नौजवान मजदूरों को अभी औद्योगिक अनुभव प्राप्त करना बाक़ी था लेकिन इनमें से अधिकांश को अच्छी स्कूली शिक्षा मिली थी और सार्वजनिक जीवन में वे सक्रिय भाग लेते थे। उदाहरण के लिए, इंजीनियरी उद्योग में आधे नौजवान मजदूरों (२८ वर्ष से कम आयुवाले) ने दसवर्षीय स्कूल पूरा कर लिया था। इनमें ७० प्रतिशत कोम्सोमोल के सदस्य थे और १० प्रतिशत पार्टी सदस्य थे और विशाल बहुमत को उद्योग में काम करने का तीन से पांच वर्ष का अनुभव प्राप्त था। संक्षेप में इन नौजवान मजदूरों में आगे आनेवाले वर्षों के लिए बड़ी सम्भावनाएं मौजूद थीं।

१९६५ में जो आर्थिक प्रबंध व्यवस्था तैयार की गई उसमें औद्योगिक और कृषि उत्पादन दोनों में अधिक आर्थिक प्रोत्साहन का बन्दोबस्त था। उसने सिर्फ़ उद्यम मेनेजरों को ही नहीं बल्कि आम श्रमजीवी जनगण को भी अपना प्रयत्न तेज करने पर प्रोत्साहित किया ताकि यह निश्चित किया जा सके कि समस्त पैदावार उच्च कोटि की हो और यह कि उद्यम अधिकाधिक मुनाफ़ा कमानेवाले कारोबार बन जायें। सातवर्षीय योजना के अंतिम वर्ष ने साबित कर दिया कि ये क़दम ठीक समय पर उठाये

गये थे। १९६५ के समग्र आर्थिक सूचकाक १९६३ और १९६५ की तुलना मे काफी ज्यादा थे।

१९६४ के अत और १९६५ के प्रारम्भ मे मास्को की अगुआ फैक्टरियो ने यह बीडा उठाया कि हर प्रकार की वस्तु से, जिसका उत्पादन किया जाये, मुनाफा हासिल हो। इसके थोडे ही दिनो बाद मास्को और लेनिनग्राद के अगुआ श्रमिक दस्तो ने वैज्ञानिको के सहयोग से इस बात का बीडा उठाया कि ३–४ साल की अवधि के भीतर मुख्य उत्पादन का सिलसिला अतर्राष्ट्रीय स्तरो तक पहुच जायेगा। ये महत्वपूर्ण सुझाव व्यक्तिगत आविष्कारको या दलो ने नही बल्कि पूरी की पूरी फैक्टरियो और उद्यम समूहो ने पेश किये थे। ऐसा अकारण ही नही हुआ। उनके सुझाव जिनकी तैयारी और जाच सामूहिक आधार पर की गई थी, व्यापक पैमाने पर कारगर थे क्योकि उनमे इन फैक्टरियो, अगुआ दस्तो और वर्कशापो के श्रेष्ठतम अनुभव से फायदा उठाया गया था। इन अगली पक्ति के उद्यमो मे मजदूर सामूहिक रूप से अपनी उत्पादन योजनाओ पर नजरसानी करते और सुधारते तथा उद्यम कार्यक्रमो मे दिये गये काम को पूरा करने के बाद ऐसे सागठनिक और तकनीकी कदम उठाते जिनका उद्देश्य कार्यक्रम की तामील मे आसानी पैदा करना था। अपनी ओर से प्रबधकर्ताओ ने केवल साधारण सहयोग और नैतिक समर्थन की ही नही बल्कि इस बात की गारटी भी की कि समाजवादी प्रतियोगिता अभियान मे भाग लेनेवाले दस्तो को जितने अतिरिक्त कच्चे माल, मशीनरी और सामान की आवश्यकता होगी, सब मुहैया किया जायेगा।

१९६५ तक ३ करोड मजदूर तथा प्रशासकीय अमला इस उच्चतम प्रतियोगिता अभियान यानी कम्युनिस्ट श्रम आन्दोलन मे भाग ले रहे थे। जनता के इस सृजनात्मक कार्यकलाप और आर्थिक प्रबध व्यवस्था के प्रति इस नये दृष्टिकोण के कारण सोवियत अर्थव्यवस्था के विकास की रफ्तार तेज हो गई। औद्योगिक विकास दर ८६ प्रतिशत तक पहुच गयी जो १९६४ के सूचकाक से काफी अधिक थी। सामूहिक और राजकीय फार्मो की कुल पैदावार भी उस साल के सूखे के बावजूद देश के इतिहास मे सबसे अधिक थी (जिसका सबसे बडा कारण पशुपालको की सफलताए थी)।

१९६५ की गर्मियो मे अखबारो, रेडियो और टेलीविजन ने यह घोषणा शुरू कर दी कि सातवर्षीय योजना के ध्येय अपने नियत समय से पहले

ही पूरे हो गये हैं। समय से पूर्व ध्येय को पूरा करनेवालों में सबसे आगे थे लेनिनग्राद के बिजली इंजीनियर, द्नेप्रोपेत्रोव्स्क प्रदेश के धातुकर्मी और तातार और बाशकिर जनतंत्रों के तेल मजदूर। उस साल देश महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में नाजी जर्मनी पर सोवियत संघ की विजय की २०वीं जयंती मना रहा था। मास्को, लेनिनग्राद, कीयेव, वोल्गोग्राद, सेवास्तोपोल तथा ओदेसा के वीर नगरों और ब्रेस्त के वीर गढ़ को देश के उच्चतम पदक, सैनिक पदक, लेनिन पदक तथा स्वर्ण सितारा पदक प्रदान किये गये। पायनियरों तथा कोम्सोमोल सदस्यों के अनेक दस्तों ने प्रसिद्ध युद्ध स्थलों की यात्रा की। इस उपलक्ष्य में शहरों और गांवों में कई नये संग्रहालय खोले गये और कई यादगारें कायम की गईं। देश भर में लोगों ने उन वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने १९४१ से १९४५ के वर्षों में नाजी आक्रमणकारियों से अपनी सोवियत जन्मभूमि की आजादी और स्वाधीनता की रक्षा की थी। पुराने कारनामों की याद ताजा होने से सोवियत जनगण को नयी सफलताएं प्राप्त करने में प्रेरणा मिली। सोवियत जनगण ने देखा कि उनकी शांतिपूर्ण श्रम उपलब्धियां तथा आर्थिक योजनाओं की सफल पूर्ति ही उनके देश के और आगे बढ़ने की, उसकी प्रतिरक्षा क्षमता की और पूरे संसार में शांति की रक्षा की गारंटी है।

अगस्त, १९६५ में मास्को के श्रमजीवी जनगण ने ही सर्वप्रथम नियत समय से पहले कुल औद्योगिक उत्पादन का सातवर्षीय योजना कार्यक्रम पूरा किया। उनके बाद शीघ्र ही लेनिनग्राद, स्वेर्दलोव्स्क प्रदेश तथा आगे चलकर देश के अन्य भागों में भी औद्योगिक मजदूरों और दफ्तरी कर्मचारियों ने इसी तरह की सफलताएं प्राप्त कीं। सातवर्षीय योजना अर्थव्यवस्था की पूरी की पूरी शाखाओं तथा पूरे के पूरे क्षेत्रों और जनतंत्रों के लिए इसी आशावादी वातावरण में समाप्त हुई। इस प्रकार निश्चित कठिनाइयों और सोवियत संघ की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ़ बनाने (खासकर कैरीबियन संकट तथा वियतनाम में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा युद्ध छेड़ दिये जाने के कारण) के हेतु सैनिक खर्चों में अनिवार्य वृद्धि के बावजूद, सोवियत संघ के आर्थिक विकास ने बड़ी प्रगति की।

१ जनवरी, १९६६ श्रमजीवी जनगण के लिए दो समाचार लायी। पहला समाचार यह था कि उस दिन से देहाती इलाकों में चीनी, मिठाई, सूती कपड़े, बुनी हुई पोशाकों और कुछ अन्य सामानों का दाम कम करके उसी स्तर

पर ले आया जायेगा जो शहरो मे प्रचलित है (इसका महत्व समझने के लिए यह ध्यान मे रखना जरूरी है कि उन दिनो लगभग आधी आबादी देहातो मे रहा करती थी)। दूसरी घटना का सबध केन्द्रीय समिति के इस फैसले से था कि अनेक फैक्टरियो द्वारा पेश किये गये इस सुझाव का समर्थन किया जाये जिसमे सामान को किफायत से खर्च करने मे प्रतियोगिता सगठित करने का आह्वान किया गया था।

सोवियत स्त्री और पुरुष जो एक ऐसे देश मे बडे हुए है जहा अर्थव्यवस्था नियोजित है और उत्पादन के साधन सारे समाज की सम्पत्ति है, भली भाति जानते हैं कि अगर सामान को किफायत से इस्तेमाल किया जाये तो कितनी बचत हो सकती है। कडी किफायत की नीति पर अमल करने से अतिरिक्त धातु, ईंधन और कच्चे माल की बचत हो सकती है जिससे आर्थिक विकास का आशिक आधार मुहैया हो सकता है तथा आम खुशहाली मे वृद्धि हो सकती है। इसी को ध्यान मे रखकर श्रमजीवी जनगण ने १९६६–१९७० की अवधि के लिये नये पचवर्षीय योजना पर विचार-विमर्श शुरू किया। जाहिर है कि काफी ध्यान गत सात वर्षों मे प्राप्त अनुभव तथा परिणामो के विश्लेषण को दिया गया। यह वही समय था जब नये लक्ष्याक तैयार किये जा रहे थे। ये सवाल सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की अगली काग्रेस मे भी विचार-विमर्श का केन्द्रबिन्दु थे।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस का उद्घाटन २९ मार्च, १९६६ को क्रेमलिन के काग्रेस प्रासाद मे हुआ। इसमे लगभग १ करोड २५ लाख कम्युनिस्टो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

लगभग ५ हजार प्रतिनिधि देश के कोने कोने से मास्को मे एकत्रित हुए थे। पार्टी के सर्वश्रेष्ठ सदस्य जो देश का गौरव थे, सोवियत सघ की राजधानी मे इसलिए आये थे कि मिलकर आगे के कार्यभारो का पुनर्वेक्षण करे तथा सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और समस्त सोवियत समाज के राजनीतिक और आर्थिक काम की मुख्य प्रवृत्तियो को निर्धारित करें। केन्द्रीय समिति की मुख्य रिपोर्ट ब्रेज्नेव ने पेश की और कोसीगिन ने १९६६–१९७० की अवधि के सोवियत आर्थिक विकास के लिए पचवर्षीय योजना के प्रस्तावित निर्देशो की घोषणा की।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा उठाये गये कार्यभार का समस्त प्रतिनिधियो ने सर्वसम्मति से समर्थन किया।

पूरी पार्टी की ओर से उन्होंने दो वर्ष पहले केन्द्रीय समिति के अक्तूबर पूर्णाधिवेशन द्वारा लिये गये फ़ैसलों के बुनियादी महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सोवियत समाज के जीवन में कम्युनिस्ट पार्टी की राजनीतिक और संगठनात्मक भूमिका में वृद्धि की ओर ध्यान आकृष्ट किया। नेतृत्व की कार्यशैली तथा कार्यविधि में आत्मनिष्ठ ग़लतियों का सुधार करने के लिए जो सुझाव रखे गये थे, वे भी सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये। कांग्रेस ने १९६५ में हुए केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशनों द्वारा स्वीकृत फ़ैसलों का भी सर्वसम्मति से समर्थन किया जिनसे युक्तिसंगत ढंग से उन त्रुटियों को प्रकट करने में सहायता मिली थी जो समाजवादी अर्थव्यवस्था के विकास में बाधक हो रही थीं। इन फ़ैसलों ने आर्थिक प्रबंध कार्य के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाया।

कांग्रेस २९ मार्च से ८ अप्रैल, १९६६ तक जारी रही। इसका सारा काम कारोबारी ढंग से और सिद्धांतयुक्त वातावरण में पूरा हुआ। प्रतिनिधियों ने विगत सात वर्षों में सोवियत अर्थव्यवस्था की समुचित उपलब्धियों की बड़ी प्रशंसा की। इन सात वर्षों के दौरान पूरे अर्थ व्यवस्था के मुख्य कोषों में ९० प्रतिशत और उद्योग के कोष में १०० प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी। औद्योगिक उत्पादन की मात्रा में ८४ प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि योजना में केवल ८० प्रतिशत की बात की गई थी। यद्यपि सामूहिक और राजकीय फ़ार्मों के उत्पादन सूचकांकों को पूरा करने में कुछ कमी रह गई थीं, मगर इस क्षेत्र में भी कुल उन्नति शानदार रही। ऐतिहासिक दृष्टि से, सोवियत संघ के पास १९५९ में जो आर्थिक और प्रतिरक्षा क्षमता मौजूद थी, उसके निर्माण में ४० साल लग गये, और अगर युद्ध के वर्षों को निकाल दिया जाये तो भी ३२ वर्षों की कड़ी मेहनत लगी, जबकि १९५९ से १९६५ के सात वर्षों में सोवियत संघ के श्रमजीवी जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन में इस उपलब्धि को सफलतापूर्वक दो गुना कर दिया था। जिस काम में कभी ३२ वर्ष लगे थे, उसमें अब केवल सात वर्ष लगे। कम्युनिस्ट निर्माण की अवस्था में सोवियत आर्थिक विकास की गति का इससे अन्दाजा किया जा सकता है।

इस परिमाणात्मक वृद्धि से ज्यादा शानदार इसी अवधि में अर्थव्यवस्था की गुणात्मक प्रगति थी। उदाहरण के लिए, देश के ईंधन साधनों में निर्णायक तत्व अब तेल और गैस थे। गैस उद्योग पर सातवर्षीय योजना

की पूरी अवधि में जितना खर्च किया गया था, अब उससे दोगुनी आमदनी हो रही थी। अब देश में रेल परिवहन में ८५ प्रतिशत डीजल और बिजली के इंजनों का प्रयोग होता था जबकि १९५९ में इनका प्रयोग केवल २६.४ प्रतिशत था। सश्लेषित पदार्थों से बनी चीजों का उत्पादन अभूतपूर्व गति से बढ रहा था और सातवें दशक के मध्य तक रेडियो इंजीनियरी और इलेक्ट्रोनिकी देश के इंजीनियरी उद्योग पर हावी हो गये थे। उद्योग की तीन सबसे किफायतवाली शाखाओं – बिजली उत्पादन, रसायन तथा इंजीनियरी उद्योग का उत्पादन १९६५ में कुल औद्योगिक उत्पादन का ३५ प्रतिशत था जबकि १९५८ में २७ प्रतिशत था। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति जो अतरिक्ष में सोवियत सघ की ऐतिहासिक उपलब्धियों में मूर्तिमान हो चुकी थी, सोवियत जीवन के सभी क्षेत्रों में शानदार उपलब्धियों को साथ लायी थी।

सैकडों मिसालें देकर बताया जा सकता था कि कृषि और उद्योग से शारीरिक श्रम का किस हद तक त्याग किया जा रहा था, अर्थव्यवस्था में स्वचालित उत्पादन लाइनें तथा अकभित मशीनें जारी की जा रही थीं, जेट विमानों की बदौलत विमान यात्री सेवा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा रहे थे और तेज रफ्तारवाले सोवियत जहाज समुद्रों पर चल रहे थे।

सातवर्षीय योजना के शुरु तक सोवियत व्यापारिक बेडा (टनभार की दृष्टि से) ससार में बारहवां था और उस समय तक विश्वयुद्ध का प्रभाव, जिसके दौरान इसके आधे से अधिक जहाज नष्ट हो गये थे, अभी देखने में आता था। लेकिन १९६५ तक सोवियत व्यापारिक बेडा छठे स्थान पर पहुच गया था इसके प्रत्येक दस में आठ जहाजों का निर्माण सातवे दशक में किया गया था। सोवियत ध्वजयुक्त आधुनिक जलयान अब ९८ देशों की बन्दरगाहों में दिखाई देने लगे थे।

रिहायशी और औद्योगिक इमारतों का निर्माण भी उस समय बडी तेजी से हो रहा था। गोर्की, नोवोसिबीर्स्क, ताशकन्द, बाकू और खारकोव अब देश के प्रमुख प्रशासकीय तथा औद्योगिक केन्द्रों जैसे मास्को, लेनिनग्राद और कीयेव के टक्कर के हो चुके थे जिनमें से प्रत्येक की आबादी सातवर्षीय योजना से पहले ही १० लाख से अधिक हो चुकी थी। सोवियत सघ के नकशे पर १७८ नये नगरों का उदय हो चुका था जिनमें सबसे प्रसिद्ध बेलोरूस में सोलीगोर्स्क, लिथुआनिया में नेरिंगा, रोस्तोव के

नज़दीक त्सिमल्यांस्क, क़ज़ाख़स्तान में गाव्रतिस्क, आदि थे। इनके अलावा उराई, जेलेज्नोगोर्स्क-इलीम्स्की और नोवोचेबोक्सार्स्क, आदि का तो कहना ही क्या जिनके बारे में अभी हाल ही में कम ही लोग जानते थे। लेकिन इसी तरह कुछ वर्ष पहले अंगार्स्क, ब्रात्स्क और दिव्नोगोर्स्क भी बहुत प्रसिद्ध नहीं थे, हालांकि १९६५ तक वे नये होने पर भी सोवियत साइबेरिया के प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र बन चुके थे। इन तीनों शहरों का भविष्य बहुत शानदार है: उराई, त्यूमेन इलाक़े में विशाल तेल क्षेत्र है; जेलेज्नोगोर्स्क-इलीम्स्की के निकट पूर्वी साइबेरिया के जंगलों में छोटी कोर्शुनीखा नदी के तट पर बहुत कच्चा लोहा पाया गया। नोवोचेबोक्सार्स्क चुवाशिया में, जो पहले केवल कृषि क्षेत्र था, रसायन उद्योग का एक नया केन्द्र बन गया।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, सातवर्षीय योजना के सभी ध्येय पूरे नहीं हुए, मगर मुख्यतया उन सात वर्षों का दौर प्रगति का दौर था। सातवर्षीय योजना की कल्पना कम्यूनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण में पहले क़दम के रूप में की गई थी। सब मिलाकर देश की आर्थिक और प्रतिरक्षा क्षमता में वृद्धि हुई थी और लोगों का जीवन-स्तर बराबर ऊंचा होता गया था।

१९५९–१९६५ की अवधि के दौरान कार्यसप्ताह घटा दिया गया, कारख़ानों और दफ़्तरों दोनों जगह छः और सात घंटे कार्य दिवस लागू किया जाने लगा, जबकि उद्योग में औसत मासिक वेतन ७८ से ९५ रूबल तक हो गया था। सामाजिक उपभोग कोष से मिलनेवाले वेतन और भत्ते में भी वृद्धि हुई थी। अगर इन वृद्धियों को जोड़ा जाये तो वास्तविक वेतन १०४ से १२८ रूबल मासिक औसत तक पहुंच गया था। १९६४ में सामूहिक किसानों के लिए पेंशन की व्यवस्था जारी की गई, जिसका मतलब यह था कि सभी सोवियत नागरिकों को—स्त्रियों के लिए ५५ वर्ष और पुरुषों के लिए ६० वर्ष की आयु के बाद पेंशन मिलने लगी थी (कई पेशे ऐसे भी थे जिनमें पेंशन पाने की आयु और कम थी)। १९६५ में ३ करोड़ १० लाख नागरिकों को पेंशन मिल रही थी। १९५८ के मुक़ाबले १ करोड़ २० लाख की वृद्धि हुई थी।

इसी अवधि में शहरों और देहात में १ करोड़ ७० लाख फ़्लैट और निजी घरों का निर्माण हुआ जिसका मतलब यह था कि देश के रिहायशी
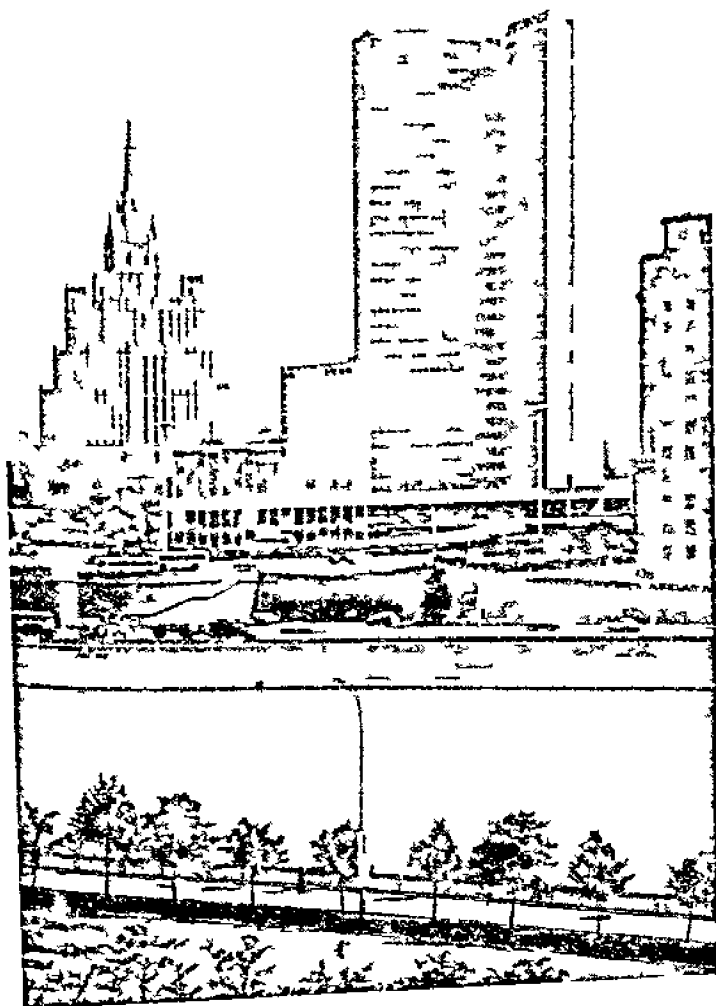
मास्को मे परस्पर आर्थिक सहायता परिषद का भवन

मकानों में ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई। अधिक मात्रा में आधुनिक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही थीं और १९६५ तक मास्को के प्रत्येक १०० निवासियों में, ८३ के फ़्लैटों में गुसलख़ाने थे, ८८ के यहां घर गर्माने की केन्द्रीय व्यवस्था थी और ९५ के घरों में पानी के नल थे।

हाल के वर्षों की उपलब्धियों की प्रशंसा करने के साथ-साथ सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने उन त्रुटियों पर गहरी चिन्ता प्रकट की जो सोवियत आर्थिक विकास में कांग्रेस से पहले के सात वर्षों के दौरान सामने आयी थीं। नयी पंचवर्षीय योजना पर बहस करते हुए इस बात पर ध्यान दिया गया कि पिछली ग़लतियों से सबक़ लिया जाये। योजना की तैयारी के सारे प्रारम्भिक काम में, उसके मसविदे में संशोधन करते या कुछ जोड़ते समय लेनिन के इस निर्देशन को सामने रखा गया कि "कांग्रेस में आर्थिक निर्माण का व्यावहारिक अनुभव लाओ जिसपर पार्टी के तमाम सदस्यों के संयुक्त श्रम और संयुक्त प्रयास द्वारा विचार कर लिया गया है और जिसका ध्यानपूर्वक विश्लेषण कर लिया गया है"।*

अब तक की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत जनगण का आह्वान किया कि वर्गहीन समाज की दिशा में १९६६–१९७० की अवधि में एक और महत्वपूर्ण क़दम उठाया जाये। २३वीं कांग्रेस में कहा गया – नयी पंचवर्षीय योजना का मुख्य आर्थिक कार्यभार है विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियों का पूरा उपयोग करके तथा समस्त सामाजिक उत्पादन के उद्योगीकरण और कारगरता में वृद्धि करके उद्योग का काफ़ी विस्तार करना तथा कृषि में विकास की उच्च तथा सुस्थिर दर प्राप्त करना और इस तरह इस बात की सम्भावना पैदा करना कि जनगण का जीवन-स्तर काफ़ी ऊंचा हो और समस्त सोवियत जनगण की भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएं और अधिक पूरी की जा सकें।

साधनों का बड़ी मात्रा में पुनर्विभाजन करने का फ़ैसला किया गया ताकि उपभोग के मालों का उत्पादन बढ़ाया जा सके, भारी और हलके उद्योगों की विकास दर के अंतर को बड़ी हद तक कम किया जाये, तथा

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३०, पृष्ठ ३७९

सार्वजनिक सेवाओ की ओर अधिक ध्यान दिया जाये। अर्थव्यवस्था मे ३,१० अरब रूबल का मूल विनियोग होना था जो पिछले पाच वर्षों की तुलना में ५० प्रतिशत अधिक था। औद्योगिक उत्पादन म ५० प्रतिशत वृद्धि तथा कृषि उत्पादन मे २५ प्रतिशत वृद्धि होनी थी। सामूहिक और राजकीय फार्मों के मुख्य उत्पादन कोष को दो गुना करना था। ऐसा प्रबध किया गया कि इस क्षेत्र म श्रम की उत्पादिता म उद्योग की तुलना म अधिक वृद्धि दर सुनिश्चित हो जाये। इससे यह आशा की जाती थी कि शहर और देहात की जीवन तथा कार्य की स्थितिया म मौलिक अतर के उन्मूलन की रफ्तार तेज की जा सकेगी और इस तरह देहाती और शहरी आबादिया की भौतिक और सास्कृतिक सुविधाओ के बीच की खाई को पाटने की दिशा मे यह एक बडा कदम उठाया जा सकेगा।

पार्टी ने यह ध्येय निर्धारित किया कि १९७० तक राष्ट्रीय आय मे ३८-४१ प्रतिशत वृद्धि हो, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय ३० प्रतिशत बढे, निम्नतम वेतन ६० रूबल हो और कार्य सप्ताह कम करके पाच दिन का कर दिया जाये। इसका भी आयोजन किया गया कि शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओ, सार्वजनिक सुविधाओ, खुदरा बिक्री की व्यवस्था मे सुधार करने, तथा रिहायशी गृह-निर्माण कार्यक्रम मे और भी विस्तार करने के लिए बहुत स कदम उठाये जायें।

सक्षेप मे १९६६-१९७० की अवधि की पचवर्षीय योजना मे कृषि, उद्योग, परिवहन व्यवस्था या निर्माण प्रयोजनाओ, विज्ञान या वैदेशिक आर्थिक नीति, श्रम साधन अथवा साइबेरिया और सुदूर पूर्व के आर्थिक विकास के सबध मे जो भी कार्यभार पेश किये गये थे उन सब का अतिम उद्देश्य सोवियतो की धरती की लगातार प्रगति और समृद्धि था।

आठवी पचवर्षीय योजना को दुनिया के अखबारो मे काफी स्थान दिया गया। १९१७ के फौरन बाद बोल्शेविको और सर्वहारा अधिनायकत्व पर और फिर पचवर्षीय योजनाओ, सामूहिक फार्मों और तथाकथित "लौह आवरण" पर जिस तरह कीचड उछाला गया, उसकी कल्पना करना कठिन है। अब फिर उसी तरह की बातो ने जोर पकडा मगर यह उल्लेखनीय है कि अब इन बातो मे "यथार्थ" और "कारोबारी" जैसे शब्दो की बहुतायत थी, और उनमे "सुविचारित प्रस्थापनाए" जैसे

वाक्यांश भी नज़र आते थे। संयुक्त राज्य अमरीका के एक प्रवक्ता ने लिखा: "नयी योजना ऐसी नहीं कि पश्चिम हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे।" एक ब्रिटिश अख़बार ने इसका उल्लेख किया कि "नयी पंचवर्षीय योजना विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन तथा उन देशों के लिए जिन्होंने हाल ही में स्वतंत्रता प्राप्त की है, नमूने का काम देती है।"

स्वभावतः सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस ने आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्राष्ट्रीय महत्व का मूल्यांकन बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण से किया। "निर्देशों में दिये हुए लक्ष्यों की पूर्ति विश्व शांति और सुरक्षा को सुदृढ़ करने तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लेनिनवादी सिद्धांत को व्यापक रूप से लागू करने की दिशा में एक भारी योगदान होगी।" आगे चलकर कांग्रेस के प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि "पंचवर्षीय योजना की पूर्ति इस बात का ताज़ा सबूत मुहैया करेगी कि सोवियत जनगण बिरादराना समाजवादी देशों, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा तथा विश्व मुक्ति आन्दोलन के प्रति अपना अंतर्राष्ट्रीय दायित्व पूरा कर रहे हैं।"

२३वीं कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी की एकता तथा संघर्षशीलता, जनगण के साथ उसके गहरे, अटूट संबंध का प्रमाण थी। पार्टी नियमावली में कई परिवर्तन किये गये जिनका उद्देश्य पार्टी की सदस्यता को और भी अधिक गौरव की बात बनाना, पार्टी संगठनों की पहलक़दमी को तेज़ करना, और प्रत्येक पार्टी सदस्य को अपने विशेष संगठन तथा पूरी पार्टी के काम के लिए अधिक जिम्मेदार बनाना था। यह भी निश्चय किया गया कि केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमंडल का नाम बदल कर केन्द्रीय समिति का राजनीतिक ब्यूरो (पोलिट ब्यूरो) कर दिया जाये। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव के पद का नाम प्रथम सचिव के बजाय फिर महासचिव बना।

कांग्रेस द्वारा निर्वाचित केन्द्रीय समिति ने पोलिट ब्यूरो के सदस्य तथा उम्मीदवार सदस्य चुने। पोलिट ब्यूरो में ११ सदस्य थे: ब्रेज्नेव, किरिलेंको, कोसीगिन, माज़ुरोव, पेल्शे, पोदगोर्नी, पोल्यांस्की, शेलेपिन, शेलेस्त, सूस्लोव तथा वोरोनोव। ब्रेज्नेव सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव चुने गये।

यह कहना सही होगा कि समस्त जनगण ने इस कांग्रेस के काम में भाग लिया। कांग्रेस के उद्घाटन के उपलक्ष में फैक्टरियों, राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों, निर्माण स्थलों, खदानों, तेलकूपों तथा अन्य संस्थानों ने, उस समय तक की स्थापित परम्परा के अनुसार, अपने लिए उच्च ध्येय निश्चित किये, विशेष पालियां संगठित कीं, तथा जी जान से कम्युनिस्ट श्रम आन्दोलन में शरीक हो गये। कांग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों ने लोगों को आगे के कार्यभार पूरा करने में और अधिक प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया।

१६६६ में अखिल संघीय लेनिन कोम्सोमोल की १५वीं कांग्रेस मास्को में हुई। कोम्सोमोल के २ करोड़ ३० लाख सदस्यों के प्रतिनिधि क्रेमलिन में जमा हुए। उन्हें बहुत सी बातों और विषयों पर विचार करना था। पिछली कांग्रेस चार साल पहले हुई थी। तब से १५,००,००० कोम्सोमोल सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये थे और लगभग ५ लाख नवयुवकों और नवयुवतियों को उनकी जिला कोम्सोमोल समितियों ने सबसे तात्कालिक महत्व की निर्माण आयोजनाओं पर काम करने के लिए भेजा था। उन्होंने रेलवे लाइनें बिछाने में, बिजलीघरों और रासायनिक कारखानों के निर्माण में, सांस्कृतिक केन्द्र और अस्पताल खड़ा करने में हाथ बटाया था और सुदूर उत्तर में, साइबेरिया और सुदूर पूर्व में खनिज खजाने को खोदकर बाहर लाने में बड़े साहस का परिचय दिया। कम्युनिस्ट निर्माण में सक्रिय सहयोग के लिए ब्रात्स्क, वोल्ज्स्की, क्रिवोई रोग, नोरील्स्क, ज्दानोव और रूदनी के कोम्सोमोल संगठनों को १६६६ में श्रम की लाल पताका का पदक प्रदान किया गया।

सारे देश के कोम्सोमोल सदस्यों ने अपने श्रेष्ठतम सदस्य कांग्रेस में भेजे। ऐसा ही एक प्रतिनिधि गोर्बाचोव था जिसने कालूगा नगर की कोम्सोमोल जिला समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से अबाकान-ताइशेत रेलवे के निर्माण में भाग लिया था। उसने अनेक प्रकार के काम किये थे। किसी समय वह अकुशल मजदूर रह चुका था, फिर उसने खुदाई मजदूर, लकड़हारे और कंक्रीट बिछानेवाले का काम भी किया था। एक प्रथम श्रेणी के मजदूर की हैसियत से उसे रहने के लिए शहर में एक फ्लैट दिया गया और एक स्थायी, निश्चित नौकरी। सभी मानते थे कि उसने हर तरह की कठिन कार्यस्थिति में अपनी दृढ़ता का परिचय देकर इन सुविधाओं का

अधिकार प्राप्त किया था। एकमात्र गोर्बाचोव इसको स्वीकार करने का विरोधी था और एक बार फिर वह साइबेरियाई जंगलों में पहुंच गया जहां ऊस्त-इलीम पनबिजलीघर को मेन लाइन से जोड़ने के लिए एक रेलवे का निर्माण किया जाना था।

प्रतिनिधियों में एक था करास्योव। १९६२ में २४ वर्ष की आयु में उसे रियाज़ान के समीप एक पिछड़े हुए सामूहिक फ़ार्म का प्रधान बनाकर भेजा गया। इस सामूहिक फ़ार्म में बीज, खाद और कृषि मशीनरी का अभाव था। लेकिन इस नौजवान कोम्सोमोल सदस्य ने इसमें नयी जान डाल दी और फ़ार्म को अधिक कार्यकुशलता के आधार पर पुनः संगठित किया। थोड़े ही दिनों में स्थिति सुधर गई तथा काम के पारिश्रमिक की दर काफ़ी ऊंची हो गई। नवयुवक अध्यक्ष भोर से सांझ तलक काम में जुटा रहता था। लगता था कि उसे विश्राम का तनिक समय नहीं मिलता था। लेकिन १९६५ में उसे "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" द्वारा संगठित एक कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला।

नोवोसिबीर्स्क के प्रतिनिधियों में एक नवयुवक था भौतिकी तथा गणित विज्ञानों का डाक्टर तथा नवयुवक वैज्ञानिकों की अखिल संघीय परिषद का अध्यक्ष ज़ुरावल्योव। वेल्कोविच जो देश की सर्वश्रेष्ठ रसोइया मानी जाती थी रीगा से इस कांग्रेस में भाग लेने आयी तथा शतरंज की नारी विश्व चैम्पियन गपरिन्दाश्विली, जो "शतरंज की बिसात की रानी" कही जाती थी, त्बिलीसी से आयी।

कुल मिलाकर ४ हज़ार प्रतिनिधि मास्को में एकत्रित हुए। उनमें विभिन्न जातियों के लोग थे। उनका शिक्षा स्तर, उनकी दिलचस्पियां, स्वभाव और अनुभव एक दूसरे से बहुत भिन्न थे। लेकिन इन सबसे महत्वपूर्ण वह चीज़ थी जो उनको एकताबद्ध करती थी। उनके विचार और सिद्धांत एक थे। वे कम्यूनिस्ट पार्टी का संघर्षशील रिज़र्व दस्ता थे। इसी लिए उन्होंने जिस केन्द्रीय विषय पर विचार किया वह था नौजवानों की कम्यूनिस्ट शिक्षा-दीक्षा। इस संबंध में प्रतिनिधियों ने इस बात पर विचार किया कि कम्यूनिस्ट की हैसियत से अपने काम, अपने अध्ययन तथा प्रशिक्षण में बेहतरीन परिणाम कैसे प्राप्त किये जा सकते हैं। उन्होंने इस बात पर विचार किया कि आर्थिक निर्माण में और देश के सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में कोम्सोमोल की भूमिका कैसे बढ़ाई जाये।

कांग्रेस ने पार्टी नियमावली में इस नयी धारा को जोडने का समर्थन किया कि २३ वर्ष से कम आयु के लोग कम्युनिस्ट पार्टी में तभी लिये जायेंगे जब कोम्सोमोल उनकी सिफारिश करेगा। इसका मतलब यह था कि पार्टी में दाखिला चाहनेवालो से अब ज्यादा कडी शर्तों की माग की जा रही थी और कम्युनिस्ट पार्टी के रिजर्व दस्ते के रूप मे कोम्सोमोल की भूमिका का वजन बढ गया था।

इस सबध मे यह बात उल्लेखनीय है कि १९६६ मे २६ वर्ष से कम आयु के लोगो की सख्या आबादी मे लगभग आधे तक पहुच गयी थी। इस पीढी के लोगो को महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध का ज्ञान केवल पुस्तको फिल्मो या बडे बूढो की कहानियो द्वारा ही हुआ था और अधिक सम्भव यही है कि उन्हे अन्न राशनिंग की बाबत कुछ याद ही न हो। एक देश मे समाजवादी निर्माण की विशेष समस्याए और स्थितिया उनके लिए केवल इतिहास का अग भर थी।

लेकिन निकट भविष्य मे इसी पीढी के लोगो को औद्योगिक उद्यमो तथा सामूहिक फार्मों के प्रबध की जिम्मेदारी अपने कधो पर लेनी थी, अनुसधान सस्थानो मे मुख्य भूमिका अदा करनी थी तथा देश का नेतृत्व करना था। इसका मतलब यह था कि जो लोग इस पीढी की शिक्षा-दीक्षा कर रहे तथा उसको कम्युनिस्ट समाज के निर्माता के रूप मे अपनी भूमिका अदा करने के लिए तैयार कर रहे थे, उनके कधो पर एक बडी भारी जिम्मेदारी आ गयी थी। यही कारण है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी कांग्रेस और फिर १५वी कोम्सोमोल कांग्रेस के कामो मे विचारधारात्मक समस्याओ की ओर विशेष ध्यान दिया गया। एक और बात जिसकी वजह से श्रमजीवी जनगण ने राजनीतिक काम मे बडी दिलचस्पी ली, यह थी कि महान अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती करीब आ रही थी। यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि लोग बार-बार १९१७ से एकत्रित पचास वर्षों के अनुभव का अध्ययन करें, उससे लाभदायक सबक ले, एक नये समाज की उत्पत्ति को निर्धारित करनेवाले मौलिक नियमो का ज्ञान प्राप्त करें और इस प्रकार इस योग्य बनें कि कम्युनिज्म के खुले और छिपे सभी शत्रुओ को, विभिन्न प्रकार के सशोधनवादियो तथा कठमुल्लाओ को निर्णयात्मक रूप से पराजित करे जो सोवियत जनगण के ऐतिहासिक अनुभव के तात्पर्य और महत्व को तरह-तरह से बिगाड कर और तोड-मरोड कर पेश करते है।

२८*

आनेवाले अवसर के उपलक्ष में उचित समारोहों की तैयारी करने में पार्टी, कोम्सोमोल तथा ट्रेड-यूनियनों ने रास्ता दिखाया। बिना किसी अतिशयोक्ति के यह कहा जा सकता है कि समस्त देश ने आनेवाली जयंती की तैयारी में भाग लिया।

१९६६ की गर्मियों में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के नियमित चुनाव हुए। नवनिर्वाचित सदस्यों ने अपनी बारी में सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमंडल चुना। अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष पोदगोर्नी चुने गये। चुनाव अभियान का संगठन करने के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने प्रचार का आधार सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस के उन निर्देशों को बनाया जिनका संबंध समाजवादी जनवाद के विकास को प्रोत्साहित करने तथा राजकीय और सार्वजनिक संगठनों को अधिक निपुणता से चलाने की जरूरत से था। समय के प्रवाह के साथ यह बात उभरकर सामने आ चुकी थी कि समाजवादी जनवाद की संपूर्ण अभिव्यक्ति श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियों की सोवियतों में होती है जो राज्य सत्ता की संस्थाएं तथा व्यापकतम सार्वजनिक संगठन दोनों हैं। पार्टी के नेतृत्व में सोवियतें जनता को एकताबद्ध तथा एकत्रित करती हैं तथा देश के आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन के नियोजित संगठन को बढ़ावा भी देती हैं। १९३६ के संविधान की स्वीकृति के बाद से १,८०,००,००० चुने हुए प्रतिनिधि राज्य प्रशासन के इस लेनिनवादी स्कूल से गुजर चुके थे। यही एक आंकड़ा यह सिद्ध करने के लिए काफ़ी है कि सोवियत संघ में एक तथाकथित शासक श्रेणी के संबंध में पूंजीवादी प्रचार कितना निराधार है।

रूसी सोवियत संघीय समाजवादी जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत की एक सदस्या सिसोयेवा ने १९६६ में एक युवा प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में संयुक्त राज्य अमरीका की यात्रा की थी। उन्होंने बताया है कि एक बार उनके प्रतिनिधिमंडल की कुछ अमरीकी सीनेटरों से भेंट हुई। सिसोयेवा ने जब उन्हें बताया कि वह मास्को के निकट एक राजकीय फ़ार्म में दूध दूहने का काम करती हैं तो उन लोगों की प्रतिक्रिया देखते ही बनती थी। "मुझे आज भी याद है कि यह सुनते ही उनके मुंह लटक गये थे और यह समझना कठिन नहीं था कि उनकी कांग्रेस में कोई दूध दूहनेवाली नहीं है।" बाद में एक फ़ार्म पर सिसोयेवा से यह

दिखाने को कहा गया कि रूस मे गायें कैसे दूही जाती हैं। वे इस परीक्षा मे पूरी तरह उत्तीर्ण हुईं। आगे चलकर २५ वर्षीया सिसोयेवा ने अपनी यात्रा से यह नतीजा निकाला "आपको शायद आश्चर्य हो कि मैंने वह घटना क्यो सुनाई। अमरीका मे मेरा यह अनुभव कोई आकस्मिक बात नही थी। पूंजीवादी प्रचार मे यह धारणा पैदा करने का प्रयास किया जाता है कि हमारे देश मे साधारण जनगण को केवल अकुशल काम करने का अधिकार है और कम्युनिस्ट, उनका कहना है, शासन करते हैं। वे जनता को शासक वर्ग यानी पार्टी तथा श्रमिक जनता मे विभाजित करते हैं। परन्तु आप अगर उस राजकीय फार्म की बात ले जहा मै काम करती हू तो हर पाचवा मजदूर कम्युनिस्ट है। हम खुद शासक वर्ग हैं।"

१९६६ मे सोवियतो मे सदस्यो की कुल सख्या २० लाख थी और कोई ढाई करोड स्वयसेवक भी समय मिलने पर उनके काम मे हाथ बटाया करते थे। इसका मतलब यह है कि मतदाताओ मे हर सातवा आदमी सोवियतो से सबधित नाना प्रकार की सार्वजनिक समितियो मे भाग ले रहा था।

आठवी पचवर्षीय योजना के दौरान यह निश्चय किया गया कि श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियो की सोवियतो को राष्ट्र के रोजमर्रे के जीवन मे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये। यह तय किया गया कि सोवियत सघ की मत्रि परिषद की रिपोर्टों पर सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन मे विचार किया जाये तथा सघीय जनतत्र और स्वायत्त जनतत्र के स्तर पर भी ऐसा ही किया जाये। स्थानीय सोवियते भी अपने नियमित अधिवेशनो को अधिक महत्व देने लगी और अपने विचार-विमर्श की तालिका मे अधिक व्यापक क्षेत्र के विषयो को शामिल करने लगी। इन विषयो का सबध था सभी स्तरो पर सरकारी फैसलो के परिपालन की जाच-पडताल से, वित्तीय, भूमि व्यवस्था तथा नियोजन की समस्याओ के समाधान से, औद्योगिक उद्यमो के सचालन के नियत्रण से तथा जनगण की रोजमर्रे की सामाजिक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ की पूर्ति से।

जनगण के प्रति प्रतिनिधियो तथा अधिकारियो मे जिम्मेदारी की बढ़ती हुई भावना उस समय बहुत स्पष्ट रूप से सामने आयी जब सोवियत सत्ता के पचासवे वर्ष, १९६७ के लिए आर्थिक विकास की योजना तथा

राजकीय बजट को स्वीकार किया गया। दिसम्बर, १९६९ में अधिवेशन के प्रारम्भ होने से कई सप्ताह पहले उन प्रतिनिधियों को जो सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत की स्थायी समितियों के सदस्य थे, अपने नियमित कामों से मुक्त कर दिया गया। वे अधिवेशन में इन दो दस्तावेजों की तैयारी से संबंधित बहस में भाग लेने मास्को आये। राजकीय नियोजन आयोग के अध्यक्ष बैबाकोव, तथा वित्त मंत्रि गार्बुज़ोव ने एकत्रित समिति सदस्यों के समक्ष रिपोर्टें पेश कीं जिसके बाद क्रेमलिन के कांग्रेस प्रासाद के हाल तथा लाबी प्रतिनिधियों के कार्यालय बना दिये गये। पूरे वातावरण पर विचारों का आदान-प्रदान तथा बहस का प्रभाव था, विभागीय प्रधानों, वैज्ञानिकों, मजदूरों तथा विशिष्ट आमंत्रित पथप्रदर्शकताओं, आविष्कारों तथा विभिन्न प्रयोजनाओं के संकलनकर्ताओं की बैठकें की गई। भावी दस्तावेज़ों के एक-एक शब्द और आंकड़े की खूब जांच की गयी और इस प्रकार अंतिम प्रस्तावों का रूप धीरे-धीरे निखर कर सामने आया। पहले यह तय किया गया था कि मध्य एशिया तथा देश के मध्य भाग को जोड़नेवाली एक गैस पाइप लाइन १९६८ में चालू कर दी जायेगी, लेकिन विचार-विमर्श के बाद वह तिथि १९६७ के अंत में नियत की गयी। अनेक वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्रों को अतिरिक्त धन प्रदान करने का निश्चय किया गया तथा अन्य कई प्रयोजनाएं तैयार की गई।

विशेष ध्यान उन औद्योगिक उद्यमों द्वारा प्राप्त परिणामों की ओर दिया गया जिन्होंने नियोजन की नयी व्यवस्था अपना ली थी। १९६६ के प्रारम्भ में पूरे देश में इस प्रकार के केवल ४३ कारखाने थे। वे ऐसे कारखाने थे जो सुधार के पहले भी मुनाफ़ा कमा रहे थे और अपनी पैदावार की श्रेष्ठता के लिए प्रसिद्ध थे। प्रथम सुधारोत्तर वर्ष के अंत तक ७०४ कारखाने, जिनमें मज़दूर तथा प्रशासकीय अमला कुल मिलाकर २० लाख आदमी काम करते थे, नयी व्यवस्था को अपना चुके थे। इन तब्दीलियों के परिणाम उत्साहवर्द्धक थे। इस वर्ष के दौरान समस्त उद्योग की योजना की अतिपूर्ति हो गई: औद्योगिक उत्पादन की मात्रा में ८.६ प्रतिशत वृद्धि हुई थी जबकि उन कारखानों में जिन्होंने नियोजन तथा आर्थिक प्रोत्साहन की नयी व्यवस्था अपनाई थी, उत्पादन में १०.२ प्रतिशत वृद्धि हुई। इसका अर्थ यह हुआ कि उनके वेतन कोष में उसी

के अनुसार वृद्धि हुई तथा गृह निर्माण, अवकाश गृह, किंडरगार्टनो, शिशु भवनो आदि के निर्माण मे भी इसी हिसाब से वृद्धि हुई। इसमे कोई सन्देह नही था कि आर्थिक सुधार से अच्छे परिणाम निकल रहे थे और यह तय किया गया कि अनेक पूरे के पूरे उद्योग फौरन नयी कार्यपद्धति को अपनायें।

अत मे आर्थिक योजना तथा बजट के मसविदा के सभी भागो का अध्ययन किया गया और उचित सिफारिशें स्वीकृति के लिए पेश की गई। समितिया ने अपने अतिम फैसले तैयार किये और तब दिसम्बर, १९६६ मे सारे देश को यह अवसर मिला कि सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के काम की रिपोर्टें पढ़े तथा राजकीय नियोजन आयोग के मुख्य सदस्यो तथा वित्त मत्रालय के प्रमुख लोगो की तथा सोवियतो से सम्बद्ध स्थायी समितिया की रिपोर्टों का अध्ययन करे। ये सारी चीजें तथा तमाम बहसो की सामग्री तत्काल प्रकाशित हो गई, पहले समाचारपत्रो तथा पुस्तिकाओ के रूप म और फिर अलग पुस्तक के रूप मे। फैसलो का दृढ आधार तथा वस्तुवादी स्वरूप सबके लिए स्पष्ट था। प्रत्येक सोवियत नागरिक जानता था कि १९६७ का वर्ष समाजवाद की समस्त उपलब्धियो के परिवेक्षण का वर्ष होगा, कि अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती को प्रमुख श्रम उपलब्धिया द्वारा मनाना चाहिए। और वास्तव मे सोवियत इतिहास म १९६७ के वर्ष को इसी रूप मे याद रखा जायेगा।

क्रान्ति के पचास वर्ष

जनवरी, १९६७ मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की पचासवी जयती की तैयारी के सबध मे एक निर्णय किया। पार्टी ने एक बार फिर सोवियत जनगण का आह्वान किया कि सोवियतो की भूमि के जन्म की पचासवी सालगिरह इस तरह मनायें कि वह सोवियत सघ के तमाम जनगण का, कम्युनिस्ट विचारो की विजय का समारोह हो। इस अपील पर अमल करते हुए एक नया प्रतियोगिता आन्दोलन पचासवी सालगिरह के उपलक्ष मे शुरू किया गया जिसमे लोगो ने विशेष धम उत्साह, पारापर उच्च

कोटि की राजनीतिक चेतना का परिचय दिया। इसकी एक और विशेषता यह थी कि आर्थिक लक्ष्यों को राजनीतिक शिक्षा-दीक्षा के कार्य के साथ मिलाने का व्यापक प्रयास किया गया।

उन दिनों पुराने मजदूरों, पार्टी के पुराने सदस्यों की ओर लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। क्रांति में जिन २,५०,००० कम्युनिस्टों ने भाग लिया था उनमें से जयंती के समय तक कोई ६ हजार जीवित थे। पूरे देश में कारखानों, कार्यालयों तथा स्कूलों में लोगों से उनकी मुलाकातें आयोजित की गईं। आम लोग उनकी बातें सुनना चाहते थे जिन्होंने शिशिर प्रासाद पर धावा बोला था, सफ़ेद गार्डों तथा हस्तक्षेपकारियों के छक्के छुड़ा दिये थे और स्वयं लेनिन के पथ-प्रदर्शन में काम किया था। जयंती की तैयारी के दौरान सारे देश में क्रांति के वीरों, उद्योगीकरण तथा कृषि-समूहीकरण के दौर के अग्रणी मजदूरों तथा उन लोगों का जिन्होंने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में भाग लिया था, स्वागत-सत्कार किया गया। सोवियत समाज के लिए यह एक युक्तिसंगत घटना थी क्योंकि वह क्रांतिकारी भावना को जगाये रखते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आनेवाली परम्पराओं को प्रतिबिम्बित करती थी। जयंती के वर्ष में एक महान घटना थी अज्ञात सैनिक की समाधि की स्थापना जिसपर ८ मई, १९६७ को अमर ज्योति जलाई गई। वह लेनिनग्राद के अक्तूबर के वीरों की समाधि से विशेष अनुरक्षकों द्वारा मास्को लायी गयी थी। यह ज्योति एक संग-मर्मर की तख्ती के पास सदा जलती रहेगी जिसपर ये शब्द खुदे हैं: "तेरा नाम कोई नहीं जानता पर तेरा कारनामा अमर है।" राजधानी को आनेवाले सभी यात्री राष्ट्र के शहीदों को श्रद्धांजलि चढ़ाने वहां जरूर आते हैं।

क्रांति तथा समाजवादी निर्माण में नई पीढ़ी की बढ़ती हुई दिलचस्पी को देखते हुए कोम्सोमोल ने क्रांतिकारी लड़ाइयों, गृहयुद्ध तथा महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की लड़ाइयों के स्थलों तथा विशालकाय औद्योगिक उद्यमों को जिनका निर्माण तीसरे दशक के अंतिम भाग तथा चौथे दशक में उद्योगीकरण के दौरान हुआ था, किशोरों की यात्राओं का प्रबंध किया। इन यात्राओं में कोई २ करोड़ किशोर छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

इस दौर में श्रमजीवी जनगण की राजनीतिक परिपक्वता का जीवंत परिचय उन अनगिनत दरख्वास्तों से मिलता था जो सोवियत संघ की
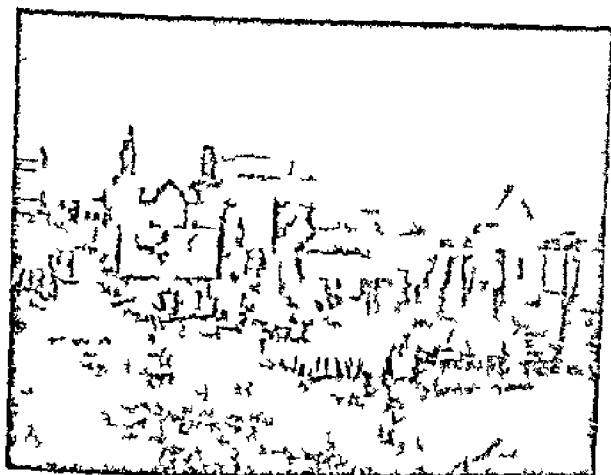
अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती पर
लाल चौक मे प्रदशन

कम्यनिस्ट पार्टी मे दाखले के लिए दी जा रही थी। कडी जाच-पडताल के बाद ६६८६६७ लोग उम्मीदवार-सदस्य के रूप मे कम्यनिस्ट पार्टी मे लिये गये। विगत वप की तुलना मे यह सख्या १५८००० अधिक थी इनमे आध से अधिक मजदूर थे १४ प्रतिशत किसान तथा बाकी मे अधिकाश इजीनियर तकनीशियन कृषिविद शिक्षक तथा अय पेशो के लोग थे। लगभग तीन चौथाई कम्यनिस्ट उस समय भौतिक उत्पादन काय मे जट हुए थे।

१ ३ करोड कम्युनिस्टो के प्रयक्ष नेतत्व मे समस्त जनगण उस महान जयती के लिए तैयार हो रहे थे। क्रातिकारी युग के अरुणोदय के समय लेनिन ने कहा था क्राति की सालगिरह मनाते हुए उचित है कि हम एक निगाह उस रास्ते पर डाले जिससे होकर क्राति को गजरना पडा है। हमे अपनी क्राति असाधारण तौर पर कठिन परिस्थितियो मे शरू करनी पडी जिनका सामना ससार मे किसी और मजदूर क्राति को नही करना पडगा। इसलिए यह और भी महत्वपूण है कि हम उस पूरे रास्ते का

जिसे हमने तय किया है, परिवेक्षण करें, इस अवधि में अपनी उपलब्धियों की पड़ताल करें..."* राष्ट्र ने अपने नेता की इस सलाह को याद किया, वह इसके तात्पर्य से भली भांति अवगत था। लोग जानते थे कि जयंती वर्ष में उठाया गया हर क़दम पचास वर्षों के विकास का फल है।

सितम्बर, १९६७ में राजकीय आयोग ने उच्चतम अंक देकर ब्रात्स्क पनविजलीघर को "पास" किया। उस समय अंगारा नदी का यह विशालकाय पनविजलीघर संसार में सबसे बड़ा था। वह पहला पनविजलीघर था जिसकी क्षमता ४० लाख किलोवाट से अधिक थी। लगभग इतना बड़ा पनविजलीघर इतनी अविश्वसनीय तेज़ी के साथ कहीं भी नहीं बनाया गया था। लेकिन इतिहास में एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सोवियत सत्ता के कठिनतम दौर में, गृहयुद्ध तथा हस्तक्षेप के युद्ध के दौरान, जब भूख और आर्थिक अव्यवस्था का ज़ोर था, इस असाधारण प्रगति को पहले से देख लिया था और पूरे विश्वास के साथ कहा था कि एक दिन समस्त रूस का बिजलीकरण होगा। १९२० में अंग्रेज़ लेखक एच० वेल्ज़ ने लेनिन से भेंट करने के बाद लिखा था: "रूस के इस धुंधले शीशे में मुझे तो ऐसी कोई बात होती दिखाई नहीं देती मगर क्रेमलिन में यह छोटा सा आदमी उसे देख रहा है, वह देख रहा है कि टूटी-फूटी रेलों की जगह बिजली की नयी ट्रेनें होंगी, देश भर में नयी सड़कों का जाल सा बिछा होगा, वह देख रहा है कि एक नया और सुखमय कम्युनिस्ट उद्योगीकृत राज्य उठ खड़ा होगा।"

भावी घटनाओं ने क्रांति के बाद देश के सफल बिजलीकरण की बाबत लेनिन की भविष्यवाणियों को सही कर दिखाया। जब बाल्टिक जनतंत्र १९४० में सोवियत संघ में शामिल हुए तो लिथुआनिया में बिजली का प्रति व्यक्ति उत्पादन पूंजीवादी डेनमार्क से २० गुना कम था (जिसकी आबादी तथा क्षेत्रफल लगभग उतना ही था और अर्थव्यवस्था भी समान नाखाओं पर आधारित था)। लिथुआनिया के भूतपूर्व शासकों का अनुमान था कि डेनमार्क के १९३९ के बिजलीकरण के स्तर पर पहुंचने के लिए कम से कम ५० वर्ष लगेंगे और लिथुआनिया के ग्रामों का बिजलीकरण

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २८, पृष्ठ ११७

करने मे कई दशाब्दिया लग जायेंगी। लेकिन वास्तव मे हुआ कुछ और ही। सातवे दशक के मध्य तक लिथुआनिया डेनमाकवालो से इस मामले मे काफी आगे बढ चुका था और कृषि का पूरा बिजलीकरण हो चुका था। पाठक एक बार फिर इस बात को ध्यानपूर्वक नोट कर लेगे कि यह केवल समाजवाद के अतर्गत ही सम्भव हुआ।

यह कल्पना करना दिलचस्प होगा कि अगर वेल्ज १९६७ तक जीवित होते तो वह क्या कहते। उस समय तक सोवियत सघ अक्तूबर क्राति की पूर्ववेला की तुलना मे ३०० गुना अधिक बिजली शक्ति का उत्पादन कर रहा था। और १९६७ के कुल आकडे ब्रिटेन, फ्रास, पश्चिमी जर्मनी तथा इटली जैसे औद्योगिक रूप से उन्नत देशो के बिजली उत्पादन के सयुक्त आकडो से भी अधिक थे।

उस वर्ष देश ने सोवियत धातुकर्मियो की भी एक महत्वपूर्ण विजय मनायी इस्पात उत्पादन को उन्होने १० करोड टन तक पहुचा दिया। यह आकडा तब विशेषकर शानदार मालूम होगा जब हम यह याद करेगे कि १९१७ मे देश का युद्ध से बर्बाद उद्योग केवल ४ लाख टन सालाना इस्पात पैदा कर रहा था। इस उपलब्धि की प्राप्ति मे—दोनेत्स बेसिन की बहाली, मग्नितोगोर्स्क और कुज्नेत्स्क, कोम्सोमोल्स्क-आन आमूर तथा एलेक्त्रोस्ताल, क्रिवोई रोग और चेरेपोवेत्स के निर्माण मे—बेहिसाब धन तथा जबर्दस्त प्रयत्न लगाना पडा था। इन पचास वर्षो के दौरान धातुकर्मियो की पूरी की पूरी पीढिया प्रशिक्षित हो चुकी थी और अपने कठिन पेशे मे दक्षता प्राप्त कर चुकी थी। सोवियत सघ लगातार इस्पात ढलाई की जन्मभूमि बनता चला गया। वह धमन-भट्ठियो मे प्राकृतिक गैस का प्रयोग करनेवालो मे पहला था। वह पहला देश था जिसने ९०० टन की खुली भट्ठियो का इस्तेमाल किया। अगर सोवियत सघ मे धातु उद्योग का विकास उसी रफ्तार से हुआ होता जिससे १९१७ के बाद सयुक्त राज्य अमरीका मे हुआ तो उसके उत्पादन का स्तर १९६७ मे जितना था उससे छ गुना कम होता।

गैस उद्योग मे भी इसी महत्व की उपलब्धिया प्राप्त की गई। उस उद्योग मे काम करनेवाले लोगो ने पतझड के मौसम मे अपना वायदा पूरा कर दिया जो उन्होने जयती के उपलक्ष म किया था। मध्य एशिया को सोवियत सघ के केन्द्रीय भाग से जोडनेवाली ट्रास-महाद्वीपीय गैस

पाइप लाइन चालू कर दी गयी। अब आवश्यक ईंधन लगभग ३ हज़ार किलोमीटर की दूरी तय करके तुर्कमानिस्तान तथा उज्बेकिस्तान से रूस के यूरोपीय भागो तक पहुंचाया जा सकता था। पाइप लाइन का मुख्य भाग जलहीन रेगिस्तानो, रेतीले टीलो, पथरीली ऊर्ध्वभूमि तथा अन्य प्रकार की उबड-खाबड़ जमीनो मे से होकर ले जाना पड़ा था। इस विशेष प्रयोजना मे आधुनिक मशीनरी ने अपना कमाल दिखाया (कम से कम ९९ प्रतिशत काम मशीनो के द्वारा हुआ) और यहा निर्माणकर्मियो के उत्साह का एक अभिन्न अंग उनकी उच्च कोटि की दक्षता थी, और यह तब
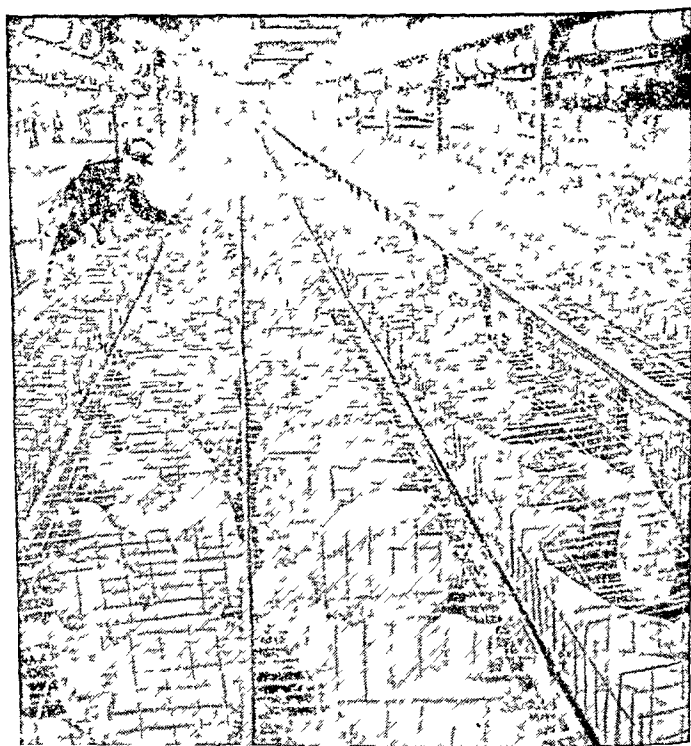
राजकोय मुर्गीख़ाना

जर्वाकि गैस उद्योग सोवियत सघ के उद्योग की सबसे नयी शाखाओ मे है। यहा १९१७ के आकडा से कोई तुलना सम्भव नही है क्योकि गैस उद्योग का जन्म ही महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान हुआ था।

१९४२ मे निश्चय किया गया कि बुगुरुस्लान के निकट से कुइबिशेव क्षेत्र मे गैस पहुचाई जाये ताकि युद्ध उद्योग को आवश्यक ईंधन की आपूर्ति निश्चित की जा सके। इस काम के लिए कुशल कर्मियो तथा निपुणता का ही अभाव नही था बल्कि पाइप बाकू तथा बातुमी के बीच की तेल पाइप लाइन से लाया गया जो उस समय बेकार पडा था और बाकी पाइप एजबेसटस सीमेंट से बनाया गया। प्रथम सोवियत गैस पाइप लाइन को उचित ही "१६० किलोमीटर लम्बा कारनामा' नाम दिया गया था। चौथाई शती बाद देश मे सालाना १८,६०० करोड घन मीटर प्राकृतिक गैस का उत्पादन हो रहा था तथा सोवियत सघ के पास गैस पाइप लाइनो की ऐसी व्यवस्था थी जिसमे देश के यूरोपीय भाग, मध्य एशिया तथा उराल को मिला दिया गया था। यह ईंधन सबसे सस्ता है और इसकी सप्लाई केवल उद्योगो के लिए ही नही बल्कि फ्लैटो मे गैस पाइप लाइन पहुच जाने के बाद घरेलू उपभोग के लिए भी निश्चित कर दी गई है।

जयती वर्ष मे सोवियत कृषि ने भी प्रभावोत्पादक प्रगति की। सामूहिक तथा राजकीय फार्मों को अब ठीक-ठीक मालूम था कि उन्हें प्रति वर्ष राज्य को कितना कुछ देना है और इस भुगतान का रूप अब दो तरफा जिम्मेदारी का हो गया था क्योकि राज्य निश्चित मात्रा से अधिक अनाज ले नही सकता। फार्मों को अनेक वित्तीय सुविधाए दी गई। राज्य ने पशुओ, गेहू, राई, बाजरा तथा सूरजमुखी का खरीद मूल्य बढा दिया और सामूहिक किसानो से आय कर वसूलने की व्यवस्था में सुधार किया गया। आठवी पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ मे राजकीय तथा सामूहिक फार्मों ने ट्रैक्टर, लारिया तथा कृषि मशीनें तथा उनके लिए फाजिल पुर्जे सरकार से कम दाम पर खरीदना शुरू किया (आम तौर पर उसी दाम पर जो फैक्टरियो के लिए तय था)। सामूहिक तथा राजकीय फार्मों को चलाने के लिए बिजली भी सस्ती कर दी गयी। इस अवधि मे काश्तयोग्य जमीन को सुधारने तथा अधिक फसले उपजाने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम पूरा किया जाने लगा।

सोवियत संघ के पास विशाल भूमि ज़रूर है परन्तु कम लोगों को यह मालूम है कि काश्तयोग्य ज़मीन औसतन प्रति व्यक्ति ढाई एकड़ से अधिक नहीं है। कृषि की स्थिति की कठिनाई इसलिए और भी बढ़ जाती है कि देश के सबसे महत्वपूर्ण अनाज केन्द्र–दक्षिणी उक्रइना, वोल्गा क्षेत्र, रूसी संघ तथा क़ज़ाख़स्तान की परती ज़मीन तथा उत्तरी काकेशिया का भाग–बहुत अधिक सूखाग्रस्त रहते हैं। ख़राब मौसम के कारण कई मौक़ों पर करोड़ों टन अनाज बर्बाद हुआ है। सातवें दशक के उत्तरार्ध तक देश के खेतों के केवल बीसवें भाग की सिंचाई की जा सकी थी। इस स्थिति में स्वभावतः ग्रामीण आबादी ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सरकार द्वारा लिये गये इस फ़ैसले का स्वागत किया कि सूखा, हवा और पानी के असर से भूक्षरण को रोकने के लिए अधिक कोष और मशीनरी उपलब्ध की जावे तथा खेतों की रक्षा के लिए अधिक वनपट्टियां लगाई तथा विस्तारित की जायें।

सामूहिक फ़ार्मों के विकास में एक नयी मंज़िल उस समय आयी जब सामूहिक किसानों के लिए निश्चित वेतन उसी स्तर पर जारी किये गये जिस स्तर पर वेतन राजकीय फ़ार्मों के मज़दूरों को दिये जाते थे। यह नयी व्यवस्था १९६६ की गर्मियों में जारी की गई और १९६७ के प्रारम्भ तक अधिकांश सामूहिक किसानों को निश्चित मासिक वेतन मिलने लगा था। इसके अलावा हर गर्मी के अंत में, जब फ़सल कटने के बाद पूरा हिसाब-किताब होने पर पूरक पारिश्रमिक भी (रुपये-पैसे या जिन्स के रूप में) दिया जाता था। इस पारिश्रमिक की मात्रा प्रत्येक सदस्य के काम की मात्रा तथा गुण और उस वर्ष सामूहिक फ़ार्म की आमदनी पर निर्भर करती थी।

भौतिक प्रोत्साहनों में यह वृद्धि कृषि के विकास के व्यापक कार्यक्रम का जिसपर उन दिनों अमल किया जा रहा था, सबसे महत्वपूर्ण पहलू था। अधिक संख्या में लारियों, ट्रैक्टरों, कम्बाइन हार्वेस्टरों तथा खनिज खाद की सप्लाई की गई। १९६६ में अपने-अपने विशेष क्षेत्र में सामूहिक तथा राजकीय फ़ार्मों के अमलों को नया प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम शुरू हुआ। उन्नतर कृषि संस्थानों में विशेष विभाग तथा कोर्स संगठित किये गये ताकि राजकीय फ़ार्मों के निदेशक, सामूहिक फ़ार्मों के अध्यक्ष, ब्रिगेड नेता, खेत दल नेता, कृषिविद, पशुधन विशेषज्ञ तथा अर्थशास्त्री, आदि

अपनी दक्षता का स्तर ऊंचा करने के लिए नियमित रूप से कई महीनो का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें। इन सब बातो से खेतो में काम करनेवालो को इस चीज मे बडी सहायता मिली कि वे अच्छे मौसम से खूब फायदा उठायें और १९६६ में १७ करोड १० लाख टन अनाज हासिल करें। इससे पहले देश मे इतनी बडी फसल कभी नही हुई थी। गर्द के तूफान और गर्मी मे अत्यंत सूखे मौसम के कारण अगले साल यानी १९६७ में इतनी बडी सफलता दोहराई नही जा सकी मगर सब मिलाकर कृषि की प्रगति जारी रही। औद्योगिक फसलो, सब्जी-तरकारी तथा फलो की उपज पिछले साल से अच्छी हुई। अनाज, कपास, चुकन्दर तथा अन्य कई प्रकार की पैदावार की खरीदारी की राजकीय योजना की अतिपूर्ति हुई। पशुधन पालन से प्राप्त सभी तरह के पशुजनित उत्पादन मे भी वृद्धि हुई।

श्रमजीवी जनगण की भौतिक खुशहाली मे नई प्रगति अर्थव्यवस्था के सुस्थिर, नियमित विकास की परिचायक थी। १९६७ के अंत तक पांच दिन का कार्य सप्ताह नियमित रूप से जारी हो चुका था दफ्तरी तथा फैक्टरी कामगारो के लिए ६० रूबल निम्नतम वेतन निश्चित हो गया था तथा निम्नतम सालाना अवकाश १५ कार्य दिवस तय कर दिया गया था।
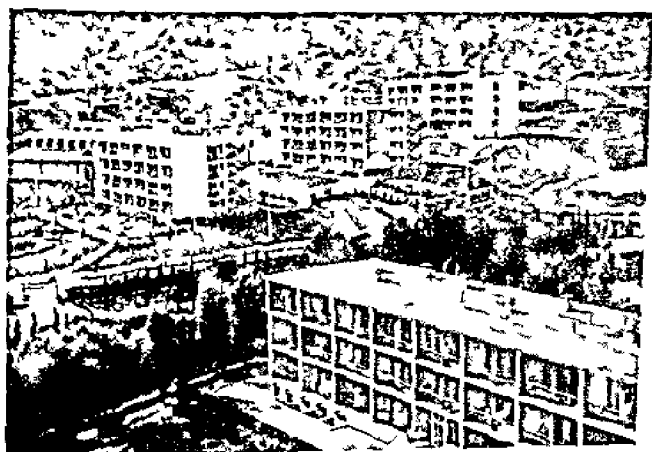
क्रीमिया के पूर्वी तट पर ल्वोव के रेलवे मजदूरो का अवकाश गृह

उत्तरी सीमांत या सुदूर पूर्व में काम करनेवालों के लिए राज्य ने वेतन में वृद्धि की व्यवस्था लागू की। सामूहिक फ़ार्मों के किसानों के लिए अवकाश ग्रहण करने की आयु में पांच वर्ष की कमी कर दी गई। वे भी अब शहरी मज़दूरों की उम्र में अवकाश ग्रहण कर सकते थे। अस्वस्थकर पेशों में काम करनेवाले मज़दूरों, कुछ ख़ास कोटि के अवकाशवृत्ति पानेवालों तथा अशक्त लोगों को अनेक नयी सुविधाएं दी गयीं।

लोगों की वास्तविक आय प्रत्याशित दर से अधिक तेज़ी से बढ़ी, तथा शहर और गांव के वेतन स्तरों का फ़र्क़ कम हुआ। इसमें नक़द आमदनी की वृद्धि से आसानी हुई। समय की एक उत्साहवर्द्धक विशेषता यह थी कि किसानों की उस आमदनी में ख़ासकर वृद्धि हो रही थी जो उन्हें सामूहिक फ़ार्म से तथा राजकीय संगठनों से प्राप्त होती थी। केवल पांच ही वर्ष पूर्व व्यक्तिगत जोत से सामूहिक किसान की औसत आमदनी का ४० प्रतिशत हासिल होता था, जबकि १९६७ में इसका हिस्सा १० प्रतिशत से कम रह गया था। किसान अपनी आमदनी का शेष ९० प्रतिशत सामूहिक फ़ार्म में काम करके या राज्य से कमाते थे।

अवश्य ही अन्य देशों में भी जीवन के कई पहलुओं में १९१७ के बाद के पचास वर्षों में परिवर्तन हो गये थे। यह कोई छिपी हुई बात नहीं थी कि कई आर्थिक सूचकांकों में सोवियत संघ अनेक पूंजीवादी देशों के स्तर तक नहीं पहुंचा था। लेकिन इनमें से कोई भी देश इतनी तेज़ी से तथा इतनी बहुमुखी उन्नति नहीं कर पाया था। सोवियत जनगण को अपनी इन उपलब्धियों पर—जैसे काम और आराम का निश्चित अधिकार, बेरोज़गारी का उन्मूलन, निशुल्क माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा, मुफ़्त स्वास्थ्य सेवा, काफ़ी अवकाशवृत्ति, संसार में निम्नतम दर भाड़ा तथा संसार की सबसे व्यापक (आबादी के प्रत्येक १,००० व्यक्तियों के हिसाब से) गृह-निर्माण योजना—गौरव करने का उचित अधिकार था। यह सब उस देश में हुआ था जहां पहले पूंजीपतियों तथा ज़मींदारों के राज में श्रमजीवी जनता को इनमें से एक भी सुविधा प्राप्त नहीं थी। ये सब अक्तूबर, १९१७ में महान विजय की बदौलत सम्भव हो पाये थे जिसने समाजवाद के युग का प्रादुर्भाव किया था।

जिस समय सोवियतों की धरती अपनी पचासवीं जन्म-तिथि मनाने की तैयारी कर रही थी, दुनिया में बहुत से लोग बड़े इच्छुक थे कि

सोवियत संघ की उपलब्धियो को, देश द्वारा की गई आर्थिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक प्रगति को कम करके दिखायें। निस्सन्देह आज भी ऐसी सरकारें मौजूद हैं जो अपने देश मे सोवियत नागरिको के प्रवेशाधिकार पर प्रतिबंध लगाती हैं और अपने नागरिको को सोवियत संघ की यात्रा नही करने देती, वे सोवियत पुस्तको तथा फिल्मो की खरीदारी पर रोक लगाती तथा सांस्कृतिक संपर्क मे विस्तार में बाधा डालती है। इन्ही कार्रवाइयो का निवारण करने के लिए रेडियो, टेलीविजन तथा आम सूचना के अन्य साधन मौजूद है। और फिर करोडो आदमियो ने स्वयं अपनी आंखो से अंतरिक्ष मे सोवियत स्पुतनिक की उडान देखी, संसार मे अब शायद ही कोई देश ऐसा रह गया हो जहा लोगो ने अंतरिक्ष मे प्रथम मानव, यूरी गगारिन तथा उनके साथी अंतरिक्षयात्रिया का नाम नही सुना होगा।

यह ऐतिहासिक उडान १२ अप्रैल, १९६१ को हुई। कज़ाख जनतंत्र के इलाके से एक शक्तिशाली वाहक राकेट उडा और उसने अंतरिक्षयान को पृथ्वी के परिक्रमापथ पर पहुंचा दिया। पृथ्वी का चक्कर लगाने के बाद वह वोल्गा क्षेत्र मे सरातोव से कुछ ही दूरी पर उतरा। प्रथम अंतरिक्ष उडान १०८ मिनट रही और अंतरिक्षयान ने २८ हज़ार किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से उडान की।

मानव द्वारा पहली बैलून उडान तथा पहले वायुयान के निर्माण के बीच ठीक १५० वर्ष का समय बीता था। पचहत्तर वर्ष बाद लोगो ने जाना कि पृथ्वी के उपग्रह के मानी क्या है और सोवियत जनगण को अंतरिक्ष मे मानव को भेजने मे और साढे तीन वर्ष लगे। पहला अंतरिक्ष यात्री एक सोवियत नागरिक, कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य यूरी गगारिन था। उसके ४ महीने बाद ६ अगस्त, १९६१ को अंतरिक्षयान "वोस्तोक-२" अंतरिक्ष मे भेजा गया तथा गेर्मान तितोव की उडान २४ घंटे से अधिक रही। फरवरी, १९६२ मे पहला अमरीकी अंतरिक्षयान पृथ्वी के परिक्रमापथ पर भेजा गया। इसके बाद दो अंतरिक्षयानो की संयुक्त उडान हुई और संसार ने पहली बार आन्द्रियान निकोलायेव तथा पावेल पोपोविच के नाम सुने। तब जून, १९६३ मे वालेन्तीना तेरेश्कोवा, अंतरिक्ष मे प्रथम महिला, तथा वालेरी बिकोव्स्की ने इस काम को जारी रखा। संसार के अखबारो ने अंतरिक्षयान "वोसखोद" की बाबत लिखा
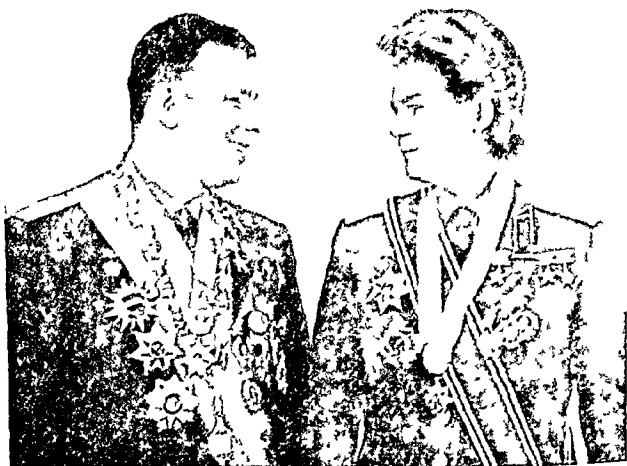
अंतरिक्षयात्री यूरी गगारिन तथा वालेन्तीना तेरेश्कोवा

कि यह बीसवीं शती का एक चमत्कार है। इस अन्तरिक्षयान की दिशा स्वयं चालक द्वारा निर्धारित की जा सकती है। इसके कर्मीदल मे तीन जन थे: पायलट ब्लादीमिर कोमारोव, वैज्ञानिक और इंजीनियर कोन्स्तान्तीन फेग्रोक्तीस्तोव तथा डाक्टर बोरीस येगोरोव। उनके अनुसंधान के बल पर आगे चलकर पहली बार मार्च, १९६५ को मानव के लिए अंतरिक्षयान से अंतरिक्ष में बाहर निकलना सम्भव हुआ। यह अभूतपूर्व कारनामा एक और सोवियत नागरिक अलेक्सेई लेओनोव ने भी कर दिखाया। उनके अंतरिक्षयान को व्लादीमिर बेल्यायेव चला रहे थे।

यूरोविजन तथा इंटरविजन के जरिये अनेक देशो के करोडो आदमियो ने अंतरिक्षयान द्वारा भेजे गए प्रथम टेलीविजन चित्र देखे।

अंतरिक्ष पर विजय के संबंध मे अत्यंत महत्व की घटनाएं ये थी क चंद्रमा, शुक्र तथा मंगल ग्रहो की दिशाओ में स्वचालित अंतरिक्षस्टेशनो को भेजा गया था। अंतरिक्ष की वैज्ञानिक छानबीन मे सर्वप्रथम स्वचालित उपकरणो तथा अंतरिक्षयान का प्रयोग ही प्रधान रुझान बन गया। इन्ही तरीको की मदद से १९६५ की गर्मियों में वे चंद्रमा के उस पक्ष का चित्र
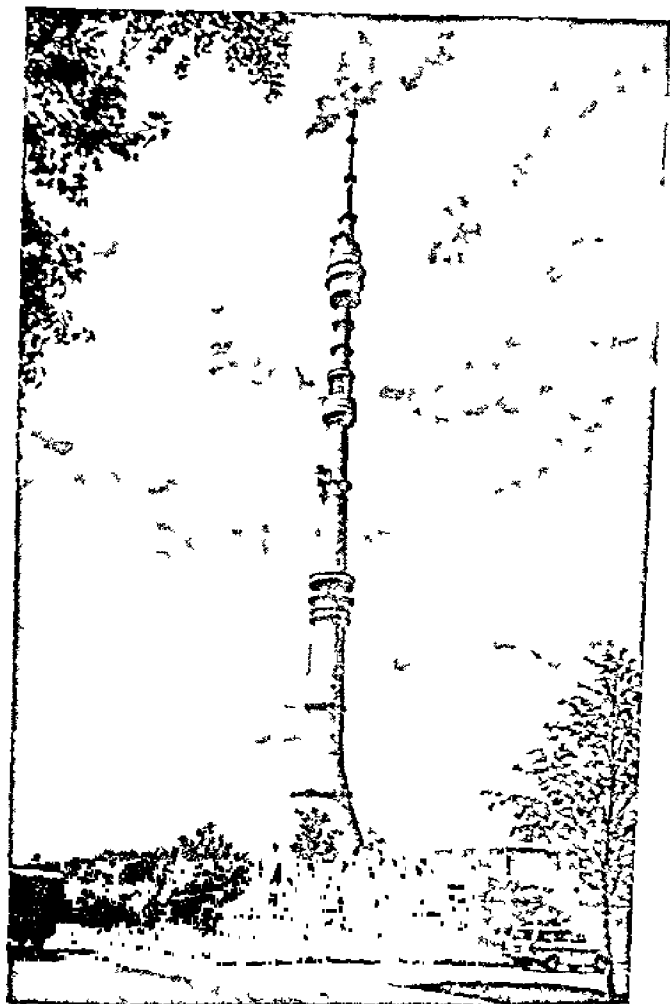
मोस्तान्किनो, मास्को मे टेलीविज़न केंद्र

लेने में सफल हुए जो पृथ्वी की ओर से आंखों से ओझल रहता है। ३ फ़रवरी, १९६६ को पहली बार चंद्रमा पर सफलतापूर्वक सहज अवतरण हुआ और वहां भेजे गये उपकरणों ने चंद्रमा के चित्र पृथ्वी को भेजे। इसके कुछ समय बाद अमरीकी अंतरिक्षयात्रियों ने चंद्रमा पर उतरने के बाद, यूरी गगारिन तथा उनके साथियों के काम तथा सोवियत स्वचालित अंतरिक्ष स्टेशनों की उड़ानों की सहायता से प्राप्त सूचनाओं के व्यावहारिक महत्व पर ज़ोर दिया।

१९६६ की वसंत में जब सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था, चंद्रमा के प्रथम कृत्रिम उपग्रह ने "इंटरनेशनल" गीत की ध्वनि अंतरिक्ष से संचारित की। कितनी प्रतीकात्मक थी यह बात कि अंतरिक्ष में जो पहली ध्वनि सुनाई दी वह थी सर्वहारा के, कम्युनिस्ट आंदोलन के एकता गान की।

अक्तूबर, १९६७ में एक और मंज़िल पार की गई जब पहली बार एक उपकरण उड़कर शुक्र ग्रह पर सहज रूप से उतरा और इस उपलब्धि के बाद पृथ्वी का चक्कर लगानेवाले दो सोवियत स्पुतनिक स्वतः जुड़े और फिर अलग हुए।

अंतरिक्ष में ये सफलताएं सोवियत विज्ञान तथा संस्कृति की शानदार उपलब्धियों की, सोवियत संघ की आर्थिक शक्ति तथा विश्व सभ्यता को उसके योगदान की परिचायक हैं।

सितारों तक इस सफ़र की शुरूआत स्कूल की कक्षाओं, विश्वविद्यालयों के लेक्चर हालों, देश के वैज्ञानिक केन्द्रों तथा संस्थानों, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, अनुसंधानालयों, कारख़ानों तथा खदानों से हुई।

समाचारपत्र "मस्कोव्स्काया प्राव्दा" के एक अंक में सातवें दशक में तीस लड़कों का एक चित्र प्रकाशित हुआ। ये लड़के मास्को-रियाज़ान रेलवे के स्कूल नं० १ के छात्र थे और चित्र १९५३ का था, ठीक उस समय का जब ये लड़के स्कूल से निकलकर संसार में क़दम रख रहे थे। यह पता लगाने पर कि सातवें दशक के मध्य में वे लड़के कहां थे और क्या कर रहे थे, यह मालूम हुआ कि उनमें से एक सोवियत संघ का पांचवां अंतरिक्षयात्री बना, और उसके १७ सहपाठी इंजीनियर, पांच सोवियत सेना के अफ़सर, एक भूविज्ञानी और एक और विश्वविद्यालय से शिक्षा पूरी कर लेने के बाद डाक्टरी क्षेत्र में अनुसंधान कार्य कर रहा था।
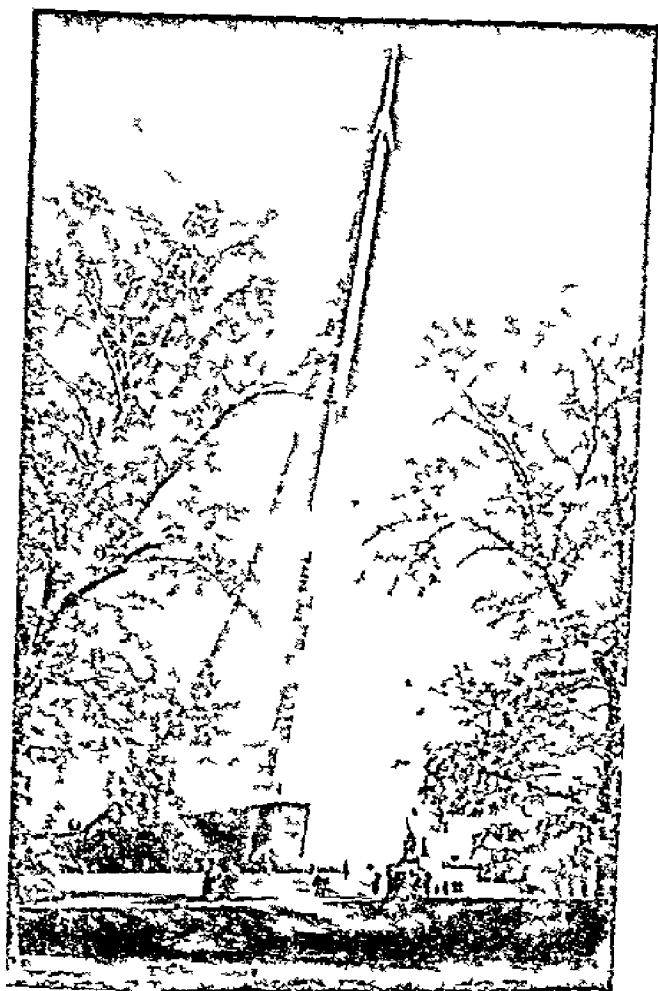
अतरिक्ष पर विजय के उपलक्ष मे मास्को म एक स्मारक

सोवियत शिक्षा व्यवस्था में इसी प्रकार की सुविधाएं सभी लोगों को उपलब्ध हैं। किसी को, मसलन, अब यह सुनकर आश्चर्य नहीं होता कि कल तक पिछड़े हुए तुर्कमानिस्तान में १९६७ में प्रति १० हज़ार की आबादी पर ११५ विद्यार्थी थे जबकि पड़ोसी ईरान में केवल १० थे। एक समय था जब एक फ़्रांसीसी पत्रकार ने मध्य एशिया के लोगों के बारे में लिखा था कि वे उनकी कार को घास खिलाने आये थे। लेकिन सातवें दशक तक जहां तक शिक्षा की सुविधाओं का सवाल है, उदाहरण के लिए ताजिकिस्तान अपने पड़ोसी देशों को ही नहीं बल्कि ब्रिटेन और फ़्रांस को भी पीछे छोड़ चुका था। उस समय तक सोवियत संघ पुस्तकें तैयार करने में, जिसमें विदेशी भाषाओं से अनूदित किताबें भी शामिल हैं, अपने पुस्तकालयों में किताबों की संख्या में, तथा संग्रहालयों और पुस्तकालयों में जानेवालों तथा इनके सदस्य होनेवालों की संख्या में भी निस्सन्देह संसार में सबसे आगे बढ़ा हुआ था। १९६५ में ८,८८३ पुस्तकों का अनुवाद हुआ, और यह संख्या संयुक्त राष्ट्र संघ के आंकड़ों के अनुसार संयुक्त राज्य अमरीका के आंकड़े से चार गुना अधिक थी।

वास्तव में संस्कृति समस्त जनगण को समृद्ध करने का साधन बन गई थी। क्रांतिपूर्व के रूस में विशाल मेहनतकश जनता को पुश्किन या त्यूत्चेव को पढ़ने अथवा ग्लींका या चाइकोव्स्की के संगीत से आनन्द लेने का अवसर भी नहीं था। क्रांति के बाद वे न केवल इन कृतियों को पढ़ने तथा इस संगीत का आनन्द लेने लगे, बल्कि जनगण में शीघ्र ही नयी परम्पराओं ने जड़ पकड़ना शुरू किया। हर साल पुश्किन की जन्म तिथि पर प्स्कोव के निकट मिख़ाइलोव्स्की ग्राम में जहां पुश्किन रहा करते थे, लोग बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं। वहां उनकी कृतियों का पठन होता है जिसमें स्थानीय लोगों के साथ अन्य जनतंत्रों के प्रसिद्ध विज्ञानी, अभिनेता और अतिथि भी भाग लेते हैं। इसी तरह के जमाव ब्रियांस्क के नजदीक उस घर में जहां कवि त्यूत्चेव रहते थे, स्मोलेंस्क के निकट ग्लींका के घर में, क्लीन नगर में चाइकोव्स्की तथा कीयेव में शेव्चेंको के सम्मान में हुआ करते हैं। ये चंद नाम हैं। इन समारोहों में अक्सर विदेशों से आये अतिथि भी भाग लेते हैं।

सोवियत संस्कृति की प्रमुख हस्तियां कम से कम एक सौ भिन्न-भिन्न देशों का भ्रमण किया करती हैं। सोवियत कला में विदेशों में अपार

दिलचस्पी पायी जाती है। सोवियत सस्कृति मन्नालय के पास विदेशो से सोवियत बैले थियेटरो के प्रदर्शनो के लिए जितने निमन्त्रण आते है, उन सब को अगर स्वीकार किया जाये तो देश के ७० प्रतिशत बैले थियेटरो को अस्थायी रूप से बद कर देना पडेगा। विदेशा मे पेशेवर कलाकारो का ही स्वागत नही किया जाता बल्कि शौकिया कला मडलिया का भी पुरजोश स्वागत किया जाता है और इसमे कोई आश्चर्य की बात नही क्योकि सोवियत सघ मे शौकिया कला सरगर्मियो का विकास वास्तव मे व्यापक पैमाने पर हुआ है और उनका स्तर बहुत ऊचा है। १९६८ मे १ करोड २० लाख से अधिक लोग शौकिया कला मडलियो के सदस्य थे। ऐसी मडलिया देश भर मे फैली हुई है और अधिकाश शहरो तथा गावो मे सक्रिय है। देश म १,३२,००० सास्कृतिक केद्रो मे उनके प्रदर्शन अक्सर हुआ करते है।

आजकल यह विश्वास करने मे कठिनाई होती है कि क्राति के पहले रूस मे केवल ११,००० व्यक्ति वैज्ञानिक अनुसधान मे भाग लिया करते थे। १९४० तक उनकी सख्या दस गुना हो गई थी और १९६७ मे

बोल्शोई थियेटर मे चाइकोव्स्की का बैले "राजहस सरोवर"

७,७०,००० तक पहुंच गई थी जो सारे संसार की संख्या का एक चौथाई है। ज्ञान का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें सोवियत वैज्ञानिकों ने महत्त्वपूर्ण प्रगति नहीं की हो। भौतिकी में नोबल पुरस्कार ताम्म, लन्दाऊ, फ्रांक, चेरेंकोव, बासोव तथा प्रोखोरोव को तथा रसायन विज्ञान में सेम्योनोव को मिल चुका है।

जब वैज्ञानिक अनुसंधान तथा एक प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था का विकास संग-संग हो रहा हो तो मानव के लिए जो सुविधाएं उत्पन्न होती हैं, उनका एक ज्वलंत उदाहरण सोवियत चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियां तथा देश की समस्त स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था है। तीसरे दशक के प्रारम्भ में मलेरिया से लाखों लोग मरते थे और १९५२ तक इस जानलेवा बीमारी ने १,८०,००० व्यक्तियों को अपनी चपेट में लिया था। लेकिन सातवें दशक में आखिरकार मलेरिया भी उन्हीं रोगों में शामिल हो
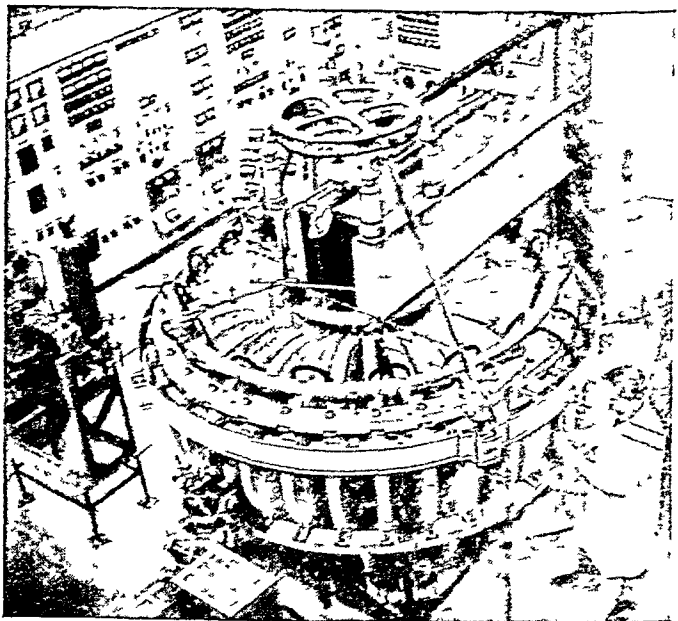
एक अनुसंधान केंद्र

गयी जिनको सोवियत सघ से देश निकाला मिल चुका था जैसे चेचक, हैजा, ताऊन और टाइफस।

पोलियो निवारण वैक्सीन ससार के अनेक देशो मे लोगो को इस नाशक रोग से बचाने के लिए भेजे गये है। स्वय सोवियत सघ मे यह रोग बहुत कम पाया जाता है। राज्य ने वैज्ञानिको को सुविधाए प्रदान की कि वे कारगर वैक्सीन खोज निकालें। ८ करोड से अधिक आदमियो को यह वैक्सीन दिया जा चुका है।

१८६७ मे रूस मे लोगो की औसत आयु ३२ वर्ष हुआ करती थी, १६३६ तक यह बढकर ४७ तक और १६६७ मे ७० से ऊपर हो गयी। तब सोवियत सघ मे मृत्युसख्या युद्धपूर्व की तुलना मे १५० प्रतिशत कम तथा ससार मे सबसे निम्न हो चुकी थी।

ये तमाम उपलब्धिया सोवियत सघ मे प्रगति का अग है तथा सारा ससार उनको अपनी आखो से देख सकता है। इन उपलब्धियो मे तथा देश द्वारा मुहैया की गई शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वैज्ञानिक और सास्कृतिक विकास की सुविधाओ मे गहरा सबध है।

वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक प्रगति की इस राह पर अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडा, भूल चूक तथा कभी-कभार दुखद क्षति भी नया रास्ता बनाने के इस काम म अनिवार्य थी। एक नये प्रकार के अन्तरिक्षयान का परीक्षण करते हुए ब्लादीमिर कोमारोव ने प्राण दिये, वायुयान म एक साधारण ट्रेनिंग उडान मे यूरी गगारिन की मृत्यु हो गयी। अतरिक्ष युग क इन वीरो की राख क्रेमलिन की दीवारो म देश के प्रमुख हस्तियो के पास दफन कर दी गई है। इन क्षतियो ने हम स्मरण कराया कि प्रकृति के भेदो को पाने का, उनपर हावी होकर उनसे काम लने का रास्ता कितना जटिल तथा कठिनाइयो से भरा है।

अन्तरिक्ष की खोज से मानव बडे-बडे परोक्ष लाभ प्राप्त भी कर चुका है। खगोलज्ञ, भौतिकी वैज्ञानिको, प्राणिविज्ञानियो तथा चिकित्सको न बहुत कुछ सीखा है और मौसम की भविष्यवाणी अब काफी विश्वस्त हो गई है। सचार सबधी उपग्रहो की सहायता से ब्लादीवोस्तोक के लाग मास्को के टेलीविजन कार्यक्रमो को देख सकते हैं तथा यह सम्भव हो गया है कि मास्को और पेरिस के बीच रेडियो तथा टेलीविजन का सपर्क स्थापित किया जाये। मानव द्वारा नयी अतरिक्ष उडानो की तैयारियो के

सिलसिले में अनेक अत्यंत जटिल तकनीकी तथा प्राणिशास्त्रीय समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है।

एक समय था जब लोग पूछा करते थे कि कारों तथा विमानों का फ़ायदा क्या है। जीवन ने स्वयं इन सवालों का जवाब दे दिया है। प्रतिदिन यह स्पष्ट होता जा रहा है कि अंतरिक्ष की उड़ानों का उद्देश्य नये रिकार्ड क़ायम करने की किसी की अनावश्यक अभिलाषा को पूरा करना नहीं है। इन उड़ानों से कहीं अधिक फ़ायदा मिलने लगा है। अन्तरिक्ष पर क़ाबू पाने पर सोवियत संघ में इतना अधिक ध्यान मानवजाति के नाम पर तथा वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति के लिए दिया जा रहा है।

अक्तूबर क्रांति की पचासवीं जयंती समारोह के दिन जितने निकट आते गये, पूंजीवादी अख़बारों को किसी न किसी दृष्टिकोण से इस घटना की ओर उतना ही अधिक ध्यान देना पड़ा। अधिकाधिक संख्या में विदेशी पत्रकार तथा संवाददाता सोवियत संघ पहुंचने लगे। सोवियत जनगण ने विशेष रूप से हार्दिक स्वागत किया समाजवादी देशों से आये अपने मित्रों का, बिरादराना कम्युनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों के प्रतिनिधियों का, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों में सरगर्म स्त्री-पुरुषों का तथा मज़दूर और सार्वजनिक संगठनों के प्रतिनिधिमंडलों का। इनमें से अनेक आगंतुकों ने विशेष अंतर्राष्ट्रीय जयंती अधिवेशनों तथा सम्मेलनों में सीधे भाग लिया। उन्होंने फ़ैक्टरियों और फ़ार्मों, अनुसंधानशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थाओं का भी दौरा किया। उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया कि सारे देश में कितना उत्साह उमड़ आया है।

अक्तूबर, १९६७ में जयंती पर्व के उपलक्ष में समाजवादी प्रतियोगिता में जीतनेवालों को चुन लिया गया: १,००० फ़ैक्टरियों और फ़ार्मों तथा अनेक सैनिक दस्तों और शिक्षा संस्थानों को आदर्श घोषित करके उन्हें विशेष जयंती परचम प्रदान किये गये। अक्तूबर क्रांति तथा गृहयुद्ध के लगभग १,३०,००० वीरों को विशेष पदक दिये गये। इसी प्रकार का सम्मान विदेशों के बहुत से लोगों को दिया गया जिन्होंने गृहयुद्ध के दौरान सोवियत जनतंत्र की रक्षा करने के लिए लड़ाइयों में भाग लिया था। मास्को और लेनिनग्राद का विशेष सम्मान करने के लिए उन्हें अक्तूबर
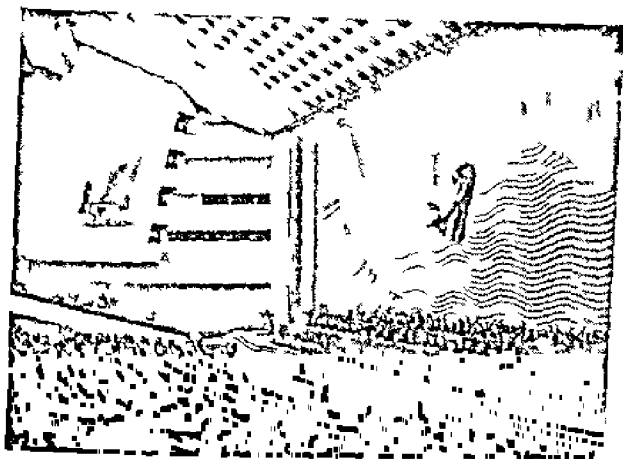
लेनिन जन्म शताब्दी का समारोह

क्रांति के प्रथम दो पदक प्रदान किये गये। यह पदक पहली बार जारी किया गया था।

नवम्बर १९६७ का उद्घाटन विशेष समारोहों से हुआ। अक्तूबर क्रांति की जन्मभूमि लेनिनग्राद के जयंती समारोहों में पार्टी तथा राजकीय नेताओं ने भाग लिया। उस महान दिवस के ठीक पहले ३ और ४ नवम्बर को कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत और रूसी संघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य क्रेमलिन के कांग्रेस प्रासाद में जमा हुए। उसमें पार्टी के पुराने सदस्य क्रांति के वीर श्रमजीवियों सार्वजनिक संगठनों तथा सोवियत सेना के प्रतिनिधि और १०७ देशों के नुमाइन्दे शरीक हुए। ब्रज्नेव ने समाजवाद की महान उपलब्धियों के पचास वर्ष शीर्षक एक रिपोर्ट पेश की। उनके साथ समारोह में उपस्थित सभी लोगों तथा समस्त जनगण की दृष्टि उन संघर्षों तथा सफलताओं की ओर गयी जो पचास वर्ष पहले हुई क्रांति के बाद सोवियत संघ के मार्ग में प्रकट होती रहीं। इस राह ने मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका की व्याख्या करने में मदद की यह बताया कि उसकी सृजनात्मक भूमिका उस सामाजिक व्यवस्था की उत्पत्ति तथा सुदृढ़ीकरण में क्या है

जिसने मानव कार्यकलाप के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र में, समाज की उत्पादक शक्तियों के विकास में पूंजीवाद पर समाजवाद की श्रेष्ठता साबित कर दी। वह समाजवाद ही था जिसने मानव द्वारा मानव के शोषण का अंत करने के बाद सभी श्रमजीवी जनगण के लिए रहन-सहन की स्थितियों में मौलिक सुधार तथा भौतिक समृद्धि तथा सांस्कृतिक प्रगति के द्वार खोल दिये थे। सोवियत अनुभव ने सारी दुनिया को दिखा दिया कि कैसे एक छोटी सी मुद्दत में कल की पिछड़ी जातियों तथा जनगण के लिए यह सम्भव हुआ कि सदियों के पिछड़ेपन को दूर करें और सोवियत संघ की तमाम जातियों को अटूट समाजवादी भ्रातृत्व में सूत्रबद्ध करें।

क्रांति के बाद के पचास वर्ष लेनिनवाद की विजय के वर्ष, कम्युनिस्ट पार्टी के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक कार्यकलाप की विजय के वर्ष थे जिसके नेतृत्व में अक्तूबर क्रांति हुई, समाजवाद ने सोवियत संघ में मुकम्मल और निर्णायक विजय प्राप्त की तथा वर्गहीन समाज का मार्ग प्रशस्त हुआ।

समाजवादी देशों के जनगण ने इस महत्वपूर्ण जयंती को सोवियत संघ के लोगों के साथ मिलकर मनाया। बिना किसी अतिशयोक्ति के यह कहा जा सकता है कि समस्त मानवजाति के जीवन में यह एक प्रेरणादायक घटना थी।

नये ध्येय, नयी मंज़िलें

अक्तूबर क्रांति की पचासवीं सालगिरह के समारोहों ने सोवियत समाज के इतिहास पर अमिट छाप छोड़ दी। जयंती की तैयारियां जारी ही थीं कि आठवीं पंचवर्षीय योजना का काम शुरू हो गया। स्वयं जयंती के सम्मान में श्रमजीवी जनगण ने योजना के ध्येयों को समय से पहले पूरा करने का बीड़ा उठाया तथा अपने ऊपर भारी कार्यभार लिए।

सोवियत राज्य की स्थापना के सम्मान में समारोहों के तुरंत बाद कई और जयंतियां मनाई गईं। क्रांति के तुरंत बाद के वर्षों में कई संघीय जनतंत्रों का जन्म हुआ था, कोम्सोमोल की स्थापना हुई थी, लाल सेना क़ायम की गई थी, संक्षेप में उन वर्षों में समाजवादी निर्माण का श्रीगणेश हुआ था और नये सार्वजनिक तथा राजकीय संगठन स्थापित हुए थे। सातवें दशक के अंत में सोवियत सेना ने अपनी पचासवीं

सालगिरह मनाई, और बाद मे उक्रइना, लिथुआनिया तथा बेलोरूस की कम्युनिस्ट पार्टियो ने अपनी-अपनी स्थापना की पचासवी वर्षगाठ मनाई। लाटविया, लिथुआनिया तथा एस्तोनिया मे सोवियत सत्ता की स्थापना की पचासवी जयती के समारोह मे सभी जनगण ने भाग लिया। इनमे से प्रत्येक घटना से लोगो को और अधिक प्रेरणा मिली कि इस अर्द्ध शताब्दी मे प्राप्त अनुभव का तथा क्रातिकारी प्रक्रिया मे अतर्निहित मौलिक नियमो का अध्ययन करे। प्रत्येक घटना ने सोवियत जनगण मे देशप्रेम की भावना को सवर्द्धित किया।

समाजशास्त्रियो ने १९६८ मे स्कूल की पढाई पूरी करनेवाले छात्रो की आकाक्षाओ के विश्लेषण के सबध मे मास्को, क्रास्नोदार, गोर्नो-अल्ताइस्क तथा कुछ अन्य नगरो मे एक प्रश्नावली प्रकाशित की। स्कूल के विद्यार्थी से पूछा गया था कि अगर तुम सर्वशक्तिमान होते तो तुम क्या करते? उनमे से विशाल बहुमत के उत्तर से प्रकट हुआ कि उन्हे आम इसानो का ख्याल है, समस्त ससार मे स्थायी शाति स्थापित करने, रोगो का निवारण करने तथा कम्युनिज्म का निर्माण करने की कितनी इच्छा है। इनके बाद सबसे अधिक जवाबो मे उनकी यह आकाक्षा प्रतिबिम्बित हुई कि मनुष्य के मानसिक क्षितिज को विस्तारित किया जाये (३० प्रतिशत उत्तर)। व्यक्तिगत हितो को प्रधानता केवल १८ प्रतिशत जवाबो मे दी गई थी। एक दिलचस्प बात यह है कि उन्ही इलाको मे ऐसी ही प्रश्नावली के उत्तर १९२७ मे जो दिये गये थे, वे इन उत्तरो से बहुत भिन्न थे। तब जाहिर हुआ था कि मुख्य इच्छा, प्रथमत भ्रमण करने की है, दूसरे, भौतिक मूल्य की वस्तुए प्राप्त करने की है और तीसरे लोगो का जीवन-स्तर ऊचा करने की है।

नयी पीढी की बढी हुई सामाजिक चेतना समस्त सोवियत जनगण की राजनीतिक परिपक्वता से अटूट रूप से सम्बद्ध है। ये दोनो गुण सोवियत सघ मे सामाजिक आचरण की अविभाज्य विशेषता बन गये है। ये खास तौर से उस दौर मे सामने आये जब सातवे दशक के अत मे अमरीकी सेना ने वियतनाम मे तथा पूरे हिन्दचीन मे युद्ध की आग फैलाने का कदम उठाया और इस कारण अतर्राष्ट्रीय तनाव बहुत बढ गया था। १९६७ मे इज्राइली शासको ने अरब जातियो के खिलाफ आक्रमणकारी युद्ध छेड दिया। १९६८ मे प्रतिक्रियावादी शक्तियो ने चेकोस्लोवाकिया को

समाजवादी समुदाय से अलग करने का प्रयास किया। सोवियत जनगण को सोवियत-चीन सीमा पर उकसावाभरी कार्रवाइयों की ख़बर से अत्यंत दुख हुआ। सोवियत संघ की श्रमजीवी जनता के मन में मेहनती चीनी जनगण के प्रति हमेशा ही की सद्भावना रही तथा नये जीवन का निर्माण करने के उसके प्रयासों के प्रति उसके मन में हमेशा सहानुभूति रही थी। हज़ारों चीनी छात्र शिक्षा प्राप्त करने सोवियत संघ आये थे तथा अनेक सोवियत नागरिक आधुनिक उद्योग के निर्माण में अपने चीनी साथियों की सहायता कर रहे थे। इस संदर्भ में सोवियत जनगण के लिए विशेष रूप से दुखदायी चीनी नेताओं की वे नीतियां थीं जिनका उद्देश्य सोवियत संघ से आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध-विच्छेद करना तथा प्रत्यक्ष रूप में सोवियत-विरोधी उन्माद भड़काना था।

फ़ैक्टरी और दफ़्तरी कर्मियों ने तथा सामूहिक किसानों ने अपनी जन सभाओं में अमरीकी जंगबाजों और इज़राइल में प्रतिक्रियावादियों की हरकत की घोर निन्दा की। बिरादराना चेकोस्लोवाकिया की सहायता करने के संबंध में सोवियत सरकार के निश्चय का समस्त जनगण ने समर्थन किया तथा सोवियत संघ की सुदूर पूर्वी सीमाओं की दक्षतापूर्वक रक्षा करने में सीमावर्ती सेनाओं ने जिस दृढ़ता का परिचय दिया, उसका राष्ट्रव्यापी अनुमोदन किया गया।

इन घटनाओं से एक बार फिर यह प्रकट हो गया कि वैदेशिक तथा घरेलू दोनों नीतियों के सवाल पर कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनगण सर्वथा एकमत हैं। इसके अलावा, जैसा कि इससे पहले अवसरों पर भी देखने में आया था, तनावपूर्ण स्थिति का केवल यही फल हुआ कि सोवियत जनगण को और ज़्यादा मुस्तैदी से काम करने की प्रेरणा मिली।

१९६८ की गर्मियों में केन्द्रीय समिति ने "व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की जन्म शती की तैयारियों की बाबत" एक फ़ैसला स्वीकार किया। तब से अप्रैल, १९७० में जन्म शती की तिथि जनगण के रोज़मर्रे के जीवन में तथा भविष्य की उनकी योजनाओं में केन्द्रबिन्दु बन गई। स्कूली विद्यार्थी तथा विश्वविद्यालयों के छात्र, शहरों और देहातों के श्रमजीवी तथा सोवियत सेना के लोग—सभी इस अत्यंत महत्वपूर्ण घटना की तैयारियों में लग गये। सोवियत वैज्ञानिकों तथा अंतरिक्षयात्रियों ने अन्तरिक्ष उड़ान के दौरान अंतरिक्षयानों को जोड़ने, अंतरिक्ष में इस्पात की वेल्डिंग करने और बाद में

एक साथ तीन अंतरिक्षयान रवाना करने मे अपनी सफलताओ को जो ससार मे पहली बार प्राप्त की गई थी, लेनिन जयती को समर्पित कर दिया। कम्युनिस्ट श्रम आन्दोलन मे भाग लेनेवाले साडे तीन करोड आदमियो ने समस्त श्रमजीवी जनगण का आवाहन किया कि नयी श्रम सफलताओ के जरिये लेनिन जयती मनायें। अग्रणी श्रम-समूहो ने इस अवसर के उपलक्ष मे जो जिम्मेदारिया ली, उनका गहरा सबध आर्थिक सुधार से उत्पन्न मुख्य कार्यभारो से था जिसपर सारे देश मे उन दिनो अमल किया जा रहा था। सबका मुख्य ध्येय वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति को तेज करना, श्रम उत्पादिता मे लगातार वृद्धि करनी तथा पैदावार के गुण को बेहतर बनाना था, उत्पादन दक्षता का स्तर उचा करने के लिए काम के घटो का ज्यादा उपयुक्त प्रयोग करना था। अर्थशास्त्रियो का अनुमान था कि एक मिनट म सोवियत उद्योग लगभग २०० टन इस्पात ६०० टन तेल और १,००० टन कोयला पैदा करता है और प्रत्येक डेढ मिनट पर एक नया ट्रैक्टर तैयार होता है। हर एक मिनट बर्बाद होने का मतलब होगा देश को बीसियो फ्रिज, टेलीविजन सेट, कपडा धोने की मशीनो तथा हजारो जोडे जूतो का नुकसान। और इधर हर क्षण बचाने तथा माल मे किफायत करने से अर्थव्यवस्था को काफी सहायता मिलती है।

लेनिन की शिक्षा है "कम्युनिज्म शुरू तब होता है जब साधारण मजदूर श्रम की उत्पादिता बढाने मे ऐसी उत्साहपूर्ण उत्सुकता का परिचय देते है जो कठिन मेहनत से भयभीत नही होती अनाज के, कोयले, लोहे तथा अन्य चीजो के एक एक छटाक की रक्षा करते है जो व्यक्तिगत रूप से मजदूरो या उनके 'अपने' सगे-सबधियो को नही मिलती, बल्कि उनके 'दूर के' सगे-सबधियो को यानी पूरे समाज को लाखो-करोडो लोगो को मिलती है जो पहले एक समाजवादी राज्य मे और फिर सोवियत जनतत्रो के सघ मे एकत्रित होते है।"* कम्युनिस्ट श्रम की बाबत लेनिन की इस शिक्षा से प्रेरित होकर अगुआ मजदूरो ने सुझाव दिया कि मजदूर अपने अपने पेशे मे सर्वश्रेष्ठ मजदूर की उपाधि के लिए तथा किफायत से कच्चे माल का उपयोग करके उच्च कोटि के माल का उत्पादन करे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २९, पृष्ठ ३९४

२२ अप्रैल, १९७० को लेनिन की जन्म शती यथोचित ढंग से मनाने के लिए यह ध्येय निर्धारित किया गया कि श्रेष्ठतम मजदूरों को चुना जाये, उत्पादन की सफलताओं का खुलासा किया जाये तथा उनके श्रम उत्साह से बाकी मजदूरों को प्रोत्साहित किया जाये।

आर्थिक सुधार अधिकाधिक व्यापक मोर्चे पर कार्यान्वित किया जा रहा था। इससे जनता के सृजनात्मक कार्यकलाप को प्रेरणा मिली। १९७० तक लगभग समस्त सोवियत उद्योग यानी वे उद्यम जिनमें देश की समस्त पैदावार का ९३ प्रतिशत तथा ९५ प्रतिशत से अधिक मुनाफ़ा प्राप्त होता है, नये प्रकार के नियोजन को अपना चुके थे और आर्थिक प्रोत्साहन की नयी व्यवस्था जारी कर चुके थे। जो फैक्टरियां पंचवर्षीय योजना की अवधि के प्रारम्भ में ही नये तरीक़ों को अख़्तियार कर चुकी थीं उन्होंने बड़ी खुशी से अपना अनुभव दूसरों को बताया तथा अपने पीछे आनेवालों को नये तरीक़े सीखने में सहायता की। मास्को में व्लादीमिर इल्यीच फैक्टरी उन फ़ैक्टरियों में थी जिन्होंने सबसे पहले लागत खाता जारी किया, बोनस की कारगर व्यवस्था लागू की, तथा आर्थिक प्रबंध के अध्ययन का पाठ्य-क्रम संगठित किया। नये विनियमों के सिलसिले में प्रोत्साहन कोष (बोनसों, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कामों और गृह-निर्माण के लिए कोष, तथा एक उत्पादन विस्तारण कोष) फैक्टरी के सुपुर्द किये गये। इससे फ़ैक्टरी नवीकरण परिषद, लाइसेंस तथा डिज़ाइन कार्यालयों के काम को अधिक प्रोत्साहन मिला। पंचवर्षीय योजना की अवधि खत्म होने से पहले ही अगुआ मजदूर श्रम उत्पादिता बढ़ाने के लिए स्वयं अपना कार्यक्रम तैयार करने लगे थे। श्रम संगठन के वैज्ञानिक तरीक़ों का अध्ययन तथा उनकी तामील नियमित रूप से की जाने लगी। इन बातों का नतीजा यह हुआ कि सभी योजनाओं की अतिपूर्ति हुई और १९६८ से १९६९ तक भौतिक प्रोत्साहन कोष लगभग तिगुना हो गया। इसके एक अंश का प्रयोग उपकरण का नवीकरण करने के लिए किया गया, एक अंश का बोनसों के लिए और एक तीसरे अंश का प्रयोग एक खेलकूद केन्द्र तथा एक नये संस्कृति भवन का निर्माण करने के लिए किया गया।

जो लोग इस फैक्टरी में जीवन का अधिक ब्योरेवार ज्ञान प्राप्त करना चाहें उन्हें क्रिटर अन्तोनोव द्वारा लिखित एक पुस्तिका "मजदूर होने का गौरव" अवश्य पढ़नी चाहिये। उन्होंने इस फ़ैक्टरी में कोई चालीस

गार काम किया। उनके पिता ने भी यहीं एक टर्नर की हैसियत से काम शुरू किया था। उनके भाई भी यहीं टर्नर थे और बहन डिज़ाइन कार्यालय में काम करती थी। स्वयं अन्नानोव ने दो सौ से अधिक नवीकरण-प्रस्ताव रखे हैं जिनसे देश को लाखों का अतिरिक्त मुनाफा हुआ। उन्हें समाजवादी श्रम वीर की उपाधि मिली। अपनी किताब में उन्होंने अपनी फैक्टरी में काम करनेवालों का हाल लिखा है। साथी मज़दूरों के सृजनात्मक उत्साह पर प्रकाश डालते हुए अन्नानोव ने लेनिन के ये शब्द दिये हैं "सवाल प्रत्येक राजनीतिक चेतनशील मज़दूर के यह महसूस करने का है कि वह स्वयं अपनी फैक्टरी में केवल मालिक ही नहीं बल्कि अपने देश का प्रतिनिधि भी है, सवाल अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करने का है।"*

इस फैक्टरी में कई हज़ार मज़दूर काम करते हैं। पूरी फैक्टरी के प्रति, देश के प्रति ज़िम्मेदारी का महसास उनकी विशेषता है। इसी कारण वे एक के बाद एक लगातार सफलताएं प्राप्त करते, अपने सामने अधिकाधिक उच्चतर मानक स्थापित करते तथा त्रुटियों को नज़रअन्दाज़ करने से इनकार करते हैं। २ अक्तूबर, १९६९ को "प्राव्दा" ने उस फैक्टरी के अगुआ मज़दूरों के एक समूह का एक पत्र छापा जिसका लोगों पर बहुत अच्छा असर पड़ा। और यह स्वाभाविक था। उन्होंने यह सवाल उठाया था कि श्रम अनुशासन के उल्लंघन, अनुपस्थिति तथा खराब काम करने पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिये। दुर्भाग्य से ऐसे कुछ लोग अभी भी रह गये थे। ज़ाहिर है कि ऐसे लोगों की मनोवृत्ति को बदलना कुछ अधिक टन या मीटर उत्पादन कराने से कहीं ज़्यादा कठिन था। इस पुनःशिक्षण का मतलब था नये सामाजिक संबंधों को, काम के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण को तैयार करना।

जब यह फैक्टरी लेनिन जन्म शती प्रतियोगिता में शामिल हुई तो इसने फैसला किया कि आठवीं पंचवर्षीय योजना की प्रतिपूर्ति कुल पैदावार के मामले में ७ नवम्बर, १९७० तक तथा श्रम उत्पादिता के मामले में २२ अप्रैल १९७० तक कर देगी।

अन्य कई फैक्टरियों ने इस फैक्टरी का अनुसरण किया। क्योंकिनो

---

*ब्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, पांचवां रूसी संस्करण, खंड ३९, पृष्ठ ३६९-३७०

रसायन प्लांट द्वारा प्राप्त सफलतायें सारे सोवियत संघ में प्रसिद्ध हो गईं। उस फ़ैक्टरी में १९६८ से १९६९ तक श्रम उत्पादिता दो गुनी हो गई तथा कुल पैदावार में उसी अवधि में ८० प्रतिशत वृद्धि हुई। इसके लिए न तो कोई नया वर्कशाप खड़ा किया गया था और न ही उच्च कौशल के मज़दूर, इंजीनियर और स्नातक विशेषज्ञ लाये गये थे। बात बस इतनी थी कि इस फ़ैक्टरी को एक-एक वर्ष करके सारी पंचवर्षीय अवधि के लिए एक स्थायी उत्पादन योजना दे दी गई थी जिसमें सालाना लक्ष्य स्पष्ट रूप से दिये हुए थे, और साथ में एक स्थायी वेतन कोष दे दिया गया था जो विगत १९६७ वर्ष से अधिक नहीं था। मानो फ़ैक्टरी को नियत काम के लिए भुगतान में एक चेक दे दिया गया था, शर्त यह थी कि इस काम के लिए *ख़र्च की रक़म स्थायी रहेगी चाहे इस काम के लिए कितने ही आदमी क्यों न रखे जायें।* ऊपर से देखने में तो यह बहुत सहज लगता था मगर इसकी तह में जटिल आर्थिक, सामाजिक और कभी-कभी शुद्ध मनोवैज्ञानिक समस्याएं निहित होती थीं, तकनीकी कठिनाइयों की बात तो अलग रही।

इस रासायनिक प्लांट के अनेक मज़दूरों के दादा और कुछ के बाप को अभी भी वह समय याद है जब नौकरी से निकाला जाना और बेरोज़गारी मज़दूरों के जीवन की आम घटना थी। क्रांति के बाद स्थिति बदली। जब किसी फ़ैक्टरी में छंटनी करने की ज़रूरत होती तो दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न होता। श्चोकिनो में जिस-जिसको काम से मुक्त किया गया, उसे कई अन्य कामों में से किसी एक को चुन लेने को कहा गया – चाहे वे इसी तरह की किसी और फ़ैक्टरी में काम करें, निर्माण मज़दूरों के जत्थे में शामिल हो जायें, अपनी योग्यता बढ़ायें या किसी और काम की ट्रेनिंग हासिल करें, इत्यादि। ऐसी स्थितियों में ख़ास ध्यान इस बात पर दिया गया कि जिन लोगों को काम से हटाया जा रहा है उनकी आयु क्या है, परिवार के लोग जो उनपर निर्भर हैं कितने हैं, पिछले काम से मुक्त होने-वालों का वेतन क्या है, आदि। फ़ैक्टरी के प्रबंधकर्ता तथा सार्वजनिक संगठन नया काम दिलाने में उनकी सहायता करते। इस प्रकार श्रम नियमों की संहिता का कड़ाई के साथ पालन किया गया। योग्यताक्रम निर्धारण में अधिक सुधार किया गया, आधुनिक तकनीक जारी की गई और मज़दूरों को प्रोत्साहन दिया गया कि अपनी पेशेवर दक्षता बढ़ाने के लिए अपने हुनर के अलावा और भी कई हुनर सीख लें। लगभग दो वर्ष की अवधि

मे मजदूरों की संख्या मे ६०० की कमी हो गई, बाकी के वेतन मे औसतन २५ प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा मजदूरो की तकनीकी योग्यता मे स्पष्टतः उन्नति हुई। उच्चतर श्रम उत्पादिता की प्रतियोगिता मे यह प्लाट अनगिनत अन्य कारखानो मे प्रथम था।

श्रम उत्पादिता मुख्य उद्देश्य के रूप मे कार्यसूचि मे हमेशा ही शामिल थी मगर अब आर्थिक सकेताको की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। वह समय अब पीछे छूट गया था जब देश मे कई प्रकार की वस्तुओ का अभाव रहा करता था। फैक्टरियो को अब सोवियत सघ की मत्रि परिषद की ओर से ऐसी वस्तुओ की सूची दे दी जाती थी जिन्हें योजना से अधिक पैदा करने की उनको मनाही थी। विशेष राज्य आयोगो द्वारा यह प्रमाण पत्र दिया जाना आम दस्तूर बन गया कि माल राज्य मानक के अनुसार है, श्रेष्ठतम माल के लिए उत्कृष्ट गुण का द्योतक एक विशेष त्रिकोणात्मक चिह्न जारी किया गया। सबसे पहली फैक्टरी जिसको अप्रैल, १९६७ मे यह चिह्न मिला, वह थी व्लादीमिर इल्यीच फ़ैक्टरी जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। इसकी बनायी बिजली मोटरे अतर्राष्ट्रीय मानका के अनुसार थी तथा अपनी कार्यक्षमता, आकार और वजन मे बेहतरीन वैदेशिक माडेलो से अच्छी थी। दर्जनो देश उनका आयात करने लगे हैं।

१९७० मे क्रेनो, एक्सकेवेटरो, टर्बाइनो, कुछ प्रकार की घडियो, टेलीविजन तथा रेडियो सेट, मोजे बनियान आदि को, कुल मिलाकर २,५०० वस्तुओ को जो देश-विदेश मे ख्यातिप्राप्त हैं – यह चिह्न प्रदान किया गया। इस आकडे से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस चिह्न के लिए वस्तुओ को चुनने की प्रक्रिया कितनी कडी है। इस चिह्न की बडी प्रतिष्ठा है और उसे पाने की प्रतियोगिता से राज्य को, अलग-अलग फैक्टरियो तथा समाजवादी समाज मे प्रत्येक श्रमजीवी को काफी लाभ होता है।

समाजवादी प्रतियोगिता की वर्तमान अवस्था की विशेषता ही यह है कि इसमे पूरे उत्पादन के हित इसमे सलग्न प्रत्येक व्यक्ति के हित से जुडे हुए हो। इसमे आर्थिक प्रगति के तथा श्रमजीवी जनगण के सास्कृतिक तथा सामाजिक राजनीतिक कार्यकलाप को बढावा देने के ठोस प्रयत्न शामिल हैं। १९६६ मे ट्रेड-यूनियनो ने एक फैसला किया जिसमे केवल अच्छे काम के लिए कम्युनिस्ट श्रम के अगुआ मजदूर की उपाधि देने की निन्दा की

गई। अगुआ मजदूर के लिए यह भी जरूरी है कि वह अध्ययन करे, अपने सांस्कृतिक स्तर तथा तकनीकी योग्यता को बढ़ाये, फ़ैक्टरी के बाहर अपने आचरण से मिसाल क़ायम करे तथा सार्वजनिक संगठनों के कामों में सक्रिय भाग ले।

लेनिनग्रादवालों की पहलक़दमी के असर से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अनेक शाखाओं में सामाजिक विकास नियोजन ने जड़ पकड़ ली। कहा जा सकता है कि सामाजिक नियोजन तकनीकी तथा आर्थिक योजनाओं का ही सिलसिला तथा अंतिम अवस्था है। यह उत्पादन के उद्देश्यों को मजदूरों के हितों तथा आवश्यकताओं से जोड़ने का काम देता है। १९६६–१९७० की अवधि के लिए इस तरह की जो योजनाएं तैयार की गईं, वे साधारणतया कई भागों में बंटी हुई थीं: काम की स्थितियों में सुधार, पेशों तथा हुनरों की व्यवस्था में सुधार, प्रशासन के रूपों का और अधिक विकास तथा शैक्षणिक स्तरों और तकनीकी योग्यताओं में उन्नति आदि। योजनाओं में निर्धारित लक्ष्यों पर विचार किया जाता तथा अब तक हुए काम के नतीजों का विश्लेषण किया जाता था। ऐसे कार्यक्रमों की तामील से उत्पादन में "मानवीय तत्व" के प्रति समाजवादी समाज के विशेष दृष्टिकोण की झलक मिलती थी तथा विकास के आम उद्देश्यों को उस ख़ास उद्यम के ठोस कार्यभारों तथा सम्भावनाओं से जोड़ने में सहायता मिलती थी। यह बात अकारण नहीं थी कि सामाजिक नियोजन का ख़्याल अगुआ कारख़ानों के लोगों को आया और कम्युनिस्ट श्रम आन्दोलन के अगुआ मजदूरों ने इसकी तामील में सबसे अधिक दिलचस्पी ली।

कम्युनिस्ट निर्माण के विकास से संबंधित ऐसी ही तबदीलियां सोवियत ग्रामीण जीवन में भी देखने में आ रही थीं। अधिक संख्या में कृषि मशीनों की सप्लाई, अधिक बोनस तथा कृषि कर्मियों की जरूरतों का अधिक ख़्याल ऐसी बातें थीं जिनके साथ-साथ सामूहिक तथा राजकीय फ़ार्मों के मजदूरों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मुख्य प्रगति हुई। उदाहरण के लिए हम बेलोरूसी सामूहिक फ़ार्म "नोवी पीत" (जीवन का नया पथ) को लें। १९६९ में इसके अमले में ७१९ आदमी थे। इसका मतलब यह है कि १९५९ की तुलना में एक सौ आदमी कम हो गये थे मगर फ़सल उससे दो गुनी होती थी और सामूहिक फ़ार्म में, मिसाल के लिए, दूध का उत्पादन दो गुने से अधिक था। अगरचे खेती के लिए जमीन उतनी ही थी मगर उसपर काम

१९६९ मे बिल्कुल भिन्न तरीके से हो रहा था। पहले सामूहिक किसानो को खेतो मे आधे से अधिक काम हाथ से करना पडता था। मगर १९६९ मे ९५ प्रतिशत काम मशीनें करती थी और दुगुने से अधिक खाद का प्रयोग किया जा रहा था। १९६९ मे फार्म के अमले मे एक प्रधान इजीनियर, एक श्रमशक्ति इजीनियर, एक अर्थशास्त्री, एक वास्तुशिल्पी शामिल थे तथा विशेषज्ञो की आम सख्या १९५९ की तुलना मे लगभग तिगुनी थी। पहले ही सामूहिक किसान खेलकूद मे बडे पैमाने पर भाग लेने लगे थे लेकिन अब सिखाने के लिए उन्होने एक पेशेवर प्रशिक्षक रख लिया था तथा स्थानीय क्लब के अलावा एक सस्कृति भवन का भी निर्माण हो गया था। इन दस वर्षों के दौरान फार्म मे दिये जानेवाले वेतन मे औसतन १५० प्रतिशत वृद्धि हो चुकी थी। पशुपालक महीने मे १४०–१६० रूबल तथा ट्रैक्टर चालक २५० रूबल तक कमा रहे थे।

क्रास्नोदार इलाके के फार्म और अधिक समृद्धिशाली है क्योंकि वहा की मिट्टी तथा आबोहवा ज्यादा मुनासिब है। १९७० तक उस इलाके मे सामूहिक फार्मों की आमदनिया १०० करोड रूबल से बढ गई थी (जिसका मतलब था दस वर्ष के अर्से मे १०० प्रतिशत वृद्धि)। खर्च की एक बडी मद थी—डेरियो, स्कूलो, शिशु भवनो, क्लबो सडको का निर्माण (बिजली सप्रेषण लाइनो तथा सचार सुविधाओ का निर्माण सरकारी खर्चे पर किया जाता है)। स्थानीय फार्मों ने पैसा बर्बाद नही जाने देने तथा औद्योगिक श्रम विधि का प्रयोग करने के उद्देश्य से एक अतर्फार्मीय निर्माण सगठन स्थापित किया जिसके पास १९७० के प्रारम्भ तक अपना सीमेंट कारखाना, ईंट का भट्ठा, कक्रीट और अन्य चीजें बनाने के कारखाने मौजूद थे।

इसी प्रकार के सगठन देश के सभी भागो मे कायम किये गये और चालू हो गये। यह सामूहिक तथा राजकीय फार्मों की सम्पत्ति को एक दूसरे के और समीप लाने की प्रक्रिया का अग था। देश भर मे सामूहिक फार्म बडे पैमाने के कृषि उद्यम बनते जा रहे थे जिनकी अपनी आधुनिक मशीनें थी तथा अमले मे सुयोग्य कार्यकर्ता थे। १९६९ मे एक औसत सामूहिक फार्म के पास लगभग ७,४०० एकड बोवाई की हुई जमीन थी, १ हजार से अधिक पशु, ६०० सूअर तथा १,५०० भेडें थी। कोई ५० से अधिक

ट्रैक्टर, दर्जनों हार्वेस्टर, लारियां तथा बिजली के मोटर आदि थे। १९६९ में औसतन प्रत्येक राजकीय फ़ार्म के पास १७,००० एकड़ बोवाई की जमीन थी, २,००० से अधिक पशु, लगभग १,००० सूअर और ४,००० भेड़ें थीं। सोवियत कृषि के पास कुल मिलाकर (यानी राजकीय तथा सामूहिक दोनों फ़ार्मों के पास) १८,००,००० ट्रैक्टर, ५,८०,००० अनाज हार्वेस्टर तथा १० लाख से अधिक लारियां थीं।

ग्रामीण आबादी तथा समस्त सोवियत जनगण के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना सामूहिक किसानों की तीसरी अखिल संघीय कांग्रेस थी जो मास्को में नवम्बर, १९६९ में आयोजित की गई। कांग्रेस ने सामूहिक फ़ार्म की आदर्श नियमावली स्वीकार की। इसे कांग्रेस से बहुत पहले प्रकाशित कर दिया गया था तथा अख़बारों और विभिन्न बैठकों में उनपर व्यापक विचार-विमर्श किया गया था। नियमावली में ठीक-ठीक शब्दों में बता दिया गया था कि सामूहिक फ़ार्मों के मुख्य कार्यभार तथा सामूहिक किसानों के दायित्व तथा अधिकार क्या हैं। उसमें उन तबदीलियों का सारांश पेश किया गया जो सातवें दशक के अंत तक सामूहिक किसानों के जीवन में उत्पन्न हो चुकी थी और जिन्होंने कृषि की उत्पादक शक्तियों के और आगे के विकास के द्वार खोल दिये थे। कांग्रेस के कार्य तथा उसके द्वारा स्वीकृत दस्तावेजों के तीन मुख्य पहलू थे। पहला था राजनीतिक पहलू, क्योंकि सामूहिक फ़ार्म के जनवाद को ज्यादा कारगर बनाने के लिए काम किया जा रहा था: कांग्रेस ने निश्चय किया कि सभी ज़िलों, प्रदेशों तथा जनतंत्रों में सामूहिक फ़ार्मों की परिषदों का चुनाव किया जाये तथा अखिल संघीय परिषद का चुनाव सीधे कांग्रेस द्वारा किया जाये और उसके १२५ सदस्य हों। परिषदों को आदेश दिया गया कि सामूहिक फ़ार्मों के कार्यकलाप से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण सवालों पर सामूहिक रूप से विचार करें, उत्पादन के संगठन में विभिन्न फ़ार्मों द्वारा प्राप्त अनुभव को एकत्रित करें तथा उत्पादन-वृद्धि को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से रिज़र्व साधनों के पूरे उपयोग के लिए सिफ़ारिशें तैयार करें। नयी नियमावली में यह स्पष्ट रूप से बताया गया कि ब्रिगेड नेताओं, डेरी निदेशकों तथा अन्य विभागीय नेताओं का चुनाव क्योंकर किया जायेगा (पहले सामूहिक फ़ार्म बोर्ड द्वारा उनकी नियुक्ति की जाती थी)। सामूहिक फ़ार्मों को यह अधिकार दिया

गया कि वे किसी भी व्यक्ति को निर्वाचित सस्थाओ से या उसके पद से, विश्वास योग्य साबित न होने पर पदच्युत कर सकते है। अगर सामूहिक किसानो की आम बैठक मे तय किया जाये तो सामूहिक फ़ार्म बोर्ड के अध्यक्ष तथा अन्य सभी सदस्यो का निर्वाचन गुप्त मतदान द्वारा किया जा सकता है।

काग्रेस के काम का दूसरा पहलू आर्थिक था। काग्रेस ने नयी व्यवस्था जारी की जिसके अनुसार सामूहिक फार्म स्वय अपनी बोआई की योजनाए, फसल के लिए लक्ष्य तथा अन्य कार्यभार तय कर सकते है। पहले यह सब कुछ राज्य के अख्तियार मे था। अब राज्य आगे आनेवाले कई सालो के लिए फार्म की पैदावार की खरीदारी के अपने आर्डर दे दिया करता है। नियमावली मे ठीक-ठीक शब्दो मे सामूहिक फार्मो द्वारा अपने सहायक उद्यमो तथा उद्योगो को विस्तारित करने और राज्य तथा सामूहिक फार्मो के बीच के सयुक्त सगठनो की स्थापना करने के अधिकारो का वर्णन किया गया है। उसमे यह भी बताया गया है कि सुनिश्चित नियमित भुगतानो के जारी होने के सबध मे प्रत्येक फार्म की कुल पैदावार तथा आय के बटवारे का नया तरीका क्या होगा।

जहा तक काग्रेस के काम के तीसरे, सामाजिक पहलू का सबध है, वह उन प्रयासो मे निहित था, जिनका उद्देश्य सामूहिक किसानो के सामाजिक निर्वाह की व्यवस्था को नियन्त्रित करना था। विगत नियमावली मे इसको बाबत कोई उपबध नही था। काग्रेस ने पेंशन, भत्ते, आदि निर्धारित करने की पद्धति का जो १९६५-१९६९ मे निरूपित हुई थी, अनुमोदन किया तथा उन सामूहिक फार्मो को अपनी स्वीकृति दी जो अपने पुराने कर्मियो को राज्य पेंशनो के अतिरिक्त अनुपूरक भत्ता देना तथा उनके लिए वृद्धाश्रम का निर्माण करना चाहते थे।

सामूहिक फार्म किसानो के लिए सदा ही कम्युनिज्म की पाठशाला रहे थे और नयी नियमावली को प्रत्येक धारा इसकी साक्षी थी। इसमे काफी ब्योरेवार बताया गया था कि सामूहिक फार्मो के उत्पादन सबधी कार्यभार क्या होगे बल्कि यह भी कि कम्युनिस्ट शिक्षा मे उनकी भूमिका क्या होगी।

सामूहिक किसानो की तीसरी अखिल सघीय काग्रेस ने कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार को आश्वासन दिया कि सोवियत किसान मजदूर

वर्ग के साथ, समस्त सोवियत जनगण के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अग्रसर है तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के गिर्द और अधिक एकत्रित हुए हैं, और लेनिनवाद के झंडे तले कम्युनिज्म के निर्माण की नयी सफलताओं की दिशा में आगे बढ़ते जायेंगे।

ज्यों-ज्यों लेनिन शताब्दी निकट आती गई, उत्साह की राष्ट्रव्यापी लहर जनगण में फैलती गई। इसकी ठोस अभिव्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण योजना-लक्ष्यों की अतिपूर्ति में, श्रमजीवी जनगण के जीवन-स्तर में काफ़ी सुधार में तथा आबादी के सभी हिस्सों की राजनीतिक चेतना की अधिक वृद्धि में हुई। अप्रैल, १९७० में जन्म शताब्दी समारोह देश भर में शहरों तथा गांवों में मनाये गये। अगुआ श्रम समूहों को जन्म शती का स्मरणीय प्रशंसापत्र प्रदान किया गया। समाचारपत्रों ने लेनिन जन्मशती के सम्मान में समाजवादी प्रतियोगिता के विजेताओं के बारे में नियमित रूप से घोषणाएं प्रकाशित कीं। उस महीने की एक यादगार घटना थी अखिल संघीय सुब्बोत्निक। यह श्रमदान ११ अप्रैल, १९७० को उसी दिन संगठित किया गया जब ५१ वर्ष पूर्व संसार में पहली बार सुब्बोत्निक हुआ। तब मास्को सोर्तिरोवोच्नाया रेलवे स्टेशन के मजदूरों द्वारा की गई पहलक़दमी को लेनिन ने एक ऐतिहासिक महत्व की घटना बताया था। मजदूरों के उस छोटे से जत्थे ने जब कई घंटों के काम के बाद निशुल्क कई इंजनों की मरम्मत की थी तो उन्होंने उत्साह और लगन के अलावा किसी और चीज का भी प्रदर्शन किया था। गृहयुद्ध तथा हस्तक्षेपकारी युद्ध की भीषण स्थितियों में और आर्थिक अव्यवस्था के बावजूद काम के प्रति कम्युनिस्ट भावना निरूपित होने लगी थी क्योंकि यह पहला अवसर था कि लोग शोषकों के निकाले जाने के बाद अपने हित में, अपने समाज के हित में काम करने लगे थे। पचास वर्ष बाद ११ अप्रैल, १९६९ को करोड़ों सोवियत जनगण ने कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक में भाग लिया। यह सुब्बोत्निक ऐसे समय आयोजित किया गया था जब देश की शक्ति अधिकाधिक बढ़ रही थी और उसने एक ऐसे जनगण की नैतिक दायित्व की भावना की अभिव्यंजना का काम किया जिन्होंने मुक्त श्रम के आनन्द का अनुभव किया था। उस दिन की कमाई की सारी रक़म शांति कोष तथा अस्पतालों और चिकित्सा केन्द्रों के निर्माण के लिए दे दी गई। उस सुब्बोत्निक के अनुभव

को लेनिन जन्म शती वर्ष मे और विकसित किया गया। ११ अप्रैल, १९७० को सारा देश काम करने निकल आया।

सुब्बोत्निक के बाद के दिन नयी सफलताओ के दिन थे और २२ अप्रैल को हजारो अगुआ मजदूरो ने अपना वायदा पूरा किया उनमे से कुछ ने अपने पचवर्षीय उत्पादन ध्येय को पूरा किया, कुछ ने अपनी उत्पादनशीलता को उस स्तर पर पहुचाया जिसपर उन्होने जन्म शती तक पहुचने की प्रतिज्ञा की थी और कुछ ने उस दिन बचाया हुआ सामान इस्तेमाल करते हुए पूरी पाली का काम किया। "हम लेनिन की शिक्षा के अनुसार काम और अध्ययन करेगे तथा जीवन व्यतीत करेगे।" यह था नारा उस दिन का तथा उससे पहले के दिनो का।

सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण ने १९७० की राष्ट्रीय आर्थिक योजना नियमित समय से पहले पूरी की। उस वर्ष के दौरान जो काम किया गया उसके महत्व का अधिक ठोस चित्र प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित तुलना की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है १९७० मे औद्योगिक उत्पादन तमाम युद्धपूर्व पचवर्षीय योजनाओ के यानी १९२९–१९४१ की अवधि के उत्पादन के बराबर था। यह मानो सफल चरम बिन्दु था उस अभियान का जिसका उद्देश्य १९६६ मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस मे स्वीकृत १९६६–१९७० की अवधि के लिए निर्देशो को पूरा करना था।

विगत पाच वर्षों की अवधि मे कम्युनिस्ट पार्टी तथा समस्त सोवियत जनगण के बहुपक्षीय कार्यकलाप की सारी उपलब्धि का साराश सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस मे पेश किया गया जो १९७१ के मार्च के अत तथा अप्रैल के प्रारम्भ मे बुलायी गयी थी। काग्रेस के पूर्वकार्य के रूप मे देश के सभी जिला, शहरो तथा प्रदेशो मे स्थानीय पार्टी सम्मेलन किये गये और इनके बाद सभी सघीय जनतत्रो मे पार्टी काग्रेसे हुई। विगत पाच वर्ष की अवधि के परिणामो का विश्लेषण करते हुए काग्रेस के डेलीगेटो तथा पार्टी पत्रो ने इस बात पर जोर दिया कि इस अवधि की विशेषता केवल यही नही थी कि उसमे अनेक महत्वपूर्ण काम पूरे किये गये थे बल्कि यह भी थी कि इसकी बदौलत अनेक महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन हुए थे। उस अवधि मे सोवियत सघ मे एक आर्थिक सुधार जारी किया गया था और भरपूर प्रयास किया गया था कि सोवियत

समाज के सर्वतोमुखी विकास को तेज किया जाये। १९६६–१९७० की अवधि में सोवियत अर्थव्यवस्था का विकास विगत पंचवर्षीय अवधि की तुलना में अधिक कारगर ढंग से हुआ था। राष्ट्रीय आय – जो संचिति तथा उपभोग का मुख्य साधन है – १९६५ की तुलना में १९७० में ४१ प्रतिशत अधिक थी। १९६१–१९६५ की अवधि की तुलना में अब राष्ट्रीय आय की औसत वार्षिक वृद्धि दर अधिक थी। इसी लिए यह सम्भव हो सका कि सोवियत जनगण की भौतिक समृद्धि के लिए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निर्धारित मुख्य ध्येयो की पूर्ति ही नही बल्कि अतिपूर्ति भी की जाये। वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में ३३ प्रतिशत वृद्धि हुई हालाकि निर्धारित ध्येय केवल ३० प्रतिशत था। उसी अवधि में मजदूरो तथा दफ़्तरी कर्मचारियों के वार्षिक प्रतिमास औसत वेतन मे २६ प्रतिशत वृद्धि हुई। आठवी पंचवर्षीय योजना की अवधि में अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो में निम्नतम वेतन बढा तथा मजदूरों और दफ़्तरी कर्मचारियों के वेतन मे आय कर की वसूली में कमी हुई, पाच दिन का कार्य सप्ताह जारी किया गया, श्रमजीवियों के लिए छुट्टियां बढाई गईं। सामूहिक किसानों के वेतन में ४२ प्रतिशत वृद्धि हुई।

इन वर्षो में सार्वजनिक उपभोग कोष पहले से बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे। जनता के जीवन स्तर मे वृद्धि का यह एक महत्व-पूर्ण साधन था। सोवियत संघ मे सभी परिवार इस कोष से लाभान्वित होते हैं। १९६५ और १९७० के बीच की अवधि मे सार्वजनिक उपभोग कोष से आबादी के प्रति व्यक्ति के लिए होनेवाला भुगतान १८२ रूबल से बढकर २६२ रूबल हो गया था। इन भुगतानो तथा अन्य सुविधाओ को देखते हुए औद्योगिक मजदूरो तथा दफ़्तरी कर्मचारियो की औसत मासिक आमदनी १९७० में १९४ रूबल थी।

ठीक यही कारण था कि खाद्य पदार्थ तथा औद्योगिक माल के उपभोग में काफ़ी वृद्धि हुई और आठवी पंचवर्षीय योजना काल मे माल की कुल बिक्री ५० प्रतिशत अधिक हुई। सबसे ज्यादा माग महंगे खाद्य पदार्थो तथा टिकाऊ सामानों की बढी। इसका अर्थ यह था कि सोवियत जनगण के उपभोग के ढर्रे में स्पष्टतः सुधार नजर आया।

उसी अवधि में गृह-निर्माण के क्षेत्र मे नयी सफलताएं प्राप्त हुईं। १९६६–१९७० की अवधि में लगभग साढे पांच करोड लोगो को नया निवास-स्थान दिया गया। इनमें से ९० प्रतिशत परिवारों को अलग-अलग

फ्लैट दिये गये जिनमे तमाम आधुनिक सुविधाए मौजूद थी। दूसरे शब्दो मे पाच वर्षों के दौरान जितना गृह-निर्माण किया गया, वह दस-दस लाख आबादी के ५० बडे नगरो के बराबर था।

स्वाभाविक ही है कि ये सारे आकडे आबादी के प्रत्येक सदस्य को नही मालूम रहे होगे लेकिन सोवियत सघ मे हर व्यक्ति अपने रोजमर्रे के अनुभव मे यह महसूस कर रहा था कि आठवी पचवर्षीय योजना की पूर्ति के फलस्वरूप विराट पैमाने पर उपलब्धिया मिली है। जाहिर है कि हर आदमी को नया फ्लैट नही मिला और न हर आदमी को ट्रेड-यूनियनो के स्वास्थ्य निवासो मे या अवकाश गृहो मे निशुल्क रहने का अवसर मिला। लेकिन निशुल्क चिकित्सा-सेवा की सुविधाओ मे पिछले वर्षों मे बडा सुधार हुआ है और इसका फायदा हर सोवियत परिवार को पहुच रहा है। फिर कोई फैक्टरी ऐसी नही थी जहा काम की स्थिति मे इस अवधि मे सुधार नही हुआ हो। कई बार सरकार ने शिक्षा सबधी सामानो तथा घरेलू उपभोग के सामान का मूल्य कम किया। शिशु भवनो, स्कूलो, नये उच्च शिक्षा सस्थानो का निर्माण अभूतपूर्व पैमाने पर हुआ। दर्जनो अत्यत आधुनिक क्रीडा केन्द्रो का भी निर्माण किया गया। इस सूचि का कोई अत नही, लेकिन यहा इतना ही कह देना काफी होगा कि अब जबकि सोवियत सघ मे समाजवाद को पूर्ण तथा अतिम विजय प्राप्त हो चुकी है, सोवियत जनगण अधिकाधिक सोवियत जीवन पद्धति के सुलाभो का अनुभव करने लगे है।

जनगण की भौतिक समृद्धि मे सुधार के सबध मे विशेष उपलब्धियो का विश्लेषण करने पर कम्युनिस्टो तथा गैर-पार्टी सदस्यो ने देखा कि वे उद्योग, कृषि तथा पूजीगत निर्माण की ऊची विकास गति, का सीधा परिणाम है। १९६५ की तुलना मे १९७० मे औद्योगिक पैदावार की मात्रा ५० प्रतिशत अधिक थी। सोवियत अर्थव्यवस्था के मुख्य उत्पादन कोषो मे भी ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। १९६६ – १९७० की अवधि मे जो वृद्धिया हुई, वे देश की १९५५ की, उस समय की सपूर्ण उत्पादन क्षमता से अधिक थी जबकि सोवियत सघ मे ससार के प्रथम कृत्रिम भू उपग्रह का निर्माण कार्य शुरू हुआ था जो १९५७ के अत मे छोडा गया था।

उद्योग और सपूर्ण अर्थव्यवस्था की उच्च तथा स्थायी विकास गति सोवियत आर्थिक विकास की सबसे बडी विशेषता है। इसका सबूत आठवी पचवर्षीय

योजना सहित किसी भी अवधि के आंकड़ों के विश्लेषण से मिल सकता है, जब कि औद्योगिक उत्पादन की विकास दर के लिहाज से सोवियत संघ विश्वास के साथ संयुक्त राज्य अमरीका तथा ब्रिटेन जैसे अत्यंत विकसित देशों से बढ़ जाता गया और इस तरह अपने तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच प्रति व्यक्ति उत्पादन के फ़र्क़ को निरंतर कम करता गया।

आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सामाजिक उत्पादन का पैमाना और भी बढ़ा, अर्थव्यवस्था की कड़ियों का संबंध और पेचीदा होता गया, तथा विज्ञान और प्रविधि ने और तेज़ गति से क़दम आगे बढ़ाया। इन सब के लिए ज़रूरी था कि आर्थिक नियोजन तथा प्रबंध में और सुधार किया जाये। जैसा कि स्वयं लेनिन ने बताया था, आर्थिक प्रबंध ही ठीक वह चीज़ है जो व्यावहारिक स्तर पर उन सम्भावनाओं को सुनिश्चित कर सकती है जिनसे "वैज्ञानिक आधार पर सामाजिक उत्पादन तथा वितरण का व्यापक विस्तार हो, तथा उनको श्रमजीवी जनगण के जीवन को सुविधा-जनक बनाने और उनकी समृद्धि में जहां तक हो सके अधिकाधिक सुधार करने के लक्ष्यों के वास्तव में अधीनस्थ"* किया जाये। इस दृष्टिकोण से हाल में जारी किये गये आर्थिक सुधार ने मेहनतकश जनगण के लिए अतिरिक्त भौतिक प्रोत्साहन उपलब्ध करने में, आर्थिक लागत खाता को तरक़्क़ी देने में तथा अलग-अलग उद्यमों की पेशक़दमी तथा स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में और उसके साथ-साथ संकेन्द्रित नियोजन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आर्थिक सुधार के ज़रिये श्रमजीवी जनता के व्यापक भागों को कम्युनिस्ट निदेशन के काम में शरीक करने में, भौतिक ही नहीं बल्कि नैतिक प्रोत्साहनों की भूमिका को भी बढ़ाने में तथा दोनों में सही संतुलन क़ायम करने में सहायता मिली।

आर्थिक सुधार की शुरूआत, अप्रयुक्त पड़े रिज़र्व के इस्तेमाल तथा नयी प्रविधि के उपयोग से १९६६-१९७० की अवधि में सामाजिक श्रम की उत्पादिता में ३७ प्रतिशत वृद्धि हुई।

कृषि में भी बड़े गुणात्मक परिवर्तन देखने में आये। फ़सलों की उपज में वृद्धि हुई और पशुपालन में भी काफ़ी विस्तार हुआ। कुल कृषि उत्पादन

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३६, पृष्ठ ३८१

की औसत सालाना मात्रा विगत पाच वर्ष की अवधि के १२ प्रतिशत की तुलना मे २१ प्रतिशत बढी। १९७० म खासकर बहुत पैदावार हुई। अनाज की फसल १८ करोड ९० लाख टन से अधिक हुई और कपास की ६९ लाख टन। सोवियत कृषि के इतिहास म इतनी बडी फसल पहले कभी नही हुई थी।

१९६६–१९७० की अवधि की उपलब्धियो का साराश निकालते हुए सोवियत नर-नारियो ने सोवियत विज्ञान तथा प्रविधि की उपलब्धियो की ओर विशेष ध्यान दिया। सोवियत अतरिक्ष अनुसधान कार्यक्रम देश के समस्त जनगण के लिए गौरव की वस्तु है जिसकी ओर वे बराबर ध्यान देते हैं। उनके नजदीक वह सोवियत सघ की भौतिक और बौद्धिक प्रगति का प्रतीक है। इस अनुसधान कार्यक्रम मे केन्द्रीय स्थान चद्रमा तथा सौरमडल के ग्रहो के अध्ययन का है जो स्वचालित साधनो की सहायता से किया जाता है। ये स्वगामी साधन मानव सहित अतरिक्षयान से अधिक सस्ते और अधिक विश्वस्त होते हैं। वे उन क्षेत्रो से जहा अभी मनुष्य को भेजना असम्भव या बहुत खतरनाक है, पृथ्वी के पास अत्यत मूल्यवान वैज्ञानिक मसाला भेजते हैं। इन्ही साधनो से काम लेकर चद्रमा शुक्र तथा मगल ग्रहो का अध्ययन किया जा रहा है। सितम्बर, १९७० मे एक स्वचालित स्टेशन भेजा गया और पहली बार स्वचालित उपकरणो की सहायता से चद्रमा की मिट्टी के नमूने पृथ्वी पर लाये गये।

१९७० के अत मे इस क्षेत्र मे एक अनुपम उपलब्धि हुई। यह सोवियत स्वचालित अतरिक्ष स्टेशन "लूना-१७" की उडान थी। १० नवम्बर को वह चद्रमा पर (वर्षा सागर के क्षेत्र मे) ससार का सबसे पहला स्वप्रणोदित अतरिक्ष रोबट ले गया जो वहा अनुसधान कार्य करेगा। इसे "लूनोखोद १" (चद्रमा पर्यटक) कहा जाता है। वह ४ लाख किलोमीटर की दूरी पर वैज्ञानिको के आदेश पूरा करता है। उसने अपनी प्रथम चद्रमा यात्रा का नक्शा बनाते हुए चद्रमा की चट्टानो अतरिक्ष किरणो तथा विकिरण के प्रभावो की बाबत महत्वपूर्ण सूचना पृथ्वी को भेजी। अतरिक्ष पर विजय मे यह एक महत्वपूर्ण नया कदम था।

सोवियत अतरिक्ष कार्यक्रम के एक और महत्वपूर्ण पहलू का उल्लेख यहा कर देना चाहिए। यह है सोवियत अनुसधान वैज्ञानिको तथा अन्य देशो के वैज्ञानिको का सहयोग। १९६९ मे एक कृत्रिम उपग्रह "इटरकास्मास १"

सोवियत संघ की धरती से छोड़ा गया। इसपर जो उपकरण भेजा गया, इसे जर्मन जनवादी जनतंत्र, सोवियत संघ और चेकोस्लोवाकिया ने मिलकर तैयार किया था। स्पुतनिक की खोजों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने में बल्गारिया, हंगरी, पोलैंड तथा रूमानिया के वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया। समाजवादी देशों के प्रतिनिधि इस क्षेत्र में १९७० के पूरे साल परस्पर सहयोग करते रहे।

सोवियत संघ ने अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण प्रयोग में सहयोग को हमेशा प्रोत्साहन देने का प्रयास किया है। इसका परिचय इस बात से भी मिला कि "लूनोखोद-१" के परीक्षण में कई ऐसे उपकरणों का उपयोग किया गया जिनका निर्माण फ़्रांस में सोवियत संघ तथा फ़्रांस के बीच वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक सहयोग के समझौते की शर्तों के अनुसार किया गया था। गत पांच वर्षों के दौरान सोवियत तथा अमरीकी अंतरिक्षयात्रियों में भी भेंट-मुलाक़ातें हुई हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस की पूर्ववेला में हुई बैठकों में देश के आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन के संबंध में जितने सवालों पर विचार किया गया, उनका कोई अंत नहीं था। कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की अन्दरूनी तथा वैदेशिक नीति के सभी पहलुओं पर विचार किया गया। इससे एक बार फिर सोवियत जनगण की राजनीतिक परिपक्वता का, कम्यूनिज्म के आदर्शों के प्रति निष्ठा तथा समस्त संसार में शांति को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए उनकी गहरी इच्छा का परिचय मिला। कम्युनिस्टों ने कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार के कार्यकलाप का पूर्ण अनुमोदन किया तथा सोवियत समाज की आगे की प्रगति का मार्ग निर्दिष्ट करने में सहायता दी।

कांग्रेस के कार्यक्रम में १९७१–१९७५ की अवधि के लिए पंचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के निदेश शामिल थे। इस संबंध में आर्थिक समस्याओं पर विचार-विमर्श बहुत महत्वपूर्ण था। नयी पंचवर्षीय योजना को बहुत ब्योरेवार तैयार किया गया था। इसकी मुख्य दिशाएं केन्द्रीय समिति के १६ मई, १९७० के सन्देश में दे दी गई थीं जो सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के निर्वाचन की तैयारी के सिलसिले में जारी किया गया था। जुलाई, १९७० में केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने पंचवर्षीय योजना के कृषि

कार्यक्रम पर विचार किया। वैदेशिक आर्थिक नीति से सम्बद्ध भाग नियत समय से पहले ही १९७१–१९७५ के लिए परस्पर आर्थिक सहायता परिषद के दायरे के अन्दर समाजवादी देशो की आर्थिक योजनाओ के समन्वयन के दौरान तैयार कर दिया गया था। दिसम्बर, १९७० मे केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन तथा सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन मे १९७१ के लिए जो ९वी पचवर्षीय योजना का प्रथम वर्ष था, आर्थिक विकास की राजकीय योजना और राजकीय बजट का अनुमोदन किया। योजना के अन्य भागो तथा पूरी योजना पर भी विस्तारपूर्वक विचार किया गया। १९७१ के प्रारम्भ मे पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के निर्देशो का मसविदा अखबारो मे प्रकाशित किया गया। सोवियत समाज के विकास की सम्भावनाओ पर राष्ट्रव्यापी विचार शुरू हुआ।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने इस विराट कार्यभार को पूरा किया। इस काग्रेस मे भाग लेनेवाले लोग एक ऐसी पार्टी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिसके सदस्यो की सख्या अब १,४४,५५,३२१ थी जिनमे से ४०.१ प्रतिशत मजदूर थे, १५.१ प्रतिशत सामूहिक किसान थे और ४४.८ प्रतिशत दफ्तरी कर्मचारी थे (इनमे दो तिहाई इजीनियर, कृषिविद, शिक्षक, डाक्टर, वैज्ञानिक, लेखक तथा कलाकार थे)।

२४वी काग्रेस मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव ब्रेज्नेव द्वारा प्रस्तुत केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट सुनने और उसपर बहस करने के बाद केन्द्रीय समिति के राजनीतिक मार्ग तथा व्यावहारिक कार्य को और उसी तरह रिपोर्ट मे पेश किये हुए सुझावो और निष्कर्षो को पूर्णत स्वीकार किया। काग्रेस ने १९७१–१९७५ की अवधि के लिए सोवियत आर्थिक विकास के निर्देशो का अनुमोदन किया जिसे काग्रेस के सामने सोवियत सघ की मत्रिपरिषद के अध्यक्ष कोसीगिन ने पेश किया था। प्रतिनिधियो का सारा काम ऐसे वातावरण मे हुआ जो सिद्धातनिष्ठ और कारोबारी था तथा सामूहिक भावना से ओतप्रोत था। सारा प्रयास यह निश्चित करने के लिए किया गया कि राष्ट्र की अन्दरूनी तथा वैदेशिक नीति की समस्याओ तथा विश्व क्रातिकारी प्रक्रिया के विकास से सबधित समस्याओ के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जाये। काग्रेस के काम मे ९१ देशो की कम्युनिस्ट और मजदूर, राष्ट्रीय जनवादी तथा वामपक्षी समाजवादी पार्टियो के १०२ प्रतिनिधिमडलो ने भाग लिया।

बहुतेरे वैदेशिक आगन्तुकों ने कांग्रेस में भाषण दिया और उनमें से अधिकांश ने औद्योगिक उद्यमों का दौरा किया, औद्योगिक मज़दूरों, दफ़्तरी कर्मचारियों तथा सामूहिक किसानों से भेंट और बातें कीं। वैदेशिक प्रतिनिधिमंडलों ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों की, विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के प्रति उसके सिद्धांतनिष्ठ मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख और इस आन्दोलन की एकता को सुदृढ़ करने तथा तमाम क्रांतिकारी शक्तियों की एकता को प्रोत्साहित करने के लिए उसकी लगातार और अथक कोशिशों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इन सब कारणों से २४वीं कांग्रेस शांति, जनवाद, राष्ट्रीय स्वाधीनता, समाजवाद तथा कम्युनिज़्म के सक्रिय समर्थकों की अंतर्राष्ट्रीय सभा के रूप में सामने आयी।

कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत राज्य के संस्थापक लेनिन ने बताया था कि समय गुज़रने पर अधिक से अधिक कृषिविद इंजीनियर, अर्थशास्त्री और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञ पार्टी कांग्रेसों के मंच से बोलेंगे, वर्गहीन समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण से संबंधित मौलिक समस्याओं पर विचार-विमर्श में भाग लेंगे। २४वीं कांग्रेस में पहले की सभी कांग्रेसों की ही तरह, उत्पादक श्रम में प्रत्यक्ष भाग लेनेवाले स्त्री-पुरुषों तथा अत्यंत सुयोग्य विशेषज्ञों ने मंच पर आकर अपनी बातें कहीं। उन सबों ने इस बात की पुष्टि की कि उत्पादक शक्तियां अब जिस स्तर पर पहुंच गई हैं, वहां सोवियत जनगण के लिए यह सम्भव हो गया है कि और भी अधिक शानदार कार्यभारों का बीड़ा उठाये। इस तथ्य की अभिव्यक्ति निर्देशों में भी हुई जिनमें यह कहा गया था : "**पंचवर्षीय योजना का मुख्य कार्य है समाजवादी उत्पादन के विकास की ऊंची दर, उत्पादन कारगरता में वृद्धि, वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति और श्रम की उत्पादिता में वृद्धि की रफ़्तार को तेज़ करने के आधार पर जनता के जीवन के भौतिक तथा सांस्कृतिक स्तर में काफ़ी वृद्धि को सुनिश्चित करना।**"

१९७१–१९७५ की अवधि में राष्ट्रीय आय में ३७–४० प्रतिशत वृद्धि होगी। इसका मतलब है कि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय लगभग ३० प्रतिशत बढ़ जायेगी। इस अवधि में मज़दूरों तथा दफ़्तरी कर्मचारियों का औसत वेतन १२६ से १४६ रूबल तक हो जायेगा। सामूहिक किसान शीघ्र ही १०० रूबल के लगभग कमाने लगेंगे। इसके अतिरिक्त निशुल्क भौतिक सुविधाएं और सेवाएं और साथ ही सार्वजनिक उपभोग कोष से प्राप्त

भुगतान पाच वर्षों मे ४० प्रतिशत वढ जायेंगे। ६ करोड से अधिक लोगो को बेहतर रिहायशी मकान मिल जायेंगे। नये शहर उठ खडे होगे, नये अस्पताल, स्कूल, स्वास्थ्य गृह और पुस्तकालय खोले जायेंगे। सक्षेप मे सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण के लिए इतना ऊचा जीवन-स्तर सुनिश्चित हो जायेगा जितना किसी पूजीवादी देश मे नही है। निस्सन्देह इसके लिए उन लोगो के बहुत प्रयास की जरूरत होगी जो देश के कारखाना और निर्माण स्थलो मे, खेतो और शिक्षा सस्थानो मे, अनुसधान केन्द्रो मे, सक्षेप में हर उस जगह काम करते है जहा भौतिक मूल्यो का सृजन किया जाता है, जहा नये कार्यकर्ताओ का प्रशिक्षण होता है, जहा सोवियत जनगण की छुट्टियो तथा विश्राम की सुविधायें मुहैया की जाती है। नवी पचवर्षीय अवधि मे औद्योगिक उत्पादन ४२–४६ प्रतिशत वढेगा और उत्पादन के उन क्षेत्रो का विकास जो उपभोग का माल पैदा करते है, उनकी तुलना म अधिक तेजी से होगा जो उत्पादन के साधन पैदा करते है। नयी पचवर्षीय योजना के दौरान कृषि की औसत सालाना पैदावार विगत अवधि की तुलना मे २०–२२ प्रतिशत वढेगी। एक व्यापक कार्यक्रम म बताया गया है कि शहर और देहात दोनो जगह श्रम की उत्पादिता को वढाने के लिए, व्यापक पैमाने पर नयी प्रविधि को लागू करन के लिए तथा श्रमजीवी जनगण के सास्कृतिक और तकनीकी स्तरा को और ऊचा करने के लिए क्या कार्रवाई की जायेगी।

पहले ही की तरह कम्युनिस्ट पार्टी की दृष्टि म अब भी उसका मुख्य कार्य कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करना है। उत्पादन के कम्युनिस्ट सवधो मे सक्रमण की यही सबसे महत्वपूर्ण शर्त है। मगर उत्पादक शक्तियो म वृद्धि से आप ही आप कम्युनिज्म नही आ जायेगा। अगर केवल भौतिक तथा तकनीकी आधार निर्मित करने का सवाल होता तो वर्तमान वैज्ञानिक और प्राविधिक क्रांति के युग मे कम्युनिज्म मे सक्रमण अपेक्षाकृत कम समय मे हो जाता। नये समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण के उद्देश्य से जो काम किया जा रहा है, उसके प्रसग मे उत्पादन के कम्युनिस्ट सवधा और उसके अनुकूल ऊपरी ढाचे के निर्माण के लिए उससे अधिक समय की जरूरत है जितना पहले लोगो का अनुमान था। कम्युनिज्म का निर्माण एक अत्यत जटिल प्रक्रिया है। इसमे भौतिक उत्पादन, सामाजिक सवध और सामाजिक चेतना

शामिल हैं। इसके लिए जरूरी है कि कठिनाइयों तथा अंतर्विरोधों को दूर किया जाये, प्राकृतिक शक्तियों पर क़ाबू पाया जाये और नये कार्यभारों की पूर्ति के लिए कारगर उपाय ढूंढ़े जायें।

आठवीं पंचवर्षीय योजना को पूरा करते हुए सोवियत जनगण ने एक विकसित समाजवादी समाज की स्थापना कर ली है तथा कम्युनिज़्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण शुरु कर दिया है। नवीं पंचवर्षीय योजना इस महत्वपूर्ण मार्ग पर अगला क़दम है। कांग्रेस के दौरान ब्रेज्नेव ने कहा: "हम जानते हैं कि हम जिन चीज़ों के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें हासिल करके रहेंगे और जिन कामों का बीड़ा उठा रहे हैं, उन्हें पूरा करेंगे। इसकी गारंटी है, रही है और रहेगी सोवियत जनगण की सृजनात्मक प्रतिभा, उनका आत्मत्याग और अपनी कम्युनिस्ट पार्टी के गिर्द उनकी एकता, जो अडिग क़दमों से लेनिन के बताये रास्ते पर चल रही है।"

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस में केन्द्रीय पार्टी संस्थाओं के सदस्यों का निर्वाचन भी हुआ। कांग्रेस के अंतिम दिन नवनिर्वाचित केन्द्रीय समिति की एक बैठक हुई जिसमें पोलिट ब्यूरो का चुनाव हुआ। नये पोलिट ब्यूरो के सदस्य हैं: ब्रेज्नेव, किरिलेंको, कुनायेव, कुलाकोव, कोसीगिन, ग्रीशिन, पेल्शे, पोद्गोर्नी, पोल्यांस्की, माजुरोव, वोरोनोव, श्चेर्बीत्स्की, सूस्लोव। पोलिट ब्यूरो के निम्नलिखित उम्मीदवार सदस्य भी चुने गये: अन्द्रोपोव, उस्तीनोव, देमिचेव, मशेरोव तथा रशीदोव। ब्रेज्नेव केन्द्रीय समिति के महासचिव भी चुने गये।

कांग्रेस ने "हिन्दचीन के राष्ट्रों के लिए आज़ादी और शांति!" नामक अपील और "मध्य पूर्व में एक न्यायपूर्ण तथा स्थायी शांति के लिए" एक घोषणा भी स्वीकार की। कांग्रेस में इस बात पर जोर दिया गया कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, जो अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्व से अवगत है, वैदेशिक नीति के उस मार्ग पर चलती रहेगी जिसका उद्देश्य सारे संसार में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष को सक्रिय रूप से तेज़ करना है, उस संघर्ष में भाग लेनेवाले सभी लोगों तथा उसके हिरावल – अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन – की संघर्षशील एकता को सुदृढ़ बनाना है। सोवियत संघ अन्य बिरादराना समाजवादी देशों के साथ मिलकर

साम्राज्यवादी देशों की आक्रमणकारी नीतियों के विरुद्ध शांति की सक्रिय रक्षा तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने की नीति पेश करता है। कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार सोवियत संघ में कम्युनिज्म के निर्माण के लिए शांतिपूर्ण स्थितियां को सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव कदम उठा रही है और उठाती रहेगी। वे विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लेनिनवादी सिद्धांतों का समर्थन करती हैं और करती रहेगी।

देशभर में २४वीं पार्टी कांग्रेस के फ़ैसलों का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। *सभी कम्युनिस्टों की ओर से कांग्रेस ने मज़दूरों, सामूहिक किसानों* तथा बुद्धिजीवियों से अपील की कि अपने देश की प्रगति में अनुप्राणित सृजनात्मक श्रम के साथ योगदान करें। और सोवियत जनगण अधिक उत्साह के साथ, अपनी क्रांतिकारी परम्पराओं के प्रति वफ़ादारी के साथ तथा कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में, नयी योजना को कार्यान्वित करने के काम में इस अहसास के साथ जुट गये कि इसकी पूर्ति कम्युनिज्म की विजय को और नज़दीक लायेगी।

उपसंहार के बदले

हम अपनी कहानी के अंत तक आ पहुंचे और अब समय आ गया है कि हम इसको समाप्त करें। परन्तु जीवन की यात्रा जारी है और इतिहास कभी एक पर कहीं टिकता नहीं। एक के बाद दूसरा दिन आता है और पिछला दिन इतिहास का अंग बन जाता है। यह पुस्तक जब पाठकों के हाथों में पहुंचेगी अनेक तबदीलियां हो चुकी होंगी। देश की उपलब्धियों के संबंध में कुछ बातें और आंकडे पुराने पड़ चुके होंगे या यों कहिए कि वे पुरानी उपलब्धियों के प्रतीक रह जायेंगे। केन्द्रीयकृत आर्थिक नियोजन से समाजवादी अर्थव्यवस्था की स्थिर विकास दर निश्चित होती है। सोवियत जनगण विश्वास के साथ भविष्य का सामना कर सकते हैं। उनके देश के अतीत ने उस मार्ग को सही साबित कर दिया है जिसपर वे अक्तूबर, १९१७ में अग्रसर हुए।

अक्तूबर क्रांति की प्रथम जयंती के अवसर पर लेनिन ने सोवियत जनतंत्र के जन्म को याद करते हुए कहा था "पूंजीवादी वर्ग के लोग

बोल्शेविकों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते और कहा करते थे कि बोल्शेविक मुश्किल से एक पखवारे तक टिक पायेंगे..." और भी कितनी ही बार हमारे देश के दुश्मनों ने अन्य काल-सीमायें निर्धारित की थीं। जब यह स्पष्ट हो गया कि उनके अन्दाजे सही नहीं हैं तो हमारे शत्रुओं ने मध्यम और ऊंची हर आवाज़ में सोवियत समाज के जीवन में ग़लतियों का ढिंढोरा पीटना शुरू किया। यह स्थान नहीं कि हम एक बार फिर उनकी बातों का उत्तर दें। इसके बजाय हम क्रांति के नेता के इन शब्दों को याद करें कि बोल्शेविकों तथा सोवियत जनगण के लिए घबराने की कोई बात नहीं है, क्योंकि जो ग़लतियां हुई हैं, वे एक नयी जीवन-पद्धति के निर्माण की महान उपलब्धियों की तुलना में नगण्य हैं। उन्होंने लिखा था: "प्रत्येक ग़लती के लिए जो हमसे होती है और जिसका ढिंढोरा पूंजीपति और उनके चाटुकार पीटते हैं (जिनमें हमारे अपने मेंशेविक तथा दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारी भी हैं), १०,००० महान और वीरतापूर्ण कारनामे किये जाते हैं..."*

उन्नीसवीं शती के मध्य में कम्युनिज़्म केवल एक सिद्धांत था। मार्क्स तथा एंगेल्स द्वारा प्रस्थापित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा संगठन में कुल ३०० सदस्य थे।

बीसवीं शती के मध्य में कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की दिशा में व्यावहारिक क़दम उठाये गये। हमारी धरती के छठे भूभाग पर जहां संसार की जनसंख्या का लगभग सात प्रतिशत भाग बसा हुआ है, जो कुल औद्योगिक उत्पादन का पांचवां भाग पैदा करता है, हर रोज़ एक वर्गहीन समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण की पूर्ति को एक क़दम निकट ले आता है। अन्य समाजवादी राज्य अब सोवियत संघ के साथ भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। संसार की कम्युनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों के सदस्यों की कुल संख्या अब ५ करोड़ से अधिक है। इन तथ्यों की रोशनी में अगर कोई ईमानदार आदमी मानवजाति के इतिहास का विश्लेषण करना शुरू करेगा तो वह यह देखे बिना नहीं रह सकता कि वह ठीक १९१७ का ही वर्ष है जिसने भूतपूर्व रूसी साम्राज्य के लोगों तथा

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २८, पृष्ठ ५४

ससार की अन्य अनेक जातियो के जीवन मे ऐसे स्पष्ट परिवर्तनो की बुनियाद डाली थी।

अक्तूबर क्रांति ने मानवजाति को दो दुनियाओ मे – समाजवाद की दुनिया तथा पूजीवाद की दुनिया मे – विभाजित कर दिया। पहले पहल सोवियत जनगण ने ही समाजवादी निर्माण का रास्ता अपनाया। यह सवाल कि किसने इस या उस मशीन का आविष्कार किया, इस या उस द्वीप की खोज की, विवादास्पद हो सकता है मगर इससे कौन इनकार कर सकता है कि वह कौन सा देश है जिसने समाजवादी निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। सोवियत जनगण का अनुभव इतिहास की विरासत है और अन्य जातियो के लिए एक मूल्यवान नमूने का काम देता है और देता रहेगा। सोवियत सघ ने जो ऐतिहासिक रास्ता दिखाया है, वह विकास की अनिवार्य गति का सूचक है और इस बात का ज्वलत सबूत कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद का वैज्ञानिक सिद्धात जीवनक्षम है। पूजीवाद तथा कम्युनिज्म की ऐतिहासिक लडाई ने नया रूप तथा अन्तर्वस्तु धारण की है, इसके भावी विकास की सम्भावनाओ मे परिवर्तन हो रहा है। इसने अब दो विशेष सामाजिक व्यवस्थाओ के बीच प्रतियोगिता का रूप धारण कर लिया है। हर साल, इस प्रतियोगिता के दौरान, कम्युनिज्म अपना वास्तविक प्रगतिशील स्वरूप, पूजीवाद की तुलना मे अपनी श्रेष्ठता समस्त ससार के सामने प्रदर्शित करता है। इसका सबसे सजीव सबूत स्वय सोवियत समाज का इतिहास है।

घटना कालक्रम

१९१७

१२ मार्च (२७ फ़रवरी)*	रूस में पूंजीवादी-जनवादी क्रांति की विजय। निरंकुश शासन का अन्त। मज़दूरों और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतों का गठन।
१५(२) मार्च	पूंजीवादी अस्थायी सरकार का गठन।
१६(३) अप्रैल	लेनिन रूस लौटे।
जून	पेत्रोग्राद में सोवियतों की प्रथम अखिल रूसी कांग्रेस तथा जून प्रदर्शन।
जुलाई	अस्थायी सरकार के सैनिकों द्वारा पेत्रोग्राद में मज़दूरों तथा नौसैनिकों के एक प्रदर्शन पर गोलीबारी। दोहरी सत्ता का अंत।
जुलाई – अगस्त	रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की छठी कांग्रेस।
७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)	पेत्रोग्राद में सशस्त्र विद्रोह की विजय। अस्थायी सरकार का अंत। सोवियतों की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस। लेनिन के नेतृत्व में सोवियत सरकार का गठन।

---

*फ़रवरी, १९१८ तक तिथियां नये और पुराने (ब्रैकट में) दोनों कैलेंडरों के अनुसार दी गई हैं।

नवम्बर १९१७ – फरवरी १९१८	देश के अन्य भागो मे सोवियत सत्ता की विजय-यात्रा।
नवम्बर	"रूस की जातियो के अधिकारो का घोषणा-पत्र" की स्वीकृति।
दिसम्बर	उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।

१९१८

जनवरी	सोवियतो की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस। "श्रमजीवी तथा शोषित जनगण के अधिकारो का घोषणापत्र" की स्वीकृति। चर्च को राज्य से अलग करने तथा स्कूलो को चर्च से अलग करने की आज्ञप्ति। रूसी संघ की स्थापना।
३ मार्च	ब्रेस्त-लितोव्स्क की शांति संधि।
जून	बडे उद्योग के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति।
जुलाई	सोवियतो की पाचवी अखिल रूसी कांग्रेस मे रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र का संविधान स्वीकृत।
अक्तूबर का अंत तथा नवम्बर का प्रारम्भ	कम्युनिस्ट युवक लीग की अखिल रूसी कांग्रेस। कोम्सोमोल की स्थापना।

१९१९

जनवरी	बेलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
मार्च	रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की आठवी कांग्रेस। दूसरा पार्टी कार्यक्रम स्वीकृत।
अप्रैल – मई	प्रथम कम्युनिस्ट शुब्बोत्निक।

१९२०

जनवरी	हस्तक्षेपकारियों ने सोवियत रूस की नाकाबन्दी उठा ली।
अप्रैल	आजरबैजानी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
नवम्बर	आर्मीनियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
दिसम्बर	देश के बिजलीकरण की गोएलरो योजना स्वीकृत।

१९२१

फ़रवरी	जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
मार्च	रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की दसवीं कांग्रेस। नयी आर्थिक नीति लागू हो गयी।

१९२२

अप्रैल – मई	जेनोआ सम्मेलन।
१६ अप्रैल	रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र तथा जर्मनी में रपालो संधि पर हस्ताक्षर।
अक्तूबर	सुदूर पूर्व से जापानी हस्तक्षेपकारियों तथा सफ़ेद गार्डों का खदेड़ा जाना।
३० दिसम्बर	सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना।

१९२४

२१ जनवरी	लेनिन की मृत्यु।
जनवरी	सोवियतों की दूसरी अखिल संघीय कांग्रेस द्वारा सोवियत संघ का संविधान स्वीकृत।

अक्तूबर	उज्बेक तथा तुर्कमान सोवियत समाजवादी जनतन्त्रो की स्थापना। साल के दौरान ब्रिटेन, फास, इटली तथा अन्य कई पूजीवादी राज्यो द्वारा सोवियत सघ को मान्यता तथा उनके साथ राजनयिक सबधो की स्थापना।

१९२५

दिसम्बर	अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की चौदहवी काग्रेस। उद्योगीकरण का प्रारम्भ।

१९२७

दिसम्बर	पन्द्रहवी पार्टी काग्रेस। कृषि के समूहीकरण का प्रारम्भ।

१९२८–१९३२

प्रथम पचवर्षीय योजना।

१९२९

उद्योग तथा कृषि मे व्यापक समाजवादी प्रतियोगिता आदोलन की शुरूआत।

ताजिक सोवियत समाजवादी जनतन्त्र की स्थापना।

पतझड	किसान जोतो का व्यापक समूहीकरण।

१९३१

जापानी साम्राज्यवादियो ने मचूरिया पर कब्जा करके सुदूर पूर्व में युद्ध का अड्डा बना दिया।

१९३३

जर्मनी मे नाजियो ने सत्तारूढ होकर यूरोप मे युद्ध का अड्डा बना दिया।

नवम्बर	सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका में राजनयिक संबंधों की स्थापना।

१९३३–१९३७

दूसरी पंचवर्षीय योजना।

१९३५

स्तख़ानोव आंदोलन की प्रगति।

१९३६

५ दिसम्बर	सोवियत संघ का नया संविधान स्वीकृत।

१९३८–१९४२

तीसरी पंचवर्षीय योजना।

१९३८

२९ जुलाई– ११ अगस्त	लाल सेना ने जापानियों को हसन झील के पास शिकस्त दी।

१९३९

११ मई– ३१ अगस्त	जापानी हमलावरों को ख़ालख़िन-गोल नदी के पास शिकस्त दी गयी।
सितम्बर	दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया।
नवम्बर	पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस सोवियत संघ में शामिल हुए और उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र तथा बेलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र में मिल गये।

१६४०

जुलाई – अगस्त	लिथुआनियाई, लाटवियाई तथा एस्तोनियाई सोवियत जनतन्त्रो की स्थापना हुई तथा वे सोवियत सघ मे शामिल हुए।
अगस्त	मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र की स्थापना।

१६४१

२२ जून	सोवियत सघ पर जर्मनी का आक्रमण।
दिसम्बर	मास्को के नजदीक नाज़ी सेनाओ की पराजय।

१६४३

नवम्बर १६४२ – फ़रवरी १६४३	स्तालिनग्राद में नाज़ी सेनाओ की शिकस्त।
जुलाई	कूर्स्क के पास नाज़ी सेनाओ की हार।

१६४४

	नाज़ी सेनाओ को सोवियत सघ से खदेड दिया गया। लाल सेना द्वारा यूरोप की जातियो का मुक्ति अभियान शुरू।
जून	यूरोप मे मित्र राष्ट्रो द्वारा दूसरा मोर्चा स्थापित।

१६४५

२ मई	सोवियत सेना द्वारा बर्लिन पर कब्जा।
८ मई	जर्मनी द्वारा बिना शर्त आत्मसमर्पण।

९ अगस्त	सोवियत संघ और जापान के बीच लड़ाई शुरू।
३ सितम्बर	जापान द्वारा बिना शर्त आत्मसमर्पण।

१९४६–१९५०

चौथी पंचवर्षीय योजना।

१९५१–१९५५

पांचवीं पंचवर्षीय योजना।

१९५१

मार्च	सर्वोच्च सोवियत द्वारा शांति की रक्षा का क़ानून स्वीकार।

१९५३

५ मार्च	स्तालिन की मृत्यु।

१९५४

सोवियत संघ ने विश्व का प्रथम परमाणु बिजलीघर चालू किया। देश के पूर्वी इलाक़ों में परती ज़मीनों को विकसित करने का कार्यक्रम शुरू हुआ।

१९५६

फ़रवरी	बीसवीं पार्टी कांग्रेस।

१९५७

अक्तूबर	सोवियत सघ ने पृथ्वी का प्रथम कृत्रिम उपग्रह छोडा।
नवम्बर	मास्को मे कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो का सम्मेलन।

१९५९

जनवरी – फरवरी	इक्कीसवी पार्टी काग्रेस, सातवी पचवर्षीय योजना (१९५९–१९६५) स्वीकृत।

१९६०

नवम्बर	मास्को मे कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो का सम्मेलन।

१९६१

१२ अप्रैल	सोवियत अतरिक्षयात्री यूरी गगारिन द्वारा अतरिक्ष मे मानव की पहली उडान।
अक्तूबर	बाईसवी पार्टी काग्रेस। तीसरे पार्टी कार्यक्रम की स्वीकृति जिसके साथ ही कम्युनिज्म का निर्माण शुरू हुआ।

१९६३

अगस्त	वायुमण्डल, अतरिक्ष तथा जलगत न्यूक्लियर परीक्षण पर प्रतिबध की मास्को सधि।

१९६४

अक्तूबर	सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति का पूर्णाधिवेशन।

१६६५

	नया आर्थिक सुधार संबंधी क़ानून स्वीकृत।

१६६६

मार्च – अप्रैल	तेईसवीं पार्टी कांग्रेस। नयी पंचवर्षीय योजना (१६६६–१६७०) के निर्देशों की स्वीकृति।

१६६७

नवम्बर	सोवियत सत्ता का पचासवां जयंती समारोह।

१६६६

जून	मास्को में कम्युनिस्ट तथा मज़दूर पार्टियों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन।
नवम्बर	तीसरी अखिल संघीय सामूहिक किसानों की कांग्रेस।

१६७०

२२ अप्रैल	लेनिन जन्म शताब्दी।

१६७१

मार्च – अप्रैल	चौबीसवीं पार्टी कांग्रेस। १६७१–१६७५ के लिए सोवियत संघ की पंचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के निर्देशों की स्वीकृति।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लीखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।